योऽम्नायष्टाङ्गयोगे जनिमनमयं पूर्वसंस्कारभूम्ना
सिद्धिं प्राप्तो भवाब्धिं प्रभवति मनुजो यस्य नन्तुं प्रसादात् ।



यत्त्वप्यन्तप्रसिद्धं भजति हि सहजानन्दपादारविन्दं
गोपालानन्दनामा स जयतु सततं योगिवर्याग्रगण्यः ॥१॥

नि. सा. प्रेस.

फार्ये रेखादिके यो भवति भगवतो हस्ततुल्य सदा य
छायेवाहर्निशं च श्रयति भगवत पार्श्वमेव प्रपन्न ।



य भूयश्चावतीर्ण शुभमिह जगदुया गुणेभ्यो व्यतीतो
येन ग्रन्था प्रणीता बुधजनमहितास्त शुक्रानन्दमीडे ॥१॥



श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

वचनामृतम्

धर्मधुरंधराचार्यश्री—श्रीपतिप्रसादजीमहाराज

श्रीविहारिलालजीमहाराजश्रीनी आज्ञाथी

छपावी प्रसिद्ध करनार

मुंबईना शेठ रणछोडदास प्राणजीवनदासना

ट्रस्टीयो.

निर्णयसागर प्रेस, मुंबई.

संवत् १९८४ सन १९२८

किंमत रु० ३-०-०

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya Sagar Press,
26-28, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Trustees of Ranchhoddas Pranjiwandas, Swaminarayan
Temple, 3rd Bhoiwada, Bhuleshwar, Bombay.

ॐ

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम्।

प्रश्नोत्तरमयैर्यः स्वान् स्वकीयैर्वचनामृतैः ।
श्रीहरिर्नन्दयामास स आनन्दप्रदोऽस्तु मे ॥ १ ॥

विज्ञप्तिः—

वचनामृत—संप्रदायमां आ अमृत सर्वमान्य सर्वोपयोगी सर्वाधिकारी अने सर्वोत्तम छे. तत्त्वज्ञानने माटे आवुं अमृत कोइ नथी. आ अमृत अमृतमूर्ति परमात्मा श्रीहरिए स्वमुखकमळथी वेदामृतवत् गीतामृतवत् दोहन करेलुं छे. जे अमृत समग्र शास्त्ररूपी क्षीरसागरना मध्यभागमांथी नवनीतवत् साररूपे उद्धारकरी संसाररूप महासर्पना उग्र विषने उतारी अजरामर करवामाटे पात्रभूत मुक्तानंदादि आश्रितजनोने पान कराव्युं छे. जे अमृतनो आस्वाद लइने अनेक दैवी जीवो अजरामर थइ गयाछे थायछे अने थशे. जेनुं शतानन्दमुनिए संस्कृतपद्यथी ग्रथन करीने मुक्तकंठे प्रशंसा करीछे. आ अमृत ते ते स्थळे श्रीहरिए परमभक्तोने पान करावेलुं हतुं तेनो सारसंग्रह मुक्तराज मुक्तानंदमुनि, योगिराज गोपालानंदमुनि, पंडितराज नित्यानंदमुनि, मुनिराज शुकमुनि, आ चार सद्गुरुओए कर्यो छे. पदे पदे स्वादुतम आ अमृतनुं पान करनारा रसिक जनोनी तृष्णा जेम जेम वधती गइ तेम तेम अनेक पुस्तको लखायां. घणां वर्षो वीततां छापखानानी सगवडे छपाववामां आव्युं. तेनीपण घणी आवृत्तिओ ज्यां त्यां छपाइ. मध्ये मोंघवारीने लीधे घणां वर्षो आवृत्ति नीकळती बंध थइ जेथी द्विगुण त्रिगुण वित्त आपतां पण पुस्तक मळवुं दुर्लभ थयुं. आवी अवदशा थतां महाराजश्रीने विनति करतां ध. धु. आचार्यश्री **श्रीपतिप्रसादजी** महाराजश्रीए छपाववानो उपक्रम कर्यो अने शोधवा विगेरेनुं काम शास्त्री **हरिजीवनदासने** सोंप्युं, तेमणे अनेक विशेषो वांचनाराने सगवडता माटे कर्या–चालती आवती प्रत्यक्ष अशुद्धिने दूर करी. अने अनेक विषयोना अनेक प्रश्नोत्तरो छे तेना जुदा जुदा पेरेग्राफो नहि पाडेला होवाथी वांचनाराने अने अर्थ समजनाराने घणो क्लेश आवतो हतो तेपण पेरेग्राफो पाडी दूर कर्यो. अने हरिवाक्यसुधासिंधुने बहुधा आधारे कोइ कोइ कठिन अपरिचित शब्दोना अर्थो तथा अर्थसंगतिमाटे कोइ

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya Sagar Press,
26-28, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Trustees of Ranchhoddas Pranjiwandas, Swaminarayan
Temple, 3rd Bhoiwada, Bhuleshwar, Bombay.

ॐ

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

प्रश्नोत्तरमयैर्यः स्वान् स्वकीयैर्वचनामृतैः ।
श्रीहरिर्नन्दयामास स आनन्दप्रदोऽस्तु मे ॥ १ ॥

विज्ञप्तिः—

वचनामृत—संप्रदायमां आ अमृत सर्वमान्य सर्वोपयोगी सर्वाधिकारी अने सर्वोत्तम छे. तत्त्वज्ञानने माटे आवुं अमृत कोइ नथी. आ अमृत अमृतमूर्ति परमात्मा श्रीहरिए स्वमुखकमळथी वेदामृतवत् गीतामृतवत् दोहन करेलुं छे. जे अमृत समग्र शास्त्ररूपी क्षीरसागरना मध्यभागमांथी नवनीतवत् साररूपे उद्धारकरी संसाररूप महासर्पना उग्र विषने उतारी अजरामर करवामाटे पात्रभूत मुक्तानंदादि आश्रितजनोने पान कराव्युं छे. जे अमृतनो आस्वाद लइने अनेक दैवी जीवो अजरामर थइ गयाछे थायछे अने थशे. जेनुं शतानन्दमुनिए संस्कृतपद्यथी ग्रथन करीने मुक्तकंठे प्रशंसा करीछे. आ अमृत ते ते स्थळे श्रीहरिए परमभक्तोने पान करावेलुं हतुं तेनो सारसंग्रह मुक्तराज मुक्तानंदमुनि, योगिराज गोपालानंदमुनि, पंडितराज नित्यानंदमुनि, मुनिराज शुकमुनि, आ चार सद्गुरुओए कर्यो छे. पदे पदे स्वादुतम आ अमृतनुं पान करनारा रसिक जनोनी तृष्णा जेम जेम वधती गइ तेम तेम अनेक पुस्तको लखाया. घणां वर्षो वीततां छापखानानी सगवडे छपाववामां आव्युं. तेनीपण घणी आवृत्तिओ ज्यां त्यां छपाइ. मध्ये मोंघवारीने लीधे घणां वर्षो आवृत्ति नीकळती बंध थइ जेथी द्विगुण त्रिगुण वित्त आपतां पण पुस्तक मळवुं दुर्लभ थयुं. आवी अवदशा थतां महाराजश्रीने विनति करतां ध. धु. आचार्यश्री **श्रीपतिप्रसादजी** महाराजश्रीए छपाववानो उपक्रम कर्यो अने शोधवा विगेरेनुं काम शास्त्री **हरिजीवनदासने** सोंप्युं, तेमणे अनेक विशेषो वांचनारानी सगवडता माटे कर्या—चालती आवती प्रत्यक्ष अशुद्धिने दूर करी. अने अनेक विषयोना अनेक प्रश्नोत्तरो छे तेना जुदा जुदा पेरेग्राफो नहि पाडेला होवाथी वांचनाराने अने अर्थ समजनाराने घणो क्लेश आवतो हतो तेपण पेरेग्राफो पाडी दूर कर्यो. अने हरिवाक्यसुधासिंधुने बहुधा आधारे कोइ कोइ कठिन अपरिचित शब्दोना अर्थो तथा अर्थसंगतिमाटे कोइ

स्थळे अपेक्षित वाक्यशेषनी पूर्ति तथा कोइ कोइ प्रश्नोत्तरोनो भावार्थ तथा जेनो अर्थ नहि एवा प्रमाण वचनोनो अर्थ तथा थोइ स्थळे जरुरी प्रमाणवचनो विगेरेनी टीपणी करी. अने ग्रंथमां जे प्रमाण वचनो छे ते कया शास्त्रना कया अध्यायमां छे तेनो पण पृथक् आकर कर्यो. अने बहुधा हरिवाक्यसुधासिंधुनी टीकाना संग्रहश्लोक तथा प्रार्थना-श्लोकने अनुसारे विशेष अर्थ साथे प्रत्येक वचनामृतनी विस्तृत विषयानुक्रमणिका करी. अने ग्रंथमां प्रवेश पुरतो केटलोक भूमिकानो पण भाग लख्यो. अने आ अमृतना उप-देष्टा श्रीजिमहाराज तथा संग्रह करनारा चार सद्गुरुओ तेमनी रमणीय रंगीत मूर्तिओ तेमना तेमना असल खरा भावनी प्राचीन मूर्तिओने आधारे सुरतना पेन्टर गणपतभाइ भगवानदास पासे करावी. एवी रीते अपेक्षित अनेक अपूर्व विशेषोथी आ पुस्तक छपाव्युं. जेनी शुद्धता साथेनी रमणीयताथी सत्संगिसमाजने बहुज उपयोगी अने प्रिय थइ पड्युं जेथी बे हजार कोपीपण स्वल्प समयमां खपी गइ, घणो समय अलभ्य अव-स्थामां जतां कोइए फरीथी छापवानो उपक्रम न कर्यो जेथी दिन प्रतिदिन तेनी मागणीयो वधवा लागी. आ पुस्तक सत्संगमां बहु उपयोगी छे एम जाणीने केटलाक हरिजनोनी प्रेरणा थतां मुंबइना हरिभक्तशिरोमणि शेठ **रणछोडदास प्राणजीवनदास** के जेमणे पोतानुं सर्वस्व मुंबई मंदिरमां श्रीकृष्णार्पण करी तेनी चिरकाळ सुव्यवस्था रहेवा माटे शेठ नरोत्तमदास दामोदरदास तथा शेठ उद्धवजीभाइ वाल्जीभाइ तथा कुंवरजी-भाइ वसनजीभाइ तथा मुंबई मंदिरना वर्तमान कोठारी आ चारने ट्रस्टीयो नीम्या छे. तेमणे सदरहु शेठना नामस्मरणार्थे तेमना फंडमांथी आ पुस्तकनी द्वितीयावृत्ति छपावानो विचार करी, मुख्य कोठारी **चतुरभक्तद्वारा** ध. धु आचार्यश्री **श्रीपतिप्रसादजी महाराजश्रीनी** संमति मेळवी, पुराणीश्री **वासुदेवचरणदास** तथा मुंबईना शेठ **जमनादास वसनजीभाइ** द्वारा प्रुफो शोधावी तेमनीज सहायताथी निर्णयसागर जेवा सुप्रसिद्ध प्रेसमां सारा ग्लेज कागळो उपर सुशोभित टाइपोथी सारी रीते छपावी रमणीय बॉयडींग करावी तैयार कराव्युं छे. प्रथमावृत्तिमा प्रेसदोषथी केटलीक अशुद्धि थवा पामी हती तेपण आ आवृत्तिमा थइ नथी तेम केटलोक सुधारोपण थवा पाम्यो छे ते गुणैकग्राही दृष्टिवाळाओ जाणी शकशे; एवी आशा छे.

कोठारी **रणछोडभक्त**, मुंबई मंदिर.

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

वचनामृत–भूमिका ।

सर्वाविर्भावहेतुः परमसुखनिलयो योऽवतीर्येह लोके
संसारव्यालदंशप्रसरदुरुविषोदग्रवेगापहर्त्रं ।
धर्मात्मज्ञानभक्तिप्रकटपरतरस्वस्वरूपोपदेशं
प्रादाद्वाक्यामृतं स्वं स जयति भगवान्स्वामिनारायणोऽयम् ॥१॥
सुखयामास यः स्वीयान् स्वकीयवचनामृतैः ।
कृपया श्रीहरिर्मेऽस्तु सुखदायी सदैव सः ॥ २ ॥

वचनामृत नामनी सार्थकता

आ वचनामृतनो निश्चय अमृतज छे एटले पान करनारा दैवी जीवोने 'तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति' 'विजरो विमृत्युः' 'तमेवं विद्वानमृत इह भवति' 'य एनं विदुरमृतास्ते भवन्ति' 'अमृतत्वमेति' 'रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति' 'अमृतत्वाय कल्पते' इत्यादि श्रुतिस्मृतिमां वर्णवेला अजरामररूप अने निरतिशय ब्रह्मानन्दरूप अमृतने अनायासथी आपनार छे. आ अमृत 'अजरोऽमरः' 'विजरो विमृत्युः' 'अजरोऽमरोऽभयः' 'रसो वै सः' 'सर्वगन्धः सर्वरसः' 'आनन्दो ब्रह्म' 'अन्तर्याम्यमृतः' 'तदेतदमृतमभयं' 'अमृतस्यैष सेतुः' 'अमृतो हिरण्मयः' इत्यादि श्रुतिमां अजरामरमूर्तिपणे अने निरवधिकातिशय आनन्दमूर्तिपणे वर्णवेला परब्रह्म परमात्मा वासुदेव देवदेव श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम श्रीसहजानन्दस्वामी भगवान् स्वामिनारायणे स्वमुखकमळथी वेदामृतवत् गीतामृतवत् दोहन करेलुं छे. धर्म ज्ञान वैराग्य अने माहात्म्यज्ञानथी साध्य एवी भक्तिना विषयभूत प्रत्यक्ष स्वस्वरूपना उपदेशरूप आ अमृत क्षीरसागरमांथी उद्धार करेला अमृतनी पेठे समग्र वेदादि सच्छास्त्ररूपी अगाध दुग्धाब्धिना मध्यभागमांथी नवनीतवत् उद्धार करेलुं छे. जेम देवदेव भगवाने असुरोनो उच्छेद करी अजरामर थवामाटे पात्रभूत अमरोने अमृतपान कराव्युं हतुं तेम परमकृपाळु श्रीहरिए आसुरी संपत्तिनो अनायासथी उच्छेद करी संसाररूप

महासर्पना उग्र विषने उतारी अजरामर करवामाटे पात्रभूत दैवी संपत्तिना मुक्तानंदादि आश्रित जनोने आ अमृतनुं पान कराव्युं छे. जे अमृतनो आस्वाद लइने अनेक दैवी जीवो अजरामर थइ आनन्दमय परमात्मा सहजानन्दस्वामिनो परमानन्द अनुभवी गया छे अने अनुभवेछे अने अनुभवशे. आवा पदेपदे स्वादु अमृतनुं पान करीने कयो रसिक जन तृप्तिने पामे ? कोइपण नज पामे 'भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्' माटे आ प्रबन्धनुं 'वचनामृत' एवुं नाम सार्थक छे. श्रीशतानन्दमुनिए सुधासिन्धुमां आ अमृतनी निरतिशय प्रशंसा करी छे- 'ग्रन्थोऽयं सकलार्थसाधनकरो दुस्तर्कमूलापहृत् भक्तिज्ञानविरागधर्मभगवन्माहात्म्यरत्नाकरः। अत्र श्रीहरिणाऽऽत्मनो ह्यनुभवः सच्छास्त्रसंमानितः प्रोक्तोऽस्तीति भजन्निमं प्रतिदिनं स्यात्पूर्णकामो नरः ॥१॥'. श्रीरघुवीराचार्ये पण तेनी टीकामां प्रशंसा करी छे-'हरिवाक्यसुधासिन्धुः सर्वग्रन्थशिरोमणिः। विराजतेऽयं सकलसच्छास्त्रोपरि सर्वथा ॥ सच्छास्त्राणां यथा वेदः प्रमाणमधिकं तथा। ग्रन्थोऽयं सर्वथैवास्ति हरेरास्योद्भवत्वतः ॥'

भूमिकानुं प्रयोजन

भूमिका लखवानुं परम प्रयोजन एज होवुं जोइए के-जे प्रबन्धनी भूमिका लखाय ते प्रबन्धना उपदेष्टाना जन्मनो हेतु, तेना कारुण्यादि गुणो अने तेना चरित्रो वर्णवां अने प्रबन्धप्रोक्त विषयोनो सार संक्षेपमां विवेचन करवो विगेरे. आ वचनामृत प्रबन्धना उपदेष्टा परंब्रह्म परमात्मा श्रीसहजानंद स्वामी छे माटे तेमनाज अवतारनुं प्रयोजन तथा तेमणे प्रदर्शित करेला कारुण्य सौशील्य वात्सल्य औदार्यादिक गुणो अने तेमनां ऐश्वर्य भरेलां दिव्य चरित्रो विगेरे वर्णवां अने प्रबन्धप्रोक्त विषयोनुं संग्रहथी विवेचन आपवुं विगेरे आ भूमिकानो मुख्य विषय होवो जोइए, केमके 'कलौ सङ्कीर्त्य केशवं' 'कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तबन्धः परं व्रजेत्' 'एतावतालमघनिर्हरणाय पुंसां संकीर्तनं भगवतो गुणकर्मनाम्नाम्' 'यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि' इत्यादि शास्त्रो कलियुगमां भगवानना जन्म गुण अने कर्मना संकीर्तनने मोक्षमां मुख्य हेतुपणे कहेछे. तेम पोते श्रीजिए पण मध्य० ३५ मां स्वरूपानंदस्वामी-

ने तेज वात समझावी छे अने तेवा चरित्रप्रधान प्रवन्धनेज संप्रदायनी पुष्टिमां प्रथम हेतुपणे कहीने तेवा प्रवन्धो करावानो संकल्प करी शतानंदमुनि मुक्तानंदमुनि विगेरेने तेवा प्रवन्धो रचवा आज्ञा आपी छे. माटे भूमिकामां तेज विषय प्रधान होवो जोइए. वळी आ तत्त्वप्रधान प्रवन्ध होवाथी श्रीजिनां गुण चरित्रोना वर्णननो घणो संकोच होय जेथी तेनेज भूमिकामां मुख्य पद आपवुं उचित छे. भूमिकाने बीजा नामथी मुकीए तो 'जीवनचरित्र' एम पण मुकी शकायछे. जे विषय मुख्य जोइए ते संग्रह कर्ताओनी दृष्टिपथमां प्रथम पदे पड्यो छे जेथी तेमणे उपोद्घातप्रकरणमां प्रथम परस्वरूप अने अवतार स्वरूपनी एकता सुचवी तेनुं संक्षेपथी विवेचन आपी पछी श्रीहरिना अवतारनो हेतु तथा तेमना आश्रयणोपयोगी कारुण्य, सौशील्य, वात्सल्य, औदार्य आदिक गुणो तथा दिव्य आश्चर्यकारी चरित्रो तथा सचिह्न सालंकार मूर्ति तथा स्वाभाविक चेष्टाओ विगेरे वर्णवामां प्रथम लक्ष्य आप्युं छे. विशेषमां प्रत्येक वचनामृतना आरंभमां पण स्मरणीय श्रीहरिनी मूर्तिनुं वर्णन आप्युंछे. सत्संगिजीवन विगेरे चरित्रप्रधान प्रवन्धमां तो पूर्ण रीते श्रीहरिनां गुण चरित्रो वर्णव्यां छे. एटले हवे ते विषयमां प्रवृत्ति करवानी जरुर नहि जणायाथी करी नथी. केटलाकनुं एवुं कहेवुं छे के–'वचनामृतनी सारी भूमिका नथी' आ तेमनुं समझवुं भूल भरेलुं छे, केमके उपोद्घात के जे वचनामृत ग्रन्थथी बहिर्भूत नथी तथापि तेनुं स्वरूप भूमिकापणे मानी शकाय तेवुं छे अने भूमिकामां जे प्रधान पदने अर्ह छे एवा गुण चरित्रो उपोद्घातमां वर्णव्यां छे एटले कांइपण न्यूनता नथी. विषय विवेचनतो वचनामृतथी पण जाणी शकाशे एम जाणीने उपोद्घातमां संग्रह कर्ताओए ते तरफ दृष्टि नहि करी होय एम जणायछे. तेथी आ समये विषयोना संक्षिप्त विवेचन पुरती प्रवृति करवी उचित छे. यद्यपि विषयानुक्रमणिका पण प्रत्येक वचनामृतोना विषयोने संक्षेपथी सूचवेछे परंतु बहु संकीर्ण संकीर्ण सूचवेछे तेथी विषयनी एकत्रता जणाती नथी जेथी वाचकोने सार समझवानो क्लेश रहेछे. माटे विषयोनी संक्षेपमां एकत्रता बतावबी के जेथी श्रीहरिनो बोधसार अनायासथी सरल रीते टुंकामां समझाइ जाय एज आ भूमिका लखवानो परम उद्देश अवशेष रहेछे. विषयोनी एकत्रता संक्षेपमां करीए अने तेनी समूळता

थतावीए तो वचनामृत जेटलुंज एक बीजुं पुस्तक थवा जाय तो ते संकलने सिद्ध करवा पुरतो अवकाश मळयो नथी जेथी ते संकल्पने आगळ उपर पूर्ण करवानो राखीने हालमां तेना आरंभमां उपयोगी थाय एवा अनुबन्ध चतुष्टयादिकना निरुपण पुरतो आरंभ करी राख्यो छे.

वचनामृतनी २६२ संख्या

वचनामृतनी संख्यानो विचार प्राप्त थतां तेनी संख्या २६२ श्रीजिमहाराज अने संग्रहकर्ता सद्गुरुओ वचे निश्चित थयेली जणायछे. ते संग्रहने अंते लखेला श्लोकथी गामवार संख्यावार २६२ नी संख्या आपी छे. यद्यपि श्रीजिने रामानंदस्वामिनो मेळाप थयो त्यारथी तेमनी औपदेशिक प्रवृत्ति चालु हती अने अनेक पुर ग्रामादिकमां तेमनुं विचरण हतुं तो अमुक ग्रामनांज अमुक संख्यानांज अमुक वर्षथीज वचनामृतो छे अने अमुक ग्रामनां अमुक वर्षनां वचनामृतो केम नहि होय? एवी शंका थवानो संभव छे. परंतु तेनुं समाधान उपोद्घातप्रकरणने अंते संग्रहिताओएज कर्युंछे. एटले तेते दिवसना तेते ग्रामना घणा श्रीहरिना उपदेशो छे तेमांथी केटलाक दिवसना अने केटलाक ग्रामनाज उपदेशोनो संग्रह करवामां आव्यो छे. १८७६ थी प्रथमनां वचनामृतो केम नहि होय? एवी सहज शंका थइ आवे. परंतु तेनुंपण समाधान एमज करी शकाय के.–ते पहेलां संग्रह करवानी पद्धति के विचार के लक्ष नहि होय अथवा तो विषम कालवशात् उपदेशोमां थती फेरफारीथी निश्चित रुपमां सग्रह नहि थयो होय. ज्यारथी श्रीहरिए भावि मनुष्योना हितनो विचार करी तेमां त्रण हेतुओ विचारीने तेमां एक ग्रन्थो करवानो विचार कर्यो अने काळनीपण विषमता दूर थइ अने संप्रदायनुं निश्चित बंधारण बांधवानो संकल्प थयो त्यार पछीथी उपदेशोनो संग्रह लखवानो आरंभ थयो हशे जेथी १८७६ थी वचनामृतोनो आरंभ थएलो प्रतीत थायछे. एटलुंतो कही शकायछे अने मळी शकेछे अने युक्तपण छे के-श्रीजिना तेते ग्रामना तेते दिवसना घणा उपदेशोना १८७६ थी प्रथमना पण खरडा लखाया हता परंतु तेमांथी पोते श्रीजिए निश्चित करेला बंधारणमां उपयोगी अने अति पिष्टपेषण न थाय तेवा सारभूत तत्त्वोपदेशो पोतानी वर्तमान दशामांज स्वाशानुसार संग-

हर्कर्ताओए वचनामृत नामथी संग्रह कर्यो अने बीजा भागने वचनामृत नामथी दूर राख्यो. केटलाक दिवसना तेते प्रामना योग्य उपदेशो सत्संगिजीवन विगेरे महाप्रबन्धमांपण प्रवेश थवा पाम्या छे जेथी अपूर्णपणानी शंकानो अवकाश नथी. १८७६ थी पहेलांना जेजे तात्त्विक उपदेशो हशे तेनो पुनः पण उपदेश करेलोज छे जेथी ते उपदेशो आ संग्रहमां आवीज गया छे तेथी आमां अपूर्णपणानी शंकाने लेशपण अवकाश मळे नहि. लोयाना ७ वचनामृतमां 'वचनामृतनुं पुस्तक लावीने नित्यानंदस्वामीए श्रीजिमहाराजने आप्युं ते जोइने बहु राजी थया' आ उपरथी एम अर्थ समझाय छे के–हेयोपादेय विभाग करावा पूर्वक तेते स्वोपदेशोनो संग्रह पोतेज करावता हता अने अवलोकता हता, एटले स्वोपदेशनी वचनामृत नामथी २६२ संख्याज निश्चित करेली आपणने निश्चित थाय छे. संख्यानो नियम करवानुंपण एटलुंज कारण समझायछे के–काळातरे तेमां संख्यानो वधारो करी स्ववचनामृतमां अन्यवचनविष प्रवेश थवा न पामे. जो एवो नियम न कर्यो होत तो अत्यारे चालती विगीत वार्ताओ वचनामृत नामथीज पोषावा घणी व्यक्तिओ उभी थइ होत अने वार्ता नामतो कोइनुं होतज नहि, तेम थवाथी तत्त्वार्थनी विगुणता थात माटे प्रथम ते उपर लक्ष आपी वचनामृतोनी २६२ संख्या निश्चित करी छे. शतानंदमुनि के जेमने श्रीहरिएज वचनामृतोनुं संस्कृत पद्यथी प्रथन करवानी आज्ञा आपी छे तेमणेपण २६२ नी संख्या *श्रीहरिकृतनिश्चय जाणीने तेटलानुंज प्रथन कर्युं छे. अने सत्संगिजीवनना* पंचम प्रकरणना ६८ अध्यायमां २६२ संख्या कहीछे. जुनां जुनां लेखी पुस्तको जोतां २६२ संख्याज मळी आवेछे. तो हवे 'वधारे वचनामृत हशे के नहि?' एवी शंका करवी के 'अमुक पासे अधिक वचनामृतो छे' एवी कथा करवी कांइपण उपयोगनी नथी तेम प्रमाणपदने अर्ह नथी. टुंकामां कहीए तो श्रीहरि अने तेमना मुख्य सद्गुरुओ संग्रहकर्ता तेमणेज वचनामृतनी २६२ संख्या निश्चित करेली छे जेथी हवे आपणने तेमां शंका लाववानो के कल्पना करवानो लेशपण अवकाश मळी शके नहि. जेम वचनामृतमां संख्याथी गोटाळो न थइ शके तेम विषयोथी पण न थइ शके तेनुंपण पुरतुं ध्यान आपीने वचनामृतनामथी करेलो संग्रह वेळासर जनसमाजमां प्रसिद्ध कर्यो छे. गमे तेम थयुं हशे परंतु आपणेतो जे अमृतनी जरुर छे ते तैयार करीने आप्युं छे

तेमा कोइ अश अपूर्ण नथी तेनु पान करवुं एटलुंज आपणे कामनुं छे पण केम? क्यारे? केणे? केवी रीते? इत्यादि विकल्प जाळमा भरावानी जरुर नथी. श्रीहरि अने तेमना मुख्य सद्गुरुओए जे व्यवस्था करी छे तेमा पर्यनुयोग करवो उचित नथी. तेमनी इच्छाज तेमा नियामिका हती. पर्यनुयोग करवा बेशीएतो पारपण आवे नहि माटे उपर प्रमाणे वचनामृतनामथी सग्रह करेला श्रीजिना २६२ सख्याना उपदेशोने मान्य करीने तदनुसारे तत्त्वज्ञान संपादन करवुं एज उपयोगनुं छे

वाक्यविभाग

आ वचनामृतोना वाक्योनो विभाग जाणवानी पण जरुर छे. आ प्रबन्ध बहुधा प्रश्नोत्तररूपे वाक्यना रूपमा छे. आमा केटलाक श्रीजिना वाक्यो छे अने केटलाक संग्रहकर्ताओए प्रश्नोत्तरनी सगतिमाटे निवेश करेला छे. जेम श्रीकृष्णभगवाने उपदेश करेली गीतानुं ग्रथन करनारा व्यासमुनिए सगतिमाटे मध्येमध्ये अर्जुन, सजय, धृतराष्ट्र विगेरेना वाक्योनो निवेश कर्यो छे तेम आ प्रबन्धमा जणायछे. श्रीजिना केटलांक कृपावाक्यो छे एटले कोइनापण पुछया विना पोतेज कृपाथी कहेला छे अने केटलाक वाक्यो पोते प्रश्न पुछीने तेना उत्तररूपे आपेला छे तो केटलाक बीजाओए पुछेला प्रश्नोना उत्तररूपे छे. प्रत्येक वचनामृतना आरंभमा श्रीहरिनी साकार मूर्तिनुं वर्णन विगेरे तथा **'पछी श्रीजिमहाराज बोल्या' 'मुक्तानंदस्वामीए पुछयुं' 'एवी रीते श्रीजिमहाराजे पोताना पुरुषोत्तमस्वरूपना निरूपणनी वार्ता परोक्षपणे करीने कही' 'पोते तो पुरुषोत्तम नारायण छे'** इत्यादिक वाक्यो सग्रह करनाराओना छे. विगेरे विभागपण वाचकोए यथार्थ जाणी लेवो.

'वचनामृतना उपदेशनुं स्वरूप एवुं छे के-अमुक वचनामृत अमुक एकज विषयमां प्रवर्ते छे एम कही शकाय एवा तो अल्प सख्याना वचनामृतो छे पण वधारे भाग नथी घणे अशे प्रत्येक वचनामृतमा अनेक विषयो एवा आवेछे के जेनो एक अन्वय न थतां पृथक् पृथक् अन्वय मागेछे जेथी अमुक वचनामृत अमुक एक विषय उपर छे एम कहेवु कठिन थइ पडेछे. एक विषयमा पण मध्येमध्ये एवा अवातर विषयो आवेछे अने तेनु समाधान 'आतो प्रसग प्राप्त छे, एम कह्या विना थतुं नथी. अमुक वचनामृत धर्मनां अमुक ज्ञानना अमुक वैराग्यना अमुक माहात्म्यज्ञानना अमुक भक्तिना

अमुक निश्चयनां छे एवी केटलाक तजवीज करवा जायछे परंतु तपास करतां तेमां बीजा घणा निराळा प्रधान पदने अर्ह विषयो होय छे जेथी तेम कहेवुं पण अंते एक देशीज थाय छे. वळी तेवा विषय विज्ञानमाटे विषयानुक्रमणिका अलं छे. एवां केटलांक कारणोथी 'अमुक वचनामृत अमुकज विषय कहेछे' एवी व्यवस्था करवा तरफ प्रवृत्ति करी नथी.

वचनामृतनी सरलता

उपनिषदादिकमां जे जे तात्त्विक दुर्बोध गहन अर्थो रह्या छे के जेमां मोटा मोटा कविओपण मोह पामेछे तेने सुबोध करी आपवा तरफ श्रीजिनी प्रथम दृष्टि पडीछे ते वाक्योनो विचार करवाथी स्पष्ट जणायछे. वाक्यप्रमाणतामां उपयोगी योग्यता आकांक्षता सन्निधि विगेरे जे जे गुणो शास्त्रमां वर्णव्या छे ते तरफपण पुरेपुरी दृष्टि आपेली प्रतीत थायछे. बीजाओने स्पष्ट बोध थवा माटे जे पंचावयव वाक्यनो प्रयोग करवो जोइए तेपण प्रतीत थायछे. श्रीजिनुं एवुं वाक्य भाग्येज हशे के जेमां प्रतिज्ञा, हेतु, दृष्टांत, उपनय अने निगमन नहि होय. दुर्बोध अर्थोनी सुबोधता करवा तरफ एटली बधी दृष्टि करी छे के वाक्यपुनरुक्ति तरफ वधारे दृष्टि करी नथी. अर्थनी स्फुटता माटे थएली पुनरुक्ति दोषने माटे नथी परंतु अलंकारने माटे थायछे. वाक्यनुं स्वरूप भले वधे परंतु साधारणप्रज्ञोनेपण सुखेथी बोध थाय तेज वाक्यनुं स्वारस्य छे एम वाक्यस्वारस्यविदोनी प्रथम समजण छे. श्रीजिए जे जे हेतुओ अने दृष्टांतो आप्यां छे तेपण लोकप्रसिद्ध सरल अने अर्थसिद्धिकर आप्यां छे तेपण आनी सरलता सूचवेछे. जेवी रीते वाक्यशैली सुबोध तरफ वळेछे. तेम शब्दशैली पण सुबोध तरफ वळेछे ते पण शब्दनो विचार करवाथी जणायछे एटले बहु कठिन अपरिचित संदायित अर्थवाळा के कुत्सित शब्दो वापर्या नथी. जे समये जे भाषाना शब्दो जनसमाजमां प्रचलित होय तेवा शब्दोथी आपेलो बोधज सुबोध थाय, तेथी ते प्रमाणे पण पुरतुं लक्ष आपेलुं जणायछे. क्वचित् विषयोनी पुनरुक्ति प्रतीत थायछे तेनुं समाधान तो प्रतिपत्तृभेदथी सुज्ञक छे एटले भिन्नभिन्न ग्रामोमां भिन्नभिन्न समये भिन्नभिन्न अनेक बोधग्राही व्यक्तिओ पुछनारी मळेली जेथी तेना उत्तरो श्रीजिए आपेला तेथी तेवी पुनरुक्तिपण दोषने माटे नथी. उपनिषद्वाक्योनीपण पुनरुक्तिमां पूर्वोक्तज समाधान आप्युं छे. केट-

लीक वाक्यघटना एवी होयछे के जेनो अर्थ करवो मुश्केल थइने लक्षणाथी अर्थ करवो पडेछे. आमां तेनीपण संभाळ राखीने तेते पदथीज पुरतो स्पष्ट मुख्यार्थनो बोध थइ शके तेवां पदोनो निवेश कर्यो छे के जेथी तेमां लक्षणा दोष आवी शके नहि. परपक्षमां दोषप्रदर्शन सीवाय स्वपक्षनी सिद्धि न थाय ए स्वपक्षसिद्धिमां प्रथम मुद्दो छे ते प्रमाणेज आ प्रबन्धमां परपक्षमां दोषप्रदर्शनपूर्वक स्वपक्षमां सर्व प्रमाणार्थनी अनुकूळता बतावा पूर्वक तत्त्वार्थ निरूपण कर्यो छे, ते नास्तिक शुष्कवेदांति विगेरेनां प्रकरणो वांचवाथी मालम पडेछे. केटलेक स्थळे साक्षात् तो केटलेक स्थळे अर्थात् परमतनुं निराकरण करेलुं प्रतीत थायछे. एवी रीते शास्त्रमां दुर्बोधपणे रहेला अर्थोने सुबोध करवा तरफ वचनामृतोना शब्दोनुं वलण छे एम सिद्ध थायछे.

वचनामृतनी प्रामाण्यताविषे

जे कोइ अर्थ सिद्ध करवो होय तेमां प्रथम प्रमाणनी अपेक्षा रहेछे एटले प्रमाण विना कोइ अर्थ सिद्ध थतो नथी. जेने प्रमाणपणे स्वीकारीए तेनीज प्रमाणता न होय तो तेनाथीपण कोइ अर्थ प्रामाणिकपणे सिद्ध थाय नहि माटे प्रमाणनी प्रमाणता प्रथम होवी जोइए. प्रमाणनी प्रमाणतातो तेना उपदेशकनी प्रमाणताने अधीन छे एटले उपदेष्टानी आप्ततमता प्रथम होवी जोइए. जो उपदेष्टा अल्पज्ञ, अकरुण, अनाप्त, प्रमादी अने अशक्त होय तो तेना उपदेशमां अनेक प्रकारना भ्रम, वंचना, प्रमाद अने अशक्ति आदिक दोषनी संभावना थाये जेथी तेना वाक्यनी प्रमाणता थाय नहि एटले अर्थ सिद्धितो दूरज रहे. माटेज कह्युंछे के **'बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रतरिष्यति'** (वेद एवो भय राखे छे के–'आ अल्पश्रुत छे ते मने छेतरशे एटले अर्थनो अनर्थ करशे) जेम परब्रह्म परमात्मा भगवाने पोते सर्वज्ञ सर्वशक्ति होइने स्वार्थ निरपेक्ष केवळ करुणाथीज लोकोना श्रेयनीज एक तत्परताथी प्रकाश करेला वेदनी तेमां भ्रमादिक दोषनी असंभावनाथी स्वतः प्रमाणता छे तेम **'यः सर्वज्ञः सर्ववित्' 'स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च' 'यो वेत्ति युगपत्सर्वं प्रत्यक्षेण सदा स्वतः' 'वेदाहं समतीतानि'** इत्यादि वचनमां वर्णवेली सर्वज्ञ शक्तिवाळा अने **'यदा यदा हि धर्मस्य' 'परित्राणाय साधूनां'** इत्यादि वचनमां कह्या प्रमाणे केवळ कृपाथीज कळिजनोना कल्याणमाटे अवतार धार-

ण करीने एक साधुपरित्राणमांज तत्पर थइने प्रवर्तेला सर्वना सुहृत् अने शरण्य एवा परंब्रह्म परमात्मा श्रीहरिना वचनोमां भ्रम के वंचना (ठगइ) विगेरे दोषनी संभावना होइ शकेज नहि जेथी तेमना वचनोनी सर्वांशे वेदवत् स्वतःप्रमाणता छे एमां संशयने लेशपण अवकाश नथी. स्ववचनमां भ्रमादिदोषनी असंभावना सूचववा पूर्वक तेनी प्रमाणता माटे आ वचनामृतमांज श्रीमुखे पोतानी परोक्षापरोक्षपणे भगवत्ता, सर्वज्ञता, सर्वशक्तिता, स्वार्थनिरपेक्ष कृपालुता, सुशीलता, वत्सळता, उदारता, सुलभता, अवंचकता, निर्दंभता, आश्रितहितैकतत्परता, निष्प्रमादता, आप्ततमता विगेरे उपयोगी घणा गुणो वर्णव्या छे जे गुणो अन्यत्र होय शकेज नहि अने गुरुत्वसाधनमांपण प्रथम उपयोगना छे-ग्र० ३१ 'आज जे सर्व हरिभक्त छे ते एम समजेछे जे अक्षरातीत एवा जे भगवान् पुरुषोत्तम ते अमने प्रत्यक्ष मळ्या छे अने अमे कृतार्थ थया छीए एम समजीने प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञामां रह्यायका ते भगवाननी भक्ति करेछे' सा० २ लो०-३-७-११-१४-१८ मां पण पोतानी भगवत्ता कही छे. म० ९ 'सर्वोपरी ने सदा दिव्य साकारमूर्ति अने सर्व अवतारनुं अवतारी एवुं जे भगवाननुं स्वरूप छे तेज मने प्राप्त थयुं छे.' म० १३ 'जे तेजनेविषे मूर्ति छे तेज आ प्रत्यक्ष महाराज छे एम जाणज्यो' म० ३५ अने आ तमो सर्वे छो ते मने भगवान् जाणो छो···अमारां ए सर्वे चरित्र क्रिया तथा नामस्मरण ते कल्याणकारी छे' अंत्य० ३१ 'एवा जे ए भगवान् तेज पोते दयाए करीने जीवोना परम कल्याण करवाने अर्थे हमणां प्रकट प्रमाण थका तमारी सर्वेनी दृष्टिने गोचर साक्षात्पणे वर्तेछे' अंत्य० ३८ 'अने एवा सर्वोपरि जे पुरुषोत्तम भगवान् तेज दयाए करीने जीवोना कल्याणने अर्थे आ पृथ्वीने विषे प्रकट थया थका सर्व जनना नयनगोचर वर्तेछे अने तमारा इष्टदेव छे अने तमारी सेवाने अंगीकार करेछे···सर्व अवतारना अवतारी छे अने तमारे सर्वेने एकांतिक भावे करीने उपासना करवा योग्य छे' प्र० १८ 'मारा मनमां तो एम थायछे जे वात न कहुं पण तमे अमारा छो माटे जाणीए छीए जे कहीएज···अने आ अमारुं वचन छे ते भला थइने सर्वे जरुर राखज्यो तो जाणीए तमे अमारी सर्वे सेवा करी अने अमेपण तमने सर्वेने आशीर्वाद दइशुं अने तमो उपर घणा प्रसन्न थइशुं कांजे तमे अमारो दाखडो सुफळ कर्यो···अने अमे जे कोइने हेत करीने बोलावीए छीए तेतो तेना जीवना रुडा सारु बोलावीए छीए···

पण अमारा सुखने वास्ते करता नथी अने जो अमारा सुखने वास्ते करता होइए तो अमने श्रीरामानंदस्वामीना सम छे...अने हुं तो अनादिमुक्तज छुं पण कोइने उपदेशे करीने मुक्त थयो नथी' प्र० ६४ 'अने आ जे वार्ता ते अमे प्रत्यक्ष देखीने कही छे माटे एमां संशय नथी' प्र० ७० अमे रामानंदस्वामी पासे मागी लीधुं छे जे—तमारा सत्संगी होय तेने एक विंछीनुं दुःख थवानुं होय तो ते मने एक एक रुंवाडे कोटी कोटी विंछीनुं दुःख थाओ पण तमारा सत्संगीने ते थाओ नहि अने तमारा सत्संगीने प्रारब्धमां रामपत्तर लख्युं होय ते रामपत्तर मने आवे पण तमारा सत्संगी अन्न वस्त्रे करीने दुःखी न थाय' प्र० ७३ 'महाराज तो आकाश जेवा निर्लेप छे अने एमने कोइ पोतानुं पण नथी अने पारकुंपण नथी ('समोऽहं सर्वभूतेषु' 'सुहृदं सर्वभूतानां' तेनी पेठे जाणवुं) अने कोइने दया करीने पासे बेसवा देछे के ज्ञानवार्ता करेछे तेतो केवळ तेना जीवना कल्याणने अर्थे दया करीने करेछे…कोइ अमने साचो थइने मन अर्पे अने लेशमात्र अंतराय राखे नहि तो तेमां अमे कोइ वातनी कसर रहेवा दइए नहि' का० ६ 'अने अमारे जे खाधुं पीधुं ओढवुं पहेरवुं छे ते सर्वे संत अने सत्संगीने अर्थे छे अने जो एमने अर्थे न जणाय ने पोताने अर्थे जणाय तो अमे एनो तत्काळ त्याग करी दइए अने अमे आ देह राखीए छीए तेपण सत्संगीने अर्थे राखीए छीए पण बीजो कोइ देह राख्यानो अर्थ नथी…अने महाराज तो आकाश सरखा निर्लेप छे…अने अमेतो जे मन कर्म वचने पर-

१ तात्पर्य एटलुं छे केन्जे कोइ कोइनापण उपदेशथी साधन करीने मुक्त न थयो होय ते अनादि मुक्त कहेवाय, परमात्माए अनादि मुक्तपणे केटलाक संकल्पेला छे परंतु तेमनुं स्वरूप, स्थिति, प्रवृत्ति विगेरे परमात्माने परतंत्र होवाथी तेमनुं अनादिमुक्तत्व परमात्मानी अपेक्षाए सोपाधिक ठरेछे जेथी निरुपाधिक मुक्तत्व कही शकाय नहि, निरुपाधिक अनादिमुक्तत्वतो एक परमात्मामांज संभवित छे. एवो अर्थ समजावामाटे अनादिमुक्तशब्दनो अर्थ पण पोतेज करी बताव्यो छे. पोते श्रीहरि स्वयं भगवान् होवाथी पोतानुं अनादिमुक्तत्व निरुपाधिक छे जेथी तेवो व्यवहार करेछे. जे निरुपाधिक अनादिमुक्त होय तेनामां सर्वज्ञता स्वतःसिद्ध होय जेथी तेना वचनमां भ्रमादिदोषनी संभावना आवी शके नहि.

मेश्वरना भक्त छे तेने अर्थे अमारो देहपण श्रीकृष्णार्पण करी राख्यो छे' का० १२ 'जेवुं आवी भगवद्वार्ता साभळनारानुं मन निर्विषयि थायछे तेवुं तेनुं थतुं नथी अने आवी वात साभळीने जेवुं तमारुं सर्वेनुं मन निर्विकल्प थतुं हशे तेवुं ध्यान करता हशो तथा माळा फेरवता हशो त्यारे नहि थतुं होय' पं० १ 'अने आ जे सर्वे वात छे ते जे बुद्धिवाळो होय तेने जाण्यामा आवेछे माटे बुद्धिवाळा उपर अमारे हेत छे केमजे अमे बुद्धिवाळा छीए तो एवी रीते अमारी दृष्टि पुगेछे' पं० २ 'एवी रीते ए बे प्रकारना जे विचार छे ते कोइक अमारा जेवा मोटा पासेथी शीखे त्यारे आवडे नहितो शास्त्रने भणे साभळेपण आवडे नहि' म० ९ 'अने आ समयमां जेवी सत्संगमा वार्ता थायछे तेने जो नारद सनकादिक ब्रह्मादिक देवता साभळे तो साभळीने एम कहे जे 'आवी वार्ता कोइ काळे साभळीपण नथी अने साभळशुंपण नहि आ वार्तातो **'न भूतो न भविष्यति'** एवी छे अने अतिशय झीणी वार्ता थायछे' म० १३ 'अने आ जे मारे वात करवी छे ते काइ दंभे करीने नथी करवी तथा माने करीने नथी करवी तथा पोतानी मोट्यप वधार्या सार नथी करवी एतो एम जाणीए छीए जे आ सर्वे सत तथा हरिभक्त छे तेमाथी ए वात कोइने समझाय जाय तो तेना जीवनुं अतिरुडु थाय ते सारुं करीए छीए अने आ जे वात छे ते अमारी दीठेल छे ने मारा अनुभवे करीनेपण में सिद्ध करी छे......अने नारद सनकादिक ने ब्रह्मादिक देव तेमनी सभामापण निरंतर आज वार्ता थायछे......अमारे परमहंस तथा सत्संगी समस्त पासेथी कोइ स्वार्थ साधवो नथी तोपण कोइने बोलावीए छीए कोइने वढीए छीए कोइने काढी मुकीए छीए तेनुं एज प्रयोजन छे जे कोइ रीते आ वात समझाय तो बहु सारुं थाय......अने अमे प्रत्यक्ष नजरे जोइने तमने आ वात कहीछे अने जो प्रत्यक्ष जोइने न कही होय तो अमने सर्वे परमहंसना सम छे' म० २८ 'अमारेतो परमेश्वरना भक्त उपर अतिशय दया वर्ते छे' म० ३३ 'एवी रीते अमे सदाय निर्दोषपणे छीए' म० ३५ 'अने तमारे सर्वेने मारे विषे विश्वास छे ते हुं तमने जेवी तेवी अवळी वाते चढावी देउ तो जेम सर्वेने कुवामा नाखीने उपरथी पाणानी शीला टाके त्यारे तेने निकळवानी आशाज नहि तेम तमेपण मारा वचनने विश्वासे करीने अवळे मार्गे चढी जाओ तो

तेमां मारुं शुं सारुं थाय? माटे आ वार्ता तमारा कल्याणनी छे ते में तमने हेते करीने कहीछे' म० ४५ 'ए तमे सर्वे मारा कहेवाओछो ते हुं टटको राखीने तमने वर्तावुं नहि अने तमे कांइक गाफलपणे वर्तो ते अमाराथी देखाय नहि माटे जेजे मारा कहेवाया छो तेमा मारे एक तलमात्र कसर रहेवा देवी नथी माटे तमेपण सुधा सावधान रहेज्यो……तेना हृदयमां कोइ जातनी वासना तथा कोइ जातनो अयोग्य स्वभाव ते रहेवा देवो नथी…सर्वे मायिक उपाधियकी रहित सत्तामात्र एवो जे आत्मा ते रूपे थइने भगवाननी भक्ति करो एवा सर्वने करवा छे पण कोइ जातनो मायानो गुण रहेवा देवो नथी' म० ५० 'आजतो अमारुं जे रहस्य छे ते तमने अमारा जाणीने कहीए छीए…अने जे अमारी सोबत राखशे तेना हृदयमांपण कोइ जातनो लोचो रहेवा देवो नथी' म० ५३ 'ए भगवानतो अनंत कोटि ब्रह्माडने विषे रह्या एवा जे जीव ने ईश्वर तेने जेम हथेळीमा जळनुं टीपुं होय तेने देखे तेम देखेछे' म० ५५ अने अमारी सर्वे क्रिया छे ते भगवानना भक्तने अर्थे छे पण पोताना सुखने अर्थे एकेय क्रिया नथी' म० ६० 'हुंतो दत्तात्रेय, जडभरत, नारद, शुकजी ते सरखो दयावाळो छुं' अत्य० २१ 'अने अमे पोताने स्वार्थे करीने लाखो माणसमा नथी रहेता अमे तो भगवान् तथा भगवानना भक्तने अर्थे माणसना मीडामा रहीए छीए अने भगवानना भक्तने अर्थे गमे तेटली प्रवृत्ति करवी पडे तोपण एने अमे निवृत्ति जाणीए छीए…एवा जे दृढ सत्संगी वैष्णव छे तेज अमारेतो सगा वहाला छे अने तेज अमारी नात छे… तमे सर्वे अमारे आश्रित थया छो माटे अमारे तमने हितनी वात होय ते कही जोइए अने मित्रपण तेनेज जाणवो जे पोताना हितनी वात होय ते दु ख लगाडीनेपण कहे एज मित्रनुं लक्षण छे ते समझी राखज्यो' अत्य० ३९ 'अने आ वात अमे करीए छीए ते कांइ बुद्धिनी कल्पनाए नथी करता तथा सिद्धाइ जणावा सारु नथी करता. आतो अमारी अजमावेल वात छे अने जेम अमे वर्तीए छीए तेम वात करीए छीए' उपर प्रमाणे श्रीजि स्वमुखथीज पोतानी सर्वज्ञता, सर्वशक्तिता, नि स्वार्थ कृपाळुता आप्ततमता अवंचकता आश्रितहितैकतत्परता विगेरे गुणो कहेवा पूर्वक पोतामा भ्रम, वंचना, प्रमादादि दोषनी असंभावना कहेवा पूर्वक वेदवत् स्ववचनामृतनी स्वत प्रमाणता नि संशयपणे पोतेज कहेछे.

जेम श्रीकृष्णपरमात्माए उपदेश करेली गीतानुं ग्रथन करनारा सर्वज्ञ, कृपणवत्सळ, भगवान् व्यासमुनि हता जेथी तेमां ग्रथन प्रयुक्त प्रमादि दोषनी संभावना संभवित नथी तेम आ वचनामृतोना संग्रह करनारा चार सद्गुरुओ के जे अवतरता श्रीहरिना साथेना महामुक्त पुरुषो हता जेथी भगवानना जेवाज गुण ऐश्वर्यवाळा अने सर्वथा सर्व-दोषे रहित हता. जेमनुं स्वार्थनिरपेक्ष जीवन केवळ कळिजनोना कल्याणमाटे हतुं. जेओ श्रीजिना दिव्यज्ञानना सर्वोत्तम समुचित पात्र हता अने श्रीजिने धर्मादिप्रवृत्तिमां मुख्य द्वारभूत हता. जेमना कारुण्य वात्सल्यादि गुणो संप्रदायमां प्रसिद्ध छे. संप्रदायमां जे-नाथी बीजी कोइ परतर माननीय व्यक्तिओ हतीज नहि. जेमने श्रीजिएज संप्रदायमां अग्रेसरपणे स्थाप्या हता. जेमनी ज्ञानस्थितिनी महत्ता अने चित्रकृत् चरित्रो संप्रदायमां तथा ग्रंथोमां पण प्रसिद्ध छे. जेथी तेमनी आप्ततमता निर्विवाद छे. जेओ श्रुतार्थनुं अव-धान करवामां सर्वथा समर्थ अने सर्वश्रुत हता अने कर्णाकर्णी नहि परंतु साक्षात् श्रवण करीने श्रीजिनी आज्ञानुसार–'*यथाश्रुतं*' श्रुतार्थने नहि अतिक्रम करीने संग्रह करनारा हता जेथी संग्रहमांपण पुरुषप्रयुक्त भ्रम वंचना विगेरे दोषनी संभावनानो अवकाश होइ शकेज नहि. एक एक मूर्तिज निर्दोष संग्रह करवा माटे शक्तिमती हती तो ज्यां चार वेदचतुष्टयीनी संमेलना थइ त्यां कयो अपूर्व अर्थ अवशेष रहे ? अने कया दोष प्रवेशने अवकाश मळे ? मुक्तानंदमुनि के जे पोते मुक्तराज हता, श्रीजिए जेमनी गुरुत्वथी संभा-वना करी हती अने ज्यां त्यां साधुताना उदाहरणमां तेमनेज अग्रपद आपे छे अने जे-मनी उच्च स्थितिनी प्रशंसा स्वयं श्रीजिज करेछे, जेमना करेला अनेक प्रबन्धोपण उप-लब्ध थायछे. गोपाळानंदमुनि के जे योगिराज हता जेथी विस्मृत थएला अर्थोनी योगबळथी स्मृति लाववामां शक्त हता अने जेमने श्रीजिएज बन्ने देशना त्यागीओने स्वस्वधर्ममा वर्ताववानी अने त्यागीओने तेमनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवानी आज्ञा करी हती. नित्यानंदमुनि के जे पंडितराज हता जेथी सर्व शास्त्रार्थने जाणता हता अने संप्रदायना वादिओने पराजय करवामां प्रवीण हता अने श्रीजिना सन्निधिमां वेद पुराणादिकना वक्तापणे सर्वदा रहेता हता. शुकानंदमुनि के जे मुनिराज हता अने श्रीजिना लेखादिक कार्यमां हस्ततुल्य हता अने छायावत् अहर्निश श्रीजिना सन्निधिमां रहीने अनुसरनारा

हता अने जेमनी भावना मुक्तावतार तरीके मनायछे, जेमणे घणा ग्रन्थो लख्या छे अने शोध्या छे. किंबहुना—आ ग्रन्थमांज प्रसंगे प्रसंगे स्वयं श्रीहरिएज प्रशंसा करी छे—सा० ३ 'जेम मुक्तानंदस्वामिने अमे प्रथम लोजपुरमां दीठा हता अने जेवी श्रद्धा ने भगवानेनुं माहात्म्य हतुं तेवुंने तेवुंज आज दिवस सुधी नवुंने नवुं छे पण गौण पड्युं नथी' लो० ३ 'अमे स्वामीनां दर्शन थया मोर नव महिना सुधी मुक्तानंदस्वामीनी आज्ञामां रह्या हता' लो० ६ 'तथा भगवानना संत जे मुक्तानन्दस्वामी जेवा मोटा होय तेमनां नाम लइने प्रार्थना करवी तो घाट सर्वे टळी जाय···मुक्तानंदस्वामी जेवा होय ते सर्वेथी सरस वर्तमान पाळता होय' लो० ८ 'मुक्तानंदस्वामी जेवा वार्तां करता होय तथा कथा वांचता होय' लो०, १३ 'अने हमणां आ मुक्तानंदस्वामी जेवा संतनेविषे ए नारायणने लइए तो एमनेपण भगवान् कहेवाय' ग० २७ 'एवुं तमारे विचारनुं बळ रहेछे ते शाने योगे रहेछे···काम क्रोधादिकना जोरने हठावे एवो जे विचार तेतो गुणथकी पर छे ते ए तमारा जीवमां रह्योछे' म० ५८ 'मुक्तानंदस्वामीने कह्युं जे तमेपण पोताना संप्रदाय संबन्धी ने इष्टदेव संबन्धी जे वाणी तथा शास्त्र तेज देहपर्यंत कर्या करज्यो ने तमारो देह रहे त्यांसुधी तमने एज आज्ञा छे' म० ५६ 'पछी तो गोपालानंदस्वामी आदिक जे भगवाननेविषे प्रीतिवाळा हरिभक्त ते सर्वे सांभरी आव्या' म० ६२ 'एवा दासत्वभक्तिवाळा तो आज गोपालानंदस्वामी अने बीजा मुक्तानंदस्वामी छे···अने मुक्तानंदस्वामी उपर अमने घणुं हेत छे' अं० २४ तथा गोपाळानंदस्वामी ब्रह्मानंदस्वामी मुक्तानंदस्वामी नित्यानंदस्वामी शुकमुनि···ए तमे सर्वे जेम हमणां आ वर्तमान पाळो केवा दृढी रीते वर्तों छो' अं० ३३ 'एवातो आ मुक्तानंदस्वामी तथा गोपालानंदस्वामी छे ते एमने कोइ बीजो गमे तेवो होय अने चमत्कार देखाडे तोपण तेनो कोइ रीते भार आवेज नहि' लो० ७ 'ते समयमां वचनामृतनुं पुस्तक नित्यानंदस्वामीए लावीने श्रीजिमहाराजने आप्युं पछी ते पुस्तक जोइने बहु राजी थया' पं० ७ 'श्रीजिमहाराज नित्यानंद मुनिपासे श्रीमद्भागवतना प्रथमस्कंधनी कथा करावता हता' अं० २४ नित्यानंदस्वामीने अमारी प्रसन्नता करवी ए अंग' का० ३ 'आ शुकमुनि बहु मोटा साधु छे अने जे दिवसथी अमारी पासे रह्या छे ते दिवसथी एमनो चडतो ने चडतो रंग छे पण मंदतो पडतो

नथी माटे एतो मुक्तानंदस्वामी जेवा छे' उपर प्रमाणे स्वयं श्रीजिज जेमनी उच्च स्थितिनी प्रशंसा करेछे एवा सर्वश्रुत, ब्रह्मनिष्ठ, निर्दोष, निःस्वार्थ करुण, सर्वशक्त, निष्प्रमादी मुक्तराज मुक्तानंदस्वामी, योगिराज गोपालानंदस्वामी, पंडितराज नित्यानंदस्वामी अने मुनिराज शुकानंदस्वामी आ चार प्रथम सद्गुरुओए परमगुरु श्रीहरिनी आज्ञानुसारज यथाश्रुत करेला वचनामृतोना संग्रहमां भ्रमादि कोइपण दोषनी संभावना संभवित नथी जेथी वचनामृतनी स्वतःप्रमाणता सुसिद्ध थायछे.

विषयप्रामाण्यताथी पण वचनामृतनी प्रमाणता सुस्थिर थायछे वेदशास्त्रथी विरुद्ध कल्पित विषयो वर्णव्या होय तो तेनी प्रमाणता थायज नहि माटे विषयोनी प्रमाणता-पण प्रथम जरुरनी छे. वचनामृतमां जेजे विषयो वर्णव्या छे ते अक्षरशः शास्त्रमूलक छे. स्वयं भगवानने वेद, उपनिषद्, सांख्य, योग, व्याससूत्र, गीता, पंचरात्र, भागवतादि-द्वारा मोक्षोपयोगी आत्मपरमात्मस्वरूपज्ञान, भक्ति, वैराग्य, धर्म विगेरे जेजे विषयो वर्णव्या छे तेने अनुसारे तेना अविरोधथीज विशेष अर्थ साथे वर्णव्या छे. तेमां केट-लांकतो तेते श्रुतिस्मृति पुराण विगेरेनां वचनो साक्षात् कह्यां छे तो केटलांक वचनोनो गुर्जरानुवाद करेलो छे. तेनो जो बरोबर तपास करीए अने लखवा बेसीए तो एक पण वाक्य एवुं न नीकळे के जेनुं मूळ सच्छास्त्रमांथी उपलब्ध न थाय. मूळमां तथा टीप-णीमां तथा विषयानुक्रमणिकामां केटलांक वचनो बताव्यां छे अने आ भूमिकामांपण दिग्दर्शन कराव्युंछे जेथी बाळाक्षरमात्र बोधवाळानेपण समजाशे के सर्वार्थनी शास्त्रमू-ळकता छे. शास्त्रोना परिशीलनवाळानेतो पदेपदे समूळताज दृष्टिपथे पडेछे. वचनामृ-तनी समूळता सूचववा माटेज आठ शास्त्रनी स्वामिमतता सकारण कहेवा पूर्वक तेना श्रवण पठन वाचन विगेरे करवानो विधि शिक्षापत्रीमां तथा आ प्रवन्धमां कर्यो छे. विशेष ए छे के-बीजा आचार्योए जेम उपनिषद् व्याससूत्र गीता भागवत विगेरे तत्त्व-प्रधान प्रबन्धो उपर भाष्यो करीने तेनो अर्थ समजाव्यो छे तेम श्रीजिए तेवे प्रव-न्धोना दुर्बोध गहन गंभीर अर्थोपण न्याय युक्ति हेतुओ दृष्टांत विगेरेथी सुमेध करीने वचनामृतद्वारा समजाव्या छे अने गुर्जरगीरामां सरल सुलभ सर्वाधिकारी करी आप्या छे आ अर्थ श्रीजिज तात्पर्यवृत्तिथी सूचवेछे प्र. ७१ 'अने वेदनो अर्थ तो अतिकठण

छे माटे तेनी कथा थती नथी अने श्रीमद्भागवत पुराण भारत एमां वेदनोज अर्थ छे ने सुगम छे माटे तेनी कथा थायछे आ न्याय वचनामृतमांपण जाणवो. एटले हवे आ वचनामृतने प्रस्थानत्रयनुं सुबोध सर्वाधिकारि भाष्य कहीए तेमां लेशपण अतिशयोक्ति गणाशे नहि. श्रीजिए वर्णवेलुं तत्वज्ञान केना तत्त्वनी साथे संबन्ध धरावेछे तेपण **'मतं विशिष्टाद्वैतं मे' 'शारीरकाणां भगवद्गीतायाश्चावगम्यताम्। रामानुजाचार्यकृतं भाष्यमाध्यात्मिकं मम'** आ वचनथी शिक्षापत्रीमां सूचव्युं छे. अने आ वचनामृतमांपण रामानुजाचार्यने गुरुपरंपरामां गणीने तेमणे वर्णवेलुं तत्वज्ञान सहेतुक ग्रहण करवानुं कहेछे. वळी आ प्रबन्धमां जे विषयो वर्णव्या छे तेपण जेना वर्णव्या पछी व्यासमुनिने शोक थयो हतो तेवा वर्णव्या नथी परंतु जेना वर्णनथी व्यासने शोकापनोद थयो हतो तेवा विशुद्ध साक्षात् मोक्षनी साथे संबन्ध धरावनारा भागवत धर्मोज वर्णव्या छे. **'पुष्पेभ्य इव षट्पदः' 'यावानर्थ उदपाने'** आ वचनमां कहेला न्याय प्रमाणे दत्तात्रेय मुनिनी पेठे सर्व शास्त्रमांथी सार सार ग्रहण करीने अमे कहीए छीए' एम श्रीजिज घणे स्थळे वचनामृतमां कहेछे ते नीचेनां वचनो उपरथी समजाशे. लो० ८ 'श्रीमद्भागवतादिक जे आठ सच्छास्त्र तेमांथी कांइ त्याग करवा योग्य छे के सर्व ग्रहण करवा योग्य छे?' आ प्रश्नना उत्तरमां 'ए सर्वे ग्रन्थमां पण अनेक प्रकारनां प्रकरण छे ते सर्व प्रकरणे करीने भगवानना शरणने पाम्या जे भक्त तेमनां अधिकारने अनुसारे अंग कह्यां छे माटे सर्वे ग्रहण करवा योग्य छे पण (**'यावानर्थ उदपाने'** आ न्याय प्रमाणे) सर्वे प्रकरणमांथी जे प्रकरण पोताना अंगमां मळतुं आवतुं होय तेने ग्रहण करवुं अने बीजानो त्याग करवो. अने एम जाणवुं जे ए छे तो साचुं पण ए बीजा भक्तने अर्थे छे पण मारे अर्थे नथी' पं० २ 'सांख्य अने योग ए बेयनो सिद्धांत तमे कीर्तन गायां त्यांसुधी अमे विचार्यो छे ते कहिये ते सांभळो…एवी रीते सांख्यशास्त्र तथा योगशास्त्र तेनो जे सनातन सिद्धांत छे ते अमे यथार्थ विचारीने कह्योछे.' मं० १ 'अने वेद शास्त्र पुराण इतिहास ए सर्वे ग्रन्थोनो एज गलितार्थ छे. आ जे अमे वात करी छे ते सर्वे शास्त्रनुं रहस्य छे' म० १३ 'अने सर्वे शास्त्रमांपण मळती आवे छे……अने तमने आ वात करी ते सर्वे

शास्त्रनो सिद्धांत छे' म० २८ 'आ वार्ता जे अमे करी छे ते केवी छे तो वेद शास्त्र पुराण आदिक जेजे कल्याणने अर्थे पृथ्वीनेविषे शब्दमात्र छे ते सर्वेनुं अमे श्रवण करीने तेनुं सार काढीने आ वार्ता करी छे ते परम रहस्य छे ने सारनुंपण सार छे......अने पूर्वे जेजे मोक्षने पामी गया छे अने हवे जेजे पामशे ने हमणां जेजे मोक्षने मार्गे चाल्या छे ते सर्वेने आ वार्ता जीवनदोरीरूप छे' म० ३५ 'अमे श्रीमद्भागवतादिक आठ ग्रंथनुं अतिशय प्रतिपादन कर्युं छे माटे ए ग्रन्थने सांभळवा ने भणवा' व० १८ 'अमारा संप्रदायमां अतिप्रमाणरूप जे शास्त्र छे तेने जाणवां ते शास्त्रनां नाम-वेद, व्याससूत्र, श्रीमद्भागवत पुराण, विष्णुसहस्रनाम, भगवद्गीता, विदुरनीति, श्रीवासुदेवमाहात्म्य अने याज्ञवल्क्यस्मृति ए जे आठ शास्त्र तेने जाणवां' म० ३१ 'सर्वे शास्त्रनुं रहस्य आ वार्ता छे' म० ८ 'अने ते शास्त्र प्रमाणेज अमेपण कहीए छीए' अंत्य० १० 'वेद पुराण इतिहास अने स्मृतिओ ए सर्वे शास्त्रमांथी अमे ए सिद्धांत कर्यो छे' अंत्य० ३६ 'अमे सर्वे शास्त्रने सांभळीने ए सिद्धांत कर्यो छे' अंत्य० ३९ 'अने आ वात अमे करीए छीए ते कांइ बुद्धिनी कल्पनाए नथी करता' हरिवाक्यसुधासिंधुमां वचनामृतने **'सच्छास्त्रैः संमतानि च'** **'सच्छास्त्रैः संमानितः'** एवुं विशेषण आप्युं छे. एवी रीते उत्कर्षविशेषथी स्वाभिमतपणे मानेला आठ सच्छास्त्रोने अनुसारे तेना साररूप परम रहस्यार्थो आ वचनामृतमां वर्णवानुं स्वयं श्रीहरि कहेछे तेथी आमां कोइपण विषय निर्मूळ के अप्रामाणिक नथी जेथी विषयोथी पण वचनामृतनी प्रमाणता सुस्थिर थायछे. एवी रीते उपदेष्टा, संग्रहकर्ता अने विषयोनी प्रमाणताथी वचनामृतनी वेदवत् स्वतःप्रमाणता सिद्ध थायछे.

विषय

सर्व कोइने एवी जिज्ञासा रहे के 'अमुक प्रबन्धमां कयो विषय हशे' विषय विज्ञान विना विदुषोनी प्रबन्धमां प्रवृत्ति थती नथी तेथी विषय वर्णवानी पण प्रथम जरुर जणायछे. जेम वेदांतमां सत् ब्रह्म ईशादिशब्दथी प्रतिपादन करेला परंब्रह्म परमात्माज प्रधानप्रतिपाद्य परम विषय होवाथी **'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा'** एवो आरंभ करेछे. जेम गीतामां श्रीकृष्ण भगवानज मुख्य विषय होवाथी **'स्वधर्मज्ञानवैराग्यसाध्यभक्त्येकगोचरः । नारायणः परंब्रह्म गीताशास्त्रे समीरितः'** एवो अर्थसंग्रह

करेछे. तेम आ वचनामृतमां स्वधर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्यज्ञानथी साध्य एवी भक्ति के प्रपत्तिथी प्राप्य सिद्धोपायरूप एवुं जे प्रकटतर स्वस्वरूप तेज प्रधानप्रतिपाद्य विषय छे. ते स्वस्वरूप श्रीकृष्णादिशब्दथी आ प्रबन्धमां परोक्षापरोक्षपणे प्रतिपादन कर्युं छे. आ अर्थ शतानंदमुनिए सुधासिंधुमां सूचव्यो छे के-'पारोक्ष्येणात्र कथितं माहात्म्यं हरिणास्ति यत् । कृष्णस्य च सतां तत्तु ज्ञेयं तस्य च तत्सताम् ॥ धर्मज्ञानविरागाढ्यभक्तिशिक्षा च या कृता । सापि साक्षात्स्वभक्तानां तद्दार्ढ्यायेति गम्यताम् ॥' जेमां सर्वथा सर्वार्थनो अन्वय थतो होय तेज प्रकृष्ट प्रमेय मानी शकायछे. परमात्मस्वरूपथी प्रकृष्ट प्रमेय कोइ पण नहि होवाथी तेज प्रधान विषय छे. एम 'तत्त्वं जिज्ञासमानानां हेतुभिः सर्वतोमुखैः । तत्त्वमेको महायोगी हरिर्नारायणः परः ॥' 'नारायणपरा वेदाः' 'वासुदेवपरा वेदाः' 'वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्य.' 'वचसां वाच्यमुत्तमम्' 'प्रतिष्ठा यत्र शाश्वती' 'परमार्थस्त्वमेवैको नान्योऽस्ति' इत्यादि वचनो प्रतिपादन करेछे. तत्त्व एटले प्रामाणिक अर्थ. परमार्थ एटले प्रधानार्थ. परमात्माज परमप्राप्य अने परमप्रापक होवाथी परमविषय होइ शकेछे आ अर्थ 'परं ज्योतिरुपसंपद्य' 'परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यं' 'रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति' 'ब्रह्मविदाप्नोति परं' 'परमं साम्यमुपैति' 'एतमितः प्रेत्याभिसंभवितास्मि' 'मामुपेत्य तु कौन्तेय' 'मद्भक्ता यान्ति मामपि' 'यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्' 'अमृतस्यैष सेतुः' 'यमेवैष वृणुते तेन लभ्य.' 'मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये' 'मामेव ये प्रपद्यन्ते' 'सर्वधर्मान् परित्यज्य' 'त्वमेवोपायभूतो मे' 'तदेकोपायतायाच्ञा' इत्यादि श्रुति स्मृतिओ स्पष्टपणे कहेछे. 'फलमत उपपत्तेः' आ सूत्रमांपण उक्तार्थ स्पष्ट वर्णव्यो छे. आ ग्रन्थमां स्वस्वरूपनी परोक्षापरोक्षपणे प्राप्यता अने प्रापकता बहुज बतावी छे. प्र० ३१ सा० २ लो० ३-७-११-१४-१८ म० ९-१३-३५ अन्त्य० ३१-३८ विगेरेमां स्वप्राप्यता कही छे अने प्र० ३३ लो० ६ म० ९-६६ व० ५ विगेरेमां 'भगवाननो जे दृढ आशरो एज एक सर्व साधनमां मोटुं साधन छे तेणेकरीने भगवान् राजी थायछे' 'पण भगवाननी मूर्तिनुं बळ अतिशय राखवुं' 'जेम अर्जुन हता तेनेतो भगवानना स्वरूपनुं बळ हतुं' 'भगवानना आश्रयनुं बळ राखी रह्या' 'माटे बुद्धिमाननेतो भगवत्स्वरूपनुं बळ अतिशय राख्युं

जोइए' 'कल्याणतो एक भगवानना आश्रये करीनेज छे···एटले एक भगवानथतेज कल्याण छे अने साधन छे तेतो भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे छे' इत्यादि वाक्यथी स्वप्रापकतापण कही छे. यद्यपि भक्ति अने प्रपत्ति परमात्मप्राप्तिमां मुख्य उपाय मानी छे परंतु तेपण परमात्मानी प्रसन्नताद्वारा उपाय थायछे पण स्वतंत्रपणे थती नथी जेथी तेपण मुख्य उपाय नथी. साध्य अने सिद्ध एवा भेदथी धर्म बे प्रकारनो छे तेमा सिद्ध-धर्मतो भगवानज छे अने साध्य धर्मतो भगवाननो आश्रित छे एम **'कृष्णं धर्मं सनातनं' 'धर्मस्य प्रभुरच्युतः' 'ब्रह्मण्ये धर्मवर्मणि' 'अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च'** इत्यादि प्रयोगो कहेछे. भक्तिना आश्रय तो भगवानज छे ए निर्विवाद छे. आ अर्थ म. ४–१६ मां वर्णव्यो छे. यद्यपि आ प्रबन्धमां धर्म, ज्ञान, वैराग्य, माहात्म्यज्ञान, भक्ति प्रपत्ति आदिक अने तेमां उपयोगी सत्संगादि घणा विषयो वर्णव्या छे परंतु **'प्रधानेन व्यपदेशा भवन्ति'** आ न्यायने अनुसारे तेवो व्यपदेश छे. सर्वथी प्रधान विषय परमात्मा छे अने बीजा अवान्तर विषयो छे. माटे हवे सिद्ध थयुं के आ प्रबन्धमां परोक्षापरोक्षपणे प्रतिपादन करेलुं प्राप्यप्रापकभूत स्वस्वरूपज प्रधान प्रतिपाद्य परम विषय छे.

प्रकारांतरथी कहीए तो एमपण कही शकाय के–तत्त्व हित अने पुरुषार्थ आ त्रण विषयो छे. तत्त्व एटले आत्मपरमात्मस्वरूप, हित एटले आत्मपरमात्मप्राप्तिना ज्ञान भक्ति विगेरे उपायो. पुरुषार्थ एटले आत्यंतिक मोक्षरूपफळ. एम पण विभाग क्ही शकाय के–उपायोपेयस्वरूप तेज विषय छे. भक्ति विगेरे उपायस्वरूप अने परमात्म-स्वरूप ते उपेयस्वरूप समजवुं.

प्रयोजन

जे कोइ शब्द छे ते प्रयोजनपर्यवसायी छे. लोकमां के शास्त्रमां प्रयोजन विनानो कोइपण वाक्यप्रयोग होतो नथी तेम प्रयोजनना उद्देश विना श्रवणपण संभावित नथी. **'प्रयोजन विना मन्द-पण प्रवर्ततो नथी'** एवुं अभियुक्तवचन पण छे. प्रयोजनपण मुख्य अने अवांतर होयछे. अनिष्टनी निवृत्ति ते अवांतर प्रयोजन अने इष्टनी प्राप्ति ते परमप्रयोजन गणायछे. आ प्रबन्धनुं परम प्रयोजन शुं छे तेनो विचार करतां मुख्य विषयपणे निरूपण करेलं, मोक्षदशामां अनुभाव्य, स्वतःसिद्धफळरूप, प्रत्यक्ष स्वस्वरूपनी प्राप्ति, तेज जणायछे. जे निरतिशय भोग्य होय तेज परम प्रयोजन मानी

शकाय. परमात्मानुं स्वरूप निरवधिकातिशय आनंदरूप होवाथी तेज निरतिशय परम भोग्य छे. आ अर्थ 'आनन्दो ब्रह्म' 'रसो वै सः' 'यदेष आकाश आनन्दो न स्यात् कः प्राण्यात्' 'कं ब्रह्म खं ब्रह्म' 'यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह । आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्' 'आनन्दमयोऽभ्यासात्' इत्यादि श्रुति सूत्रो सूचवेछे. माटेज 'परं ज्योतिरुपसंपद्य' 'परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यं' 'आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिं' 'वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः' इत्यादि वचनो आनंदमय परमात्माने परमप्राप्य अने परमभोग्यपणे कहेछे. परमपद कल्याण मोक्ष के परमपुरुषार्थ जे शास्त्रो वर्णवेछे ते परमात्मस्वरूपथी अतिरिक्त नथी. आ समग्र अर्थ 'तत्तु समन्वयात्' आ सूत्रमां स्पष्टपणे वर्णव्यो छे. माटे हवे उपर कह्या प्रमाणे एमज सिद्ध थायछे के–स्वतःसिद्धफळरूप, परमप्राप्य, मोक्षदशामां अनुभाव्य, निरतिशय सुखरूप, अक्षरधामस्थ, आराध्य, दिव्य, स्वस्वरूप प्रदर्शनपूर्वक स्वस्वरूपनो बोध आपी पोतामां अनन्यनिष्ठा करावी स्वस्वरूपरूप इष्टनी अनायासथी प्राप्ति करावबी, तेज आ प्रबन्धनुं परम प्रयोजन मानवुं वास्तविक जणायछे. उपायप्रदर्शन, अनिष्टनिवृत्ति विगेरेतो अवांतर प्रयोजन छे. सुखरूप मारा स्वरूपनो सम्प्रकार बोध आपी परमप्राप्यरूप मारुं स्वरूप पमाडवारूप परममोक्ष करावबो एज मारा अवतारनुं मुख्य प्रयोजन छे एम सुधासिंधुमां म० १३ 'एतां बोधयितुं सम्यक् ममैवेदं जनुर्नृषु' आ वाक्यथी स्वयं श्रीहरिज कहेछे. संसाररूप अनिष्टनी निवृत्ति करावी प्रत्यक्ष स्वस्वरूपरूप इष्टनी प्राप्ति करावारूप स्वोपदेशनुं प्रयोजन तत्रतत्र वर्णव्युं छे ते नीचेनां श्रीहरिवाक्योथी समजायछे. म० १३ 'आ सर्वे संत तथा हरिभक्त छे तेमांथी ए वात कोइने समजाय जाय तो तेना जीवनुं रुडुं थाय ते सारु वात करीए छीए'''अने ज्यारे ए स्वरूप जेने जाण्यामां आवे तेने जेम अमने कोइ विषय संबन्धी सुखमां आसक्ति नथी तेम ते पुरुषनेपण क्यांइ आसक्ति रहेज नहि अने ते स्वरूपनेतो तमेपण देखोछो पण तमारा समझ्यामां परिपूर्ण आवतुं नथी अने ज्यारे ए वार्ता समझ्यामां आवशे त्यारे पंच विषय के काम क्रोधादिक स्वभाव ते जिलामां प्रयास थशे नहि सहजे जिताइ जशे''''''अने ज्यारे एवुं भगवाननुं स्वरूप छे तेने दृढ करीने समझशो त्यारे तमने कोइ प्रकारनुं विघ्न कल्याणना मार्गमां नहि थाय अने ए भगवानना स्वरूपनी दृढता

विना तो गमे तेटलो त्याग राखो ने गमे तेटला उपवास करो पण कोइ रीते वांधो भागशे नहि···माटे देह छतेज जे प्रकारे आवुं रहस्य समझाय तेवो उपाय करवो···कोइ रीते आ वात समझाय तो बहु सारुं थाय···जे तेजनेविषे मूर्ति छे तेज आ प्रत्यक्ष महाराज छे एम जाणज्यो···एम जाणशो तोपण मारेविषे हेत रहेशे तेणे करीने तमारुं परम कल्याण थशे अने आ वाततो नित्य नवीने नवी राखज्यो पण गाफलपणे करीने विसारी देशो मां···अने जेजे भगवाननी वात करो तेते वातनेविषे आ वातनुं बीज लावज्यो एम अमारी आज्ञा छे अने आ वार्ता तो एवी जीवनदार छे जे देह रहे त्यां सुधीपण नित्य प्रत्ये करवी अने देह मुकीने भागवती तनुए करीनेपण आज वार्ता करवी छे अने आ जे अमे तमने वात कही ते सर्व शास्त्रनो सिद्धांत छे.' पं० ६ 'एवी रीते उपासनानी दृढता भगवानने विषे राखशो तो कदाचित् कांइक अवळुं वर्ताइ जशे तोपण अंते कल्याण थशे' पं० ७ 'आवी रीते जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनी दृढ उपासना होय तेने···कांइ अवळुं वर्ताइ जाय तोपण तेनुं कल्याण थाय···भगवानने जाण्यामां संशय होय···तेनुं कल्याण थवुं अतिकठिन छे' लो० १८ 'अने आ जे वात छे ते सुझेतो आज समझो तो एटली समझवी छे अने सुझेतो सो वर्षे करीने समझो तोपण एटली समझवी छे अने आ वात समझीने एनी दृढतानी गांठ पड्या विना छुटको नथी माटे अमारी वात छे ते सर्व हरिभक्तने याद राखीने परस्पर करवी' प्र० १ 'भगवाननी मूर्ति चिंतामणि तुल्य छे···अने तेथी कोइ मोटी प्राप्तिपण नथी' प्र० ३१ 'अक्षरातीत एवा जे भगवान् पुरुषोत्तम ते अमने प्रत्यक्ष मळ्या छे अने अमे कृतार्थ थया छीए' पं० १ 'संपूर्ण सुखतो भगवानने समीपे रह्युंछे' अ० २ 'परमेश्वरने सर्वे प्रकारे सुखना सिंधु जाणेछे···देह मुकीने जेने पामवा हता तेतो देह छतांज मळ्या छे माटे परमपद कहीए मोक्ष कहीए तेने छवे देहेज पाम्यो छे.' प्र० ७१ 'भगवान् मळ्या पछी जेना मनमां एम रहेतुं होय जे ज्यारे अक्षरादिक धाम देखीशुं अथवा कोटि कोटि सूर्यनो प्रकाश देखीशुं त्यारे आपणुं कल्याण थयुं एवी समझणवाळानेतो यथार्थ भगवाननो निश्चय नथी' म० ८ 'प्रत्यक्ष भगवाननी प्राप्ति तेज परम पद छे' अंत्य० १३ 'आपणे तो भगवान थकी कांइ अधिक नथी' अन्त्य० १४ 'परमेश्वरथकीतो बीजुं कांइ सार वस्तु नथी···भगवान सर्वसुखना निधि छे' अंत्य २७ 'अलौकिक सुखमय एवी जे भग-

वाननी दिव्यमूर्ति' अंत्य० २८ 'सर्वे सुखमय मूर्तितो एक भगवानज छे' म० ४५ 'जेजे मारा कहेवाया छो तेमा मारे एक तलमात्र कसर रहेवा देवी नथी…तेना हृदयमा कोइ जातनी वासना तथा कोइ जातनो अयोग्य स्वभाव ते रहेवा देवो नथी अने ए सर्व मायिक उपाधि थकी रहित सत्तामात्र एवो जे आत्मा ते रूपे थइने भगवाननी भक्ति करो एवा सर्वने करवा छे पण कोइ जातनो मायानो गुण रहेवा देवो नथी' एवी रीते आ निबन्धनु प्रयोजन समझायछे.

अधिकारी

'आ प्रबन्धना श्रवणादिकमा अने तदुक्त अर्थोना अनुष्ठानमा केवा लक्षणवाळो अधिकारी होइ शके' आ एक विचार प्राप्त थायछे. अधिकारपरत्वे शास्त्रकारो जुदा जुदा प्रकारो वर्णवेछे परन्तु सारतो एटलोज समझायछे के-मुमुक्षुता तेज प्रथम अधिकार संपादनमां पर्याप्त अर्थ छे. मुमुक्षा एटले अध्यात्मादि तापत्रयथी मुक्त थइने निरवधिकातिशय ब्रह्मानंद पामवानी इच्छाने कहेछे. कर्म अने कर्मप्राप्य लोक भोगनी क्षयिष्णुतानो विचार करवाथी अने भगवदानंदनी निरतिशयता विचार करवाथी मोक्षनी अभिलाषा थायछे तेज ब्रह्मविद्यानो अधिकारी थइ शके छे अधिकारपरत्वे उपनिषदादिकमा निर्वेद, शम, दम, श्रद्धा, ब्रह्मचर्य, गुरुप्रपत्ति, गुरुसेवा, गुरुवचनविश्वास, निर्मान, अनसूया, प्रणिपात, गुरुमा देवबुद्धि विगेरे बीजा घणा गुणो वर्णव्या छे अने अनधिकारपरत्वे दोषोपण वर्णव्या छे-'तद्यथेह कर्मचितो लोकः क्षीयते एवमेवामुत्र पुण्यचितो लोकः क्षीयते' 'अन्तवदेवास्य तद्भवति' 'नह्यध्रुवैः प्राप्यते ध्रुवं कर्मभिः' 'प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपाः' 'क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति' 'परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायात् नास्त्यकृतः कृतेन तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः…तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्यक्प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय…प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम्' 'आचार्यदेवो भव' "यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ। तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः' 'तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया संवत्सरं संवत्स्यथ' 'द्वादश संवत्सरं ब्रह्मचर्यं चर पश्चात्ते उपदिशामि' 'आचार्योपासनं चैव' 'शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्' 'तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया' 'प्रसंगमजरं पाश'

'यस्यात्मबुद्धिः' 'शुश्रूषमाण आचार्यं सदोपासीत नीचवत्' 'एतत्सर्वं गुरौ भक्त्या पुरुषो ह्यञ्जसा जयेत्' 'तत्र भागवतान् धर्मान् शिक्षेद्गुर्वात्मदैवतः' 'अमाययाऽनुवृत्त्या' 'दण्डवत्प्रणमेद्भूमौ निर्लज्जो गुरुसन्निधौ। शरीरमर्थं प्राणं च सद्गुरुभ्यो निवेदयेत्' 'पालनीयं गुरोर्वाक्यं सर्वथा परमादरात्' 'श्रद्धावान् लभते ज्ञानं' 'आचार्यस्य प्रसादेन मम सर्वमभीप्सितम्। प्राप्नुयामिति यस्यास्ति विश्वासः स सुखी भवेत्' 'तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति' 'गुरुशुश्रूषया विद्या' 'अस्माल्लोकादुपरते मयि ज्ञानं मदाश्रयम्। अर्हत्युद्धव एवाद्धा संप्रत्यात्मवतां वरः। नोद्धवोऽण्वपि मन्न्यूनो यद्गुणैर्नार्दितः प्रभुः। अतो मद्वयुनं लोकं ग्राहयन्निह तिष्ठतु॥' 'श्रद्दधानाय भक्ताय विनीतायानसूयवे। भूतेषु कृतमैत्राय शुश्रूषाभिरताय च॥ बहिर्जातविरागाय शांतचित्ताय दीयताम्। निर्मत्सराय शुचये यस्याहं प्रेयसां प्रियः॥' 'अनुव्रतानां शिष्याणां पुत्राणां च द्विजोत्तम। अनापृष्टमपि ब्रूयुर्गुरवो दीनवत्सलाः' 'ब्रूयुः स्निग्धस्य शिष्यस्य गुरवो गुह्यमप्युत' 'श्रद्धावाननसूयश्च' 'गुरुसेवापरो नित्यं तथ्यवादी गुरोः पुरः' 'भजस्व परया भक्त्या ततस्त्वं गुरुमीश्वरं' 'आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित्। न मर्त्यबुद्ध्यासूयेत सर्वदेवमयो गुरुः' 'यस्य साक्षाद्भगवति ज्ञानदीपप्रदे गुरौ। मर्त्यासद्धीः श्रुतं तस्य सर्वं कुंजरशौचवत्' 'विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि। असूयकायानृजवेऽयताय न मां ब्रूया वीर्यवती तथा स्याम्' 'इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन। न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति' 'नैतत्खलायोपदिशेन्नाविनीताय कर्हिचित्। न स्तब्धाय न भिन्नाय नैव धर्मध्वजाय च॥ न लोलुपायोपदिशेन्न गृहारूढचेतसे। नाभक्ताय च मे जातु न मद्भक्तद्विषामपि॥' 'युक्ताय सम्पदा दैव्या दातव्येयं तु पत्रिका। आसुर्या संपदाढ्याय पुंसे देया न कर्हिचित्' उपरना वचनोने अनुसारे अभियुक्तकृत संग्रह छे के-'सद्बुद्धिः साधुसेवी समुचितचरितस्तत्त्वबोधाभिलाषी शुश्रूषुस्त्यक्तमानः प्रणिपतनपरः प्रश्नकालप्रतीक्षः। शान्तो दान्तोऽनसूयः शरणमुपगतः शास्त्रविश्वासशाली शिष्यः प्राप्तः परीक्षां कृतविदभिमतां तत्त्वतः शिक्षणीयः॥'इत्यादि.

उपरना वचनोमा वर्णवेला सर्वगुणो स्वोपदेशना अधिकारिपरत्वे आ निवन्धमा तत्र तत्र सविवेचन वर्णव्या छे. प्रथमतो पोतेज रामानंदस्वामी अने मुक्तानंदस्वामी आगळ तेवी शिष्यवृत्तिना गुणो स्वभक्तशिक्षार्थे बताव्या छे श्रवणोपयोगि शम दमादितो स्वोपदेशना आरंभमाज कहेछे के 'सावधान थइने सामळो' विगेरे. प्र०१८ अन्त्य० २७ श्रवण करीने अनुष्ठानमा नहि प्रवर्तनारानीपण अनधिकारिता सूचवी छे. वचनामृतना अधिकारिपरत्वे श्रीजिनां साक्षात् शास्त्रानुसारि वचनो–लो० ९ 'पिंड ब्रह्मांड सर्व पदार्थने काळनुं भक्ष्य जाणे' म० २४ 'भगवाननु जे अक्षरधाम ने ते धामनेविषे रही एवी जे भगवाननी मूर्ति ने ते धामनेविषे रह्या एवा जे भगवानना भक्त ते विना जेजे लोक छे ने ते लोकनेविषे रह्या एवा जे देव छे ने ते देवना जे वैभव छे ते सर्वे नाशवंत छे एम जाणीने …दु खे सहित एवा जे सुख तेथकी वैराग्यने पामीने' लो० ९ 'जे धर्म छे तेतो काची बुद्धि होय ने प्रथमज कर्मकांडरूप जे स्मृतियो तेनुं श्रवण करे तो उपजे अने ज्यारे धर्मनेविषे दृढता थाय त्यारपछी उपासनाना ग्रंथनुं श्रवण करे त्यारे एने ज्ञान भक्ति वैराग्य त्रणे उपजे' ('अथातोब्रह्मजिज्ञासा' आ सूत्रनो अर्थ छे एटले जे कर्मविचारकारी छे तेज ब्रह्मविचाराधिकारी छे) लो० ३ 'जेम कहे तेम करे ते उपर पोतानी वात करी …स्वामीए भुजनगरथी कही मोकल्युं जे जो सत्सगमा रह्यानो खप होय तो थाभलाने बाथ लइनेपण रहेवुं पडशे' एम मयारामभट्टे आवीने कह्युं त्यारे अमे थाभलाने बाथ लीधी, त्यार पछी तेमणे कह्यु जे मुक्तानदस्वामीनी आज्ञामा रहो पछी अमे स्वामीना दर्शन थया मोर नव महिना सुधी मुक्तानंद स्वामीनी आज्ञामा रह्या' अ० २७ 'मुक्तानंदस्वामीनी आज्ञाने अनुसारे वर्त्या पण अमारा मननुं गमतुं काइ न कर्युं' प्र० ६७ 'जेने आ लोकना सुखमा इच्छा नथी एवा सत्पुरुष छे तेनेविषे देवनी बुद्धि राखे अने जे वचन कहे ते सत्य माने अने ते प्रमाणे वर्ते तो ए सत्पुरुषना गुण होय ते मुमुक्षुमा आवे' अ० २ 'अने ब्रह्मादिकनेपण दुर्लभ एवो जे आ सत्सग तेमा आवीने परमेश्वर विना जेने बीजा पदार्थमा हेत रहेछे तेनुं कारण ए छे जे जेवी ए जीवने परोक्षनेविषे प्रतीति छे तेवी प्रत्यक्षनेविषे दृढपणे प्रतीति थती नथी' ते श्रुतिमा कह्युं छे जे–'जेवी परोक्ष देवनेविषे जीवने प्रतीति छे तेवी जो प्रत्यक्ष गुरुरूप हरिनेविषे आवे तो जेटला अर्थ प्राप्त थवाना कह्या छे तेटला सर्वे अर्थ तेने प्राप्त थायछे' प्र० १८ 'माटे आ वार्ता छे ते छेक मूर्खपणे पशुने पाडे वर्ततो होय तेनेतो न समझाय अने जे काइक

विवेकी होय अने काइक भगवाननो आश्रित होय तेनेतो आ वार्ता तुरत समझ्यामा आवेछे' प्र० ७३ 'कोइ अमने साचो थइने मन अर्पे अने लेशमात्र अतराय राखे नहि···अने जेणे मन न अर्प्युं होय तेने तो उपदेश करतांपण वीक लागे जे शुं जाणीए सवळुं समझशे के अवळुं समझशे' प्र० ७६ 'अने जेने पंच वर्तमानमा कोइ वाते खोव्य न होय अने गमे तेवा वचनना मीडामा लइए अने एनुं गमतुं मुकावीने अमारा गमतामा राखीए तोपण कोइ रीते देहपर्यंत मुझाय नहि···एवा हरि भक्त उपर अमारे वगर कर्युं सहजेज हेत थायछे' अत्य० २४ 'अने जेनो जे स्वभाव होय तेने उपर वारवार अमे कठण वचनना डंक मार्या होय ने कचवाव्यो होय तोपण कोइ रीते पाछो न पड्यो होय ते उपर तो अमारे एवुं हेत रहेछे ते जाग्रत् स्वप्नमा सभार्या विना ते हेत एमनुं एम रह्युं जायछे ने गमे तेम थाय पण ते हेत टळतुं नथी' अत्य० २३ 'अने शिक्षाने अर्थे भगवान ने भगवानना भक्त पोताने वढे त्यारेपण एम विचारवुं जे मारा मोटा भाग्य जे मने भगवान ने भगवानना भक्त वढ्या जेणे करीने मारामा अवगुण हशे ते जशे एवी रीते वढे तोपण राजी रहेवुं पण वढे त्यारे मनमा शोक न करवो ने कचवावु नहि' प्र० ६ 'भगवान् अने साधु पोताना हितने अर्थे कठण वचन कहेछे तेने पोताना हितकारी मानेछे अने दुःख नथी लगाडतो ··पोताने विषे जे गुणनुं गान तेनो त्याग करीने···सतनेविषे विश्वास राखे' प्र० १५ 'भगवान् तथा सत ते मने जे जे वचन कहेशे तेमज मारे करवुं छे···आटलुं वचन माराथी मनाशे अने आटलुं वचन नहि मनाय एवुं वचन तो भुल्येपण न कहे' प्र० १६ 'अने भगवान् ने सत ते जेजे वचन कहे तेने परम सत्य करीने माने पण ते वचनमां सशय करे नहि' प्र० ५४ 'जेवो ए जीवने पोताना सवन्धिनेविषे दृढ प्रसग छे तेवोने तेवोज प्रसग जो भगवानना एकातिक साधुने विषे थाय तो ए जीवने मोक्षनुं द्वार उघाडुं थाय' प्र० ५६ 'निर्मानी भक्तमां मोटा गुण आवे···निर्मानि भक्त सर्वथी श्रेष्ठ छे' प्र० ५८ 'प्रथमतो मोटा सत साथे निष्कपटपणे वर्ते···अने सतनो गुलाम थइने रहे ने अतरमा मान टळे भावे रहे पण देहे करीने सर्वने नमतो रहे ··सर्वे भक्त मोटा छे ने हुंतो न्यून छु एम जाणीने' प्र० ७८ 'आ तो कृतघ्नी नथी जेनीपासे चार अक्षर भण्यो छे तेनो गुण मुकतो नथी ··त्रिश लक्षणे युक्त सत होय तेनेविषे गुरुबुद्धि देवबुद्धि राखीने मन कर्मे वचने एनो सग करे' सा० २ 'अने परमेश्वर साथे अथवा मोटा सत साथे प्रश्न

उत्तर करता होइए अने तेमां परस्पर वाद विवाद थतो होय अने तेमां पोते जितीए एम जणाय तोपण जे मोटाथी नानो होय तेने मोटाने समीपे नमी देवुं···हे महाराज! तमे जे वचन कर्युं तेतो ठीक छे पण आटली मने तेमां आशका थायछे ए प्रकारनुं दीन थइने वचन कहेवुं-विगेरे' सा० ४ 'भगवान ने भगवानना सतना वचनमा दृढ विश्वास राखवो' सा० १० 'अने जेने आवी रामजणतो आवी शके नहि ने जो ते सतना समागममा पडयो रहे ने ते सत निस पाच खासडा मारे तोपण ते अपमाननुं सहन करे ने सत्नो समागम मुकी शके नहि जेम सर्पीणनो वन्धाणी होय-विगेरे' सा० १२ 'शास्त्रना वचनमा विश्वास होय' का० ६ 'श्रीमद्भागवतनेविषे निर्मत्सर एवा जे सत तेनेज भागवतधर्मना अधिकारी कह्याछे ··अने अमे तो जे मन कर्म वचने परमेश्वरना भक्त छे तेने अर्थे अमारो देहपण श्रीकृष्णार्पण करी राख्यो छे' का० १२ 'आवी रीतनी वातमां विश्वास राखीने प्रीतिए करीने साभळे तो तेना सर्वे विकार टळी जायछे··· आवी रीतनी वातने आस्तिक थइने श्रद्धाए सहित साभळे तो' लो० ८ 'जेना संत वखाण करेछे तेनेज श्रद्धा छे···ने सतनो विश्वास छे माटे ए वधी गयो' लो० १० 'तथा जे विश्वासी होय कहेता एम समजतो होय जे आवा मोटा सत तथा भगवान् जे वात करेछे ते एमज छे पण एमा काइ सशय नथी · एम समजीने ते भगवान् तथा सत जेम कहे तेम करवा लागे ए बे जणज सुखीया छे' लो० १२ 'ज्यारे मुमुक्षु प्रथम गुरुपासे आवे त्यारे···पोतानी जे श्रद्धा तेनु जे मंद तीक्ष्णपणु···जो श्रोताने उत्कृष्ट श्रद्धा उपजे तथा रुडा देशादिक प्राप्त थाय' म० ६ 'व्यास वाल्मीक इत्यादिक जे मोटा पुरुष तेना वचननो विश्वास नथी तेने नास्तिक जाणवो' म० २६ 'ए रीत तो सर्वे ठेकाणे छे जे, जे चाकर होय अथवा शिष्य होय तेने राजा होय तथा गुरु होय ते जेम वढीने कहेवा माडे तेमां जो रावळु रेतो जाय तो ते उपर राजा तथा गुरुने अतिशय हेत थायछे अने शिखामणनी वात कहे ने अवळु ले तो ते उपर हेत थतु नथी' म० ३७ 'स्वभाव मुकाव्या सारु जे सत्पुरुष उपदेश करता होय तेना वचनने विषे अतिशय विश्वास होय अने उपदेशना करनारानी उपर साभळनाराने अतिशय प्रीति होय अने उपदेशनो करनारो होय ते गमे तेटला दु खवीने कठण वचन कहे तोपण तेने हितकारीज मानतो जाय' म० ४५ 'तमेपण सुधा सावधान रहज्यो, जो जराय गाफलाई

राखशो तो तमारो पग टकशे नहि' म० ४७ 'सत्पुरुष होय ते विषयनुं खंडन करता होय त्यारे मुमुक्षु होय तेने मनमां दुःखाइ जवुं नहि...अने साधु जेम वढीने कहे तेम गुण लेवो पण अवगुण लेवो नहि, ते मुक्तानंदस्वामीना कीर्तनमां कह्युं छे जे-'**सुळी उपर शयन करावे तोय साधुने संगे रहीएरे**' म० ५२ 'अने समजु होय तेने कोइक वढीने कहे त्यारे सामो गुण ले अने जे मूर्ख होय तेने कोइक हितनी वात कहे त्यारे मुझाय जाय' म० ५४ 'जेने भगवानना संतनेविषे आत्मबुद्धि छे...ए वार्ता भागवतमां कहीछे—'**यस्यात्मबुद्धिः**' अम० ३ 'भगवान ने भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी दर्शन करवुं तेमां अतिशय वेगवान् श्रद्धा वर्तती होय...जे सेवक मानी हशे ते तो कोइने नहि गमतो होय...अने धणीनो राजिपो तो जेवो निर्मानी सेवक उपर होय एवो मानी उपर न होय माटे धणीनुं गमतुं करे तेज सेवक साचो' अंत्य० ३९ 'अने आ जे बे प्रकारे वार्ता छे तेने दैवी जीव सांभळे त्यारे तेना हृदयमां लागीने रगरगमां प्रवर्ती जाय अने जे आसुरी जीव होय ने ते सांभळे त्यारे तेने तो कानथी बहारज नीकळी जाय पण हृदयमां उत्तरे नहि, जेम श्वान होय ने ते खीर खाय ते तेना पेटमां रहेज नहि वमन थइ जाय ने खीर जेवुं कांइ भोजन सरस न कहेवाय तोपण ते श्वानना पेटमां रहीने रगरगमां प्रवर्ते नहि अने ते खीरने माणस खाय त्यारे तेने पेटमां रहे ने रगरगमां प्रवर्ते ने बहु सुख थाय, तेम श्वान जेवो जे आसुरी जीव तेना हृदयमां तो आ वात पेसे नहि ने माणस जेवो जे दैवी जीव तेना हृदयमां उतरे ने रगरगमां व्यापी जाय' (गीतामां '**अभयं सत्त्वसंशुद्धिः**' '**दंभो दर्पोऽभिमानश्च**' इत्यादि वचनथी दैवी आसुरी संपत्ति कही छे) एवी रीते आ निबन्धना अधिकारि स्वरूपना गुणो वर्णव्या छे..

शास्त्रनो अने अर्थनो प्रतिपादक प्रतिपाद्य संबन्ध तो स्फुट छे.

एवी रीते आ प्रबन्धमां विषय, प्रयोजन, अधिकारी अने संबन्धरूप अनुबन्धचतुष्टयनुं स्वरूप अर्थात् वर्णवेलुं स्पष्ट समजायछे.

गुरूनी आवश्यकता

शास्त्र पोते ज्ञानजनक छे परंतु ते गुरुपदेशरूप संस्कारनी अपेक्षा राखेछे. अनुष्ठानमां तो सुतरां गुरुनी अपेक्षा छे. सद्गुरुद्वारा थएलुं ज्ञानज मुमुक्षुने उपकारक थायछे. माटेज ज्ञानमाटे गुरुनी आवश्यकता शास्त्रज वर्णवेछे. लोकरीतिमां पण तेम छे तो मोक्षोपयोगि ज्ञानमां तेम होय तेमां कहेवुंज शुं! 'गुरु विना ज्ञान नहि' एवी अभियुक्ति पण

छे. उपनिषदादिकमां तेवी घणी आख्यायिकाओ अने सदाचारो पण मळी आवेछे. माटेज श्रीजि आ निबन्धमां तत्र तत्र प्रकरणमां ज्ञानमाटे गुरुनी प्रथमावश्यकता कहेछे. अने व० १८ 'तमारो सर्वेनो आचार्य ने गुरु ने उपदेष्टा एवो हुं' इत्यादि पदथी शिष्योने पोतामां गुरुबुद्धि करवानुं प्रथम शीखवेछे. पं० २ 'अमारा जेवा मोटा पासेथी शीखे त्यारे आवडे. नहि तो शास्त्रने भणे साभळेपण आवडे नहि' म० १३ 'अने आवी भगवत्स्वरूप संबन्धी जे वार्ता तेतो शास्त्रमाथीपण पोतानी मेळे समझाय नहि अने सद्ग्रन्थोमां आवी वार्तातो होय पण ज्यारे सत्पुरुष प्रकट थायछे त्यारे तेमना मुख थकीज वात समझ्यामां आवेछे पण पोताना बुद्धिबळे करीने सद्ग्रंथोमांथीपण समझातुं नथी' प्र० ६० 'अने आवी रीतनो जे एकांतिक धर्म तेतो जे एवा निर्वासनिक पुरुष होय अने जेने भगवाननेविषे स्थिति थइ होय तेने वचनेकरीनेज पमाय पण ग्रन्थमां लखी राख्यो होय तेणे करीने नथी पमातो अने कोइक सांभळीने तेवीने तेवीज वात कहेवा जाय तो कहेतांपण आवडे नहि माटे जेने एकांतिकना धर्ममां स्थिति थइ होय ते थकीज एकांतिकनो धर्म पमायछे.' प्र० ६४ 'अने आ वार्ता तो जेने ए भगवानना स्वरूपमां सदा दिव्य साकारपणे उपासनानी दृढ निष्ठा थइ होय ते थकीज पमायछे पण बीजा थकीतो पमातीज नथी' प्र० ६६ 'अने शास्त्रमां जे शब्द छे ते एकांतिक भक्त विना समझावा नथी' लो० ९ 'अने ज्ञान तो एम थाय जे बृहदारण्य छान्दोग्य कठवल्ली आदिक जे उपनिषद् तथा भगवद्गीता तथा वासुदेवमाहात्म्य तथा व्याससूत्र इत्यादिक ग्रथनुं सद्गुरुथकी श्रवण करे' लो० १२ 'उत्कृष्ट ज्ञानवाळो वक्ता मळे' इत्यादि श्रीजिनां वचनो छे. उपरना अर्थने प्रतिपादन करनारां शास्त्रवचनो पण छे—'तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्' 'आचार्यवान् पुरुषो वेद' 'तस्माद्गुरुं प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम्' 'ज्ञानं च नैगमं प्रोक्तं गुरुशिष्यप्रयोजनम्। निमित्तानि च तस्येह प्रोक्तान्यनघ सूरिभिः' 'स्वतो ज्ञानं कुतः पुंसां भक्तिर्वैराग्यमेव वा' 'पापिष्ठः क्षत्रबन्धुश्च पुण्डरीकश्च पुण्यकृत्। आचार्यवत्तया मुक्तौ तस्मादाचार्यवान् भवेत्' इत्यादि. माटे हवे सिद्ध थयुं के ज्ञान माटे प्रथम गुरुनी आवश्यकता छे.

ज्ञानपण सुस्थिरतामाटे अनेक गुरुओथकी श्रवण करवानुं सहेतुक कहेनारां वचनो छे-'**न ह्येकस्माद्गुरोर्ज्ञानं सुस्थिरं स्यात्सुपुष्कलम्। ब्रह्मैतदद्वितीयं वै गीयते बहुधर्षिभिः**' '**सन्ति मे गुरवो राजन् बहवो बुद्ध्युपाश्रिताः**' श्रीकृष्ण भगवान् पोते ज्ञानोपदेश करेछे तथापि ते ज्ञानमी स्थिरता थवा माटे अर्जुनने बीजा गुरुओथकी ज्ञानश्रवण करवानुं कहेछे-'**उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः**' एवा हेतुथीज श्रीजिपण घणे स्थळे स्वोपदेशना श्रवण विधाननी साथे सत्पुरुषथकी उपदेश श्रवण करवो अने समागम करवो विगेरे विधान करेछे. अने पोतेपण स्वभक्त शिक्षार्थे दत्तात्रेयनीपेठे करेला अनेक गुरुओपण कही बताव्या छे. माटे सिद्ध थायछे के अनेक गुरुओथकी पण श्रवण करीने ते ज्ञानने सुस्थिर करवुं.

ज्ञानपण गुरुपरंपरा प्राप्त होय तेज अर्थकर थायछे. तेथीज उपनिषदादिकमां गुरुपरंपरा कहेवानी पद्धति प्रतीत थायछे. '**स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह···अथर्वा तां पुरोवाचाङ्गिरे**' इत्यादि. गीतामांपण '**इमं विवस्वते योगं**' इत्यादि कहेछे. माटेज आ प्रबन्धमां श्रीजि व० १८ गुरुपरंपरा अवश्य जाणवानी कहीने निरूपण करेछे.

गुरुनां लक्षणो

ज्ञानमाटे केवा लक्षणवाळा गुरु करवा तेनोपण विवेक बताव्योछे. '**श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्**' श्रुतवेदान्त होय तथापि रुचिभेदथी अब्रह्मनिष्ठ होय तो ते गुरु करवा लायक नथी एवो अर्थ छे. ब्रह्मनिष्ठ एटले ब्रह्मना साक्षात्कार ज्ञानवाळा. '**शाब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युपशमाश्रयम्**' शब्दब्रह्ममां अने परब्रह्ममां निष्णात (पारंगत) होय अने उपशम दशाने पामेला होय. '**उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः**' शास्त्रना ज्ञानवाळा अने परमात्मतत्त्वना साक्षात्कारवाळा तने ज्ञाननो उपदेश करशे. सुधासिंधुमां '**सम्यक् ज्ञानादिसम्पन्नाद्गुरोश्चोपशमस्थितेः। प्राप्यं ज्ञानं भगवत इष्टसिद्धिर्भवेत्ततः**' एम कह्युंछे. शब्दब्रह्ममां निष्णात थइने जो परब्रह्ममां निष्णात न थाय तो तेना श्रुतनी निष्फळता कही छे '**शब्दब्रह्मणि निष्णातो न निष्णायात्परे यदि। श्रमस्तस्य श्रमफलो ह्यधेनुमिव रक्षतः**' आचार्यपदनी अने गुरुपदनी निरुक्तिपण करी छे '**आचिनोति हि शास्त्रार्थान् आचारे**

स्थापयत्यपि । स्वयमाचरते यस्मादाचार्यस्तेन चोच्यते' (आ अर्थ अंल० ३९ मां सूचव्यो छे 'अगे जेम वर्तीए छीए तेम कहीए छीए') 'गुकारस्त्वन्धकारः स्यात् रुकारस्तन्निरोधकः । अन्धकारनिरोधित्वात् गुरुरित्यभिधीयते' 'जितेन्द्रियः शुचिर्दक्षः सर्वाङ्गो धर्मसंस्थितः । कर्मणा मनसा वाचा भीतेष्वभयदो गुरुः' 'गुरवो दीनवत्सलाः' 'गुरवो हि दयालवः' 'को गुरुरधिगततत्त्वः शिष्यहितायोद्यतः सततम्' 'अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च' इत्यादि गीतोक्त गुणोपण जाणी लेवा. अभियुक्तिमां पण सर्व गुणनो संग्रह करेलो छे-'सिद्धं सत्सम्प्रदाये स्थिरधियमनघं श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं सत्त्वस्थं सत्यवाचं समयनियतया साधुवृत्त्या समेतम् । दंभासूयादिमुक्तं जितविषयगणं दीर्घबन्धुं दयालुं स्खालित्ये शासितारं स्वपरहितपरं देशिकं भूष्णुरीप्सेत्" इत्यादि. केवा गुरु न करवा तेनोपण विवेक बताव्यो छे 'भिन्ननावाश्रितस्तब्धो यथा पारं न गच्छति । ज्ञानहीनं गुरुं प्राप्य कुतो मोक्षमवाप्नुयात्' 'न शिला तारयेच्छिलाम्' 'महाकुलप्रसूतोऽपि सर्वयज्ञेषु दीक्षितः । सहस्रशाखाध्यायी च न गुरुः स्यादवैष्णवः' 'संपन्नो ज्ञानभक्तिभ्यां स्वधर्मरहितस्तु यः। स गुरुर्नैव कर्तव्यः स्त्रीहृतात्मा च कर्हिचित्' 'प्राप्ता स्त्रैणाद्गुरोर्दीक्षा ज्ञानं भक्तिश्च कर्हिचित् । फलेनैव यथाऽफलं युवतिः पण्ढसंगिनी" (आ चार श्लोकनो तात्पर्यार्थ प्र० २९ व० १२ अंल० ३२ मां कह्यो छे) 'गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः । उत्पथं प्रतिपन्नस्य परित्यागो विधीयते' इत्यादि. उपरना वचनोमां वर्णवेला गुरुत्वसाधक सर्व गुणो श्रीजिए प्रथम पोतामांज गुरुभाव बतावीने स्वरूतांतथीज बताव्या छे. अने तेनुं प्रसंगे प्रसंगे आ प्रबन्धमां विवेचनपण कर्युं छे. बोध लेवा योग्य अने समागम करवा योग्य एवा सत्पुरुषनां लक्षणोपण बताव्यां छे. गुरुत्वसाधक केटलाक गुणो वचनामृतनी प्रामाण्यताविषयमां लख्या छे परंतु आ प्रकरणमां उपयोगना जाणीने तेसाथे विशेष संग्रहपण वचनामृतमांथी बताव्यो छे-प्र० २९ 'अने संगपण प्रभुना भक्त अने पंच वर्तमाने युक्त एवा जे ब्रह्मवेत्ता साधु तेनो करवो' लो० १२ 'वक्तापण सुधो शांत होय ने तेमां कोइ दोष न होय···उत्कृष्ट ज्ञानवाळो वक्ता मळे' लो० १४ 'एवा जे मुक्ते सहित नारायण तेने अमे निरंतर देखीए छीए' (स्वाचारथी गुरुनी ब्रह्मनिष्ठस्थिति बतावी छे.) प्र० १७ 'श्रोताने प्रोत्साह अने धैर्य आपवारूप वक्ताना गुणो कह्या छे' प्र० ३८ 'अने तेना घाट टाळयामां केवी चाड होय तो जेम पोताना

घाटने टाळ्यानी चाड होय तेवी चाड होय एवा आगळ कहवो. अने जेनी आगळ घाट कहीए ने ते आवी रीते वातनो न करे ने पोते आळसु होय तो शो समास थाय?' (आ वचनथी शिष्यहितैकतत्परता अने अप्रमादिता कही छे.) प्र० ६७ 'अने जे तेनो सग करे तेनुंपण एवीज जातनुं हित करे जे आ मारो संगी छे तेने आ ससारनी वासना तुटी जाय अने भगवानने विषे प्रीति थाय तो घणु सारू छे' (आ वचनथी स्वपरहितपरता कही छे.) प्र० ७० 'स्वाचारथी दयालुतारूप गुरुनो गुण बताव्यो छे.' प्र० ७३ 'स्वाचारथी वैराग्य, विषयथी उदासीनता, उपशम विगेरे गुरुना गुणो बताव्या छे' म० ३५ 'हुं तमने जेवी तेवी अवळी वाते चडावी देउं तेमा मारुं शुं सारु थाय' आ वचनथी अवंचकतारूप गुरुनो गुण कह्यो छे म० ४५ स्वाचारथी शिष्यशिक्षारूप गुरुनो धर्म, शिष्यहितमाटे राखवानी सावधानता, आग्रह विगेरे गुरुगुणो वर्णव्या छे. म० ५० *स्वाचारथी गुरुनी ब्रह्मनिष्ठ स्थिति अने शिष्यहितैकतत्परतारूप गुरुनो गुण सूचव्यो छे* म० ५७ 'जे जीव मारो सग करे तनी आगळ हुं कल्याणनी वात न करुं त्यारे मारुं ज्ञान शा काममा आव्युं एम विचारीने उपदेश कर्या निमित्त काइक थोडी घणी उपाधि रहे तोपण परमेश्वरनी वात कर्यामां कायरपणुं राखे नहि' अत्य० २६–२७ समागमाई अने सेवाई सद्गुरुनुं स्वरूप निरूप्युं छे. अत्य० ३१ 'तमे सर्वे अमारा आश्रित *थया छो माटे अमारे तमने हितनी वात कही जोइए अने मित्रपण तेनेज जाणवो'* आ वचनथी गुरुनी करुण अने मित्रस्वभावता कही छे. ग० १३ 'आ जे मारे वात करवी छे ते कांइ दंभे करीने नथी करवी तथा माने करीने नथी करवी तथा मोटप वधार्यो सारु नथी करवी' आ वचनथी दंभ मान असूयादि दोषे रहिततारूप गुरुना गुणो सूचव्या छे. अत्य० ३५ मा साधुना छ लक्षणो कहेवा द्वारा *गुरुगुणो सूचव्या छे.* अत्य० ३६ *'भक्तिए युक्त जे साधु तेनो सग करवो'* अत्य० ३९ 'अमे जेम वर्तीएछीए तेमज वात करीए छीए' 'आ वचनथी परोपदेशे पाडित्यनी पेठे नहि परतु ते प्रमाणे अनुष्ठान करवा रूपपण गुरुगुण सूचव्यो छे. केवा गुरु न करवा तेनोपण विवेक बताव्यो छे–लो० ११ 'सच्छास्त्रनुं श्रवण करवुं ते सत्पुरुष थकीज करवुं पण असत्पुरुषथकी करवुं नहि' प० १२ 'अने जेना हृदयमा एवो *भगवाननो महिमा सहित निश्चय न होय तेने तो नपुंसक जेवो जाणवो ते एने वचने* करीने कोइ जीवनो उद्धार थवानो नहि, जेम राजा होय ते नपुंसक होय ने तेनुं राज्य जतुं होय ने वंश जतो होय पण एथकी तेनी स्त्रीने पुत्र थाय नहि अने सर्वमुलकमाथी पोता जेवा नपुंसकने तेडावीने ते स्त्रीने सगे राखे तोपण स्त्रीने पुत्र थाय नहि तेम जेने

भगवाननों महिमा रहित निश्चय नथी तो तेने मुखे गीता भागवत जेवा सद्ग्रन्थ सांभळे पण तेणे करीने कोइनुं कल्याण थतुं नथी. अने वळी जेम दुध ने साकर होय ने तेमां सर्पनी लाळ पडी पछी एने जे कोइ पीवे तेना प्राण जाय तेम माहात्म्य सहित जे भगवाननो निश्चय तेणे रहित एवो जे जीव तेना मुख थकी गीता भागवतने सांभळे तेणे करीने कोइनुं कल्याण थतुं नथी एमाथी तो मुळगुं भुडुं थायछे' का० १० 'जेनो संग कर्या थकी तथा जे शास्त्र सांभळवाथकी भगवाननी उपासनानुं खंडन थइने स्वामि-सेवकभाव टळी जतो होय तो ते सगनो तथा ते शास्त्रनो श्वपचनीपेठे तत्काळ त्याग करवो' लो० ६ 'संगाई अने असंगाई पुरुषना लक्षणो विस्तारथी कर्यां छे ते जाणी लेवा' अंत्य० ३२ 'एवी रीते माहात्म्यनो ओथ लइने मूलगो पाप करवा थकी डरे नहि एवो जे होय तेतो दुष्ट छे पापी छे ने एवी समझण वाळो होय ने ते उपरथी भक्त जेवो जणातो होय तोपण तेने भक्त न जाणवो ने तेनो संग क्यारेय न करवो' अंत्य० ३६ 'शुष्कवेदांतिनो संग क्यारेय न करवो ने ए शुष्कवेदांतितो महा अज्ञानि छे ने भगवानना भक्तिमार्गमां एवुं मोटुं कोइ विघ्न नथी' एवी रीते हेयोपादेय गुरुनां लक्षणो आ निबन्धमां श्रीजिए बताव्यां छे. आ प्रबन्धमा जेवो परात्पर निरतिशय उत्कृष्ट विषय छे अने उत्कृष्ट प्राप्य छे तेवोज तेने पामनारो उत्कृष्ट अधिकारी जोइए अने तेवोज तेने पमाडनारो उत्कृष्ट गुरुपण जोइए. माटे उक्त लक्षणवाळा शिष्य थइने उक्त लक्षणवाळा गुरुनो समाश्रय करीने उक्त लक्षणवाळुं परमप्राप्य परमात्मस्वरूप प्राप्त करवुं एज मनुष्य देहनो परम लाभ छे. आटलो सार श्रीजि कहेछे. अपूर्ण.



श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

वचनामृत–विषयानुक्रमणिका ।

प्रथमप्रकरणम् ।

निजवाक्यसुधाभिराश्रितानखिलांस्त्यागिजनांश्च गेहिनः ।
य इहासुखयद्दयानिधिः सहजानन्दमहं नमामि तम् ॥ १ ॥

'ध्रुवा स्मृतिः स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः' आ श्रुतिने अनुसारे ध्यान उपासन शब्दथी कहेली अखंड भगवत्स्मृतिनी आत्यंतिक मोक्षमां साक्षात् हेतुता सूचववा पूर्वक, तपादि साधनोनी अपेक्षाए अखंड भगवत्स्मृतिनी 'जन्मान्तरसहस्रेषु' 'बहूनां जन्मनामन्ते' 'कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः' इत्यादि स्मृतिने अनुसारे दुःसाध्यता कहेवा पूर्वक, भगवन्मूर्तिनी चिंतामणि-तुल्यता कहेवा पूर्वक तेमनी प्रीतिरूपापन्न स्मृतिनी स्वतःफळता कहेवा पूर्वक स्मरण करनारने सर्व फळप्राप्ति कही छे. तथा भगवानना ध्यानमां देह दैहिकमां अहंममता कराबा द्वारा अंतराय करवा रूप मायानुं स्वरूप कह्युंछे. तथा मुक्तात्माने 'परं ज्योतिरुपसंपद्य स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते' आ श्रुतिमां कहेला स्वस्वरूपाविर्भावनी पेठे 'स एकधा भवति द्विधा भवति त्रिधा भवति' आ श्रुतिने अनुसारे रूपनी प्राप्ति कहेवा पूर्वक 'गुणापाये ब्रह्मशरीरमेति' 'ब्राह्मीं संविशते तनुं' आ श्रुतिस्मृतिने अनुसारे शरीरनी अप्राकृतता–दिव्यता समर्थन करवा पूर्वक अर्चिमार्गे करीने भगवानना धाममां जनारा मुक्तनो गमन प्रकार कह्योछे. तथा बहु दिवससुधी सत्संग कर्या छतां देह दैहिकना जेवी सत्संगमां (सत् शब्दथी कहेला भगवान्, तेमना सत्पुरुष, तेमणे कहेलो सद्धर्म अने त्रणना आश्रयवाळुं सच्छास्त्र आ चारनो संग) गाढ प्रीति नहि थवामां भगवन्माहात्म्यज्ञानना अभावनी हेतुता कहेवा पूर्वक माहात्म्यज्ञानमां निष्कपट साधुसमागमनी हेतुता कहेवा पूर्वक 'अन्यक्षेत्रे' आ वचनने अनुसारे सत्पुरुषरूप तीर्थना अवगुण ग्रहणरूप पापनी वज्रलेपता कहीछे. १

एकांतिक भक्तिना अंगभूत वैराग्यनुं स्वरूप कहेवा पूर्वक तेना उत्तम मध्यम अने कनिष्ठ भेदोनां लक्षणो त्रिविध वैराग्यवाळा पुरुषोनां लक्षणो कहेवा द्वारा कह्यांछे. २

जेने भगवाननी दर्शनसमानाकार अखंड स्मृति रहेती होय तेवानेपण हरिजनना समागमनी आवश्यकता सूचववा पूर्वक भगवाननां अवतरणस्थान तथा निवासस्थान तथा तेमनां चरित्रो तथा तेमना आश्रित जनोना स्मरणनी 'स खल्वेवं वर्तयन् यावदायुषं' आ श्रुतिने अनुसारे देहपातावधि आवश्यकता कहेवा पूर्वक तेनुं फळ वर्णव्युं छे. ३

भगवत्प्रीतिजनक होवाथी भक्तोए परस्पर करवा योग्य अने अप्रीतिजनक होवाथी न करवा योग्य एवी ईर्ष्यानो भेद, नारदतुंबुरुना दृष्टांतथी कह्योछे. ४

राधाकृष्णनी मूर्तिनुं ध्यान करतां ते मूर्ति न देखाय तोपण खेदथी ध्याननो त्याग न करतां उत्साहपूर्वक अत्यागहर्थी ध्यान करनारानी उपर भगवाननी मूर्तिना दर्शनरूप मोटी कृपा थवानी कही छे. ५

सदसद्विवेकी अने अविवेकी भक्तपुरुषनां फळसाथे लक्षण कहेवा पूर्वक अविवेक टाळवानो उपाय कह्यो छे. ६

जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म अने परब्रह्मनुं अन्वयव्यतिरेकथी पृथक् पृथक् लक्षण कहेवा पूर्वक पांच भेदनुं अनादित्व कर्युं छे. ७

इन्द्रियोनी वृत्तिओने मायिकविषयोमां न जोडवानुं कहेवा पूर्वक भगवान् अने तेमना भक्तनी सेवामां राखवानुं कहेवा पूर्वक तेनुं शुभाशुभ फळ वर्णव्युं छे. ८

प्रत्यक्ष नराकार भगवानना सुदृढ निश्चयवाळा अने अनिश्चयवाळानां फळसाथे लक्षण कह्यां छे. ९

सेवकराम नामना वेरागीना स्वानुभवित उपाख्यानथी 'सत्कृताश्च कृतार्थाश्च मित्राणां न भवन्ति ये' आ वचनने अनुसारे कृतघ्ननुं स्वरूप कहेवा पूर्वक 'तेषामप्यधमा राजन् कृतघ्ना मित्रघातकाः' आ वचनने अनुसारे सर्वदोषे युक्त एवा पुरुषोनी अपेक्षाए कृतघ्ननी अति अधमता कहेवा पूर्वक तेनो संग सर्वथा त्याग करवानो कह्यो छे. १०

मायिक पंच विषयोनी वासनाना विनाशथी एकांतिकतानी संप्राप्ति तथा वासनानुं स्वरूप तथा वासनाविनाशनो उपाय विगेरे कह्युंछे. ११

प्रकृति, पुरुष, काळ अने तत्त्वोनां पृथक् पृथक् लक्षणो कहेवा पूर्वक तेमनी उत्पत्ति आदिक कहीने तेमना विवेक ज्ञानथी वैराग्य थवा द्वारा भक्तिसिद्धिथी अनादि बन्धननी निवृत्ति थवानी कही छे. तथा भगवानना अक्षरधामनुं सदृष्टांत स्वरूप कर्युं छे. १२

प्रत्येक देहमां जीव एक छे के अनेक छे? आ प्रश्नना उत्तरमां एक जीवनुं समर्थन कर्युं छे. १३

मंद वैराग्यवाळा त्यागी भक्तनी अपेक्षाए भगवाननी आज्ञाथी उदासीनपणे गृहस्थधर्ममां रहेला भक्तनी श्रेष्ठता कहेवा पूर्वक तेनी श्रेष्ठतामां कारणभूत तेना मुख्य धर्मो कह्या छे. तथा 'अन्ते या मतिः सा गतिः' आ श्रुतिनो निर्बाध अर्थ करवा पूर्वक भक्तने अंतकाळे भगवत्स्मृति नहि रहेवाथी दुर्गति नहि थवानी कहीने प्रपन्न भक्तने 'स्थिरे मनसि सुस्वस्थे... अहं स्मरामि मद्भक्तं नयामि परमां गतिं' आ वचन प्रमाणे अन्तिमस्मरणनी अनपेक्षता सूचववा पूर्वक तेवा दास भक्तनी दुर्लभता कहेवा पूर्वक तेनुं लक्षण कह्युं छे. १४

जे भक्तने माहात्म्यज्ञानपूर्वक भगवानमां भक्ति होय तेवा एकांतिक भक्तनुं लक्षण कह्युं छे. १५

आत्मपरमात्मादिरूप सत्यार्थ अने मायाकार्यादिरूप असत्यार्थना यथार्थ विवेकी भक्तनुं लक्षण कह्युं छे. १६

सत्संगमां रहेला अल्प कुसंगनुं (धर्मादिपालनमां निरुत्साहतारूप) स्वरूप निरूपण करवा पूर्वक निरुत्साह वार्ता नहि करवानी कहीने उत्साहवाळाने सर्व साधननी सुसाध्यता सूचववा पूर्वक निरुत्साह वार्ता करनाराने उपवास करवानो कह्यो छे. १७

अंतःकरणनी शुद्धि अने अशुद्धिना कारणभूत शुभाशुभ पांच विषयोनां लक्षणो कहेवा पूर्वक अशुभ विषयोनो त्याग करीने भगवान संबन्धी शुभ विषयोनां सेवनथी अंतःकरणनी शुद्धि करवानी कहीने 'आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः' आ श्रुतिनो अर्थ दर्शाव्यो छे. १८

एकांतिकभक्तपणामां कारणभूत स्वधर्म, ज्ञान, वैराग्य अने भक्तिने परस्पर सापेक्षता तेमनी सिद्धिमाटे कहीने चारनी संपूर्णताथी भक्तनी संपूर्णता कही छे. १९

आत्मस्वरूपने नहि जाणनाराने अज्ञानिमां अतिशय अज्ञानी कहीने, आत्मापरमात्माना दर्शनादिकमां महाशत्रुरूप प्रमादनो त्याग करीने सदा उद्योगी रहेवानुं कह्युं छे. २०

भगवाननी प्रसन्नतामां धर्म ज्ञान अने वैराग्ये युक्त एवी निष्काम भक्तिनी हेतुता कहेवा पूर्वक सांग भक्तिनेज एकांतिकधर्म कहीने, एकांतिकधर्म संपादनमां

आदरनी प्रथमावश्यकता होवाथी आदर पूर्वक तेने संपादन करवानो प्रकार कहीने एकांतिकनेज अर्चिमार्गे करीने अक्षरधामप्राप्ति कही छे. २१

भगवाननी स्मृति विना करेला नामकीर्तनादिकनी निष्फळता कहेवा पूर्वक भगवाननी स्मृतिए सहित नामकीर्तनादि करवानुं कहीने, ध्यानसिद्धिमाटे भगवानना स्वरूपमां सावधानपणे मननी अखंड वृत्ति राखवानो अभ्यास करवानो कह्यो छे. २२

वासुदेवमाहात्म्यनी सहेतुक स्वातिमिश्रता कहेवा पूर्वक एकांतिकपणाना साधनमां आत्मनिष्ठाए करीने देहात्मबुद्धिनो सम्यक् त्याग करीने भगवाननी मूर्तिमां अखंड मनोवृत्ति धारण करवानी कही छे. २३

एकांतिक भक्तोने आत्मापरमात्माना साक्षात् यथार्थ अनुभवरूप ज्ञानथी पोताना आत्मामां रहेला साक्षात् भगवानमां जे निश्चळपणे रहेवारूप स्थिति थायछे ते स्थितिनुं स्वरूप कहीने, तेवी स्थितिनी प्राप्तिमां माहात्म्यज्ञाननी हेतुता कहीने, माहात्म्यनी तारतम्यताथी फळतारतम्य कहीने, भगवानने सर्वथा निर्दोष समझवानुं कहीने, भक्तने अपूर्णपणामां कारण बताव्युंछे. २४

धर्मनिष्ठ भक्तोने अंतरमां अपूर्णपणुं रहेवामां हेतु कहीने, तेनी निवृत्तिमां दृढ आत्मनिष्ठा अने माहात्म्यज्ञानरूप बे साधन बतावीने, समाधि थवामां बे प्रकार बताव्या छे. २५

सत्य रसिक भक्तोने अन्यविषयोमां रसिकतानो त्याग करवा पूर्वक भगवान संबन्धी शब्दादि विषयोमांज जाग्रत् स्वप्नमांपण रसिकता राखवानी कहीछे. २६

जे ज्ञानथी भक्तना हृदयमां साक्षात् भगवान् निवास करीने रहे एवा आत्मा-परमात्माना ज्ञाननुं स्वरूप कहीने, तेवा ज्ञाने करीने भगवानमां स्थितिवाळा एकांतिक पुरुषनुं लक्षण कह्युं छे. २७

सत्संगमांथी भ्रष्ट थनारा अने वृद्धि पामनारा भक्तनां लक्षणो कह्यां छे. २८

अंगे सहित भक्तिनुं बळ वृद्धि पामवामां अने न पामवामां शुभाशुभ देशादिक चारनी हेतुता कहीने, अंतःकरणनी शुद्धिमां संस्कारादि त्रणनी स्वस्वविषयमां स्वतंत्रपणे हेतुता कहेवा पूर्वक तेनां लक्षणो कह्यां छे. २९

कदाचित् विषयभोगने संपादन करवाना हजारो संकल्प थवाथीपण हृदयमां तेनी दृढ वासना बंधाती नथी अने कदाचित् बे त्रण संकल्पथीज दृढ वासना बंधायछे तेमां त्रण गुणनी हेतुता कहेवा पूर्वक तेनी निवृत्तिमां सत्संगरूप उपाय कह्यो छे. ३०

वचनथी कोइने नहि दुःखवनारा तेम भक्तनी सेवा नहि करनारा निवृत्तिपर भक्तनी अपेक्षाए वचनथी कोइने दुःखवतां छतां भक्तनी सेवा करनारा भक्तनी सहेतुक श्रेष्ठता कहीने, हरिहरिजननो अवगुण लेनाराने आसुरबुद्धि कहीने, व्यवहारदृष्टिथी कहेवाती नानप्य मोटप्यनो त्याग करीने निश्चयादि गुणथी नानप्य मोटप्य ग्रहण करवानी कही छे. ३१

भगवानना भक्त अने अभक्तना विषयोमां निर्गुण सगुणपणे करीने महान् भेद बताव्यो छे. तथा कोइ समयमां सुखेथी यथार्थ हरिस्मृति थाय अने कोइ समयमां प्रयत्नथीपण न थाय तेमां सत्त्वादि गुणनी हेतुता बतावी छे. ३२

'सर्वधर्मान्परित्यज्य' आ वचनने अनुसारे भगवानना प्रसन्नतामां तेमना दृढ आश्रयरूप एकज सर्वोत्तम फळवत् साधन कहीने, आश्रयनुं स्वरूप कहीने, तेमां त्रण भेद कहीने, तेनां लक्षणो कह्यां छे. ३३

आनंदनिधि श्रीहरि भगवाननो त्याग करीने बीजा तुच्छ नाशवंत विषयोमां चित्तनी वृत्तिओ आसक्त थायछे तेमां कारण कहीने, साक्षात् भगवाननी प्राप्तिवाळा भक्तने जे तुच्छ पदार्थ माटे क्लेश थायछे तेनुं पण कारण बताव्युंछे. ३४

अल्पबुद्धिवाळो कल्याणना मार्गमां प्रवृत्ति करेछे अने महाबुद्धिवाळो नथी करतो तेमां हरिहरिजनना अवगुणथी दूषितबुद्धिरूप कारण बतावीने, तेवी दुर्बुद्धिना त्यागनो उपाय कह्यो छे. ३५

त्यागीओने वस्त्रादिक तुच्छ पदार्थमांथी प्रीतिनो त्याग करीने भगवानमां प्रीति करवानी कहीछे. ३६

आत्मज्ञानथी देहात्मबुद्धिनो त्याग करीने एकांतिकधर्म संपादन करवानो कहीने, साकारपणानी निष्ठावाळा एकांतिकनी स्वातिप्रियता कहेवा पूर्वक तेनो महिमा कहीने, भगवानना महिमाना बळनो त्याग करीने केवळ पुरुषप्रयत्नथी कल्याण इच्छनारानी सदृष्टांत मूर्खता कही छे. ३७

✓भगवानना चरित्रोना चिंतनथी मनने निर्वासनिक करवानुं कहीने तेमां वणिक्ना भाभानुं अने भूतना दृष्टांतनुं निरूपण कर्युं छे. तथा जीवात्मानुं स्वरूप कह्युं छे. ३८

✓सविकल्प अने निर्विकल्प स्थितिना भेदे करीने जीवादिकनुं सत्यत्व अने असत्यत्व सदृष्टांत कहीने, शुष्कज्ञानिए मानेलो सिद्धांत (एक ब्रह्म सत्य छे अने जीवादिक मिथ्या छे) खंडन कर्यो छे. ३९

निर्विकल्प अने सविकल्प समाधिवाळा भक्तोनां भिन्नभिन्न लक्षणो कहीने, भक्ति अने उपासनामां किंचित् भेद बताव्यो छे. ४०

'तदैक्षत बहु स्यां प्रजायेय' आ श्रुतिनो शुष्कज्ञानिए करेला अर्थमां दोषप्रदर्शन पूर्वक तेनुं खंडन करीने 'अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो' 'स्वकृतविचित्रयोनिषु' 'सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः' इत्यादि वचनने अनुसारे निर्बाध अर्थ कह्यो छे. ४१

✓ शुष्कवेदान्तिए खंडन करेला विधिनिषेधनुं सहेतुक स्थापन कर्युंछे. ४२

'मत्सेवया प्रतीतं च' आ वचनने अनुसारे चतुर्धा मुक्तिनी इच्छावाळाने सकाम भक्त कहीने, तेवी इच्छानो त्याग करी केवळ भगवाननी सेवानेज इच्छनारा निष्कामभक्तनी श्रेष्ठता कही छे. ४३

भगवानमां परिपूर्ण स्नेहवाळा भक्तनुं लक्षण कहेवा पूर्वक परिपूर्ण स्नेहप्राप्तिनुं साधन (साधुना प्रसंगथी भगवानना माहात्म्यज्ञानरूप) कह्युंछे. तथा देह दैहिकमांथी अहंममताना नाशनुं अने तेना संकल्पोना नाशनुं आत्मा अनात्माना यथार्थ विवेकरूप साधन कह्युं छे. ४४

भगवानने साकार निराकारपणे प्रतिपादन करनारी 'य एषोऽन्तरादित्ये हिरण्मयः पुरुषो दृश्यते' 'अपाणिपादो जवनो गृहीता' इत्यादि श्रुतियोनो विषयविभेदथी अविरोध वर्णवा पूर्वक निराकारत्वनुं खंडन करीने सदा दिव्याकारत्व सप्रमाण स्थापन कर्युंछे. ४५

चिदाकाशनुं स्वरूप कहेवा पूर्वक तेनी लयोत्पत्तिनो निषेध करीने, भूताकाशनुं स्वरूप कहेवा पूर्वक समाधिमां तेनी जे प्रकारे संकोचविकासरूप लयोत्पत्ती थायछे तेनो प्रकार कह्योछे. ४६

जेमां धर्मादि चार निष्ठाओ होय तेवा एकांतिकनी दुर्लभता कहेवा पूर्वक धर्मादिक एक एक प्रधान गुणवाळा भक्तोनां लक्षणो कहीने, पोतपोताना मुख्य गुणनी दृढता करवानी कहीने, चार निष्ठावाळाने पोतपोताना अंगमां जे गुणदोषो छे ते कह्या छे. ४७

प्रतिदिन नित्यपूजा कर्या पछी भगवाननीपासे चार प्रकारना कुसंगीथकी अने कामादि अंतःशत्रुथकी रक्षा करवानी प्रार्थना करवानी कही छे. ४८

'त्रिभुवनविभवहेतवेऽप्यकुंठस्मृति' आ वचनने अनुसारे भगवानथकी बीजा विषयोमां मनोवृत्ति न धारण करवारूप भक्तनुं लक्षण कहीने, भगवानमां सदा मनोवृत्ति धारण करवानो अन्तर्दृष्टिरूप उपाय कह्यो छे. ४९

'दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या' 'या निशा सर्वभूतानां' आ वचनने अनुसारे कुशाग्रबुद्धिवाळा अने स्थूळबुद्धिवाळानां भिन्नभिन्न लक्षणो कह्यां छे. ५०

मायिक इन्द्रियो अंत:करणथी अमायिक भगवाननुं दर्शन के निश्चय केम थाय? आ प्रश्ननो उत्तर कर्यो छे. ५१

सांख्यादि चार शास्त्रथी निश्चय करीने भगवाननुं स्वरूप जाणनाराने संपूर्ण ज्ञानी कहीने, एक एक शास्त्रथी समझनाराने शी न्यूनता रहेछे तेपण कहीने, शास्त्रांतरना ज्ञानथी अपूर्णतानी पूर्णता करवानी कहीने, चार शास्त्रनो प्रतिपाद्य अर्थ कह्यो छे. ५२

सत्संगमां रहीने प्रतिदिन ज्ञान वैराग्यादि गुणनी वृद्धि थवामां अने क्षय थवामां सत्पुरुषना गुणग्रहण अने दोषग्रहणनी हेतुता कही छे. ५३

एकादशस्कंधमां कहेला भागवतधर्मोना पोषणमां अने मोक्षनुं द्वार उघाडुं थवामां 'प्रसंगमजरं पाशं' आ वचनने अनुसारे एकांतिकसाधुना प्रसंगने हेतुपणे कहीने, एकांतिक साधुनां लक्षणो कह्या छे तथा महा आपत्काळमांपण स्वधर्मथी न चळायमान थाय एवा भक्तनुं लक्षण कह्युं छे. ५४

स्वधर्म अने भक्तिनी सदाकाळ दृढता रहेवामां अने न रहेवामां शुभाशुभ देशादिकना सेवननी हेतुता कही छे. ५५

'आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ!' आ वचनने अनुसारे नित्ययुक्तत्व अने एकभक्तित्व गुणयोगथी कहेली ज्ञानी भक्तनी श्रेष्ठतामां तेमज आर्तादि त्रण भक्तनी न्यूनतामा हेतु कह्यो छे. तथा ज्ञानी भक्तमांपण जो कदाचित् ज्ञान वैराग्यादिक गुणनुं मान आवे तो तेनीपण न्यूनता कहीने, माननी अल्पतामां गुणगोरव अने मानना गौरवमां गुणनी अल्पतानुं सदृष्टांत अनुमान कहीने, माननी दुष्टता कहेवा पूर्वक तेना त्यागना फळसाथे उपायो कहीने, निर्माननी बलिष्टता कही छे. तथा दैहिक दु:खनी निवृत्तिमां कारणभूत आत्मनिष्ठादिकनी प्राप्तिमां भगवदुपासनानी हेतुता कहीने, 'एतां विभूतिं योगं च' आ वचनने अनुसारे उपासनासिद्धिमां माहात्म्यज्ञाननी हेतुता कहीने माहात्म्यज्ञाननो प्रकार कह्यो छे. ५६

मोक्षमां असाधारण हेतु (माहात्म्यज्ञाने सहित स्नेहरूप) कहीने, तेमां माहात्म्यज्ञानजन्य अने साहजिक एवा भेदथी द्विविधता कहेवा पूर्वक तेनुं स्वरूप कहीने माहात्म्यज्ञानजन्य स्नेहनी उत्तमता कही छे. तथा स्नेहथवामां दु:स्वभावरूप महाविघ्न कहीने, तेने टाळवानो उपाय कह्यो छे. ५७

ध्यानसमयमां रजतमादि गुणना वेगो प्रवर्तवामां देहाध्यास, कुसंग अने पूर्वसंस्कारनी हेतुता, देहाध्यासथी प्रवर्तेला गुणवेगनी निवृत्तिमां आत्मा अनात्माना विचारनी हेतुता, कुसंगथी प्रवर्तेला गुणवेगनी निवृत्तिमां दृढ सत्संगनी हेतुता, पूर्वसंस्कारथी प्रवर्तेला अने उक्त बे साधनथी अनिवार्य एवा गुणवेगनी निवृत्तिमां सत्पुरुषनी अतिशय प्रसन्नतानी हेतुता, सत्पुरुषनुं सामर्थ्यवर्णन, सत्पुरुषनी प्रसन्नताना उपायो, कामादिक दोषनी निवृत्तिना अने भक्तिवृद्धिना उपायो विगेरे कह्युं छे. ५८

भगवानमां असाधारण प्रेम थवामां सनिश्चय माहात्म्यज्ञाननी हेतुता कहेवा पूर्वक माहात्म्यज्ञाननो प्रकार कह्यो छे तथा माहात्म्यज्ञानवाळाने अतिशय प्रेम छे तथापि नथी जणातो तेने जणायामां सदृष्टांत हेतु कह्योछे. तथा शुभाशुभ पुरुषनेज शुभाशुभ देशादिकनी प्रवृत्तिमां मुख्य कारण कह्या छे. ५९

मायिक विषयवासनाना विनाशमां साधनभूत विचार, सदा निर्वासनिकपणे वर्तवारूप एकांतिकनो परमधर्म, वासनाविनाशना आत्मनिष्ठा वैराग्य अने माहात्म्यज्ञान रूप मुख्य उपायो, निर्वासनिक सत्पुरुषथकी एकांतिक धर्मनी प्राप्ति, विगेरे कह्युंछे ६०

कामादिकना उदयकाळमां तेमज अंतकाळमां पण धैर्यनो लोप न थवामां आत्मनिष्ठाए युक्त उपासनानी हेतुता कही छे. तथा जेवा भक्तने सिद्धियो प्राप्त थायछे तेवा भक्तनुं लक्षण कह्युं छे. ६१

जेवा भक्तमां भगवानना सत्यशौचादिक शुभ गुणो आवे अने न आवे तेवा भक्तनुं लक्षण कहेवा पूर्वक गुण आववानो प्रकार कह्यो छे. ६२

न्यून निश्चयवाळा अने दृढ निश्चयवाळा भक्तने जेवा जेवा संकल्पो थायछे ते कह्या छे. तथा प्रत्यक्ष नराकृति भगवानना तात्त्विक दृढनिश्चयनुं स्वरूप कहेवा पूर्वक तेनुं फळ कहीने, तेवा निश्चयवाळा भक्तनुं लक्षण कह्युं छे. तथा अवतार धारणनो प्रकार कह्यो छे. ६३

'यस्यात्मा शरीरं' 'यस्याक्षरं शरीरं' आ श्रुतिने अनुसारे अक्षरात्मानो अने परमात्मानो शरीरशरीरिभाव संबन्ध कहेवा पूर्वक शरीरशब्दनो निर्बाध मुख्यार्थ कहेवाद्वारा शरीरनुं लक्षण करीने, शरीरशरीरिभावथी भेदाभेद श्रुतिओनो निर्वहण प्रकार कहेवा पूर्वक जीवात्मा परमात्मानो वास्तविक भेद वर्णव्यो छे. तथा अतिदूर रहेला भगवाननी शी रीते प्राप्ति थाय अने तेमनी उपासना शी रीते थाय? तेनोपण प्रकार कहीने, भगवानने सदा दिव्याकार जाणीने उपासना करनाराने

अने निराकार जाणीने उपासना करनारा कैवल्यार्थीने प्राप्त थता फळाफळनुं वर्णन कर्युं छे. ६४

शरीरमां जे प्रकारे आकाशनी उत्पत्ति अने लय थायछे तेनो प्रकार कह्यो छे. तथा सुषुम्णा नामनी नाडी जे प्रकारे शरीरनी अंदर अने बहार रहीछे तेनो प्रकार कह्यो छे. तथा भगवानमां जेवी रीते ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति अने इच्छाशक्ति रहीछे तेनो प्रकार कह्यो छे. ६५

श्रुतिस्मृतिमां कहेला निर्गुण निराकारादि शब्दनो निर्बाध अर्थ कहेवा पूर्वक भगवाननी दिव्यगुणता अने दिव्याकारता प्रतिपादन करी छे. ६६

एकांतिकनुं लक्षण कहेवा पूर्वक तेना ज्ञानादिक गुणो केवा मुमुक्षुमां आवे अने केवामां न आवे तेनुं कारण 'यस्य देवे परा भक्तिः' आ वचनने अनुसारे बताव्युं छे. ६७

जेने भगवाननी प्रतिमामां अने तेमना एकांतिक साधुमां भगवद्बुद्धि नथी तेम ते वचनेनी मर्यादा नथी तेना हृदयमां 'साक्षात् भगवाननो निश्चयज नथी' एम कहीने, तेनुं कल्याणपण नहि थवानुं कहीने तेने नास्तिक शब्दथी कहीने, नास्तिक आस्तिक भाव आववामां हेतुओ कह्या छे. ६८

हिंसायुक्त धर्मने धर्म अर्थ कामपर कहीने, तेनी अपेक्षाए श्रेयस्कर अहिंसामय धर्मनी 'अहिंसा सर्वभूतेभ्यो धर्मेभ्यो ज्यायसी मता' इत्यादि वचनने अनुसारे श्रेष्ठता कहीने, शास्त्रमां हिंसामय धर्म कहेवानुं प्रयोजन कहीने, करणत्रयथी कोइनोपण द्रोह न करवा रूप साधुनो धर्म कहीने, तेवा शांत स्वभाववाळा साधुनी दुर्लभता कही छे. ६९

बुद्धिमां सत्संगी कुसंगीना शब्दनुं परस्पर युद्ध थाय छे तेनी सदृष्टांत व्यक्ति कहेवा पूर्वक 'ज्यारे कुसंगीनुं बळ थाय त्यारे विषयभोगनी इच्छा थाय अने ज्यारे सत्संगीनुं बळ थाय त्यारे विषयभोगनी इच्छा न थाय' एम कहीने, जेना पक्षमां संतमंडळ छे तेनोज जय थवानो 'यत्र योगेश्वरः कृष्णः' आ वचन प्रमाणे कहीने, संतनुं बळ वधवानो अने कुसंगीनुं बळ घटवानो उपाय कहीने, जेने संत असंत साथे युद्ध चालेछे तेटलाकमां मरण पामे तेनीपण सुगति कहीने, निष्काम-भावथी जीवना कल्याणमाटेज सत्संग करनाराने अडग निश्चय थवानो कह्यो छे ७०

दयानिधि भगवान् सर्व अपराधो सहन करेछे पण भक्तनो अपराध नथी सहन करता एम कहीने, भगवानना आकारखंडनने महापराध कहेवा पूर्वक ते न करवानो

कहीने, निराकार वादनुं खंडन करवा पूर्वक सदा दिव्याकार वादनुं प्रतिपादन करीने, दिव्यभाव अने मनुष्यभावनी सहेतुक एकता कही छे. तथा ईर्ष्यानुं लक्षण कह्युं छे. ७१

उत्तमराजा आगळ करेली वार्तानां अनुवादमां हरिहरिजनना माहात्म्यज्ञाननुं फळ कहेवा पूर्वक माहात्म्यज्ञाननी शिथिलतावाळा भक्तने भगवानथी अन्यत्र अभिनिवेश थवाथी देशकाळादिक शुभ छतेपण अशुभप्राप्ति कही छे. तथा दुर्बळने पीडा करनारा, मिथ्यापवाद आपनारा अने पांच प्रकारनी स्त्रीयोनो धर्मभंग करनाराने ब्रह्महत्यासमान पाप थवानुं कहेवा पूर्वक ते नहि करवानुं कह्युं छे. तथा भगवानना कल्याणकारी शुभाशुभ क्रियानी निर्दोषतामां शुकदेवनुं अने सदोषतामां परीक्षित् राजानुं सहेतुक दृष्टांत कह्युं छे. तथा जेने भगवाननो निश्चय माहात्म्यज्ञाने सहित होय अने जेने न होय एवा भक्तोनां पृथक् पृथक् लक्षणो तेमने थता संकल्पो द्वारा कह्यां छे. तथा उत्तम मध्यम अने कनिष्ठ भक्तनां लक्षण कह्यां छे. ७२

वीर्यनेज कामनुं रूप कहेवा पूर्वक वीर्यावरोधरूप ब्रह्मचर्यनुं लक्षण कहेवा द्वारा ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारीनुं लक्षण कहीने, बीजा साधननी अपेक्षाए काम-जयनुं साधन दुःसाध्य कहीने, तेना जयनुं उपासनादिक सुदृढ साधन कह्युं छे. तथा वासनाजयनी दुःसाध्यता कहेवा पूर्वक निर्वासनिक थवानुं साधन कह्युं छे. तथा भगवानमां जेणे मन अर्पण कर्युं होय अने न अर्पण कर्युं होय तेवा भक्तोनां लक्षणो कह्यां छे. ७३

माहात्म्यज्ञानना न्यूनाधिकताथी वैराग्यनी अदृढता अने सुदृढता कहीने, तेनी परीक्षा आपत्काळमां थवानी कहीने, भक्तोने भगवानना इच्छानुसारे सर्वथा वर्तवानुं कह्युं छे. ७४

हरिभक्तना गोत्रिओनो जे प्रकारे उद्धार थायछे अने नथी थतो तेनी रीति कही छे. तथा अल्पनिश्चय अने परिपूर्ण निश्चयनुं लक्षण कह्युं छे. ७५

भगवानने अतिशय प्रिय एवा भक्तनां अने अप्रिय एवा भक्तनां लक्षणो कह्यां छे. ७६

स्वधर्माचरणनी अतिदृढता सहेतुक प्रतिपादन करी छे. तथा भगवानना भक्तने अंतसमे मृत्यु शोभवामां अने न शोभवामां शुभाशुभ काळ अने अवस्थानी हेतुता कहीने, उत्कृष्ट अपकृष्ट गतिमां काळावस्थानी अप्रधानता कहेवा पूर्वक तेमांतो पोते अनुष्ठान करेला धर्मनी हेतुता कही छे. ७७

पूर्वकर्मनी अपेक्षाए शुभाशुभ देशादिक आठनी बलिष्ठता कही छे. तथा अचळ निश्चय जाणवानो प्रकार, हरिहरिजनमां दोषबुद्धि न थवामां उपाय, त्रण अवस्थामां भगवाननी मूर्त्तिनां दर्शन केने अने केवी रीते थाय तेनो प्रकार, सत्संगमां अचळ पायो जेने होय तेने जाणवानो प्रकार, पोताने तिरस्कार करीनेपण साधुए कहेला शिक्षावचनने सत्य मानीने आदरथी स्वीकार करनारा भक्तनुं लक्षण कहेवा पूर्वक जे संतनी पासे रहेता होइए तेने जेम आपणा उपर हेत होय तेम समग्र संतने स्नेह थवानो हेतु, मनवाणीने अगोचर एवा भगवान् नराकार थइने सर्वने गोचर वर्तेछे तेनो हेतु, हरिहरिजननी प्रसन्नतानुं साधन, हरिहरिजननो समागम सदाकाळ आश्चर्य सरखो जणायानो प्रकार, कृपालुता विगेरे साधु लक्षणो आववानो उपाय, ध्याननिष्ठ अने नवधा भक्तिनिष्ठनी श्रेष्ठता अने अश्रेष्ठतानो प्रकार, केवा वर्तनथी हरिहरिजनो प्रसन्न थाय तेनो प्रकार, कुमार्ग वर्तनथी कुराजी थएला साधुओने फरीथी राजी करवानो उपाय, प्रत्यक्षवत् परोक्षमांपण भगवाननो भय रहे तेनुं साधन, प्रत्यक्ष परमेश्वर समर्थ होवा छतां विषम देशकाळादिकमां पोताना अने आश्रित जनोना रक्षण माटे स्वसामर्थ्यनो नहि प्रकाश करवामां कारण, प्रभुना संतनो अतिशय महिमा जणायानो प्रकार, त्रण देहमां जीवनी अन्वय व्यतिरेकभावथी वर्तती स्थिति जाणवानो प्रकार, प्रथम संतमां अने सत्संगिमां अतिशय प्रीति थइने पछी काळे करीने क्षय थवामां हेतु कहेवा पूर्वक पूर्वनी पेठे प्रीति *थवानो प्रकार, मोक्षनुं मुख्य साधन, देशादिकनी विषमतामां वर्तवानी रीति,* भगवानना निश्चयवाळानेपण असद्वासना नहि निवृत्त थवामां हेतु, परिपूर्ण निश्चय छे तथापि भगवत्कथा विगेरेमां प्रीति नहि थवामां हेतु, नवधा भक्ति अचळ रहवानो उपाय, एवी रीते नाना नाना विद्यार्थि परमहंसोना बावीश प्रश्नोना उत्तरो आप्या छे तथा **'त्रिविधं नरकस्येदं'** आ वचनने अनुसारे काम क्रोध अने लोभने नरकनुं द्वार कहीने तेनो अतिशय जय करवानो कह्यो छे. ७८

—सारंगपुर-प्रकरणम्—

मनोजयने जगज्जयपणे कहेवा पूर्वक स्वमनोजयनुं लक्षण कहीने, मनोजयमां **'यदा संहरते चायं' 'यततो ह्यपि कौन्तेय' 'इन्द्रियाणां हि चरतां' 'तस्माद्यस्य महाबाहो !'** इत्यादि गीतावचनमां कह्या प्रमाणे प्रथम सवासन

इन्द्रियजय अने विषयजयनी अपेक्षा बतावा पूर्वक तेना जयमां दोषदृष्टिरूप सामान्य साधन बतावीने, स्वस्वविषयोथकी इन्द्रियोना प्रत्याहारनां साधनोमां मतभेद सूचववा पूर्वक तेमां आत्मनिष्ठा अने भगवन्माहात्म्यज्ञानरूप स्वाभिमत उत्कृष्ट साधन कहीने, तेमां उपयोगी देहात्मविवेकोक्ति पूर्वक आत्मनिष्ठानो अने माहात्म्यज्ञाननो प्रकार निरूपण करीने, निःदोष वासना निवृत्तिमां केवळ वैराग्य के प्रीति के धर्मनी निरर्थकता कहेवा पूर्वक आत्मनिष्ठा अने माहात्म्यज्ञाने सहित एवा वैराग्य, प्रीति अने धर्मनी हेतुता कहीने, आत्मनिष्ठामां वैराग्यनी अने माहात्म्यज्ञानमां धर्म प्रीतिनी अंतर्गतता सूचवीने प्रत्याहारमां आत्मनिष्ठा अने माहात्म्यज्ञाननी स्वाभिमत मुख्य साधनता समर्थन करी छे. १

प्रत्यक्ष भगवानमां भक्तने स्नेह थवामां रूप, काम, स्वार्थ, लोभ अने गुण आ पांच कहीने, तेमां रूपादि चार प्रकारथी थएला स्नेहनी सहेतुक उदयतिरोभावथी अस्थिरता कहेवा पूर्वक नित्यसिद्ध सत्यशौचादि गुणोना ज्ञानथी थएला स्नेहनी अतिस्थिरता कहीने, भगवाननेतो भक्तनी उपर तेना रूपादिक चारथी स्नेह थवानो असंभव होवाथी तेना सद्गुणथीज स्नेह थवानो सामान्यतः कहीने, भगवान् अने भक्तने परस्पर गाढ स्नेह थवामां भक्तनिष्ठ गुणनी हेतुता कहीने, गुणमां पण व्यावहारिक क्रिया कौशल्यादि बहारना गुणोनी अहेतुता सहेतुक कहेवा पूर्वक शरीर वाणी अने मनना स्वधर्म, ज्ञान वैराग्य भक्ति आदिक आंतर सद्गुणोनी हेतुता समर्थन करीने, प्रथम शरीर वाणीना गुणो वर्णवा पूर्वक मननो महागुण (दर्शन, श्रवण, ध्यान अने पूजादिक भक्तिमां एकाग्रतारूप) वर्णवीने, मननी एकाग्रतानुं सदृष्टांत लक्षण कहेवा पूर्वक एकाग्रतामां गुणो अने अनेकाग्रतामां दोषोनुं विवेचन करीने मननी एकाग्रतामां विघ्न करनारां सर्व इन्द्रियोनी अपेक्षाए मनने ज्यांत्यां विशेषपणे आकर्षण करनारां श्रोत्र अने चक्षुने उपायोथी विशेषपणे नियमन करवानुं सकारण कहीने, तेना नियमनमां तेमने करवानो उपदेश प्रकार कहीने, त्रण गुण संपादन करवाथीज भगवान् अने भक्तने परस्पर स्नेहवृद्धि थवानी कहीने उक्तार्थनो उपसंहार कर्यो छे. २

प्रेममग्न थइने प्रत्यक्ष भगवाननी बाह्य उपचारोथी अथवा मानस उपचारोथी पूजा करनारा यधे भक्तोनी श्रेष्ठता कहीने, तेवा भक्तने ओळखवाना लक्षणमां श्रद्धा अने माहात्म्यज्ञानने कहेवा पूर्वक तेमां मुक्तानंदमुनिने दृष्टांतपणे कहीने,

श्रद्धा अने माहात्म्यज्ञान विनाना यादवोनी अभक्तता कहेवा पूर्वक श्रद्धा अने माहात्म्यज्ञानवाळा उद्धवादिकनी भक्तताथी जगतमां सुप्रसिद्धि कहीने, तेवा प्रेमनी प्राप्तिमाटे 'आत्मा वारे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः' आ श्रुतिने अनुसारे श्रवण मननादि साधनोनो अभ्यास करवानो कहेवा पूर्वक श्रवणादि चारनां लक्षणो कहीने, दर्शनशब्दवाच्य साक्षात्कारमां श्रवणादि त्रणनी साधनता कहेवा पूर्वक त्रणमांपण मनन निदिध्यासनुं मुख्यत्व कहीने प्रत्यक्ष भगवानना केवळ श्रवण दर्शनथी साक्षात्कारनो असंभव कहेवा पूर्वक उक्त साधनोथीज भगवानमां दृढ प्रेम थवानो कह्यो छे. ३

अत्यंत निर्वासनिक थवामां दृढ आत्मनिष्ठारूप साधन कहीने, तेमां उपयोगी आत्मा अनात्मानो स्पष्ट विवेक प्रदर्शन पूर्वक आत्मनिष्ठानुं स्वरूप कहीने तेनी अवश्य संपाद्यता कही छे. तथा अत्यंत निर्वासनिक नहि थएला भक्तनी देहने अन्ते 'पार्थ ! नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते । नहि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात ! गच्छति ॥' इत्यादि गीतावचनने अनुसारे दुर्गति नहि थवानुं कहेवा पूर्वक सुगति थवानी कही छे. ४

अत्यंत निर्वासनिक थवामां चार उपायो (श्रद्धा, भक्ति, हरिहरिजनना वचनमां विश्वास अने माहात्म्यज्ञान) सामान्यतः कहीने, एकज साधनमां बीजां सर्व साधनोनो समावेश थइ जाय एवुं महत् माहात्म्यज्ञानरूप साधन कहेवा पूर्वक बीजां दुर्बळ साधनोनीपण माहात्म्यज्ञानबळथी सुबळता कहीने, माहात्म्यज्ञान विनानी अनेक भक्तिनो अने तेना सहचर शमदमादिक सद्गुणोनो पण सदृष्टांत नाश थवानो कहेवा पूर्वक माहात्म्यज्ञानीने अनायासथीज ते गुणोनी स्वतःप्राप्ति थवानी कहीने निःशेष वासना निवृत्तिमां माहात्म्यज्ञानरूप एक मुख्य अचळ साधननुं समर्थन कर्युं छे. तथा जीव, ईश्वर, अक्षरब्रह्म अने भगवाननुं अन्वयव्यतिरेकपणुं कह्युं छे. तथा मन विना करेला नामस्मरण दर्शनादिकनी अंते निष्फळता कहेवा पूर्वक मने सहित करनाराने शास्त्रोक्त यथार्थ फळ थवानुं कहीने बीजाओनेतो बीजबळ थवानुं कहीने सर्व क्रिया समनस्क करवानी कही छे. ५

जाग्रतादि त्रण अवस्थानां अवस्थाशब्दार्थ साथे स्वरूप कहेवा पूर्वक प्रत्येक अवस्थामां बीजी बेबे अवस्थाओ केवी रीते रहीछे तेनो प्रकार कह्योछे. तथा वैराजना देहमां रहेली परा आदिक चार प्रकारनी वाणीनुं स्वरूप कहीने, जीवोना

देहोमां रहेली त्रण प्रकारनी वाणीनुं ज्ञान ज्ञानिओनेपण दुर्बोध कहेवा पूर्वक सुरमां रहेली केवळ वैखरी वाणीनाज चार भेद वर्णव्या छे. ६

मनने चक्रपणे, इन्द्रिय वर्गने नेमिपणे, (चक्रधारापणे) शब्दादि विषयोने जवाना मार्गपणे, इन्द्रियोथकी पराङ्मुखताने कुंठीभावपणे, सत्संगने पुण्यक्षेत्रपणे रूपण करवा पूर्वक नैमिषारण्य शब्दनो यथार्थ अर्थ करीने सत्संगरूप पुण्यक्षेत्रमां करेला सत्कर्मोनी शीघ्रसिद्धि कहेवा पूर्वक सत्संगनो महिमा कह्यो छे. ७

मानमांथीज ईर्ष्या, क्रोध, मत्सर, असूया आदिक दोषनी उत्पत्ति कहेवा पूर्वक सर्वेभक्तोए सर्वप्रकारे त्याग करवा योग्य ईर्ष्यानुं लक्षण ईर्ष्यालुनुं लक्षण कहेवा द्वारा कह्युं छे. ८

जीवना हृदयमां बहिर्युगनी पेठे कृतादि युगना धर्मो प्रवर्तवामां सत्त्वादिक गुणने कारणपणे कहेवा पूर्वक सत्त्वादिक गुण प्रवर्तवामां प्राचीन शुभाशुभ कर्मने कारणपणे कहीने, जेवा गुणवाळाए जेवी जातिनी भक्ति करवी जोइए तेपण कहीने, तमोगुणीमां वर्तता कळिधर्मनी निवृत्तिना उपायो स्थानमां रहीने करवाना कहीने, स्वस्ववर्णाश्रमधर्मरूप स्थानशब्दार्थ कहेवा पूर्वक स्थानातिक्रममां भ्रष्टता थवानुं कहेवा पूर्वक स्थानमां रहीनेज त्यागीओने पूजा आदिक स्वभक्ति करवानी कहीछे. ९

धार्मिक अने अधार्मिकनां लक्षणो कहीने, बाह्यदृष्टिवाळाने अक्षरादिक धामो अतिदूर होवानुं कहेवा पूर्वक तेनी समजणने मिथ्या कहीने, अन्तर्दृष्टिवाळाने ते धामो अतिसमीपमां होवानुं कहेवा पूर्वक तेनी समजणने सत्य कहीने, अन्तर्दृष्टियी पोतानी समीपे भगवानना धामो जोवानो प्रकार कहीने, तेवा अंतर्दृष्टिवाळानो महिमा कहीने, तेवा संतना समागममां व्यसनवत् पडी रहेनारानेपण तेवी पदवीनी प्राप्ति कहीछे. १०

पुरुषप्रयत्न अने भगवत्कृपाथी प्राप्त थता गुणोने पृथक् पृथक् कहीने, वैराग्यादिक कोइक अंगमां अपूर्ण सवासन भक्तने अन्यधामनी प्राप्ति कहेवा पूर्वक संपूर्ण अंगवाळा निर्वासननेज अक्षरधामनी प्राप्ति कहीने, सर्वे अंग संपूर्ण साधवानां कहीने, आने आ देहथीज निर्वासनिक थवाना उपायो कह्या छे. ११

साधुमां आत्मनिष्ठा, स्वधर्म अने दृढ निश्चय आ त्रण गुणनी अखंड स्थिति कहेवा पूर्वक कृपाळुता विगेरे बीजा गुणोनी शुभाशुभ देशादिकना संबन्धथी

थागति गति कही छे. तथा देह अने आत्मानी भिन्नभिन्न व्यक्ति जाणीनेपण कोइने तेनी विस्मृति थवामां कारण कहीने, आत्मस्वरूपनो केवी रीते विचार करवो तेनी रीति कही छे. १२

साक्षात् भगवानना शास्त्रप्रमाण विनाना निश्चयनो नाश थवानो कहेवा पूर्वक शास्त्रमूळक निश्चयनी अचळता सहेतुक कही छे. १३

'न स पुनरावर्तते' 'यद्गत्वा न निवर्तन्ते' इत्यादि वचनानुसारे भगवानना अक्षरादि धामने पामेला भक्तोनी अपुनरावृत्तिनो प्रकार कह्यो छे. तथा प्रमाद अने मोहरूप शत्रुने अविद्यारूप जाणीने तेनो त्याग करवामां दृढ खटको राखवानो कह्यो छे. तथा स्थूळ सूक्ष्म देहमां रहेलां तत्त्वोनी गणना करवा पूर्वक ते बन्नेनी तुल्यता कहीने स्थूळ सूक्ष्म देहथी करेलां कर्मोनीपण तुल्यता कहीने भक्तने कर्मबन्धननो अभाव अने अभक्तने कर्मबन्धननो भाव कह्यो छे. १४

आत्मनिष्ठा अने वैराग्ये युक्त एवा प्रेमी भक्तनी सहेतुक श्रेष्ठता कहेवा पूर्वक ते बन्नेए रहित केवळ प्रेमीभक्तनी सहेतुक न्यूनता कही छे. १५

श्रीनरनारायण भगवानतुं धर्म ज्ञान वैराग्य अने उपशमादिके युक्त एवुं तप सर्व कोइ मनुष्योना मोक्ष माटे नहि परंतु भक्तोनाज निर्विघ्न मोक्ष माटे छे एम सप्रमाण प्रतिपादन कर्युं छे. १६

भगवाननी उपासनाथी जेमजेम भक्तनी बुद्धि निर्मळ थती जाय तेमतेम भगवानतुं सूक्ष्मत्व, परतरत्व, महत्त्व अने स्वामिसेवकभाव अधिक अधिक जणायातुं कहीने, तेमां उपयोगी नाना प्रकारनां उदाहरणो आपीने उत्तरोत्तरनी दृढता करीने भक्तोना भेद कह्या छे. १७

'श्रद्धावान् लभते ज्ञानं' आ वचनने अनुसारे श्रद्धाळु होइने सारासार विवेकी थाय तो तेने सत्पुरुषना प्रसंगथी पूर्वस्थित काम क्रोधादि विकारोनो नाश थवा पूर्वक स्वधर्म वैराग्यादिक कल्याणकारी गुणोनी प्राप्ति थवानी कहीने, श्रद्धाळु होइने सारासार विवेकी न थाय तो तेने असत्पुरुषना प्रसंगथी पूर्वस्थित स्वधर्मादिक गुणोनो नाश थवा पूर्वक अस्थित कामक्रोधादिक दुःस्वभावनो आविर्भाव थवानो सदृष्टांत कहीने, कुसंगत्याग करवा पूर्वक सत्समागम करवानो कहीने, सत्समागमथीज दुःस्वभावतुं उपशमन थवातुं कहीने, सत्संग करीनेपण नहि निवृत्त थता दुःस्वभावनी निवृत्तिमां तेना नाशमां तत्परतारूप उपाय प्राप्त थनिकना नामाना दृष्टांतथी कहेवा पूर्वक तेनो प्रकार निरूपण करीने, सत्समागम करनारापण

कोइकने सत्संग कर्या पहेलां न होय एवापण मलिन दोषो सत्संग कर्या पछीपण उदय पामवामां वे हेतुओ कहेवा पूर्वक तेना नाशनो उपाय कहीने, रजतमादि स्वाभाविक स्वभावनोपण नाश साधन करवाथी थवानो कहेवा पूर्वक तेना उपायो बताव्या छे. १८

—कारियाणी-प्रकरणम्—

जीव अने बुद्धिनुं स्वरूप कहेवा पूर्वक भगवाननो निश्चय बुद्धिमां थवाथी जीवमांपण थइ जवानो सहेतुक कहीने तेनो अनुक्रम कहेवा पूर्वक इन्द्रियो अने जीवमां थएला निश्चयनुं लक्षण कह्युं छे तथा मनवाणीने अगोचर, गुणातीत, सर्वप्रकाशक भगवानने मायिक इन्द्रियो अंतःकरण शी रीते ग्रहण करी शके तेनो प्रकार कहेवा पूर्वक अभक्तना मनवाणीने अगोचर अने भक्तना मनवाणीने गोचर कहीने 'यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह' आ श्रुतिनो परस्पर बाध न आवे तेवो अर्थ करीने, आ लोकमां जीवोना कल्याणमाटे केवी रीते भगवानना अवतार थायछे विगेरे कह्युं छे. १

तुल्य बुद्धिनिश्चयवाळा बे भक्तमां एकने हरिहरिजननो अवगुण न आवे अने एकने गुण अवगुण आव्या करे तेमां प्रथमनानी श्रेष्टता अने बीजानी न्यूनता सूचववा पूर्वक बीजाने हरिहरिजनना अवगुण आववामां सत्पुरुषना अपराधथी बुद्धिनी शापितता थवारूप कारण बतावीने, पीडा पमाडेलो गरीब अने नहि सेवा करेला माता पिताना शापथीपण तेवी दूषित बुद्धि थवानी कहीने, तेवी दूषित बुद्धिनी विशुद्धिमां सर्वथा सर्वथी विशेष वर्तनरूप साधन सदृष्टांत कह्युं छे तथा कर्मनी अमूर्तता सहेतुक कहेवा पूर्वक तेना फळनी मूर्तता कहीछे. २

विवक्षित अर्थनी सिद्धिमाटे शुकानंदमुनिनी साधुतानी प्रशंसा करवा पूर्वक मनुष्यना गुणदर्शनथी तेमां स्नेह थवानो अने दोषदर्शनथी अवगुण आववानो कहीने मनुष्यना बाह्याचारथी गुणागुणनी अपरीक्षा कहेवा पूर्वक परिचयथीज परीक्षा थवावी कहीने, बहुधातो युवावस्थामां गुणागुणनी परीक्षा थवानी कहीने, बाल्यस्थांपण पापाचरणथी भय अने धर्ममां दृढ स्थिति थाय तो युवावस्थामां पण तेनी श्रेष्ठ स्थिति थवानुं कहेवामां उदाहरणमाटे पोतानुं तपादिके युक्त बाल्यचरित्र कह्युंछे तथा आत्मा अनात्माना विचारथी करेला मनोनिग्रहरूप

शमनुं लक्षण सूचवता पूर्वक दमनुं लक्षण सूचवीने, मानस दोषनी निवृत्तिमां शमनी अने शारीर दोषनी निवृत्तिमां दमनी हेतुता कहेवा पूर्वक मानस अने शारीर दोषो वर्णवीने, साधुत्वसाधक शम दमनी गृहस्थोनेपण आवश्यकता कहेवा पूर्वक त्यागीओने अत्यावश्यकता कहीने, तेवी स्थितिनी प्राप्तिमां सत्समागमरूप साधन कहीने, शम दमना संसाधननो त्याग करीने प्रास्यार्थनी इच्छावाळा त्यागीने ठबको आपवानी साथे शिक्षा आपीछे. ३

जड बुद्धिमां स्वतः ज्ञातृत्वनो असंभव होवाथी स्वतः ज्ञाता जीवना जाणपणाने कहेवे करीने बुद्धिनुं जाणपणुं उपचारथी कहेवा पूर्वक जीवनुं ज्ञातृत्वपण परमात्माने परतंत्र होवाथी परमात्माना जाणपणाने कहेवे करीने जीवनुं जाणपणुं कह्युंछे. तथा मूर्तिमान् साक्षीनीपण व्यापकता सदृष्टांत कहीछे. ४

यद्यपि भगवान् स्वधाममां रहीनेपण संकल्पमात्रथी मनुष्योनां कल्याण करवा समर्थ छे तथापि अवतार धारण करवानुं शुं प्रयोजन छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां **'परित्राणाय साधूनां'** आ गीतावचनना रामानुजभाष्य प्रमाणे धर्मस्थापने विगेरेने आगंतुक प्रयोजन कहेवा पूर्वक अतिप्रेमी भक्तना यथायर्थ मनोरथो पूर्ण करवा रूप मुख्य प्रयोजन बताव्युं छे. ५

दिवबंदरना प्रेमी हरिभक्तनी प्रशंसा करवा पूर्वक तेमनी उपर पोतानी अपूर्व प्रसन्नता बतावीने, भगवाननी प्रसन्नतामां कारणभूत भक्तना गुणो बतावीने, दोषमात्रमां मत्सरनी सहेतुक दुस्त्यजता प्रदर्शनपूर्वक तेने टाळवाना उपायो कहीने, मत्सर उपज्याना हेतुओ कहेवा पूर्वक तेनुं स्वरूप कहीने पोतानुं सद्वर्तन कहेवाद्वारा निर्मत्सर सत्पुरुषनी रीति कही छे. ६

विक्षेपना हेतुभूत गृहस्थाश्रममां रहेला भक्तोनेपण त्यागीनी पेठे भगवानमां अखंड मनोवृत्ति जे उपायोथी स्थिर थाय ते उपायो कहीने, उक्त उपायनी असंपत्तिथी व्यवहारमां आसक्तिरूप विक्षेपथी भगवानमां मनोवृत्तिनी स्थिरता न थाय तेवा निर्वळ गृहस्थभक्तने पण मोक्षनो सुकर उपायान्तर बतावा पूर्वक तेनीपण सद्गति थवानी कहीने, मायिक वस्तुमां वैराग्य थवामां हेतु कहेवा पूर्वक दृढ वैराग्यवाळानुं निर्विघ्न आत्यंतिक श्रेय थवानुं कहीने, साक्षात् भगवानना स्वरूपमां ज्ञानस्थितिरूप आत्यंतिकनिष्ठा कहेवाद्वारा माहात्म्यज्ञाने सहित आत्यंतिक श्रेयनुं स्वरूप कहेवा पूर्वक तेने पामेला सिद्धदशावाळा पुरुषनुं लक्षण कह्युं छे. ७

'अणोरणीयान् महतो महीयान्' इत्यादि श्रुतिस्मृतिमां प्रतिपादन करेलुं सूक्ष्मपणेकरीपण अतिसूक्ष्म एवुं भगवाननुं निर्गुणस्वरूप अने स्थूळपणेकरीपण अतिस्थूळ एवुं सगुणस्वरूप समजवानी रीति कहेवा पूर्वक तेने समजनाराने जे फळनी प्राप्ति थायछे ते कह्युं छे. ८

क्रोधनी अतिदुष्टता कहेवा पूर्वक तेना जयनी साधुओने अत्यावश्यकता कहेवा पूर्वक तेना जयना उपायो कह्या छे. तथा भक्तनो अवगुण नहि लेवानुं सहेतुक कहीने अवगुण नहि आववामां सदृष्टांत माहात्म्यज्ञाननी अपेक्षा बतावीने हरिहरिजनना माहात्म्यज्ञानवाळाने संपूर्ण सत्संगी कह्यो छे. ९

मोटामोटा तपस्वीभक्तोनी सप्रमाण कथा कहेवा पूर्वक त्यागीओने भगवत्प्रसन्नतामाटे मनमां तपोरुचि करवानी कहीने, भगवानने सर्वकर्ता नहि जाणनाराने पापिष्ठ कहेवा पूर्वक तेवानो अने तेवा शास्त्रनो संबन्ध चांडाळवत् त्याग करवानो कहीने, सर्व पदार्थोनो संग त्याग करीने भगवानने सर्वकर्ता जाणीने भगवत्प्रसन्नतामाटेज तप करवारूप स्वसिद्धांत कहीने, तपपण राधालक्ष्मीनी पेठे प्रेमभक्ति युक्त करवानुं कहीने, त्याग तपनी उत्कट इच्छावाळाने तेमां कोइपण विघ्न आडे नहि आववामां पोतानुंज उदाहरण आपीने उक्तार्थनी दृढतामां बीजां केटलांक उदाहरणो आपीने त्यागी भक्तोने तपोविधान कर्युं छे. १०

भगवानमां सत्य प्रीतिवाळा भक्तनुं लक्षण तदाज्ञानुवर्तनरूप गोपीयोना दृष्टांतथी कह्युं छे. तथा मायिक पंच विषयोनो त्याग करीने भगवानमां पंच प्रकारे जोडाएला भक्तने भगवाननो अखंड संबन्ध रहेवानो कह्यो छे. ११

जीवना कारण शरीरनुं स्वरूप कहीने तेनी दुर्भेद्यता कहेवा पूर्वक तेथी आत्माने पृथक् थवाना उपायो सदृष्टांत कह्या छे. तथा सत्वात्मक जाग्रत् अवस्थामां श्रवण करेला हरकोइ अर्थनुं यथार्थ ज्ञान न थतां रजःप्रधान स्वप्नावस्थामां तेना मननथी यथार्थ ज्ञान थवामां हेतु कहीने, पोतानी दिव्य वार्ताओनुं तप योग ध्यानादिकथीपण अधिक माहात्म्य श्रीमुखथी कह्युं छे. १२

—लोया-प्रकरणम्—

शंकर शब्दनो अर्थ कहीने, तमोगुणात्मक शंकरमां पोतानी सहेतुक अरुचि कहीने, तेमनी मान्यतामां हेतु कहीने, क्रोधनी अतिदुष्टता कहेवा पूर्वक तेनुं विरूप स्वरूप कहीने, तेनी साधुओने त्याज्यता कहीने, अल्प क्रोधनीपण भय-

जनकता बे दृष्टांतथी कहेवा पूर्वक तेनीपण अवश्य त्याज्यता बतावीछे. तथा अंतःशत्रु कामने मूळमांथी उखाडी नांखवाना उपायो (दृढ आत्मनिष्ठा, अष्टांग ब्रह्मचर्य, दृढ वैराग्य अने समाहात्म्यज्ञान उपासनरूप) कहीने, तेमां पण माहात्म्यज्ञाननी अधिकता कही छे. तथा उत्तम मध्यम अने कनिष्ठ वैराग्यनुं लक्षण तेवा वैराग्यवाळा पुरुषोनां लक्षणो कहेवा द्वारा कह्युं छे. तथा उत्तम मध्यम अने कनिष्ठ निश्चयज्ञाननुं लक्षण तेवा निश्चयवाळा पुरुषोनुं स्वरूप कहेवा द्वारा कह्युं छे. तथा संपूर्ण निश्चयवाळाने पण अंतरमां कृतार्थता नहि मनावामां कामादिक अन्तःशत्रुथी अंतःकरणनी दग्धतारूप कारण बताव्युं छे. तथा कामादिक अंतःशत्रुओना नाशना उपायो (वाणी मन अने देहना दंडरूप) बताव्या छे. तथा सत्संग करता बहु भक्तोमां संपूर्ण सत्संगवाळाने ओळखवानां लक्षणो कह्यां छे. तथा भगवानना भक्तनो महिमा क्यारेक अतिशय समझाय अने क्यारेक न समझाय तेमां कारण बताव्युं छे. तथा जेने हरिजननो अवगुण आव्यो होय तेने टाळवानो श्रद्धाळुसाध्य उपाय कह्यो छे. १

विश्वासी, ज्ञानी, शूरवीर अने प्रीतिवाळो आ चार प्रकारना भक्तोने संसारनो भय न रहेतां देह छतांज पोतानुं कल्याण मनाइ जवानुं कहेवा पूर्वक चार प्रकारना भक्तनां लक्षण कहीने ते चारनी अवश्य संपाद्यता कही छे. २

जेने भगवान् अने संतनो माहात्म्यज्ञाने सहित निश्चय होय तेवां लक्षण कहेवा पूर्वक तेवा भक्तोनी नामवार वार्ता श्रीमुखे करी छे. ३

आ ब्रह्मांडनी पेठेज अनेक ब्रह्मांडमां पोताना अनन्य भक्तोने दर्शनादिकनुं सुख आपवा माटे भगवानना अवतारो थवानुं कहीने, सदा मनुष्याकृति भगवाननेपण योगैश्वर्यथी कार्यवशात् मत्स्याद्याकृतित्व धारणनी संभावना कहीने, प्रत्येक ब्रह्मांडमां कल्याणनी रीति अने भगवाननी मूर्तिनी एक प्रकारता कहीने, मुझाइने शोके करीने प्रेम आदिक क्रिया नहि करवानी सहेतुक कही छे. ४

संतोनी आगळ केवा संकल्पो कह्याथी निष्कपट अने न कह्याथी सकपट कहेवाय तेनो प्रकार, सकपटनी बहुकाळे सहवासथी परिकळना, दंभथी वर्तमान अने निश्चयने बीजानी आगळ वधारे देखाडता दंभी भक्तनो ज्यारे तेनो मानभंग थाय त्यारे शोक कोपादिकथी परिकळना, केवो अने क्यां सुधीनो संकल्प स्वधर्मथकी अने निश्चयथकी भ्रष्ट करे अने न करे तेवो प्रकार, दत्तात्रेयमुनिनीपेठे संतनो गुण ग्रहण करनारानी सत्संगमां बद्धमूळता अने

दोषग्राहीनी अवद्धमूळता, दुर्जय इन्द्रियोना जयथी भक्ति ज्ञाननी सिद्धि कहेवा पूर्वक संत सच्छास्त्र अने सारासार विचारथी प्राप्त थएली त्रण प्रकारनी युक्तियोथी इन्द्रियजयनी सिद्धि कहेवा पूर्वक त्रणथी पामवानी पृथक् पृथक् युक्तियोनो प्रकार, केवळ अंतःकरणना जयथी बाह्येन्द्रियनो अजय कहेवा पूर्वक पंच इन्द्रियोना नियममां वर्तनाराने बाह्येन्द्रियजयथी अंतःकरण जयनो सहेतुक प्रकार, इन्द्रियो अने मनना जयना पृथक् पृथक् उपायो विगेरे कह्युं छे. ५

सत्संग थया पछी एकांतिकतानी दुर्लभमां दुर्लभता कहेवा पूर्वक तेनुं लक्षण, एक निष्काम धर्मना रक्षणथी सर्व धर्मनुं रक्षण अने भगवानना एक निश्चयना रक्षणथी भक्तिनां श्रवणादि सर्व अंगोनुं रक्षण, निश्चयरूप मति नहि फेरववामां अर्थ अने फेरववामां अनर्थ कहेवा पूर्वक स्वमतिथी कल्पेला कार्याकार्यत्वना निश्चयरूप मतिनी साधुना वचनथी फेरववामां अर्थ अने न फेरववामां अनर्थ, जे त्यागी अथवा गृहस्थ लौकिक अर्थमां आसक्त होय तथा देहाभिमानी होय तथा मानी होय ते यद्यपि धर्मनिष्ट अने निश्चयवाळो होय तथापि तेना संगनी सहेतुक अनर्हता, धैर्योत्साह विनानी वात करनारा गुणीनीपण संगानर्हता, धैर्योत्साहवाळो गुणी होय तथापि शिथिल स्वाश्रितने धैर्योत्साह आपीने सद्वचनथी उत्तेजित न करे तो तेना संगनीपण अनर्हता, भगवानना आश्रयनुं बळ नहि राखीने केवळ पुरुषार्थनीज अधिकता कहेनारा गुणीनीपण संगानर्हता, स्नानादिकमां प्रमादी अने ध्यानमां जे निद्राळु होय ते यद्यपि सर्वसद्गुणसंपन्न होय तथापि तेना संगनी अनर्हता, जेनी वातमां स्वगुणनो उत्कर्ष आवे अने बीजाना गुणनो अनुत्कर्ष आवे ते यद्यपि सारी वात करतो होय तथापि तेना संगनी अनर्हता, कुत्सितशब्दवाळी होय तथापि अमृतनी पेठे पान करवा योग्य एवी वाणीनुं स्वरूप, भक्तोनी आगळ मान न राखवानुं कहेवा पूर्वक विमुखनी आगळ मान राखवानो प्रकार, कये ठेकाणे भगवानना दर्शनादिकनुं हेत न राखवुं अने कये ठेकाणे हेत जणाववुं तेनो प्रकार, भगवान प्रसन्न थाय तेवुं होय तथापि ते न करवुं अने अप्रसन्न थाय तेवुं होय तथापि ते करवुं तेनो प्रकार, ध्यान करवाना समये मनमां समुद्रतरंगवत् उत्पन्न थता अशुभ संकल्पोनी शांतिनो उपाय, देहाभिमानरूप दोषने सर्व दोषाकर कहेवा पूर्वक तेना त्यागथी सर्व दोषोनो त्याग अने आत्मनिष्ठाने सर्व गुणाकर कहेवा पूर्वक तेना रक्षणथी सर्वगुणोनुं रक्षण, मोटो गुण होय तथापि ते त्याज्य होय अने दोष होय तथापि ते ग्राह्य होय एवा गुणदोषनो

विवेक, भगवानसंबन्धी पंचविषयना सेवनथी बुद्धिमां प्रकाश अने जगतसंबन्धी पंचविषयना सेवनथी अंधकार थवानो प्रकार, केवा देशकालादिकनो संबन्ध भगवाननी आज्ञाधीपण न राखवो तेनो विभागप्रकार, कया शास्त्रनुं पठन श्रवण करवुं अने कयानुं न करवुं तेनो विभागप्रकार, एवी रीते ओगणीश प्रश्नोना उत्तरो आप्याछे. ६

'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' 'तमेव विदित्वातिमृत्युमेति' आ श्रुतिथी साक्षात्कारज्ञानने मुक्तिहेतु कहीने, भगवानमां बहु रूप होवाथी जेनुं बाह्य, आंतर करण अने अनुभवथी ग्रहण थाय एवा प्रत्यक्ष नराकार भगवानने ज्ञानमां विषय कहीने, तेवातो श्रीकृष्णभगवान् छे एम कहीने तेमां तेमनांज 'यस्मात्क्षरमतीतोऽहं' इत्यादि वचन कहेवा पूर्वक तेमनो महिमा कहीने, श्रीकृष्णने तेवीरीते जाणीने तेमनी एकांतिकभावथी भक्ति करनाराने संपूर्ण ज्ञानी कहीने, तेवा ज्ञानथीज मुक्ति थवानी कहीने, तेवा ज्ञाननी सिद्धिमां तप योगादिक सर्व साधनोनो उपयोग कहेवा पूर्वक तेमनी तदंगता कहेवाद्वारा मुक्तिप्रत्ये बीजा साधननी अस्वतंत्रता कहीने, तेवुं ज्ञान अने भक्तिए रहित केवळ आत्मज्ञाननी न्यूनता कहेवा पूर्वक तेनी सप्रमाण निष्फळता कहीने, आत्मज्ञानीने पण परमात्मानी उपासनानी सप्रमाण आवश्यकता कहीने, ब्रह्मनिष्ठ भक्तने संपूर्ण सुखप्राप्ति अने केवळ ब्रह्मनिष्ठने अल्पसुखप्राप्ति कहीने, भक्तिना आश्रयरूप परब्रह्म श्रीकृष्ण भगवानने सप्रमाण जडाजड प्रकृतिना आधार कहीने अने जडाजड प्रकृतिने तत्सृज्य कहीने, शरीर शरीरिभावथी सप्रमाण सर्वरूपता कहीने, भगवाननी निर्दोषता सदृष्टांत कहीने, प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण परब्रह्मनी सेव्यता समर्थन करीने, तेवा भगवानना माहात्म्यज्ञानथी मुक्ति कहीने, एवा ज्ञानवाळाने ज्यारे भगवाननुं साक्षात् दर्शन थाय त्यारे संपूर्ण ज्ञानी थवानुं कहीने, तेवा ज्ञानीनी 'ज्ञानी त्वात्मैव मे मतं' आ वचनथी प्रशंसा करीने, साक्षात्कार ज्ञानने मुक्तिहेतु समर्थन करीने, केवळ अहं ब्रह्मास्मि थनारानी कुमति कहीछे. ७

बुद्धिमान् अने सत्स्वभाववाननेपण संतनो अवगुण आववामां कारण, कामादिक *अंतःशत्रुना वेगनी मंद तीव्रताना हेतु अने तेना टाळवाना उपायो,* व्यसनोने क्रियमाण कहीने तेना त्यागनी सुशकता कहेवा पूर्वक तेने टाळवाना उपायो, सारी नरसी प्रकृति थवामां हेतुओ, पूर्वकर्मजन्य अने क्रियमाणकर्मजन्य दुःस्वभावने विवेकबुद्धिथी जाणवानो प्रकार कहेवा पूर्वक तेने टाळ-

वाना उपायोमां भेद, इन्द्रियोनी चंचळता टाळवाना भिन्न भिन्न उपायो, जिह्वा इन्द्रियना परिपक्व जयथी बीजी सर्वे इन्द्रियोना जयनी सुशकता, जेना अंतरमां काम व्याप्यो होय तेने बहारथी जाणी शकवानो प्रकार, जे विचारथी चंचळस्वभाववाळो शांत थाय अने शांतस्वभाववाळो चंचल थाय तेवो विचारप्रकार, स्वाभीष्ट आठ सच्छास्त्रोमां पहेलुं सर्व ग्राह्यपणे कहीने 'यावानर्थ उदपाने' आ गीतावचन प्रमाणे मुमुक्षुने स्वांगमां यावदुपयुक्त ग्रहण करवानो प्रकार, यम, गुरु, शास्त्र, संग उपदेशादिक सर्वे तुल्य छतां साधुवर्गमां न्यूनाधिकपणुं रही जवामां कारण, विगेरे कह्युं छे. ८

एकांतिकभक्तिमां अंगभूत धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने भक्तिना ज्ञानने उदय थवाना पृथक् पृथक् हेतुओ कह्याछे. ९

साधारण अने असाधारण स्नेहनो हेतु, मंद मध्यम अने तीव्र आ त्रण प्रकारना जीववृत्तिना वेगो, जीववृत्तिनी त्रिविधता थवामां हेतु, त्रण वेगोनुं लक्षण, वेगना प्रसंगथी जीवात्मा परमात्माना ज्ञाननी दृढता, माया जेने जेवीरीते सुखदा अने दुःखदा थायछे तेनो सदृष्टांत प्रकार विगेरे कह्युं छे. १०

सच्छास्त्रनो असत्पुरुषसंमत सिद्धांतनो त्याग करावा अने सत्पुरुषसंमत सिद्धांतनुं ग्रहण करावा माटे असत्पुरुष अने सत्पुरुष सच्छास्त्रनो केवी रीते सिद्धांत जाणेछे तेनो पृथक् पृथक् प्रकार कह्यो छे. ११

सविकल्प अने निर्विकल्प एवा भेदथी भगवाननो निश्चय बे प्रकारनो कहीने बे प्रकारनो निश्चयपण उत्तम मध्यम अने कनिष्ट भेदथी त्रण त्रण प्रकारनो कहीने, ते छो भेदोनां पृथक् पृथक् लक्षणो कहीने, निश्चयमां तेवो भेद थवाना हेतुओ कहेवा पूर्वक निर्विकल्प निश्चयना उत्तम भेदनी सर्वापेक्षया श्रेष्टता कही छे. १२

केवी स्थितिवाळा पुरुषने अशुभ देश, काळ, क्रिया अने संगादिक बाध करी शके अने केवी स्थिति वाळाने न करी शके तेनो प्रकार कह्यो छे. तथा भगवानना साधर्म्यपणाने पामेला गुणातीत अक्षरस्थ मुक्तो अने भगवानमां कया प्रकारथी भेद छे ते प्रकार कहीने 'एकमेवाद्वितीयं' आ श्रुतिनो निर्बाध अर्थ कर्यो छे. १३

स्वभक्तशिक्षार्थे अन्य आचार्योनो अभिप्राय (भगवत्स्वरूपनो बोधप्रकार, भगवत्प्रसन्नतानुं साधन अने मुक्तिप्रकारनिर्णय विगेरे सिद्धांत) कहेवा पूर्वक पोतानो अभिप्राय तथा रुचि सविस्तर कहीछे. १४

जीवनी हृदयमिषे विशेषसत्ताथी अवस्थितिनो प्रकार, अध्यात्मादिकमां प्रकाशेश्वरीने सामान्यसत्ताथी व्याप्तिनो प्रकार, अध्यात्मादिकमां व्याप्त एवा प्रकाशपर्याय आत्मज्ञान (धर्मभूतज्ञान) नी न्यूनाधिकता जणायानो हेतु, आत्मप्रकाशनी स्वत.अविषमतानुं सदृष्टांत समर्थन, धर्मभूत आत्मज्ञाननी मुक्तावस्थामां अंतर्बहिः सर्वत्र व्याप्ति कहेवा पूर्वक तेनी निर्लेपता, भगवदुपासनानी न्यूनाधिकताथी आत्मदर्शननीपण न्यूनाधिकता सदृष्टांत कहेवा पूर्वक संपूर्ण उपासनथी संपूर्ण आत्मदर्शन कहीने, सम्यक् आत्मदर्शीनुं स्वरूप कहेवा पूर्वक जीवनुं स्वरूप कहीने, उपासना विना आत्मदर्शननी लेशपण प्राप्ति नहि थवानी कहीछे. तथा जीवमां भगवान् केवी रीते व्यापीने रह्या छे तेनो प्रकार कहीने प्रकारान्तरे श्रीकृष्णना स्वरूपनुं वर्णन करनारा सांख्य योग अने वेदांतनो अभिप्राय कह्यो छे. १५

जेना हृदयमां विषयवासना तीक्ष्ण होय, जेना हृदयमां कुंठित थइ गइ होय अने जेना हृदयमां निर्मूळ थइ होय एवा त्रण प्रकारना भक्तोनां भिन्न भिन्न लक्षणो, कुंठित थएली विषयवासना निर्मूळ थवाना चार उपायो, (स्वधर्म, आत्मज्ञान, वैराग्य अने समाहात्म्यज्ञान भक्तिरूप) जेनाथी कामादि सर्व दोषो नाश पामे अने धर्मादि सर्व गुणो आवे एवुं भगवत्प्रीतिनुं असाधारण साधन, (माहात्म्यज्ञानरूप) कपटीना कपटने कळवानां लक्षणो, जे एक दोषथी सर्व सद्गुणो दोषरूप थाय तेवो दोष (भक्तद्रोह अने भगवाननुं निराकारत्वज्ञानरूप) साधुओनो अभाव आववामां मानरूप दोषनी हेतुता, तेवा मानना नाशमां अतिशय माहात्म्यज्ञाननी हेतुता, माहात्म्यज्ञानथी जेमने मान नष्ट थयुं छे एवा उद्धव तुळसीदास विगेरेनां दृष्टांतो विगेरे कह्युंछे. १६

विषम देश काळादिकमांपण जे भक्तनी भगवान् अने तेमना भक्तथी विपरीत मति न थाय तेना चार उपायो कहेवा पूर्वक विपरीत मति थवाना हेतुओ, सत्संगमांथी क्यारेयपण भ्रष्ट न थवाना अने थवाना पृथक् पृथक् प्रकारो, पंच विषयोमां जेने अभाव होय तेनां लक्षणो, विषयनो अभाव थवामां माहात्म्यज्ञाननी मुख्य हेतुता कहेवा पूर्वक तेनो प्रकार, माहात्म्यज्ञाननुं फळ विगेरे कह्यु छे. १७

भक्तिबीज सर्वने श्रेयःप्राप्ति कहेवा पूर्वक तेमां प्रत्यक्ष भगवानना निश्चयनी मूळकारणता कहेवा पूर्वक निश्चयनुं स्वरूप निरूपण करीने मनुष्य भावमां पण दिव्यभावनी दृढता करवानी कहीने तेवा निश्चयपूर्वक भक्ति करनारा भक्तनी संपूर्ण ज्ञानिता कहीछे. १८

—पंचाळा-प्रकरणम्—

मायिक विषयनी तुच्छतानो विचार करवाथी अने आनन्दमूर्ति भगवानना आनंदनी अनवधिकातिशयता विचारवाथी मायिक रमणीय पांचे विषयोनी तुच्छता थइ जवानी कहीछे. १

सांख्य अने योगमां जे दोषो छे तेनुं निरूपण करवा पूर्वक ते दोषोनी निवृत्ति-माटे सत्पुरुषथी जाणवा योग्य युक्तियो कहीने, सांख्य अने योगने परस्पर अपेक्षा कहेवा पूर्वक ते बन्ने शास्त्रनो निश्चित सिद्धांत कहीने, आधुनिक सांख्य योगीनी सहेतुक गर्हणा करी छे. २

ईर्ष्या मानादि दोषनी निवृत्तिनो हेतु. तथा शुद्ध आत्मस्वरूपे थईने भगवानमां स्नेह करवानी रीति तथा तेवा भक्तनी सप्रमाण श्रेष्ठता तथा तेनी कर्तव्यता विगेरे कह्युं छे. ३

अक्षरधामस्थ दिव्यस्वरूप अने भूमिस्थ मानुष स्वरूपना अभेदज्ञानथी भगवानना निश्चयनी निःसंशयता करवानो प्रकार कह्यो छे. ४

जेमनी आगळ मान राखवुं अने जेनी आगळ न राखवुं ते बन्नेनी व्यक्ति कही छे. ५

सर्व स्वरूपोना अने सर्व ऐश्वर्यना आविर्भावथी श्रीकृष्ण भगवाननी सर्व अवतारोनी अपेक्षाए अधिकता कही छे. ६

मायिक आकारनो निषेध करवा पूर्वक भगवानना दिव्याकारनुं प्रतिपादन करीने, अक्षरस्थ अने भूमिस्थ प्रत्यक्ष रूपनो अभेद कहीने तेमां दृढ निष्ठा करवानी कहीने, उक्तार्थना समर्थन माटे नाना प्रकारनां दृष्टांतोनुं विवरण कर्युं छे. ७

—मध्य-प्रकरणम्—

मोहनुं फळ साथे स्वरूप, तेमां स्वानुभवनी प्रमाणता, मोहना उदयमां उत्तम विषयासक्तिनी क्रोधद्वारा सहेतुक हेतुता, तेमां 'ध्यायतो विषयान्पुंसः' इत्यादि गीतावचननुं प्रमाण, मोहनी निवृत्तिमां साधनत्रयनी सहेतुक आवश्यकता, त्रण साधनमांथी, माहात्म्यज्ञाननी सहेतुक विशेषता, निर्मोहीनुं स्वरूप, तेनीज एकांतिक ज्ञानीशब्दथी वाच्यता, पतिव्रताना अंगनी सदृष्टांत प्रशंसा, निर्मोहितानी त्वराथी अप्राप्ति कहेवा पूर्वक धीरेधीरे आदरताथी तेनी प्राप्ति अने तेमां दृष्टांत, साधनदशा अने सिद्धदशानां लक्षण विगेरे कह्युं छे. १

आत्यंतिककल्याण प्राप्ति अने नारदादिना जेवी साधुता प्राप्तिमां इन्द्रियोना जयरूप साधन, जीवसंसृतिमां इद्रियोनी हेतुता कहेवा पूर्वक तेनो प्रकार, साधन विना इद्रियजयनी सदृष्टांत असिद्धि कहेवा पूर्वक बाह्य इन्द्रियजयमां प्रत्याहारनी अने आंतर इन्द्रियजयमां आत्मविचारनी सदृष्टांत हेतुता कही छे. २

रसिक भक्तिमार्ग अने महाज्ञानमार्ग जे प्रकारे समजवाथी संसृतिमां हेतु थाय अने जे प्रकारे समजवाथी मोक्षमां हेतु थाय तेनो प्रकार निरूपण कर्यो छे. ३

धर्म राखवा जाय तो भक्ति जाय अने भक्ति राखवा जाय तो धर्म जाय एवा आपत्काळमां भगवाननी प्रत्यक्षता सतेतो तेमनी इच्छा प्रमाणे वर्तवानुं कहेवा पूर्वक भगवाननी परोक्षतामां धर्मभक्तिना आश्रयरूप भगवाननी मूर्तिना अखंड चिंतनरक्षणथी धर्मभक्तिनुं रक्षण थवानुं कह्युं छे. तथा भगवाननुं अधमोद्धारण पतितपावनत्वादिक माहात्म्य जाणनाराने 'को वाऽर्थ आप्तोऽभजतः स्वधर्मतः' इत्यादि वचने करीने धर्मना अपकर्ष ज्ञानथी अधर्ममां प्रवृत्ति थाय तो कयो विचार करवाथी धर्ममां दृढ स्थिति थाय ते विचार प्रकार कह्यो छे तथा तेवा विचारवाळानेपण अखंड चिंतवन नहि थवामां श्रद्धानी मंदताने हेतुपणे कहीने तेथीज माहात्म्यज्ञाननी अने तेथीज भगवन्निश्चयनीपण मंदतानी अनुमेयता कहीने माहात्म्यज्ञाननुं निरूपण करवा पूर्वक तेवा ज्ञानी उद्धवादिकना प्रशंसा साथेना सदाचारथी अखंड चिंतनमां माहात्म्यज्ञाननी आवश्यकता कही छे. ४

भक्तोने भगवानमां पतिव्रताधर्म अने शूरवीरधर्म राखवानी रीति कहीने, समदृष्टिवाळानेपण विमुखनो पक्ष नहि राखवानो कहेवा पूर्वक भगवदीयनोज पक्ष राखवानो नारद ध्रुवादिना सदाचारथी कह्यो छे. ५

नास्तिकोनी दुरुक्तिनी अनुवाद करवा पूर्वक तेनुं खंडन करीने, युक्तिथी विधिनिषेधनी सत्यता प्रतिपादन करीने, महर्षिओनी आप्तता कहेवा पूर्वक तेमणे रचेली विधिनिषेधात्मक स्मृतिओनी फळानुमाने करीने हुंडीना दृष्टांतथी प्रामाणिकता समर्थन करीने, तेमां विश्वास करवानो कह्यो छे. तथा सारा नरसा दृष्ट श्रुत विषयोमां निर्मळ मननेपण चोटवानो स्वभाव कहीने चित्तधर्मोथी ग्लानि न पामतां तेथी आत्माने पृथक् मानीने भगवाननुं भजन करवानुं कह्युं छे. ६

भक्तिमां अंतरायक लोभादि दुःस्वभावनो त्याग करवानी इच्छा छतांपण तेनो त्याग नहि करी शकवामां वैराग्यनी दुर्बळतारूप कारण सदृष्टांत बता-

चीने, वैराग्यहीनने दुःस्वभाव टाळवाना उपायमां अन्य उपायनी कठिनता कहेवा पूर्वक सत्पुरुषनी सेवा अने भगवदाज्ञामां तत्परताथी थएली भगवत्कृपारूप सुकर उपाय कह्यो छे. ७

एकादशीनी पुराणोक्त प्रवृत्तिकथा कहेवा पूर्वक तेनुं लक्षण कहीने तेना व्रतनी अवश्य कर्तव्यता, सर्वयज्ञोनी अपेक्षाए ज्ञानयज्ञनी सहेतुक श्रेष्ठता, तेनुं अंतर्दृष्टिरूप लक्षण, भगवानना संबन्धथी अने असंबंधथी सर्व क्रियाओनी निर्गुणता सगुणता कहेवा द्वारा तेवी तेवी क्रियामां प्रवर्तेलानी निर्गुणता सगुणता तेवा ज्ञानयज्ञमां भगवानना अंश जीवोनीज प्रवृत्तिशक्ति कहेवा माटे 'ममैवांशो जीवलोके' आ गीतावचननो स्वार्थमां अर्थ निरूपण, यज्ञरहितनुं अकल्याण, ज्ञानयज्ञने सत्संगशब्दथी कहीने तेनी फळनिरूपण साथे अवश्य कर्तव्यता विगेरे कह्युं छे. ८

साकार दिव्यमूर्ति सर्व अवतारना अवतारी स्वस्वरूपना दृढ आश्रयबळनी धर्मादिकनी अपेक्षाए अधिकता 'सर्वधर्मान् परित्यज्य' आ गीतावचनने अनुसारे अर्जुनना दृष्टांतथी कही छे. तथा भगवानना स्वरूपनो द्रोह न थाय तेवो ज्ञानमार्ग समझवानी रीति कही छे. तथा पाका सत्संगीनुं लक्षण कर्युं छे. ९

भागवतनी साकार ब्रह्मपरता समर्थन, भगवानने दिव्यमूर्ति जाणीने तेना दृढाश्रयनी कर्तव्यता, भगवानमां अतिशय प्रीति थवानां त्रण साधनो, (भगवाननुं ज्ञान, वैराग्य अने नवधा भक्तिरूप) ते त्रणनुं स्वरूप निरूपण करवा पूर्वक तेनां लक्षणो, त्रणमांपण प्रीति थवामां नवधा भक्तिनी विशेष कारणता, भक्तिनी दुर्लभता कहेवा पूर्वक तेवा भक्तनां लक्षणो विगेरे कह्युं छे. १०

यज्ञादि सर्व क्रियाओनी स्वर्गादि फळजनन द्वारा संसृति हेतुता निरूपण करवा पूर्वक तेनी तेज क्रियाओ फळानुसंधान नहि राखीने भगवदर्थीअर्थे करे तो निर्गुण थवानी साथे भक्तिरूप थइने मोक्षने माटे थवानुं कहेवामां 'आमयो यश्च भूतानां' आ भागवतवचननुं प्रमाण आपी तेनी दृढता करीने, लोकदृष्टिथी समानपणे जणाती भक्त अभक्तनी क्रियामां फळभेदथी महान् भेद 'कर्मण्यकर्म यः पश्येत्' आ गीता वचनथी बताव्योछे. ११

कायानगरमां वसता जीवरूप मुख्य राजाए ज्ञानरूप नीतिशास्त्र जाणिने घरना माणसने ठेकाणे वसता मन आदिक अने गामना तथा देशना माणसोने ठेकाणे रहेला इन्द्रियादिकने सर्वथा स्ववशमां वर्तावबारूप पुरुषप्रयत्नरूप एक बळवान् साधनमां कल्याणनां सर्व साधनोनो समावेश कर्योछे. १२

स्वभक्तशिक्षार्थं अक्षरस्थ, दिव्याकृति, अवतारी, निर्गुण एवा स्वस्वरूपनुं परोक्ष-पणे समाहात्म्य सर्वोत्कृष्ट ज्ञान निरूपण कर्युं छे. १३

तादात्म्यनुं निश्चयरूप लक्षण कहीने, भगवत्स्वरूपमां तेवुं तादात्म्य थवामां समाधिनी अहेतुता कहेवा पूर्वक एकांतिकना प्रसंगनी हेतुता कहीने, उक्त निश्चयनेज निर्विकल्प समाधिनी पदवी आपीने, तेवा निश्चयवाळो भक्त प्रवृत्तिमार्गमां प्रवर्ते अथवा निवृत्तिमार्गमां प्रवर्ते तथापि तेने निर्गुण ब्रह्मस्वरूप जाणवानो कहीने, तेनी दृढता करवा माटे प्राचीन नारदादि भक्तोनुं दृष्टांत आपीने, विपक्षमां दोष कहीने, तेवा निश्चयवाळो यद्यपि व्यवहारमां अल्पबुद्धि अने अविद्वान् होय तथापि तेने महाज्ञानी जाणवानो कहीने, तेवा भक्तोने कामादि अंत शत्रुओनो अनायासथी तत्काळ जय थवानो कहीने, १३ वचनामृतमां कहेला स्वस्वरूपज्ञाननो महिमा वर्णव्यो छे. १४

जे कोइ एक विचार करवाथी कामादिक समग्र दुर्जय दु स्वभावो तत्काळ नाश पामे अने जेना विना बीजा हजारो विचारो करवाथी पण नाश न पामे एवो सर्वोत्तम एक विचार (स्वस्वभाव उपर परिपक्व शत्रुबुद्धिरूप) कह्योछे तथा जे पुरुष धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने भक्तिथी क्यारेयपण भ्रष्ट न थाय तेवा पुरुषनुं लक्षण (बीजानी छायामां न दबावारूप तेजरूप) कह्युंछे. १५

युधिष्ठिरराजानी पेठे धर्मनिष्ठानी अपेक्षाए अर्जुननी पेठे स्वरूपनिष्ठानी सहेतुक श्रेष्ठता कहेवा पूर्वक स्वरूपनिष्ठाना दृढीकारथी धर्मनिष्ठानो स्वतः दृढीकार सहेतुक कहेवा पूर्वक स्वरूपनिष्ठानी अवश्य संपाद्यता कहीछे. तथा विषय विनयमां वैराग्यनी अप्रयोजकता कहेवा पूर्वक तेमां परमेश्वरे बांधेला तेते इन्द्रियोना निरोधरूप नियमो पाळननी प्रयोजकता कहीने तेनो प्रकार बतावीने वैराग्यवाळा ज्ञानीनेपण नियमपालननी सहेतुक आवश्यकता कही छे. तथा नियमपाळनमां श्रद्धानी आवश्यकता कहेवा पूर्वक श्रद्धानी त्रिविधताथी फळमांपण भेद कहीने उत्तम श्रद्धावाळानी उत्तमता कहेवा पूर्वक मंद श्रद्धावाळानी गति कही छे. तथा तीव्र श्रद्धावाळा पुरुषनां लक्षण कह्यां छे. तथा विषय सन्मुख इन्द्रियोनी तीक्ष्णता टाळवानो उक्त नियमरूपज उपाय बतावीने, मंदश्रद्धावाळाने श्रद्धावृद्धिनो उपाय बताव्यो छे. १६

ध्यान करनारा भक्ते भगवानना स्वरूपने तत्त्वे सहित समजवुं के रहित समजवुं ? आ प्रश्ननो उत्तर आपवानी साथे भगवानना स्वरूपने महिमाए करीने

उद्धव अने गोपीयोना सदाचारथी निर्दोष निर्विकारी असंगी जाणवानो प्रकार कह्यो छे. १७

नास्तिक अने शुकवेदांतिनी दुर्मति निरूपण करवा पूर्वक तेना प्रसंगने महापापादिकथीपण अधिक पापपणे कहीने तेना संगनी सर्वथा त्याज्यता कही छे. १८

शुष्कज्ञानी अने तेमना ग्रन्थोनो प्रसंग सर्वथा त्याग करावीने आश्रितोना हित-माटे पतिव्रतानी पेठे भक्तिसिद्धि अने धर्मसिद्धिमाटे तेमनी उपर देशांतरमां पत्र लखावी मोकल्यो छे. १९

प्रवृत्त धर्मवाळा के निवृत्त धर्मवाळाने भगवत्कृपाथी प्राप्त थएली समाधिमां भगवाननो संबन्ध होवाथी ज्ञाननीतो सम्यक् वृद्धि थवानुं कहेवा पूर्वक इन्द्रियशक्तिनी तो अवृद्धि कहीने, इन्द्रिय शक्तिनी वृद्धितो तप, वैराग्य, निष्कामादिके युक्त अष्टांगयोगथी थवानी कहेवा पूर्वक तेवानेज शुकादिकना जेवी सिद्धदशाप्राप्ति थवानी कहीने, तपादिके वर्जित केवळ समाधिथी सिद्ध-दशा न आववामां जनकराजानुं उदाहरण आपीने, तेवानेपण प्रवृत्तिमार्गनो त्याग करी तपादिके युक्त अष्टांगयोग साधवाथी सनकादिकना जेवी सिद्धदशानी प्राप्ति कहीने, सिद्धदशावाळानो सर्वलोकमां अप्रतिहत गतिरूप उत्कर्ष बताव्यो छे. २०

केवळ वर्णाश्रमधर्मनी अल्पफळता कहेवा पूर्वक तेनाथी कल्याणनो अभाव कहीने, आत्यंतिक कल्याणप्राप्तिमां परोक्षवत् प्रत्यक्ष भगवान् अने तेमना साधु-पुरुषना माहात्म्यनी परम कारणता कही छे. तथा जीव ईश्वरनी स्वसृष्टि अने तेना भोगमां तेमनी अकर्तृता कहेवा पूर्वक तेमां 'स हि कर्ता' आ श्रुतिने अनु-सारे परमात्मानीज कर्तृता प्रतिपादन करीने देशादिकनी अपेक्षाए परमात्मानी सर्वाधिक प्रधानता कही छे. २१

राजानी बे सेनाना दृष्टांतथी शूरवीर एकांतिक भक्त अने कायर शिथिल भक्तनां लक्षण कहीने, उक्तार्थना उदाहरणार्थे पोतानुं उग्र वृत्तांत भक्तजन शिक्षार्थे कहीने एकांतिक भक्तने वर्तवानी रीति तथा तेनुं माहात्म्य वर्णव्युं छे. २२

मननी बे प्रकारनी वृत्ति कहेवा पूर्वक लोकमारक हिम अने लुकना दृष्टांतथी सुखद दुःखद मायिक विषयोथी जेनुं मन भगवानमां आसक्त थएलुं होवाथी सुखि दुःखि न थाय तेवानेज परमभागवत साधु जाणवाना कह्या छे. २३

सांख्यनिष्ठावाळा भक्तोने सम्यक् ज्ञानबळनी अधिकता होवाथी भगवान् विनाना बीजा विषयोमां अतिवैराग्य होवाथी विषम देशकाळादिक भक्तिमां अंतराय करनारा नहि थवाना कहेवा पूर्वक योगनिष्ठावाळाने ज्ञानबळनी अल्पता होवाथी अन्यत्र आसक्ति थवाथी विषम देशादिक भक्तिमां अंतरायक थवाना कहेवा पूर्वक उक्त बन्ने निष्ठावाळानेतो भक्तिमां विषम देशादिकथीपण क्यारेयपण कोइपण विक्षेप आडो नहि आववानो कहीने बन्ने निष्ठावाळा भक्तनी उत्तमता कही छे. २४

सवासन त्यागी भक्त अने निर्वासन गृहस्थ भक्तनी भिन्नभिन्न गति कही छे. तथा वासनाविनाशमां उकाखाचरना दृष्टांतथी सत्पुरुषनी अनुवृत्तिपूर्वक परिचर्याना व्यसनरूप उपाय बताव्योछे. तथा भगवाननी अतिशय प्रसन्नताना उपायमां सत्पुरुषविषे दरिद्र अवस्थाना जेवीज धनाढ्य अवस्थामां अने चक्रवर्ती राज्यावस्थामांपण प्रीति अने दीनता राखवानी कहीने, त्यागीओनेपण ते प्रमाणे वर्तवानुं कह्युं छे. २५

भगवान् अने एकांतिक भक्तने जे प्रतिकूळ होय तेवुं आचरण नहि करवानुं कहेवा पूर्वक जे अनुकूळ होय तेवुंज आचरण करवानुं कहीने, भक्तिमां अन्तराय करनारा स्वजन के स्वस्वभावनो तत्काळ त्याग करवानो कहीने, धर्म ज्ञान अने वैराग्यपण जे रीते भक्तिमां अन्तराय करनारा न थाय तेवी रीते तेमने भक्तिना अंगपणे राखीने, भक्तिनीज मुख्यता करवानी कहीने, भक्तनो अवगुण नहि ग्रहण करतां गुणज ग्रहण करवानो कहीने, पोतानो तो अवगुणज ग्रहण करवानो कहीने विपक्षमां दोष बताववा माटे श्रीदामा अने राधिकानी पतनकथा कहीने, गुरुशिष्यभाव बताववा पूर्वक शिष्योने गुरुवचन पाळवानुं कहीने, वचन पाळनारा शिष्य उपर गुरुनी प्रसन्नता थवानी सदृष्टांत कही छे. २६

मुक्तानंदमुनिना प्रश्नोत्तर द्वारा तेमनी सद्वृत्ति कहीने स्वभक्तशिक्षणार्थे क्रोध त्यागादिक पोतानो अलौकिक अभिप्राय कह्यो छे तथा मंदिरो करावानो हेतु कह्यो छे. २७

स्वभक्तशिक्षार्थे पोतानो अलौकिक स्वभाव कहेवा द्वारा वेदादिकना साररूप सिद्धांत कह्यो छे. २८

भगवानमां अतिशय आसक्त चित्तवाळा भक्तनुं लक्षण कहेवा पूर्वक तेवी दृढासक्ति थवामां पूर्व जन्मनो बळिष्ठ सत्संस्कार अने दृढासक्तिवाळा सत्पुरुषनी सेवारूप उपाय बताव्यो छे. २९

भागवतादि शास्त्रोमां कहेला अर्थोनी सत्यता कहेवा पूर्वक अतिबंधनकारी स्त्री अने सुवर्णना बंधनमांथी मुक्तिनुं महासाधन कह्युं छे. ३०

ब्रह्मांडनी सृष्टि कहेवाद्वारा जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म अने परब्रह्मनो परस्पर वास्तविक अनादि भेद दृष्टांत दार्ष्टान्तिकथी अने सती युक्तिओथी बताव्यो छे. ३१

भक्तिमां महा अंतरायक स्वजनना स्नेहानुबंधनी सहेतुक सदृष्टांत मुनिने पण सुदुस्त्यजता कहीने, तेने मूळमांथी उखाडी नांखवामां आत्मनिष्ठादिक उपाय बतावीने, स्वजनस्नेहत्यागपूर्वक सांग भक्ति करनाराना एकांतिकता कहीने, धर्मादि त्रण साधननी भक्तिमां अंगता कहेवा पूर्वक केवळ धर्मादिकथी अमोक्ष अने केवळ भक्तिथी मोक्ष थवा रूप वचनमां विशेष कहीने, धर्मादिकना सहायथी विषम देशकाळादिकमां पण भक्तिनी निर्विघ्नता कहीने, अशुभ देशादिकना सेवननो त्याग करवा पूर्वक शुभ देशादिकनुं सेवन करवानुं कह्युं छे. ३२

स्वभक्तशिक्षार्थे पोतानुं अंग कहीने भक्तोपासे तेमनां तेमनां पृथक् पृथक् अंग कहेवरावीने ब्रह्मचर्यव्रतनी सहेतुक श्रेष्ठता अने स्वातिप्रियता बतावीने, तेने दृढ करवाना मुख्य त्रण उपायो (मनोजय, प्राणायाम अने नियमो) कहीने, अभ्यासादिकथी तेनी सुकरता बतावी छे. ३३

कार्यकारण भेदथी तत्त्वोनी द्विविधता कहेवा पूर्वक कारणरूप (तत्त्वोना अभिमानी देवताओ) तत्त्वोनी चैतन्यता अने कार्यरूप तत्त्वोनी जडता कही छे. ३४

'क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसां' आ वचनने अनुसारे आत्मज्ञानथी आत्यंतिक श्रेयनी अतिदुष्करता अने ससंशयता कहेवा पूर्वक भगवानना ध्यानथीज आत्मदर्शननी प्राप्ति कहीने, धर्म सहित भक्तिथी मुक्तिनी सुकरता सदृष्टांत कहेवा पूर्वक तेवा राजमार्गनोज आश्रय करवानो कहीने, आत्मनिष्ठानी शामां जरूर छे तेपण कहीने, असन्मतखंडन पूर्वक धर्मरक्षणनो उपाय कहीने, दृढ नियमथीज स्वधर्मो पाळवाना कहीने, पोताना प्रत्यक्ष स्वरूपनी सधर्म भक्ति करवानी कहेवा पूर्वक तेनो प्रकार कहीने, तेमां एकांतिक भक्त स्वरूपानंदमुनिना सदाचारनुं प्रमाण बतावीने, तेवा भक्तने दुर्लभ सर्व फळप्राप्ति कहीने, सधर्म भक्तिनी पुष्टिमाटे श्रीमद्भागवतादिक आठ ग्रंथोनुं श्रवण पठन वाचन करवानुं कहीने, भक्तिवर्जित धर्मथी के धर्मवर्जित

भक्तिथी ईप्सित भवमोक्षनी अप्राप्ति कहेवा पूर्वक बन्नेनी आवश्यकता बतावीने, ते बन्नेने नहि प्रतिपादन करनारा ग्रन्थोनुं पठन श्रवण वाचन नहि करवानुं कह्युंछे. ३५

भगवानना स्वरूपमां मननी अखंड वृत्ति राखवाना चार उपायो कहेवा पूर्वक तेनुं निरूपण करीने तेवी अखंड मनोवृत्तिनी दुर्लभता कहीछे. ३६

'सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि' आ वचनने अनुसारे ज्ञानीनेपण स्वाभाविक प्रकृतिनी दुर्निग्रहता कहेवा पूर्वक तेवी प्रकृति टाळवाना उपायो कह्या छे. ३७

अभक्तनी स्थिति कहेवा पूर्वक मांचाभक्तनुं उदाहरण कहेवा द्वारा एकांतिक भक्तनुं लक्षण कहीने, सकाम भक्तोनो देहान्ते देवतान्तरमां प्रवेश थवानो कहेवा पूर्वक एकांतिकनोज वासुदेव भगवानमां प्रवेश थवानो कहीने, प्रवेश शब्दनो निर्बाध अर्थ सदृष्टांत कर्यो छे. ३८

विषम देशकाळादिकमांपण क्यारेयपण न नाश थाय एवा पोताना मोटा मोटा चार गुणो स्वभक्तशिक्षार्थे कहेवा पूर्वक भक्तोनीपासेपण तेमना तेमना महागुणो कहेवरावीने सर्वगुणोना जीवनरूप ब्रह्मचर्यव्रतनी मोटेराने प्रथमावश्यकता सहेतुक कही छे. तथा भागवतना स्वाभिमत दशमस्कंध अने पंचमस्कंधनुं रहस्य रहस्यश-ब्दार्थ साथे यथार्थ कहेवा पूर्वक भक्तिनी पुष्टिमाटे तेनी शुकादिना दृष्टांतथी सेव्यता कहीने, भगवानने निराकार जाणवामां अनर्थ कहेवा पूर्वक सदा साकार जाणवाना कह्या छे. ३९

भक्तना अपराधथी सर्वाधिक अनिवार्य पाप थवानुं कहेवा पूर्वक तेमनो अपराध नहि करवानो कहीने, कदाचित् जाणे अजाणे मन वचन कायथी थएला अपराधनी निवृत्तिमाटे भगवानने प्रतिदिन एक अधिक साष्टांग प्रणाम करवानो कहेवा पूर्वक भगवाननी पासे क्षमा मागवानी स्वसदाचारथी बतावी छे. ४०

भगवान अने तेमना भक्तोनी सेवाप्राप्ति थाय तो तेमां पोतानुं महाभाग्य मानवानुं कहीने, तेमनी सेवा तेमनी प्रसन्नतामाटेज अतिहर्षथी करवानी कहीने, लोककीर्ति के अप्रीति के मानथी सेवा नहि करवानी कहीने जीवनो मानी स्वभाव कहेवा पूर्वक मानस्वादवर्जित भक्तनी दुर्लभता तेवा भक्तना नामनिर्देशपूर्वक कहीछे. ४१

भगवानना एक एक रोममां ब्रह्मांडकोटिओ केवीरीते रहीछे अने ब्रह्मांडमां भगवान् अनेकरूपे केवी रीते रह्याछे तेनो प्रकार कह्योछे. ४२

राग पर्याय जेनो छे एवी प्रीति रजोगुणनुं कार्य होवाथी गुणातीत निर्गुण भक्तमां तेनो असंभव होवाथी तेवा भक्तने भगवानमां प्रीति न होवी जोइए? एवी आशंकामां तेवा भक्तने भगवानमां प्रीति होवानुं कहीने ते प्रीतिने भगवानना माहात्म्यज्ञानमूलक होवाथी निर्गुण कहेवा पूर्वक ब्रह्मरूप आत्माथी अपृथक्स्थितिवाळी होवाथी ब्रह्मस्वरूप कहीने, तेमां आचार्योनो सिद्धांत कह्योछे. ४३

हरिहरिजनना गुणोने नहि ग्रहण करीने तेमना दोषोनेज ग्रहण करनाराने आसुरमतिवाळा कहेवा पूर्वक तेमनो पापकृत् पुण्यहृत् प्रसंग सर्वथा नहि करवानो कहीने, हरिहरिजनना गुणने ग्रहण करनाराने दैवीमतिवाळा कहेवा पूर्वक तेमनो संग करवानो कह्यो छे. ४४

गुरुरूप श्रीहरि, शिष्योना समस्तदोष विनाशमाटे 'मायिक उपाधिए रहित थइने आत्मारूपे रहीने भक्ति करो एवा सर्वने करवा छे' इत्यादिक शिक्षावचनो कहेवाद्वारा शुभेच्छाप्रदर्शनरूप पोतानी फरज कहीने, गुरुवचनने अनुसारे अवश्य उत्साहथी वर्तवारूप शिष्योनी फरज बतावी छे. तथा कर्मनी त्रिविधगुणथी त्रिविधता कहेवा पूर्वक तेनाथी त्रिविध लोकनी प्राप्ति कहीने, राजस कर्मना देशकाळादिकना योगथी अनंत भेद होवाथी सुखदुःखादि फळमांपण भेद कहीने, प्रारब्धकर्म अने क्रियमाण कर्मनुं स्वरूप सूचवीने, क्रियमाणकर्ममां 'अत्युग्रपुण्यपापानामिहैव फलमश्नुते' आ वचनने अनुसारे हरिहरिजनने रोचक अने अरोचक कर्मनुं आ जन्ममांज पुरुषने शुभाशुभ फळ थवानुं कहेवाद्वारा विशेष बतावीने, हरिहरिजनने अरोचक कर्म नहि करवानुं कहेवा पूर्वक तेमने रोचक कर्मज प्रयत्नथी करवानुं कहीने, संबन्धीओनेपण तेवी रीते वात करवानी कही छे. ४५

भगवानना अवतार धारणनुं एकांतिकधर्म स्थापनरूप मुख्यप्रयोजन कहेवा द्वारा एकांतिकधर्मनी श्रेष्ठता, स्वातिप्रियता अने अवश्यपाल्यता कहीने, तेमांथी पडवामां हरिहरिजनने विषे दोषबुद्धिरूप कारण कहीने, तेनुं दुर्गतिरूप फळ कहीने दोषबुद्धि नहि करवानी कही छे. ४६

पोताना मंडळमां राजीपाथी साधुओने राखवाना मंडळधारीना गुणो कहेवा पूर्वक मुमुक्षु त्यागी भक्तोए महापुरुषना प्रसंगथी सर्वथा त्याग करवा योग्य एवी मायिक विषयोनी दुर्वासनानो त्याग करावा कहेलां सत्पुरुषनां अप्रिय वचनोनेपण प्रिय मानवानुं कहीने, त्यागी गृही भक्तोनी माहात्म्यपूर्वक परस्पर करवानी संभावनानी रीति कही छे. ४७

प्रेमानंदमुनिना कीर्तनमिषथी प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनुं अखंड चिंतन करनारा भक्तोनो सर्वाधिक महिमा कह्यो छे. ४८

भगवाननी प्रत्यक्ष मूर्ति अने बीजा मायिक आकारनो महान् भेद कहेवा पूर्वक तेनुं स्मरण करनारा भक्त अने अभक्तने महान् फळभेद (मोक्ष अने बंधरूप) प्राप्त थवानो कह्यो छे. ४९

स्वभक्त शिक्षार्थेज पोताना वृत्तांतथी पोतानुं रहस्य कह्युं छे. ५०

ज्यांसुधी त्रण गुणनो संबन्ध होय त्यांसुधी कोइपण जाग्रतमां के स्वप्नमां सुखी नहि थवानो कहेवा पूर्वक तेनो त्याग करीने आत्मसत्तारूपे वर्तनाराने सदा सुखी रहेवानुं कहीने ब्रह्मादिकोनेपण विषम देशकाळादिकना योगमां तेवी स्थितिनी अतिदुष्करता कहेवा माटे शुभाशुभ देशादिकनुं शुभाशुभ फळ कहीने, परमेश्वरे बांधेली धर्ममर्यादामां न्यूनाधिक न करतां यथोक्त वर्तनेज शुभ देशादिक जाणवाना कहीने, आत्मसत्तारूपे वर्तता भक्तनुं धर्ममर्यादामां स्थितिरूप लक्षण कहेवा पूर्वक तेनेज सुखप्राप्ति थवानी कही छे. ५१

त्यागी गृहीना धर्मोनी पृथक् पृथक् व्यक्ति कहेवा पूर्वक तेमना धर्मोनी परस्पर विरुद्धता कहीने स्वस्वविरुद्ध धर्मनो त्याग करवा पूर्वक स्वस्वधर्ममां वर्तवानुं कहीने त्यागीओए करवा योग्य विचारनो प्रकार कह्यो छे. तथा मुक्तवणनो त्याग करीने मुकुंद ब्रह्मचारी अने रतनजीनी पेठे श्रद्धाए सहित अने ईर्ष्याए रहित एवी भक्तिनी स्वातिप्रियता कही छे. ५२

मोहनुं स्वदोषादर्शन अने परदोषदर्शनरूप लक्षण कहेवा पूर्वक तेनो प्रकार बतावीने तेनी निवृत्तिनो हरिहरिजनना माहात्म्यज्ञानरूप उपाय बताव्योछे. ५३

'न रोधयति मां योगो' आ वचनार्थथी सत्संगनी अत्यधिकता कहेवा पूर्वक जेने सांख्ययोगादिकनी अपेक्षाए सत्संग अधिक जणातो होय एवा पुरुषनुं **'यस्यात्मबुद्धिः कुणपे'** आ वचनथी सत्पुरुषमां आत्मबुद्धिरूप लक्षण कह्युंछे. ५४

स्वभक्त शिक्षार्थे बहु दृष्टांतथी पोतानुं अंग कह्युं छे. ५५

भक्तोए भगवानमां करवा योग्य निर्विघ्न सत्य प्रीतिनुं स्वरूप कह्युं छे. ५६

आत्मानुं शुद्ध निरावरण स्वरूप कहेवा पूर्वक तेवा शुद्ध आत्मस्वरूपे थइने एक भगवानमां प्रीति करवानी कहीने, प्रीतिमां विघ्न करनारा रम्यारम्य पदार्थनो त्याग करवानो कहीने, शुद्ध आत्मस्वरूपे रहेवानुं प्रयोजनपण कहीने, सुखनिधि भगवाननो त्याग करीने दुःखनिधि मायिक अर्थमां प्रीति थवामां भगवानना माहात्म्यज्ञानना अभावनी हेतुता कहीने, अन्यत्र अप्रीति थवामां माहात्म्यज्ञाननी आवश्यकता कही छे. ५७

संप्रदायनी पुष्टि घणा काळसुधी रहेवानो उपाय कह्यो छे. ५८

कल्याणकारी भगवान् अने तेमना भक्तोनुं अधिक माहात्म्य कहेवा पूर्वक तेमां सर्वाधिक निर्दोष प्रेम करवानो कहीने, आ जन्मना भक्तोनी अपेक्षाए पूर्वजन्मना भक्तोनो विशेष तेमना नाम निर्देशपूर्वक बताव्यो छे. ५९

भक्तोने काळगतिथी भक्तिमां अंतराय करनारा अध्यात्मादिक विक्षेपो आवे त्यारे जे विचार करवाथी मनमां तेनी पीडा न थाय तेवा त्रण विचारो कहीने, हरिभक्तोनुं मोटुं माहात्म्य कहीने तेमनी आगळ केवी रीते वर्तवुं तेनो प्रकार (तेमने दुःखे दुःखी थवुं, तेमनो स्वजनवत् पक्ष राखवो, तेमनी साथे अमर्ष न राखवो विगेरे) कह्यो छे. ६०

जेमां त्रण गुणो परिपूर्ण होय तेनेज परिपक्व हरिभक्त कहीने, ते त्रण गुणो तेना विशेषलक्षण साथे कहीने, तेवा गुणवाळा गृहस्थभक्तोमां मोटेरा गृहस्थ भक्तनां लक्षण कहेवा पूर्वक तेवा गुणवाळा त्यागीभक्तोमां मोटेरा त्यागीभक्तनां लक्षण कहीने, लोकप्रतिष्ठित पुरुषनी सहेतुक यथोचित मान्यता करवानी कही छे. ६१

अयोध्याप्रसादजी अने रघुवीरजीना प्रश्नना उत्तरो आप्या छे. तथा कल्याणनां सुखकारि दुर्लभ त्रण अंग कहेवा पूर्वक तेनां लक्षण (शुकजीनी पेठे आत्मारूपे थइने भजन करवुं, गोपीओनी पेठे पतिव्रतानुं अंग अने हनुमान् उद्धवादिकनी पेठे दासत्वनुं अंग) कहीने, तेनी सर्व कोइने सिद्धि करवानी कहेवा पूर्वक तेनुं फळ बतावीने, एक अंगनीपण दृढसिद्धिथी मुक्तिलाभ कहीने, जे विचार करवाथी त्रण अंगनी सुदृढ स्थिति थाय तेनो प्रकार कहेवा पूर्वक तेते अंगवाळानां लक्षण कहीने, त्रण अंगमां उत्तमादि भेदथी भक्तमांपण उत्तमादि त्रण भेद कहीने, हरकोइ एक अंग संपादन कर्या पछीज मरवामां सार कहीने, बीजि केटलीक वर्तनरीति कही छे. तथा पूर्वोक्त त्रण अंग न आवी शके तेना भक्तनापण कल्याणनुं सुकर साधन (त्रण अंगवाळानी अनुवृत्तिथी सेवारूप) कहीने सत्पुरुषनो अतिशय महिमा कह्यो छे. ६२

जीव, इन्द्रियो अने अंतःकरणना जाणपणानुं पृथक् पृथक् लक्षण कहेवा द्वारा सबळ निर्बळ जीवनुं वर्तन कहीने, निर्बळ आत्मज्ञानीने आत्मज्ञानबळ संपादन करवामां हरिहरिजननी मन वचन कायथी श्रद्धापूर्वक सेवादिक उपाय बतावीने तेमनी सेवाथी महाफळ अने तेमना द्रोहथी महापाप थवानुं कह्युं छे. ६३

सर्व अवतारोनी अपेक्षाए अवतारी श्रीकृष्णभगवाननी अधिकता तेमनां दिव्य ऐश्वर्य कहेवा पूर्वक सविस्तर कही छे. ६४

'अवजानन्ति मां मूढाः' 'नाहं प्रकाशः' 'महात्मानस्तु' आ वचनने अनुसारे मनुष्योने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां पोताने समानपणानी बुद्धिथी जे मोह उत्पन्न थायछे तेनो सर्वथा त्याग करवानो कहीने, भक्ति विनाना धर्म, ज्ञान अने वैराग्यनी निर्लवण भोज्यनी पेठे निरर्थकता कहेवा पूर्वक भक्तिनी धर्मादिकमां सहेतुक अपेक्षा कहीने, भक्तिमांपण मायिक पदार्थमांथी अनुराग निवृत्तिमाटे भक्तिपोषक धर्मादिकनी अपेक्षा कहीने. धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्यज्ञान तेणे सहित एवी भक्तिनीज विषम देशादिकमां पण सुस्थिरता कहीने, तेवी भक्तिवाळाने एकांतिक भक्त कह्यो छे. ६५

अल्पबुद्धिवानने स्वदोषनुं दर्शन अने परदोषनुं अदर्शन थवामां अने बुद्धि-वानने स्वदोषनुं अदर्शन अने परदोषनुं दर्शन थवामां कारण बताव्युं छे. तथा साक्षात् भगवानना एक आश्रयथीज कल्याण थवानुं कहेवा पूर्वक बीजा धर्मादि चार साधनो तेमनी आज्ञारूप होवाथी तेमनी प्रसन्नता माटे पाळ-वानां कहीने आश्रयनी अधिकता कही छे. तथा जीवनी सहेतुक सोपपत्तिक साकारता खंडन करवा पूर्वक निराकारता समर्थन करी छे. तथा मुक्तिदशामां पण देहथी मुक्त थएला जीवने भगवद्धाममां अप्राकृत शरीरनी प्राप्तिपूर्वक भग-वाननी सेवालब्धि कही छे. तथा जेमनी कृपाथी जेने अष्टांगयोग अने आत्मदर्शन थायछे एवा भगवान अने तेमना महाभक्तमां तेने सर्वदा विशेष लग्नि थवी उचित छे तथापि तेम न थतां केटलाकने तेमनेविषे लग्नि गौण थइ जवामां अने आत्मदर्शनमां विशेष लग्नि थवामां कारण बताव्युं छे. तथा प्रत्यक्ष भग-वानना निश्चयवाळा भक्तनुं मन भगवान् चमत्कार न बतावे अने बीजा जंत्र-मंत्रवाळा चमत्कार बतावे तेने जोइने पाछुं पडवामां अने न पडवामां कारण बताव्युं छे. तथा जेने साक्षात् भगवान् अने तेमना संतोनी प्राप्ति थइ छे तेवा भक्तने आ लोक परलोकमां जे फळलाभ थायछे ते कह्यो छे. ६६

भगवानना साधर्म्यने पामेला अक्षरधाममां रहेला ब्रह्मस्वरूप मुक्तोमां अने भगवानमां सेव्यसेवकभावमां हेतुभूत वास्तविक भेद कह्यो छे. ६७

—वरताल-प्रकरणम्—

निर्विकल्प समाधिनुं लक्षण, मन-प्राणना निरोधथीज तेवी समाधि प्राप्तिमां अनियम, विश्वना सर्गविसर्गादि नव लक्षणना आश्रयरूप प्रत्यक्ष नराकार भगवानना अचळ निश्चयरूप प्रकारान्तरथीपण तेवी समाधिनी प्राप्ति, तेवा निश्चयवाळाने मनःप्राणनिरोधनी अनपेक्षता कहेवा पूर्वक निश्चय विनाना केवळ मनःप्राणरोधनी अकिंचित्करता, तेवी स्थितिवाळानी गुणातीत एकां-

तिक भक्त थवारूप गतिथी कृतकृत्यता अने विकल्प प्रकार प्रदर्शन पूर्वक सविकल्प स्थितिवाळानी तेवी गतिनी अप्राप्तिथी अकृतार्थता कही छे. तथा उक्त विकल्पोना प्रशमननो उपाय यथाशक्ति करवा छतांपण तेनी यथार्थ निवृत्ति न थवाथी भक्तनी दुर्गतिनो अभाव सदृष्टांत कहेवा पूर्वक पोताना मनःशत्रुना जयमाटे उद्यम करवानो कह्यो छे. १

अद्रोहथी भगवाननी प्रसन्नता कहेवा पूर्वक सविस्तर दृष्टांतथी द्रोहनुं स्वरूप (अनीश काळादिकने कर्ता जाणवा अने परमेश्वरने अकर्ता, अनीश्वर अने निराकार जाणवारूप) वर्णव्युं छे. तथा वेद सांख्य योग पांचरात्रादिक शास्त्रनी एकवाक्यता कहेवा पूर्वक तेमनुं भगवानना साकार स्वरूपमांज तात्पर्य 'नारायणपरा वेदाः' 'वासुदेव परा वेदाः' इत्यादि वचनथी वर्णवीने तेवा ज्ञानवाळानेज संपूर्ण ज्ञानी सदृष्टांत कह्योछे. २

धर्मादि साधन चतुष्टयथी एकांतिकताप्राप्ति, एकांतिकनीज सत्संगमां महत्ता, माहात्म्यज्ञाने सहित दृढ भक्तिमां बीजा त्रण गुणनी सहेतुक अंतर्गतता, भक्तिमां परा अपरा एवो भेद कहेवा पूर्वक तेनां लक्षणो, अपरा भक्तिवाळाने धर्मादिक त्रण साधननी पृथक् आवश्यकता कहेवा पूर्वक परा भक्तिवाळाने तेनी पृथक् अनावश्यकता, तेमां गोपीयो पृथुराजा विगेरेनां उदाहरणो, पराभक्तिनी प्राप्तिमां महापुरुषनी सेवानी हेतुता, महापुरुषनां सदृष्टांत लक्षण कहेवा पूर्वक तेमनामां माहात्म्यज्ञाननी न्यूनाधिकताथी चार भेद, तेमां प्रथमना बेनी असेव्यता कहेवा पूर्वक पछीना बेनी धर्मपालन पूर्वक मन वचन कायथी सेव्यता, ते बेमांपण सिद्ध साधन दशाना भेदथी एकांतिक परमैकांतिक एवो भेद, विगेरे कह्युं छे. ३

वीश लक्षणे संपन्न एवा सत्पुरुषना काय वचन मनथी प्रसंगरूप एक मुख्य साधनमां कल्याणनां सर्व साधनोनो समावेश कह्यो छे. तथा एकांतिक भक्त एवो योगी भगवाननी मूर्तिमां केवी रीते वृत्ति राखे ? मनथी केवी रीते मूर्ति चलावे ? अंतरमां अने बहार केवी रीते वृत्ति राखे ? लय अने विक्षेपमां केवीरीते वर्ते ? आ छ प्रश्नोना उत्तरो सदृष्टांत आप्या छे. ४

त्रिगुणात्मक मायाथी भूतादि तत्त्वोनी उत्पत्ति द्वारा सर्व शरीरोनी उत्पत्ति कहीने, *प्रपन्नभक्तना शरीरनीपण तथात्वता कहेवा* पूर्वक प्रारब्ध देहावधि अंतःकरणनी गुणात्मकता अवर्जनीय कहीने, तेथीज भगवानना ध्यानमां अंतरायक मन.संकल्पोनो उदय संभव होवा छतांपण भगवाननो दृढ निश्चय होवाथी तेनी अकिंचित्करता कहेवा पूर्वक पोतामां मायाकार्य होवा छतांपण भजनीय प्रत्यक्ष भगवानना मायातीतत्वज्ञानथी प्रपन्न भक्तनी मायातीतता

ब्रह्मा वसिष्ठादिकना सदाचारथी कहेवामां 'मामेव ये प्रपद्यन्ते' आ गीता वचननुं तात्पर्य वर्णव्युं छे. तथा 'सर्वधर्मान् परित्यज्य' आ वचनथी शरणागतनुं सर्वथा भगवदेकपरायणतारूप लक्षण कहीने, तेमां अपेक्षित विश्वास, आनुकूल्य संकल्प विगेरे अंग कह्यां छे. तथा दंभी प्रपन्न भक्तने ओळख-वामां सहवासादि प्रकार बतावीने, उत्तमादि त्रिविध शरणागतिथी शरणागतनी त्रिविधता कही छे. तथा जे साधनो करवाथी कनिष्ठ भक्त आ जन्ममांज उत्तम भक्त थाय तेवां साधनो (भगवानना जेवीज सत्पुरुषनी मानसीपूजा विगेरे सरखी सेवारूप) कह्यां छे. ५

जेम पृथ्वी जळादिक, बीजांकुरमां साधारण कारण होवा छतांपण अंकुरोनी विचित्रतामां तेते बीजमां रहेली विचित्रताज असाधारण कारण छे, तेम विश्व-सर्गमां परमात्मा कारण होवा छतांपण देवादिभावमां अने सुख दुःखादि भावमां सृज्यमान प्राणीओना कर्मनी विचित्रतानेज प्रधान कारण कहीने परमात्मामां आवता वैषम्य नैर्घृण्यतारूप दोषनो परिहार 'वैषम्यनैर्घृण्ये न सापेक्षत्वात्' आ सूत्रने अनुसारे कर्यो छे. तथा केवळ कर्मवादी जैननी दुष्टता कहेवा पूर्वक मतभेदथी कहेली काळ कर्मादिकनी स्वतंत्र कर्तृतानो निषेध करीने तेमनी परमात्म-परतंत्रता कहीने विषयविशेषमां यथाप्रकरण काळादिकनी कर्तृतानो प्रकार कहीने प्रत्यक्ष भगवाननी आगळ तेमनी अकिंचित्करता सहेतुक वर्णवीछे. ६

जीवनी दैवासुरभावथी द्विविधता कहेवा पूर्वक दैवीनी भगवत्सन्मुखता कहीने, आसुरीमां जात्यासुर अने आविष्टासुर एवो भेद सूचववा पूर्वक आविष्टासुरनी महापुरुषनी निष्कपट सेवा साथेनी भगवद्भक्तिथी दैविता कहीने, जन्मासुरनी दैविता दुर्लभ कहेवा पूर्वक तेनी दैविता थवामां साधन कह्युंछे. तथा माया अने मायाना कार्यमां भगवाननो अर्धभागथी अन्वय अने अर्धभागथी व्यतिरेक निषेध करवा पूर्वक अंतर्यामिभावथी अन्वय अने अक्षर धाममां स्थितिरूप भावथी व्यतिरेक कहीने आकाशना दृष्टांतथी अन्वित भगवाननी निर्लेपता कही छे. ७

हरिभक्त योगीनी भगवत्स्वरूपमां करोळीयाना उदाहरणथी ध्यानस्थिति कहीने, तेवी स्थितिमाटे शुद्धात्मस्वरूपे रहेवानुं देव पूजवाना दृष्टांतथी कहीने योगिने आत्म-स्वरूपना विस्मरणपूर्वक भगवानना सुखना अनुभवरूप निद्रा करवानी कही छे. ८

गुणात्मक मायिक सुखना अने निर्गुणात्मक भगवानना सुखना भोगमां भेद (क्षणिकता अने अखंडिततारूप) कह्योछे. ९

भगवानना नराकार राजारूप (श्रीकृष्णादि) अने साधुरूप (दत्तात्रेयादि) ये प्रकारना अवतारो कहेवा पूर्वक तेमनां पृथक् पृथक् लक्षणो कहीने तेवा लक्षणोथी भगवानने प्रथम ओळखीने तेमनो दृढ आश्रय करवा पूर्वक विश्वासथी आज्ञामां रही तेमनी भक्ति करवारूप उपायथी मुमुक्षु जीवनुं आत्यंतिक कल्याण थवानुं कहीने, प्रत्यक्ष भगवानना अभावमां तेमने मळेला सत्पुरुषना आश्रयथी कल्याण थवानुं कहीने, तेमनापण अभावमां भगवत्प्रतिमामां स्वधर्मपूर्वक दृढ अर्चनादि भक्ति करवाथी कल्याण थवानुं कह्युं छे. १०

भगवान, भगवानना भक्त, ब्राह्मण अने गरीबनो द्रोह नहि करवानो कहीने तेमां बीजाना द्रोहथी केवळ देहनो नाश कहेवा पूर्वक चारना द्रोहथी तो जीवनो नाश थवारूप अधिक अनर्थ कहीने, प्रसंगात् अविनाशी जीवनो नाश-प्रकार कहीने, उक्त चारनी आगळ मान के जे क्रोध, मत्सर, ईर्ष्या अने द्रोहना आधाररूप छे तेपण नहि राखवानुं कहीने, ये पद शीख्यानी सर्वने आज्ञा आपी छे. तथा शास्त्रज्ञ पंडितनेपण हरिहरिजननो यथार्थ महिमा नहि समजायामां हेतु कह्योछे. तथा प्रत्यक्ष भगवानने मळेला ब्रह्मनिष्ठ निर्दोष सत्पुरुषनेविषे दृढ प्रीतिरूप साधनथी तेमनो महिमा जणायानी साथे तेमना जेवी पोतानीपण आत्मदर्शनरूप ब्रह्मस्थिति अने आत्मामां साक्षात् परमात्माना दर्शनरूप स्थिति थया पछी ब्रह्मनिष्ठ सत्पुरुषनो यथार्थ महिमा जणायानुं कहीने 'सत्पुरुषनो महिमा जणाया विना ब्रह्मस्वरूपमां स्थिति न थाय अने ब्रह्मस्वरूपमां स्थिति थया विना सत्पुरुषनो यथार्थ महिमा न जणाय' आवा परस्पर विरोधनो परिहार कर्योछे. ११

शुभाशुभ देशादिकना योगथी भगवानना समाहात्म्य दृढ निश्चयनी पूर्णतानुं अने अपूर्णतानुं लक्षण पूर्णमासीना अने अमावास्याना चंद्रदृष्टांतथी कहेवा द्वारा संपूर्ण निश्चयवाळा अने अपूर्ण निश्चयवाळानां लक्षण कहीने '**धन्य वृन्दावनवासी**' '**अहो अमी देववरामरार्चितं**' आ पदथी प्रत्यक्ष भगवानना संबन्धनो महाप्रताप कहेवा पूर्वक तेमनी सुदृढ निश्चय करवा पूर्वक एकांतिकभावथी सेव्यता कही छे. १२

लोकोक्त पात्र कुपात्रनुं लक्षण कहेवा पूर्वक तेवा सुपात्रनी पण हरिहरिजनना दोषग्रहणरूप हेतुथी कुपात्रता कहीने, तेवा कुपात्रनेपण समाधि थवामां तेना अंतःकरण विषे हरिहरिजननो गुण प्रवेश रूप हेतु कहीने, तेमां **'अपि चेत्सुदुराचारः'** इत्यादि गीता वचननुं स्मरण कराव्युं छे. १४

जीवोनुं स्वभावथी अने संगादि निमित्तथी दैवासुरत्व कहीने, तेमां सत्पुरुषनो अनुग्रह अने कोपने प्रह्लाद अने जयविजयना दृष्टांतथी मुख्य हेतुपणे कहीने सत्पुरुषने कोपायमान न करतां प्रसन्न करवाना कह्या छे. १५

मोटा माणसने चमत्कार नहि बतावामां तेमने विषे पोतानो सहेतुक अननुराग कहीने, विषयसुख अने भगवानना ध्यानसुखनुं नश्वरत्व अने अनश्वरत्वपणाथी तेजस्तिमिर जेटलुं दूर अंतर स्वायंभुव अने चित्रकेतु राजाना सदाचारथी निरूपण करीने, मोटा माणसने चमत्कारथी सत्संग नहि करावानो कहेवा पूर्वक सहजवृत्तिथी करावानो कहीने, भक्ति अने सत्संगना रक्षणमांज आग्रह बतावा द्वारा पोतानो हार्द अभिप्राय स्वभक्तशिक्षार्थे बताव्यो छे. १६

सत्पुरुषोनी जितेन्द्रियतानो विषयोमां दोषदृष्टिरूप प्रकार कह्यो छे. तथा **'योगिनामपि सर्वेषां' 'मय्यावेश्य मनो ये मां'** आ गीतावचनने अनुसारे केवळ आत्मनिष्ठत्यागीनी अपेक्षाए भक्तिनिष्ठ त्यागीनी सहेतुक श्रेष्ठता कही छे. १७

सर्व सत्संगिओए अवश्यपणे जाणवा योग्य पांच वार्ताओ तेना निरूपण साथे कहीने, इष्टदेव श्रीकृष्णना परोक्ष दिव्यरूपनुं अने प्रत्यक्ष मनुष्यरूपनुं यथार्थ विवेचन साथे ज्ञान, श्रीकृष्णना चरित्र ज्ञानमाटे व्यासकृत ग्रंथनीज सहेतुक श्रव्यता, श्रीमद्भागवतनी प्रशंसा करवा पूर्वक तेमां श्रीकृष्णनी सर्व अवतारोनी अवतारिता अने निर्गुणतानुं निरूपण, **'जन्म कर्म च मे दिव्यं'** आ गीतावचनथी भगवानना जन्मकर्मनी दिव्यता, श्रीकृष्णनी प्रयोजनवशात् चतुर्भुजता अष्टभुजता अने सहस्रभुजता निरूपण, एकज श्रीकृष्णना स्वरूपनी श्याम वेषादिकना भेदथी उपासना भेदनो अनंगीकार, श्रीकृष्णना आचरण प्रमाणे मुमुक्षुए अनाचरण, पोताना आचरणनुं पण भक्तोए अनाचरण विगेरे अपेक्षित अर्थो कह्या छे. १८

भरतखंडमां नरदेह पामीने तेमां अवश्यपणे विचरता प्रत्यक्ष भगवान् के तेमना सत्पुरुषने तेमना लक्षणथी ओळखीने तेमना भक्त थएलाए भगवानना सुखनी अत्यधिकता जाणवा पूर्वक ब्रह्मांडनुं मायिक सुख काकविष्टातुल्य जाणीने तेमां लेशपण प्रीति न करतां भगवान अने भक्तमांज मन वचन कायथी दृढ प्रीति करवानी कही छे. १९

अंतःशत्रु काम क्रोधादिकने मूळमांथी उखाडी नांखवामां दृढ सारासार विवेक ज्ञानरूप साधन प्रवृत्तमार्गमां रहेला जनकराजाना दृष्टांतथी कहीने, जनकराजानी ज्ञानस्थितिनुं विवेचन करवा पूर्वक सारासार ज्ञाननुं निरूपण करीने, श्रेष्ठतामां त्यागाश्रम के गृहस्थाश्रमनी अप्रयोजकता कहेवा पूर्वक तेवा ज्ञानथीज श्रेष्ठता कहीने तेवा ज्ञानीनेपण असद्देशादिकना योगथी स्वस्थितिमांथी पात थवानो कहेवा पूर्वक सद्देशादिकनीज सेव्यता कहीने, ब्रह्मादिकने कामादिकथी थएली विक्रियामां कारण बताव्युं छे. २०

—अमदावाद-प्रकरणम्—

स्वभावथी चमत्कारी ओषधिना दृष्टांतथी ध्यानयोगनो अतिशय महिमा स्वानुभवित सदाचार प्रमाणथी कहीने, नेत्रमां सूर्यचंद्रनी प्रथम धारणाथी ध्याननो प्रकार निरूपीने, शुकादिकनी पेठे तत्काळ सिद्धदशा आववारूप तेनुं फळ कहीने, तेवा ध्याननी सिद्धि योगनां यमादि अंग विनापण भगवानना एकांतिकने उक्तप्रकारे ध्यान करवाथी थवानी कही छे. १

'**आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी**' आ गीतावचनथी चार प्रकारना भक्तो कहेवा पूर्वक तेमां ब्रह्मस्वरूप ज्ञानी भक्तनी श्रेष्ठता कहीने, तेनी श्रेष्ठताना हेतु निरूपणमां चतुर्विध प्रलयनुं स्वरूप कहेवा पूर्वक नित्यादि त्रण प्रकारना प्रलयमां लीनोपाधि जीवने फरीथी उत्पत्तिनी साथे पोतपोतानी उपाधिनी प्राप्ति अने आत्यंतिक प्रलयथी (ज्ञानप्रलयथी) लीनोपाधि जीवने फरीथी अनुत्पत्तिनी साथे पोतपोतानी उपाधिनी अप्राप्ति कहीने ज्ञानी भक्तनी स्वतंत्रता कही छे. २

सर्व कोइने पंच विषय त्यागनी दुष्करता, पंच विषयासक्तिनीज पुनःपुनः दुःखद संसृतिमां हेतुता, एक विषयासक्तिनी पण वटवृक्षना दृष्टांतथी संसृतिमां हेतुता, तेवी विषयासक्तिनी निवृत्तिमां दृढ उपशमरूप उपाय, उपशमनी प्राप्तिमां ब्रह्मरूप थवापूर्वक भगवानना ध्यानबळनी उपायता, उपशमनुं लक्षण करवा पूर्वक तेनो महिमा, उपशमनी प्राप्तिमां ध्यानयोगथी पण सुकर उपाय, (भगवान अने तेमना एकांतिक भक्तनी समाहात्म्य श्रद्धापूर्वक परिचर्यारूप) समान अने निर्मान भेदथी भक्तनी द्विविधता, समान उपर हरिहरिजननी अप्रसन्नताद्वारा तेने उपशमनी अप्राप्ति कहेवा पूर्वक निर्मान उपर हरिहरिजननी प्रसन्नताद्वारा तेने उपशमनी प्राप्ति, तेवी विवेकबुद्धि विनानानेपण मूळजी ब्रह्मचारी अने रतनजीना दृष्टांतथी दृढकल्याणनी इच्छा अने अनुवृत्तिथी हरिहरिजननी प्रसन्नताद्वारा उपशमनी प्राप्ति, अयोध्यावासीनी सहेतुक प्रशंसा, तेमनी विश्वासु स्वभावता कहेवापूर्वक तेमनी संभावनानी कर्तव्यता विगेरे कह्युं छे. ३

—अंत्यप्रकरणम्—

अशुभ देशकाळादिकना योगमां पण निर्विघ्न भक्ति राखवामां आत्मज्ञान अने वैराग्यनी सहेतुक आवश्यकता कही छे. तथा भक्तने भगवत्स्वरूपज्ञान अने प्रीतिनी आवश्यकता कहेवा पूर्वक ज्ञानप्रीतिना अंगवाळानां नामनिर्देश पूर्वक तेमनां लक्षण कहेवा द्वारा ज्ञानप्रीतिनां लक्षण कह्यां छे. तथा प्रतिदिन शिक्षापत्रीना पाठादिकनी आवश्यकता कही छे. १

संसारमां अत्यासक्ति आदिक दोषनी निवृत्ति थवा पूर्वक परमात्मामां अत्यासक्ति थवामां वैराग्य, आत्मनिष्ठादि त्रिविध अंगमांथी पोताना अंगनी पकता परीक्षण, अनुताप अने परोक्षवत् प्रत्यक्ष सत्पुरुषना माहात्म्यज्ञान पूर्वक परोक्षवत् प्रत्यक्ष भगवानमां प्रतीति विगेरे हेतुओ कह्या छे. २

मायिक पदार्थमांथी दया अने स्नेहनो आत्मज्ञानपूर्वक दृढ वैराग्यथी त्याग करीने ब्रह्मरूप थएला एवापण भक्तने भगवानमां अने भक्तोमां दया अने स्नेह रहेवामां शुकादिकना वर्तनप्रकारथी सप्रमाण दयार्द्र हृदयवाळा सत्पुरुषनो समागमादिक कारणो सदृष्टांत बताव्यां छे अने कैवल्यार्थीने भगवानमां अने भक्तोमां दया स्नेह नहि थवामां अश्वत्थामाना वर्तनप्रकारथी शुष्कज्ञानी विगेरेनो दुःसंगादि कारणो सदृष्टांत बताव्यां छे. ३

निर्विकल्प समाधि थतांसुधी भक्तना अंतरमां बाधितानुवृत्तिनी अनुवृत्ति सदृष्टांत कहेवा पूर्वक तेनी निवृत्तिमां समाधिनी अपेक्षा कहेवा पूर्वक तेनुं लक्षण कहीने, भक्तने अंतकाळे वर्तती बाधितानुवृत्तिथी थता विप्रलापथीपण दुर्गतिनो अभाव कहेवा पूर्वक निश्चयनी दृढताथी सद्गति कही छे. तथा अणुपरिमाण जीवनी विशेषसत्ताथी (स्वरूपथी) हृदयरूप एकदेशमां स्थिति अने सामान्यसत्ताथी (धर्मभूतज्ञानथी) सर्वशरीरमां स्थिति दीपक दृष्टांतथी कहीने व्याप्यथी व्यापक जीवनी विलक्षणता कही छे. ४

निर्विघ्न अने सविघ्न भक्ति होवामां भगवन्माहात्म्यज्ञान अने तदभावने हेतुपणे कहीने **'यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनात्'** इत्यादि वचनथी भगवानुं माहात्म्यज्ञान निरूपण करीने माहात्म्यज्ञाने युक्त भक्ति आववामां शुकादि सदृश सत्पुरुषनी प्रसंगपूर्वक सेवा करवारूप उपाय बताव्यो छे. अने निष्काम भक्तने देहान्ते महासुखनी प्राप्ति थवानी कहेवा पूर्वक सकाम भक्तने देहान्ते तेथी न्यून सुखनी प्राप्ति थवानी कहीने, भक्तोने भगवान विनानी अन्य कामना नहि राखवानो उपदेश कर्यो छे. ५

पोताना कल्याण माटेज करेली अने दंभ ईर्ष्याए रहित एवीज भक्तिथी भगवाननी प्रसन्नता कहेवा पूर्वक एवी भक्ति न होय तो अप्रसन्नता कही छे.

तथा भक्ति करवामां कदाचित् अपराध थाय त्यारे तेमां अन्य पुरुष के पोतानां मन इन्द्रियोनो दोष न काढतां पोतानोज दोष ग्रहण करवो, विगेरे कह्युं छे. ६

भक्तोए अवश्यपणे जाणवा योग्य पोताना अंतरनो सिद्धांत (सुखप्रद भगवान् अने भक्तोमां स्वशरीरवत् आत्मबुद्धि करवी, ते बन्नेनो स्वजनवत् अपमानादिकने नहि गणीने पक्ष राखवो, तेमना दोषनो अग्रह, एवी रीते वर्तनाराने कामादिकथी अपराभव, तेवा भक्तोए कोइ जातनी चिंता न करतां निर्भय रहेवुं, प्रत्यक्ष भगवानमां वज्रनी भूमिमां वज्रनी खीलीनी पेठे दृढ मन जोडवुं विगेरे) स्पष्टपणे कह्यो छे. ७

भक्तने सर्वदा सुखदायि १ छ साधनो (सुदृढ स्वधर्म पूर्वक अतितीव्र वैराग्ययी इन्द्रियोना वशीकारने मुख्य साधन कहीने, हरिहरिजनमां गाढ अनुराग, तेमनामां सर्वदा मित्रभाव, तेमनी उपर कदाचित् पण उदासीनतानो अभाव, तेमना संगमां सदा रुचि अने अन्यत्र अरुचि) कह्यां छे. तथा भक्तिमां महाविघ्नरूप त्रण दोषो (स्वदोषनुं अदर्शन. स्वमननुं हरिहरिजनथी पार्थक्य अने तेमनाथी निरग्रहपणे वर्तन) कहीने तेनाथी भय पामवानुं कह्युं छे. ८

ज्ञाननुं लक्षण कहेवा पूर्वक तेने भगवानना धामना द्वारपणे रूपण करीने तेमां बे वृत्तिथी रहेला महासाधुओनुं सदृष्टांत सावधान वर्तन कहीने ते प्रमाणे जाणीने हरिजनोने वर्तवानुं कह्युं छे. ९

मध्वसंप्रदायना विप्रने भूमिस्थ वृंदावननी नित्यताविषयमां आशंका पूर्वक प्रश्न पुछीने तेनो उत्तरपण पोतेज आपीने तेना प्रश्न उपरथी पोतानो सशास्त्र सिद्धांत (पांच भेदनुं अनादित्व, आत्मा परमात्मामां परस्पर वास्तविक भेद, शरणागतिपूर्वक सांग भक्तिथी मायातरण, देहान्ते साधर्म्य प्राप्ति पूर्वक भगवत्पार्षदत्व प्राप्तिरूप फळ विगेरे) कह्यो छे. १०

इन्द्रियजयमां तप, स्वधर्म, वैराग्य अने नियमरूप साधन अने मनोजयमां समाहात्म्य नवधा भक्तिरूप साधन कह्युं छे. तथा निर्विकल्प समाधि विनापण तेवीज अंतरमां शांति रहेवामां अने असद्देशादि महापत्कालमांपण मोक्षमार्गथी नहि पडवामां हरिहरिजनविषे स्वशरीरवत् दृढ प्रीतिरूप साधन कह्युं छे. तथा सीता दृष्टांतथी दोषग्रहणवर्जित स्नेहनुं निरूपण करीने हरिहरिजनमां तेवा स्नेहवाळा सामान्य धर्म वैराग्यवाळापण भक्तनी तेवा स्नेहे रहित दृढ धर्म वैराग्यवाळा भक्तनी अपेक्षाए श्रेष्ठता कहीने तेवानो प्रीतिपूर्वक समागम करवानो कह्यो छे. ११

श्रेयनी इच्छावाळाए कुळ विद्यादिकना माननो त्याग करीने भगवानना दासानुदास थइने वर्तवानुं कह्युं छे. तथा हरिहरिजनना अवगुणने महापापादि-

कयीपण अधिक अनर्थकरपणे सदृष्टांत निरूपण करीने तेनी अनुपादेयता कही छे तथा हरिजन एवापण देहना संबन्धिमां अति स्नेहने सर्पदूषित सशर्कर दुधना दृष्टांतथी अनर्थकारी कहीने ते नहि करवानो कह्यो छे. १२

देश काळ कर्मादिकनी विषमतामांपण एकांतिक स्थितिनी निश्चलताना हेतुओ पोताना सविस्तर दृष्टांतथी कह्या छे. १३

साररूप परमात्मामां दृढ प्रीति नहि थवामां सारासार विवेकज्ञानना अभावनी हेतुता, सारासार विवेकीनेपण भगवानमां दृढ प्रीति नहि थवामां पूर्वनां अथवा आ जन्मनां अतितीव्र असत्कर्मोना वासनापाशनी हेतुता, सत्संगमां आवीनेपण भगवत्सन्मुख रहेवामां अने विमुख थवामां सदृष्टांत दैवासुर गुणना अपरित्यागनी हेतुता, दैवी आसुरीनां लक्षणो, आसुरी जीवोपण सत्संगादिके करीने शुभक्रिया करता थका मरण पामे तो बीजा जन्ममां तेने दैविताप्राप्ति, नवधा भक्तिमांथी जेने जे भक्तिथी भगवानमां दृढ प्रीति थाय तेने ते भक्तिनी श्रेष्ठता जाणवानो प्रकार, किशोर अने युवावस्थाना भक्तोए समागम करवा योग्य भक्तनां लक्षणो, स्नेहथीज भगवानमां मन जोडनारनी श्रेष्ठता, भगवानमां गाढ स्नेह करवाथी प्रयत्न विनापण सारासार विवेक अने वैराग्यनी प्राप्ति, भगवद्वचनमां विश्वासवाळा भक्तनी श्रेष्ठता, हरिहरिजनने 'आ दृढ भक्त छे' एवो विश्वास आववानां लक्षणो, हरिहरिजनोना अखंडित महिमावाळाने ओळखवानां लक्षणो, एकांतिकभक्तोमां तीव्रपणे वर्तता धर्मादिक चार अंगमां कदाचित् कोइक अंशे थती शिथिलतामां दयारूप कारणप्रदर्शन, विगेरे कह्युं छे. १४

नवधा भक्तिमांथी जे भक्ति करवाथी पोतानुं मन अन्यत्र आसक्त न थतां भगवानमां थाय तेवी भक्तिवाळुं पोतानुं अंग प्रथमथी ओळखीने तेवी जातनी भक्ति विशेषपणे करवाथी ध्यानपूजादिकनुं विक्षेपरहित सुख आववानुं कह्युं छे. १५

भगवान सीवाय अन्य गुणी नरमांपण प्रीति नहि करवानी कहेवा पूर्वक एक भगवानमांज प्रीति करवानी सविस्तर पतिव्रताना दृष्टांतथी कहीने, पोताने प्राप्त थएला प्रत्यक्ष भगवानमांज सुदृढ प्रीति करवारूप विशेष हनुमानजीना सदाचारथी बताव्यो छे. १६

मुमुक्षुए भगवानथकी अन्य वस्तुमां अनर्थकर पापरूप अल्पपण प्रीति नहि करवानी कहीने तेमां चमत्कारी भरतदृष्टांतनुं विवेचन कर्युं छे. १७

स्वप्नावस्थामां कदाचित् सत्त्वगुणनी अधिकता थाय तो जाग्रतना जेवी स्वप्नमां जीवनी स्थिति रहेवानो प्रकार, वर्तमान जन्मेकरीने अश्रुत अने अदृष्ट

अर्थनी स्वप्नमां स्मृति थवामां पूर्वजन्मनां कर्मनी अंतःकरणमां रहेली वासनानी हेतुता, जुनी डांगरना दृष्टांतथी सत्समागमे करीने प्राप्त थएला भगवानमां प्रीत्यतिशयथी जीर्ण थएलां वासनात्मक पूर्वकर्मो भक्तने पुनः संसृतिमां हेतुरूप न थतां केवळ जीवनपर्यन्त दैहिक सुखदुःखमांतो हेतुरूप थवानो प्रकार, सयत्ननिर्बळ योद्धाना दृष्टांतथी भगवानसंबन्धी संकल्पनी प्रबळताए करीने थएली जगतसंबन्धी संकल्पनी निर्बळताथी पूर्वकर्मनी वासनानी जीर्णता जाणवानो प्रकार, निर्बळपशुना दृष्टांतथी नष्टदेहाभिमान अने नष्टविषयवासन भक्तने ओळखवानुं लक्षण, (स्वेच्छाथी नहि परंतु भगवदिच्छाथीज दैहिकी क्रियामां प्रवर्तवारूप) प्रसंगात् सवासनिकनुंपण लक्षण, विगेरे कह्युं छे. १८

त्यागीओने स्त्रीकामना अने स्वजनमां प्रीतिने कुलक्षणपणे कहीने ते बन्नेनो देहात्मविवेकथी त्याग करवानो कहीने स्वसेवकमांपण प्रीति नहि करवानी सहेतुक कहीने, पोते उपदेशेली वार्तानुं प्रतिदिन कथन श्रवणनी व्यक्ति कही छे. १९

प्रकृति के वासना शब्दथी कहेला स्वभावनुं लक्षण, तेनी निवृत्तिमां आत्मनिष्ठायुक्त भक्तिनिष्ठारूप साधन, भक्तिमां आत्मनिष्ठानी सहेतुक आवश्यकता विगेरे कह्युं छे. २०

केवळ प्रवृत्त निवृत्त धर्मनो अपकर्ष कहेवा पूर्वक भगवान संबन्धी एकांतिक धर्मनी भक्ति सरखी गौरवता. तथा भागवतधर्मनी स्थापना माटेज भगवानना अवतारनुं प्रयोजन. तथा स्वभक्तशिक्षार्थे स्ववृत्तांत कहेवा द्वारा स्वसिद्धांतनुं विवेचन विगेरे कह्युं छे. २१

नामनिर्देश पूर्वक प्रेमी भक्तनी दुर्लभता, तेवा भक्तने अनायासथी विषयवासनानी निवृत्ति अने आत्मनिष्ठानी प्राप्ति, सखिभाव अने दासभावनी भक्तिमां क्रियाभेद छतांपण अभेदता, स्त्री पुरुषना देहनी मायिकता कहेवानी साथे तेनो त्याग थवा पूर्वक दिव्यदेहथी धाममां भगवाननी सेवाप्राप्ति, रसिकभक्तने अपेक्षित ज्ञानप्रकार, (भक्त स्त्रीमां कुदृष्टि न करतां तेमां मातृबुद्धि करवी विगेरे) भक्तद्रोहनुं सर्वथी अधिक असमाधेय पाप, द्रोहबुद्धिमां पक्षापक्ष भेद कहेवा पूर्वक अपक्ष द्रोहबुद्धिनी समाधेयता, भक्तद्रोही उपर भगवाननी अति अप्रसन्नता सूचववा जयविजयनी कथा अने सनकादिक प्रत्ये वैकुंठ भगवाने कहेलां वचनो विगेरे कह्युं छे. २२

त्रण ऋतुनां प्रतिदिन भिन्नभिन्न मानसीपूजा करवानो प्रकार तथा ज्यारे हरिहरिजनो पोतानी उपर प्रसन्न थाय अने पोताने शिक्षामाटे कटु वचन कहे त्यारे तेमां पोताने अहो भाग्य मानवानो विचार प्रकार कह्यो छे. २३

अक्षर धाममां भगवत्सेवा प्राप्तिनां १६ सोळ साधनो, (श्रद्धा, स्वधर्म, वैराग्य, इंद्रियनिग्रह, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्समागम, आत्मनिष्ठा, समाहात्म्य निश्चळ भक्ति, संतोष, निर्दंभता, दया, तप, गुणथी महान् उपर बहुमान, समान उपर मित्रभाव अने कनिष्ठ उपर शिष्यभाव) तथा भगवानना अल्प महत् वचनोथकी न्यूनाधिक नहि वर्तता ते प्रमाणेज वर्तवानुं अनुसंधान राखनाराने आपत्काळमांपण धर्मथी अपात. तथा दुस्त्यज प्रकृतिना त्यागमां सत्संगविषे स्वार्थबुद्धि करवारूप साधन. तथा मोटा मोटानां नामनिर्देश पूर्वक तेमनां श्रेष्ठ श्रेष्ठ विश्वासादिक अंग. तथा मोटाओनेपण देशकाळादिकनी विषमतामां निर्बंध रहेवामां ज्ञानांशनी आवश्यकता. तथा ज्ञानांशनी श्रेष्ठता कहेवा पूर्वक तेनुं लक्षण. तथा ज्ञानांशथी उपजेला वैराग्यनी सबळता. तथा श्रवणभक्तिथीज उत्कृष्ट गुणनी प्राप्ति अने प्रेमपर्यंत भक्तिना अंगनी प्राप्ति कहेवा पूर्वक तेनी श्रेष्ठता. तथा भक्त स्त्रीपुरुषोने परस्पर अतिमहिमा नहि जाणवामां हेतु कहेवा पूर्वक समानपणे महिमा जाणवानो प्रकार विगेरे कह्युं छे. २४

सत्कर्मो करवामां अन्य इच्छा न राखतां भगवत्प्रसन्नतारूप इच्छा राखवानी सहेतुक आवश्यकता, अनन्यभक्तनुं लक्षण, भगवत्प्रसन्नतामां महोपचारादिकनी अनावश्यकता कहेवा पूर्वक तेमां तो श्रद्धा भक्तिनी मुख्य आवश्यकता, पोतानी अति प्रसन्नता अने अति अप्रसन्नताना कारणभूत गुणदोषोनुं विवेचन विगेरे कह्युं छे. २५

भगवाननी पेठे सेवा करवा योग्य संतोनां केटलांक मुख्य लक्षणो, (भगवान सबन्धी क्रियामांज प्रीति, इंद्रियोनी क्रियाने वश न थतां तेने पोते वश राखे, अहिंसादिक नियमोनुं पालन, भगवाननी दृढ भक्ति विगेरे) देशकाळादिकनी विषमतामांपण धर्ममां दृढ स्थितिवाळानां तेवी स्थितिवाळा मयारामभट्ट मुळजी ब्रह्मचारी निष्कुलानंदमुनि विगेरेनां नामनिर्देश पूर्वक लक्षणो, (धर्मांशनी विशेषता, आस्तिकता, लोकलज्जा अने पापभीरुता) आत्मज्ञान अने माहात्म्यज्ञान केवीरीते समजवाथी धर्ममां शिथिलता करे अने केवीरीते विचारवाथी शिथिलता न करे तेनो विचार प्रकार, भगवानने प्रिय अने अप्रिय भक्तनां लक्षणो विगेरे कह्युं छे. २६

मायिक पंच विषय सुखनी तुच्छता जाणवापूर्वक भगवानसंबन्धी सुखनी महत्ता जाणीने सुखमय भगवाननी समाहात्म्य सेवानी कर्तव्यता, भगवाननी प्रसन्नता इच्छनाराने हरिहरिजनने प्रतिकूळाचरण पूर्वक अनुकूळाचरण विगेरे सद्गुणोनी स्वदृष्टांतथी आवश्यकता, जेनाथी पोतानुं अहित थाय एवी तुच्छ

अर्थनी ग्रन्थीओ छोडवा पूर्वक पोताने हित करनारी भगवद्धर्मसंबन्धी ग्रन्थीओ नहि छोडवानुं विधान, जेमांथी ईर्ष्या क्रोध थायछे एवा माननी कामथकीपण अधिक दुष्टता सहेतुक कहेवा पूर्वक तेना त्यागनी सर्वथा आवश्यकता, शास्त्रोक्त साधुलक्षणवाळा सत्पुरुषना उपदेशथी भगवानना अचळ निश्चय करवापूर्वक श्रेयमाटे तेमनो आश्रय करीने धर्मादि अंगे सहित भक्ति करवाथी मोक्षप्राप्ति, हरिभक्तना संबन्धिओने मोक्षप्राप्ति संबंधमात्रथी नहि थवानी कहेवा पूर्वक तेमां स्नेह राखनारा बन्धुओ अने अबन्धुओने पण साधनसंपत्ति विनापण मोक्षप्राप्ति, आत्मापरमात्माना सुखनो अनुभव केवळवार्तामात्रथी नहि थवानो सद्दष्टांत कहेवा पूर्वक समाधिमां के देहत्याग पछी थवानो कहेवापूर्वक तेवा अनुभव माटे वार्तो श्रवण कर्या पछी मनन निदिध्यासनी आवश्यकता विगेरे वर्णुं छे. २७

भक्तिमांथी भ्रष्ट थवामां शुष्कवेदांतश्रवण अने भगवानमां दोषबुद्धिरूप बे हेतुओ कहेवा पूर्वक तेमांथी नहि भ्रष्ट थवामां रामानुजभाष्ये सहित वेदांत-श्रवण अने भगवानने आत्माराम पूर्णकाम आनंदमूर्ति जाणीने जे निर्दोषबुद्धि तेरूप बे हेतुओ, हरिहरिजनथी कोइनु अंतर पाछुं पडवामां निश्चय करती वखते रसास्वादादि दोषनी अवशेषताथी माहात्म्यज्ञानमां रहेली अपक्वतारूप हेतु, मानत्यागमां माहात्म्यज्ञानथी त्यक्तमानवाळा उद्धवादिकना दृष्टांतथी भगवाननुं अधिक माहात्म्यज्ञानरूप साधन, निष्कामभक्तनुं लक्षण कहेवापूर्वक तेनी स्वाति-प्रियता, भगवानना सुखनो अनुभव आववामां ग्राम्यविषयमां विरागरूप सद्दष्टांत हेतु विगेरे कह्युं छे. २८

मंद वैराग्यवाळाने गृहनो त्याग नहि करवानो कहेवापूर्वक तीव्र वैराग्यवाळानेज गृहनो त्याग करवानो सहेतुक कह्यो छे. तथा वैराग्यनी प्राप्तिमां एकांतिक साधुविषे अतिप्रीति अने तेमनी मरजी मुजबज सर्व दैहिक क्रिया सभय करवी आ बे हेतुओ पोताना दृष्टांतथी बताव्या छे. २९

जेवा भक्तनी उपर भगवाननी अतिरुचि थाय अने तेमनुं मन तेमां अटके

आहारना नियमपूर्वक नवधा भक्ति करवाथी इन्द्रियोनो जय सहेतुक कह्यो छे. तथा भगवाननुं माहात्म्य समजवामां संत असंतनी पृथक् पृथक् रीति कहेवा पूर्वक साचा भक्तने सत्पुरुषनीज रीति ग्रहण करवानी कही तेमनो समागम करवानो कह्यो छे. ३२

दृढभक्तनुं स्त्रीधनादिके करीने अखंडितमति अने जंत्र मंत्र देवतान्तरमां अनास्थारूप लक्षण कहीने, तेवा भक्तनी दुर्लभता नामनिर्देश साथे कहीने, जेनी बुद्धिमां क्यारेयपण भ्रम न थाय तेवा भक्तनां वैराग्य अने माहात्म्य ज्ञानरूप लक्षण कहीने, भगवान विनाना सर्व कोइने विषयसंनिधिनी प्रबळ व्यामोहस्वभावकता कहेवा पूर्वक विषयोनुं दुरीकरण करवानुं कह्युं छे. तथा एकांतिक भक्तनुं लक्षण कहेवा पूर्वक तेवा भक्तनो वासुदेव भगवानमां लक्ष्मीजीना दृष्टांतथी प्रवेश थवानो कहीने प्रवेशशब्दनो (स्नेहाधिक्यथी भगवाननुं अखंडित अनुसंधानरूप) अर्थ सदृष्टांत कह्यो छे. तथा निश्चळ भक्तिमां चार विघ्नोनुं (स्त्री, धन, देहाभिमान अने दुःस्वभाव) सहेतुक निरूपण करीने तेनो त्याग करवानो कह्यो छे. ३३

मायिक पदार्थमात्रनी वासना न रहेतां एक भगवाननीज वासना रहेवामां भगवानमां दृढ प्रीति अने आत्मापरमात्माना ज्ञाने युक्त वैराग्य ए बे मुख्य साधन कहीने ते विनापण बीजुं उपायचतुष्टयात्मक सुकर साधन (ब्रह्मचर्यादि-नियमो, तेथी पंचविषयमां दोषदृष्टि, श्रद्धापूर्वक सत्सेवा अने नवधा भक्ति रूप) कह्युं छे तथा त्याग करवा योग्य अने ग्रहण करवा योग्य क्रोधनो विवेक कह्यो छे. ३४

दैहिकादि विषम आपत्तिमांपण भगवाननो आश्रय अचळ रहेवानां लक्षणो, प्रकृति त्याग करवामां मुंझवणनो भेद, दुस्त्यज प्रकृतिनो त्याग करावामा अवसरमां अनुमानथी मनमां करवा योग्य विचार, सत्पुरुषना द्रोहनुं सहेतुक अधिक पाप, द्रोही शिशुपाळादिक दैत्यनोपण मोक्ष कर्यो तेमां भगवाननो अभिप्राय कहेवा पूर्वक तेमनी अधिक दयाळुता, प्रेमपूर्वक अनुध्यान करनारानेज भक्तपदवी अने बीजाने दैत्यपदवी, जे साधुनो द्रोह करवाथी भगवानना द्रोहतुल्य पाप थाय अने सेवा करवाथी भगवाननी सेवातुल्य फळ थाय एवा साधुनां सविस्तर ६ छ लक्षणो विगेरे कह्युं छे. ३५

आत्यंतिक कल्याणनुं असाधारण निर्विघ्न साधन, (भगवानने साकार जाणवा पूर्वक तेमनो दृढ आश्रय, धर्मे सहित भक्ति अने तेवी भक्तिए युक्त एवा

अर्थनी ग्रन्थीओ छोडवा पूर्वक पोताने हित करनारी भगवद्धर्मसंबन्धी ग्रन्थीओ नहि छोडवानुं विधान, जेमांथी ईर्ष्या क्रोध थायछे एवा माननी कामथकीपण अधिक दुष्टता सहेतुक कहेवा पूर्वक तेना त्यागनी सर्वथा आवश्यकता, शास्त्रोक्त साधुलक्षणवाळा सत्पुरुषना उपदेशथी भगवाननो अचळ निश्चय करवापूर्वक श्रेयमाटे तेमनो आश्रय करीने धर्मादि अंगे सहित भक्ति करवाथी मोक्षप्राप्ति, हरिभक्तना संबन्धिओने मोक्षप्राप्ति संबंधमात्रथी नहि थवानी कहेवा पूर्वक तेमां स्नेह राखनारा बन्धुओ अने अबन्धुओने पण साधनसंपत्ति विनापण मोक्षप्राप्ति, आत्मापरमात्माना सुखनो अनुभव केवळवार्तामात्रथी नहि थवानो सदृष्टांत कहेवा पूर्वक समाधिमां के देहत्याग पछी थवानो कहेवापूर्वक तेवा अनुभव माटे वार्ता श्रवण कर्या पछी मनन निदिध्यासनी आवश्यकता विगेरे कह्युं छे. २७

भक्तिमांथी भ्रष्ट थवामां शुष्कवेदांतश्रवण अने भगवानमां दोषबुद्धिरूप बे हेतुओ कहेवा पूर्वक तेमांथी नहि भ्रष्ट थवामां रामानुजभाष्ये सहित वेदांत-श्रवण अने भगवानने आत्माराम पूर्णकाम आनंदमूर्ति जाणीने जे निर्दोषबुद्धि तेरूप बे हेतुओ, हरिहरिजनथी कोइनु अंतर पाछुं पडवामां निश्चय करती वखते रसास्वादादि दोषनी अवशेषताथी माहात्म्यज्ञानमां रहेली अपक्वतारूप हेतु, मानत्यागमां माहात्म्यज्ञानथी त्यक्तमानवाळा उद्धवादिकना दृष्टांतथी भगवानुं अधिक माहात्म्यज्ञानरूप साधन, निष्कामभक्तनुं लक्षण कहेवापूर्वक तेनी स्वाति-प्रियता, भगवानना सुखनो अनुभव आववामां ग्राम्यविषयमां विरागरूप सदृष्टांत हेतु विगेरे कह्युं छे. २८

मंद वैराग्यवाळाने गृहनो त्याग नहि करवानो कहेवापूर्वक तीव्र वैराग्यवाळानेज गृहनो त्याग करवानो सहेतुक कह्यो छे. तथा वैराग्यनी प्राप्तिमां एकांतिक साधुविषे अतिप्रीति अने तेमनी मरजी मुजबज सर्व दैहिक क्रिया करवी आ बे हेतुओ पोताना दृष्टांतथी बताव्या छे. २९

जेवा भक्तनी उपर भगवाननी अतिरुचि थाय अने तेमनुं मन तेमां अटके एवा भक्तनां लक्षणो बे वार्ता कहेवा द्वारा कह्यां छे. तथा जेमां पोतानुं मन अत्यासक्त थइने सर्वदा अनुसंधानवाळुं रहेछे एवा पांच अर्थो स्ववृत्तांतथी स्वभक्तदिक्षार्थे कह्या छे. ३०

ध्यान कहेवा पूर्वक अक्षरधाममां रहेली दिव्यमूर्ति अने पृथ्वी उपर रहेली अवताररूप मनुष्यमूर्तिनो सर्वथा अभेद कह्यो छे. ३१

आहारना नियमपूर्वक नवधा भक्ति करवाथी इन्द्रियोनो जय सहेतुक कह्यो छे. तथा भगवाननुं माहात्म्य समजवामां संत असंतनी पृथक् पृथक् रीति कहेवा पूर्वक साचा भक्तने सत्पुरुषनीज रीति ग्रहण करवानी कही तेमनो समागम करवानो कह्यो छे. ३२

दृढभक्तनुं स्त्रीधनादिके करीने अखंडितमति अने अंत्र मंत्र देवतान्तरमां अनासक्तरूप लक्षण कहीने, तेवा भक्तनी दुर्लभता नामनिर्देश साथे कहीने, जेनी बुद्धिमां क्यारेयपण भ्रम न थाय तेवा भक्तनां वैराग्य अने माहात्म्य ज्ञानरूप लक्षण कहीने, भगवान विनाना सर्व कोइने विषयसन्निधिनी प्रबळ व्यामोहस्वभावकता कहेवा पूर्वक विषयोनुं दुरीकरण करवानुं कह्युं छे. तथा एकांतिक भक्तनुं लक्षण कहेवा पूर्वक तेवा भक्तनो वासुदेव भगवानमां लक्ष्मीजीना दृष्टांतथी प्रवेश थवानो कहीने प्रवेशशब्दनो (स्नेहाधिक्यथी भगवाननुं अखंडित अनुसंधानरूप) अर्थ सदृष्टांत कह्यो छे. तथा निश्चळ भक्तिमां चार विघ्नोनुं (स्त्री, धन, देहाभिमान अने दुःस्वभाव) सहेतुक निरूपण करीने तेनो त्याग करवानो कह्यो छे. ३३

मायिक पदार्थमात्रनी वासना न रहेतां एक भगवाननीज वासना रहेवामां भगवानमां दृढ प्रीति अने आत्मापरमात्माना ज्ञाने युक्त वैराग्य ए बे मुख्य साधन कहीने ते विनापण बीजुं उपायचतुष्टयात्मक सुकर साधन (ब्रह्मचर्यादिनियमो, तेथी पंचविषयमां दोषदृष्टि, श्रद्धापूर्वक सत्सेवा अने नवधा भक्ति रूप) कह्युं छे तथा त्याग करवा योग्य अने ग्रहण करवा योग्य क्रोधनो विवेक कह्यो छे. ३४

दैहिकादि विषम आपत्तिमांपण भगवाननो आश्रय अचळ रहेवानां लक्षणो, प्रकृति त्याग करवामां मुंझवणनो भेद, दुस्त्यज प्रकृतिनो त्याग कराववाना अवसरमां अनुमानथी मनमां करवा योग्य विचार, सत्पुरुषना द्रोहनुं सहेतुक अधिक पाप, द्रोही शिशुपाळादिक दैत्यनोपण मोक्ष कर्यो तेमां भगवाननो अभिप्राय कहेवा पूर्वक तेमनी अधिक दयाळुता, प्रेमपूर्वक अनुध्यान करनारानेज भक्तपदवी अने बीजाने दैत्यपदवी, जे साधुनो द्रोह करवाथी भगवानना द्रोहतुल्य पाप थाय अने सेवा करवाथी भगवाननी सेवातुल्य फळ थाय एवा साधुनां सविस्तर ६ छ लक्षणो विगेरे कह्युं छे. ३५

आत्यंतिक कल्याणनुं असाधारण निर्विघ्न साधन, (भगवानने साकार जाणवा पूर्वक तेमनो दृढ आश्रय, धर्मे सहित भक्ति अने तेवी भक्तिए युक्त एवा

साधुनो समागम) मोक्षमार्गमां शुष्कवेदांतना संगने सहेतुक महाविघ्नपणे कहीने तेना त्यागनुं विधान, विपक्षमां सदृष्टांत दोष प्रदर्शन पूर्वक भगवानना नवधा भक्तिपूर्वक चिंतवनथीज आत्मा परमात्मानुं साक्षात् दर्शन थवारूप पोतानो सिद्धांत कह्यो छे. ३६

विषम देश काळादिकमांपण जेनी विस्मृति नज थाय एवुं जे भगवानना निश्चयात्मक ज्ञानसुख तेनुं निरूपण राजा अने दाहुकारना दृष्टांतथी कहीने, मुमुक्षुए दृढपणे सिद्ध करवा योग्य ते ज्ञाननुं विस्तारथी निरूपण कर्युं छे. ३७

अन्याकारनी अनित्यता कहेवा पूर्वक धाममां साक्षात् हरिहरिजनना आकारनी नित्यता, दिव्यता, तेजोमयता अने पुरुषाकारता कहीने, प्रत्यक्ष नराकार स्वरूपनीज भजनीयता कहीने अक्षरस्थ अने भूमिस्थ मूर्तिमां सर्वथा अभेद कह्यो छे. तथा जीवतां अने मरीनेपण सुख नहि थवामां कारणभूत छ ६ विघ्नो (धनलोभ, स्त्रीप्रसंग, देहाभिमान, रसास्वाद, स्वजनमां प्रीति अने कुसंगीमां अनुराग) निरूपण करीने, तेनो विचारयुक्त बुद्धिथी त्याग करवानो कहीने, सत्समागम, संतमां मन जोडवुं, तेमनी अनुवृत्ति करवी विगेरे कह्युं छे. ३८

मायानुं लक्षण, मायानो त्याग करवापूर्वक भगवानमां दृढ प्रीति करवारूप सर्वशास्त्रनो सिद्धांत, ज्यारे त्यारे मायात्यागपूर्वक भगवानमां दृढ प्रीति करवा थीज सुखनी प्राप्ति, तेमां हनुमान् नारदादिनो सदाचार, भगवाननी पासे मायाथकी पोताना रक्षणनी, भक्तना समागमनी अने भगवानमां प्रीतिनी याचना करवी अने ते वार्तानुं सर्वदा श्रवण मनन अने निदिध्यास करवानो कह्यो छे. तथा आत्मनिष्ठा अने महात्म्यज्ञाननिष्ठानुं बळ संपादन करवानुं कहेवा पूर्वक ते बन्नेनां सदृष्टांत युक्तियुक्त वचनोथी लक्षणो कहीने तेवा ज्ञाननुं माहात्म्य कहीने तेवा ज्ञानथीज विषयसुखनो त्याग करीने तेवा ज्ञाननो वेग लगाडी देवानो सदृष्टांत कहीने, ते बन्ने वार्ता दैवी जीवमांज रहेवामां अने आसुरी जीवमां न रहेवामां दृष्टांत कहीने, पोतानी वार्तानी प्रमाणतामां स्वानुभव कहीने, समस्त शिक्षार्थे पोतानी ज्ञानस्थिति कही छे. ३९

सुखयामास यः स्वीयान् स्वकीयवचनामृतैः ।
कृपया श्रीहरिर्मेऽस्तु सुखदायी सदैव सः ॥ १ ॥

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।



श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

वचनामृत-उपोद्घातप्रकरणम् ।

पातुं धर्ममधर्ममुत्खनयितुं श्रीभक्तिधर्माङ्गतो
जातायोत्तरकोसलेषु दयया सर्वेश्वरेशाय च ।
तृप्तिं वाक्यसुधारसैर्विदधते नैजैर्निजानां मुहु-
स्तस्मै श्रीहरये नमोऽस्तु सहजानन्दाय सद्वर्णिने ॥ १ ॥
ज्ञानेन धर्मेण युतां विरक्त्या माहात्म्यबोधेन च यो निजस्य ।
प्रवर्तयामास भुवि स्वभक्तिं स श्रीहरिर्नोऽस्तु मतिप्रदाता २
अज्ञानसंज्ञं गहनान्धकारं निजाश्रितस्वान्तगुहागतं यः ।
अपाहरज्ज्ञानदिवाकरः श्रीधर्माङ्गजन्मा जयति प्रभुः सः ३
प्रोक्तानि यानीह वचोऽमृतानि श्रीस्वामिना तेन निजाश्रितेभ्यः ।
तेषां लिखामः कतिचित्तदीयतुष्ट्यै यथाबुद्धि यथाश्रुतं च ॥ ४ ॥
तत्रादौ श्रीहरेस्तस्य जन्मादि चरितं शुभम् ।
कथयामः समासेन तदीयानन्ददायकम् ॥ ५ ॥

श्रीगोलोकना मध्यनेविषे भगवाननुं अक्षरधाम छे, ते केवुं छे तो कोटिकोटि सूर्य चंद्र ने अग्नि ते सरखुं प्रकाशमान छे ने दिव्य छे ने अत्यंत श्वेत छे ने सच्चिदानंदरूप छे अने जेने ब्रह्मपुर कहेछे अमृतधाम कहेछे परमपद कहेछे अनंत अपार कहेछे ब्रह्म कहेछे चिदाकाश कहेछे. एवुं जे ए अक्षरधाम तेनेविषे श्रीकृष्णभगवान् जेते सदाय विराजमान छे ते केवा छे तो जेने पुरुषोत्तम कहेछे वासुदेव कहेछे नारायण कहेछे परमात्मा कहेछे ब्रह्म कहेछे परब्रह्म कहेछे ईश्वर कहेछे परमेश्वर कहेछे विष्णु कहेछे. अने वळी ते भगवान् केवा छे तो क्षर अक्षरथकी पर छे सर्वज्ञ छे सर्वकर्ता छे सर्वना नियंता छे सर्वना अंतर्यामी छे सर्व कारणना कारण छे निर्गुण छे स्वप्रकाश छे स्वतंत्र छे. अने ब्रह्मरूप एवा

जे अनंतकोटि मुक्त तेमने उपासना करवा योग्य छे अने अनंतकोटि ब्रह्मांडनी जे उत्पति स्थिति ने प्रलय तेरूप छे लीळा जेनी एवा छे. अने प्रकृति पुरुष काळ प्रधानपुरुष ने महत्तत्त्वादिक ए जे पोतानी शक्तियो तेना प्रेरक छे. अने अनंतकोटि ब्रह्मांडना राजाधिराज छे ने सदा किशोरमूर्ति छे ने कोटिकोटि कंदर्प सरखा सुंदर छे अने नवीन मेघ सरखो श्याम छे वर्ण जेनो एवा छे. अने अमूल्य ने दिव्य एवां जे नाना प्रकारनां वस्त्र ने आभूषण तेणे युक्त छे. अने कानने-विषे मकराकार कुंडळ धरी रह्या छे अने मस्तकनेविषे नाना प्रकारनां रत्ने जडित एवो जे मुकुट तेने धरी रह्याछे अने शरदऋतुनुं जे कमळ तेनी पांखडी सरखां अणियाळां छे नेत्रकमळ जेनां एवा छे. अने रुडुं एवुं जे सुगंधिमान चंदन तेणे करीने चर्च्यां छे अंग जेनां एवा छे. अने मधुरे स्वरे करीने वेणुने वजाडेछे अने राधिकाजी ने लक्ष्मीजी तेमणे पूज्या छे. अने मूर्तिमान् एवां जे सुदर्शनादिक आयुध तथा नंद सुनंद ने श्रीदामादिक जे असंख्य पार्षद तेमणे सेव्या छे. अने कोटिकोटि सूर्य चंद्र सरखा प्रकाशे युक्त छे मूर्ति जेनी एवा छे. अने अनंतकोटि एवा जे कल्याणकारी गुण तेणे युक्त छे अने धर्म ज्ञान ने वैराग्यादिक जे ऐश्वर्य तथा अणिमादिक जे सिद्धियो तेमणे सेव्यां छे चरणकमळ जेनां एवा छे. अने मूर्तिमान् एवा जे चार वेद तेमणे स्तुतिने कर्याछे. अने वासुदेवादिक जे चतुर्व्यूह तथा केशवादिक जे चोविश मूर्तियो तथा वाराहादिक अवतार ए सर्वेना धरनारा छे.

एवा जे श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम भगवान् ते जेते आ जे पोतानुं समग्र ऐश्वर्य तेणे युक्तथका पृथ्वीनेविषे एकांतिक धर्मने प्रवर्तावचाने अर्थे ने पोताना एकांतिक भक्त जे धर्म भक्ति ने मरीच्यादिक ऋषि तेमनी

रक्षा करवाने अर्थे ने तेमने सुख आपवाने अर्थे अने अनेक जीवनां कल्याण करवाने अर्थे ने अधर्मनो उच्छेद करवाने अर्थे कोसल देशनेविषे प्रकट थता हवा.

हवे ए भगवान् जेवी रीते प्रकट थयाछे ते संक्षेपे करीने कहीए छीए-एक समये मरीच्यादिकऋषि जेते बदरिकाश्रमनेविषे श्रीनरनारायण भगवाननां दर्शन करवा सारु आवता हवा. ते वातने सांभळीने धर्मदेवपण पोतानी स्त्री जे मूर्ति तेणे सहित थका श्रीनरनारायणनां दर्शन करवा आव्या. पछी ते ऋषिनी सभानेविषे उद्धवे सहित बेठा एवा जे श्रीनरनारायणऋषि तेनुं दर्शन करीने श्रीनरनारायणे मान्याथका धर्मदेव जेते ते सभानेविषे बेसता हवा. अने मरीच्यादिक ऋषिए श्रीनारायणऋषि आगळ प्रथम करी हती जे भरतखंडना वृत्तांतनी वार्ता तेने श्रीनारायणऋषिना मुखारविंदथकी एकाग्र चित्त थइने धर्मदेव जेते सांभळता हता तथा ते ऋषि ने उद्धव तेपण ते वार्ताने एकाग्र चित्त थइने सांभळता हता.

ते समयमां कैलास पर्वतथकी दुर्वासा ऋषि जेते श्रीनारायणऋषिने दर्शने आव्या तेनुं कोइथी सन्मान थयुं नहि माटे ते दुर्वासा ऋषितो ए धर्मादिक सर्वेने शाप देता हवा जे 'मारा अपमानना करनारा जे तमे सर्वे ते भरतखंडनेविषे मनुष्यपणाने पामो अने त्यां असुरथकी अपमानने ने कष्टने पामो' एवा शापने सांभळीने धर्मदेवे घणीक प्रकारना विनये युक्त वचनेकरीने शांति पमाड्या एवा जे दुर्वासाऋषि ते बोल्या जे-तमे सर्वे श्रीनारायण ऋषिनी वार्ता सांभळवानेविषे आसक्त हता माटे मने न देख्यो ने मारुं सन्मान न थयुं एनी मने खबर नहोती ते सारु में तमने शाप दीधो पण ते मारो शापतो निवारण नहि थाय पण ते शाप भेळो हुं

तमने अनुग्रह करुंछुं जे 'हे धर्मदेव! तमे ने आ तमारी स्त्री मूर्ति ते ब्राह्मणना कुळनेविषे मनुष्य देह धरशो अने त्यां आ नारायणऋषि तमारा पुत्र थशे अने तमने ने आ ऋषियोने मारा शापथकी मुकावशे ने असुरना कष्टथकी तमारी सर्वेनी रक्षा करशे' एम कहीने दुर्वासा ऋषितो पाछा कैलास पर्वतमां गया.

पछी श्री नारायणऋषि जेते धर्मादिक सर्व प्रत्ये बोलता हवा जे 'अपराध विना जे शाप तमने थयो तेने जो हुं टाळवाने इच्छुं तो हुं समर्थ छुं ते टळी जाय पण हमणां भरतखंडनेविषे कळियुगना बळने पामीने अधर्म ने असुर ते बहु वृद्धिने पाम्या छे तेमना नाशने अर्थे मारी इच्छाए करीनेज ए शाप थयोछे ते में अंगीकार कर्योछे माटे हे धर्म! हुं तमारो पुत्र थइने ते असुरनो ने अधर्मनो नाश करीश ने तमारी सर्वेनी रक्षा करीश ने पृथ्वीनेविषे एकांतिक धर्मने प्रवर्तावीश माटे तमे कांई चिंता राखशो मां ने पृथ्वीनेविषे सर्वे मनुष्य देहने धारो' एवां वचन सांभळीने ने श्रीनारायणऋषिने नमस्कार करीने धर्मादिक सर्वे जेते मनुष्य देह धारवाने अर्थे पृथ्वी प्रत्ये जता हवा.

हवे धर्म ने मूर्ति जेवी रीते प्रकट थयांछे ते कहीए छीए जे—कोसल देशनेविषे इट्टार नामे पुर छे तेमां सरवरीया ब्राह्मण सामवेदी पांडे बाळशर्मा नामे हता तेथकी भाग्यवती नामे जे तेनी पत्नी तेनेविषे धर्मदेव जेते संवत् १७९६ सतरसो ने छन्नुना कार्तिक शुदी ११ एकादशीने दिवस मध्याह्न पछी प्रकट थता हवा. अने पिता जेते विधिए करीने तेमना जातकर्मादिक संस्कारने करता हवा अने बारमे दिवसे देवशर्मा एवुं नाम धरता हवा. अने ते कोसल देशनेविषेज छपैया नामे गाममां त्रवाडी कृष्णशर्मा नामे ब्राह्मण तेथकी भवानी

नामे जे तेनी पत्नी तेनेविषे मूर्ति जेते संवत् १७९८ सतरसो ने अठाणुंना कार्तिक शुदी १५ पुन्यमने दिवस सायंकाळे प्रकट थतां हवां. ते पछी दिवसे दिवसे मोटां थयां ने श्रीकृष्णभगवाननी अतिशय भक्ति करवा लाग्यां माटे भक्ति एवा नामने पामतां हवां.

पछी ए भक्तिनो पिता जे कृष्णशर्मा ते जेते पोतानी पुत्री जे भक्ति तेनो धर्मना अवतार जे देवशर्मा ते साथे यथाविधि विवाह करता हवा अने ए जे पोताना जमाइ तेने पोताना गाममां पोताने घेर राखता हवा. पछी ते देवशर्मा जेते भक्ति जे पोतानी पत्नी तेणे सहित गृहस्थाश्रमना जे धर्म तेने आशरीने श्रीकृष्णभगवाननी भक्ति करता हवा अने पोते धर्मनेविषे अतिदृढपणे वर्त्या तेने जोइने सर्वे लोक जेते धर्म एवे नामे करीनेज बोलावता हवा.

पछी ए धर्म भक्तिने असुरथकी अतिशय कष्ट थयुं तेना निवारणने अर्थे ते धर्म भक्ति जेते वृंदावनमां जइने मरीच्यादिक ऋषिए युक्त थकां श्रीकृष्णभगवाननी आराधना करतां हवां तेणे करीने ते भगवान् एमनी उपर प्रसन्न थया अने पोताना अक्षरधाममां जेवा पोते सदा विराजमान छे तेवुं पोतानुं दर्शन आपीने धर्म भक्ति प्रत्ये बोलता हवा जे 'हे धर्म ! भक्ति ! तमने कष्टना देनारा जे असुर तेमने पूर्वे में कृष्णावतारनेविषे मार्या हता ते मारी उपर एमने वैर छे माटे तमने मारां जाणीने पीडे छे ते असुरना नाशने अर्थे हुं जेते नारायणऋषिरूपे तमाराथकी प्रकट थइने हरिकृष्ण नामे विख्यात थइश अने तमारी ने ऋषिनी असुरना कष्टथकी रक्षा करीश ने तमने दुर्वासाना शापथकी मुकावीश अने असुरनो ने अधर्मनो उच्छेद करीश ने पृथ्वीनेविषे एकांतिकधर्मने प्रवर्तावीश' एम कहीने श्रीकृष्णभगवान् जेते अंत-

धीन थइ गया अने धर्मना हृदयकमळनेविषे विराजमान थया पछी ते धर्म भक्ति जेते अतिशय आनंदने पामीने त्यांथी पाछां पोताने गाम आवीने श्रीकृष्णभगवाननी भक्तिने करतां हवां अने एवी रीते ए धर्मने भगवान् प्रसन्न थया माटे सर्वे जन जेते तेमने हरिप्रसाद नामे करीने बोलावता हवा.

अने पछी केटलाक मास गया केडे ते हरिप्रसादजीथकी भक्तिनेविषे श्रीकृष्णभगवान् जेते संवत् १८३७ अढारसो ने साडत्रिशना चैत्र शुदी ९ नवमीने दिवस रात्री दश घडी गइ त्यारे प्रकट थता हवा. ते समयमां हरिप्रसादजीना घरनेविषे मोटो उत्सव थतो हवो अने इंद्रादिक देव जेते जयजय शब्दने करता थका ने दुंदुभिने वजाडताथका पुष्पनो वर्षात करता हवा अने अप्सराओ जेते नृत्य करती हवी अने गंधर्व जेते गान करता हवा अने मुनि जेते आशीर्वाद देता हवा. अने देवता ने साधुनां जे मन ते अतिप्रसन्न थतां हवां अने असुरनां जे मन ते तत्काळ त्रासने पामतां हवां अने ते गाममां रहेनारी जे स्त्रीयो ते मंगळ गाती हवी ने बाळरूप एवा जे हरि तेने आशीष् देती हवी अने ते समयनेविषे मंद सुगंध ने शीतळ एवा जे वायु ते वाता हवा अने ताराना गणे सहित आकाश जेते अतिशय निर्मळ थतो हवो ते वार पछी ते हरिप्रसादजी जेते ते पोताना पुत्रनुं जे जातककर्म ते ब्राह्मणपासे यथाविधि करावीने ब्राह्मणने घणाक प्रकारनां दान आपता हवा.

पछी जन्मथी छठा दिवसनेविषे कोटरा आदिक बाळग्रह जेते बाळरूप एवा जेते भगवान् तेने मारवा सारु आव्या तेमने ते भगवान् जेते पोतानी दृष्टिमात्रे करीने बाळीने भगावी देता हवा. पछी भगवान् त्रण महीना ने अगीयार दिवसना थया त्यारे मार्कंडेय ऋषि

जेते ब्राह्मणने वेषे ते हरिप्रसादजीने घेर आवता हवा त्यारे हरिप्रसादजी जेते ते ऋषिनुं अतिशय सन्मान करीने ने तेमने ज्योतिषी जाणीने कहेता हवा जे 'तमे अमारा पुत्रनुं नामकरण करो' पछी ते ऋषि जेते राजी थइने नामकरण करताथका बोल्या जे 'हे हरिप्रसादजी ! आ तमारा पुत्र जेते तमारी सर्व आपदाने हरशे अने जे जन एना आश्रित थशे तेमनी सर्वे आपदाने हरशे अने कर्कराशिनेविषे एनो जन्म छे माटे एमनुं हरि एवुं नाम थशे. अने वळी आ जे तमारा पुत्र तेना देहनो कृष्ण वर्ण छे तथा पोताना आश्रित जनना जे मन तेमने पोतानी मूर्तिनेविषे ताणी लेशे तथा चैत्रमासमां जन्म छे माटे कृष्ण एवे नामे विख्यात थशे. अने ए बे नाम नोखां नोखां छे तो पण ए बे मेळां मळीने हरिकृष्ण एवुं त्रीजुं नामपण थशे. अने आ तमारा पुत्र जेते त्याग, ज्ञान, तप, धर्म अने योग ए पांच गुणे करीने तो शिवजी जेवा थशे माटे नीलकंठ एवे नामे करीने लोकनेविषे प्रसिद्ध थशे. अने आ जे तमारा पुत्र तेना हाथनेविषे पद्मनुं चिह्न छे तथा पगनेविषे वज्र, ऊर्ध्वरेखा अने कमळ तेनां चिह्न छे तेमाटे आ तमारा पुत्र जेते लक्षावधि मनुष्यना नियंता थशे. अने आ तमारा पुत्र जेते कल्याणकारी एवा अनंत गुणे युक्त थशे ने तमारी समग्र कष्टथकी रक्षा करशे' एम कहीने विराम पाम्या एवा जे मार्कंडेय ऋषि तेने हरिप्रसादजी जेते घणीक दक्षिणा ने भारे भारे नवां वस्त्र ने आभूषण ते आपता हवा पछी ते ऋषि जेते एक दिवस त्यां रहीने प्रयाग तीर्थनी यात्रा करवा सारु चाली निसरता हवा. अने ते पछी ते हरिप्रसादजी ने भक्तिमाता जेते पोताना पुत्रना गुणने सांभळीने बहु प्रसन्न थतां हवां पछी ते श्रीहरि जेते पोतानी बाळ लीलाए

करीने पोताना मातपिताने ने संबन्धि जनने बहु आनंद उपजाव-ताथका बाळचंद्रनी पेठे वृद्धिने पामता हवा. अने ते पछी हरिप्रसादजी जेते ते पोताना पुत्रने पांचमे महीने प्रथम पृथ्वी उपर बेसारता हवा. अने छठा महिनानेविषे प्रथम अन्न जमवा शीखवता हवा. अने सातमे महीने कानने विंधावता हवा. अने त्रीजुं वर्ष बेठुं तारे चौळसंस्कार जे 'गर्भना केश उतराववा' ते करावता हवा. अने एज दिवसे मायावि एवो जे काळिदत्त नामे असुर ते भगवानने मारवाने आव्यो तेने भगवाने पोतानी दृष्टिमात्रे करीने मोह पमाड्यो ते वृक्षनेविषे अथ-इड अथडइने मरी जतो हवो.

अने ते पछी हरिप्रसादजी जेते असुरना उपद्रवथकी छपैया गाम-नो त्याग करीने पोताना कुटुंबे सहितथका अयोध्यापुरीमां निवास करीने रहेता हवा. अने पछी हरिप्रसादजी जेते पोताना पुत्रने पांचमा वर्षनेविषे प्रथम अक्षर भणवा शीखवता हवा. अने आठमा वर्षनेविषे भारे भारे सामग्रीयोने भेळी करीने पोताना पुत्रने यज्ञोपवीत देता ह-वा. अने ते श्रीहरि जेते पोताना पिताथकी यज्ञोपवीतने पामीने नैष्ठिक ब्रह्मचारीना धर्मनेविषे रह्याथका वेदाध्ययनने करता हवा. अने पोताना पिता पासे वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास, धर्मशास्त्र ए सर्वे ग्रंथनुं पोते अध्ययन करीने तथा श्रवण करीने ते सर्वनुं जे रहस्य तेने यथार्थ जाणता हवा अने ए सर्वमांथी पोते चार सार काढता हवा तेमां श्रीम-द्भागवतपुराणथकीतो 'पंचमस्कंध' ने 'दशमस्कंध' ए सार काढ्यो तथा स्कंधपुराणथकी 'वासुदेवमाहात्म्य' ए सार काढ्यो तथा इति-हास जे महाभारत तेथकी 'भगवद्गीता' 'विदुरनीति' ने 'विष्णुसह-स्रनाम' ए सार काढ्यो तथा सर्वे धर्मशास्त्रथकी 'याज्ञवल्क्यस्मृति'

एसार काढ्यो एवी रीते ए चार सार काढीने तेनो गूटको लखावीने पोतानी पासे नित्ये राखता हवा. पछी ते श्रीहरि जेते जन्मथकी अगीयार वर्षना थया तारे पोतानी माता जे भक्ति तेने धर्म ज्ञान अने वैराग्य सहित एवी जे भक्ति तेनो उपदेश करीने दिव्यगतिने आपता हवा ने दुर्वासाना शापथकी मुकावता हवा. अने ते पछी केटलाक मास गया केडे ते श्रीहरि जेते पोताना पिता जे हरिप्रसादजी तेने पोताना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान आपीने दिव्यगतिने पमाडता हवा ने दुर्वासाना शापथकी मुकावत्ता हवा.

अने एवी रीते भक्ति धर्म जेते दिव्यगतिने पामीने पछी दिव्यदेहे करीने निरंतर ते श्रीहरिने पासे रहेतां हवां. ते वार पछी ते श्रीहरि जेते पोताना जे संबन्धी तेने पुछ्याविनाज नित्य स्नानने मिषे करीने तीव्र वैराग्यना वेगथकी पोताना घरनो त्याग करीने पोते एकलाज उत्तर दिशनेविषे तप करवा सारु चाली निसरता हवा. ते पोते केवा छे तो बहिर्वासे सहित जे कौपीन तेने धारी रह्याछे ने मृगचर्म धार्युंछे ने पलाशनो दंड धार्योछे ने श्वेत एवुं जे यज्ञोपवीत ते धार्युंछे ने कंठनेविषे तुळसीनी बेवडी माळा धारीछे ने चांदले सहित जे ऊर्ध्वपुंड्रतिलकनुं चिह्न ते धार्युंछे ने मस्तक उपर जटाने धारी रह्याछे ने केडनेविषे मुंजनी मेखळा धारीछे, ने हाथनेविषे जपमाळा कमंडळु भिक्षापात्र ने जळगरणुं एटलां वानांने धारी रह्याछे ने शालग्राम ने बाळमुकुंदनो जे बटुवो तेने गळानेविषे धारी रह्याछे ने चार सारनो जे गूटको तेने खभानेविषे धारी रह्याछे एवा वेषने धरताथका श्रीनीलकंठब्रह्मचारी जेते सरयू नदीने तरीने उत्तर दिशामां जता हवा ते चालते चालते केटलेक दिवसे करीने हिमालय पर्वतनी तलाटीमां जे एक महा मोटुं वन आव्युं तेने पामता हवा पछी

त्यांथी चाल्या ते केटलेक दिवसे करीने हिमालयपर्वतने पाम्या ने ते पर्वतनेविषे चालताथका केटलेक दिवसे करीने मुक्तनाथ प्रत्ये आवीने उग्र तप कर्युं ने ते तपे करीने सूर्यनारायणने प्रसन्न करता हवा अने त्यां केटलाक मास रहीने पछी त्यांथी दक्षिण दिशामां चाल्या ते हिमालयपर्वतनी तलाटीमां एक महाघोर वन आव्युं तेनेविषे चार माससुधी विचरता हवा पछी श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी जेते ते वननेविषे वडना वृक्षतळे बेठा ने तपने करता एवा जे गोपाळयोगी तेने देखता हवा ने ते योगी पासे रहीने अष्टांगयोगने शीखताथका एक वर्षसुधी रह्या ने ते योगीने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपीने सिद्धगतिने पमाडता हवा अने पछी त्यांथी उत्तरमुखे चाल्या एवा जे श्रीनीलकंठब्रह्मचारी ते जेते आदिवाराह नामे जे तीर्थ तेने पाम्या अने त्यांथी चाल्या ते बंगाळ देशनेविषे सीरपुर नामे जे शहेर तेने पामता हवा अने ते शहेरनो राजा सिद्धवल्लभ नामे महाधार्मिक हतो तेणे प्रार्थनाने कर्या एवा जे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी ते जेते चोमासाना चार महिना सुधी त्यां रहेता हवा अने ते शहेरनेविषे काळी ने भैरव तेना उपासक ने सिद्धपणानुं छे अभिमान जेमने एवा जे असुर तेमना मदने हरता हवा अने पोतानो सेवक जे गोपाळदास नामे साधु तेनी असुरना अभिचारथकी पोताने सामर्थ्ये करीने रक्षा करता हवा. अने वळी ते शहेरनेविषे वेद शास्त्र पुराणनो भणेलो एवो तैलंग देशनो कोइक ब्राह्मण हतो तेणे ते राजाथकी हस्ति आदिकनुं महादान लीधुं तेणेकरीने ते ब्राह्मण गौरवर्ण हतो पण श्यामवर्ण थइ गयो पछी ते ब्राह्मण पोताना पापनी शांतिने अर्थे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारीने शरणे आव्यो तेने पोताना सामर्थ्ये करीने ते पापथकी मुकाव्यो तारे काळो मटीने प्रथमना जेवो गौरवर्ण

थतो हवो. पछी त्यांथी चाल्या एवा जे श्रीहरि ते जेते कामाक्षीदेवीने समीपे कोइक गाम हतुं तेने पाम्या ने ते गाममां महाकाळीनो उपासक एक ब्राह्मण हतो ते पोताना गाममां जे कोइ साधु तथा ब्राह्मण तीर्थवासी आवे तेने अभिचारे करीने जितीने पोताना शिष्य करे एवो अभिमानी हतो ते ब्राह्मण आवीने श्रीहरीने उपर पोतानुं जंत्र मंत्र अभिचारसंबन्धी जे घणुंक सामर्थ्य तेने करतो हवो पण तेणे करीने पोते कांइ पराभव पाम्या नहि ने पोताने सामर्थ्ये करीने ते ब्राह्मणनो समग्र मद उतारीने पोतानो आश्रित करता हवा. पछी श्रीहरि जेते त्यांथी चाल्याथका नवलखा पर्वतने पाम्या जे नवलखा पर्वतनेविषे नव लाख सिद्धनां स्थानक छे ने नव लाख ठेकाणे अग्नि ज्वाळा नीसरेछे तथा पाणीना कुंड छे ते पर्वतनेविषे रह्या जे सिद्ध तेमने पोतानुं दर्शन आपीने ते पर्वतथी उतर्या ते बाळवाकुंड नामे जे तीर्थ तेने पामता हवा. अने त्यांथी चाल्या जे श्रीहरि ते गंगासागरना संगमने पामीने ने त्यां स्नान करीने पछी ते समुद्रनी खाडीने वहाणमां बेसीने उतर्या ने कपिलाश्रमने पामता हवा ने त्यां नित्ये कपिलजीनां दर्शन करताथका एक माससुधी रह्या. अने पछी त्यांथी चाल्या ते जगन्नाथपुरी प्रत्ये गया ने त्यां केटलाक मास निवास करीने पृथ्वीना भाररूप एवा जे घणाक असुर तेमने परस्पर वैर करावीने युद्धेकरीने नाश करावी नाखता हवा. पछी श्रीनीलकंठब्रह्मचारी जेते त्यांथी दक्षिण दिशा प्रत्ये चाल्या ते आदिकूर्म नामे जे तीर्थक्षेत्र तेने पाम्या ने पछी त्यांथी महावननेविषे चालताथका मानसपुरने पाम्या अने ते पुरनो सत्रधर्मा नामे राजा हतो ते पोतानो आश्रित थयो ने ते राजाद्वारे असुरनो पराभव करावता हवा. अने त्यांथी चाल्या एवा

जे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी ते वेंकटाद्रिने पाम्या ने त्यांथी शिवकांची ने विष्णुकांचीने पाम्या ने त्यांथी श्रीरंगक्षेत्रमां जइने बे माससुधी रहेता हवा ने त्यां वैष्णव संघाथे संवाद करताथका तेमनेविषे रह्यो जे दुराचार तेनो पोताने प्रतापे करीने त्याग करावता हवा. पछी त्यांथी चाल्या एवा जे श्रीहरि ते सेतुबंधनामे जे तीर्थ तेने पामीने ने समुद्रनेविषे स्नान करीने नित्ये रामेश्वर महादेवनां दर्शन करताथका बे माससुधी त्यां रहेता हवा अने पछी त्यांथी चाल्या ते सुंदरराज नामे जे विष्णु तेनां दर्शन करीने त्यांथी चालताथका मार्गनेविषे एक घोर वन आव्युं तेमां पांच दिवससुधी चाल्या पण कांइ अन्न जळने न पाम्या पछी छठे दिवसे मध्याह्नसमे वनमां एक कूप आव्यो तेमांथी कमंडळुए करीने जळने काढीने स्नान कर्युं ने पछी वडना वृक्ष तळे बेसीने पोतानो नित्य विधि करताथका शालग्रामनी सेवा करवा लाग्या तारे ते शालग्रामने पात्रमां मुकीने कमंडळुनी धारेकरीने स्नान करावत्रा मांड्युं, ते जेटलुं पाणी रेड्युं तेटलुं शालग्राम पी गया ते एम करतां करतां पांच सात कमंडळु रेड्यां तेने पी गया पछी जळ पीने तृप्त थया जाणीने ते शालग्रामने चंदनादिके करीने पूजता हवा अने एम विचार करवा लाग्या जे 'शालग्रामने आटली तरस लागी तारे भुखपण हसे खरी पण आपणी पासे कांइ नैवेद्य धर्यानुं नथी माटे विष्णुने शुं जमाडीए' एम विचार करेछे तेटलामां शिवजी ने पार्वती ते पोठीया उपर बेसीने कापडीने वेषे त्यां आवीने प्रथमथीज उभां हतां ते श्रीनीलकंठब्रह्मचारीने एवी रीते शालग्रामनी पूजा करता जोइने तेने साथवो ने मीठुं आपतां हवां पछी ते साथवाने जळमां चोळीने ने विष्णुने नैवेद्य धरीने पोते जमता हवा. अने पछी त्यांथी चाल्या एवा जे नीलकंठ ब्रह्मचारी ते जेते

स्रुतपुरीने पाम्या ने त्यां रही जे रामानुजाचार्यनी प्रतिमा तेनुं दर्शन तथा पूजन करीने त्यांथी कुमारीका क्षेत्र प्रत्ये आव्या ने त्यांथी पद्मनाभ गया ने त्यांथी जनार्दन गया ने त्यांथी ,आदिकेशव नामे जे विष्णु तेनां दर्शन करीने त्यांथी मलयाचल नामे जे कुलगिरि तेने पामता हवा. अने त्यां साक्षिगोपाळ नामे जे विष्णु तेनां दर्शन करताथका पांच दिवस रहेता हवा. अने त्यांथी चाल्या एवा जे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी ते पंढरपुर गया ने त्यां विठ्ठलनाथ नामे जे विष्णु तेनां दर्शन करता थका बे माससुधी रहेता हवा पछी विठ्ठलनाथने भेटीने त्यांथी चाल्या ते दंडकारण्यने पाम्या ने ते दंडकारण्यनी प्रदक्षिणा करीने नासिकपुर प्रत्ये आव्या ने त्यां त्र्यंबकेश्वर महादेवनां दर्शन करीने तापी नदी प्रत्ये आव्या ने त्यांथी चाल्या ते नर्मदा नदीने उतरीने मही नदीने पाम्या ने महीने उतरीने तथा साभरमती नदीने उतरीने ने भाल देशने उल्लंघीने भीमनाथ आवता हवा. अने त्यांथी चाल्या एवा जे श्रीनीलकंठब्रह्मचारी ते जेते गोपनाथ नामे शिवजीनां दर्शन करीने पंचतीर्थी करता करता मांगरोल बंदरमां आवता हवा. एवी रीते तीर्थयात्राने करता एवा जे श्रीहरिकृष्णभगवान् ते जेते जेजे तीर्थमां पोते गया तेते तीर्थनेविषे रह्यो जे अधर्म तेनो उच्छेद करता हवा ने एकांतिकधर्मनुं स्थापन करता हवा. अने तेते तीर्थमां रेहेनारा जे जन तेमने पोतानां दर्शन आपीने तथा तेमनुं अन्न जळादिक ग्रहण करीने तेमने संसारना बंधनथकी छोडावता हवा.

अने पछी त्यांथी चाल्या जे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी ते जेते संवत् १८५६ अढारसो ने छप्पनना श्रावण वदी ६ छठ्यने दिवस लोजपुरमां आवता हवा अने ते लोजपुरमां उद्धवना अवतार एवा जे श्रीरामा-

नंदस्वामी तेना शिष्य जे मुक्तानंदस्वामी आदिक साधु तेमने देखता हवा अने तेमने साधुलक्षणे युक्त एवा श्रीकृष्णभगवानना भक्त जाणीने ते भेळा पोते रहेता हवा. अने केटलाक मास त्यां रहीने पछी त्यांथी ते साधु भेळा चाल्या ते गिरनार पर्वतनी छायामां जे पीपलाणुं गाम तेमां रह्या जे नरसिंहमहेता नामे ब्राह्मण तेना घरनेविषे विराजमान एवा जे श्रीरामानंदस्वामी तेनां दर्शन संवत् १८५६ अढारसो ने छप्पनना ज्येष्ठ वदी १२ द्वादशीने दिवस करता हवा. ते स्वामी केवा छे तो गौर ने पुष्ट छे मूर्ति जेनी एवा छे ने श्वेत वस्त्र पेर्याछे ने नैष्ठिक ब्रह्मचारीना वेषने धरी रह्याछे एवा जे स्वामी तेने साष्टांग नमस्कार करीने ने मळीने स्वामीने पासे वेसता हवा पछी ते स्वामी जेते ते श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारीने जोइने बहु आनंद पामता हवा ने तेमनुं जे सर्व वृत्तांत तेने पुछता हवा पछी ते श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी जेते पोतानुं जन्मस्थान, कुळ, माता पिता, गोत्र, वेद, प्रवर, गुरु, इष्टदेव ए सर्वेने जेम छे तेम कहेता हवा तथा पोतानो जे वैराग्य तथा पोते जेम स्वजननो त्याग कर्यो तथा पोते जेम वनमां निवास करीने रह्या तथा पोते जेम नाना प्रकारे तपश्चर्या करी तथा पोते जेम अष्टांग-योग साध्यो तथा पोते जेम तीर्थयात्रा करी तथा ते तीर्थमां रहेनारा जे पाखंडी गुरु तेनो पोते जेम पराजय कर्यो ए आदिक जे सर्व पोतानुं वृत्तांत तेने अनुक्रमे करीने विस्तारे सहित कहेता हवा. त्यारे ते वार्ताने सांभळीने स्वामी जेते अतिशय प्रसन्न थया ने श्रीनीलकंठ-ब्रह्मचारी प्रत्ये बोल्या जे 'हे ब्रह्मचारी! तमे तो अमारा छो केम जे तमारा पिता जे धर्म ते प्रथम प्रयागक्षेत्रनेविषे अमाराथकीज भागवती दीक्षाने पाम्या हता ने अमारी आज्ञाए करीने मुमुक्षु जनने धर्म सहित

श्रीकृष्णभगवाननी भक्तिनो उपदेश करता थका कोसल देशमां रह्या हता ते धर्मना तमे पुत्र छो ने गुणे करीने तो तमारा पिताथकीपण अधिक छो' एवी रीतनां जे स्वामीनां वचन तेने सांभळीने श्रीनील-कंठब्रह्मचारी जेते अतिशय प्रसन्न थयाथका ते स्वामी पासे रहेता हवा. पछी संवत् १८५७ अढारसो ने सत्तावनना कार्तिक शुदी, ११ एका-दशीने दिवस ते स्वामीथकी भागवती दीक्षानुं ग्रहण करता हवा त्यारे ते स्वामीए 'सहजानंद' एवुं पोतानुं नाम धर्युं तथा बीजुं 'नारा-यणमुनि' एवुं नाम धर्युं पछी पोते अतिशय प्रीतिए करीने ते स्वामीने सेवता हवा पछी ते स्वामी जेते सर्व, साधुगुणे संपन्न ने अतिसमर्थ एवा जे नारायणमुनि तेने जोइने अने पोतानी जे धर्मधुर ते नारायणमुनिने सोपीने पोते संवत् १८५८ अढारसो ने अठावनना मागशर शुदी तेरशने दिवस देह त्याग करीने पाछा बदरिकाश्रम-नेविषे जता हवा ने दुर्वासाना शापथकी मुकाता हवा.

पछी श्रीसहजानंदस्वामी जेते पोताना गुरुनी जे देहक्रिया तेने यथा-विधि करीने ने धर्मधुरने उपाडी लेता हवा अने श्रीरामानंदस्वामीना आश्रित जे साधु ब्रह्मचारी ने गृहस्थ हता तेमनी सत् शास्त्रना उप-देशेकरीने संभावना करता हवा अने तेमने पोतानो अलौकिक प्रताप देखाडीने पोतानेविषे तेमना चित्तने ताणी लेता हवा. तेवारपछी स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज जेते पोताना शिष्य जे त्यागी साधु तथा ब्रह्मचारी तथा केटलाक गृहस्थ सत्संगी तेमणे विटाणा थका सोरठ, हालार, कच्छ, झाडावाड, काठियावाड, भाल, गुजरात ए आदिक जे सर्व देश तेमनेविषे पोताना प्रतापने विस्तारताथका ने धर्म, ज्ञान अने वैराग्ये युक्त जे भक्ति तेने प्रवर्तावता थका ने अधर्मनो

उच्छेद करता थका ने अधर्मी एवा जे पाखंडी असुरांश गुरु तेमनो पराभव करताथका विचरता हवा.

अने श्रीजीमहाराज जेते जेजे देशनेविषे विचर्या तेते देशना जे जन ते श्रीजीमहाराजनां अलौकिक ऐश्वर्यने जोइने घणाक आश्रित थता हवा ने श्रीजीमहाराजनुं प्रकट प्रमाण भजन करता हवा. पछी श्रीजी-महाराज जेते तेमना उत्साहने अर्थे ने तेमनी बुद्धिनी दृढताने अर्थे पोतानुं जे नानाप्रकारनुं ऐश्वर्य ते समाधिए करीने देखाडता हवा. तेमां केटलाक मनुष्यने तो गोलोकने मध्ये जे अक्षरधाम तेनेविषे लक्ष्मी, राधिका अने श्रीदामादिक पार्षदे सहित श्रीकृष्णरूपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाकने तो वैकुंठलोकनेविषे लक्ष्मी ने नंद सुनंदा-दिक पार्षदे सहित विष्णुरूपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाक-ने तो श्वेतद्वीपनेविषे निरन्नमुक्त सहित महापुरुषरूपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाकने तो अव्याकृत धामनेविषे लक्ष्मी आदिक शक्ति-यो ने पार्षदे सहित भूमापुरुषरूपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केट-लाकनेतो बदरिकाश्रमनेविषे मुनिए सहित नरनारायणरूपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाकनेतो क्षीरसमुद्रनेविषे लक्ष्मी ने शेषनागे सहित योगेश्वररूपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाकनेतो सूर्य-ना मंडळनेविषे हिरण्यमयपुरुषरूपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केट-लाकनेतो अग्निमंडळनेविषे यज्ञपुरुषरूपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाकनेतो प्रणवना जे नाद तेने तत्काळ संभळावता हवा. अने केट-लाकनेतो कोटिकोटि सूर्य सरखुं जे पोतानुं तेज तेने देखाडता हवा. अने केटलाकनेतो जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति थकी पर ने सच्चिदानंद छे लक्षण जेनुं ने द्रष्टा छे नाम जेनुं एवुं जे ब्रह्म तेरूपे पोतानुं दर्शन

देता हवा. अने केटलाकनेतो ब्रह्मांडना आधार ने पुरुषसूक्तने विषे कह्या एवा जे विराट्पुरुष ते रूपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाकने तो भूगोळ ने खगोळविषे रह्यां जे देवतानां स्थानक ने ऐश्वर्य तेने देखाडता हवा. अने केटलाकनेतो आधारादिक जे छो चक्र तेनेविषे रह्या एवा जे गणेश आदि देवता तेमने पृथक् पृथक् देखाडता हवा. अने क्यारेकतो सोए सो गाउने छेटे रह्या एवा जे पोताना भक्त तेमने प्रत्यक्ष प्रमाण पोतानुं दर्शन देता हवा. अने क्यारेकतो छेटे रह्या एवा जे पोताना भक्त तेमणे पोताना घरनेविषे श्रीजिमहाराजनी प्रतिमाने आगळ धर्युं जे नैवेद्य तेने पोते पोताना भक्तने विसय पमाडता थका जमता हवा. अने क्यारेकतो देहने त्याग करता एवा जे पोताना भक्त तेमने पोताना धाम प्रत्ये लइ जवाने इच्छताथका त्यां पोते आवीने ते भक्तना गामनेविषे रह्या एवा जे बीजा भक्त अथवा अभक्त तेमनेपण पोतानुं साक्षात् दर्शन देता हवा. एवी रीत्ये मुमुक्षु अथवा मुमुक्षु नहि एवा जे जन तेमने पोतानां अलौकिक ऐश्वर्यने देखाडता एवा जे श्रीसहजानंदजी महाराज तेने जोइने अतिशय विसयने पाम्या एवा जे हजारो मनुष्य ते पोतपोताना मतनो ने गुरुनो त्याग करीने ने श्रीजिमहाराजनो अनन्य आश्रय करीने प्रकट प्रमाण भजन करता हवा. पछी घणाक जे मतवादी ते श्रीजिमहाराज संघाथे विवाद करवा आव्या पण वादेकरीने श्रीजिमहाराजने जितवाने काजे कोइ समर्थ न थया पछी ते सर्वे मतवादी जेते श्रीजिमहाराजना अलौकिक ऐश्वर्य प्रतापने देखीने ने नमस्कार करीने बोल्या जे 'हे महाराज! तमेतो परमेश्वर छो माटे अमारा जेजे इष्टदेव छे तेनां दर्शन अमने

कृपा करीने करावो' एवी रीते जे तेमनुं प्रार्थना वचन तेने सांभळीने ते सर्वेने वेसारीने ने पोताने प्रतापे करीने तेमने तत्काळ समाधि करावता हवा पछी ते सर्वे जेते श्रीजिमहाराजने दर्शनमात्रे करीने खेंचाइ गयां छे नाडी प्राण जेमनां एवाथका पोतपोताना हृदयनेविषे पोतपोताना इष्टदेवरूपे श्रीजिमहाराजने देखता हवा, तेमां जे वल्लभकुळने आश्रित एवा वैष्णव हता तथा निंबार्क संप्रदायना हता तथा माध्वी संप्रदायना हता ए त्रणतो गोपीना गणे विंटाणा ने वृंदावननेविषे रह्या ने बाळलीलाए करीने मनोहरमूर्ति एवा जे श्रीकृष्णभगवान् तेरूपे देखता हवा. अने जे रामानुज संप्रदायना हता तेतो नंद, सुनंद, विष्वक्सेन ने गरुडादिक पार्षदे सहित लक्ष्मीनारायणरूपे देखता हवा. अने जे रामानंदी हता तेतो सीता लक्ष्मण ने हनुमाने युक्तथका दिव्य सिंहासन उपर वेठा एवा जे श्रीरामचंद्रजी तेरूपे देखता हवा. अने जे शंकराचार्यना मतवाळा हता तेतो ब्रह्मज्योतिरूपे देखता हवा. अने जे शैवी हता तेतो पार्वती ने प्रमथगणे सहित जे शिवजी तेरूपे देखता हवा. अने जे सूर्यना उपासक हता तेतो सूर्यना मंडळनेविषे रह्या जे हिरण्यमय पुरुष तेरूपे देखता हवा. अने जे गणपतिना उपासक हता तेतो महागणपतिरूपे देखता हवा. अने जे देवीना उपासक हताते तो देवीरूपे देखता हवा. अने जैन हता तेतो तीर्थंकर रूपे देखता हवा. अने जे यवन हता तेतो पेगंबररूपे देखता हवा. एवी रीते समाधिए करीने पोतपोताना इष्टदेवरूपे श्रीजिमहाराजने जोइने ने सर्वना कारण जाणीने ने पोतपोताना मतनो त्याग करीने श्रीजिमहाराजनो दृढ आश्रय करता हवा ने प्रकट प्रमाण भजन करता

हवा. एवी रीते श्रीसहजानंदजी महाराज जेते पोताने प्रतापे करीने जीवनुं जे मूळ अज्ञान तेनो नाश करताथका पृथ्वीनेविषे नाश पाम्यो एवो जे एकांतिक धर्म तेनुं रुडा प्रकारे स्थापन करता हवा.

अने वळी धनाढ्य एवा जे पोताना भक्त गृहस्थ सत्संगी ते पासे घणांक अन्नसत्र करावता हवा तथा हिंसाए रहित एवा जे विष्णुयाग महारुद्र ने अतिरुद्रादिक यज्ञ तेने करावता हवा अने ते यज्ञनेविषे हजारो ब्राह्मणने मिष्ट अन्ने करीने तृप्त करावता हवा अने ते ब्राह्मणने बहु प्रकारनां दान देवाडता हवा अने साधु ब्राह्मण ने देवता तेमनुं जे पूजन तथा भोजने करीने तृप्ति तेने वारंवार करावता हवा. तथा अधर्म ने पाखंड तेनो वारंवार उच्छेद करता हवा अने श्रीजि-महाराज पोते ज्यां ज्यां विचर्या त्यां त्यां रह्या जे पोताना भक्तजन तेमनी आगळ वर्णाश्रमनो धर्म तथा आत्मज्ञान तथा वैराग्य तथा पोताना स्वरूपनुं ज्ञान तथा पोताना माहात्म्ये सहित भक्ति एमना जे बहु प्रकारना भेद तेमने विस्तारे करीने यथार्थपणे कहेता हवा. एवी रीते नित्य प्रत्ये पोताना भक्तजनने आनंद पमाडता एवा जे श्रीजिमहाराज ते जेते श्रीगढडा नगरनेविषे पोताना भक्त एवा जे अभय नामे राजा ने तेनी पुत्रियो ने तेनो पुत्र ए सर्वेनी भक्तिने वश थइने एमने घेर पोते निवास करीने रहेता हवा. अने त्यां रह्याथका जन्माष्टमी, रामनवमी, प्रबोधिनीएकादशी, हुताशनी अने अन्न-कूट ए आदिक जे उत्सवना दिवस तेने विषे भारे भारे सामग्रीयो मंगावीने मोटा उत्सव करावता हवा अने ते उत्सवनेविषे परमहंस तथा ब्रह्मचारी तथा देशविदेशना जे हरिभक्त सत्संगी ते श्रीजि-महाराजनां दर्शन करवाने अर्थे वारंवार आवता हवा अने नाना

प्रकारनां वस्त्र आभूषण चंदन पुष्प ए आदिक जे पूजानी सामग्रीयो तेणे करीने श्रीजिमहाराजने पूजता हवा अने ते उत्सवनेविषे श्रीजिमहाराज जेते नानाप्रकारनी भोजन सामग्रीयो करावीने हजारो साधुने तथा ब्राह्मणने घणाक प्रकारे वारंवार तृप्त करता हवा.

एवा जे श्रीसहजानंदस्वामी महाराज तेनी मूर्त्तिनां जे चिह्न ते प्रथम लखीए छीए—श्रीजिमहाराजना वे चरणारविंदना तळामां ऊर्ध्वरेखा छे ते केवी छे तो अंगुठानी पासेनी जे आंगळीयो तेनी वेयकोरा निकळी छे ने पानीने वेयकोरा निकळी छे अने जमणा पगना अंगुठाना थडमां ऊर्ध्वरेखाने मळतुं यवनुं चिह्न छे अने ते जमणा पगना तळामां ऊर्ध्वरेखानी वेयकोरे कमळ, अंकुश, ध्वज, अष्टकोण, वज्र, स्वस्तिक, जंबूफळ एमनां चिह्न छे अने जमणा पगना अंगुठाना नखमां एक उभी राती रेखानुं चिह्न छे ने एज अंगुठाने वाहेरले पडखे एक तिल छे अने ए अंगुठानी पासेनी जे आंगळी तेनुं जे अंगुठानी कोरनुं पडखुं तेमां एक तिल छे अने जमणा पगनी छेली आंगळीना वाहेरना पडखामां नखनी पासे एक तिल छे अने डावा पगनी ऊर्ध्वरेखानी डावी कोरे श्याम एवां वे चिह्न पासे पासे छे अने वळी ए ऊर्ध्वरेखाने मळतुंज फणाना थडांम एक व्योमनुं चिह्न छे अने डावा पगना तळामां ऊर्ध्वरेखाने वेकोरे धनुष, कळश, मत्स्य, त्रिकोण, गोपद, अर्धचंद्र एमनां चिह्न छे अने वे पगनां तळां रक्त छे ने वे पगना अंगुठा ने आंगळियोना जे नख ते रक्त छे ने उपडता छे ने तेजस्वी छे अने वे पगना अंगुठा ने आंगळीयोनी उपर झीणां झीणां ने कोमळ एवां रोमनां चिह्न छे अने वे पगना अंगुठा ने तेनी पासेनी वे आंगळीयो ते उपर चाखडीना घसारानां चिह्न छे अनेवे पगनी जे वाहेरनी

घुंटियो ने तेथी हेठे आसनना घसारानां चिह्न छे अने जमणा पगनी घुंटिथी पांच तसु उंचो नळीने उपर एक नानो तिल छे अने ए पगना साथळने बहारली कोरे एक मोटुं चिह्न छे अने डावा पगनी घुंटिथी पांच तसु उंचो नळीने उपर एक मोटो तिल छे ने तेथी उपर पासेज एक नानो तिल छे अने ए पगना ढिचणने बाहेरले पडखे एक चिह्न छे अने कटिभागने विषे बे कोरे धोतीयुं पहेर्यांना घसारानां श्याम चिह्न छे अने सदा शीतळ एवुं जे उदर ते उपर त्रिवळी पडे छे अने उंडि ने गोळ एवी जे नाभी तेनी बेकोरे तिल छे तेमां जमणिकोरेतो नाभिना कांठा उपर छे ने डावि कोरेतो नाभिथी जराक छेटे छे अने जमणि कुखमां एक मोटो तिल छे ने तेनी पासे बिजो नानो तिल छे अने नाभिथी उपर बे तसुने छेटे त्रण तिल छे तेमां बे नळीनी उपर एक एक छे ने एक वचे छे अने ते वचला तिलथी बे तसु उपर एक तिल छे अने डावे पडखे कुखथी उंचे ने बगलथी हेठे मोटा चार तिलनी एक उभी हार छे ने तेनी पासे बाहेरली-कोरे एक बीजी नाना चार तिलनी उभी हार छे अने हृदयने-विषे रोमनुं श्रीवत्स चिह्न छे अने छातीने वचे अर्धचंद्रने आकारे पांच तसु पोळुं ने जराक रातुं एवुं एक मोटुं चिह्न छे ते जमणी कोरे कांइक विशेष चढतुं छे अने ए चिह्नने वचे जराक डावी कोरे एक मोटो तिल छे अने ए तिलथी डावी कोरे बे आंगळने छेटे एक तिल छे ने तेथी डावीकोरे बे तसुने छेटे डावा स्तनथी उपर एक तिल छे अने बे स्तनथी उपर बे छापनां चिह्न छे अने जमणी भुजानी पासे मांहिलीकोरे उभी ओळ्ये चार तिल छे अने जमणी भुजामां मूळथी त्रण तसु हेठुं एक छापनुं चिह्न छे ने ते

छापना चिह्नने पडखे बाहेरली कोरे नाना चार तिल छे अने जमणी कुणीथी हेठा ने कांडाथी उंचा बे तिल छे अने जमणा हाथनी टचली आंगळीना मूळथी उपर अर्धा आंगळने छेटे एक नानो तिल छे अने डावी भुजाना मूळथी त्रण तसु हेठुं एक छापनुं चिह्न छे अने डावी कुणीथी बे तसु हेठो हाथने उपले भागे एक तिल छे अने डावा हाथना अंगुठा पासेनी जे आंगळी तथा वचली आंगळी ए बेनी वचे एक तिल छे अने ए अंगुठा पासेनी आंगळीना नखनी पासे मांहेली कोरे एक नानो तिल छे अने डावा हाथना पोंचा उपर एक तिल छे अने बे हाथना जे नख ते रक्त छे ने उपडता छे ने तेजस्वी छे ने ते नखना जे अग्रभाग ते अति तीक्ष्ण छे अने बे हाथनां जे तळां ते रक्त छे ने ते तळामां जे रेखाओ ते थोडी थोडी श्याम जणाय छे अने बे हथेळीना मूळथी उपर आठ तसु उंचां बे छापनां चिह्न छे अने बे कुणी श्याम छे अने कंठना खाडानी वचे एक तिल छे ने ए तिलथी जराक छेटे एक नानो तिल छे अने दाढीथी हेठो एक तिल छे अने डावा खभाथी बे आंगळ हेठो वांसामां एक रोमे सहित एक मोटो तिल छे ने ए तिलथी हेठो एक तिल छे ने वळी तेथी हेठो बीजो तिल छे अने करोडनी डावी कोरा डोकथी बे तसु हेठो एक तिल छे अने जमणी खरपडी उपर एक नानो तिल छे अने करोडथी जमणी कोरे वांसानी मध्ये चार तिल छे अने नासिकानी पासे जमणी कोरे एक मोटो तिल छे अने ए तिलथी उंचो ने आंखना खुणाथी हेठो पासेज एक नानो तिल छे अने बे नेत्रनी जे हेठली ने उपली पांपण्यो तेथी उपर ने हेठे झीणी झीणी करचलीयो पडेछे अने नासिकाने उपर शिळीना चाठानां झीणां झीणां चिह्न छे अने मुखमां जमणीकोरे हेठली जे

प्रथमथी डाव्य तेमां श्याम चिह्न छे अने जिह्वा ते कमळना पत्र सरखी रक्त छे अने डाबा कानने मांहिली कोरे श्याम बिंदुनुं चिह्न छे अने विशाळ ने उपडतुं एवुं जे ललाट तेनेविषे तिलकने आकारे उभी बे रेखा छे अने वळी ललाटनेविषे जमणीकोरे केशथी हेठुं एक चिह्न छे अने जमणा काननी बुटी उपर एक नानो तिल छे अने ताळवानी उपर एक मोटो तिल छे अने शिखाथी आगळ समीपे एक तिल छे अने शिखाथी पछवाडे जमणीकोरे त्रण तिल छे अने ए विना बीजापण झीणा झीणा तिल ते शरीरमां केटलाक छे अने श्रीजिमहाराजनी जे मूर्ति ते अतिशय रूप ने सुंदरता ने मधुरता तेणे युक्त छे अने ते मूर्ति पुष्ट छे ने अतिशय शोभायमान छे अने ते मूर्तिनां दर्शनने करनारा जे भक्तजन तेमना मनने ने नेत्रने हरिले एवी ते मूर्ति छे अने ते मूर्ति घनश्याम छे ने शांतस्वभावे युक्त छे अने दुर्गपत्तननेविषे श्रीगोपिनाथजीनी मूर्ति जेटली उंची छे तेटलीज श्रीजिमहाराजनी मूर्ति उंची छे अने श्रीजिमहाराजनी मूर्तिनां जे कर चरण आदिक सर्व अंग ते सामुद्रिक शास्त्रमां जेवां कह्यांछे तेवां छे. आवी रीत्ये श्रीजिमहाराजनी मूर्तिनां जे चिह्न ते पोतानी स्मृतिने अनुसारे लख्यां छे.

हवे श्रीजिमहाराजनी जे स्वाभाविक चेष्टा ते लखीए छीए—श्रीजिमहाराज नित्य प्रत्ये पाछली चार घडी अथवा त्रण घडी रात्रि रहे तारे उठीने दातण करवानो स्वभाव छे अने ते पछी स्नान करीने ने धोयेलुं जे कोरुं सूक्ष्म वस्त्र तेणे करीने शरीरने लुइने पछी उभा थइने पहेरवाना वस्त्रने बे साथळ वचे मेलुं करीने तेने बे हाथे करीने नीचोवीने पछी साथळने ने पगने लुइने पछी धोयेलुं सूक्ष्म घाटुं जे श्वेत वस्त्र तेने सारी पेठे ताणीने पहेरेछे अने श्वेत वस्त्र

पहेरवानी छे रुचि जेने एवा जे श्रीजिमहाराज ते ते पछी बीजुं धोयेलुं सूक्ष्म श्वेत वस्त्र ओढीने ने चाखडी उपर चढीने पोतानो नित्यविधि करीने जमवा पधारेछे अने पवित्र एवुं जे जमवा बेसवानुं स्थानक त्यां जइने आसन उपर बेसेछे अने जमवा बेसे त्यारे ओढवाना वस्त्रने कानने पछवाडे राखीने ने कानने उघाडा राखीने जमवा बेसेछे अने जमवा बेसे तारे उगमणुं अथवा उत्तरादुं मुख राखीने ने डाबा पगनी पलांठी वाळीने ने जमणो पग उभो राखीने ने ते उपर जमणा हाथनी कुंणी राखीने जमेछे अने जमतां जमतां वारंवार पाणी पीवानो स्वभाव छे अने जमतां जमतां पोताने जे जम्यानी जणश सारी स्वादु जणाय ते बीजा कोइक श्रेष्ठ हरिभक्त पोताने मनगमता होय तेने अपावेछे अने जमता थका ओडकार खाइने पेट उपर हाथ फेरववानो स्वभाव छे अने क्यारेकतो कोइक भक्तजननी उपर प्रसन्न थयाथका पोतानी प्रसादिनो थाळ तेने आपेछे अथवा अपावेछे अने साधुने पीरसवुं होय तारे डावे खभे खेसने नांखीने ने ते खेसना छेडाने केड संघाथे ताणी बांधीने पीरसेछे अने पीरसे तारे लाडु जलेबी आदिक जे जम्यानी जणसो तेनुं वारंवार नाम लेता थका पंक्तिमां वारंवार फरेछे अने साधु हरिभक्तने जमाडवामां तथा पीरसवामां पोताने श्रद्धा आदर अने प्रसन्नता ते घणी छे अने श्रीजिमहाराज क्यारेकतो वर्षाऋतु तथा शरदऋतुनेविषे दुर्गपत्तनने समीपे घेलानदीनुं निर्मळ जळ जाणीने साधु तथा सत्संगि सहित नावा पधारेछे अने ते नदीना जळने वखाणता थका पोताना भक्तजनने आनंद उपजावता थका ते भक्तजन भेळा बहु प्रकारे जळक्रीडा करेछे अने,जळमां डुबकी मारेछे तारे,पोताना कान,नेत्र अने नाक तेने,बे हाथना अंगुठा ने

आंगळीए करीने दबावे छे तथा डुबकी मारीने झाझी वार-पछी नीकळे छे तारे पोताना मुखारविंद उपर जमणा हाथने फेरवीने कोगळा करवानो स्वभाव छे अने क्यारेकतो नदीना प्रवाहने मध्ये उभा रह्याथका साधुनी पासे ताळी वजाडीने कीर्तन गवरावेछे ने पोतेपण ते भेळा ताळी वजाडता थका उत्साहे सहित कीर्तन गायछे अने जळमां स्नान करवा पेसेछे. तथा स्नान करीने नीसरेछे तारे पोताने प्रिय एवो कोइक भक्तजन बळवान् होय तेना हाथने पोताना हाथे करीने झालेछे अने पोताने दर्शने करीने हर्षे युक्त छे मुख जेनां एवा जे पोताना भक्तजन तेमणे सहित नदीना जळथी बाहेर नीसरीने नदीना कांठानेविषे उभा रह्याथका प्रथमनी पेठे पहेरेला वस्त्रने निचोवीने ने शरीरने लुइने धोळो खेस सारीपेठे ताणीने पहेरेछे ने पछी धोळो फेंटो माथे बांधेछे अने माथे फेंटो बांधेछे तारे फेंटाना छेडानुं छोगलुं मुकीने बांधेछे तथा फेंटाना एक आंटानो पेच भ्रुकुटिनी पांपण उपर लावीने बांधेछे अने ते पछी धोळा खेसने डाबे खभे नांखीने ने ते खेसना छेडाने केड्य संघाथे ताणी बांधीने पछी सुंदर भारे घोडी उपर अथवा घोडा उपर असवार थइने हजारो जे पोताना भक्तजन तेमणे चारेकोरे वींटाणा थका ने पोताना दर्शनने करता जे भक्तजन तेमना नेत्रने आनंद उपजावता थका पोताने उतारे पधारेछे अने श्रीजिमहाराज पोते चालेछे तारे धोळी पछेडीने अथवा धोळा खेसने डाबा खभा उपर आडसोडे नाखीने जमणा हाथने हलावता थका चालेछे अने क्यारेक रुमाले युक्त जे जमणो हाथ तेने हलावता थका चालेछे अने क्यारेकतो डाबा हाथने केड्य उपर मुकीने ने जमणा हाथमां रुमालने लइने ते जमणा हाथने हलावता हलावता चालेछे. अने श्रीजिमहाराजने सहजे उतावळे

चालवानो स्वभाव छे अने पोते चालेछे तारे पोतानी केडे चालता जे भक्तजन ते दोडे तारे मांडमांड भेळे चाली शके एवी रीते उतावळा चाले छे अने ज्यारे पोते चाखडी पहेरीने चालेछे तारे चाखडीना चटचट शब्द थायछे अने क्यारेकतो पोते कांइक कार्य करवाने तत्पर थया थका उभा होय तथा धीरेधीरे चालता होय तारे पोताना जमणा हाथनी मुठी वाळीने पोताना जमणा साथळमां धीरेधीरे मारवानो स्वभाव छे अने क्यारेकतो घणाक माणसनी भीड थायछे ने रज उडेछे तारे पोतानी नासिका ने मुखारविंद तेने आडो रुमाल देछे अने क्यारेकतो पोते ढोलीया उपर वेसेछे ने क्यारेकतो ओछाडे सहित गोदडुं पाथर्युं होय ते उपर वेसेछे ने क्यारेकतो गादी उपर वेसेछे ने क्यारेकतो चाकळा उपर वेसेछे ने क्यारेकतो ढोलीया उपर तकीयो पड्यो होय ते उपर वेसेछे अने वेसे तारे क्यारेकतो पलांठीवाळीने वेसेछे ने क्यारेकतो वस्त्रे करीने ढींचणने बांधीने वेसेछे अने ज्यारे ज्यारे वेसे तारे बहुधातो तकीयानुं उठींगण करीने बेसेछे अने क्यारेकतो पोते ढोलीया उपर अथवा आसन उपर वेठा थका तकीयानुं उठींगण करीने ने पोताना पगने लांबा करीने ने पग उपर पगने मुकीने वेसवानो स्वभाव छे अने क्यारेकतो पोते वेठा थका डावा चरणारविंदनी ऊर्ध्वरेखा उपर पोताना जमणा हाथनी आंगळीने उभी फेरवेछे अने क्यारेकतो पोतानी जीभने एककोरना दांत तळे दबावीने वेसवुं एवो सहज स्वभाव छे अने क्यारेकतो पोते वेठा-थका पोतानी डोकने वे पासे मरोडीने कडाका वगाडेछे अने क्यारे-कतो पोताना भक्तजननी पासे पोताना चांसाने दबावेछे त्यारे

हइयानी तळे तकीयो राखीने दबावेछे अने श्रीजिमहाराज ज्यां ज्यां सहजे बेठा होय त्यारे तुलसीनी माळाने फेरवेछे अने क्यारेकतो रमतनी पेठे ते माळाने बेवडी करीने बेबे मणका भेळा फेरवेछे अने क्यारेकतो वार्ता करताथका ते माळाने भेळी करीने बे हाथना तळा वच्चे राखीने घसेछे अने क्यारेकतो माळा न होय त्यारे पोताना हाथनी आंगळीना पर्वने गणेछे अने क्यारेकतो नेत्रकमळने मिचिने ध्यान करता थका बेसेछे अने क्यारेकतो नेत्रकमळने उघाडां राखीने ध्यान करताथका बेसेछे अने क्यारेकतो ध्यान करताथका चमकीने जागेछे अने क्यारेकतो पोतानी आगळ साधु वार्जींत्र वजाडीने कीर्तन गाता होय त्यारे पोते ध्यान करीने बेसेछे अने क्यारेकतो चपटी वगाडताथका ते साधु भेळा गावा लागेछे अने क्यारेकतो साधु ताळी वजाडीने कीर्तन गाता होय ते भेळा पोते ताळीवजाडीने कीर्तन गायछे अने क्यारेकतो पोतानी आगळ वार्जींत्र वजाडीने साधु कीर्तन गाता होय तथा पोतानी आगळ कथा वंचाती होय तथा पोते पोताना भक्तजननी आगळ वार्ता करता होय त्यारे रसीने तेमने समीपे जायछे अने कथा वंचावता होय त्यारे वारंवार 'हरे' एवा शब्दनुं उच्चारण करेछे अने बीजी जे जे क्रिया करता होय तेनेविषे पण ते कथाने भाने करीने क्यारेकतो अचानक 'हरे' एवा शब्दनुं उच्चारण करेछे ने तेनी स्मृति थायछे त्यारे पोता पासे जे भक्तजन बेठा होय तेमनी सामुं जोइने मंदमंद हसेछे अने क्यारेकतो पोते राजीपामां वार्ता करता होय अथवा कथा करावता होय अथवा कीर्तन गवरावता होय अथवा कांइक विचारमां बेठा होय ने ते वचमां कोइक जम्यानुं पुछवा आवे अथवा कोइक पूजा करवा आवे अथवा हार चढाववा आवे तो ते उपर बहु कचवाइ जायछे अने क्यारेकतो

पोताना भक्तजननी सभामां बेठाथका धर्म, ज्ञान, वैराग्ये युक्त जे भक्ति ते संबन्धी जे जे वार्ता ते पोताना भक्तजननी आगळ करेछे अने क्यारेकतो योग, सांख्य, पंचरात्र, वेदांत इत्यादिक जे शास्त्र, तेना रहस्यनी वार्ता करेछे अने क्यारेकतो पोताना भक्तजननी सभामां बेठाथका ते भक्तजननी आगळ धर्मादिक संबन्धी वार्ता करेछे त्यारे प्रथम पोताना बे भुज उंचा उपाडीने ताळी वजाडीने सर्वेने छांना राखीने वार्ता करेछे अने क्यारेकतो घणाक भक्तजनना समूहनी मोटी सभा थइ होय ने तेमनी आगळ धर्मादिक संबन्धी वार्ता करवी होय त्यारे छेटेथीपण संभळाय तेने अर्थे पोते उभा थइने ने ताळी वजाडीने सर्वेने छाना राखीने वार्ता करेछे अने क्यारेकतो ते वार्ता करवानेविषे एकाग्रचित्ते करीने पोताने ओढवानुं वस्त्र खसी जाय तेनीपण सुरत रहेती नथी एवो स्वभाव छे अने क्यारेकतो पोताना भक्तजननी सभामां बेठाथका पोताना मुखारविंदने समीपे बेठा जे साधु तथा हरिभक्त तेमने परस्पर प्रश्न उत्तर करावेछे ने तेमां कोइक कठण प्रश्न पुछे तेनो उत्तर न आवडे तो सर्वेने आनंद उपजावता थका पोते उत्तर करेछे अने क्यारेकतो ते वार्ता करताथका पुष्पना गुच्छने अथवा कोइक मोटा पुष्पने बे हाथे करीने चोळी नांखेछे अने क्यारेकतो ते वार्ता करताथका पोताना रुमालना छेडाने वळ देवो एवो सहज स्वभाव छे अने क्यारेकतो उत्सवनेविषे नाना प्रकारना देशथी आव्या जे पोताना भक्तजन तेमणे प्रीतिए करीने करी जे मोटी पूजा तेनो अंगीकार करेछे अने क्यारेकतो उत्सवनेविषे पोतानी पूजा करवा सारु घणाक हरिभक्त मेळा थइने आवेछे त्यारे तेमणें चढाव्या जे

पुष्पना हार तेने पोताना बे हाथे करीने ग्रहण करेछे तथा चरणार-विंदेकरीने ग्रहण करेछे तथा छडीए करीने ग्रहण करेछे अने क्यारे-कतो पोताना दर्शनमात्रेकरीने पोताना भक्तजनने समाधि करावेछे ने क्यारेकतो ते समाधिमांथी तत्काळ उठाडेछे अने क्यारेकतो पोते सभामां बेठा होय ने कोइक भक्तजनने पोतानी पासे तेडवो होय त्यारे नेत्रकमळनी साने करीने अथवा अंगुठा पासेनी जे आंगळी तेनी साने करीने ते भक्तने बोलावी लेछे अने क्यारेकतो मोगरा आदिक पुष्पना हारने तथा लींबु आदिक जे फळ तेने शीतळ जा-णीने पोतानी आंख उपर वारंवार अडाडेछे अने क्यारेकतो पोते भगवत्कथा करावीने सांभळेछे अथवा पोते कथा करेछे अथवा पोते भगवद्वार्ता करेछे अथवा कीर्तन गवरावीने ते भेळा पोते गायछे अथवा मंदिर करावेछे अथवा साधु ब्राह्मणने जमाडेछे इत्यादिक सत् क्रिया कर्या विना क्यारेय नवरुं न रहेवुं एवो स्वभाव छे अने पोते भक्ति धर्मसंबन्धी जे जे कार्यनो आरंभ करेछे तेने संपूर्ण कर-वामां पोताने शीघ्रपणुं घणुं छे अने छिंक खावी होय त्यारे प्रथमथी पोताना रुमालने खोळीने ने ते रुमालने मुखारविंद आगळ राखीने छेटे संभळाय एवी रीते उंचे स्वरे छिंक खायछे अने ज्यारे ज्यारे एवी छिंक खायछे त्यारे बे त्रण्य भेळी छिंक खायछे अने ज्यारे पोते बगासुं खायछे त्यारे 'हरि हरि हरि' एवा शब्दनुं उच्चारण करता थका पोताने हाथे करीने नेत्रकमळने बे त्रणवार चोळेछे अने निष्कामभक्त करी जे पोतानी सेवा तेनेविषे छे रुचि जेनी एवो पोतानो स्वभाव छे अने कांइक रमुजे करीने अतिशय हसेछे त्यारे हाथे करीने पोताना रुमालने मुखारविंद आडो दइने हसेछे अने

क्यारेकतो देशांतरथकी पोताना समीपे आव्या जे साधु तथा पोताने प्रिय एवा भक्तजन तेमने जोइने प्रसन्न थया थका तत्काळ उठीने तेमने बथमां घालीने मळेछे ने तेमने ते ते देशना समाचार पुछेछे अने क्यारेकतो उत्सवनेविषे पोताने समीपे रहीने पछी पोतानी आज्ञाए करीने परदेशमां जता जे साधु तेमने प्रसन्न थइने मळेछे अने क्यारेकतो पोताना भक्तजन उपर प्रसन्न थइने तेना मस्तक उपर पोताना बे हाथ मुकेछे अने क्यारेकतो प्रसन्न थइने कोइक भक्तजनना हृदयने विषे पोताना चरणारविंदनुं धारण करेछे अने क्यारेकतो पोतानी आज्ञाने तत्काळ पाळवाने इच्छतो थको तत्पर थयो जे कोइक भक्तजन तथा ते पोतानी आज्ञाने रुडी रीत्ये पाळीने आव्यो जे कोइक भक्तजन तेने जोइने तेनी उपर प्रसन्न थयाथका तेना हृदयनेविषे पोतानां चरणारविंद आपेछे अने क्यारेकतो कोइक भक्तजन उपर प्रसन्न थइने तेने पोतानी प्रसादी पुष्पना हार आपेछे तथा तोरा बाजुबंध आपेछे तथा पोतानां वस्त्र आभूषण आपेछे अने अतिशय उदार छे स्वभाव जेमनो एवा जे श्रीजिमहाराज ते पोताने अतिशय प्रिय एवुं जे पदार्थ ते भारे मूल्यवाळुं होय तोपण तेने देवानो मनमां संकल्प करता थका तत्काळ सत्पात्रने दइ देछे पण वार लगाडता नथी एवो स्वभाव छे अने क्यारेकतो पोताना हाथ पगनी जे आंगळीयो तेने मरडीने कडाका वगाडेछे अने क्यारेकतो पोताने समीपे बेठा जे भक्तजन तेमनी पासे पोताना हाथ पगनी आंगळीयोने मरडावीने कडाका वगडावेछे अने क्यारेकतो कोइ प्राणीने दुःखीयो देखीने अथवा सांभळीने तत्काळ दयाए युक्तथका 'राम राम राम' एवी रीत्ये बोलवानो स्वभाव छे अने वळी क्यारेकतो हरकोइ मनुष्यने दुःखीयो

देखीने दयाए करीने पोताना चित्तमां खेदने पामताथका प्रसन्न थइने ते मनुष्यनुं दुःख टळे एवी रीत्ये अन्नवस्त्रादिक पदार्थे करीने उपकार करेछे अने क्यारेकतो कोइकने कोइ मारतुं होय तेने देखीने दयाए करीने तेने न देखी खमताथका तत्काळ होंकार करीने तेनुं निवारण करेछे अने क्यारेकतो पोतानी आगळ कोइक साधुनुं अथवा कोइक हरिभक्तनुं कोइ घसातुं बोले तेने सांभळीने तेनी उपर पोते कचवाइ जायछे ने तेनो अनादर करीने ठपको देछे अने क्यारेकतो पोताना शरीरमां कांइक कसर जेवुं होय त्यारे पोताना डाबा हाथनी आंगळीए करीने जमणा हाथनी नाडीने जुवेछे अने पोते ज्यारे सभामांथी उठेछे त्यारे 'जय सच्चिदानंद' अथवा 'जय स्वामिनारायण' एम कहीने ने साधुने नमस्कार करीने उठवानो स्वभाव छे अने ज्यारे पोते पंथने मार्गे घोडे चडीने चालेछे त्यारे क्यारेकतो लीलाए करीने घोडानी डोक उपर पोताना एक पगने लांबो नांखीने घोडाने चलावेछे अने सुवे त्यारे प्रथम जागताथका हाथनी जे आंगळीयो ते तिलक करवानी पेठे भालनेविषे उभी फेरवेछे अने सुवानुं होय त्यारे पोतानी माळाने मागीने जमणा हाथमां लइने फेरवताथका सुवेछे अने पोते पोढेछे त्यारे पोतानुं मुखारविंद उघाडुं राखीने पोढवानो स्वभाव छे अने पोते भरनिद्रामां सुता होय ने कोइक जराक अडी जाय तो तत्काळ झबकीने जागी जायछे अने कोण छे? एम तेने पुछेछे.

आवी रीत्ये श्रीजिमहाराजनी जे स्वाभाविक चेष्टा ते पोतानी स्मृतिने अनुसारे लखीछे ने बीजीपण केटलीक चेष्टा छे एवा जे श्रीजिमहाराज तेमणे श्रीगढडामां रह्याथका पोताना भक्तजनना

संशय टाळवाने अर्थे स्वधर्म, आत्मज्ञान, वैराग्य, पोताना स्वरूपनुं ज्ञान अने पोतानी माहात्मे सहित भक्ति ए पांच वार्ता संबन्धी जेजे वचनामृत कह्यांछे तथा त्यांथी बीजा गाममां जइने जेजे वचनामृत कह्यांछे तेमांथी केटलाक दिवसनां जे वचनामृत ते श्रीजिमहाराजना जे एकांतिक भक्त तेमनी प्रसन्नताने अर्थे पोतानी जे स्मृति ने बुद्धि तेने अनुसारे लखीए छीए.

समासतः प्रोक्तमिदं चरित्रं श्रीधर्मसूनोरिह यो मनुष्यः ।
पठिष्यति श्रोष्यति चापि भक्त्या स लप्स्यते वै पुरुषार्थसिद्धिम् ॥१॥

इति उपोद्घातप्रकरणम् ।

वचनामृतनी संख्या ।

गढडा प्रथमप्रकरणनां	....	....	....	७८
सारंगपुरनां	....	....	....	१८
कारियाणीनां	....	....	....	१२
लोयानां	....	....	....	१८
पंचालानां	....	....	....	७
गढडा मध्यप्रकरणनां	....	....	....	६७
वरतालनां	....	....	....	२०
अमदावादनां	....	....	....	३
गढडा अंत्यप्रकरणनां	....	....	....	३९
				२६२



श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

वचनामृतम्

गढडा प्रथम प्रकरणम् ।

निजैर्वचोऽमृतैर्लोकेऽस्तर्पयद्यो निजाश्रितान् ।
मीतो नः सर्वदा सोऽस्तु श्रीहरिर्धर्मनन्दन ॥ १ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदी ४ चतुर्थीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां साधुनी जायगाने विषे रात्रिने समे पधार्या हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्युं जे "सर्व साधनमां कयुं साधन कठण छे?" त्यारे सर्व ब्रह्मचारी, साधु तथा गृहस्थ तेमणे पोतानी समझण प्रमाणे उत्तर कर्यो पण[3] थयो नहि. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीए जे, भगवानना स्वरूपमां मननी अखंड वृत्ति राखवी तेथी कोइ साधन कठण नथी. अने जे मनुष्यना मननी वृत्ति भगवानना स्वरूपमां अखंड रहेछे तेने तेथी बीजी अधिक प्राप्ति शास्त्रमां कही

१ वासुदेवनारायणनी सन्ध्या आरती पछी । २ भगवाननी प्रसन्नताना कारणभूत स्वधर्म, तप आदिक उपाय । ३ यथार्थ । ४ तैलधारावत् अविच्छिन्न ।

नथी, कांजे भगवाननी मूर्ति छे तेतो चिंतामणि तुल्य छे, जेम चिंतामणि कोइक पुरुषना हाथमां होय ते पुरुष जे जे पदार्थने चिंतवे ते ते प्राप्त थायछे, तेम भगवाननी मूर्तिने विषे जेना मननी अखंड वृत्ति रहेछे तेतो जीव, ईश्वर, माया अने ब्रह्म एमना स्वरूपने[१] जो जोवाने इच्छे तो तत्काळ देखेछे तथा वैकुंठ, गोलोक, ब्रह्ममहोल ए आदिक जेजे भगवानना धाम तेने पण देखेछे, माटे भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति राखवी तेथी कोइ कठण साधन पण नथी अने तेथी कोइ मोटी प्राप्ति पण नथी.

त्यारपछी हरिभक्त शेठ गोवर्धनभाइए श्रीजिमहाराज प्रत्ये प्रश्न पुछ्युं जे "जेने भगवाननी माया कहेछे तेनुं रूप शुं छे?" पछि श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवाननो भक्त होय तेने भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करतां जे पदार्थ[२] आडुं आवीने आवरण करे तेने माया[३] कहीए.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्युं जे "भगवाननो भक्त ज्यारे पंचभूतना देहने मुकीने भगवानना धाममां जायछे त्यारे ते केवा देहने पामेछे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, धर्मकुळने आश्रित एवो जे भगवाननो भक्त छे ते भगवाननी इच्छाए करीने ब्रह्ममय[४] देहने पामेछे अने ज्यारे देहने मुकीने भगवानना धाम प्रत्ये जायछे त्यारे कोइकतो गरुड उपर बेसीने जायछे अने कोइकतो रथ उपर बेसीने जायछे अने कोइकतो विमान उपर बेसीने जायछे, एवी रीते भगवानना भक्त भगवानना धाममां जायछे, तेने योगसमाधिवाळा छे ते प्रत्यक्ष देखेछे.

---

१ पृथक् पृथक् । २ स्त्री पुत्र धनादिक । ३ मायाथी देहादिकमा अहंममता थायछे तेथी स्त्रियादिक पदार्थनो संकल्प थायछे ते अन्तरायरूप थवाथी अखंड ध्यान थतुं नथी । ४ दिव्य-चैतन्यमय ।

पछी हरिभक्त ठकर हरजीए श्रीजिमहाराजने पुछ्युं जे "केटलाक तो घणा दिवस सुधि सत्संग करेछे तोपण तेने जेवी पोताना देह अने देहना संबंधिने विषे गाढ प्रीति छे तेवी सत्संगमां गाढ प्रीति नथी थाती तेनुं शुं कारण छे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एने भगवाननुं माहात्म्य संपूर्ण जाण्यामां आव्युं नथी. अने जे साधुने संगे करीने भगवाननुं माहात्म्य परिपूर्ण जाण्यामां आवेछे ते साधु ज्यारे पोताना स्वभावे उपर वात करेछे त्यारे ते स्वभावने मुकी शकतो नथी अने ते वातना करनारा जे साधु तेनो अवगुण लेछे, ते पापे करीने सत्संगमां गाढ प्रीति थाती नथी, कांजे "अन्य स्थळने विषे जे पाप कर्या होय ते संतने संगे करीने जाय अने संतने विषे जे पाप करेछे ते पाप तो एक संतना अनुग्रह विना बीजा कोइ साधने करीने टळतां नथी. ते शास्त्रमां कह्युंछे जे "अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति । तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ॥" ते माटे संतनो अवगुण जो न ले तो एने सत्संगमां दृढ प्रीति थाय । इति वचनामृतम् ॥१॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि ५ पंचमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां रात्रिने समे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

---

१ सत् शब्दथी कहेला भगवान्, सत्पुरुष, सद्धर्म अने सच्छास्त्र आ चारनो यथायोग्य संग । २ माहात्म्य ज्ञानमां विरोधी काम लोभादिक । ३ आतो अविवेकी छे, एकदेशी ज्ञानवाळा छे, दीर्घदर्शी नथी, व्यवहारने जाणता नथी, केवळ वार्तो करवामां चतुर छे इत्यादिक । ४ अवगुणरूप । ५ "अन्यक्षेत्र" आ श्लोकनो तात्पर्यार्थ छे । "जेनो अपराध करे तेनेज प्रसन्न करवाथी ते दोषमांथी शुद्ध थायछे, बीजा प्रायश्चित्तादिक उपायथी नहि." एम स्मृतिमां कह्युंछे । ७ प्रायश्चित्तादिक । ८ साधुरूप ।

पछी मयारामभट्टे श्रीजिमहाराज प्रत्ये प्रश्न पुछ्युं जे "हे महाराज! उत्तम, मध्यम अने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारनो जे वैराग्य तेनां शां लक्षण छे ते कहो ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, उत्तम वैराग्य जेने होय ते परमेश्वरनी आज्ञाए करीने अथवा पोताना प्रारब्धकर्म वडे करीने व्यवहारमां रहे पण ते व्यवहारमां जनकराजानी पेठे लोपाय नहि अने शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पंच प्रकारना जे उत्तम विषय ते पोताना प्रारब्ध अनुसारे प्राप्त थाय तेने भोगवे पण प्रीतिए रहित–उदास थको भोगवे अने ते विषय एने लोपी शके नहि अने तेनो त्याग मोळो न पडे अने ते विषयने विषे निरंतर दोषने देखतो रहे अने विषयने शत्रु जेवा जाणे अने संत, सत्‌शास्त्र अने भगवाननी सेवा तेनो निरंतर संग राखे अने देश, काळ, संग आदिक जो कठण आवीपडे तोपण एनी जे एवी समजण ते मोळी पडे नहि, तेने उत्तम वैराग्यवाळो कहीए। अने जेने मध्यम वैराग्य होय ते पण उत्तम एवा जे पंच प्रकारना विषय तेने भोगवे पण तेमां आसक्त न थाय अने जो देश, काळ, संग कठण प्राप्त थाय तो विषयने विषे बंधाइ जाय अने वैराग्य मंद पडी जाय तेने मध्यम वैराग्यवाळो कहीए । अने जे कनिष्ठ वैराग्यवाळो होय तेने सामान्य अने दोषे युक्त एवा पंचविषय जो प्राप्त थाय अने तेने भोगवे तो तेमां न बंधाय अने जो सारा पंचविषय प्राप्त थाय अने तेने भोगवे तो तेमां बंधाइ जाय, तेने मंद वैराग्यवाळो कहीए । इति वचनामृतम् ॥२॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि ६ छठने दिवस श्रीजिमहाराज

१ त्रण प्रकारना वैराग्यवाळा पुरुषोना लक्षणो कहेवा द्वाराए त्रण प्रकारना वैराग्यनां लक्षण कहेलां जाणवां। २ साधारण–क्षुद्र ।

श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरवारमां रात्रिने समे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने भगवाननी मूर्ति अंतरमां अखंड देखाती होय तेणे पण भगवाने जे जे अवतारे करीने जे जे स्थानकने विषे जे जे लीळा करी होय ते संभारी राखवी अने ब्रह्मचारी, साधु तथा सत्संगी तेनी साथे हेत राखवुं अने ए सर्वने संभारी राखवा. ते शासारु जे, कदापि देह मुक्या समे भगवाननी मूर्ति भुली जवाय तोपण भगवाने जे स्थानकने विषे लीळा करी होय ते जो सांभरी आवे अथवा सत्संगी सांभरी आवे अथवा ब्रह्मचारी ने साधु सांभरी आवे तो तेने योगे करीने भगवाननी मूर्ति पण सांभरी आवे अने ते जीव मोटी पदवीने पामे अने तेनुं घणुं रुडुं थाय, ते माटे अमे मोटा मोटा विष्णुयाग करीए छीए तथा जन्माष्टमी अने एकादशी आदिक व्रतना वर्षोवर्ष उत्सव करीए छीए अने तेमां ब्रह्मचारी, साधु, सत्संगीने भेळा करीए छीए अने जो कोइक पापी जीव होय अने तेने पण जो एमनी अंतकाळे स्मृति थइ आवे तो तेने भगवानना धामनी प्राप्ति थाय । इति वचनामृतम् ॥ ३ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदी ७ सप्तमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरवारमां विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवानना भक्तने परस्पर ईर्ष्या न

निरंतर-क्षण अवस्थामां । २ पोताने समान बीजा कोइनो उदय सहन न थाय ते ।

करवी. त्यारे आनंदानंदस्वामी बोल्या जे, हे महाराज! ईर्ष्या तो रहेछे. त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ईर्ष्या करवी तो नारदजीना जेवी करवी, जेम 'एक समयने विषे नारदजी अने तुंबरु ए बे वैकुंठने विषे लक्ष्मीनारायणनां दर्शन करवा गया ते लक्ष्मीनारायण आगळ तुंबरुए गान कर्युं तेणे करीने लक्ष्मीजी तथा नारायण ए बेय प्रसन्न थइने तुंबरुने पोतानां वस्त्र आभूषण आप्यां त्यारे नारदजीने तुंबरु उपर ईर्ष्या आवी जे 'हुं तुंबरुना जेवी गानविद्या शिखुं अने भगवानने प्रसन्न करुं' पछी नारदजी गानविद्या शिखता हवा अने भगवान आगळ गाता हवा, त्यारे भगवाने कह्युं जे 'तमने तुंबरुना जेवुं गातां नथी आवडतुं' पछी वळी शिव उपर तप करीने शिवथकी वर पामीने गानविद्या शीखीने भगवान आगळ गावता हवा तोपण भगवान एनी गानविद्या उपर प्रसन्न न थया, एवी रीते सात मन्वंतर सुधी गानविद्या शीख्या अने भगवान आगळ गाया तोपण भगवान प्रसन्न न थया, पछी तुंबरु पासे गानविद्या शीख्या अने श्रीकृष्णभगवान आगळ द्वारिकामां गावता हवा त्यारे श्रीकृष्णभगवान प्रसन्न थया अने पोतानां वस्त्र अलंकार नारदजीने आप्यां, त्यारे नारदजीए तुंबरु साथे ईर्ष्या मेली' माटे ईर्ष्या करवी तो एवी करवी जे, जेनी उपर ईर्ष्या होय तेना जेवा गुणने ग्रहण करवा अने पोताना अवगुणने त्याग करवा अने तेवुं न थवाय अने ईर्ष्याए करीने भगवानना भक्तनो द्रोह थाय तेवी ईर्ष्यानो तो भगवानना भक्तने सर्वप्रकारे त्याग करवो । इति वचनामृतम् ॥ ४ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदी ८ अष्टमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व

श्वेत वस्त्र धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, राधिकाए सहित एवा जे श्रीकृष्णभगवान तेनुं ध्यान करवुं अने ते ध्यान करतां मूर्ति हृदाने विषे न देखाय तोपण ध्यान करवुं पण कायर थइने ते ध्यानने मुकी देवुं नहि, एवी रीतना जे आग्रहवाळा छे तेनी उपर भगवाननी मोटी कृपा थायछे अने एनी भक्तिए करीने भगवान एने वश्य थई जायछे । इति वचनामृतम् ॥ ५ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि ९ नवमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ सत्संगमां[2] जे विवेकी[3] छे तेतो दिवसे दिवसे पोताने विषे अवगुणने देखेछे अने भगवानने भगवानना भक्तने विषे गुणने देखेछे अने भगवान ने साधु पोताना हितने अर्थे कठण वचन कहेछे तेने पोतानां हितकारी मानेछे अने दुःख नथी लगाडतो, तेतो दिवसे दिवसे सत्संगने विषे मोक्षपने पामे छे अने जे अविवेकि छे ते तो जेम जेम सत्संग करेछे अने सत्संगनी वात सांभळेछे तेम तेम पोतानेविषे गुण परठेछे अने भगवान ने संत एनो दोष देखाडीने एनी आगळ वात करेछे, ते वातने माने करीने अवळी लेछे अने वातना करनारानो अवगुण लेछे तेतो दिवसे दिवसे घटतो

१ पोतानी मूर्तिनां दर्शन आपवा रूप । २ उद्धव संप्रदायमां । ३ सत् असत्ना ज्ञानवाळो ।

जायछे अने सत्संगमां प्रतिष्ठाहीन थइ जायछे माटे पोताने विषे जे गुणनुं मान तेनो त्याग करीने शूरवीर थइने भगवान अने भगवानना संतने विषे विश्वास राखे तो एनो अविवेक टळी जायछे अने सत्संगमां मोख्यपने पामेछे । इति वचनामृतम् ॥ ६ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदी १० दशमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, शास्त्रमां ज्यां ज्यां अध्यात्मवार्ता आवेछे ते कोईने समझाती नथी अने भ्रमि जवायछे माटे ए अध्यात्मवार्ता जेम छे तेम यथार्थपणे अमे कहीए छीए ते सर्व सांभळो जे, स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देहनेविषे एकात्मपणे जे वर्तवुं ते ए जीवनुं अन्वयपणुं छे अने ए त्रण देहथी पृथक्पणे सत्तामात्र जे कहेवो ते जीवनुं व्यतिरेकपणुं छे तथा विराट्, सूत्रात्मा अने अव्याकृत ए त्रण शरीरे सहित जे ईश्वरने कहेवा ते ईश्वरनुं अन्वयपणुं छे अने ए त्रण शरीरथी पृथक् ने सत्तामात्रपणे कहेवा ते ईश्वरनुं व्यतिरेकपणुं छे तथा माया अने मायानां कार्य जे अनंतकोटि ब्रह्मांड तेने विषे व्यापकपणे जे अक्षरब्रह्मने कहेवा ते एनुं अन्वयपणुं छे अने ए सर्वथी व्यतिरेक सच्चिदानंदपणे जे अक्षरब्रह्मने कहेवा ते एनुं व्यतिरेकपणुं छे तथा अक्षर-

१ आत्मा परमात्मा आदिकना स्वरूपना ज्ञानवाळी । २ विद्वानोने पण । ३ स्थूलादि देह तेज हुं छुं एवा अनादि अज्ञानजन्य अहंभावपणे । ४ चिद्रूपपणुं, स्वयंप्रकाशपणुं, अने अछेद्य अभेद्यपणुं विगेरे । ५ ज्ञानसत्तामात्र, एटले ज्ञानरूप आकारथी सत्तावान् होइने छ विकारे रहित माटे ज्ञानसत्तामात्र ।

ब्रह्म, ईश्वर, जीव, माया अने मायानां कार्य जे ब्रह्मांड एमने विषे जे श्रीकृष्णभगवानने अंतर्यामिपणे कहेवा अने नियंतापणे कहेवा ते ए भगवाननुं अन्वयपणुं छे अने ए सर्वथी पृथक्रूपणे करीने पोताना गोलोकधामने विषे जे ब्रह्मज्योति तेने विषे रह्याछे एम जे कहेवुं ते ए भगवाननुं व्यतिरेकपणुं छे अने ए पुरुषोत्तम भगवान, अक्षरब्रह्म, माया, ईश्वर अने जीव ए जे पांच भेद ते अनादि छे। इति वचनामृतम् ॥७॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदी ११ एकादशीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, इंद्रियोनी जे क्रिया छे तेने जो श्रीकृष्णभगवान अने तेना भक्तनी सेवाने विषे राखे तो अंतःकरण शुद्ध थायछे अने अनंत काळनां जे पाप जीवने वळग्यांछे तेनो नाश थइ जायछे अने जो इंद्रियोनी वृत्तियोने स्त्रीआदिकना विषयमां प्रवर्तावेछे तो एनुं अंतःकरण भ्रष्ट थायछे अने कल्याणना मार्ग थकी पडी जाय छे, माटे शास्त्रमां जे रीते विषयने भोगव्यानुं कह्युंछे तेवी रीते नियममां रहीने विषयने भोगववा पण शास्त्रनी मर्यादाने उल्लंघन करीने भोगववा नहि. अने साधुनो संग राखवो अने कुसंगनो त्याग करवो अने ज्यारे ए कुसंगनो त्याग करीने साधुनो संग करेछे त्यारे एने देहनेविषे

१ मायानुं पण कार्यकारणरूपे करीने अन्वयव्यतिरेकपणुं जाणी लेवुं। अन्वयव्यतिरेकथी पृथक् पृथक् विभाग करीने निश्चय करेला जीवादि पांच भेदना लक्षणोथी अध्यात्मवार्ता जाणवी. एटलु तात्पर्य छे। २ स्वरूपथी परस्पर भिन्नपणुं। ३ नित्य—औपाधिक नहि। ४ राग, द्वेषादि दोषे रहित। ५ रागादि दोषवाळुं।

जे अहंबुद्धि छे ते निवृत्ति पामेछे अने देहना संबंधिने विषे जे ममत्वबुद्धि छे ते निवृत्ति पामेछे अने भगवानने विषे असाधारण प्रीति थायछे अने भगवान विना अन्यने विषे वैराग्य थायछे। इति वचनामृतम् ॥८॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि १२ द्वादशीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, श्रीकृष्णभगवाननो प्रत्यक्षपणे निश्चय कर्यो होय अने तेनी भक्ति करतो होय अने तेनां दर्शन करतो होय तोपण जे पोताने पूर्णकाम न माने अने अंतःकरणमां न्यूनता वर्ते जे 'गोलोक वैकुंठादिक धामने विषे जे आ ने आ भगवाननुं तेजोमय रूप छे ते मने ज्यांसुधी देखायुं नथी त्यांसुधी मारुं परिपूर्ण कल्याण थयुं नथी' एवुं जेने अज्ञान होय तेना मुखथी भगवाननी वात पण न सांभळवी. अने जे प्रत्यक्ष भगवानने विषे दृढ निष्ठा राखेछे अने तेने दर्शने करीनेज पोताने परिपूर्ण मानेछे अने बीजुं कांइ नथी इच्छतो तेने तो भगवान पोते बलात्कारे पोताना धामने विषे जे पोतानां ऐश्वर्य छे अने पोतानी मूर्तियो छे तेने देखाडेछे, माटे जेने भगवानने विषे अनन्यनिष्ठा होय तेने प्रत्यक्ष भगवान विना बीजुं कांइ इच्छवुं नहि। इति वचनामृतम् ॥ ९ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि १३ तेरसने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, अमे वेंकटाद्रिथी सेतुबंध रामेश्वर

जता हता त्यां एक सेवकराम नामे साधु हतो ते श्रीमद्भागवतादिक पुराणने भण्यो हतो ते मार्गमां चालतां मांदो पड्यो, तेनी पासे रुपीया हजारनी सोनामोर हती पण चाकरीनो करनारो कोइ नहि माटे रोवा लाग्यो, पछी तेने अमे कह्युं जे 'कांइ चिंता राखशो मां, तमारी चाकरी अमे करीशुं' पछी गामने बहार एक केळांनी फुलवाडी हती तेमां एक वडनो वृक्ष हतो ते वडना वृक्षने विषे हजार भूत रहेतां पण ते साधु तो चालि सके एवो रह्यो नहि अने अतिशय मांदो थयो, ते उपर अमने अतिशय दया आवी, पछी ते ठेकाणे अमे ते साधुने केळनां पत्र लावीने हाथ एक उंची पथारी करी आपी अने ते साधुने लोहिखंड पेटवेसणुं हतुं तेने अमे धोता अने चाकरी करता अने ते साधु पोताने जेटलुं जोइए तेटलुं अमारी पासे खांड, साकर, घी अन्न ते पोताना रुपीया आपीने मंगावतो ते अमो लावीने रांधी खवरावता अने अमो वस्तिमां जइने जमी आवता अने कोइक दिवसतो अमने वस्तिमां अन्न मळतुं नहि त्यारे अमारे उपवास थतो तोपण कोइ दिवस ते साधुए अमने एम कह्युं नहि जे 'अम पासे द्रव्य छे ते आपणे बेने काजे रसोइ करो अने तमे पण अम भेळा जमो' पछी एम सेवा करते थके ते साधु बे मासे कांइक साजो थयो पछी सेतुबंध रामेश्वरने मार्गे चाल्या, त्यारे तेनो भार मण एक हतो ते अमारे पासे उपडावतो अने पोते तो एक माळा लइने चालतो अने देहे पण साजो अने एक शेर घी जमीने पचावे एवो समर्थ थयो तोपण भार अमारी पासे उपडावे अने पोते अमथो चाले अने अमारी प्रकृति तो एवी हती जे 'भार नामे तो एक रुमाल पण राखता नहि' माटे तेने साधु जाणीने अमे एनो मण एकनो भार उपाडी चालता, एवी रीते ते साधुनी अमे चाकरी करीने साजो कर्यो पण ते सा-

थुए अमने एक पैसाभार अन्न आप्युं नहि, पछी अमे तेने कृतघ्नी जाणीने तेना संगनो त्याग कर्यो, एवी रीते जे मनुष्य कर्या कृतने न जाणे तेने कृतघ्नी जाणवो. अने कोइक मनुष्ये कांइक पाप कर्युं अने तेणे ते पापनुं यथाशास्त्र प्रायश्चित्त कर्युं अने वळी तेने ते पापे युक्त जे कहे तेने पण ते कृतघ्नी जेवो पापी जाणवो । इति वचनामृतम् ॥१०॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि १४ चौदशने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे, हे महाराज ! "वासनानुं शुं रूप छे ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, पूर्वे जे विषय भोगव्या होय ने दीठा होय अने सांभळ्या होय तेनी जे अंतःकरणने विषे इच्छा वर्ते तेने वासना कहीए अने वळी जे विषय भोगव्यामां न आव्या होय तेनी जे अंतःकरणने विषे इच्छा वर्ते तेने पण वासना कहीए.

त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे, हे महाराज ! "भगवाननो एकांतिक भक्त केने कहीए ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने भगवान विना बीजी कोइ वासना न होय अने पोताने ब्रह्मरूप मानीने भगवानमी भक्ति करतो होय ते एकांतिक भक्त कहेवाय । इति वच०॥११॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि १५ पुन्यमने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जगतनां कारण एवां जे पुरुष, प्र-

कृति, काळ अने महत्तत्त्वादिक चोवीश तत्त्व एमना स्वरूपने ज्यारे ए जीव जाणेछे त्यारे पोताने विषे रही जे अविद्या अने तेनां कार्य एवां जे चोवीश तत्त्व तेना बन्धन थकी मुकायछे.

त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे, हे महाराज! "एमनुं स्वरूप केम जाण्यामां आवे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एमनां स्वरूप तो एमनां लक्षणने जाणवे करीने जणायछे, ते लक्षण कहीए छीए जे, प्रकृतिना नियंता ने प्रकृति थकी विजातीय[1] ने अखंड[2] ने अनादि[3] ने अनंत[4] ने सत्य[5] ने स्वयंज्योति[6] ने सर्वज्ञ ने दिव्यविग्रह[7] ने समग्र आकार मात्रनी प्रवृत्तिना कारण अने क्षेत्रज्ञ[8] एवा पुरुष छे । अने जे प्रकृति छे ते त्रिगुणात्मक[9] छे ने जडचिदात्मक[10] छे ने नित्य छे ने निर्विशेष[11] छे अने महदादिक समग्र तत्त्व अने जीवमात्र तेनुं क्षेत्र छे अने भगवाननी शक्ति छे । अने गुणसाम्य[12] ने निर्विशेष एवी जे माया तेनो जे क्षोभ[13] करेछे तेने काळ कहीए.

हवे महत्तत्त्वादिक जे तत्त्व तेनां लक्षण कहीए ते सांभळो, जे चित्तने अने महत्तत्त्वने अभेदपणे जाणवुं अने जे महत्तत्त्वने विषे सूक्ष्मरूपे करीने समग्र जगत् रह्युंछे अने पोते निर्विकार छे ने प्रकाशमान

१ स्वरूप स्वभावथी अलत विलक्षण । २ जेनो खंड–भाग नथी । ३ जेनो आदि–उत्पत्ति नथी । ४ जेनो अन्त–नाश नथी । ५ त्रण काळमां पण जेना स्वरूपनो बाध नथी । ६ स्वयंप्रकाश–बीजाने आधीन प्रकाश नहि ते । ७ अमायिक शरीरवाळा । ८ माया अने तेना कार्यने जाणनारा । ९ सत्त्व, रज, तम ए त्रण गुणो जेना स्वरूपमा रहेला छे । १० व्यक्ताव्यक्तरूप–स्थूलसूक्ष्मरूप । "प्रकृतिर्या मयाख्याता व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणी" एम विष्णुपुराणमां कह्युंछे । अथवा चिद्गर्भ (चेतनवर्ग अंदर रहेलो) छे तेथी चिदात्मक । ११ कारण अवस्थामां पृथिव्यादि विशेषे रहित । १२ सत्त्वादिगुणनी विषमता (उद्भव अने अभिभव) तेणे रहित । १३ गुणनी विषमता ।

छे ने स्वच्छ छे ने शुद्धसत्त्वमय छे अने शांत छे। हवे अहंकारनुं लक्षण कहीए छीए जे, अहंकार जे ते त्रिगुणात्मक छे अने भूतमात्र, इंद्रियो, अंतःकरण, देवता अने प्राण ए सर्वनी उत्पत्तिनुं कारण छे अने एने विषे शांतपणुं छे, घोरपणुं छे अने विमूढपणुं छे। हवे मननुं लक्षण कहीए छीए जे, मन जे ते स्त्री आदिक पदार्थनी जे समग्र कामना तेनी उत्पत्तिनुं क्षेत्र छे अने संकल्पविकल्परूप छे अने समग्र इंद्रियोनुं नियंता छे। हवे बुद्धिनुं लक्षण कहीए छीए जे, बुद्धिने विषे पदार्थ मात्रनुं ज्ञान रह्युंछे अने समग्र इंद्रियोने विषे जे विशेष ज्ञान छे ते बुद्धिवते छे अने जे बुद्धिने विषे संशय, निश्चय, निद्रा अने स्मृति ए रह्यांछे। अने श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, घ्राण, वाक्, पाणी, पाद, पायु अने उपस्थ ए जे दश इंद्रियो तेमनुं लक्षण तो ए छे जे, पोतपोताना विषयमां प्रवर्तवुं.

हवे पंच मात्रानां लक्षण कहीए छीए, तेमां शब्दनुं लक्षण तो ए छे जे, शब्द जे ते अर्थमात्रनो आश्रय छे अने व्यवहारमात्रनो कारण छे अने बोलनारानी जे जाति अने स्वरूप तेनो जणावनारो छे अने आकाशने विषे रहेवापणुं छे अने आकाशनी मात्रा छे अने श्रोत्र इंद्रिये करीने ग्रहण कर्यामां आवेछे, ए शब्दनुं लक्षण छे। हवे स्पर्शनुं लक्षण कहीए छीए जे, स्पर्श छे ते वायुनी तन्मात्रा छे अने कोमळपणुं, कठणपणुं, शीतळपणुं, उष्णपणुं अने त्वचाए करीने ग्रहण करवापणुं ए स्पर्शनुं स्पर्शपणुं छे। हवे रूपनुं लक्षण कहीए छीए जे, पदार्थमात्रना आकारने जणवी देवापणुं अने ते पदार्थने विषे गौणपणे रहेवापणुं अने ते पदार्थनी रचनाए करीने परिणामपणुं

१ रज तमथी नहि अभिभूत थएलो माटे शुद्ध एवो जे सत्त्वगुण ते जेमां प्रधान छे। २ सात्त्विक, राजस अने तामस। ३ सहायकपणे। ४ शब्दादि पांच गुणनां। ५ वाचक। ६ असाधारण गुण। ७ लक्षण।

अने तेजतत्त्वनुं तन्मात्रापणुं अने चक्षु इंद्रिये करीने ग्रहण करवापणुं ए रूपनुं रूपपणुं छे। हवे रसनुं लक्षण कहीए छीए जे, मधुरपणुं तिखापणुं, कषायलापणुं, कडवापणुं, खाटापणुं, खारापणुं अने जळनुं तन्मात्रापणुं अने रसना इंद्रिये करीने ग्रहण करवापणुं ए रसनुं रसपणुं छे। हवे गंधनुं लक्षण कहीए छीए जे, सुगंधपणुं दुर्गंधपणुं अने पृथ्वीनुं तन्मात्रापणुं अने घ्राण इंद्रिये करीने ग्रहण करवाणुं ए गंधनुं गंधपणुं छे।

हवे पृथ्वीनुं लक्षण कहीए छीए जे,सर्व जीवमात्रनुं धारवापणुं अने लोकरूपे करीने स्थानपणुं अने आकाशादिक जे चार भूत तेनुं विभाग करवापणुं अने समग्र भूतप्राणिमात्रना शरीरनुं प्रगट करवापणुं ए पृथ्वीनुं लक्षण छे। हवे जळनुं लक्षण कहीए छीए जे, पृथिव्यादिक द्रव्यनुं पिंडीकरण करवापणुं ने पदार्थने कोमळ करवापणुं ने भीनुं करवापणुं ने तृप्ति करवापणुं ने प्राणिमात्र ने जीवाडवापणुं ने तृषानी निवृत्ति पमाडवापणुं ने तापने टाळवापणुं अने बहुपणुं ए जळनुं लक्षण छे। हवे तेजनुं लक्षण कहीए छीए जे, प्रकाशपणुं ने अन्नादिकने पचवी नांखवापणुं ने रसने ग्रहण करवापणुं ने काष्ठनुं ने हुतद्रव्यादिकनुं ग्रहण करवापणुं ने ताढ्य ने हरवापणुं ने शोषण करवापणुं अने क्षुधा ने तृषा ए तेजनुं लक्षण छे। हवे वायुनुं लक्षण कहीए छीए जे, वृक्षादिकने कंपाववापणुं ने तृणादिक ने भेळांकरवापणुं ने शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए जे पंच विषय तेने श्रोत्रादिक पंच इंद्रियो प्रत्ये पमाडवापणुं अने सर्व इंद्रियोनुं आत्मापणुं ए वायुनुं लक्षण छे। हवे आकाशनुं लक्षण कहीए छीए जे, समग्र जीवमात्रने अवकाश देवापणुंने भूतप्राणिमात्रनो जे देह तेनो मांहिलो व्यवहार अने देहने बाहेरनो व्यवहार तेनुं कारणपणुं अने प्राण, इंद्रियो अने अंतःकरण ए सर्वनुं स्थानक-

१ आश्रयदाता।

पणुं ए आकाशनुं लक्षण छे । एवी रीते चोवीस तत्त्व, प्रकृति, पुरुष अने काळ एमनां जो लक्षण जाणे तो ए जीव अज्ञान थकी मुकायछे.

अने ए जे सर्वे तेनी उत्पत्ति जाणवी, ते उत्पत्ति कहीए छीए जे, पोताना धामने विषे रह्या एवा जे श्रीकृष्णभगवान ते अक्षरपुरुषरूपे करीने मायाने विषे गर्भने धरता हवा, त्यारे ते मायाथकी अनंत कोटी जे प्रधान अने पुरुष ते थता हवा, ते प्रधान पुरुष केवा छे तो अनंत कोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्तिना कारण छे, ते मध्ये एक ब्रह्मांडनी उत्पत्तिना कारण जे प्रधान पुरुष तेने कहीए छीए जे, प्रथम पुरुषोत्तम एवा जे श्रीकृष्णभगवान ते पुरुषरूपे करीने प्रधानने विषे गर्भने धरता हवा, पछी ते प्रधानथकी महत्तत्त्व उत्पन्न थतुं हवुं अने महत्तत्त्वथकी त्रण प्रकारनो अहंकार उत्पन्न थतो हवो, तेमां सात्त्विक अहंकारथकी मन अने इंद्रियोना देवता उत्पन्न थता हवा अने राजस अहंकारथकी दश इंद्रियो, बुद्धि अने प्राण ए उत्पन्न थतां हवां अने तामस अहंकारथकी पंच भूत अने पंच तन्मात्रा ए उपजतां हवां. एवी रीते ए समग्र तत्त्व उपज्यां.

पछी ते परमेश्वरनी इच्छाए प्रेर्यां थकां पोतपोताने अंशे करीने ईश्वर अने जीवना देहने सृजतां हवां, ते ईश्वरना देह ते विराट्, सूत्रात्मा अने अव्याकृत अने जीवना देह ते स्थूल, सूक्ष्म अने कारण अने विराट् नामे जे ईश्वरनो देह तेनुं द्विपरार्ध काळपर्यंत आयुष छे अने ते विराट् पुरुषना एक दिवसने विषे चौद मन्वंतर थायछे अने जेवडो एनो दिवस छे तेवडीज रात्रि छे अने ज्यांसुधी एनो दिवस होय त्यांसुधी त्रिलोकिनी स्थिति रहेछे अने ज्यारे एनी रात्रि पडेछे त्यारे त्रि-

१ सूक्ष्मभूत जेने कहेछे ते द्वाराए पांच स्थूळ भूत उत्पन्न थायछे ।

लोकीनो नाश थायछे,तेने निमित्त प्रलय कहीए। अने ज्यारे ते विराट्पुरुषनो द्विपरार्ध काळ पुरो थायछे त्यारे ए विराट्देहनो,सत्यादिक लोके सहित नाश थायछे अने महदादिक जे चोवीश तत्त्व, प्रधान प्रकृति अने पुरुष ए सर्वे महामायानेविषे लय पामेछे, तेने प्राकृत प्रलय कहीए। अने ए महामाया ते अक्षरब्रह्मना प्रकाशने विषे लय पामेछे, जेम दिवसनेविषे रात्रि लय पामेछे तेम लय पामेछे, तेने आत्यंतिक प्रलय कहीए। अने देव, दैत्य अने मनुष्यादिकना जे देह तेनो जे क्षणक्षण प्रत्ये नाश तेने नित्य प्रलय कहीए। एवी रीते जे विश्वनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय तेने जो जाणे तो जीवने संसारने विषे वैराग्य थाय अने भगवाननेविषे भक्ति थायछे. अने ज्यारे ए सर्वे ब्रह्मांडनो प्रलय थायछे त्यारे जे सर्व जीव छे तेतो मायाने विषे रहेछे अने जे भगवानना भक्त छे तेतो भगवानना धाममां जायछे.

त्यारे वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "ते भगवाननुं धाम केवुं छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ते भगवाननुं धाम तो सनातन छे-नित्य छे, अप्राकृत छे, सच्चिदानंद छे, अनंत छे अने अखंड छे, तेने दृष्टांते करीने कहीए छीए, जेम पर्वत वृक्षादिके सहित अने मनुष्य, पशु, पक्ष्यादिकनी जे आकृति तेणे सहित एवी जे आ समग्र पृथ्वी ते काचनी होय अने आकाशनेविषे जे समग्र तारा ते सर्व सूर्य होय, पछी तेने तेजेकरीने ते समग्र आकृतिए सहित काचनी पृथ्वी जेवी शोभे तेवी शोभाए युक्त भगवाननुं धाम छे, एवुं जे भगवाननुं धाम तेने भगवानना भक्त छे ते समाधिनेविषे देखेछे अने देह मुक्या पछी ए तेजोमय जे भगवाननुं धाम तेने पामेछे। इति वचनामृतम् ॥१२॥

१ दैनदिन शब्दथी पण कहेछे। २ अभूत उपमाथी।

संवत् १८७६ ना मागशर वदि १ पडवाने दिवस रात्रिने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरने समीपे लिंबडाना वृक्षनी हेठे ओटा उपर ढोलियो ढळावीने विराजमान हता अने रातो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने राती डगली पहेरी हती अने माथे सोनेरी शेलुं बांध्युं हतुं अने कटीनेविषे सोनेरी शेलु बांध्युं हतुं अने कंठनेविषे मोतीनी माळाओ पहेरी हती अने पाघनेविषे मोतीना तोरा लटकता मुक्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजने नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "देह देह प्रत्ये जीव एक छे? के अनेक छे? अने जो एक कहेशो तो, वड पिंपर आदिक जे वृक्ष छे तेनी डाळखीयो कापीने बीजे ठेकाणे रोपेछे त्यारे तेवोने तेवोज वृक्ष थायछे एते एक जीव बे प्रकारे थयो? के बीजे जीवे प्रवेश कर्यो? अने कहेशो जे 'एतो एनो ए जीव छे' तो जीव तो अखंड छे अने अच्युत छे ते कपाणो केम?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ल्यो एनो उत्तर करीए जे, श्रीकृष्णभगवान् छे तेनी पुरुष अने प्रकृति ए बे शक्तियो छे. ते जगतनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय तेनुं कारण छे. ते पुरुषप्रकृतिरूप जे पोतानी बे शक्तिओ तेनुं ग्रहण करिने पोते विराट्‌रूपने धारता हवा अने ते विराट्‌रूप जे ए भगवान् ते प्रथम ब्राह्मकल्पनेविषे तो पोताना अंगथकी ब्रह्मादिक स्तंबपर्यंत समग्र जीवने सृजता हवा अने पाद्मकल्पनेविषे तो ए भगवान् ब्रह्मारूपेकरीने मरीच्यादिकने सृजता हवा अने कश्यप अने दक्षरूपेकरीने देव, दैत्य, मनुष्य अने पशु पक्ष्यादिक समग्र स्थावर

जंगम जे जीव तेने सृजता हवा. एवा जे श्रीकृष्णभगवान् ते पुरुषप्रकृतिरूप जे पोतानी शक्ति तेणे सहित थका जीव जीव प्रत्ये अंतर्यामिरूपे रह्याछे अने जे जीवे जेवां कर्म कर्याछे ते जीवने तेवा देहने पमाडेछे. अने ते जीव छे तेणे पूर्वजन्मनेविषे केटलांक कर्म तो सत्त्वगुण प्रधानपणेकरीने कर्याछे अने केटलांक कर्म तो रजोगुण प्रधानपणेकरीने कर्यांछे अने केटलांक कर्म तो तमोगुण प्रधानपणेकरीने कर्यांछे ते कर्मने अनुसारे ए जीवने भगवान् जेते उद्भिज[1] जातिना जे देह, जरायुज[2] जातिना जे देह, स्वेदज[3] जातिना जे देह अने अंडज[4] जातिना जे देह, तेने पमाडेछे अने सुखदुःखरूप जे कर्मनां फळ तेने पमाडेछे अने ते जीवना कर्मने अनुसारे तेना देहथकी बीजा देहने सृजेछे. जेम 'कश्यप आदिक प्रजापतिना देहथकी अनेकजातिना देहने सृजता हवा' तेम एना ए भगवान् अंतर्यामिरूपेकरीने समग्र जीव जीवप्रत्ये रह्या थका जे देहथकी जेम उपज्यानी रीति होय तेम बीजा देहने उपजावेछे, पण जे जीवथकी बीजा देहने उपजावेछे ते जीवज अनेकरूपे थाय एम नथी. एतो जे जीवने जेना देहथकी उपज्यानो कर्मसंबन्ध प्राप्त थयो होय ते जीवने ते द्वाराए उपजावेछे। इति वचनामृतम् ॥ १३ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर वदि २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ लींबडाना वृक्ष हेठे ढोलीया उपर दक्षिणादे मुखारविंदे विराजमान हता अने माथे धोळी पाघ बांधी हती अने धोळो खेस पहेर्यो हतो अने धोळी चादर ओढी हती अने पीळा

१ वृक्ष लता आदिक। २ मनुष्य पशु आदिक। ३ मांकण चाचड आदिक। ४ पक्षि सर्प आदिक।

पुष्पना तोरा पाघमां विराजमान हता अने बे कान उपर पीळा पुष्पना गुछ विराजमान हता अने ते गुछनी उपर गुलाबनां पुष्प विराजमान हतां अने कंठनेविषे पीळा पुष्पना हार विराजमान हता अने जमणा हाथमां धोळुं जे सेवतीनुं पुष्प तेने फेरवता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे मुनि प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "एक हरिजन छे ते संसारने तजीने निसर्योछे अने अति तीव्र वैराग्यवाळो तो नथी अने देहे करीने तो वर्तमान यथार्थ पाळेछे अने मनमां थोडी थोडी संसारनी वासना रहीछे तेने विचारे करीने खोटी करी नांखेछे एवो एक त्यागी भक्त छे. अने तेने भगवाननो निश्चय पण दृढ छे. अने वळी बीजो गृहस्थ भक्त छे तेने पण भगवाननो निश्चय दृढ छे अने आज्ञाए करीने घरमां रह्योछे अने संसार थकी उदास छे अने जेटली त्यागीने जगतमां वासना छे तेटली ते गृहस्थने पण वासना छे. ए बे जे भगवानना भक्त तेमां कोण श्रेष्ठ छे?" पछी मुक्तानंदस्वामी बोल्या जे, ए त्यागिभक्त श्रेष्ठ छे. त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ओल्यो मुंझाइने पोतानी मेळे भेख लइने निसर्योछे ते केवी रीते श्रेष्ठ छे? अने गृहस्थ तो आज्ञाए करीने घरमां रह्योछे ते केवी रीते न्यून छे? पछी श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं मुक्तानंदस्वामीए बहुप्रकारे समाधान कर्युं पण समाधान थयुं नहि. पछी मुक्तानंदस्वामी बोल्या जे, हे महाराज! तमे उत्तर करो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे त्यागी होय अने तेने सारी पेठे खावा मळे अने जो काची मतिवाळो होय तो पाछी संसारनी वासना हृदयमां उदय थाय अथवा घणुं दुःख पडे तोपण पाछी संसारनी वासना उदय थाय, एवा त्यागी

१ मन्द वैराग्य वाळो ।

करतां तो गृहस्थ घणो सारो, केम जे, गृहस्थ भक्तने ज्यारे दुःख पडे अथवा घणुं सुख आवी पडे, त्यारे ते एम विचार राखे जे 'रखे मारे आमांथी बंधन थाय' एवुं जाणीने ते संसारमांथी उदास रहे,माटे त्यागी तो ते खरो जे 'जेणे संसार मुक्यो ने पाछी संसारनी वासना रहेज नहि' अने गृहस्थ तो वासनावाळा त्यागी करतां घणो श्रेष्ठ छे जो गृहस्थना धर्म सचवाय तो, पण गृहस्थना धर्म तो घणा कठण छे अने अनंत प्रकारनां सुख दुःख आवी पडे त्यारे संतनी सेवामांथी अने धर्ममांथी मनने आडुं अवळुं डोलवा दे नहि. अने एम समझे जे 'संतनो समागम मळ्योछे तेतो मने परम चिंतामणि अने कल्पवृक्ष मळ्योछे अने धन, दोलत, दीकरा, दीकरी एतो सर्वे स्वमतुल्य छे अने साचो लाभ ते संतनो समागम मळ्यो एज छे, एम समजे. अने गमे तेवुं भारे दुःख आवी पडे पण तेणे करीने पाछो पडे नहि, एवो जे गृहस्थ ते अति श्रेष्ठ छे. अने सौ करतां भगवानना भक्त थावुं ए घणुं कठण छे अने भगवानना भक्तनो समागम मळवो घणो दुर्लभ छे, एम कहीने ते उपर श्रीजिमहाराजे भगवान अने संतना महिमानां मुक्तानंदस्वामीनां कीर्तन गवराव्यां.

पछी मुक्तानंदस्वामिए प्रश्न पुछ्यो जे "श्रुतिमां एम कह्युंछे जे "अन्ते या मतिः सा गतिः" एवी रीते कह्युंछे जे अंतकाळे भगवाननेविषे मति रहे तो गति थाय अने न रहे तो न थाय. एवो ए श्रुतिनो अर्थ भासेछे, त्यारे जे भक्ति करी होय तेनो शो विशेष छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने साक्षात् भगवाननी प्राप्ति थइ छे तेने अंतकाळे स्मृति रहे अथवा न रहे तोपण तेनुं अकल्याण थाय नहि, तेनी तो भगवान रक्षा करेछे. अने जे भगवानथकी विमुख छे तेतो बोलतां चालतां देह मुकेछे तोपण तेनुं कल्याण थातुं नथी अने

मरीने यमपुरीमां जायछे अने केटलाक पापी कसाइ होय ते बोलतां चालतां देह मुकेछे अने भगवाननो भक्त होय अने तेनो अकाळ मृत्यु थयो ते माटे शुं तेनुं अकल्याण थाशे? अने ते पापिनुं शुं कल्याण थाशे? नहिज थाय. त्यारे ए श्रुतिनो अर्थ एम करवो जे 'जेवी हमणां एने मति छे तेवी अंतकाळे गति थायछे'. माटे ते जे भक्त छे तेनी मतिमां एम रह्युं छे. जे, 'मारुं कल्याण तो थइ रह्युंछे' तो तेनुं कल्याण अंतकाळे थइज रह्युं छे. अने जेने संतनी प्राप्ति नथी थइ अने भगवानना स्वरूपनी पण प्राप्ति नथी थइ तेनी मतिमां तो एम वर्तेछे जे 'हुं अज्ञानी छुं अने मारुं कल्याण नहि थाय' तो जेवी एनी मति छे तेवी एनी अंतकाळे गति थायछे. अने जे भगवानना दास थयाछे तेने तो कांइ करवुं रह्युं नथी, एना दर्शने करीने तो बीजा जीवनुं कल्याण थायछे तो एनुं कल्याण थाय एमां शुं कहेवुं ? पण भगवाननुं दासपणुं आववुं ते घणुं कठण छे केम जे, भगवानना दास होय तेनां तो ए लक्षण छे जे 'देहने मिथ्या जाणे अने पोताना आत्माने सत्य जाणे अने पोताना जे स्वामी तेने भोगव्यानां जे पदार्थ तेने पोते भोगववाने अर्थे इच्छेज नहि' अने पोताना स्वामीनुं गमतुं मुकीने बीजुं आचरण करेज नहि, एवो होय ते हरिनो दास कहेवाय. अने जे हरिनो दास होय ने देहरूपे वर्ते तेतो प्राकृत भक्त कहेवाय । इति वचनामृतम् ॥ १४ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर वदी ३ त्रीजने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्व साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ तेमने निवेदन कर्यां विना प्रथमथी ।

पछी श्रीजिमहाराजे एम वार्ता करी जे, जेना हड्यामां भगवाननी भक्ति होय तेने एवी वृत्ति रहे जे 'भगवान तथा संत ते मने जे जे वचन कहेशे तेमज मारे करवुं छे.' एम तेना हड्यामां हिमत्य रहे. अने 'आटलुं वचन माराथी मनाशे अने आटलुं नहि मनाय' एवुं वचन तो भुल्ये पण न कहे. अने वळि भगवाननी मूर्तिने हड्यामां धारवी तेमां शूरवीरपणुं रहे अने मूर्ति धारतां धारतां जो न धराय तोपण कायर न थाय अने नित्य नवीन[1] श्रद्धा राखे अने मूर्ति धारतां ज्यारे भुंडा घाट-संकल्प थाय अने ते हठाव्या हठे नहि तो भगवाननो मोटो महिमा समझीने पोताने पूर्णकाम मानीने ते संकल्पने खोटा करतो रहे अने भगवानना स्वरूपने हड्यामां धारतो रहे, ते धारतां धारतां दश वर्ष थाय अथवा वीश वर्ष थाय अथवा पचीश वर्ष थाय अथवा सो वर्ष थाय तोपण कायर थइने भगवानना स्वरूपने धारवुं ते मुकी दे नहि, केमजे श्रीकृष्णभगवानने गीतामां कह्युंछे जे— "अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ।" ते माटे एम ने एम भगवानने धारतो रहे एवुं जेने वर्ततुं होय तेने एकांतिक भक्त कहिए । इति वचनामृतम् ॥ १५ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर वदि ४ चौथने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे एम वार्ता करी जे, जे भगवानना भक्तने सत्[2] असत्[3]नो विवेक[4] होय तेतो जे जे अवगुण पोतामां होय तेने जाणे अने

१ उत्तरोत्तर अधिक अधिक । २ काळादिथी अन्यथा भाव (परिणामादि) नहि पामनारा आत्मा परमात्मादि । ३ काळादिथी अन्यथाभावने पामनारा माया अने तेना कार्य विगेरे । ४ पृथक् पृथक् विवेचन करीने तेना तेना स्वरूपने जाणवुं । ५ लोभादि दोष ।

विचारीने तेनो त्याग करीदे. अने संतमां अथवा कोइ सत्संगीमां कांइक अवगुण पोताने भासतो होय तो तेने त्याग करीदे अने तेना जे गुण तेनुंज ग्रहण करे. अने परमेश्वरने विषे तो तेने कोइ अवगुण भासेज नहि. अने भगवान अने संत ते जे जे वचन कहे तेने परम सत्य करीने माने पण ते वचनने विषे संशय करे नहि. अने संत कहे जे 'तुं देह इंद्रिय मन प्राणथी जुदो छुं अने सत्य छुं अने एनो जाणनारो छुं अने ए देहादिक सर्वे असत्य छे' एम वचन कहे तेने सत्य मानीने ते सर्वथी जुदो आत्मारूपे वर्ते पण मनना घाट भेळो भळी जाय नहि, अने जेणे करीने पोताने बंधन थाय अने पोताने एकांतिक धर्ममां खोट्य आवे एवां जे पदार्थ तथा कुसंग तेने ओळखी राखे अने तेथी छेटेज रहे अने तेना बंधनमां आवे नहि. अने सवळो विचार होय तेने ग्रहण करे अने अवळो विचार होय तेनो त्याग करे एवी रीते जे वर्ततो होय त्यारे जाणीए जे तेने विवेक छे । इति वचनामृतम् ॥ १६ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर वदि ५ पांचमने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बारणे ओरडो छे तेमां कथा वंचावता हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी चादर ओढी हती तथा धोळी पाघ बांधी हती अने पिळा पुष्पनी माळा पहेरी हती अने पिळा पुष्पनो तोरो पाघने विषे खोशो हतो अने अतिप्रसन्न थका विराजमान हता.

ते समयने विषे मुक्तानंदस्वामी तथा गोपाळानंदस्वामी आदिक साधुने तेडाव्या अने श्रीजिमहाराज ते सर्वे प्रत्ये बोल्या जे, आपणा सत्सं-

१ नराकृति एवा पण । २ मनना संकल्पने आधीन न थाय । ३ अशुभ देशादिक आठ । ४ एकांतिक धर्ममां पुष्टि थाय तेवो । ५ श्रीमद्भागवतनी ।

गमां थोडोक कुसंगनो भाग रह्यो जायछे ते आज काढवो छे अने आ प्रकरण एवुं चलाववुं छे जे, सर्व परमहंस तथा सांख्ययोगी तथा कर्मयोगी सर्व सत्संगीमां प्रवर्ते. ते सत्संगमां कुसंग ते शुं छे तो जे 'वातना करनारा हिमत्य विनानी वात करेछे' ते सत्संगमां कुसंग छे ते केवी रीते वात करेछे तो एम कहेछे जे, 'भगवाननुं जे वचन तेने यथार्थ कोण पाळी शकेछे? अने वर्तमानधर्म पण यथार्थ कोण पाळी शकेछे? माटे जेटलुं पळे तेटलुं पाळीए अने भगवान तो अधम उद्धारण छे ते कल्याण करशे' अने वळी एम वात करेछे जे 'भगवाननुं स्वरूप जे हृदयमां धारवुं ते कांइ आपणुं धार्युं धरातुं नथी, एतो भगवान जेने दया करीने धरावेछे तेने धरायछे' एवी रीतनी मोळी वात करीने धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति इत्यादि जे भगवाननी प्रसन्नतानां साधन, तेमांथी बीजाने मोळा पाडेछे. माटे हवे आज दिनथी आपणा सत्संगमां कोइ पण एवी हिमत्य रहित वात करशो नहि. सदा हिमत्य सहितज वात करज्यो. अने जे एवी हिमत्य रहित वात करे तेने तो नपुंसक जाणवो अने एवी हिमत्य विनानी वात जे दिवस थइ जाय तो ते दिवस उपवास करवो । इति वचनामृतम् ॥ १७ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर वदि ६ छठने दिवस रात्रि पाछली पहोर बाकी हती त्यारे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बारणे ओरडानी ओसरीने आगळ फळीयामां ढोलिया उपर विराज्या हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां.

पछी परमहंस तथा सत्संगीने तेडाव्या ने घणीवार सुधी तो पोते विचारी रह्या अने पछी बोल्या जे 'एक वात कहुं ते सांभळो' एम क-

१ ज्ञान वैराग्ये सहित नवधा भक्ति करवा रूप । २ भक्तिनो पोषक ।

हीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मारा मनमां तो एम थायछे जे वात न कहुं पण तमे अमारा छो माटे जाणीए छीए जे कहीएज. अने आ वात छे तेने समझीने तेज प्रमाणे वर्ते तेज मुक्त[1] थाय छे अने ते विना तो चार वेद, षट् शास्त्र, अढार पुराण अने भारतादिक इतिहास तेने भणवे करीने तथा तेना अर्थने जाणवे करीने अथवा तेने श्रवणे करीने पण मुक्त थाय नहि, ते वात कहिए ते सांभळो जे, बहार तो गमे तेटली उपाधि[2] होय पण तेनो जो मनमां संकल्प[3] न होय तो तेनो अमारे खरखरो नहि. अने अंतरमां जो रंच जेटलो पदार्थनो घाट थाय तो तेनो त्याग करीए त्यारे निरांत थाय एवो अमारो स्वभाव छे, माटे अमे हृदयमां विचार कर्यो जे भगवानना भक्तना हृदयमां विक्षेप[4] थायछे तेनुं कारण ते शुं छे? पछी मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार सामुं जोयुं त्यां तो ए अंतःकरण पण उद्वेगनुं कारण नथी, अंतःकरणमां तो भगवानना स्वरूपना निश्चयनुं बळ अथवा आत्मज्ञाननुं बळ तेने योगे करीने अंतःकरणने गाफलता रहेछे जे 'भगवान् मळ्याछे ते हवे कांइ करवुं रह्युं नथी' एवुं गाफलपणुं रहेछे एटलोज अंतःकरणनो वांक छे. अने झाझो वांक तो पंच ज्ञानइंद्रियोनो छे. तेनी विगति कहीए छीए जे, ए जीव जे नाना प्रकारनां भोजन जमेछे ते भोजन भोजन प्रत्ये जुदा जुदा स्वाद छे अने जुदा जुदा गुण[5] छे, ते भोजनने ज्यारे जमेछे त्यारे ते गुण अंतःकरणमां तथा शरीरमां प्रवर्तेछे. अने जो लिलागर भांग्य पिवे अने ते प्रभुनो भक्त होय तोयपण लिलागर भांग्यने केफे करीने वर्तमाननी खबर रहे नहि अने प्रभुना भजननी पण खबर रहे नहि, तेम अनंत प्रकारना जे आहार

१ अनादि अज्ञानरूप मायाना बंधनथी। २ सुवर्णना अलंकारादि अनेक रमणीय वस्तुओनो योग। ३ भोगवावनी इच्छा। ४ मोक्षना साधननुं अनुसधान नहि ते। ५ शुभाशुभ।

तेना गुण पण लिलागर भांग्यनी पेठेज अनंत प्रकारना छे तेनो गणतां पण पार आवे नहि । तेमज ए जीव श्रोत्रद्वारे अनंत प्रकारना शब्दने सांभळेछे ते शब्दना पण अनंत प्रकारना गुण जुदा जुदा छे, ते जेवो शब्द सांभळेछे तेवोज अंतःकरणमां गुण प्रवर्तेछे, जेम कोइक हत्यारो जीव होय अथवा कोइक पुरुष व्यभिचारी होय अथवा कोइक स्त्री व्यभिचारिणी होय अथवा लोक अने वेदनी मर्यादाने लोपीने वर्ततो एवो कोइक भ्रष्ट जीव होय तेमनी जे वात सांभळवी तेतो जेवी लिलागर भांग्य पिवे अथवा दारु पिवे एवी छे, माटे ते वातना सांभळनाराना अंतःकरणने भ्रष्ट करी नांखेछे. अने भगवाननुं भजन स्मरण तथा वर्तमान तेनी विस्मृति करावी नांखेछे। तेमज त्वचाना स्पर्श पण अनंत प्रकारना छे अने तेना गुण पण जुदा जुदा अनंत प्रकारना छे तेमां पापी जीवनो जे स्पर्श तेज भांग्य दारुना जेवो छे, माटे ते स्पर्शनो करनारो हरिभक्त होय तेनी पण शुध बुधने भुलाडी देछे। तेमज रूप पण अनंत प्रकारनां छे अने तेना गुण पण अनंत प्रकारना जुदा जुदा छे, ते कोइक भ्रष्ट जीव होय ने जो तेनुं दर्शन थयुं होय तो जेम लिलागर भांग्य तथा दारु पीधे भुंडुं थायछे तेमज ते पापीना दर्शनना करनारानुं पण भुंडुंज थाय अने बुद्धि भ्रष्ट थइ जाय छे । तेमज गंध पण अनंत प्रकारना छे अने तेना गुण पण अनंत प्रकारना छे, ते जो पापी जीवना हाथनुं पुष्प अथवा चंदन तेनी जो सुगंधी ले तो जेम लिलागर पीधे बुद्धि भ्रष्ट थाय तेमज बुद्धि भ्रष्ट थायछे । एवी रीते जेम भुंडाने योगे करीने जीवनी बुद्धि भ्रष्ट थायछे तेमज परमेश्वर अथवा परमेश्वरना संत तेने योगे करीने जीवनी बुद्धि सारी थायछे. अने जीवनी बुद्धि भ्रष्ट होय तोपण भगवान् अने संतना शब्दने सांभळवे करीने उत्तम थायछे, तेमज

एमने स्पर्शे करीने पण मति उत्तम थायछे. अने वर्तमाननी आड्ये करीने मोटा संतनो स्पर्श न थाय तो तेना चरणनी रज लइने माथे चडावे तेणे करीने पवित्र थाय. अने तेमज मोटा संतने दर्शने करीने पण पवित्र थाय, पण वर्तमान राखीने दर्शन करवां. तेमज ते मोटानी प्रसादी छे तेने जमवे करीने पण पवित्र थायछे, तेमां पण वर्णाश्रमनी मर्यादा परमेश्वरे बांधीछे ते मर्यादाने राखीने प्रसादी लेवी. अने जेने न खपे तेने साकरनी प्रसादी करावीने प्रसादी लेवी । तेमज ते मोटा पुरुषने चढयुं एवुं जे पुष्प चंदन तेनी सुगंधी लीधे पण बुद्धि निर्मळ थायछे, ते माटे ए पंच विषयने समझ्या[1] विना जे भोगवशे अने सार असारनो विभाग नहि करे अने ते नारद सनकादिक जेवो हशे तेनी पण बुद्धि भ्रष्ट थइ जाशे, तो जे देहाभिमानी होय अने तेनी बुद्धि भ्रष्ट थाय तेमां शुं कहेवुं ? ते सारु ए पंच इंद्रियोने योग्य अयोग्य विचार्या विना जे मोकळी मेलशे तेनुं अंतःकरण भ्रष्ट थइ जाशे. अने पंच इंद्रियो द्वारे जीव जे आहार करेछे ते आहार जो शुद्ध करशे तो अंतःकरण शुद्ध थाशे, अने अंतःकरण शुद्ध थाशे तो अखंड भगवाननी स्मृति रहेशे. अने जो पंच इंद्रियोना आहारमांथी एक इंद्रियनो आहार मलिन थायछे तो अंतःकरण पण मलिन थइ जायछे, माटे भगवानना भक्तने भगवानना भजनने विषे जे कोइ विक्षेप थइ आवेछे तेनुं कारण तो पंच इंद्रियोना विषयज छे पण अंतःकरण नथी.

अने आ जीव छे ते जेवी सोबत[2] करे छे तेवुं[3] एनुं अंतःकरण थायछे, ते ज्यारे ए जीव विषयी जीवनी सभामां बेठो होय अने ते जग्या पण सुंदर सात माळनी हवेली होय, ते हवेलीने विषे काचना

[1] शुभाशुभ । [2] बाह्य देशादिकनो संग । [3] शुद्धाशुद्ध ।

तकता सुंदर जड्या होय अने सुंदर बीछानां कर्यां होय, तेमां नाना प्रकारनां आभूषण तथा वस्त्रने पहेरीने विषयी जन बेठा होय अने दारुना शिशा लइने परस्पर पाता होय अने केटलाक तो दारुना शिशा भरेला पड्या होय अने वेश्याओ थेइ थेइकार करी रही होय अने नाना प्रकारनां वाजिंत्र वाजतां होय, ते सभामां जइने जे जन बेसे ते समे तेनुं अंतःकरण बीजी जातनुं थइ जायछे । अने तृणनी झुंपडी होय ने तेमां फाटेल गोदडीवाळा परमहंसनी सभा बेठी होय अने धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति सहवर्तमान भगवद्वार्ता थाती होय, ते सभामां जइने जे जन बेसे त्यारे ते समे तेनुं अंतःकरण बीजी रीतनुं थायछे, माटे सत्संग अने कुसंगने योगे करीने जेवुं अंतःकरण थायछे तेने जो विचारीने जुवे तो जाण्यामां आवेछे अने गवरगंडने तो कांइ खबर पडती नथी, माटे आ वार्ता छे ते छेक मूर्खपणे पशुने पाडे वर्ततो होय तेने तो न समझाय अने जे कांइक विवेकी होय अने कांइक भगवाननो आश्रित होय तेने तो आ वार्ता तुरत समझ्यामां आवेछे, माटे परमहंस तथा सांख्ययोगी हरिजन तथा कर्मयोगी हरिजन ए सर्वेने कुपात्र माणसनी संगत करवी नहि. अने सत्संग मोर तो गमे तेवो कुपात्र जीव होय तोय तेने नियम धरावीने सत्संगमां लेवो पण सत्संगमां आव्या पछी कुपात्रपणुं राखे तो वाइ अथवा भाइ जे होय तेने सत्संग बहार काढी मेलवो अने जो न काढे तो एमांथी झाझुं भुंडुं थाय जेम जे आंगळीने सर्प करडी होय अथवा किडियारानो रोग थयो होय अने तेटलुं अंग जो तुरत कापी नांखे तो पंडे कुशळ रहे, तेनो लोभ

१ धर्मनिष्ठ भक्तजन । २ निर्विकार एवुं पण । ३ अशुद्ध । ४ दुराचारीपण । ५ कामादिवासनादूषित एवुं पण । ६ शुद्ध ।

करे तो झाझो बीगाड थाय' तेम जे कुपात्र जीव जणाय तेनो तत्काळ त्याग करज्यो. अने आ अमारुं वचन छे ते भला थइने सर्वे जरूर राखज्यो, तो जाणीए तमे अमारी सर्व सेवा करी. अने अमे पण तमने सर्वने आशीर्वाद दइशुं अने तमो उपर घणा प्रसन्न थइशुं कां जे तमे अमारो दाखडो सुफळ कर्यो. अने भगवाननुं धाम छे त्यां आपण सर्वे भेळा रहीशुं. अने जो एम नहि रहो तो तमारे अने अमारे घणुं छेटुं थइ जाशे अने भुतनुं के ब्रह्मराक्षसनुं देह आवशे अने हेरान थाशो. अने जे कांइ भगवाननी भक्ति करी हशे तेनुं फळ तो रझ-ळतां रझळतां कोइक काळे प्रगट थाशे, त्यारे पण अमे वात करी ते प्रमाणे रहेशो त्यारपछी मुक्त थइने भगवानना धाममां जाशो.

अने जो कोइ अमारो वाद लेशो तो तेनुं तो जरुर भुंडुं थाशे, कां जे अमारा हृदयमां तो नरनारायण प्रगट विराजेछे अने हुं तो अनादिमुक्तज छुं पण कोइने उपदेशे करीने मुक्त नथी थयो. अने मन, बुद्धि, चित्त अने अहंकार तेमने तो हुं पकडी लउंछुं जेम सिंह बकराने पकडेछे तेनी पेठे ए अंतःकरणने हुं पकडुंछुं अने बीजाने तो ए अंतःकरण देख्यामां पण आवतां नथी, माटे अमारो वाद लइने जाणे जे उपाधिमां[1] रहीने शुद्धपणे रहीशुं तेतो नारद सनकादिक जेवो होय तेथीपण रहेवाय नहि तो बीजानी शी वार्ता कहेवी? अने अनंत मुक्त थइ गया ने अनंत थशे तेमां उपाधिमां रहीने निर्लेप[2] रहे एवो कोइ थयो नथी ने थशे पण नहि अने हमणां पण कोइए नथी अने कोटि कल्प सुधी साधन करीने पण एवो थवाने कोइ समर्थ नथी, माटे अमे कहुंछे ते प्रमाणे रहेशो तो रुडुं

१ सत्समागम, इन्द्रियोनुं नियमन अने असाधुनो त्याग। २ क्षणकाळमा पण मायाना संबन्धे रहित। ३ ते ते विषयोना प्रसंगमां।

थशे । अने अमे जे कोइने हेत करीने बोलावीए छीए ते तो तेना जीवना रुडा सारु बोलावीए छीए अथवा कोइने हेते करीने सामुं जोइए छीए अथवा कोइ सारां भोजन करावेछे तेने जमीए छीए अथवा कोइ ढोलीयो विछावी दे छे ते उपर बेसीए छीए अथवा कोइ वस्त्र आभूषण तथा पुष्पना हार इत्यादिक जे जे पदार्थ लावेछे तेने अंगीकार करीए छीए तेतो तेना जीवना रुडा वास्ते करीए छीए पण अमारा सुखने वास्ते करता नथी अने जो अमारा सुखने वास्ते करता होइए तो अमने श्रीरामानंदस्वामीना सम छे, माटे एवुं विचारीने कोइ अमारो वाद करशो मां, अने पंच इंद्रियोना आहार छे तेने अतिशय शुद्धपणे करीने राखज्यो, ए वचन अमारुं जरुरा जरुर मानज्यो. अने आ वाततो सर्वने समझाय एवी सुगम छे माटे सर्वना समझयामां तुरत आवी जाशे, ते सारु सत्संगमां अतिशय प्रवर्तावज्यो तेमां अमारो घणो रांजीपो छे, एम वार्ता करीने जय सच्चिदानंद कहीने श्रीजिमहाराज पोताना उतारामां पधारता हवा । इति वचनामृतम् ॥ १८ ॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि १ पडवाने दिवस श्रीजिमहाराज संध्यासमे श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोतना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे आ सत्संगने विषे पोताना आत्यंतिक कल्याणने इच्छतो एवो जे भक्तजन तेने एकली आत्मनिष्ठाए करीनेज पोतानुं आत्यंतिक कल्याणरूप कार्य सरतुं नथी तथा एकली प्रीति जे प्रेमे सहित नव प्रकारनी भक्ति करवी तेणे करीने पण ते कार्य सरतुं नथी तथा एकलो जे वैराग्य तेणे करीने पण ते कार्य

सरतुं नथी तथा एकलो जे स्वधर्म तेणे करीने पण ते कार्य सरतुं नथी ते माटे ए आत्मनिष्ठा आदिक जे चारे गुण ते सिद्ध करवा, शामाटे तो ए चारे गुणने एक बीजानी अपेक्षा छे, हवे ए चारे गुणने एक बीजानी अपेक्षा छे ते कहिए ते सांभळो जे, आत्मनिष्ठा तो होय पण जो श्रीहरिने विषे प्रीति न होय तो ते प्रीतिए करीने थइ जे श्रीहरिनी प्रसन्नता तेणे करीनेज पामवा योग्य एवुं मोटुं ऐश्वर्य जे 'मायाना गुणे करीने पराभव न पमाय एवुं मोटुं सामर्थ्य' तेने ए भक्त नथी पामतो. अने श्रीहरिने विषे प्रीति होय पण जो आत्मनिष्ठा न होय तो देहाभिमानने योगे करीने ते प्रीतिनी सिद्धि थाती नथी. अने श्रीहरिने विषे प्रीति अने आत्मनिष्ठा ए बेय होय पण जो दृढ वैराग्य न होय तो मायिक पंच विषयने विषे आसक्तिए करीने ते प्रीति अने आत्मनिष्ठा तेनी सिद्धि थाती नथी. अने वैराग्य तो होय तोपण जो प्रीति अने आत्मनिष्ठा न होय तो श्रीहरिना स्वरूप संबन्धि जे परमानंद तेनी प्राप्ति थाती नथी. अने स्वधर्म तो होय तोपण जो प्रीति, आत्मनिष्ठा अने वैराग्य ए त्रण न होय तो भूर्लोक भुवर्लोक अने ब्रह्माना भुवनपर्यंत जे स्वर्गलोक ते थकी बहार गति थाती नथी कहेतां ब्रह्मांडने भेदीने मायाना तमथकी पर एवुं जे श्रीहरिनुं अक्षरधाम तेनी प्राप्ति थाती नथी. अने आत्मनिष्ठा, प्रीति अने वैराग्य ए त्रण होय तोपण जो स्वधर्म न होय तो ए त्रणेनी सिद्धि थाती नथी, एवी रीते आत्मनिष्ठा आदिक जे चार गुण तेमने एक बीजानी अपेक्षा छे, ते माटे भगवानना एकांतिक भक्तनो समागम करीने जे भक्तने ए चारे गुण अतिशय दृढपणे वर्तेछे ते भक्तने सर्व साधन संपूर्ण थयां अने एनेज एकांतिक भक्त जाणवो, ते माटे जे भक्तने चारे गुणमांथी जे गुणनी न्यूनता होय तो भगवा;

नना एकांतिक भक्तनी सेवा समागमे करीने ते न्यूनताने टाळवी। इति वचनामृतम् ॥ १९ ॥

संवत् १८७६ नां पोष शुदि २ बीजने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता अने धोळी पाघ माथे बांधी हती ने ते पाघने विषे पीळा फुलनो तोरो विराजमान हतो अने कंठने विषे पीळा पुष्पनो हार विराजमान हतो अने बे कानने विषे धोळा ने पीळा पुष्पना गुच्छ विराजमान हता अने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो अने काळा छेडानो खेस पहेर्यो हतो अने कथा वंचावता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिजननी सभा भराइने बेठी हती.

पछी स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज बोल्या जे, सांभळो सर्वने एक प्रश्न पुछीए छीए, त्यारे सर्व हरिभक्ते हाथ जोडीने कह्युं जे पुछो? त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे "अज्ञानिमां अतिशय अज्ञानी ते कोण छे?" पछी तो सर्वे विचारी रह्या पण उत्तर करी शक्या नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ल्यो अमेज उत्तर करीए त्यारे सर्वेए राजी थइने कह्युं जे, हे महाराज! तमथीज यथार्थ उत्तर थशे माटे कहो? पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ देहमां रहेनारो जे जीव छे ते रूपने जुवेछे अने कुरूपने जुवेछे तथा बाळ, यौवन अने वृद्धपणाने जुवेछे, एवा अनंत पदार्थने जुवेछे पण जोनारो पोते पोताने जोतो नथी अने केवळ बाह्यदृष्टिए करीने पदार्थने जोया करेछे पण पोते पोताने नथी जोतो तेज अज्ञानिमां अतिशय अज्ञानी छे अने जेम नेत्रे करीने अनंत प्रकारना रूपना स्वादने लेछे तेमज श्रोत्र, त्वक्, रसना, घ्राण इत्यादिक सर्व इंद्रियोए करीने विषयसुखने भोगवेछे ने जाणेछे

पण पोते पोताना सुखने भोगवतो नथी ने पोते पोताना रूपने जाणतो नथी एज सर्व अज्ञानीमां अतिशय अज्ञानी छे अने एज घेलामां अतिशय घेलोछे अने एज मूर्खमां अतिशय मूर्ख छे अने एज सर्व नीचमां अतिशय नीच छे.

त्यारे शुकमुनिए आशंका करी जे "पोतानुं स्वरूप जोवुं ते शुं पोताना हाथमां छे? अने जो पोताना हाथमां होय तो जीव शीद अतिशय अज्ञानी रहे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, "जेने सत्संग थयोछे तेने तो पोताना जीवात्मानुं दर्शन पोताना हाथमांज छे अने के दहाडे एणे पोताना स्वरूपने जोयानो आदर कर्यो ने न दीठुं? अने ए जीव मायाने आधीन थको–परवश थइने तो स्वप्न अने सुषुप्ति अवस्थामां अंतर्दृष्टि करीने जायछे पण पोते पोताने जाणे कोइ दिवस पोताना स्वरूपने जोवाने अंतर्दृष्टि करतो नथी अने जे भगवानना प्रतापने विचारीने अंतर्दृष्टि करेछे तेतो पोताना स्वरूपने अतिशय उज्वल प्रकाशमान जुवेछे अने ते प्रकाशने मध्ये प्रत्यक्ष एवा जे पुरुषोत्तमभगवान तेनी मूर्तिने जुवेछे अने नारद सनकादिक जेवो सुखीयो पण थायछे, माटे हरिभक्तने तो जेटली कसर रहेछे तेटली पोताने आळसे करीने रहेछे। इति वचनामृतम् ॥ २० ॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि २ त्रीजने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां सांझने समे उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने काळा छेडानो खेस पहेर्यो हतो ने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो ने धोळी पाघ माथे बांधी हती ने उगमणे मुखारविंदे विराजमान हता ने पोतानी आगळ साधु झांझ, पखाज लइने कीर्तन गाता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना सत्संगिनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी ते सर्वेने श्रीजिमहाराजे छाना राख्या ने एम बोल्या जे, सर्वे सांभळो एक वार्ता करीए, एम कहिने झाझीवार सुधी तो नेत्र कमळने मिंचिने विचारी रह्या ने पछी बोल्या जे, जे हरिभक्तना मनमां भगवानने अतिप्रसन्न करवानी इच्छा होय ते भगवानने प्रसन्न करवानो तो ए उपाय छे जे, पोतपोताना वर्णाश्रमनो जे धर्म तेने विषे अचळ निष्ठा तथा आत्मनिष्ठानी अतिशय द्रढता तथा एक भगवान विना बीजा सर्व पदार्थनेविषे अरुचि तथा भगवानने विषे माहात्म्ये सहित एवी निष्कामभक्ति, ए चार साधने करीने भगवाननी अतिशय प्रसन्नता थायछे अने ए जे चार साधन तेने एकांतिकधर्म कहीए अने एवा एकांतिकधर्मवाळा जे भक्त ते आ समामां आपणा सत्संगमां केटलाक छे अने जे भगवाननो भक्त होय तेने खातां, पीतां, नातां, धोतां, चालतां, बेठतां सर्व क्रियानेविषे भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन करवुं अने ज्यारे अंतरमां कोइ विक्षेप न होय त्यारे तो भगवाननुं चिंतवन करवुं ने भगवाननी मूर्ति सामुं जोई रहेवुं अने जो अंतरमां संकल्पविकल्पनो विक्षेप थाय तो देह, इंद्रियो, अंतःकरण, देवता, विषय, ए सर्वेथी पोतानुं स्वरूप जुदुं समझवुं अने ज्यारे संकल्पनो विराम थाय त्यारे भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन करवुं अने आ देहने तो पोतानुं स्वरूप मानवुं नहि अने देहना जे संबन्धी तेने पोतानां संबन्धी मानवां नहि, केमजे आ जीव छे ते चोराशी लाख जातना देहने पूर्वे धरी आव्योछे अने जेटली जगतमां स्त्रीयो छे ते सर्वेने पेट जन्म लीधाछे तथा जगतमां जेटली कुतरीयो, जेटली मींनडीयो, जेटली वानरीयो, ए आदिक जेजे चोराशीमां जीव छे ते सर्वेने पेट केटलाकनार जन्म धर्याछे अने आ जगतमां जेटली जातनी स्त्रीयो छे तेमां केइ एणे स्त्री नथी करी?

सर्वेने पोतानी स्त्रीयो करीछे, तेमज ए जीवे स्त्रीना देह धरी धरीने जगतमां जेटली जातना पुरुष छे ते सर्वेने पोताना धणी कर्याछे, तेटला माटे जेम ए चोराशी लाख जातना सगपणने हमणे मानता नथी तथा चोराशी लाख जातना देहने पोतानुं देह मानता नथी, तेमज आ देहने पोतानुं स्वरूप मानवुं नहि अने आ देहनां संबन्धीने पोतानां संबन्धी मानवां नहि, केमजे चोराशी लाख जातना देह धर्या तेनो संबन्ध रह्यो नहि तो आ देहनो संबन्ध पण नहिज रहे, ते माटे देह गेहादिक सर्व पदार्थने असत्य जाणीने तथा देह, इंद्रियो, अंतःकरण, तेथी जुदुं पोतानुं स्वरूप जाणीने तथा पोताना धर्ममां रहीने भगवाननी निष्कामभक्ति करवी अने दिवसे दिवसे भगवाननुं अतिशय माहात्म्य जणाय तेने अर्थे साधुनो संग निरंतर राखवो अने जे आवी रीते नथी समझतो अने केवळ देहाभिमानी ने प्राकृत मतिवाळो छे अने ते जो सत्संगमां पड्यो छे तोपण एने पशु जेवो जाणवो अने आ सत्संगमां तो भगवाननो मोटो प्रताप छे तेणे करीने पशुनुं पण कल्याण थायछे तो मनुष्यनुं कल्याण थाय तेमां शुं आश्चर्य कहेवाय? पण एने खरेखरो भगवाननो एकांतिक भक्त न कहेवाय, एकांतिक भक्तती जेनी प्रथम कही एवी समझण होय तेनेज कहीए अने एवो जे एकांतिकभक्त ते देहनो त्याग करीने सर्वे मायाना भावथी मुक्त थइने अर्चिमार्गे[1] करीने भगवानना अक्षरधामने पामेछे, ते अक्षरनां

[1] भगवानना धामनो जे मार्ग छे तेने अर्चिमार्ग कहेछे, तेने देवयान अने ब्रह्मपथ शब्दथी पण कहेछे. ते मार्गमां प्रथमपर्वमां अर्चि आवेछे तेथी तेनुं 'अर्चिमार्ग' एवुं नाम पड्युं छे, प्रथम अर्चि (ज्योति) पछी अनुक्रमे अह, (दिवस) शुक्लपक्ष, उत्तरायण, संवत्सर, मरुत्, सूर्य, चन्द्र, विद्युत्, वरुण, इन्द्र अने प्रजापति आवेछे, पछी अप्राकृत लोकमांथी अमानव (दिव्य मुक्त पुरुष) आवेछे, ते मुक्तोने भगवानना धाम प्रते पहों-

वे[1] स्वरूप छे एकतो निराकार एकरस चैतन्य छे तेने चिदाकाश कहीए, ब्रह्ममहोल कहीए अने ए अक्षर बीजे रूपे करीने पुरुषोत्तम नारायणनी सेवामां रहेछे. अने ए अक्षरधामने पाम्यो जे भक्त तेपण अक्षरना [illegible] [illegible]वाननी अखंड सेवामां रहेछे अने ए [illegible] [illegible]रुषोत्तमनारायण ते सदा विराजमान छे अने ए अक्षरधामनेविषे अक्षरना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा अनंत कोटी मुक्त रह्याछे ते सर्वे पुरुषोत्तमना दासभावे वर्तेछे. अने पुरुषोत्तमनारायण ते सर्वना स्वामी छे ने अनंत कोटी ब्रह्मांडना राजाधिराज छे, माटे आपणा सत्संगी सर्वेने तो एमज निश्चय करवो जे 'आपणे पण ए अक्षररूप जे मुक्त तेमनी पंक्तिमां भळवुंछे अने अक्षरधाममां जइने अखंड भगवाननी सेवामां हजुर रहेवुं छे पण नाशवंत ने तुच्छ एवुं जे मायिक सुख तेने इछवुं नथी ने एमां कोइ ठेकाणे लोभावुं नथी' एवो दृढ निश्चय राखीने निरंतर भगवाननी एकांतिक भक्ति करवी अने भगवाननुं अतिशय माहात्म्य यथार्थ समझीने भगवान विना बीजां जे स्त्री धनादिक सर्वे पदार्थ तेनी जे वासना तेने देह छतेज टाळी नांखवी अने जो भगवान विना बीजा पदार्थनी वासना रही गइ होय ने तेनो देह पडे ने तेने भगवानना धाममां जाते जो मार्गमां सिद्धियो देखाय तो ते भगवानने मुकीने ते सिद्धियोमां

चाडेछे, अर्चि आदिक, धाम प्रत्ये जनाराओने विश्रान्तिनां स्थान छे, अर्चिरादि शब्दथी ते ते स्थानमां रहेला तेना तेना अभिमानी देवताओ जाणवा, तेमने "आतिवाहिक" कहेछे एटले धाम प्रत्ये जनारने एक स्थानथी बीजे स्थाने, पहोंचाडनारा कहे छे तेओ मुक्तनी पूजा करेछे. आ मार्गे जनाराओ आ संसारचक्रमां पाछा आवता नथी, आ मार्गनुं वर्णन छान्दोग्योपनिषद्‌मां तथा गीतामां कर्युंछे।

१ मूर्तामूर्त (सावयव निरवयव।) २ निरवयव। ३ सावयवरूपे। ४ निरवयव। ५ सावयव। ६ समानगुणयोग। ७ निरवयव।

लोभाइ जाय तो तेने मोटुं विघ्न थाय, माटे सर्व पदार्थनी वासना टाळीने भगवानने भजवा । इति वचनामृतम् ॥ २१ ॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि ४ चोथने दिवस मध्याह्न समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र पहेर्यां हतां ने पाघने विषे फुलनो तोरो खोश्यो हतो ने बे कान उपर पुष्पना गुच्छ धार्या हता ने कंठमां गुलदावदीना पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने उगमणे मुखारविंदे विराजता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने परमहंस कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे सांभळो एक वात करीए, त्यारे सर्व परमहंस गाववुं राखीने वात सांभळवा तत्पर थया, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे मृदंग, सारंगी, सरोदा, ताल इत्यादिक वादित्र वजाडिने कीर्तन गाववां तेनेविषे जो भगवाननी स्मृति न रहे तो ए गायुं ते न गाया जेवुं छे अने भगवानने विसारीने तो जगतमां केटलाक जीव गायछे तथा वादित्र वजाडेछे पण तेणे करीने तेना मनमां शांति आवती नथी, ते माटे भगवाननां कीर्तन गाववां तथा नामरटन करवुं तथा नारायणधुन्य करवी इत्यादिक जे जे करवुं ते भगवाननी मूर्तिने संभारीनेज करवुं अने भजन करवा बेसे त्यारे तो भगवानने विषे वृत्ति राखे अने ज्यारे भजनमांथी उठीने बीजी क्रियाने करे त्यारे जो भगवानमां वृत्ति न राखे तो तेनी वृत्ति भजनमां बेसे त्यारे पण भगवानना स्वरूपमां स्थिर थाय नहि, माटे हालतां, चालतां, खातां, पितां सर्व क्रियाने विषे भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखवानो अभ्यास

करवो तो तेने भजनमां बेसे त्यारे भगवानमां वृत्ति स्थिर थाय अने जेने भगवानमां वृत्ति रहेवा लागे तेनेतो कामकाज करते पण रहे अने जेने गाफलाइ होय तेनेतो भजनमां बेसे त्यारेपण भगवानमां वृत्ति न रहे, ते माटे सावधान थइने भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखवानो अभ्यास भगवानना भक्तने करवो, एटली वात करीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे, हवे कीर्तन गाओ । इति वचनामृतम् ॥ २२ ॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि ५ पंचमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने श्रीजिमहाराजे माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो तथा धोळुं अंगरखुं पेहेर्युं हतुं तथा धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो तथा केड्ये कसुंबल शेलुं बांध्युं हतुं अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी करुणा करीने परमहंसनी आगळ श्रीजिमहाराज वात करवा लाग्या जे, वासुदेवमाहात्म्य नामे जे ग्रंथ ते अमने अतिशय प्रिय छे केमजे, भगवानना भक्तने भगवानने भज्यानी जे रीति ते सर्वे ए ग्रंथमां कहीछे अने भगवानना जे भक्त ते बे प्रकारना छे तेमां एकने भगवाननो निश्चय तो यथार्थ छे पण ते देहात्मबुद्धि सोतो भगवाननुं भजन करेछे अने बीजो तो जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति ए त्रण अवस्था तथा स्थूल, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण्य देह तेथी पर ने चैतन्यरूप एवुं पोताना स्वरूपने माने अने ते पोताना स्वरूपने विषे भगवाननी मूर्तिने धारीने भगवाननुं भजन करे पछी त्रण अवस्थाथी ने त्रण शरीरथी पर जे पोतानुं स्वरूप तेने अतिशय प्रकाशमान माळे ने ते प्रकाशनेविषे भगवाननी मूर्ति जेवी प्रगट प्रमाण छे तेवी अतिशय

प्रकाशे युक्त भासे, एवी रीतनी स्थितिवाळो होय अने एवी रीतनी स्थिति ज्यांसुधी थइ नथी त्यांसुधी भगवाननो भक्त छे तोपण तेने माथे विघ्न छे अने जो एवी स्थितिमां शिवजी नोता वर्तता तो मोहिनी स्वरूपमां मोह पाम्या अने एवी स्थितिमां ब्रह्मा नोता वर्तता तो सरस्वतीने देखीने मोह पाम्या अने एवी स्थितिमां नारदजी नोता वर्तता तो परण्यानुं मन थयुं अने इंद्र तथा चंद्रादिक तेमने जो एवी स्थिति नोति तो कलंक लाग्यां अने भगवाननो भक्त होय पण जो एवी स्थितिने न पाम्यो होय तो भगवाननेविषे पण प्राकृतभाव परठाइ जायछे, जेम राजा परीक्षित एवो भक्त नोतो तो रासक्रीडा सांभळीने श्रीकृष्णभगवाननेविषे संशय थयो अने शुकजी जो एवा भक्त हता तो तेने कोइ जातनो संशय थयोज नहि अने जे एवो भक्त होय तेतो एम समजे जे 'मारेविषे कोई दोष अडी शके नहि तथा ते दोष कांइ बाध करी शके नहि, तो जेने भजने करीने हुं आवो थयो एवा जे भगवान तेने विषेतो कोइ मायिक दोष होयज केम ?' एम दृढपणे समजेछे अने एवो जे भगवाननो भक्तछे ते भगवाननी मूर्तिनेविषे ज्यारे वृत्तिने राखेछे त्यारे ते वृत्तिना बे विभाग थायछे तेमां एक वृत्तितो भगवानना स्वरूपमां रहेछे अने बीजीतो जे भजननो करनारो तेमां रहेछे अने भगवानना स्वरूपमां जे वृत्ति रहेछे ते प्रेमे युक्त रहेछे अने भजनना करनारामां जे वृत्ति रहेछे तेतो विचारे युक्त रहेछे अने ते वृत्ति जे ते भजनना करनारानेविषे भगवानना भजन विना बीजा जे जे घाटसंकल्प थायछे ते सर्वेने खोटा करी नांखेछे, तथा ते भजन करनारामां जे दोष ते सर्वेने खोटा करी नांखेछे, एवी रीते तेनी वृत्ति भगवानमां अखंड रहेछे अने घडीक तो एकाग्र चित्ते बेसीने भगवाननुं

भजन करे ने घडीकमांतो चाळा चुंथतो फरे तेनेतो एवी स्थिति थती नथी, जेम पाणीनो घडो भरीने एक ठेकाणे ढोळी आवीए, पछी वळी बीजे दिवस अथवा त्रीजे दिवस ते ठेकाणे पाणीनो घडो ढोळीए तेणे करीने त्यां पाणीनो धरो भराय नहि, कांजे आगला दिवसनुं जळ आगले दिवस सुकाइ जाय ने पाछला दिवसनुं पाछले दिवस सुकाइ जाय अने जो आंगळी जेवी नानीज पाणीनी सेरय अखंड वहेती होय तो मोटो पाणीनो धरो भराइ जाय, तेम खातां, पीतां, हालतां, चालतां तथा शुभक्रियानेविषे तथा अशुभक्रियानेविषे सर्वकाळे भगवानमां अखंड वृत्ति राखवी, पछी एवी रीते भगवानमां अखंड वृत्ति राखतां राखतां एवी दृढ स्थिति थायछे । इति वचनामृतम् ॥ २१ ॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि ६ छठने दिवस संध्यासमे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजता हता अने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने धोळो खेश पहेर्यो हतो तथा गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती ने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे, जे रीते ज्ञाने करीने स्थिति थायछे ते कहीए छीए, ते ज्ञान[१] केवुं छे तो प्रकृति पुरुषथी पर छे. अने ज्ञानमेविषे स्थिति थायछे त्यारें प्रकृतिपुरुष ने प्रकृतिपुरुषनुं जे कार्य ते कांइ नजरमां आवतुं नथी अने एवुं नाम ज्ञानप्रलय[३] कहेवायछे. अने एवी स्थिति थायछे तेने एकरस चैतन्य भासेछे ने तेनेविषे एक भगवाननी मूर्तिज[२] रहेछे पण बीजो कोइ आकार रहेतो नथी. अने

१ आत्मा परमात्माना साक्षात् यथार्थ अनुभवरूप । २ भगवत्स्वरूपमां मननी निश्चळपणे रहेवारूप । ३ ज्ञानस्थितिने 'ज्ञानप्रलय' शब्दथी पण कहेछे ।

क्यारेकतो ए प्रकाशमां भगवाननी मूर्ति पण देखाय नहि एकलो प्रकाशज देखायछे ने क्यारेकतो प्रकाश पण देखाय ने भगवाननी मूर्ति पण देखाय; एने ज्ञाने करीने स्थिति जाणवी अने जेवी भगवाननी मूर्ति प्रगट देखायछे ते मूर्तिनेविषे अखंड वृत्ति रहे तेणेकरीने एवी स्थिति थायछे अने जेने जेवो भगवाननो महिमा समझाणो होय तेना हृदयमां तेटलोज प्रकाश थायछे ने तेटलोज तेने प्रणव ने नाद संभळायछे अने जेटलो जेने भगवाननो निश्चय ने महिमा समझायछे तेने तेटला भुंडा घाट वंध थइ जायछे अने ज्यारे भगवाननो निश्चय यथार्थ थायछे ने यथार्थ महिमा समजायछे त्यारे तेने भुंडा घाटमात्र टळी जायछे, जेम लिंबुनी एक चिरय चुशी होय तो थोडा थोडा दांत अंबाय पण हळवा हळवा चणा चवाय खरा ने जो आखुं लिंबु चुश्युं होय तो चणा चवाय नहि ने मगनो दाणो पराणे पराणे चवाय अने जो घणां लिंबु चुश्यां होय तो रांधेलो भात पण चवाय नहि, तेम भगवाननो निश्चय अने माहात्म्यरूपी जेने खटाइ चडी होय तेनी चार अंतःकरण ने दश इंद्रियोरूप जे डाढ्यो ते सर्वे अंबाइ जायछे, त्यारे ए जीव मनरूप पोतानी डाढ्ये करीने विषयना संकल्परूपी चणाने चाववाने समर्थ थतो नथी, तेमज चित्तरूप पोतानी डाढ्ये करीने विषयनुं चिंतवन करवा समर्थ थतो नथी, तेमज बुद्धिरूप पोतानी डाढ्ये करीने निश्चय करवा समर्थ थतो नथी, तेमज अहंकाररूप पोतानी डाढ्ये करीने विषय संबन्धी अभिमान करवा समर्थ थतो नथी, तेमज पंच ज्ञान इंद्रियो ने पंच कर्म इंद्रियोरूप जे डाढ्यो छे ते डाढ्येकरीने ते ते इंद्रियोना विषयरूप जे चणा तेने चाववाने समर्थ थतो नथी अने जेने यथार्थ भगवाननो निश्चय न होय ने यथार्थ

भगवाननो महिमा जणाणो न होय तेनां इंद्रियो तथा अंतःकरण ते पोतपोताना विषयथकी यथार्थपणे निवृत्ति पामतां नथी अने जे भगवाननुं स्वरूप छे तेतो माया ने मायाना जे गुण तेथकी पर छे अने सर्व विकारे रहित छे पण जीवना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा भासेछे. ते भगवानने विषे जे अल्पमतिवाळा छे ते जेवा जेवा दोष कल्पेछे ते भगवानने विषे तो एके दोष नथी पण कल्पनारानी बुद्धि-मांथी ए दोष कोइ काळे टळवाना नहि, तेमां जे भगवानने कामी समझेछे ते पोते अत्यंत कामी थइ जायछे अने जे भगवानने क्रोधी समझेछे ते पोते अत्यंत क्रोधी थइ जायछे ने जे भगवानने लोभी समझेछे ते पोते अत्यंत लोभी थइ जायछे ने जे भगवानने ईर्ष्यावान् समझेछे ते पोते अत्यंत ईर्षावान् थइ जायछे ए आदिक जे जे दोष भगवानने विषे कल्पेछे तेतो जेम 'सूर्य सामी धूडनी फांट भरीने नांखीए ते पोतानी आंखमां पडेछे' तेम भगवानने विषे जे जातनो दोष कल्पेछे ते दोष पोताने दुःख देछे अने पोतामां गमे तेवा भुंडा स्वभाव होय ने जो भगवानने अतिशय निर्दोष समझे तो पोते पण अतिशय निर्दोष थइ जायछे.

पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "कोइ विषयमां पण पोतानां इंद्रियो तणातां न होय ने अंतःकरणमां पण खोटा घाट थता न होय ने भगवाननो निश्चय पण यथार्थ छे तोपण अपूर्णपणुं रहेछे अने अंतर सुनुं रहेछे. तेनुं शुं कारण छे ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए पण हरिभक्तमां मोटी खोट्य छे जे पोतानुं मन स्थिर थयुंछे ने भगवाननो निश्चय पण अतिशय दृढ छे तोयपण हैयामां अतिशय आनंद आवतो नथी जे "हुं धन्य छुं ने हुं कृतार्थ थयोछुं अने आ

संसारमां जे जीव छे ते काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा तेनेविषे हेरान थता फरेछे अने त्रिविध तापमां रात दिवस बळेछे अने मने तो प्रगट पुरुषोत्तमे करुणा करीने पोतानुं स्वरूप ओळखाव्युं छे ने काम क्रोधादि सर्व विकारथी रहित कर्योछे अने नारद सनकादिक जेवा संत तेना समागममां राख्योछे माटे मारुं मोटुं भाग्य छे' एवो विचार नथी करतो ने आठोपहोर अतिशय आनंदमां नथी वर्ततो ए मोटी खोट्य छे, जेम 'बाळकना हाथमां चिंतामणि दीधो होय तेनुं तेने माहात्म्य नथी एटले तेनो तेने आनंद नथी,' तेम भगवान् पुरुषोत्तम मळ्याछे अने तेनो अंतरमां आठोपहोर केफ रहेतो नथी जे 'मारुं पूर्णकामपणुं थयुंछे' एवुं नथी समजतो ए हरिना भक्तने मोटी खोट्य छे अने ज्यारे कोइ हरिभक्तनो दोष नजरमां आवे त्यारे एम समजवुं जे 'आनो स्वभावतो सत्संगमां न घटे एवो छे तोयपण एने जो सत्संग मळ्यो छे अने ए जो जेवो तेवो छे तोयपण सत्संगमां पड्योछे तो एनो पूर्वजन्मनो अथवा आ जन्मनो संस्कार भारे छे तो आवो सत्संग मळ्यो छे' एम समजीने तेनो पण अतिशय गुण लेवो. एम वार्ता करीने श्रीजिमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने पोताने उतारे पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ २४ ॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि ७ सप्तमीने दिवस प्रभात समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां परमहंसनी जायगानेविषे पधार्या हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो ने धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने आथमणे परथारे उगमणुं मुखारविंद करीने विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज कृपा करीने बोल्या जे, स्वधर्मे युक्त एवो जे भगवाननो भक्त तेना अंतरने विषे तो पोतानुं यथार्थ पूर्णकामपणुं मनातुं नथी अने ते पूर्णकामपणुं तो आत्मनिष्ठा ने भगवानना माहात्म्यनुं ज्ञान तेणे करीनेज थायछे अने ए बेमां जेटली न्यूनता रहेछे तेटली पूर्णकामपणामां न्यूनता रहेछे, माटे ए बे वानां तो भगवानना भक्तने दृढपणे साधवां अने ए बेमां जेटली खामी रहे तेटली तो समाधिमांपण नडेछे अने हमणां अमे एक हरिभक्तने समाधि करावी हती ते तेने तेज अतिशय देखाणुं ते तेजने जोइने चीस पाडवा मांडी ने कह्युं जे 'हुं बळुंछुं' माटे समाधिवाळाने पण आत्मज्ञाननुं जरूर काम पडेछे अने पोतानुं स्वरूप आत्मा न जाणे ने देहने माने तो तेने घणी काच्यप रही जायछे अने अमे ते हरिभक्तने समझाव्युं जे 'तारुं स्वरूप तो आत्मा छे देह नथी ने आ लाडकीबाई नाम अने भाटनो देह ते तुं नथी अने अछेद्य, अभेद्य एवो जे आत्मा ते तारुं स्वरूप छे.' पछी अमे तेने समाधि करावीने कह्युं जे, 'गणपतिने स्थानके चार पांखडीनुं कमळ छे त्यां जइने तारुं स्वरूप जो.' अने ज्यारे समाधिवाळो गणपतिने स्थानके जायछे त्यारे त्यां नाद संभळायछे ने प्रकाश देखायछे अने तेथी पर ब्रह्माना स्थानकनेविषे जायछे त्यारे तेथी नाद पण घणो संभळायछे ने प्रकाश पण तेथी अतिशय घणो देखायछे अने तेथी पर विष्णुने स्थानके जायछे त्यारे तेथी अतिशय नाद संभळायछे ने तेथी तेज पण अतिशय देखायछे, एवी रीते जेम जेम उंचा उंचा स्थानकनेविषे जायछे तेम तेम वधु नाद संभळायछे ने वधु वधु प्रकाश देखायछे अने एवी रीते समाधिमां अतिशय तेज देखायछे अने अतिशय नाद थायछे ने कडाका

अतिशय थायछे ते गमे तेवो धीरज्यवान होय तोपण कायरपणुं आवी जायछे, जो अर्जुन भगवानना अंश हता अने महा शूरवीर हता तोपण भगवाननुं विश्वरूप जोवाने समर्थ थया नहि, माटे एम बोल्या जे 'हे महाराज ! आ रूप जोवाने हुं समर्थ नथी माटे तमारुं जेवुं प्रथम रूप हतुं तेवुं तमारुं दर्शन करावो' एवी रीते एवा समर्थने पण समाधिनेविषे ज्यारे ब्रह्मांड फाटी जाय एवा कडाका थायछे अने जेम समुद्र मर्यादा मेले एवा तेजना समूह देखायछे त्यारे धीरज्य रहेती नथी, ते सारु देह थकी पोतानुं स्वरूप जुदुं समझवुं जोइए अने एवी जे समाधि थायछे तेना बे भेद छे—एकतो प्राणायामे करीने प्राणनो निरोध थायछे ते भेळो चित्तनो पण निरोध थायछे अने बीजो प्रकार ए छे जे चित्तने निरोधे करीने प्राणनो निरोध थायछे, ते चित्तनो निरोध क्यारे थायछे तो ज्यारे सर्व ठेकाणेथी वृत्ति तुटीने एक भगवाननेविषे वृत्ति जोडाय अने ते भगवाननेविषे वृत्ति क्यारे जोडाय तो ज्यारे सर्व ठेकाणेथी वासना तुटीने एक भगवानना स्वरूपनी वासना थाय, त्यारे ते वृत्ति कोईनी हठावी भगवानना स्वरूपमांथी पाछी हठे नहि, जेम कोइ कुवो होय ने ते उपर वीश कोश फरता होय ने तेनो प्रवाह जुदो जुदो चालतो होय त्यारे ते प्रवाहमां जोर होय नहि अने ते वीशे कोशनो प्रवाह भेळो करीए तो नदीना जेवो अतिशय बळवान् प्रवाह थाय ते कोईनो हठाव्यो पाछो हठे नहि, तेम जेनी वृत्ति निर्वासनिक थायछे त्यारे तेनुं चित्त छे ते भगवानना स्वरूपमां जोडायछे अने जेना चित्तमां संसारना सुखनी वासना होय तेने तो श्रोत्र इंद्रिय द्वारे अनंत जातना जे शब्द तेने विषे जुदीजुदी वृत्ति फेलाइ जायछे, तेमज त्वचा इंद्रिय द्वारे हजारो जा-

तना जे स्पर्श तेनेविषे जुदी जुदी वृत्ति फेलाइ जायछे, तेमज नेत्र इंद्रियनी वृत्ति ते हजारो जातनां जे रूप तेनेविषे फेलाई जायछे, तेमज रसना इंद्रियनी वृत्ति ते हजारो जातना, जे रस तेमां फेलाई जायछे, तेमज नासिका इंद्रियनी वृत्ति ते अनंत जातना जे गंध तेमां फेलाई जायछे, तेमज कर्म इंद्रियोनी वृत्तियो पण पोतपोताना विषयने विषे हजारो प्रकारे फेलाई जायछे, एवी रीते दशे इंद्रियो द्वारे एनुं अंतःकरण छे ते हजारो प्रकारे फेलाई गयुंछे. ते ज्यारे चित्त ते भगवाननुं चिंतन करे अने मन ते भगवाननोज घाट घडे अने बुद्धि ते भगवानना स्वरूपनोज निश्चय करे अने अहंकार ते 'हुं आत्मा छुं ने भगवाननो भक्त छुं', एवुंज अभिमान धरे त्यारे एनी एकवासना थइ जाणवी. अने प्राणे करीने जे चित्तनो निरोध थायछे तेतो अष्टांगयोगे करीने थायछे: ते अष्टांगयोग तो यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा अने समाधि ए जे आठ अंग तेणे युक्त छे, अने अष्टांगयोग ते साधनरूप छे ने एनुं फळ ते भगवानने विषे निर्विकल्प समाधि छे, ते ज्यारे एवी निर्विकल्प समाधि थायछे त्यारे प्राणने निरोधे करीने चित्तनो निरोध थायछे अने जो चित्त निर्वासनिक थइने भगवानने विषे जोडायछे तो ते चित्तने निरोधे करीने प्राणनो निरोध थायछे, माटे जेम, अष्टांगयोग साधवे करीने चित्तनो निरोध थायछे तेम भगवानना स्वरूपनेविषे जोडावे करीने चित्तनो निरोध थायछे, माटे जे भक्तनी, चित्तवृत्ति भगवानना स्वरूपनेविषे जोडांणी तेने अष्टांगयोग वगर साधे सधाई रह्यो, माटे अमे कह्यां जे आत्मनिष्ठा अने भगवानना माहात्म्यनुं ज्ञान ए बे साधन ते दृढपणे राखनां अने वर्तमान धर्म छे तेतो भगवाननी

आ एक वातरूप कीर्तन बोलिए ते सांभळो, पछी परमहंसे कह्युं जे हे महाराज ! वहु सारुं तमो वात करो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवानना रसिक कीर्तन गातां गातां जो एक भगवानना स्वरूपमांज रस जणाय तो ठीक छे अने जो भगवानना स्वरूप विना बीजे[3] ठेकाणे रस जणाय तोतो एमां मोटी खोट्य छे, केम जे ए भक्तने जेम भगवानना शब्दमां हेत थायछे ने ते शब्दमां रस जणायछे, तेमज गीत वादित्रना शब्दमां अथवा स्त्रीआदिकना शब्दमां रस जणायछे ने हेत थायछे, माटे ए भक्तने अविवेकी जाणवो. अने भगवान अथवा भगवानना संत तेनां जे वचन तेनेविषे जेवो रस जणायछे तेवोज बीजा विषयना शब्दमां रस जणायछे एवी जे ए मूर्खता तेनो त्याग करवो अने एवी मूर्खतानो त्याग करीने एक भगवानने शब्दे करीनेज सुख मानवुं अने एवी जातनो जे रसिक भक्त छे ते खरो छे अने जेम शब्द तेमज स्पर्श पण एक भगवाननोज इच्छे अने अन्य स्पर्शने तो काळो नाग तथा वळतो अग्नि ते जेवो जाणे त्यारे ते

आज्ञा छे ते जरुर राखवां, जेम ब्राह्मणनो धर्म छे जे नावुं धोवुं ने पवित्रपणे रहेवुं ते कोइ दिवस शूद्रना घरनुं पाणी पिवेज नहि, तेम सत्संगी होय तेने भगवाननी आज्ञामां फेर पाडवोज नहि केमजे, ए भगवाननी आज्ञा पाळे तो तेनी उपर भगवान राजी थायछे अने भगवाननुं माहात्म्यज्ञान तथा वैराग्ये सहित आत्मज्ञान ए बेनी अतिशय दृढता राखवी अने पोतानेविषे पूर्णकामपणुं समजवुं जे 'हवे मारे कांइ न्यूनता रही नथी, एम समझीने निरंतर भगवाननी भक्ति करवी अने ते समझण्यने केफे करीने छकी पण जवुं नहि अने पोताने अकृतार्थपणुं पण मानवुं नहि अने जो अकृतार्थपणुं माने तो एनी उपर जे एवी भगवाननी कृपा थइ ते जाणीए खारापाटमां बीज वाव्युं ते उग्युंज नहि अने जो छकी जइने जेमतेम करवा लागे तो जाणीए अग्निमां बीज नाख्युं ते बळी गयुं, माटे अमे कह्युं तेम जे समझे तेने कोइ प्रकारनी न्यूनता रहे नहि, एम कहीने श्रीजिमहाराज पोताना आसन उपर पधार्या । इति वचनामृतम् ॥२५॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि ११ एकादशीने दिवस बपोरने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने माथे धोळी पाघ बांधी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो तथा बे कानने उपर गुलदावदिनां मोटां मोटां बे पुष्प खोशां हतां तथा पुष्पनो तोरो पाघने विषे खोश्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने परमहंस ताल पखाज लइने कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, हवे कीर्तन बोलवां राखो ने अमे

आ एक वातरूप कीर्तन बोलिए ते सांभळो, पछी परमहंसे कह्युं जे हे महाराज ! बहु सारुं तमो वात करो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवाननां रसिक कीर्तन गातां गातां जो एक भगवानना स्वरूपमांज रस[1] जणाय तो ठीक छे अने जो भगवानना स्वरूप विना बीजे[2] ठेकाणे रस जणाय तोतो एमां मोटी खोट[4] छे, केम जे ए भक्तने जेम भगवानना शब्दमां हेत थायछे ने ते शब्दमां रस जणायछे, तेमज गीत वादित्रना शब्दमां अथवा स्त्रीआदिकना शब्दमां रस जणायछे ने हेत थायछे, माटे ए भक्तने अविवेकी जाणवो. अने भगवान अथवा भगवानना संत तेनां जे वचन तेनेविषे जेवो रस जणायछे तेवोज बीजा विषयना शब्दमां रस जणायछे एवी जे ए मूर्खता तेनो त्याग करवो अने एवी मूर्खतानो त्याग करीने एक भगवानने शब्दे करीनेज सुख मानवुं अने एवी जातनो जे रसिक भक्त छे ते खरो छे अने जेम शब्द तेमज स्पर्श पण एक भगवाननोज इच्छे अने अन्य स्पर्शने तो काळो नाग तथा बळतो अग्नि ते जेवो जाणे त्यारे ते रसिक भक्त साचो, तेमज रूप पण भगवाननुं जोइने परम आनंद पामे ने बीजा रूपने तो जेवो नरकनो ढगलो तथा सडेल कुतरुं तेवुं जाणे ए रसिक भक्त साचो, तेमज रस पण भगवानना महाप्रसादनो होय तेणे करीने परम आनंद पामे पण बीजा जे नाना प्रकारना रस तेने स्वादे करीने आनंदने न पामे ते रसिक भक्त साचो, तेमज भगवानने चढ्या एवा जे तुलसी, पुष्पना हार तथा नाना प्रकारनी सुगंधिए युक्त एवां अत्तर चंदनादिक तेनी सुगंधिने ग्रहण करीने परम आनंद पामे

१ शृंगार रसमय । २ शृंगार व्यतिरिक्त प्रेमादि रस । ३ स्त्रियादिक। ४ पोतानां कल्याणमांथी भ्रष्टतारूप ।

पण कोइ अन्य विषयी जीवे देहे अत्तर चंदनादिक चरच्यां होय अथवा पुष्पना हार पहेर्या होय तेना सुगंधने पामीने राजी नज थाय, एवी रीते पंच विषय भगवान संबन्धी होय तेने विषे अतिशय प्रीतिवान् थाय अने जगत् संबन्धि जे पंच विषय तेने विषे अतिशय अभावे युक्त वर्ते ते रसिक भक्त साचो छे अने रसिक भक्त थइने जेम भगवान संबन्धि विषयने योगे करीने आनंद पामेछे तेमज अन्यसंबन्धी जे शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध तेने योगे करीने आनंद पामेछे तो ए खोटो रसिक भक्त छे केमजे 'जेम भगवानने विषे आनंदने पाम्यो तेमज विषयनेविषे पण आनंद पाम्यो' माटे एवा रसिकपणाने अने एवी उपासनाने खोटी करी नांखवी, कांजे भगवान् तो कांइ खोटा नथी पण एनो भाव खोटो छे अने जेवा अन्य पदार्थने जाण्या तेनाज भगवानने पण जाण्या माटे एनी भक्ति अने एनुं रसिकपणुं ते खोटुं कह्युं, हवे जेम स्थूळ देह अने जाग्रत् अवस्थामां पंच विषयनो विवेक कह्यो तेमज सूक्ष्म देह अने स्वप्न अवस्था तेनेविषे सूक्ष्म पंच विषय छे. ते स्वप्नमां ज्यारे भगवानती मूर्तिने देखीने ते भगवान् संबन्धी शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंधे करीने जेवो आनंद पमाय तेवोने तेवोज जो अन्य पंच विषयने देखिने स्वप्नमां आनंद पमाय तो ते भक्तनुं रसिकपणुं खोटुं छे अने स्वप्नमां केवळ भगवानने संबन्धे करीने आनंद पामतो होय अने अन्य विषयनेविषे उलटा अग्ननी पेठे अभाव रहेतो होय तो ए रसिक भक्त साचो छे अने एम न जाणतो होय तो जे भगवान् स्वप्नमां देखाया तेतो साचा छे पण ए भक्तने तो जेवो भगवानमां प्रेम तेवो अन्य विषयमां प्रेम छे माटे एनी समझण खोटी छे अने एक भगवानना स्वरूपमां लोभाइ रहे ने बीजा विषयमां न लोभाय ते समझण साची

छे अने ज्यारे केवळ भगवाननुंज चिंतवन रहेछे त्यारे चिंतवन करतां करतां शून्य भावने पामी जायछे त्यारे ए भक्तने भगवाननी मूर्ति विना पिंड ब्रह्मांड कांइ भासतुं नथी, पछी एवा शून्यनेविषे भगवाननी मूर्तिने जोतां जोतां प्रकाश थइ आवेछे अने ते प्रकाशमां भगवाननी मूर्ति देखायछे, माटे एवी रीते केवळ भगवानना स्वरूपमां प्रीति होय ए पतिव्रतानी भक्ति छे. अने अमे पण ज्यारे तमे रसिक कीर्तन गावोछो त्यारे आंख्यो मीचीने विचारीए छीए ते आवोज विचार करीए छीए. अने अमारो विचार थोडोज छे पण भगवान् विना ते विचारमां बीजुं कांइ टकी शकतुं नथी. अने भगवानना स्वरूपमांज रसिक प्रीति छे तेमां जो कोइ विषय आडो आवे तो तेनुं माथुं उडी जाय एवो अमारो बळवान् विचार छे. अने तमे जेम कीर्तन जोडी राखोछो तेम अमे पण आ वात करी एटलुं ए कीर्तन जोडी राख्युंछे ते तमारी आगळ कह्युं, एम श्रीजिमहाराजे पोतानुं मिष लइने पोताना भक्तने अर्थे वात करी देखाडी । इति वचनामृतम् ॥२६॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि १२ द्वादशीने दिवस श्रीजिमहाराज दिवस उग्या पहेलां श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां परमहंसनी जायगाने विषे पधार्या हता ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो तथा धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो तथा खेस पहेर्यो हतो ने ओटा उपर आथमणुं मुखारविंद राखीने विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज अर्ध घडीसुधी तो पोतानी नासिकाना अग्र सामुं जोइ रह्या ने पछी बोल्या जे, परमेश्वरने भजवानी तो सर्वने इच्छा छे पण समझणमां फेर रहेछे, माटे जेनी आवी समझण होय तेना

हृदयमां भगवान् सर्व प्रकारे निवास करीने रहेछे. तेनी विगत जे जे एम समझतो होय जे 'आ पृथ्वी जेनी राखी स्थिर रहीछे ने डोलावी डोलेछे तथा आ तारामंडळ जेनुं राख्युं अधर रह्युंछे तथा जेना वरसाव्या मेघ वर्षेछे तथा जेनी आज्ञाए करीने सूर्य चंद्र उदय अस्तपणाने पामेछे तथा चंद्रमानी कळा वधे घटेछे तथा पाळ विनानो समुद्र जेनी मर्यादामां रहेछे तथा जळना बिंदुमांथी मनुष्य उत्पन्न थायछे अने तेने हाथ, पग, नाक, कान ए आदिक दश इंद्रियो थइ आवेछे तथा आकाशने विषे अधर जळ राखी मुक्युंछे अने तेमां गाज विज थायछे, एवां अनंत आश्चर्य छे ते सर्वे मने मळ्या एवा जे भगवान् तेनां कर्याज थायछे' एम समझे पण प्रगट प्रमाण जे भगवान् ते विना बीजो कोइ ए आश्चर्यनो करनारो छे एम माने नहि अने 'पूर्वे जेजे अनंत प्रकारनां आश्चर्य थइ गयांछे तथा हमणां जे थायछे तथा आगळ थशे ते सर्वे मने मळ्या एवा जे प्रत्यक्ष भगवान् ते वतेज थायछे' एम समझे. अने वळी पोते एमज समझतो होय जे 'चाये कोइ मारी उपर धूड नांखो, चाये कोइ गमे तेवुं अपमान करो, चाये कोइ हाथीए वेसाडो, चाये कोइ नाक कान कापीने गधेडे वेसाडो, तेमां मारे समभाव छे' तथा जेने रूपवान् एवी यौवन स्त्री अथवा कुरूपवान् स्त्री अथवा वृद्ध स्त्री तेने विषे तुल्यभाव रहेछे तथा सुवर्णनो ढगलो होय तथा पथ्थरनो ढगलो होय ते वेयने जे तुल्य जाणेछे, एवी जातना ज्ञान, भक्ति, वैराग्यादिक जे अनंत शुभ गुण तेणे युक्त जे भक्त होय तेना हृदयमां भगवान् निवास करेछे पछी ते भक्त जे ते भगवानने प्रतापे करीने अनंत प्रकारनां ऐश्वर्यने पामेछे ने अनंत जीवना उद्धारने करेछे अने एवी सामर्थिए युक्त थको पण अन्य जीवना मान अपमानने सहन करेछे, एपण मोटी सामर्थि

छे, कांजे समर्थ थका जरणा करवी ते कोइथी थाय नहि, एवी रीते जरणा करे तेने अति मोटा जाणवा अने ए समर्थ तो केवो जे, एना नेत्रमां भगवान् जोनारा छे ते माटे ब्रह्मांडमां जेटला जीवप्राणी छे तेना नेत्रने प्रकाश करवाने समर्थ थायछे अने एना पगमां चालनारा भगवान् छे ते माटे ब्रह्मांडमां सर्वे जीवना पगनेविषे चालनानी शक्तिने पोषण करवाने ए समर्थ थायछे, एम ए संतनी सर्वे इंद्रियोमां भगवान् रह्याछे ते माटे ए संत तो ब्रह्मांडमां सर्वे जीवोनां इंद्रियोने प्रकाश करवाने समर्थ थायछे, माटे ए संततो सर्व जगतना आधाररूप छे, ते तुच्छ जीवनुं अपमान सहे ते एमनी ए अतिशय मोट्यप छे अने एवी रीतनी क्षमावाळा छे तेज अति मोटा छे अने जे आंख्यो काढीने पोताथी गरीब होय तेने बीवरावे छे ने मनमां जाणे जे 'हुं मोटो थयो छुं' पण ए मोटो नथी अथवा सिद्धाइ देखाडीने लोकोने डरावेछे एवा जे जगतमां जीव छे ते भगवानना भक्त नथी एतो मायाना जीव छे अने यमपुरीना अधिकारी छे अने एवानी जे मोट्यप छे ते संसारना मार्गमां छे. जेम, संसारमां जेने घोडु चडवा न होय तेथी जेने घोडु होय ते मोटो अने एक घोडु जेने होय तेथी जेने पांच घोडा होय ते मोटो एम जेम जेम अधिक संपत्ति होय तेम संसार व्यवहारमां अति मोटो कहेवाय पण परमेश्वर भज्यामां ए मोटो नथी अने जेनी मति एवी होय जे 'आ स्त्री तो अतिशय रूपवान् छे अने आ वस्त्र तो अतिशय सारुं छे अने आ मेडीतो घणी सारी छे अने आ तुंबडीतो अतिशय सारी छे ने आ पात्रतो अतिशय सारुं छे एवी रीतना जे गृहस्थ तथा भेखधारी ते सर्वे तुच्छ बुद्धिवाळा छे, त्यारे तमे कहेशो जे एनुं कल्याण थशे के नहि थाय? तो

कल्याणतो पामर जेवो सत्संगमां होय तेनुंए थायछे, पण मोरे कही एवी जे संतता ते एमां कोई दहाडे आवती नथी तथा पूर्वे कह्या एवा जे संत तेना जे गुण ते पण एवामां आवता नथी, कांजे ए पात्र थयो नथी, एम वार्ता करीने जय सच्चिदानंद कहीने श्रीजिमहाराज दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ २७ ॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि १४ चौदशने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना ओरडानी हारे जे ओरडो तेनी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुने जमवानी पंक्ति थइ हती.

ते समे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे सत्संगी सत्संगमांथी पाछो पडवानो होय तेने असद्वासनानी वृद्धि थायछे ने तेने प्रथम तो दिवसे दिवसे सत्संगीमात्रनो अवगुण आवेछे ने पोताना हृदयामां एम जाणे जे 'सर्वे सत्संगी तो अणसमझु छे ने हुं समझु छुं' एम सर्वथी अधिक पोताने जाणे अने रात्रि दिवस पोताना हृदयामां मुंझाया करे अने दिवसमां कोइ ठेकाणे सुखे करीने बेसे नहि. अने रात्रिमां सुवे तो निद्रा पण आवे नहि अने क्रोध तो क्यारेय मटेज नहि अने अर्धबळेला काष्ठनी पेठे धुंधवाया करे, एवुं जेने वर्ते त्यारे तेने एम जाणीए जे 'ए सत्संगमांथी पैडवानो थयो छे' अने एवो होय अने ते जेटला दिवस सत्संगमां रहे पण तेना हृदयामां कोइ दिवस सुख आवे नहि अने अंते पाछो पडी जायछे.

अने सत्संगमां जेने वधारो थयानो होय तेने शुभ वासना वृद्धि पामे छे त्यारे तेने दिवसे दिवसे सत्संगीमात्रनो हृदयामां गुणज आवे अने

सर्व हरिभक्तने मोटा समझे ने पोताने न्यून समझे ने आठे पहोर तेना हइयामां सत्संगनो आनंद वर्त्या करे, एवां लक्षण ज्यारे होय त्यारे जाणीए जे 'शुभ वासना वृद्धि पामीछे' अने ते जेम जेम वधुवधु सत्संग करे तेम तेम वधुवधु समास थतो जाय अने अतिशय मोट्यपने पामी जायछे एवी रीते श्रीजिमहाराज वात करीने जय सच्चिदानंद कहीने पोताने आसने पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ २८ ॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि १५ पुन्यमने दिवस सांझने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने धोळा पुष्पना हार पहेर्या हता ने पाघने विषे धोळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रश्न पुछो, त्यारे गोपाळानंदस्वामीए पुछ्युं जे "धर्म, ज्ञान, वैराग्य सहित जे भक्ति तेनुं बळ वृद्धिने केम पामे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एना उपाय चार छे एकतो पवित्र देश बीजो रुडो काळ त्रीजी शुभ क्रिया अने चोथो सत्पुरुषनो संग, तेमां क्रियानुं समर्थपणुं तो थोडुं छे ने देशकाळ ने संगनु कारण विशेष छे, केम जे, जो पवित्र देश होय, पवित्र काळ होय अने तम जेवा संतनो संग होय तो त्यां क्रिया रुडिज थाय अने जो सिंध जेवो भुंडो देश होय तथा भुंडो काळ होय तथा पातर्यो ने

१ सद्ध्यान, सच्छास्त्र, सद्दीक्षा अने सन्मन्त्रनुं पण उपलक्षण जाणी लेवुं.

भडवा अथवा दारु मांसना भक्षण करनारा तेनो संग थाय तो क्रिया-पण भुंडीज थाय, माटे पवित्रदेशमां रहेवुं अने भुंडो काळ वर्ततो होय त्यांथी आघुं पाछुं खसी निसरवुं अने संग पण प्रभुना भक्त अने पंच वर्तमाने युक्त एवा जे ब्रह्मवेत्ता साधु तेनो करवो, तो हरिभक्तने परमेश्वरनी जे भक्ति तेनुं बळ अतिशय वृद्धि पामे, ए प्रश्ननो ए उत्तर छे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! कोइक हरिभक्त होय तेने प्रथम तो अंतर गोबरुं सरखुं होय अने पछी तो अतिशय शुद्ध थइ जायछे, ते एने पूर्वनो संस्कार छे तेणे करीने एम थयुं? के भगवाननी कृपाए करीने एम थयुं? के ए हरिभक्तने पुरुष प्रयत्ने करीने थयुं?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, पूर्वने संस्कारे करीने जे सारुं अथवा नरसुं थाय तेतो सर्व जगतना जाण्यामां आवे, जेम भरतजीने मृगलामां आसक्ति थइ एवे ठेकाणे प्रारब्ध लेवाय अथवा कोइ कंगाल होय ने तेने मोटुं राज्य मळे एवी रीते थाय तेतो सर्व जगतना जाण्यामां आवे, त्यारे तेने तो प्रारब्ध जाणवुं. पछी श्रीजिमहाराजे पोतानी वात करी जे, अमे जेजे साधन कर्यां हतां तेनेविषे कोइ रीते देह रहेज नहि ने तेमां पण देह रह्यो तेने प्रारब्ध कहीए, ते शुं तो अमे श्रीपुरुषोत्तमपुरीमां रहेता त्यारे केटलाक मास सुधीतो वायु भक्षण करीने रह्या तथा त्रण चार गाउना पहोळा पाटवाळी एक नदी हती तेने विषे एक चार शरीर तणातुं मेल्युं तथा शियाळो उनाळोने चोमासुं तेनेविषे छाया

१ अशुभ ध्यानादिकनुं पण उपलक्षण जाणी लेवुं । २ पूर्वजन्ममां संपादन करेलुं अने आ देहनी उत्पत्तिना कारणभूत एवुं प्रारब्धकर्म आ प्रकारणमां संस्कारशब्दथी कहेलुं जाणवुं । ३ भगवानने प्रारब्धकर्मनो संबन्ध नथी तथापि मनुष्यनाट्यना अनुकरणथी एवी रीते कहेछे ।

विना एक कौपीनभर रहेता तथा झाडीनेविषे वाघ हाथी तथा अरणापाडा तेनी भेले फरता, एवां एवां अनंत विकट ठेकाणां तेनेविषे फर्या तोयपण कोइ रीते देह पड्यो नहि, त्यारे एवे ठेकाणे तो प्रारब्ध लेवुं अने जेम सांदीपनी नामे ब्राह्मण तेनो पुत्र ते नरकथी मुकायो अने वळी जेम पांच वर्षना ध्रुवजीए भगवाननी स्तुति करवा मांडी त्यारे वेदादिकना अर्थनी सहजे स्फूर्ति थइ, एवी रीते अति शुद्धभावे करीने प्रसन्न थया जे भगवान् तेनी इच्छाए करीने तथा ते भगवानने वरदाने करीने अथवा अति शुद्धभावे करीने प्रसन्न थया जे भगवानना एकांतिक साधु तेना वरदाने करीने जे रुडी बुद्धि थाय तेने भगवाननी कृपा जाणवी । अने रुडा साधुनो संग करे ने पोते पोताने विचारे करीने जे सारो थाय तेने तो पुरुषप्रयत्न कहीए, एम वात करीने जय सच्चिदानंद कहीने श्रीजिमहाराज हसता हसता पोताने आसने पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ २९ ॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि १ पडवाने दिवस सांझने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी हाखे उत्तरादे द्वार ओरडो छे तेनी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने धोळा पुष्पना हार पहेर्या हता ने बे कानने विषे धोळा पुष्पना तोरा लटकता हता ने धोळा पुष्पना बेरखा पहेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने मुनिमंडळ कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, हवे तो प्रश्न उत्तर करो. त्यारे

श्रीजिमहाराज प्रत्ये दीनानाथ भट्ट पुछ्युं जे "हे महाराज! कोइक समे तो हजारो घाट थाय पण तेनो मनने विषे डंस वेसे नहि अने कोइक समे तो अल्प घाट थाय तेनो पण मनने विषे डंस वेसेछे तेनुं कारण शुं छे? अने भगवानना भक्तने ए मनना घाटनी निवृत्ति थयानो उपाय शो छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एनुं कारण तो गुण छे, ते ज्यारे तमोगुण प्रधान होय ने तेमां घाट थाय त्यारे सुषुप्ति सरखी अवस्था रहेती होय माटे तेमां घाटनो डंस वेसे नहि अने ज्यारे सत्वगुण वर्ततो होय त्यारे प्रकाश जेवुं वर्ते ने ते समे जे जे घाट थाय तेने विचारे करीने खोटा करी नाखे, माटे ते घाटनो पण डंस वेसे नहि अने ज्यारे रजोगुण वर्ते त्यारे जे घाट थाय तेनो मनने विषे डंस वेसे, माटे डस वेसेछे ने नथी वेसतो तेनुं कारण तो गुणनी वृत्ति छे अने बुद्धिवान् होय तो आ वातने विचारीने जे समे घाट थाय ते समे ते घाट सामुं जुवे तो पोतामां जे गुण प्रधान वर्ततो होय तेने ओळखे अने घडीघडी पळपळमां सूक्ष्म घाट थायछे तेतो कोइना ओळख्यामां आवे नहि अने तमारा जेवो कोइक बुद्धिवान् होय तो आखा दिवसमां बे त्रण चार स्थूल घाट थाय ते तेना ओळख्यामां आवे अने जे गुणने प्रधानपणे पोतामां घाट थता होय ते सामी दृष्टि राखे अने सत्संगमां जे भगवाननी वार्ता थाय तेने धार्या विचार्या करे तो आ सत्संगनो प्रताप एवो छे जे, जे गुणना घाट थता होय ते घाटनी तेने निवृत्ति थइ जायछे अने निरुत्थान थइने अखंड परमेश्वरना स्वरूपनुं चिंतवन थायछे अने सत्संग विना तो बीजां कोटि साधन करे पण तेने घाटनी तथा रजोगुण आदिक गुणनी निवृत्ति थाय नहि अने जो निष्कप-

१ मायिक विषयभोगने संपादन करवानो संकल्प। २ वासना।

टपणे करीने सत्संग करे ने परमेश्वरनी वार्ताने धारे विचारे तो ए मलिन घाटनो नाश थायछे, माटे सत्संगनो प्रताप तो अतिशय मोटो छे अने बीजां साधन छे ते कोइ सत्संग तुल्य थाय नहि, कांजे कोइ साधने करीने जे घाटनी निवृत्ति नथी थती तेनी निवृत्ति सत्संगमां थायछे, ते कारणपणा माटे जेने रजोगुण संबन्धी मलिन घाट टाळवा होय तेने मन कर्म वचने निष्कपटपणे सत्संग करवो तो सत्संगना प्रतापथी ए घाटनी निवृत्ति थइ जशे। इति वचनामृतम् ॥३०॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि २ बीजने दिवस सांझने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां.

ते समे योगानंदमुनिए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! भगवानना भक्त बे होय. तेमां एकतो निवृत्ति[1] पकडीने बेसी रहे ने कोइने वचने करी दुःखवे नहि अने एकतो परमेश्वर अथवा परमेश्वरना भक्त तेनी अन्न वस्त्र पुष्पादिके करीने सेवा कर्या करे पण वचने करीने कोइने दुःखवाय खरुं, एवी रीतना बे भक्त तेमां कयो श्रेष्ठ छे?" पछी श्रीजिमहाराजे एनो उत्तर कर्यो नहि अने मुक्तानंदस्वामी तथा ब्रह्मानंदस्वामीने तेडावीने ए प्रश्न संभळाव्यो ने पछी कह्युं जे एनो उत्तर तमे करो, त्यारे ए बे जणे उत्तर कर्यो जे, वचने करीने कोइने दुःखवेछे पण भगवान् अथवा संतनी सेवा[2] करेछे ते श्रेष्ठ छे अने निवृत्तिने विषे रहेछे ने कोइने दुःखवतो नथी ने तेथी भगवाननी

१ अहिंसा उपशमादि निवृत्ति मार्गमां तत्पर थइने ।

२ भगवान् अथवा भक्तनी सेवा माटेज बीजा हरकोइ भगवद्भक्तने ।

तथा संतनी कांइ सेवा थती नथी तेने असमर्थ सरखो जाणवो अने जे टेल चाकरी करे तेने तो भक्तिवाळो कहीए, ते भक्तिवाळो श्रेष्ठ छे। पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ए उत्तर ठीक कर्यो अने एवी भक्तिवाळो होय ने भगवानना वचनमां दृढपणे रह्यो होय ने तेनेविषे कांइक अल्प सरखो दोष देखाय ते सामुं जोइने तेनो अवगुण लेवो ते मोटी खोट्य छे अने एवी रीते दोष जुवे त्यारे तो परमेश्वरे जीवना कल्याणने अर्थे देह धर्यो होय तेमां पण दोषना जोनाराने खोट्य देखाय खरी अने अति मोटा भगवानना भक्त होय तेमां पण खोट्य देखाय खरी अने ते दोषने जोनारे खोट्य काढी तेणे करीने परमेश्वरना अवतार अथवा संत ते शुं कल्याणकारी नहि? तेतो कल्याणकारीज छे पण जेने अवळी बुद्धि होय तेने अवळुंज सुझे, जेम शिशुपाळ एमज कहेतो जे पांडव तो वर्णसंकर छे ने पांच जणे एक स्त्री राखी माटे अधर्मी पण छे अने कृष्ण छे तेपण पाखंडी छे केमजे जन्म थयो त्यांथी प्रथमतो एणे एक स्त्री मारी त्यारपछी बगलो मार्यो वाछडो मार्यो ने मधना पुडा उखेड्या तेणे करीने एने मधुसूदन कहेछे पण एणे कांइ मधुनामे दैत्य मार्यो नथी ने वर्णसंकर एवा जे पाडव तेणे पूज्यो तेणे करीने शुं ए भगवान् थयो?" एवी रीते भगवानने भगवानना भक्तनो अवगुण आसुरी बुद्धिवाळो शिशुपाळ तेणे लीधो, पण भगवानना भक्त हता तेणे एवो अवगुण काइ न लीधो, माटे एवी जातनो जेने अवगुण आवे तेने आसुरिबुद्धिवाळो जाणवो। त्यारे फरीने ते मुनिए पुछ्युं जे "हे महा-

१ कोइने भगवान् अथवा तेमना भक्तनी सेवामा प्रेरवा निमित्ते करेला वाक्पारुष्यरूप दूषण। २ पोताना दृष्टान्तथी भगवानना स्वेच्छाथी थएला प्रादुर्भावने पण प्रारब्ध कर्मथी थएला कहे अने भगवानना दिव्य चरित्रोमा मायिकपणुं कल्पे।

राज मोटा जे प्रभुना भक्त होय तेनो तो अवगुण आवे नहि पण जेवो तेवो हरिभक्त होय तेनो अवगुण तो आवे खरो ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम तमे[१] समझोछो तेम नानप्य मोत्प्य नथी, मोत्प्य तो प्रत्यक्ष भगवानना निश्चये करीने तथा ते भगवाननी आज्ञाने विषे वर्तवे करीने छे अने ए बे वांनां जेने न होय ने ते गमे तेनो व्यवहारे करीने मोटो होय तोपण ए नानोज छे अने प्रथम कही एवी मोत्प्य तो आज आपणा सत्संगमां सर्व हरिभक्तने विषे छे केमजे आज जे सर्व हरिभक्त छे ते एम समझेछे जे 'अक्षरातीत एवा जे भगवान् पुरुषोत्तम ते अमने प्रत्यक्ष मळ्याछे अने अमे कृतार्थ थया छीए' एम समझीने प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञामां रह्या थका ते भगवाननी भक्ति करेछे माटे एवा जे हरिभक्त तेनो कांइक देहस्वभाव[२] जोइने तेनो अवगुण लेवो नहि अने जेने अवगुण लीधानो स्वभाव होय तेनी तो आसुरी बुद्धि थइ जायछे । इति वचनामृतम् ॥ ३१ ॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि ३ त्रीजने दिवस प्रभातसमे श्रीगढडा मध्ये श्रीजिमहाराज दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने धोळी चादर ओढी हती ने ललाटने विषे केसरनी आड्य करी हती ने धोळा पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पाघने विषे धोळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने मुनि कीर्तन गावता हता.

१ व्यवहारदृष्टिथी नानप्य मोत्प्य । २ किंचित् आळसादिरूप देहथी थएलो दोष अने किंचित् कटुक भाषणादिरूप स्वभाव दोष ।

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे सांभळो एक प्रश्न करीए, त्यारे मुनि तथा हरिभक्ते कह्युं जे हे महाराज पुछो? पछी श्रीजिमहाराज घणीक वार सुधी विचारीने बोल्या जे, आ संसारमां जे विषयी जीव होय ते पंच विषय विना रही शके नहि, ते जेम ए विमुख जीवने पंच विषय छे तेम हरिजनने पण पंच विषय छे पण तेमां भेद छे, ते भेद केम छे तो विषयी जीवतो भगवान् विना अन्य जे ग्राम्य विषय तेने भोगवेछे अने भगवानना भक्त छे तेने तो भगवाननी कथा सांभळवी तेज श्रोत्रनो विषय छे अने भगवानना चरणारविंदनो स्पर्श करवो अथवा संतना चरणनी रजनो स्पर्श करवो ते त्वचानो विषय छे अने भगवाननां अथवा संत तेनां दर्शन करवां ते नेत्रनो विषय छे अने भगवाननो प्रसाद लेवो तथा भगवानना गुण गाववा ते जीभनो विषय छे अने भगवानने चढ्यां एवां जे पुष्पादिक तेनी सुगंधी लेवी ते घ्राणनो विषय छे, एवी रीते विमुख अने हरिभक्तना विषयमां भेद छे अने एवी रीतना विषय विना तो हरिभक्त पण रहेवातुं नथी. अने नारद सनकादिक जेवा अनादि मुक्त छे तेणे पण एवा पंच विषय विना रहेवातुं नथी ते समाधिमां घणा काळ रहेछे पण ते समाधिमांथी नीकळीने भगवाननी कथा कीर्तन श्रवणादिक विषयने भोगवेछे अने जेम पक्षी होय ते पोताना माळाने मुकीने चरवा नीकळेछे ते चारो करीने रात्रिसमे पोतपोताना माळामां जइने विराम करेछे पण पोतपोताना स्थानकने कोइ दिवस भुलीने बीजाने स्थानके जतां नथी. तेम भगवानना भक्त छे ते

१ सगुण निर्गुणपणे करीने। एटले विमुख जीवना विषयो भगवत्संबन्धे रहित होवाथी सगुण (बन्धनकर्ता) छे अने भक्तना जे विषयो छे ते भगवत्संबन्धी होवाथी निर्गुण (बंधनकर्ता नहि) छे माटे महान् भेद छे।

भगवाननी कथा कीर्तन श्रवणादिक एवो जे चारो तेने चरीने पोतानो माळो जे भगवाननुं स्वरूप तेमां जइने विराम करेछे अने वळी पशु पक्षी सर्वे जीव जेम पोतपोतानो चारो करीने पोतपोताने स्थानके जइने विराम करेछे तेम मनुष्य पण जेजे कार्य होय तेने अर्थे देश विदेश जायछे पण पोताने घेर आवेछे त्यारे निरांत करीने बेसेछे, ए सर्व दृष्टांत सिद्धांत कह्यां ते उपर तमे सर्वे हरिभक्तने अमे प्रश्न पुछीए छीए जे "जेम विमुख जीव ग्राम्य पंचविषयमां बंधाणा छे ने ते विषय विना पळमात्र चालतुं नथी, तेम तमे भगवाननी कथा वार्तानुं जे श्रवणादिक ते रूपी जे विषय तेमां दृढपणे बंधाइने एना विषयी थया छो के नहि?" अने वळी बीजो प्रश्न पुछीए छीए जे "जेम पक्षी चारो करीने पोताना माळामां आवेछे तेम तमे सर्वे भगवाननी कथा कीर्तनादिक रूपी चारो करीने पाछा भगवानना स्वरूपरूपी माळामां विराम करोछो? के बीजे ज्यां त्यां विराम करोछो? अने वळी जेम धणीयातुं ढोर होय ते सीममां चरीने सांझे पोताने खीले आवेछे अने जे हरायुं ढोर होय ते खीले आवे नहि अने जेनुं तेनुं खेतर खाइने ज्यां त्यां बेसी रहे पछी कोइक धोका मुके कां वाघ आवे तो मारे, तेम तमे ते धणीयाता ढोरनी पेठे पोताने खीले आवोछो? के हराया ढोरनी पेठे कोइनुं खेतर खाइने ज्यां त्यां बेसीने विराम करोछो?" ए सर्वे प्रश्ननो उत्तर पोताना अंतरमां विचारीने मोटा मोटा हो ते करो? पछी मुनि तथा हरिभक्त सर्वे जुदा जुदा बोल्या जे, हे महाराज! *भगवाननी कथा कीर्तनादिकना विषयी पण थया छीए* अने भगवाननी मूर्तिरूपी जे माळो तथा खीलो तेने मुकीनेबीजे ठेकाणे रहेता पण नथी, ते वार्ताने सांभळीने श्रीजिमहाराज घणुं प्रसन्न थया.

अने वळी ते ने ते दिवस वपोर नमते श्रीजिमहाराज दादाखाचरना दरबार वचे लिंबडातळे ढोलिया उपर विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने पोते श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर सन्मुख विराजमान हता अने मुनि कीर्तन बोलता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे हवे तो प्रश्न उत्तर करो? पछी दीनानाथभट्टे तथा ब्रह्मानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "कोइ समे तो भगवानना भक्तना हृदयमां आनंदथी भगवाननुं भजन स्मरण थायछे ने भगवाननी मूर्तिनुं चितवन थायछे अने कोइ समे तो अंतर डोळाइ जायछे ने भजन स्मरणनुं सुख आवतुं नथी तेनुं शुं कारण छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एने भगवाननी मूर्ति धार्यानी युक्ति आवडती नथी, त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "केवी रीते युक्ति जाणवी?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, युक्तितो एम छे जे, अंतःकरणने विषे गुणनो प्रवेश थायछे ते ज्यारे सत्त्वगुण वर्ततो होय त्यारे अंतःकरण निर्मळ वर्ते ने भगवाननी मूर्तिनुं भजन स्मरण सुखे थाय अने ज्यारे रजोगुण वर्ते त्यारे अंतःकरण डोळाइ जाय ने घाट-संकल्प घणा थाय ने भजन स्मरण सुखे थाय नहि अने ज्यारे तमोगुण वर्ते त्यारे तो अंतःकरण शून्य वर्ते, माटे भजनना करनाराने गुण ओळखवा अने जे समे सत्त्वगुण वर्ततो होय ते समे भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं अने तमोगुण ज्यारे वर्ते त्यारे कशो घाट थाय नहि,ने शून्य सरखुं वर्ते तेमां पण भगवाननुं ध्यान न करवुं अने ज्यारे रजोगुण वर्ततो होय त्यारे घाट–संकल्प घणा थाय माटे ते समे भगवाननुं ध्यान करवुं नहि अने ते समे तो एम जाणवुं जे "हुं तो संकल्प थकी जुदो छुं ने संकल्पनो

जाणनारो छुं ने ते मारे विषे अंतर्यामिरूपे पुरुषोत्तम भगवान् सदाकाळ विराजेछे' अने ज्यारे रजोगुणनो वेग मटी जाय त्यारे भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं अने रजोगुण वर्ततो होय त्यारे संकल्प घणा थाय ते संकल्पने जोइने मुंझावुं नहि. केमजे, अंतःकरणतो जेवुं नानुं छोकरुं तथा वानरुं तथा कुतरुं तथा वाळकनो रमाडनार तेवुं छे अने ए अंतःकरणनो एवो स्वभाव छे ते विना प्रयोजन चाळा कर्या करे, माटे जेने भगवाननुं ध्यान करवुं तेने अंतःकरणना घाटने जोइने कचवाइ जवुं नहि ने अंतःकरणना घाटने मानवा पण नहि ने पोताने ने अंतःकरणने जुदुं मानवु अने पोताना आत्माने जुदो मानीने भगवाननुं भजन करवुं । इति वचनामृतम् ॥ ३२ ॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि ५ पंचमीने दिवस पाछलो पहोर दिवस हतो त्यारे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी जोडे जे ओरडो तेनी ओसरीए उगमणे मुखारविंदे ढोलिया उपर विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे कसुंबी रंगने छेडे रेटो बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समे मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवानने प्रसन्न करवानां साधन अनंत प्रकारनां शास्त्रमां कह्यांछे पण ते मध्ये एवुं एक साधन कयुं बळवान् छे जे समग्र साधन कर्ये जेवा भगवान् प्रसन्न थाय तेवा एक साधने करीने भगवान् राजी थाय, ते एवो एक उ-

१ एम जाणीने उच्च स्वरथी भगवानना नामनु उच्चारण करवु । २ चंचळ स्वभाव वाळु छे । ३ धर्म, ज्ञान, वैराग्य आदिक ।

पाय कहो?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एकज साधने करीने भगवान् राजी थाय ते कहीए ते सांभळो जे, भगवाननो जे दृढ आशरो एज एक सर्व साधनमां मोटुं साधन छे तेणे करीने भगवान् राजी थायछे अने ते आशरो अतिदृढ जोइए जेने विषे कांइ पोल रहे नहि, ते आशरामां त्रण भेद छे एक मूढपणे करीने भगवाननो आश्रय थायछे ते अतिमूढ होय तेने ब्रह्मा जेवो होय ते आश्रयमां डोलावे तोयपण डोले नहि. अने बीजो प्रकार ए छे जे, भगवानमां जे प्रीति तेणे करीने भगवाननो दृढ आशरो थायछे ते जेने दृढ प्रीति होय ते परमेश्वरने मुकीने बीजा पदार्थमां जोरावरी प्रीति करे तोयपण थती नथी एवी रीते दृढ प्रीतिए करीने भगवाननो दृढ आशरो कहेवायछे अने त्रिजो प्रकार ए छे जे, जेने बुद्धि विशाळ होय ते भगवाननुं सगुणनिर्गुणपणुं तथा अन्वयव्यतिरेकपणुं तेने समझतो होय अने भगवाननी मायाथकी जेजे सर्ग थयोछे तेने समझतो होय अने भगवानना

---

१ महाविश्वासपूर्वक । २ शरण–उपायपणे आश्रय करवो ते, एटले 'हुं तमारा अपराधमात्रना स्थानरूप, अकिंचन अने अनन्यगति छुं, माटे मारा अभीष्टमां तमेज उपायभूत थाओ' आवी भगवाननी प्रार्थना करवी ते । "सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज" "मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते" "मां हि पार्थ ! व्यपाश्रित्य" "श्रीकृष्णदेवं शरणं प्रपन्नोऽस्मि स पातु माम्" "येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः" इत्यादि वचनो छे । ३ भगवान् सिवाय बीजा उपायनुं अवलंबन । ४ आशरो तो एकज छे, परंतु त्रण प्रकारथी थायछे माटे "आशरामां त्रण भेद छे" एम कह्युं छे । ५ सच्छास्त्र अने सत्पुरुषना वचनमां प्रह्लाद आदिकनी पेठे केवळ दृढ विश्वासथी । ६ व्रजवासिओनी पेठे । ७ नारद सनकादिकनी पेठे । ८ ज्ञानानंदादि दिव्यगुणोए सहित । ९ सर्वदा मायिकगुणे रहित । १० सातमा वचनामृतमां कह्युं छे ।

जे पृथ्वीने विषे अवतार थायछे; तेनी रीतने समझतो होय अने जगतनी उत्पत्तिकाळे भगवान् जे प्रकारे अक्षररूपे वर्तेछे तथा पुरुषप्रकृतिरूपे वर्तेछे तथा विराट्पुरुषरूपे वर्तेछे तथा ब्रह्मादिक प्रजापतिरूपे वर्तेछे तथा जीवना कल्याणने अर्थे नारद सनकादिकरूपे वर्तेछे ए सर्व रीतने समझी जाणे अने पुरुषोत्तम भगवानने सर्वथी पर ने निर्विकार समझतो होय, एवी रीते जेनी दृष्टि पहोंचती होय तेने बुद्धिए करीने भगवाननो दृढ आशरो छे ते बीजानो टाळ्यो टळे नहि ने पोतानो पण टाळ्यो टळे नहि अने भगवान् मनुष्यदेहने ग्रहण करीने समर्थपणे अथवा असमर्थपणे वर्तता होय तो तेने देखीने तेनी बुद्धिने विषे भ्रांति थाय नहि.

एम कहीने पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कहोतो तमने एक प्रश्न पुछुं, त्यारे मुक्तानंदस्वामी बोल्या जे पुछो महाराज, पछी एम पुछ्युं जे "अमे कह्यां जे त्रण अंग तेमां तमारुं कयुं अंग छे? अने ए त्रण अंग भगवानना भक्तने मिश्रित होय पण तेमां जे अंग प्रधान होय तेनुं ते अंग कहेवाय, तो मूढपणुं प्रीति अने समझण ए जे त्रण अंग तेमां तमारुं कयुं अंग छे?" पछी मुक्तानंदस्वामी तथा ब्रह्मानंदस्वामी बोल्या जे, अमारे तो समझणनुं अंग छे अने बीजा साधुए पण जेने जे अंग हतां ते कह्यां । इति वचनामृतम् ॥ ३३ ॥

१ गीतामां "बहूनि मे व्यतीतानि" आ श्लोकने आरंभीने "जन्म कर्म च मे दिव्यम्" आ श्लोकपर्यन्त पांच श्लोकमां कहेलीं । २ जड चैतन्य सर्व जगत् भगवाननुं शरीर छे तेमां पोते भगवान् तेना आत्मा (धारक, नियन्ता अने स्वामी) पणे रह्याछे तेथी अक्षरादिरूपे पोतेज वर्तेछे एम कहेछे । "यस्याक्षरं शरीरं" ,"यस्यात्मा शरीरं" "यस्य पृथिवी शरीरं" "तत्सर्वं वै हरेस्तनुः" "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" "इदं हि विश्वं भगवान्" इत्यादि श्रुतिस्मृतिमां तेम कह्युं छे । ३ स्वरूप, स्वभाव, गुण, विभूति विगेरेथी श्रेष्ठ । ४ शुष्कवेदान्ति आदिक कोइ मतवादिथी ।

संवत् १८७६ ना पोष वदि ११ एकादशीने दिवस सवारमां श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर दक्षिणादुं मुखारविंद राखीने विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने फुलना हार पहेर्या हता ने पाघने विषे पुष्पना तथा हीरना तोरा लटकता मुक्या हता ने बे काननी उपर पुष्पना गुच्छ खोश्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना सत्संगीनी सभा भराइने बेठी हती अने मुनि वाजिंत्र लइने कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कीर्तन राखीने प्रश्न उत्तर करो, पछी ब्रह्मानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "सर्व सुखना धाम अने सर्व थकी पर एवा परमेश्वर छे. तेमां जीवनी वृत्ति चोटती नथी अने मायिक एवां जे नाशवंत तुच्छ पदार्थ तेमां जीवनी वृत्ति चोटी जायछे तेनुं शुं कारण छे?" पछी तेनो उत्तर मुक्तानंदस्वामी करवा लाग्या पण थयो नहि, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे ए प्रश्ननो उत्तर सांभळो अमे करीए छीए जे, जे दिवसथी परमेश्वरे आ जगतनी सृष्टि करी छे ते दिवसथी एवीजे कळ[1] चडावी मुकी छे जे फरीने परमेश्वरने दाखडो करवो पडे नहि अने संसारनी जे वृद्धि करवी ते पोतानी मेळेज थया करे. एवो फेर चडावी मुक्योछे, ते माटे सहजेज स्त्रीमां पुरुषने हेत थायछे ने पुरुषमां स्त्रीने हेत थायछे अने ए स्त्रीथी उपजी जे प्रजा तेमां पण सहजेज हेत थायछे, ते ए हेतरूपीज भगवाननी माया छे ते मायाना प्रवाहमां जे न वहे तेनी वृत्ति

१ घटीयंत्रनी पेठे।

भगवानना स्वरूपमां रहेछे. माटे जे भगवाननो भक्त होय ते मायिक पदार्थने विषे दोषबुद्धि राखीने वैराग्यने पामे अने भगवानने सर्व-सुखमय जाणीने भगवानमां वृत्ति राखे,अने जो मायिक पदार्थनेविषे वैराग्य न राखे ने भगवानना स्वरूपथी जुदा पडे तो शिव ब्रह्मा अने नारदादिक ए जेवा समर्थ मुक्त होय तेपण मायिक पदार्थमां तणाइ जायछे, तेटला माटे भगवानने मुकीने मायिक पदार्थनो संग करे तो जरुर तेमां जीवनी वृत्ति चोटी जाय ते सारु परमेश्वरना भक्तने परमेश्वर विना बीजे ठेकाणे प्रीति राखवी नहि.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे हवे मुक्तानंदस्वामीने प्रश्न कर्यानो वारो आव्यो ते प्रश्न करो, पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जीवने भगवाननी प्राप्ति थवी ते अति दुर्लभ छे अने भगवाननी प्राप्ति थइ त्यारे एथी बीजो मोटो लाभपण नथी ने तेथी आनंद पण बीजो नथी, ते एवा मोटा आनंदने मुकीने तुच्छ पदार्थ माटे केम क्लेशने पामेछे?" ए प्रश्न छे, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो एनो उत्तर अमे करीए जे, परमेश्वरना वचनने मुकीने ज्यारे आडो अवळो डोलेछे त्यारे क्लेशने पामेछे अने जो वचनने विषे रहे तो जेवो भगवाननो आनंद छे तेवा आनंदमां रहेछे अने जेटलुं जे भगवाननुं वचन लोपेछे तेटलो तेने क्लेश थायछे, माटे त्यागीने जेजे आज्ञा करीछे ते प्रमाणे त्यागीने रहेवुं अने गृहस्थने जे प्रमाणे आज्ञा करीछे ते प्रमाणे गृहस्थने रहेवुं ने तेमां जेटलो फेर पडेछे तेटलो क्लेश थायछे अने त्यागी होय तेने अष्ट प्रकारे स्त्रीनो त्याग राखवो त्यारे तेनुं ब्रह्मचर्य व्रत पुरुं कहेवाय ने तेमांथी जेने जेटलो फेर पडे तेने तेटलो क्लेश थायछे अने गृह-

१ आनन्दमय । २ साक्षात् । ३ यज्ञ, तप दानादिकथी पण ।

स्थने पण ब्रह्मचर्य कह्युंछे जे परस्त्रीनो त्याग राखवो तथा पोतानी स्त्रीनो पण व्रतने दिवस त्याग राखवो ने ऋतु समे स्त्रीनो संग करवो, ए आदिक जेजे त्यागीने अने गृहस्थने नियम कह्याछे तेमां जेटलो जेने फेर पडे तेटलो तेने क्लेश थायछे अने भगवानथी जे विमुख जीव होय तेने जे सुख दुःख आवेछे तेतो पोताने कर्मे करीने आवेछे अने जे भगवानना भक्त होय तेने जेटलुं दुःख थायछे ते तुच्छ पदार्थने अर्थे भगवाननी आज्ञा लोपवे करीने थायछे ने जेटलुं सुख थायछे ते भगवाननी आज्ञा पाळवे करीने थायछे । इति वचनामृतम् ॥ ३४ ॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि १२ द्वादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना वृक्षतळे ढोलीया उपर उगमणे मुखारविंदे विराजता हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज मुनि प्रत्ये बोल्या जे, तमे प्रश्न पुछो कां अमे पुछीए, त्यारे मुनिए कह्युं जे हे महाराज! तमे पुछो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "कोइ पुरुष छे तेमां थोडी बुद्धि छे तोपण पोताना कल्याणने अर्थे जे जतन करवुं तेमांथी पाछो पडतो नथी अने कोइ बीजो पुरुष छे तेमां बुद्धितो घणी छे अने मोटा मोटामां पण खोट्य काढे एवो छे तोयपण ते कल्याणने मार्गे चालतो नथी तेनुं शुं कारण छे?" त्यारे मुनिए उत्तर करवा मांड्यो पण श्रीजिमहाराजे आशंका करी ते उत्तर न थयो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर क-

१ शास्त्र तथा व्यवहारनी। २ शास्त्र तथा व्यवहारनी।

रीए जे, एमां बुद्धितो झाझी छे पण एनी बुद्धि दूषित छे, माटे ए कल्याणने मार्गे चाली शकतो नथी, जेम सुंदर भेंशनुं दुध होय तेमां साकर घोळी होय ने तेमां सर्पनी लाळ पडी एटले ए साकर ने दुध हतुं ते झेर थयुं पछी तेने जे पीवे तेना प्राण जाय, तेम बुद्धितो झाझी छे पण एणे कोइ मोटा संतनो अथवा परमेश्वरनो अवगुण लीधोछे ते अवगुणरूप दोष एनी बुद्धिमां आव्योछे ते सर्पनी लाळ सरखो छे माटे एतो कल्याणने मार्गे क्यांथी चाले? पण जो कोइक एना मुखनी वात सांभळे तो ते सांभळनारानी बुद्धि पण सत्संगमांथी पाछी पडी जायछे अने एवी दूषितबुद्धिवाळो ज्यां ज्यां जन्म धरे त्यां त्यां भगवाननो अथवा भगवानना भक्तनो द्रोहज करे अने जेनी बुद्धि एवी रीते दूषित न होय ने ते जो थोडीज होय तोपण ते पोताना कल्याणने अर्थे जतन करतो थको पाछो पडतो नथी.

त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! ए कोइ दिवस भगवानने सन्मुख थाय? के न थाय?" त्यारे श्रीजिमहाराजे कह्युं जे एतो कोइ काळे भगवान् सन्मुख थायज नहि.

त्यारे वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! कोइ रीते एवी आसुरी बुद्धि न थाय तेनो जे उपाय होय ते कहो?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे एक क्रोध बीजुं मान त्रीजी ईर्ष्या चोथुं कपट ए चार वानां परमेश्वर साथे तथा संत साथे राखे नहि तो कोइ दिवस एनी आसुरी बुद्धि थाय नहि. अने ए चार वानां मांहेलुं एके जो राखे तो जेम जय विजय घणाय डाह्या हता पण सनकादिक संघाथे मान करिने वैकुंठलोकमांथी पडी गया ने आसुरी बुद्धि थइ तेम तेनी पण आसुरी

१ भगवान् अथवा भक्तना अवगुणथी।

बुद्धि थाय अने ज्यारे आसुरी बुद्धि थाय त्यारे भगवान् तथा भगवानना भक्तना जे गुण होय ते दोप सरखा भासेछे अने ए ज्यां ज्यां जन्म धरे त्यां त्यां कांतो शिवनो गण थाय ने कांतो कोइ दैत्यनो राजा थाय अने वैरभावे परमेश्वरनुं भजन करे। इति वचनामृतम् ॥ ३५ ॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि १३ तेरशने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ओटा उपर ढोलियो ढळावीने विराजमान थया हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठनेविषे धोळा ने पीळा पुष्पना हार धारण कर्या हता अने बे कान उपर धोळा पुष्पना गुच्छ खोशा हता ने पाघनेविषे पीळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो तथा कर्णिकारना राता पुष्पनुं छोगलुं मुक्युं हतुं अने जमणा हाथने विषे धोळा पुष्पनो दडो फेरवता हता, एवी रीतनी शोभाने धारण करता ने पोताना भक्तजनने आनंद उपजावता थका विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेणे संसार मुक्यो ने त्यागीनो भेख लीधो अने तेने परमेश्वरना स्वरूप विना असत् पदार्थमां प्रीति रहेछे तेने केवो जाणवो तो 'जेवो मोटा शाहुकार माणसनी आगळ कंगाल माणस होय' तेवो जाणवो, जेम कंगाल माणस होय ने पहेरवा वस्त्र न मळतुं होय ने उकरडामांथी दाणा वीणी खातो होय ते पोते पोताने पापी समझे अने बीजा शाहुकार लोक पण तेने पापी समझे जे 'आणे पाप कर्यां हशे माटे एने अन्न वस्त्र मळतुं नथी' तेम जे त्यागी थइने सारां सारां जे वस्त्रादि पदार्थ तेने भेळां करी राखे अने

तेनी तृष्णा पण घणी राखे अने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने भक्ति तेनेविषे प्रीतिए रहित होय, एवो जे त्यागी तेनेतो जे मोटा एकांतिक साधु छे ते कंगाल माणसनी पेठे पापी जाणेछे, केम जे जो ए पापी छे तो एने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने भक्ति तेनेविषे प्रीति थती नथी अने परमेश्वर विना बीजा पदार्थमां प्रीति थायछे अने जे त्यागी होय तेने तो कचरो अने कंचन ए बेय बरोबर होय अने 'आ पदार्थ सारुं ने आ पदार्थ भुंडुं' एवी तो समझणज होय नहि अने एक भगवाननेविषे प्रीति होय तेज साचो त्यागी छे। इति वचनामृतम् ॥ ३६ ॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि १४ चौदशने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ लिंबडा तळे ढोलिया उपर आथमणे मुखारविंदे विराजमान हता अने माथे धोळी पाघ विराजमान हती अने ते पाघमां पीळा पुष्पनो तोरो विराजमान हतो अने बे कान उपर धोळा पुष्पना गुच्छ विराजमान हता अने कंठनेविषे पीळां ने धोळां पुष्पनो हार विराजमान हतो अने धोळी चादर ओढी हती अने धोळो खेश पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिजननी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे अणसमझु[1] होय ने तेणे भेख लीधो होय तोपण तेने ज्यांज्यां पोतानी जन्मभूमि होय तेनेविषे हेत टळतुं नथी, एम कहीने पछी पोताना साथळनेविषे नांनपणामां झाडनो खांपो लाग्यो हतो ते सर्वने देखाड्यो ने बोल्या जे, आ चिह्नने ज्यारे अमे देखिए छीए त्यारे ते झाड ने तलावडी सांभरी आवेछे,

१ तीव्र वैराग्यपूर्वक आत्मज्ञाने रहित।

माटे जन्मभूमि तथा पोतानां सगां संबन्धी तेने अंतरमांथी विसारी देवां ते घणुं कठण छे, माटे जेने जेने जन्मभूमि तथा देहना संबन्धी ते न सांभरतां होय ते बोलो अने जे लाजे करीने न बोले तेने श्रीनरनारायणना सम छे, पछी सर्वे मुनि जेम जेने वर्ततुं हतुं तेम बोल्या, पछी ते सांभळीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे ज्यारे पोताने आत्मारूपे मानीए त्यारे ते आत्मानी जन्मभूमि केइ ? ने ते आत्मानुं सगुं कोण ? ने ते आत्मानी जात पण केइ ? अने जो सगपण लेवुं होय तो पूर्वे चोराशी लाख जातना देह धर्यांछे ते सर्वेनुं सगपण सरखुं जाणवुं अने ते सगानुं कल्याण इच्छवुं तो सर्वेनुं इच्छवुं अने आ मनुष्यदेहमां आव्या त्यारे चोराशी लाख जातनां जे मावाप ते अज्ञाने करीने विसर्यांछे तेम आ मनुष्यशरीरनां जे मावाप छे तेमने ज्ञाने करीने विसारी देवां अने अमारे तो कोइ सगां संबन्धी साथे हेत नथी तथा अमारी सेवा करता होय ने तेना हृदयमां जो परमेश्वरनी भक्ति न होय तो ते उपर हेत करीए तोयपण न थाय अने जो नारदजी जेवो गुणवान् होय ने तेने भगवाननी भक्ति न होय तो ते अमने न गमे अने जेना हृदयमां भगवाननी भक्ति होय ने एम समझतो होय जे 'जेवा प्रगट भगवान् पृथ्वी उपर विराजेछे अने जेवा ते भगवानना भक्त भगवाननी समीपे विराजेछे तेवा ने तेवा ज्यारे आत्यंतिक प्रलय थायछे त्यारे पण रहेछे' अने 'आ भगवान् ने भगवानना भक्त ते सदा साकारज छे' एम समझतो होय अने गमे तेवा वेदांतिना ग्रंथ सांभळे पण भगवान ने भगवानना भक्तने निराकार समझेज नहि अने एम जाणे जे "ए भगवान् विना बीजो

१ जड शरीरादिकथी विलक्षण सच्चिदानन्दपणे । २ साकार । ३ साकार । ४ साकारज । ५ शुष्क ज्ञानिए करेला ।

कोइ जगतनो कर्ता छेज नहि' अने एम जाणे जे 'भगवान् विना सुकुं पांदडुं पण फरवाने समर्थ नथी' एवी जेने भगवानने विषे साकारपणानी दृढ प्रतीति होय ने ते जेवो तेवो होय तो पण ए अमने गमेछे अने एने माथे काळ कर्म ने माया तेनो हुकम नथी अने जो एने दंड देवो होय तो भगवान् पोते देछे पण बीजा कोइनो एने माथे हुकम नथी अने एवी निष्ठा न होय ने ते जो त्याग वैराग्ये युक्त होय तोपण तेनो अमारा अंतरमां भार आवे नहि अने जेना हृदयमां भगवाननी एवी निष्ठा अचळ होय ने ते गमे तेटलां शास्त्र सांभळे अथवा गमे तेनो संग करे तोपण पोताने जे भगवानना साकारपणानी निष्ठा छे ते टळे नहि अने तेजना चिंन जेवा निराकार भगवानने कोइ दिवस समझेज नहि, एवी निष्ठावाळो जे संत छे तेना पगनी रजने तो अमे पण माथे चढावीए छीए अने तेने दुःखवता थका मनमां बीए छीए अने तेनां दर्शनने पण इच्छीए छीए अने एवी निष्ठा विनाना जे जीव छे ते पोताना साधनने बळे करीने पोतानुं कल्याण इच्छेछे पण एवा परमेश्वरना प्रतापे करीने पोतानुं कल्याण इच्छता नथी, एवा जे जडमतिवाळा पुरुष छे तेतो जेम नाव विना पोताना बाहुबळे करीने समुद्र तरवाने इच्छे तेवा मूर्ख छे अने जे एवा भगवानने प्रतापे करीने पोतानुं कल्याण इच्छेछे तेतो जेम नावमां बेसीने समुद्र तरवाने इच्छे एवा डाह्या छे अने एवा जे भगवानना स्वरूपना ज्ञानवाळा छे ते सर्वे देहने मुकीने भगवानना धाममां चैतन्यमीज मूर्ति थइने भगवानना हजुरमां रहेछे अने एवी निष्ठा जेने न होय ने तेणे बीजां साधन जो कर्यां होय तो ते बीजा देव-

१ यमराजा विगेरेनो।

ताना लोकमां रहेछे अने जे एवा यथार्थ भगवानना भक्त छे तेनुं दर्शन तो भगवानना दर्शनतुल्य छे अने एना दर्शने करीने अनंत पतित जीवनो उद्धार थायछे एवा ए मोटा छे, एवी रीते वार्ता करीने श्रीजिमहाराजे कह्युं जे कीर्तन बोलो। इति वचनामृतम्॥३७॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि १ पडवाने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां सांझने समे घोडशाळनी ओसरीए गादलुं नखावीने विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने माथे राता छेडानो धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने दोरीयानुं अंगरखुं पहेर्युं हतुं ने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती।

ते समे श्रीजिमहाराज सर्वे हरिभक्त सामुं जोइने झाझी वार विचारी रह्या अने पछी एम बोल्या जे सांभळो वात करीए छीए जे, जे सत्संगी होय तेने ज्यांथी पोताने सत्संग थयो होय त्यांथी पोताना मननो तपास करवो जे 'प्रथमना वर्षमां मारुं मन आवुं हतुं ने पछी आवुं हतुं अने आटली भगवाननी वासना हती ने आटली जगतनी हती' एम वर्षो वर्षनो सरवाळो विचार्या करवो अने पोताना मनमां जेटली जगतनी वासना बाकी रही गइ होय तेने थोडे थोडे निरंतर टाळवी. अने एम विचारे नहि ने बधी भेगी करे तो ते वासना एनी टळे नहि, जेम वणिकने घेर नाणुं कर्युं होय ते जो महिना महिनानुं निरंतर चुकावी दइए तो देतां कठण न पडे ने वर्षे दहाडानुं भेगुं करीए तो आपवुं बहु कठण पडे, तेम निरंतर विचार करवो. अने मन छे ते जगतनी वासनाए करीने वसाणुं छे, जेम फुले करीने तिल वसायछे तेम मनने भगवाननां जे चरित्र तेनुं जे महिमाए सहित नित्य स्मरण

ते रूप फुलने विषे वासवुं अने भगवानना चरित्ररूप जाळाने विषे मनने धुंचवी-मेलवुं ने भगवानना घाट मनमां कर्या करवा एक सम्यो ने बीजो करवो बीजो सम्यो ने त्रीजो करवो एम ने एम मनने नवरुं रहेवा देवुं नहि, एम कहीने पछी भूतनुं दृष्टांत विस्तारीने कही देखाड्युं ने पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एवी रीते भगवाननां जे चरित्र तथा वार्ता तथा दर्शन ते एक दिवसनां जो संभारवा मांडे तो तेनो पार न आवे तो सत्संग थयां तो दश पन्नर वर्ष थयां होय ते एनो तो पारज न आवे अने ते एवी रीते संभारवां जे 'आ गाममां आवी रीते महाराज तथा परमहंसनी सभा थइ अने आवी रीते महाराजनी पूजा थइ ने आवी रीते वार्ता थइ' इत्यादिक जे भगवाननां चरित्र तेने वारंवार संभारवां अने जे झाझुं न समझतो होय तेने तो एम करवुं एज श्रेष्ठ उपाय छे ए जेवो बीजो नथी, त्यारे तमे कहेशो जे 'अन्न थोडुं खाईए तथा घणा उपवास करीए' तो ते अमे कहेता नथी, एतो जेम जेना नियम कह्याछे ते प्रमाणे साधारणपणे रहेवुं अने करवानुं तो आ अमे तमने कह्युं ते छे अने अमे तो एम मान्युं छे जे, मन निर्वासनिक जोइए अने देहे करीने गमे तेटली प्रवृत्ति होय ने तेनुं मन जो शुद्ध छे तो तेनुं अति भुंडुं थाय नहि अने बाहेर लोकमां तो ते प्रवृत्तिवाळानुं भुंडा जेवुं जणाय अने जेने मनमां वासना होय ने ते बाहेर सारी पेठे निवृत्तिपरायण वर्ततो होय तो तेनुं बाहेर लोकमां तो सारुं जणाय पण तेना जीवनुं अति भुंडुं थाय, केमजे मुवा टाणे तो जेवा मनमां संकल्प होय तेवा स्फुरी आवे, जेम भरतजीने अंतकाळमां मृगनुं बाळक स्फुरी आव्युं त्यारे ते मृगने आकारे थइ गया अने प्रथम राज्य मेल्युं हतुं ने ऋषभदेव भगवान् तो पो-

ताना बाप हता तोपण एम थयुं, माटे मने करीने निर्वासनिक रहेवुं ए अमारो मत छे. अने जे उपवास करवा तेणे करीने देह दुर्बळ थाय त्यारे मन दुर्बळ थाय तो खरुं पण ज्यारे देह पुष्ट थाय त्यारे वळी मन पुष्ट थाय माटे देहे करीने त्याग ने मने करीने त्याग ए बे भेळां जोइए. अने जेने मनमां भगवानना घाट थता होय ने जगतना घाट न थता होय ते आपणा सत्संगमां मोटेरो छे अने एवो जे न होय ते नानेरो छे. अने गृहस्थ होय तेने पण देहे करीने व्यवहार करवो ने मने करीने तो त्यागीनी पेठेज निर्वासनिक रहेवुं ने भगवाननुं चिंतवन करवुं ने व्यवहार तो भगवानने वचने करीने राखवो. अने मननो त्याग साचो न होय तो जनक जेवा राजा हता ते राज्य करता ने मनतो मोटा योगेश्वरना जेवुं हतुं, ते माटे मने करीने जे त्याग तेज ठीक छे. अने जे पोताना मनमां भुंडा घाट थता होय ते कहेवा, पण 'जेम कुतरानुं मुख कुतरो चाटे' तथा 'सर्प ने घेर परोणो साप मुख चाटीने वळीयो आप' तथा रांडीने पासे सुवासिनी स्त्री जाय त्यारे ते कहे जे 'आव बाइ हुं जेवी तुं पण था'-तेम पोतानी पेठे जेने भुंडा घाट थता होय तेनी आगळ जे घाट कहेवो तेतो आ दृष्टांत दीधां एम छे, माटे घाट केने कहेवो तो जेना मनमां कोइ दिवस जगतनो भुंडो घाट न थतो होय एवो वळीयो होय तेनी आगळ कहेवो. अने एम घाट न थाय एवा पण घणा होय तेमांथी पण एवाने घाट कहेवो जे, ते घाटने सांभळीने ते घाट उपर वात करे ते ज्यां सुधी ते कहेनारानो घाट टळी जाय त्यां सुधी बेठतो उठतो खातो पितो सर्व क्रियामां वात कर्या करे अने तेना घाट टाळ्यामां केवी चाड होय तो जेम पोताना

१ इष्टनो लाभ नहि, अने उलटो अनिष्टनो लाभ।

घाटने टाळ्यानी चाड होय तेवी होय एवा आगळ घाट कहेवो अने जेनी आगळ घाट कहीए ने ते आवी रीते वातनो न करे ने पोते आळसु होय तो शो समास थाय ? माटे एवी रीते पोताना मनना घाट कहीने ते घाटने टाळी नाखीने पोताना मनने विषे केवळ भगवानना घाट कर्या करवा ने जगतना सुखथी निर्वासनिक थवुं. अने एकादशीनो उपवास करवो तेनुं शुं लक्षण छे तो दश इंद्रियो ने अगीयारमुं मन तेमने पोतपोताना विषयमांथी काढीने भगवानमां जोडवां तेने एकादशीनुं व्रत कर्युं कहेवाय अने एवुं व्रततो भगवानना भक्तने निरंतर करवुं अने एवी रीते जेनुं मन निर्वासनिक न होय ने देहे करीने तो व्रत तप करे तोपण तेनुं अतिशय सारुं थतुं नथी, माटे जे भगवाननो भक्त होय तेने पोतपोताना धर्ममां रहीने ते भगवाननुं माहात्म समझीने पोताना मनने निर्वासनिक करवानो नित्ये अभ्यास राखवो, एम वार्ता करी.

अने वळी श्रीजिमहाराजे बीजी वार्ता करी जे साचो त्यागी केने कहीए तो जे पदार्थनो त्याग कर्यो तेनो पाछो कोइ दिवस मनमां संकल्प पण न थाय, जेम विष्टानो त्याग कर्योछे तेनो पाछो संकल्प थतो नथी तेम संकल्प न थाय, त्यां शुकजी प्रत्ये नारदजीनो कहेलो श्लोक छे जे—"त्यज धर्ममधर्मं च" अने ए श्लोकनुं हार्द ए छे जे 'एक आत्मा विना बीजा जेजे पदार्थ छे तेनो त्याग करीने केवळ आत्मापणे वर्तवुं ने भगवाननी उपासना करवी' तेने पुरो त्यागी कहीए अने जे गृहस्थ हरिभक्त होय तेतो जेम जनकराजाए कह्युं

१ आ स्थळे धर्मादिनो स्वरूपथी त्याग कह्यो नथी परंतु भगवानना ध्यानमां अन्तराय करनारा तेना संकल्पोनो त्याग कह्योछे अथवा फळनो त्याग कह्योछे ।

जे 'आ मारी मिथिला नगरी बळेछे पण तेमां कांइ मारुं बळतुं नथी' त्यां श्लोक छे जे—"मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दह्यति किंचन" एम समझे ने गृहमां रहेतो होय ते गृहस्थ हरिभक्त खरो कहेवाय अने एवी रीतनो जे त्यागी न होय ने एवी रीतनो जे गृहस्थ न होय तेतो प्राकृत भक्त कहेवाय अने मोरे कह्यो एवो जे होय तेतो एकांतिक भक्त कहेवाय, एवी रीते वार्ता करी.

पछी मोटा आत्मानंदस्वामीए श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "देह इंद्रियो तथा अंतःकरण तथा देवता तेथी जुदो जे जीवात्मा तेनुं रूप केवी रीते छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे थोडाकमां एनो उत्तर करीए छीए जे, देह ने इंद्रियादिकना स्वरूपनो जे वक्ता ते सर्वेना स्वरूपने जुदुं जुदुं करीने श्रोताने समझावेछे ते जे समझावनारो वक्ता ते देहादिक सर्वेना प्रमाणनो करनारो छे ने जाणनारो छे ने ए सर्वेथी जुदो छे एनेज जीव कहीए अने जे श्रोता छे ते देहादिकना रूपने जुदां जुदां समझेछे ने एनुं प्रमाण करेछे ने एने जाणेछे ने ए सर्वेथी जुदो छे एनेज जीव कहीए [1]एवी रीते जीवना स्वरूपने समझवानी रीत छे, एवी रीते वार्ता करी । इति वचनामृतम् ॥ ३८ ॥

१ देह, इन्द्रियो, मन, प्राण अने बुद्धि आदिकना ज्ञाता, प्रमाता, द्रष्टा, श्रोता, वक्ता, रसयिता, घ्राता, मन्ता, बोद्धा अने कर्तापणे जे जणायछे ते जीवात्मा छे तेवा प्रकारथी ते देहादिथी आत्मा जुदो जाणी शकायछे अने तेनु रूपपण तेज छे । ते श्रुतिस्मृतिमा कह्यु छे-"अथ यो वेदेद जिघ्राणीति स आत्मा" "एष हि द्रष्टा श्रोता रसयिता घ्राता मन्ता बोद्धा कर्ता विज्ञानात्मा पुरुष" "विज्ञातारमरे केन विजानीयात्" "एवमेवास्य परिद्रष्टुरिमा षोडश कला" "इद शरीरं कौन्तेय ! क्षेत्रमित्यभिधीयते । एतद्यो वेत्ति त प्राहु क्षेत्रज्ञ इति तद्विद ॥" "देहेन्द्रियमन प्राणधीभ्योऽन्योऽन्यसाधन । नित्यो व्यापी प्रति क्षेत्रमात्मा भिन्न स्वत सुखी" इत्यादि । आटलुज तात्पर्य छे ।

संवत् १८७६ ना महा शुदि २ त्रीजने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ओटा उपर ढोलीयो ढळावीने विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने पीळा पुष्पना तोरा पाघमां लटकता हता ने कान उपर धोळा ने पीळा पुष्पना गुच्छ खोशा हता ने कंठमां पीळा पुष्पना हार पहेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्वे मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे एक वेदांति ब्राह्मण आव्यो हतो तेने प्रश्न पुछ्यो जे "तमे एक ब्रह्मनुं प्रतिपादन करोछो ने ते विना जे जीव, ईश्वर, माया अने जगत् तथा वेद, शास्त्र, पुराण ते सर्वेने मिथ्या कहोछो, ए वात अमने समझाती नथी तथा मान्यामां आवती नथी, माटे तमने पुछीए छीए तेनो उत्तर करो, ते वेद, शास्त्र, पुराण, स्मृति अने इतिहास तेनी साख्ये करीने करो, पण कोइक कल्पित ग्रंथने वचने करीने करशो तो अमे तेने नहि मानीए अने जो व्यासजीने वचने करीने करशो तो अमारा मान्यामां आवशे, केमजे अमारे व्यासजीना वचनमां दृढ प्रतीति छे?" पछी ते वेदांतिए घणीक प्रकारनी युक्तियो लावीने उत्तर करवा मांड्यो पण श्रीजिमहाराजे तेमां आशंका करी माटे ते प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे सांभळो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए छीए जे, एतो परमेश्वरने भजीने थया जे मुक्त तेनी स्थितिना बे भेद छे, जेम मेरु पर्वत उपर

१ परब्रह्मने निराकार अने निर्गुणपणे प्रतिपादन करनारा शुष्कज्ञानिमां वेदान्ति शब्दनो संकेत करेलो जाणवो। २ शुक्तिमां रूपतनी पेठे कल्पित।

उभा जे पुरुष ते जेते ते मेरु थकी ओरा जे सर्वे पर्वत तथा सर्वे वृक्ष तथा ते पर्वत वृक्षनुं आधार जे पृथ्वीनुं तळ ते सर्वेने पृथक् पृथक्पणे देखेछे. तेम सविकल्प समाधिवाळा जे ज्ञानी मुक्त ते जेते जीव, ईश्वर, माया तथा एमनुं आधार जे ब्रह्म ए सर्वेने पृथक् पृथक्पणे देखेछे, अने वळी जेम लोकालोक पर्वत उपर उभा जे पुरुष ते जेते ते लोकालोक पर्वतथी ओरा जे पर्वत तथा वृक्ष ते सर्वेने एक पृथ्वीरूपेज देखेछे पण पृथक् पृथक्पणे नथी देखता, तेम निर्विकल्प समाधिवाळा जे महामुक्त ते जेते जीव ईश्वर अने माया तेने एक ब्रह्मरूपे करीनेज देखेछे पण पृथक्पणे नथी देखता, एवी रीते बे प्रकारनी स्थितिवाळा मुक्त छे तेनी स्थितिने योगे करीने ए सर्वेनुं सत्यपणुं कहेवायछे ने असत्यपणुं कहेवायछे. अने सविकल्प स्थितिवाळानां वचन वेद, शास्त्र, पुराणादिकमां आवेछे ते ए सर्वेने सत्य कहेछे अने निर्विकल्प स्थितिवाळानां जे वचन ते ए सर्वेने असत्य कहेछे पण कांइ ए सर्वे असत्य नथी, एतो एने निर्विकल्प स्थितिने बळे करीने देखातां नथी माटे असत्य कहेछे. अने वळी जेम सूर्यना रथमां जे बेठा होय तेने रात नथी पण जे पृथ्वी उपर रह्याछे तेने रात्रि दिवस छे, तेम निर्विकल्प स्थितिवाळाने मते ए सर्वे छे नहि पण बीजाने मतेतो ए सर्वे छे. अने आवी रीते ब्रह्मनिरूपण करे तो शास्त्रना वचनमां पूर्वापर बाध न आवे ने एम न करे तो पूर्वापर बाध आवे, ते बाधने तो समझतो न होय तथा एवी रीतनी स्थितिने पण न पाम्यो होय ने केवळ शास्त्रमांथी शीखीने वचनमात्रे करीने एकब्रह्मपणानुं प्रतिपादन करतो होय ने गुरु, शिष्य, जीव, ईश्वर, माया, जगत् तथा वेद, पुराण, शास्त्र ए सर्वेने कल्पित कहेतो होय तेतो महा मूर्ख छे ने अंते

नारकी थायछे, एम कहीने बोल्या जे, आ अमे वार्ता करी तेमां तमने आशंका थती होय तो बोलो ! त्यारे ते वेदांती ब्राह्मण बोल्यो जे, हे महाराज ! हे प्रभो ! हे स्वामिन् ! तमेतो परमेश्वर छो अने जगत्ना कल्याणने अर्थे प्रगट थयाछो ते तमे जे उत्तर कर्यो ते यथार्थ छे एमां आशंकानो माग नथी, एम कहीने अति प्रसन्न थयो अने पोतानी जे अणसमझण तेनो त्याग करीने श्रीजिमहाराजने आश्रित थयो । इति वचनामृतम् ॥ ३९ ॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि ४ चोथने दिवस प्रातःकाळे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्षनी हेठे ढोलीया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने पाघने विषे पीळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो ने कंठने विषे पीळा पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्व मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजने मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज ! सविकल्प समाधि ते केने कहीए ने निर्विकल्प समाधि ते केने कहीए ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने भगवानना स्वरूपमां स्थिति थइ होय तेने अशुभ वासनातो न होय ने शुभ वासना रही होय जे 'हुं नारद सनकादिक ने शुकजी ते जेवो थाउं अथवा नरनारायणना आश्रममां जइने ते आश्रमना मुनि भेळो रहीने तप करुं अथवा श्वेतद्वीपमां जइने तप करीने श्वेतमुक्त जेवो थाउं' एवी रीतनो जेने विकल्प रहेतो होय तेने सविकल्प समाधिवाळो कहीए अने जेने एवी रीतनो विकल्प न होय ने अक्षरब्रह्मना साधर्म्यपणाने पामीने केवळ

भगवानननी मूर्तिने विषेज निमग्न रहतो होय तेने निर्विकल्प समाधि-वाळो कहीए.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! भक्तिमां ने उपासनामां ते शो भेद छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे "श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्। अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्" एवी रीते नव प्रकारे करीने जे भगवानने भजवा तेने भक्ति कहीए. अने उपासनातो तेने कहीए जे, भगवानना स्वरूपने विषे सदा साकारपणानी दृढ निष्ठा होय ने पोते जे भजननो करनारो ते ब्रह्मरूप थाय तोपण ते निष्ठा जायज नहि अने गमे तेवा निराकार प्रतिपादनना ग्रंथने सांभळे तोपण भगवानना स्वरूपने सदा साकारज समझे अने शास्त्रने विषे गमे तेवी वात आवे पण पोते भगवानना साकार स्वरूपनुंज प्रतिपादन करे पण पोतानी उपासनानुं खंडन थवा देज नहि एवी रीते जेनी दृढ समझण होय तेने उपासनावाळो कहीए। इति वचनामृतम् ॥ ४० ॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि ५ पंचमीने दिवस सांझने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरने समीपे लिंबडा तळे चोतरा उपर ढोलीए विराजमान हता ने सर्वे धोळां वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पीळा पुष्पना हार पहेर्या हता ने पीळा पुष्पना गुच्छ कान उपर धार्या हता ने पाघने विषे पीळा पुष्पना तोरा लटकता मुक्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ कोइ स्थळे भक्ति अने उपासना ए बन्ने शब्दो पर्यायवाची छे एटले बन्नेनो एकज अर्थ छे, कोइ स्थळे तो ते बन्ने शब्दनो सामान्यपणे अर्थभेद बताव्यो छे ते भेद हुं कहुंछुं। २ प्रीतिपूर्वक।

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो. पछी नृसिंहानंद-स्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! "एकोऽहं बहु स्यां प्रजायेय" ए जे श्रुति तेनो जे अर्थ तेने जगतमां जे केटलाक पंडित छे तथा वेदांती छे ते एम समजेछे जे 'प्रलयकाळने विषे जे एक भगवान् हता तेज पोतानी इच्छाए करीने सृष्टिकाळे' सर्व जीव ईश्वररूपे थयाछे' ते ए वार्ता तो मूर्ख होय तेना मान्यामां आवे ने अमारेतो तमारो आशरो छे एटले ए वातनी घेड बेसती नथी अने अमे तो एम समझीए छीए जे, भगवानतो अच्युत छे ते च्यवीने जीव ईश्वररूपे थाय नहि, माटे ए श्रुतिनो जे अर्थ तेतो तमे कहो तो यथार्थ समझाय" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए श्रुतिनो अर्थ तो ए सर्वे करेछे एम नथी एनो अर्थ तो बीजी रीते छे, ते वेदस्तुतिना गद्यमां कह्यो छे जे-"स्वकृतविचित्रयोनिषु विषन्निव हेतुतया तरतमतश्चकास्स्यनलवत्स्वकृतानुकृतिः" एनो अर्थ एम छे जे 'पुरुषोत्तम भगवाने पोते करी एवी जे नाना प्रकारनी योनिओ तेमने विषे कारणपणे अंतर्यामिरूपे करीने प्रवेश करीने न्यूनाधिकभावे प्रकाश करेछे' तेनी विगती जे अक्षरातीत एवा जे पुरुषोत्तम भगवान् ते सृष्टिसमयने विषे अक्षर सामी दृष्टि करेछे त्यारे ते अक्षरमांथी पुरुष प्रगट थइ आवेछे, पछी ते पुरुषोत्तम जे ते अक्षरमां प्रवेश करीने पुरुषने विषे प्रवेश करेछे ने पुरुषरूपे थइने प्रकृतिने प्रेरेछे, एवी रीते जेमजेम पुरुषोत्तमनो प्रवेश[2] थतो गयो तेमतेम सृष्टिनी प्रवृति थइ अने पछी ते प्रकृति-

१ परिणाम पामीने। २ सर्व व्यापक पुरुषोत्तम भगवाननो सर्वदा सर्ववस्तुमा प्रथमथीज प्रवेश छे, नवो नथी, तो आ स्थळे कहेलो प्रवेश, सृष्टिसमयमां शक्तिविशिष्टपणे अनुप्रवेश जाणवो जेथी प्रत्येक सर्ववस्तुमां परमात्मानी पुष्कळ प्रतीति जणाय। "तत्सृष्ट्वा तदनुप्राविशत्" (जगत् सृजीने तेमा अनुप्रवेश कर्यो) एम श्रुतिमा कह्युं छे।

पुरुषथकी प्रधानपुरुष थया अने ते प्रधानपुरुषथकी महत्तत्त्व थयुं ने महत्तत्त्वथकी त्रण प्रकारनो अहंकार थयो ने अहंकारथी भूत, विषय, इंद्रियो, अंतःकरण अने देवता ते थया ने ते थकी विराट्पुरुष थया ने तेनी नाभिकमळमांथी ब्रह्मा थया ने ते ब्रह्माथकी मरीच्यादिक प्रजापति थया ने ते थकी कश्यपप्रजापति थया ने ते थकी इंद्रादिक देवता थया ने दैत्य थया अने स्थावर जंगम सर्वे सृष्टि थइ अने पुरुषोत्तम भगवान् जे ते ए सर्वेमां कारणपणे अंतर्यामिरूपे प्रवेश करीने रह्याछे, पण जेवा अक्षरमां छे तेवी रीते पुरुषप्रकृतिमां नथी ने जेवा पुरुषप्रकृतिमां छे तेवा प्रधानपुरुषमां नथी ने जेवा प्रधानपुरुषमां छे तेवा महत्तत्त्वादिक चोविश तत्त्वमां नथी ने जेवा चोविश तत्त्वमां छे तेवा विराट्पुरुषमां नथी ने जेवा विराट्पुरुषमां छे तेवा ब्रह्मामां नथी ने जेवा ब्रह्मामां छे तेवा मरीच्यादिकमां नथी ने जेवा मरीच्यादिकमां छे तेवा कश्यपमां नथी ने जेवा कश्यपमां छे तेवा इंद्रादिक देवतामां नथी ने जेवा इंद्रादिक देवतामां छे तेवा मनुष्यमां नथी ने जेवा मनुष्यमां छे तेवा पशुपक्षिमां नथी, एवी रीते पुरुषोत्तम भगवान् जे ते तारतम्यताए सर्वमां कारणपणे अंतर्यामिरूपे करीने रह्याछे, [1]जेम काष्ठने विषे अग्नि रह्योछे ते मोटा काष्ठमां मोटो अग्नि रह्योछे ने लांबा काष्ठमां लांबो अग्नि रह्योछे ने वांका काष्ठमां वांको अग्नि रह्योछे, तेम ए पुरुषोत्तम भगवान् छे ते जे द्वारे जेटलुं कार्य कराववुं होय तेने विषे तेटली सामर्थिए युक्त थका रहेछे अने अक्षर ने पुरुष प्रकृति आदि सर्वेने विषे पुरुषोत्तम भगवान् अंतर्यामिरूपे रह्याछे पण पात्रनी ता-

१ "अग्निर्यथैको भुवन प्रविष्टो" "वायुर्यथैको भुवन प्रविष्टो" इत्यादि श्रुतियोमां आ अर्थ निरूपण कर्यो छे।

रतम्यताए करीने सामर्थिमां तारतम्यपणुं छे 'एवी रीते एक पुरुषोत्तम भगवान् छे ते अतर्यामिरूपे करीने ए सर्वेने विषे प्रवेश करीने रह्याछे' पण जीव ईश्वरपणाने पोते पामीने वहुरूपे नथी थया, एवी रीते ए श्रुतिनो अर्थ समजवो । इति वचनामृतम् ॥ ४१ ॥

• संवत् १८७६ ना महा शुदि ६ छठने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरवारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ लिंवडाना वृक्षनी हेठे ओटा माथे ढोलिया उपर आथमणे मुखारविंदे विराजमान हता अने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने धोळी चादर ओढी हती ने धोळो खेश पहेर्यो हतो ने वे कानने उपर पिळा पुष्पना गुच्छ विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने ते सभाने विषे कोइक वेदांती ब्राह्मणो पण आवीने बेठा हता तेने जोइने श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वेदांत शास्त्रने जेजे भणेछे तथा सांभळेछे ते एम कहेछे जे 'विधिनिषेधतो मिथ्या छे अने विधिनिषेधे करीने पमाय एवा जे स्वर्ग ने नरक ते पण मिथ्या छे अने तेने पामनारो जे शिष्य तेपण मिथ्या छे अने गुरुपण मिथ्या छे अने एक ब्रह्मज सभर भर्यो छे ते सत्य छे' एवी रीते जे कहेछे ते शुं समजीने कहेता हशे? अने सर्वे वेदांतिना आचार्य जे शंकराचार्य तेणे तो पोताना शिष्यने दंड कमंडळु धारण कराव्यां अने एम कह्युं जे 'भगवद्गीता ने विष्णुसहस्रनामनो पाठ करवो तथा विष्णुनुं पूजन करवुं अने

१ वस्तुताए तारतम्यपणु नथी । २ माटे भगवान् "सर्वरूपे थायछे" एम वेदादिक कहेछे "सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः" (सवमा व्यापीने रह्याछो माटे तमो सर्वरूप छो) एम गीतामां पण कह्यु छे । ३ ग्रहण करवा योग्य नथी ।

जेने झाझां चोमासां थयां होय तेनुं थोडा चोमासावाळाए वंदन करवुं अने सारो पवित्र ब्राह्मण होय तेना घरनीज भिक्षा करवी' एवी रीते जे विधिनिषेधनुं प्रतिपादन कर्युं ते शुं एने यथार्थ ज्ञान नहि होय? अने जे हमणाना ज्ञानी थया तेमणे विधिनिषेधने खोटा करी नांख्या ते शुं शंकराचार्य करतां ए मोटा थया? माटे एतो एम जणायछे जे एतो केवळ मूर्खाइमांथी बोलेछे. अने विधिनिषेध शास्त्रमां खोटा कह्या-छे तेतो एम कह्याछे—जेम कोइ मोटुं वांण होय अने ते वांण महासमुद्रने विषे एक वर्षसुधी चाल्युं जायछे तेने आगलो कांठोपण देख्यामां आवे नहि अने पाछलो कांठोपण देख्यामां आवे नहि अने ते बे कांठा उपर जे मोटा मोटा पर्वत ते पण देख्यामां आवे नहि तो झाडवां तथा मनुष्य तेतो क्यांथी देख्यामां आवे? अने ज्यां देखे त्यां एकलुं जळज देखाय पण जळ विना बीजो कोइ आकार देख्यामां आवे नहि अने उंचु जुवे तो मोटी मोटी समुद्रनी लहेर्युं उठती होय माटे उंचु पण जळज जणाय, त्यारे ते वांणने विषे बेठा एवा जे पुरुष ते एम कहेजे 'एकलुं जळज छे बीजुं कांइ नथी' ए दृष्टांतनुं सिद्धांत ए छे जे, जेने ब्रह्म-स्वरूपने विषे निर्विकल्प स्थिति थइ होय ते एम बोले जे 'एक ब्रह्मज छे अने ते विना बीजुं जे जीव, ईश्वर अने माया ए आदिक सर्वे ते मिथ्या छे' अने तेनां वचन शास्त्रमां लखाणां होय तेने सांभळीने पोताने तो एवी स्थिति न थइ होय तोपण विधिनिषेधने खोटा कहेछे. अने स्त्रीनी शुश्रूषा करे ने छोकरांनी शुश्रूषा करे अने जेटलो संसारनो व्यवहार होय ते सर्वेने तो साचो जाणीने सावधान थइने करेछे अने शास्त्रे प्रतिपादन कर्या एवा जे विधिनिषेध तेने खोटा कहेछे एवा जे आ जगतने विषे ज्ञानना कथनारा छे तेनेतो महा अधम जाणवा

ने नास्तिक जाणवा. अने शंकराचार्ये तो जीवना हैयामां नास्तिकपणुं आवी जाय तेनी बीके करीने "भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते!" ए आदिक घणांक विष्णुनां स्तोत्र कर्यां छे तथा शिवजी तथा गणपति तथा सूर्य ए आदिक जे घणाक देवता तेनां स्तोत्र कर्यां छे, जेने सांभळीने सर्वे देवता सत्य भासे एवो आशय जाणीने शंकराचार्ये सर्वे देवतानां स्तोत्र कर्यां छे अने आजना जे ज्ञानी थया तेतो सर्वेने खोटां करी नांखेछे. अने वळी एम कहेछे जे 'ज्ञानी तो गमे तेवुं पाप करे तोपण कांई अडतुं नथी' ते मूर्खपणामांथी कहेछे अने जेटला त्यागी परमहंस थया ते सर्वेने विषे जडभरत श्रेष्ठ छे अने जेटलां पुराणमात्र तथा वेदांतना ग्रंथ ते सर्वेने विषे जडभरतनी वार्ता लखाणी छे एवा मोटा जे जडभरत ते पूर्वजन्ममां ऋषभदेव भगवानना पुत्र हता अने राज्यनो त्याग करीने वनमां गया हता तेने दयाए करीने पण जो मृग संघाथे प्रीति थइ तो तेनो दोष लाग्यो ने पोताने मृगनो जन्म लेवो पड्यो अने मृगना सरखा चार पग ने टुंकी पुंछडी ने माथे नानी सिंगडियो एवो आकार पोताने प्राप्त थयो. अने परमात्मा जे श्रीकृष्णभगवान् तेनी संघाथे व्रजनी गोपियोए कामबुद्धिए करीने प्रीति करी तोपण सर्वे भगवाननी मायाने तरी गइयो ने पोते गुणातीत थइने निर्गुण एवुं जे भगवाननुं अक्षरधाम तेने पामियो, तेनुं कारण ए छे जे श्रीकृष्णभगवान् पोते साक्षात् पुरुषोत्तम गुणातीत दिव्यमूर्ति हता तो ते संघाथे गोपियोए जाणे अजाणे प्रीति करी तोपण ते गोपियो गुणातीत थइयो अने भरतजीए दयाए करीने मृगलामां प्रीति करी तो पोते मृगलु थया, माटे गमे तेवा मोटा होय तेनुं पण कुसंगे करीने तो भुंडुंज थायछे अने गमे तेवो पापी जीव होय

ने ते जो सत्यस्वरूप एवा जे भगवान् तेनो प्रसंग करे तो परम पवित्र थइने अभयपदने पामे. अने जो श्रीकृष्णभगवान् पोते गुणातीत न होत तो एना भक्त जे गोपीयो ते गुणातीतपणाने न पामत अने जो गुणातीत पदने पामियो तो श्रीकृष्णभगवान् गुणातीत कैवल्य दिव्यमूर्तिज छे अने वेदांती कहेछे जे 'सर्वत्र ब्रह्म सभर भर्यो छे' त्यारे जेम गोपियोए श्रीकृष्णभगवानने विषे प्रीति करी तेमज सर्वे स्त्रीयो पोतपोताना धणीने विषे प्रीति करेछे तथा सर्वे पुरुष पोतानी स्त्रीयोने विषे प्रीति करेछे तोपण तेमने गोपीयोना जेवी प्राप्ति थती नथी तेमने तो घोर नरकनी प्राप्ति थायछे, माटे जे विधिनिषेध छे ते साचा छे पण खोटा नथी अने जे ए विधिनिषेधने खोटा करेछे तेतो नारकी थायछे, एम वार्ता करीने श्रीजिमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने पोताने उतारे पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ ४२ ॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि ७ सातमने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर सांझने समे विराजमान हता अने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने धोळी चादर ओढी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने पाघने विषे पीळा पुष्पना तोरा लटकता हता ने कंठने विषे पीळा पुष्पना हार पहेर्या हता ने बे कानने उपर पीळा पुष्पना गुच्छ खोशा हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समे श्रीजिमहाराज सर्वे भक्तजन उपर करुणानी दृष्टिए करीने सर्व सामुं जोइने बोल्या जे सर्वे सांभळो एक प्रश्न पुछीए छीए जे "श्रीमद्भागवतपुराणमां कह्युंछे जे, 'जे भगवानना भक्त होय ते चार-

प्रकारनी मुक्तिने नथी इच्छता' अने बीजा पण जेजे भगवानना मोटा भक्त छे ते एम कहेछे जे 'भगवानना भक्त होय ते चार प्रकारनी मुक्तिने नथी इच्छता' ते चार प्रकारनी मुक्ति ते शुं? तो एकतो भगवानना लोकमां रहेवुं अने बीजुं भगवानने समीपे रहेवुं अने त्रीजुं भगवानना सरखुं रूप[1] पामवुं अने चोथुं भगवानना सरखुं ऐश्वर्य पामवुं, एवी रीते जे चार प्रकारनी मुक्ति छे तेने तो भगवाननो भक्त नथी इच्छतो ने केवळ भगवाननी सेवाने इच्छेछे, ते ए भक्त चार प्रकारनी मुक्तिने शा सारु नथी इच्छतो ए प्रश्न छे?" तेनो उत्तर जेने जेवो आवडे तेवो ते करो. पछी सर्वे परमहंस उत्तर करवा लाग्या पण उत्तर थयो नहि, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए छीए जे, जे भगवाननो भक्त थइने ए चार प्रकारनी मुक्तिनी इच्छा राखे तो ते सकाम भक्त कहेवाय अने जे ए चतुर्धा मुक्तिने न इच्छे ने केवळ भगवाननी सेवानेज इच्छे ते निष्काम भक्त कहेवाय, ते श्रीमद्भागवतमां कह्युंछे जे "मत्सेवया प्रतीतं च सालोक्यादि चतुष्टयम्।[2] नेच्छन्ति सेवया पूर्णाः कुतोऽन्यत्कालविप्लुतम्।[3] सालोक्य-

---

१ शरीर।

२ अर्थः—मारी सेवा करवाथी प्राप्त थती एवी सालोक्यादि चार प्रकारनी मुक्तिने मारी सेवाथीज पूर्ण एवा निष्काम भक्तो इच्छता नथी, तो काळे करीने जेनो नाश छे एवा इन्द्रादि देवताओनां ऐश्वर्यने न इच्छे एमां शुं कहेवुं?।

३ अर्थः—मारी सेवा विना भगवानने बळात्कारे आपेली सालोक्यादि मुक्तिने पण निर्गुणभक्तिवाळा जनो ग्रहण करता नथी, तो सांसारिक फळने न ग्रहण करे तेमां शुं कहेवु?।

आ श्लोकमां 'सालोक्यादिकनो पृथक् पृथक् निर्देश कर्योछे तेथी मुक्तिमां फळनुं तारतम्य छे' एवी शंका करवी नहि, केमके सालोक्यादिनो ब्रह्मसायुज्यमां अन्तर्भाव मान्योछे, ज्यारे ब्रह्मनी साथे सायुज्य प्राप्त थयुं त्यारे सालोक्यादि सर्वतो तेने सिद्धज छे, माटे सालोक्यादिनो सायुज्यमां अन्तर्भाव मानवो तेज योग्य छे, तेवो अन्तर्भाव जणावा माटे सालोक्यादि चारनुं भेदथी ग्रहण कर्युं छे, मुक्तितो एक सायुज्यज छे माटे मुक्तिमां फळतारतम्य नथी । **अथवा**—भगवाननी प्राप्तिमां पण स्वर्गादि लोकनी पेठे श्रीविष्णुलोकादि विचित्र अवान्तर लोकनी प्राप्तिनी अपेक्षाए सालोक्यादि फळभेद छे, तेनी अपेक्षावाळाओने फळभेद सूचववा माटे सालोक्यादिनो पृथक् पृथक् निर्देश कर्यो छे, ते कहुंछे के—"लोकेषु विष्णोर्निवसन्ति केचित्सामीप्यमृच्छन्ति च केचिदन्ये । अन्ये तु रूपं सदृशं भजन्ते सायुज्यमेके स तु मोक्ष उक्तः ॥" "मोक्ष सालोक्यसारूप्यं प्रार्थये न कदाचन । इच्छाम्यहं महाबाहो ! सायुज्यं तव सुव्रत ! ॥" **अर्थः**—केटलाक विष्णुलोकमां रहेवानुं इच्छेछे. केटलाक विष्णुनुं सामीप्य इच्छेछे, केटलाकतो सदृश रूप (शरीर) इच्छेछे, बीजा केटलाकतो सायुज्यने इच्छेछे, तेज (सायुज्य) मोक्ष कह्योछे । मोक्षपणे जणाता सालोक्य अने सारूप्यने क्यारेयपण हुं प्रार्थना करतो नथी, परंतु वस्तुताए मोक्षरूप जे सायुज्य तेने इच्छु छुं ॥ सालोक्यादिमां क्वचित् मुक्तिशब्दनो प्रयोग छे तेतो गौण (औपचारिक) जाणवो, मुक्तितो सायुज्यज छे, माटे सर्वकर्मनी निवृत्ति थवा पूर्वक स्वतः ब्रह्मानुभव प्राप्त थया पछी मुक्तिमां फळभेद कही शकाय नहि; जो 'कर्मनो एकदेश बाकी रहेछे, एम कहे तो ते मुक्तिज न कहेवाय, माटे मुक्तिमां फळतारतम्य नथी, "कृष्णसेवा मुक्तिश्च गम्यताम्" सेवा तेज मुक्ति छे, सालोक्यादि नहि, एम शिक्षापत्रीमां कह्युं छे ।

"मत्सेवया प्रतीतं च" आ श्लोकमां एकत्वमुक्ति कही नथी अने आ श्लोकमां कही छे तो बन्ने भगवद्वाक्योनो विरोध आवशे, एवी शंका करवी नहि केमके मुक्ति एक प्रकारनी अने चार प्रकारनी छे तेमां भगवानना साधर्म्यने पामेलाने एकत्व पर्याय जेनो छे एवी सायुज्यमुक्तिज प्राप्त थायछे जेने सायुज्य प्राप्त थयुं तेने सालोक्यादितो सिद्धज छे, जेओ साधर्म्ये रहित छे तेमने सालोक्यादि चार प्रकारनी मुक्ति छे, माटे विरोध नथी, कोइ स्थळे तो सार्ष्टि मुक्तिने पडती मुकीने सायुज्यने साथे लइने चार प्रकारनी मुक्ति कही छे,—"लोकेषु विष्णोर्नियसन्ति केचित्सामीप्यमृच्छन्ति च केचिदन्ये । अन्ये तु रूपं सदृशं भजन्ते सायुज्यमेके स तु मोक्ष उक्तः ॥" इत्यादि ।

सार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत । दीयमानं न गृह्णन्ति विना मत्सेवनं जनाः ॥" एनो अर्थए छे जे, जे भगवानना निष्काम भक्त छे ते सेवा जे भगवाननी परिचर्या करवी ते जो ए चतुर्धा मुक्तिमां न होय तो एने इच्छेज नहि ने एक सेवानेज इच्छेछे अने एवा जे निष्काम भक्त तेमने भगवान् पोतानी सेवामां राखेछे. अने ए भक्त नथी इच्छता तोपण बळात्कारे भगवान् एने पोतानां ऐश्वर्य सुखने

---

१ सायुज्य । श्रुतिस्मृतिमा आत्मा परमात्मानो भेद स्वाभाविकपणे प्रतिपादन करेलो होवाथी मुक्तिदशामा पण आत्मानु परमात्मानी साथे स्वरूपैक्य थतुं नथी परन्तु साधर्म्य थायछे, साधर्म्यथी भिन्न बीजी कोइ एकत्व मुक्ति नथी. सायुज्य शब्दनो अर्थपण 'एकत्व' एवो नथी परंतु 'समानगुणयोग' एवो छे, ते गुणो अपहतपाप्मत्वादि आठ कह्या छे, 'युज्यते इति युक्' जोडाय ते 'युक्' कहेवाय, आवी व्युत्पत्तिथी 'युक्' शब्द गुणपर (धर्मपर) छे, जे गुण छे ते गुणिनी साथे जोडायछे, समान युक् जेनो छे ते 'सयुक्' कहेवाय, सयुक्नो जे भाव ते 'सायुज्य' कहेवाय, एटले 'साधर्म्य' एवो अर्थ थयो, ते श्रुति स्मृतिमा कह्युं छे—"निरञ्जन परमं साम्यमुपैति" "इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागता" वळी सायुज्य शब्दनो अर्थ 'एकत्व एवो करे तो प्रयोगनो पण विरोध आवे, "एतासां देवतानां सायुज्यं सार्ष्टितां समानलोकतामाप्नोति" आ श्रुतिमां अग्नि, वायु आदिक अनेक देवताओनी साथे एक व्यक्तिनुं सायुज्यपणु कहेलुं छे तो एक निरवयव अछेद्य एवा आत्मानुं बहु देवताओनी साथे अनुक्रमे के एकसाथे 'एकत्व' संभवे नहि, एटले एक देवतानी साथे एकत्व पाम्या पछी बीजी देवतानी साथे एकत्व शी रीते पामे ? माटे सायुज्य शब्द पण सालोक्य सारूप्य शब्दनी पेठे धर्मसाम्यपर छे, "सायुज्यं प्रतिपन्ना ये तीव्रभक्तास्तपस्विनः । किंकरा मम ते नित्यं भवन्ति निरुपद्रवाः" (जे भक्तो सायुज्य पाम्या छे ते मारा किंकरो थायछे) एम परमसंहितामां कह्युं छे, लयशब्दनो अर्थपण 'स्वरूपैक्य' एवो नथी परंतु संश्लेषविशेष छे, माटे एकत्व शब्दथी सायुज्य मुक्ति कही छे । २ तात्पर्यार्थ ।

पमाडेछे, ते कपिलदेव भगवाने कह्युंछे जे–“अथो विभूतिं मम मायाविनस्तामैश्वर्यमष्टाङ्गमनुप्रवृत्तम्। श्रियं भागवतीं वा स्पृहयन्ति भद्रां परस्य मे तेऽश्नुवते तु लोके ॥” अने ए निष्काम भक्तनेज गीतामां भगवाने ज्ञानी कह्योछे अने जे सकाम भक्त छे तेने अर्थार्थी कह्योछे, माटे भगवानना भक्तने भगवाननी सेवा विना बीजुं कांइ न इच्छवुं अने इच्छे तो एमां एटली काच्यप कहेवाय अने जो काच्यप होय तो निष्काम एवा जे भगवानना एकांतिक भक्त तेनो समागम करीने ए काच्यपने टाळवी । इति वचनामृतम् ॥ ४२ ॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि ८ आठमने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ओटा मध्ये ढोलिया उपर आथमणे मुखारविंदे सवारना पहोरमां विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने ते पाघने एक आंटे करीने बोकानी वाळी हती ने ते पाघ उपर धोळा पुष्पनो हार विराजमान हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे.“भगवानने विषे स्नेह होय तेनुं

---

१ अर्थ—अर्चिरादिमार्गे जवानो आरंभ थया पछी योगमायानो स्वामी एवो हुं ते मारी प्रसिद्ध एवी विभूति (ब्रह्माना लोकपर्यन्तनी संपत्ति) तथा भक्तियोगथी प्राप्त थतुं अणिमादि आठ प्रकारनुं ऐश्वर्य तथा मंगलरूप एवी भागवती श्री (वैकुंठादिदिव्यलोकमां रहेली संपत्ति) ने, मारा निष्काम भक्तो इच्छता नथी तो,पण सर्वोपर एवो जे हुं ते मारा धाममां तेने तेओ पामेछे । ‘भागवती श्री’–आ पद दृष्टान्त माटे. छे एटले भागवती श्रीने इच्छता नथी तो मायाविभूत्यादिकने न इच्छे एमां कहेवुंज शुं ?।

शुं रूप छे?" पछी ब्रह्मानंदस्वामीए स्नेहनुं रूप करवा मांड्युं पण समाधान न थयुं. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, तमने तो स्नेहनी दिशज जडी नहिं अने तमे जे पिंड ब्रह्मांडथी निःस्पृह रहेवुं तेने स्नेह कह्यो ए स्नेहनुं रूप नहि एतो वैराग्यनुं रूप छे. अने स्नेह तो एनुं नाम जे 'भगवाननी मूर्तिनी' अखंड स्मृति रहे' एनुं नाम स्नेह कहीए अने जे भक्तने परिपूर्ण भगवानने विषे स्नेह होय तेने एक भगवान् विना बीजो संकल्पज न थाय अने जेटलो भगवान् विना बीजो घाट थायछे तेटलो तेना स्नेहमां फेर छे अने जेने परिपूर्ण भगवानमां स्नेह होय ने तेने जो जाणे अजाणे भगवाननी मूर्ति विना बीजो कांइक घाट थाय तो जेम पंचामृत भोजन जमतो होय तेमां कोइक कांकरा तथा घुव्यनो खोबो भरीने नाखे ने जेवुं वसमुं लागे अथवा कपाळमां बळबळतो डांम दे ने ते जेवो वसमो लागे तेवो भगवान् विना बीजो घाट थाय ते वसमो लागे, एवी रीते जेने वर्ततुं होय तेने भगवानने विषे प्रीति छे एम जाणवुं, ते सर्वे पोतपोताना हृदामां तपाशी जुवो तो जेने जेवी प्रीति हशे तेने तेवी जणाइ आवशे.

॥ पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "एवी दृढ प्रीति भगवानने विषे थाय तेनुं शुं साधन छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सत्पुरुषनो जे प्रसंग एज परमेश्वरने विषे दृढ प्रीति थवानुं कारण छे, त्यारे सोमलो खाचर बोल्या जे "एवो प्रसंग तो अतिशे करीए छीए पण एवी दृढ प्रीति केम थती नथी?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रसंग तो करोछो पण अर्धो अमारो प्रसंग करोछो ने अर्धो जगतनो प्रसंग करोछो ते माटे भगवानने विषे दृढ प्रीति थती नथी.

१ लक्षण। २ प्रीतिपूर्वक। ३ देशकाळादिकनी विषमताथी।

पछी गाम वसोना विप्र वाला ध्रुव तेणे प्रश्न पुछ्युं जे "हे महाराज! देह अने देहना संबन्धिने विषे अहंममत्वपणाना घाट थायछे ते केम टळे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या[1] जे, एतो ए जीवने विपरीत भावना थइछे जे 'पोताने देहथी पृथक् जे जीवात्मा ते रूपे नथी मानतो ने देहरूपे मानेछे' अने ए जीवात्माने विषे देह तो केवी रीते वळग्यो छे तो जेम कोइक पुरुष होय तेणे दरजीने घेर जइने डगलो[2] शीवाडीने पहेर्यो त्यारे ते एम माने जे 'दरजी[3] ते मारो बाप छे ने दरजण ते मारी मा छे' एम जे माने ते मूर्ख कहेवाय, तेम आ जीवने आ देहरूप जे डगलो ते क्यारेकतो ब्राह्मण ने ब्राह्मणीथकी उत्पन्न थायछे अने क्यारेकतो नीच जातिमांथी उत्पन्न थायछे तथा चोराशी लाख जातिथकी देह उत्पन्न थायछे ते देहने विषे पोतापणुं माने अने ते देहना माबापने पोतानां माबाप माने ते मूर्ख कहेवाय अने तेने पशु जेवो जाणवो अने चोराशी लाख जातमां जे पोतानी मा बॉन दिकरीयो अने स्त्रीयो छे ते पतिव्रतानो धर्म एके पाळती नथी माटे जे एवा सगपणने साचुं मानेछे तेने अहंममत्वनां घाट केम टळशे? अने आवी रीतनी समझण विना जन्मभूमिनी जे देशवासना ते टळवी

१. अचेतन देह अने चेतन आत्मानो यथार्थ विवेक थवाथी अहंममता टळेछे. एटले सत्पुरुषना प्रसंगथी देह अने आत्मानुं स्वरूप पृथक् पृथक् समझाया पछी चिद्रूप आत्मामां अहंता दृढ थायछे, तेथी देहमां आत्मापणानुं अभिमान नाश थाय छे. अभिमान नाश थवाथी स्त्री, पुत्र अने धनादिक दैहिक पदार्थोमां जे ममता तेनो नाश थायछे. पछी सर्व अहंममताना घाटनो तत्काळ लय थायछे. आटलो साक्षात् उत्तर छे तेनो सुखेथी बोध थवा माटे दृष्टान्त कहेवापूर्वक विस्तार करी कहेछे। २ देह अने आत्मानुं अत्यन्त पार्थक्य सूचववाने माटे आ दृष्टान्त छे। ३ डगलो ते हुं छुं अने।

घणी कठण छे अने ज्यांसुधी देहने पोतानुं रूप मानेछे त्यांसुधी एनी सर्वे समझण वृथा छे अने ज्यांसुधी वर्णनुं के आश्रमनुं मान लइने फरेछे त्यांसुधी एनेविषे साधुपणुं आवतुं नथी, माटे देह ने देहना संबन्धिने विषे अहंममत्वनो त्याग करीने ने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप मानीने ने सर्व वासनानो त्याग करीने स्वधर्ममां रह्यो थको जे भगवानने भजेछे ते साधु कहेवायछे. अने जेने एवुं साधुपणुं आव्युं तेने ने पुरुषोत्तम भगवानने कांइ छेटुं रहेतुं नथी अने बीजुं सर्वे थाय पण एवी साधुता आववी तो घणी कठण छे अने एवो साधु तो हुं छुं जे 'मारे वर्णाश्रमनुं लेशमात्र मान नथी' एवी रीते श्रीजिमहाराज बोल्या तेतो पोताना भक्तने शिक्षाने अर्थे छे एम जाणवुं अने पोते तो साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण छे । इति वचनामृतम् ॥ ४४ ॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि १० दशमने दिवस सांझने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ ओटा उपर दक्षिणादे मुखारविंदे विराजमान हता अने धोळी चादर ओढी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने माथे धोळी पाघ बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी गोपालानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! केटलाक वेदांती एम कहेछे जे 'भगवानने आकार नथी' अने तेवाज प्रतिपादननी श्रुतियोने[1] भणेछे अने केटलाक जे नारद, शुक, सनकादिक सरखा भगवानना भक्त छे तेतो भगवाननुं[2] साकारपणुं प्रतिपादन करेछे, ते

१ "अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षु स शृणोत्यकर्ण" इत्यादिक । २ "य एषोऽन्तरादित्ये हिरण्मय पुरुषो दृश्यते हिरण्यश्मश्रुर्हिरण्यकेश.. तस्य कप्यास पुंडरीकमेवमक्षिणी" इत्यादि श्रुतियोथी ।

ए वेमांथी कोण साचा छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे' जे भगवान् पुरुषोत्तम छे तेतो सदा साकारज छे अने महातेजोमय मूर्ति छे अने अंतर्यामिपणे करीने सर्वत्र पूर्ण एवुं जे सच्चिदानंद ब्रह्म छे तेतो मूर्तिमान् एवा जे पुरुषोत्तम भगवान् तेनुं तेज छे अने श्रुतिये पण एम कह्युंछे जे 'ते भगवान् माया सामुं जोता हवा' अने ज्यारे जुवे त्यारे तेने शुं एकली आंख्यज होय? हाथ पग पण होय, माटे साकार रूपनुं प्रतिपादन थयुं. अने वळी जेम समग्र जळ छे तेना जीवरूप जे वरुण ते पोताना लोकने विषे साकार छे ने जळ निराकार कहेवायछे अने जेम अग्निनी जे ज्वाळा छे ते निराकार कहेवायछे अने तेनां देवता जे अग्नि ते अग्निलोकने विषे साकार छे अने जेम समग्र तडको ते निराकार कहेवायछे ने सूर्यना मंडळने विषे जे सूर्यदेव छे ते साकार छे, तेम सच्चिदानंद जे ब्रह्म ते निराकार छे अने पुरुषोत्तम जे भगवान् ते साकार छे अने ए सर्वत्र पूर्ण एवुं जे सच्चिदानंद ब्रह्म ते पुरुषोत्तम भगवाननुं तेज छे. अने कोइ एम कहेशे जे, श्रुतिमां एम कह्युं छे जे 'परमेश्वर तो करचरणादिके रहित छे ने सर्वत्र पूर्ण छे' तो ए जे श्रुतिये करचरणादिकनो निषेध कर्यो छे तेतो मायिक करचरणादिकनो निषेध कर्यो छे अने भगवाननो आकार छे तेतो दिव्य छे पण मायिक नथी. अने अंतर्यामिपणे करीने जीव ईश्वरने विषे व्यापक एवुं

१ भगवाननुं निरवयवपणुं अने सावयवपणुं कहेवामा बे कोटि छे, तेमा एकतो केवळ भगवत्तेज छे एम कहेवाथी निरवयवपणुं अने तेजना आश्रयरूप भगवान् छे एम कहेवाथी सावयवपणुं, बीजी कोटितो भगवान् मायिक अने अमायिक अवयववाळा छे एम कहेवाथी निरवयवसावयवपणुं, ते बन्ने कोटिथी भगवाननुं निरवयवसावयवपणुं कहेछे। २ जळाधार देवरूप।

जे पुरुषोत्तम भगवाननुं ब्रह्मरूप तेज ते निराकार छे तोपण जीव ईश्वर सर्वेने तेमना कर्मने अनुसारे यथायोग्यपणे कर्मना फळने देवाने विषे नियंतापणुं छे ने साकारनी पेठे नियंतारूप क्रियाने करेछे माटे ते तेजने पण साकार जेवुं जाणवुं, एवी रीते भगवान् पुरुषोत्तम तो सदा साकारज छे पण निराकार नथी अने जे निराकार कहेछे तेतो समझता नथी। इति वचनामृतम् ॥ ४५ ॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि ११ एकादशीने दिवस सांझने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी समीपे ओटा उपर दक्षिणादे मुखारविंदे विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समे भट्ट माहेश्वर[1] नामे वेदांती ब्राह्मण हतो तेणे श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्युं जे "समाधिने विषे सर्वे[2] लीन थायछे त्यारे आकाश केवी रीते लीन थायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आकाशनुं रूप अमे रुडे प्रकारे करीए ते तमे सर्वे सावधान थइने सांभळो जे,[3] आकाश ते अवकाशने कहीए अने जेजे पदार्थ रहेछे ते अवकाशमांज रहेछे अने ते पदार्थमां पण आकाश व्यापीने रहेछे अने एवुं कोइ पदार्थ नथी जे जेनेविषे आकाश न होय,

१ राजकोटपुरनिवासी। २ देहादिक समग्र विश्व। ३ आकाश बे प्रकारनो छे–एक भौतिकाकाश अने बीजो महाकाश, महाकाशने योगिओ चिदाकाश कहेछे तेमना स्वरूपनुं निरूपण करवापूर्वक समाधिमा चिदाकाशनो लय नहि होवानु सूचववानी साथे भूताकाशनो संकोचरूप लय कहेवारूप उत्तर आपेछे।

केमजे पृथ्वीनी एक रज अति झीणी होय तेनेविषे पण आकाश छे अने ते एक रजना कोटान कोटी कटका करीए तोपण तेनेविषे आकाश छे; माटे आकाशनी दृष्टिए ज्यारे जोइए त्यारे पृथ्वी आदिक चार भूत देखातां नथी एकलो आकाशज देखायछे ते आकाश सर्वनो आधार छे अने स्थूळ सूक्ष्म अने कारण ए जे त्रण शरीर ते आकाशने विषे छे अने आ ब्रह्मांड छे तेपण आकाशने विषे रह्युंछे अने ब्रह्मांडनुं कारण जे प्रकृति ने पुरुष तेपण आकाशने विषे छे एवो जे आकाश ते प्रकृति पुरुष अने तेनुं कार्य पिंड ब्रह्मांड ए सर्वने मांही पण रह्योछे ने सर्वनो आधार थइने बहार पण रह्योछे एवो जे ए आकाश तेतो सुषुप्तिने विषे अथवा समाधिने विषे लीन थतो नथी. अने कोइ कहेशे जे 'आकाशादिक पंच भूततो तमोगुणथी उपज्यां छे ते आकाश पुरुष अने प्रकृतिनो आधार केम कहेवाय? ने सर्वमां व्यापक केम कहेवाय?' तो एनो उत्तर ए छे जे, प्रकृतिमां जो अवकाशरूप आकाश न होय तो जेम वृक्षमांथी फळपुष्पादिक बहार निसरेछे अने जेम गायना पेटमांथी वाछडुं बहार निसरेछे तेम प्रकृतिमांथी महत्तत्त्व निसरेछे ते केम निसरे? माटे प्रकृतिने विषे आकाश रह्योछे अने महत्तत्त्वमांथी अहंकार निसरेछे माटे महत्तत्त्वमां आकाश रह्योछे अने अहंकारमांथी त्रण गुण निसरेछे माटे अहंकारने विषे आकाश रह्योछे अने तमोगुण-मांथी आकाश आदिक पंच भूत निसरेछे माटे तमोगुणने विषे पण आकाश रह्योछे. अने तमोगुणमांथी जे आकाश निसरेछे ते आकाशतो तमोगुणनुं कार्य छे अने विकारवान् छे अने सर्वनो आधार जे आ-काश छे ते निर्विकारी छे ने अनादि छे अने एवो सर्वाधार जे

आकाश छे ते आकाशने ब्रह्म कहीए चिदाकाश कहीए. अने ए आकाशने विषे पुरुष ने प्रकृति ते संकोच अवस्थाने अने विकाश अवस्थाने पामेछे, केवी रीते तो ज्यारे पुरुष, प्रकृति सामुं जुवे छे त्यारे जेम स्त्रीपुरुषथकी संताननी उत्पत्ति थायछे तेम पुरुष जे पति ने प्रकृतिरूप जे स्त्री तेथकी महत्तत्त्वादिक संतान उत्पन्न थायछे एवी रीते जे ए प्रकृति ते चोविश तत्त्वरूपे ने पिंड ब्रह्मांडरूपे थायछे ए प्रकृतिनी विकाश अवस्था छे. अने जेटलां प्रकृतिनां कार्य छे तेने विषे पुरुष पोतानी शक्तिए करीने व्यापकपणे रहेछे ते पुरुषनी विकाश अवस्था छे अने ज्यारे काळे करीने प्रकृतिनुं कार्य सर्व नाश पामी जायछे अने प्रकृति पण पुरुषना अंगमां लीन जेवी रहेछे ए प्रकृतिनी संकोच अवस्था छे अने पुरुष पण प्रकृतिनां कार्य सर्व नाश पाम्यां त्यारे पोताने स्वरूपे रह्यो ए पुरुषनी संकोच अवस्था छे, जेम काचबो छे ते ज्यारे विकासने पामेछे त्यारे पोतानां अंग सर्वे बहार काढेछे अने ज्यारे संकोचने पामेछे त्यारे सर्वे पोतानां अंग ताणी लेछे ते रुंढ मुंढ थइ रहेछे, तेम पुरुष प्रकृतिनी संकोच विकाश अवस्था छे अने ए प्रकृति ने प्रकृतिना कार्यने विषे अन्वय व्यतिरेकपणुं पुरुषनुंज छे पण सर्वनो आधार एवो चिदाकाश तेनुं नथी, केम जे जे सर्वाधार होय ते कोण थकी व्यतिरेक होय ? तेतो सदा सर्वमां रह्योज होय. अने आ ब्रह्मांड छे तेने चारेकोरे लोकालोक पर्वत छे ते गढनी पेठे रह्योछे अने ते लोकालोकनी बहार ते अलोक छे अने ते अलोकथी पर सप्त आवरण छे अने तेथी पर एकलुं अंधारुं छे अने ते अंधाराथी पर प्रकाश छे ते प्रकाशने चिदाकाश कहीए, तेमज उंचुं पण ब्रह्मलोक सुधी कहेवाय अने तेनी उपर सप्त आवरण छे

अने ते आवरणने पार अंधकार छे अने अंधकारने पार प्रकाश[1] छे ते प्रकाशने चिदाकाश कहीए अने तेमज हेठे पण सप्त पाताळ सुधी कहेवाय ने तेथी हेठां सप्त आवरण छे ने तेथी हेठुं अंधकार छे तेथी हेठो प्रकाश छे ते प्रकाशने चिदाकाश कहीए, एवी रीते ब्रह्मांडनी चारे पासे चिदाकाश छे अने ब्रह्मांडनी मांही पण छे. अने एवो जे ए सर्वाधार आकाश छे तेने आकारे जेनी दृष्टि वर्तती होय तेने दहरविद्या कहीए. अने अक्षिविद्या आदिक घणीक प्रकारनी ब्रह्मविद्या कहीछे ते मांहेली ए पण एक ब्रह्मविद्या छे. अने ए चिदाकाश छे ते अतिप्रकाशवान् छे अने ते चिदाकाश अनादि छे ने तेनी उत्पत्ति विनाश नथी. अने जे आकाशनी उत्पत्ति अने विनाश कह्योछे ते आकाशतो तमोगुणनुं कार्य छे अने अंधकाररूप छे तेनी लीनता थायछे पण सर्वनो आधार एवो जे चिदाकाश तेनी तो लीनता थती नथी, एवी रीते तमारा प्रश्ननो उत्तर कर्यो. हवे तेमां कोइने शंका रही होय तो पुछो? पछी ते वेदांती ब्राह्मण तथा सर्वे हरिजन बोल्या जे, हवे कोइने लेशमात्र संशय नथी। इति वचनामृतम् ॥ ४६ ॥

[2] संवत् १८७६ ना महा शुदी १२ द्वादशीने दिवस सवारना पहोरमां स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना

१ तमोगुणमाथी उत्पन्न थयोछे माटे, अथवा नीलवर्ण छे माटे। २ समाधिमा भगवाननी मूर्तिविषे मन, प्राण अने इन्द्रियोने प्रकाश करनारी जीवनी वृत्तियो प्रतिलोमपणे ज्यारे वर्तेछे त्यारे समाधिस्थ पुरुषना मन इन्द्रियोनुं प्रतिलोमपणे आकर्षण भगवाननी मूर्तिमा तत्काळ थइ जायछे, ते समयमांज वृत्तियोने व्यापवानो स्थानभूत नाडीओनुं आकर्षण थायछे, पछी नाडीओना छिद्रोमा रहेलो आकाश पण सर्वनाडीओमांथी सकोच पामेछे ते समयमां समाधिस्थ पुरुषनो देह काष्टवत् जड थायछे. आवी आकाशनी जे सकोचावस्था तेने लय कहेछे पण आकाशनो स्वरूपथी नाश थतो नथी।

दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्षहेठे ओटा मध्ये ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज जमणे हाथे चपटी वगाडीने बोल्या जे सर्वे सावधान थइने सांभळो एक वात करीए छीए. अने ते वातते स्थूळ छे पण सुधी सुरत दइने सांभळशो तो समझाशे नहितो नहि समझाय, पछी सर्वे हरिभक्ते कह्युं जे हे महाराज! कहो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, परमेश्वरना भक्त होय तेमां कोइकने धर्मनिष्ठा प्रधान होय ने कोइकने आत्मनिष्ठा प्रधान होय ने कोइकने वैराग्यनिष्ठा प्रधान होय ने कोइकने भक्तिनिष्ठा प्रधान होय अने गौणपणे तो ए सर्वे अंग सर्व हरिभक्तमां होयछे, हवे जेनी भागवतधर्मनिष्ठा प्रधान होय तेतो अहिंसा ब्रह्मचर्यादिकरूप जे पोतानो वर्णाश्रम संबन्धी सदाचार तेणे युक्तथको निर्दंभपणे करीने भगवान् अने भगवानना भक्तनी सेवा—चाकरी करवी तेनेविषे प्रीतिए युक्त वर्ते अने ते भक्तने भगवाननां मंदिर करवां तथा भगवानने अर्थे बाग बगिचा करवा तेनेविषे रुचि वर्ते तथा भगवानने नाना प्रकारनां नैवेद्य धरवां तेमां रुचि वर्ते अने भगवाननां मंदिरमां तथा संतनी जायगामां लिंपवुं तथा वाळवुं तेनेविषे रुचि वर्ते अने भगवाननी श्रवणकीर्तनादिक जे भक्ति तेने निर्दंभपणे करे अने ते धर्मनिष्ठावाळा भक्तने भागवतधर्मे युक्त एवुं जे शास्त्र तेना श्रवणकीर्तनादिकनेविषे अतिशय रुचि वर्ते। अने जेने आत्मनिष्ठा प्रधान होय तेतो त्रण देह अने त्रण अवस्था तेथी पर अने सत्तारूप एवो जे

पोतानो आत्मा तेरूपे निरंतर वर्ते अने पोताना इष्टदेव एवा जे प्रत्यक्ष श्रीकृष्णपरमात्मा तेने सर्वथी पर अने अतिशुद्धस्वरूप अने सदा दिव्य साकार मूर्ति समझे अने ते पोतानो आत्मा तथा ते परमात्मा तेना शुद्ध स्वरूपना प्रतिपादननी करनारी जे वार्ता तेने पोते करे अने बीजाथी सांभळे तथा तेवी रीतना शास्त्रमां प्रीतिए युक्त वर्ते अने पोताने आत्मसत्तापणे वर्तवुं तेमां विक्षेप आवे तो तेने सहन करी न शके एवी प्रकृतिवाळो होय। अने जेने वैराग्यनिष्ठा प्रधान होय तेने तो एक भगवाननी मूर्ति विना जे सर्वे मायिक पदार्थमात्र तेनेविषे निरंतर अरुचि वर्ते अने असत्यरूप जाणीने पोते मळनी पेठे त्याग कर्या जे गृह कुटंबी आदिक पदार्थ तेनी निरंतर विस्मृति वर्ते अने ते भक्त जे ते त्यागी एवा जे भगवानना भक्त तेना समागमनेज करे अने भगवाननी भक्ति करे ते पण पोताना त्यागमां विरोध न आवे तेवी रीते करे अने त्यागछे प्रधानपणे जेमां एवी वार्ताने पोते करे अने त्यागने प्रतिपादन करनारुं जे शास्त्र तेनेविषे रुचिवाळो होय अने पोताना त्यागनेविषे विरोध करनारां जे स्वादु भोजन अने सद्वस्त्रादिक पंचविषय संबन्धी मायिक पदार्थ मात्र, तेने पामवानेविषे अतिशय अरुचि वर्ते। अने जेने भक्तिनिष्ठा प्रधान होय तेने तो एक भगवानना स्वरूपनेविषेज अतिशय दृढ प्रीति वर्ते अने ते भगवानना स्वरूपथी अन्य एवां जे मायिक पदार्थ तेनेविषे पोताना मननी वृत्तिने धारी शके नहि अने प्रेमे करीने भगवानने वस्त्र अलंकारनुं धारण करे अने ते भक्तने भगवाननां जे मनुष्यचरित्र तेना श्रवणनेविषे अतिशय रुचि वर्ते तथा भगवाननी मूर्तिना निरूपणने करनारुं जे शास्त्र तेनेविषे अतिशय रुचि वर्ते अने जे भक्तने भगवानने विषे

प्रेमने देखे ते भक्तनेविपेज तेने प्रीति थाय अने ते विना तो पोताना पुत्रादिकनेविपे पण क्यारेय प्रीति न थाय अने ते भक्तने भगवानसंबन्धि क्रियाने विपेज निरंतर प्रवृत्ति होय । एवी रीते आ चार निष्ठावाळा भक्तना लक्षणनी वार्ताने विचारीने जेनुं जेवुं अंग होय तेवुं ते कहो? अने आ वार्ता छे तेतो दर्पण तुल्य छे ते जेनुं जेवुं अंग होय तेवुं तेने देखाडी आपेछे. अने भगवानना भक्त होय तेतो अंग विनाना होय नहि पण पोताना अंगने ओळखे नहि एटले पोताना अंगनी दृढता थाय नहि अने ज्यांसुधी पोताना अंगनी दृढता न थइ होय त्यांसुधी जेवी वात थाय तेवुं तेनुं अंग व्यभिचरि जाय, माटे आ वार्ताने विचारीने पोतपोताना अंगनी दृढता करो अने जेनुं जेवुं अंग होय ते तेम बोलो? पछी हरिभक्त सर्वे जेवुं जेनुं अंग हतुं ते तेवी रीते बोल्या. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेनुं एक सरखुं अंग होय ते उठी उभा थाओ, पछी जेनुं जेनुं एक सरखुं अंग हतुं ते सर्वे उभा थया, पछी श्रीजिमहाराजे ए सर्वेने पाछा बेसार्या.

पछी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "ए चारे अंगवाळाने पोतपोतानां अंगमां कोइ गुण दोप छे के नथी?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, गुण दोप छे ते कहीए ते सांभळो जे, ए चारे अंगवाळा जे भक्त तेमनां जे अमे प्रथम लक्षण कह्यां ते प्रमाणे जे वर्ते तेतो एमनेविपे गुण छे अने ए प्रमाणे जे न वर्ताय तेटलो एमनेविपे दोप छे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "ए चार निष्ठावाळानेविपे कोइ अधिक न्यून छे के ए चारे तुल्य छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यांसुधी एकएक निष्ठानेविपे वर्तता होय त्यांसुधी तो ए चारे सरखा छे अने ज्यारे ए चार निष्ठा एकनेविपे वर्ते त्यारे ते सर्वथकी अ-

धिक छे अने ज्यारे ए चारे निष्ठा एकनेविषे वर्ते त्यारे तेने परमभागवत कहीए अने एनेज एकांतिकभक्त कहीए । इति वचनामृतम् ॥४७॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि १३ तेरसने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लींबडाना वृक्षनी हेठे ओटामध्ये ढोलिया उपर आथमणे मुखारविंदे संध्यासमे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र पहेर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ बे मशालो बळती हती अने श्रीवासुदेवनारायणनी संध्या आरती तथा नारायणधुन्य थइ रही.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सर्वे सावधान थइने सांभळो एक वार्ता करीए छीए, त्यारे सर्वे मुनि तथा हरिभक्त बोल्या जे हे महाराज ! कहो ? पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे भगवाननो भक्त होय तेने नित्य प्रत्ये भगवाननी पूजा करीने ने स्तुति करीने भगवानपासे एम मागवुं जे 'हे महाराज ! हे स्वामिन् ! हे कृपासिंधो ! हे शरणागतप्रतिपाळक ! कुसंगीथकी मारी रक्षा करज्यो' ते कुसंगी चार प्रकारना छे-एक कुंडापंथी बीजा शक्तिपंथी त्रीजा शुष्कवेदांती अने चोथा नास्तिक ए चार प्रकारना कुसंगी छे, तेमां जो कुंडापंथीनो संग थाय तो वर्तमानमांथी चुकावीने भ्रष्ट करे अने जो शक्तिपंथीनो संग थाय तो दारु मांस खवरावीने स्वधर्मथकी भ्रष्ट करे अने जो शुष्कवेदांतिनो संग थाय तो भगवाननुं धाम तथा भगवाननो जे सदा दिव्य आकार तथा भगवानना अवतारनी मूर्तिओना जे आकार ते सर्वेने

१ ब्रह्मचर्यव्रतरूप । २ जीव, ईश्वर अने माया विगेरे ।

खोटा करीने भगवाननी भक्ति-उपासना ते थकी भ्रष्ट करे अने जो नास्तिकनो संग थाय तो कर्मनेज साचां करीने परमेश्वर एवा जे श्रीकृष्णभगवान् तेने खोटा करी देखाडे अने अनादि सत् शास्त्रना मार्गथकी भ्रष्ट करे, माटे भगवाननी पासे मागवुं जे 'ए चार प्रकारना माणसनो कोइ दिवस संग थशो नहि' अने वळी एम प्रार्थना करवी जे 'हे महाराज! काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या अने देहाभिमान ए आदिक जे अंतःशत्रु तेथकी रक्षा करज्यो अने नित्य तमारा भक्तनो समागम देज्यो' एवी रीते नित्ये भगवाननी प्रार्थना करवी अने ए कुसंगीथकी ने अंतःशत्रुथकी निरंतर डरता रहेवुं। इति वचनामृतम्॥४८॥

संवत १८७६ ना महा शुदि १४ चौदशने दिवस संध्या समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लींबडाना वृक्ष हेठे ओटामध्ये ढोलिया उपर विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ बे दिवियो बळती हती अने कंठनेविषे पीळा पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने बे हाथमां पीळा पुष्पना गजरा धारण कर्या हता अने सर्व धोळां वस्त्र पहेर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो, पछी ब्रह्मानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननेविषे वृत्ति राखीए छीए तेतो सुधी जोरे करीने राखीए छीए त्यारे रहेछे अने जगतना पदार्थ सन्मुख तो एनी मेळेज रहेछे तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवानना भक्त होय तेनी वृत्ति तो भगवान विना बीजे रहेज

१ भक्तिरूप उपासना।

नहि अने तेने तो एज फकर रहेछे जे 'मारे जगतना पदार्थमां वृत्ति राखवी तेतो घणुं कठण पडशे' माटे परमेश्वरना भक्त होय तेने तो जगतना पदार्थमां वृत्ति राखवी एज कठण छे अने जे जगतना जीव छे तेने परमेश्वरमां वृत्ति राखवी ते घणी कठण छे, माटे जेने परमेश्वरमां वृत्ति न रहे ते परमेश्वरनो भक्त नहि अने ते सत्संगमां आवतो होय तो ए धीरे धीरे संतनी वार्ता सांभळतां सांभळतां परमेश्वरनो भक्त थशे.

पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "एवी रीते भगवानमां वृत्ति राख्यानुं शुं साधन छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एनुं साधन तो अंतर्दृष्टि छे[1], ते अंतर्दृष्टि शुं? तो जेवा पोताने प्रत्यक्ष भगवान् मळ्या छे तेनी मूर्ति सामुं[2] जोइ रहेवुं ए अंतर्दृष्टि छे अने ते मूर्ति विना पट्चक्र[3] देखाय अथवा गोलोक वैकुंठादिक भगवाननां धाम देखाय तोपण ते अंतर्दृष्टि नहि, माटे भगवाननी मूर्तिने अंतरमां धारीने ते सामुं जोइ रहेवुं अथवा बहार भगवाननी मूर्ति सामुं जोइ रहेवुं तेनुं नाम अंतर्दृष्टि छे अने ते मूर्ति विना बीजे ज्यांज्यां वृत्ति रहे ते सर्वे बाह्यदृष्टि छे, पछी वळी श्रीजिमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे हवे तो बे बे जण थइने सामसामा प्रश्न उत्तर करो, पछी घणी वार सुधी परमहंसे परस्पर प्रश्न उत्तर कर्या तेने सांभळता थका श्रीजिमहाराज तेमनी बुद्धिनी परीक्षा करता हवा। इति वचनामृतम्.॥ ४९ ॥

१ बीजा तप, व्रत, जपादिक साधन नथी। २ मेषोन्मेष्ये वर्जित एवां नेत्रथी बहुकाळपर्यन्त। ३ गुदा, लिंग, नाभि, हृदय, कंठ अने भ्रुकुटीनो मध्यभाग, आ छ स्थानमां अनुक्रमे रहेलां मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धि अने आज्ञा, आ छ चक्रमां अनुक्रमे रहेला गणपति, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, जीवात्मा अने हंसात्मा आ छ देवताओ।

संवत् १८७६ ना महा वदी १ पडवाने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरनी मेडीनी ओसरी आगळ प्रातःकाळे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे मुनि प्रत्ये एम पुछ्युं जे "जेने कुशाग्रबुद्धि होय तेने ब्रह्मनी[1] प्राप्ति थायछे,[2] ते कुशाग्रबुद्धि ते जे संसार व्यवहारमां बहु जाणतो होय तेनी कहेवाय के नहि? अथवा शास्त्र पुराणना अर्थने बहु जाणतो होय तेनी कहेवाय के नहि?" पछी एनो उत्तर मुनिए करवा मांड्यो पण थयो नहि, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, केटलाकतो व्यवहारमां अति डाह्या होय तोपण पोताना कल्याणने अर्थे कांइ जतन करे नहि तथा केटलाक शास्त्र पुराण इतिहास तेना अर्थने सारी पेठे जाणता होय तोपण पोताना कल्याणने अर्थे कांइ जतन करे नहि माटे एने कुशाग्रबुद्धिवाळा न जाणवा एने तो जाडीबुद्धिवाळा जाणवा अने जे कल्याणने अर्थे जतन करेछे ने तेनी बुद्धि थोडी छे तोपण ते कुशाग्रबुद्धिवाळो छे अने जे जगत् व्यवहारनी कोरे सावधान थइने मंड्यो छे ने तेनी बुद्धि अति झीणी छे तोपण ते जाडीबुद्धिवाळो छे, ए उपर भगवद्गीतानो श्लोक छे जे—"या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥" ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे—भगवाननुं भजन करवुं तेमांतो सर्व जगतना जीवनी बुद्धि रात्रिनी पेठे अंधकारे युक्त वर्तेछे कहेतां भगवाननुं भजन नथी क-

१ परब्रह्म। २ एम "दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः" इत्यादि श्रुतिस्मृतियो कहेछे।

रता अने जे भगवानना भक्त छे तेतो ते भगवानना भजननेविषे जाग्याछे कहेतां निरंतर भगवाननुं भजन करता थका वर्तेछे अने शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए जे पंच विषय तेनेविषे जीवमात्रनी बुद्धि जाग्रत वर्तेछे कहेतां विषयने भोगवता थकाज वर्तेछे अने जे भगवानना भक्त छे तेनी बुद्धि तो ते विषयभोगनेविषे अंधकारे युक्त वर्तेछे कहेतां ते विषयने भोगवता नथी माटे एवी रीते जे पोताना कल्याणने अर्थे सावधानपणे वर्तेछे तेज कुशाग्रबुद्धिवाळा छे अने ते विना तो सर्व मूर्ख छे। इति वचनामृतम् ॥ ५० ॥

संवत् १८७६ ना महा वदी २ बीजने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो ने धोळो अंगरखो पहेर्यो हतो ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कांइ प्रश्न पुछो, पछी पूर्णानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "दश इंद्रियो तेतो रजोगुणनी छे अने चार अंतःकरण छे तेतो सत्त्वगुणनां छे माटे ए सर्वे इंद्रियो ने अंतःकरण तेतो मायिक छे ने भगवानतो मायाथी पर छे तेनो मायिक अंतःकरणे करीने केम निश्चय थाय? अने मायिक एवी जे चक्षु आदिक इंद्रियो तेणे करीने भगवान् केम जोयामां आवे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मायिक वस्तुए करीने मायिक पदार्थ होय ते जणाय माटे मायिक जे अंतःकरण अने इंद्रियो तेणे करीने जो भग-

वान् जणाणा तो ए भगवान् पण मायिक ठर्या, ए रीते तमारो प्रश्न छे ? पछी पूर्णानंद स्वामी तथा सर्वे मुनिए कह्युं जे एज प्रश्न छे तेने हे महाराज ! तमे पुष्ट करी आप्यो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनोतो उत्तर एम छे जे, पचाश कोटि योजन पृथ्वीनुं पीठ छे ते पृथ्वी उपर घट पटादिक अनेक पदार्थ छे ते सर्वे पदार्थमां ए पृथ्वी रहीछे ने पोताने स्वरूपे करीने नांखीपण रहीछे अने ज्यारे पृथ्वीनी दृष्टिए करीने जोइए त्यारे ए सर्वे पदार्थरूपे पृथ्वी थइछे ने पृथ्वी विना बीजुं कांइ पदार्थ नथी अने ते पृथ्वी जळना एक अंशमांथी थइछे. अने जळतो पृथ्वीने हेठेपण छे ने पडखेपण छे ने उपरपण छे ने पृथ्वीना मध्यमां पण जळ सर्वत्र व्यापी रह्युं छे माटे जळनी दृष्टिए करीने जोइए तो पृथ्वी नथी एकलुं जळज छे अने ए जळपण तेजना एक अंशमांथी थयुंछे माटे तेजनी दृष्टिए करीने जोइए तो जळ नथी एकलुं तेजज छे अने ते तेजपण वायुना एक अंशमांथी थयुंछे माटे ते वायुनी दृष्टिए करीने जोइए तो तेज नथी एकलो वायुज छे. अने ते वायुपण आकाशना एक अंशमांथी थयोछे माटे जो आकाशनी दृष्टिए करीने जोइएतो वायु आदिक जे चार भूत ने तेनुं कार्य जे पिंड ने ब्रह्मांड ते कांइ भासेज नहि एकलो आकाशज सर्वत्र भासे. अने ए आकाशपण तामसाहंकारना एक अंशमांथी उत्पन्न थयोछे अने ते तामसाहंकार, राजसाहंकार, सात्त्विकाहंकार अने भूत, इंद्रियो, अंतःकरण अने देवता ए सर्वे महत्तत्त्वना एक अंशमांथी उत्पन्न थयाछे माटे महत्तत्त्वनी दृष्टिए जोइए तो त्रण प्रकारनो अहंकार तथा भूत, इंद्रियो, अंतःकरण, देवता ए सर्वे नथी एकलुं महत्तत्त्वज छे. अने ते महत्तत्त्वपण प्रधान–प्रकृतिना एक अंशमांथी उत्पन्न थयुंछे माटे ए प्रकृतिनी दृष्टिए जोइए तो महत्तत्त्व नथी एकली ए प्रकृतिज छे. अने

ते प्रकृतिपण प्रलयकाळमां पुरुषना एक अंशमां लीन थइ जायछे अने पाछी सृष्टिसमे एक अंशमांथी उत्पन्न थायछे माटे पुरुषनी दृष्टिए करीने जोइए तो ए प्रकृति नथी एकलो पुरुषज छे. अने एवा अनंत कोटी पुरुष छे ते महामायाना एक अंशमांथी उत्पन्न थायछे माटे ए महामायानी दृष्टिए जोइए तो ए पुरुष नथी एकली महामायाज छे. अने महामाया पण महापुरुषना एक अंशमांथी उत्पन्न थायछे माटे ए महापुरुषनी दृष्टिए जोइए तो ए महामाया नथी एकलो महापुरुषज छे. अने ए महापुरुषपण पुरुषोत्तम भगवाननुं धाम जे अक्षर तेना एक देशमांथी उपजेछे माटे ए अक्षरनी दृष्टिए करीने जोइए तो ए महापुरुषादिक सर्वे नथी एक अक्षरज छे. अने ते अक्षरथकी पर अक्षरातीत एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ते छे ते सर्वेनी उत्पत्ति स्थिति अने प्रलय तेना कर्त्ता छे ने ते सर्वना कारण छे. अने जे कारण होय ते पोताना कार्यने विषे व्यापक होय ने तेथी जुदुंपण रहे, माटे ए सर्वना कारण जे पुरुषोत्तम भगवान् तेनी दृष्टिए करीने जोइए त्यारे ए पुरुषोत्तम भगवान् विना बीजुं कांइ भासेज नहि, एवा जे भगवान् तेज कृपा करीने जीवना कल्याणने अर्थे पृथ्वीमां सर्वे मनुष्यने प्रत्यक्ष दर्शन आपेछे त्यारे जे जीव संतनो समागम करीने ए पुरुषोत्तम भगवाननो आवो महिमा समझेछे त्यारे एनां इंद्रियो अंतःकरण सर्वे पुरुषोत्तमरूपे थइ जायछे त्यारे तेमणे करीने ए भगवाननो निश्चय थायछे, जेम हीरे करीनेज हीरो वेंधायछे पण बीजावते नथी वेंधातो, तेम भगवाननो निश्चय ते भगवानवतेज थायछे अने भगवाननुं दर्शनपण भगवानवतेज थायछे पण मायिक एवां जे इंद्रियो अंतःकरण तेणे करीने नथी थतो, एम वार्ता करीने श्रीजि-

महाराज जय सच्चिदानंद कहीने पोताने उतारे पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ ५१ ॥

संवत् १८७६ ना महा वदि ३ त्रीजने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरनी मेडीनी ओसरीमां कथा वंचावता हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी ते कथामां एम आव्युं जे, सांख्य[1], योग[2], वेदांत[3] अने पंचरात्र ए चार शास्त्रे करीने जे भगवानना स्वरूपने समझे ते पुरो ज्ञानी कहेवाय, त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! ए चार शास्त्रे करीने भगवानने केम जाणवा ? अने ए चार शास्त्रे करीने जे भगवानने न जाणे तेमां शी न्यूनता रहेछे ते कहो !" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे सांख्यशास्त्र छे ते भगवानने पचविशमा कहेछे अने चोविश तत्त्व जेम भगवान् विना कांइ करवाने समर्थ नथी थतां तेम जीव ईश्वर पण भगवान् विना कांइ करवाने समर्थ नथी माटे एनेपण चोविश तत्त्व भेळाज गणेछे अने जीव ईश्वरे सहित एवां जे चोवीश तत्त्व तेने क्षेत्र कहेछे ने पचविशमा जे भगवान् तेने क्षेत्रज्ञ कहेछे अने योगशास्त्र छे ते भगवानने छविशमा कहेछे ने मूर्तिमान् कहेछे ने जीव ईश्वरने पचविशमा कहेछे ने चोवीश तत्त्वने पृथक् कहेछे ने ए तत्त्वथी पोताना आत्माने पृथक् समझीने भगवाननुं ध्यान करवुं एम कहेछे. अने वेदांतशास्त्र छे ते भगवानने सर्वकारण, सर्वव्यापक, सर्वाधार, निर्गुण, अद्वैत, निरंजन अने कर्ता थका अकर्ता ने प्राकृत विशेषणे रहित ने दिव्य विशेषणे सहित एम कहेछे. अने पंचरात्रशास्त्र छे ते

१ मोक्षधर्मनी । २ सेश्वर । ३ सेश्वर । ४ उत्तरमीमांसा ।

भगवानने एम कहेछे जे, एक जे श्रीकृष्णपुरुषोत्तम नारायण छे तेज वासुदेव, संकर्षण, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न ए चतुर्व्यूहरूपे थायछे ने पृथ्वीनेविषे अवतारनुं धारण करेछे अने तेनेविषे जे नव प्रकारनी भक्तिने करेछे तेनुं कल्याण थायछे, एवी रीते ए चार शास्त्र भगवानने कहेछे तेने यथार्थ समझे त्यारे पुरो ज्ञानी कहेवाय अने जो बीजां त्रण शास्त्रने मुकीने एक सांख्यशास्त्रे करीनेज भगवानना स्वरूपने समझे तो ए बाध आवे जे 'सांख्यशास्त्रमां जीव ईश्वरने तत्त्वथी नांखा नथी कह्या ते ज्यारे तत्त्वनो निषेध करीने तत्त्वथी पोताना जीवात्माने नांखो समझे त्यारे पचविशमो पोतानो जीवात्मा समझाय पण भगवान् न समझाय' अने जो एकले योगशास्त्रे करीनेज भगवानना स्वरूपने समझे तो ए दोष आवे जे 'योगशास्त्र भगवानने मूर्तिमान कह्याछे तेने परिछिन्न समझे पण सर्वांतर्यामी अने परिपूर्ण एवा न समझे' अने जो एक वेदांतशास्त्रे करीनेज भगवानना स्वरूपने समझे तो ए दोष आवे जे 'जे भगवानने सर्वकारण, सर्वव्यापक अने निर्गुण कह्याछे तेने निराकार समझे पण प्राकृत करचरणादिके रहित अने दिव्य अवयवे सहित एवो सनातन जे भगवाननो आकार छे तेने न समझे' अने जो एकले पंचरात्रशास्त्रे करीनेज भगवानना स्वरूपने समझे तो एवो दोष आवे जे 'जे भगवानना अवतारनेविषे भक्ति कहीछे तेनेविषे मनुष्यभाव आवे तथा एकदेशस्थपणुं समझाइ जाय पण सर्वांतर्यामीपणुं ने परिपूर्णपणुं न समझाय' माटे ए सर्वे शास्त्रे करीने जो भगवानने न समझे तो आवा दोष आवेछे अने जो ए सर्वे शास्त्रे करीने समझे तो जे एक एक शास्त्रनी समझणे करीने दोष आवेछे ते बीजा शास्त्रनी समझणे करीने टळी

जायछे, माटे ए चारे शास्त्रे करीने जे समझे ते परिपूर्ण ज्ञानी कहेवाय अने जो ए चारमांथी एकने मुकीदे तो पुंणो ज्ञानी कहेवाय ने बेने मुकीदे तो अर्धो ज्ञानी कहेवाय ने त्रणने मुकीदे तो पा ज्ञानी कहेवाय ने चारेने मुकीने जे पोताना मननी कल्पनाए करीने गमे तेवी रीते शास्त्रने समझीने वर्तेछे अने ते जो वेदांती छे अथवा उपासनावाळो छे ते वेय भुला पड्या छे पण कल्याणनो मार्ग ए बेमांथी कोइने जड्यो नथी, माटे ए वेदांती ते दंभिज्ञानी छे अने ए उपासनावाळो तेपण दंभिभक्त छे । इति वचनामृतम् ॥ ५२ ॥

संवत् १८७६ ना महा वदी ९ नवमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर आथमणे मुखारविंदे विराजमान हता अने धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो ने धोळो अंगरखो पहेर्यो हतो ने जरकसी छेडानुं कसुंबल भारे शेलुं केड्ये बांध्युं हतुं ने जरकसी छेडानो भारे कसुंबल रेटो माथे बांध्यो हतो ने ते पाघमां पुष्पना तोरा झुकी रह्या हता ने कंठमां पुष्पना हार पहेर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्वे मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कोइ प्रश्न पुछो, त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "कोइकतो सत्संगमां रहीने दिवस दिवस प्रत्ये वृद्धिने पामतो जायछे अने कोइकतो सत्संगमां रहीने दिवस दिवस प्रत्ये घटतो जायछे तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मोटा जे साधु तेनो जे अवगुण लेछे ते घटतो जायछे अने ते साधुनो जे गुण लेछे तेनुं अंग वृद्धि पामतुं जायछे ने तेने भगवा-

ननेविषे भक्ति पण वृद्धि पामे छे, माटे ते साधुनो अवगुण न लेवो ने गुणज लेवो अने अवगुण तो त्यारे लेवो ज्यारे परमेश्वरनी बांधेल जे पंच वर्तमाननी मर्यादा तेमांथी कोइक वर्तमानने ते साधु भंग करे त्यारे तेनो अवगुण लेवो, पण कोइ वर्तमानमां तो फेर न होय ने तेनी स्वाभाविक प्रकृति ठीक न जणाती होय तेने जोइने ने ते साधुमां बीजा घणाक गुण होय तेनो त्याग करीने जो एकला अवगुणनेज ग्रहण करे तो तेना ज्ञान वैराग्यादिक जे शुभ गुण ते घटी जायछे, माटे वर्तमानमां फेर होय तोज अवगुण लेवो पण अमथो भगवानना भक्तनो अवगुण लेवो नहि अने जो अवगुण ले नहि तो तेने शुभ गुणनी दिवस दिवस प्रत्ये वृद्धि थती जायछे। इति वचनामृतम् ॥ ५३ ॥

संवत् १८७६ ना महा वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने जरीयान छेडावाळो कसुंबल रेटो ओढ्यो हतो अने असमानी रंगनो जरीयानी रेशमनो फेंटो माथे बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! श्रीमद्भागवतना एकादशस्कंधमां जनकराजा अने नव योगेश्वरना संवादे करीने कह्या जे भागवतधर्म तेनुं जे पोषण ते केम थाय? अने वळी

१ भगवाने पोतानी प्राप्तिमाटे कहेला श्रवण कीर्तनादि भक्तिरूप धर्म।

जीवने मोक्षनुं जे द्वार ते उघाडुं केम थाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, स्वधर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्यज्ञान तेणे सहित जे भगवाननी भक्ति तेणे युक्त एवा जे भगवानना एकांतिक साधु तेना प्रसंगथकी भागवतधर्मनुं पोषण थायछे अने वळी जीवने मोक्षनुं जे द्वार तेपण एवा साधुना प्रसंगथकी उघाडुं थायछे, ते कपिलदेव भगवाने देवहूती प्रत्ये कह्यु छे जे "प्रसंगमजरं पाशमात्मनः कवयो विदुः । स एव साधुषु कृतो मोक्षद्वारमपावृतम् ॥" "जेवो ए जीवने पोताना संबन्धीनेविषे दृढ प्रसंग छे तेवोने तेवोज प्रसंग जो भगवानना एकांतिक साधुनेविषे थायतो ए जीवने मोक्षनुं द्वार उघाडुं थायछे."

पछी शुकमुनिए पुछ्युं जे "गमे तेवो आपत्काळ पडे ने पोताना धर्ममांथी न खसे ते कये लक्षणे करीने ओळखाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने परमेश्वरना वचननी खटक रहे अने नानुं मोटुं वचन लोपी शके नहि एवी रीतनो जेनो स्वभाव होय तेने गमे तेवो आपत्काळ आवे तोयपण ए धर्मथकी पडेज नहि माटे जेने वचनमां दृढता छे तेनोज धर्म दृढ रहे अने तेनोज सत्संग पण दृढ रहे । इति वचनामृतम् ॥ ५४ ॥

संवत् १८७६ ना महा वदी ११ एकादशीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानेविषे उगमणे द्वार ओरडानी ओसरी उपर विराजता हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ संत तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो, पछी मुक्तानंद-

स्वामीए पुछ्युं जे "जीवने भजन स्मरणनो तथा वर्तमाननो एक दृढाव केम रहेतो नथी?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एतो अशुभ एवा जे देश, काळ, क्रिया अने संग तेने योगे करीने रहेतो नथी अने ते दृढाव पण त्रण प्रकारनो छे–उत्तम, मध्यम अने कनिष्ठ, तेमां जो उत्तम दृढता होय अने देश काळ क्रिया अने संग ए जो अति भुंडा थाय तो ते उत्तम दृढताने पण टाळी नाखे तो मध्यम अने कनिष्ठ दृढतानी तो शी वात कहेवी? अने देश, काळ, क्रिया अने संग ए अति भुंडा थाय ने तेमां पण दृढता जेम छे एमने एम जो रहे तो एने पूर्वनुं भारे बीजवळ छे ने भारे पुण्य छे अने देश, काळ, क्रिया अने संग अति पवित्र छे अने तेमां पण जो एनी बुद्धि मलिन थइ जायछे तो एने पूर्व जन्मनुं तथा आ जन्मनुं कोइ मोटुं पाप छे ते नडेछे अथवा कोइ मोटा भगवानना भक्तनो द्रोह थइ गयोछे ते एने नडेछे, केमजे देश, काळ, क्रिया अने संग रुडा छे तोयपण एनुं अंतर भुंडुं थइ जायछे माटे हवे जो मोटा पुरुषनी सेवामां खबडदार थइने रहे तो एनां पाप बळीने भस्म थइ जाय अने जो अति पापीनो संग थाय तो पापनो वधारो थाय अने कांइक सुकृत होय तेपण नाश पामे अने मदिरा पाननी करनारीयो जे पातर्यो तेना गळामां हाथ नांखीने बेसे अने पछी परमेश्वरनो वांक काढे जे 'मारुं मन केम ठेकाणे राख्युं नहि' तेने तो महामूर्ख जाणवो। इति वचनामृतम् ॥५५॥

संवत् १८७६ ना महा वदि १२ द्वादशीने दिवस सांझने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ आथमणा द्वारना ओरडानी ओसरीए ढो-

१ ध्यान, शास्त्र, दीक्षा अने मंत्र आ चार पण जाणी लेवा।

लिया उपर विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने जरियान कसुंबल रेटो ओढ्यो हतो ने माथे फरता छेडानो कसुंबी रेटो बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने नारायण धुन्य करीने मुनि झांझ मृदंग लइने कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कीर्तन राखो अने घडीक प्रश्न उत्तर करीए, एम कहीने वळी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो हुं प्रश्न पुछुंछुं जे "श्रीकृष्णभगवाने गीतांमां चार प्रकारना भक्त कह्या छे तेमां ज्ञानीने अधिक कह्योछे अने चारेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो सरखो छे माटे ज्ञानी ते केवी रीते विशेष छे?" पछी ए प्रश्ननो उत्तर मुनिए करवा मांड्यो पण थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्ञानी छे तेतो ब्रह्मस्वरूपे वर्तेछे अने भगवाननो महिमा-यथार्थ-

---

१ आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ।। तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ॥ अर्थ.—आर्त, (ऐश्वर्यमांथी भ्रष्ट थएलो अने फरीथी तेने पामवानी इच्छावाळो) जिज्ञासु, (प्रकृतिथी विलक्षण आत्मस्वरूपने पामवानी इच्छावाळो) अर्थार्थी (ऐश्वर्य प्राप्त थयुं नथी माटे तेने पामवानी इच्छावाळो) अने ज्ञानी (आत्मस्वरूपने भगवाननोज एक दास जाणीने, प्रकृतिवियुक्त केवळ आत्मस्वरूपमां तृप्ति नहि पामीने, भगवानने पामवानी इच्छावाळो अने भगवाननेज परमप्राप्य माननारो) आ चार प्रकारना भक्त कह्याछे; तेमा ज्ञानी श्रेष्ठ छे, केमके-ते नित्ययुक्त अने एकभक्ति छे. एटले ज्ञानिनेतो हुंज एक प्राप्य छुं माटे फळदशामांपण मारी साथे तेनो योग नित्य छे, बीजाओने तो पोतानुं इच्छित सिद्ध थाय त्यां सुधिज मारी साथे योग छे पछीथी नथी, ज्ञानिने तो एक मारेविषेज भक्ति छे अने बीजाओने तो पोताना इच्छितमा अने तेना साधनपणे मारे विषे, एम बेमां भक्ति छे. अर्थात् ज्ञानिने तो जे प्रापक छे तेज प्राप्य छे अने बीजाओने तो प्राप्य अन्य छे, माटे ज्ञानी श्रेष्ठ छे । २ ज्ञानिभक्तनुं नित्ययुक्तत्व अने एकभक्तित्वरूप गुणथी श्रेष्ठपणुं गीतामां कह्युंछे तेमां शुं कारण छे? ।

पणे जाणेछे माटे एने भगवानना स्वरूप विना बीजी मनमां कांइ कामना रहेती नथी अने बीजा जे त्रण प्रकारना भक्त छे तेने भगवाननो निश्चय तो छे तोयपण भगवाननो महिमा यथार्थपणे जाणता नथी ते माटे एने भगवान् विना बीजी कामना रही जायछे ते माटे ज्ञानीने बरोबर थता नथी, ते सारु भगवानना भक्तने भगवान् विना बीजी कोइ जातनी कामना रहे ए मोटी खोट छे. अने जेने कोइ जातनी वासना न होय अने तीव्र वैराग्यवान् होय अने जो ते वैराग्यने योगे अहंकारे युक्त वर्ते तो एपण एने विषे मोटी खोट छे, अथवा अत्यंत आत्मज्ञाननुं बळ होय अथवा भगवानने विषे दृढ भक्तिनुं बळ होय अने तेना मानने योगे करीने जो गरीब हरिभक्तने नमाय नहि अथवा तेनी आगळ दीन वचन बोलाय नहि तो एपण एने विषे मोटी खोट छे, ते खोटे करीने ए हरिभक्तनुं अंग वृद्धिने न पामे, जेम सलाट कुवो खोदतो होय अने जो हेठे पाणो पोलो बोले तो सलाट एम कहे जे 'पाणी घणुं थशे' अने जो उपरथी रणकतो होय ने मांही कापे त्यारे अग्नि झरे तो सलाट एम कहे जे 'कुवामां पाणी थशे तो अर्धा कोशनुं के पा कोशनुं थशे पण बधु नहि थाय, तेम ज्ञान, वैराग्य अने भक्ति तेना मानमां जे अटंट रहे तो ए मोटो तो कहेवाय पण जेवुं अर्धा कोशनुं के पा कोशनुं पाणी थयुं एवो मोटो थाय पण जेवा निर्मानी भक्तमां मोटा गुण आवे तेवा मोटा गुण एमां न आवे, माटे जेने भगवानने प्रसन्न करवा होय तेने ज्ञान, वैराग्य, भक्ति तथा बीजा कोइ श्रेष्ठ गुण होय तेने अभिमाने करीने अटंट थवुं नहि, तो ए पुरुषना हृदयने विषे प्रकट प्रमाण एवा जे श्रीकृष्णनारायण ते प्रसन्न थइने निवास करीने रहेछे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! ज्ञान, वैराग्य, भक्ति तथा बीजा जे शुभ गुण तेने योगे करीने मान आवे ते मानने कया उपाये करीने टाळवुं ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवानना भक्तनुं माहात्म्य जाणीने पोते देहे करीने तेमने नमस्कार करे तथा तेमनी सेवा चाकरी करे अने जो हृदयामां मानतो संकल्प थाय तो तेने ओळखे ने विचारनुं बळ राखे तो मान टळी जाय अने अतिशय प्रेमलक्षणा भक्ति होय अने ते भक्तिए करीने भगवान् तेने वश्य वर्तता होय अने जो ते भक्तिनुं भक्तना हृदयमां मान आवे तोयपण एने अति खोट छे अने आत्मज्ञाननुं मान होय अथवा वैराग्यनुं मान होय पण ते अभिमान तो देहात्मबुद्धिनेज दृढ करावे, माटे भगवानना भक्त होय तेने कोइ प्रकारे अभिमान राखवुं नहि एज भगवानने राजी कर्यानो उपाय छे अने अंतर्दृष्टिवाळा जे भगवानना भक्त होय ते जो तपासीने पोताना हृदय सामुं जुवे तो ज्यारे ज्यारे मान आवतुं हशे त्यारे हृदयमां रही जे भगवाननी मूर्ति तेनी नजर करडी देखाती हशे अने ज्यारे निर्मानीपणे वर्ततुं हशे त्यारे पोताना हृदयमां रही जे भगवाननी मूर्ति तेनी दृष्टि अति प्रसन्न जणाती हशे; माटे भगवाननो भक्त होय तेने विचारनुं बळ राखीने कोइ प्रकारनुं मान उदय थवा देवुं नहि अने जो मान सहित ज्ञान, वैराग्य, भक्ति होय तो जेम सोनुं होय अने तेमां भेग भळे त्यारे ते सोनुं पनरवलुं कहेवाय अने तेथी वधतो भेग भळे तो बारवलुं कहेवाय अने तेथी वधतो भेग भळे तो आठवलुं कहेवाय, तेम ए भक्तने ज्ञान, वैराग्य, भक्तिमां जेम जेम अहंकारनो भेग भळतो आवे तेम तेम ए त्रणे ओछां थतां जायछे; माटे मान रहित जे ज्ञान,

वैराग्य अने भक्ति ते तो सोळवला सोना जेवां छे अने मान सहित होय ते उपरथी तो एने घणो शोभाडे पण एना अंतरमां झाझुं बळ होय नहि, त्यां दृष्टांत छे जेम 'पचास कोटी योजन पृथ्वी ते समुद्र, पर्वत अने सर्व भूतप्राणिमात्र तेनो आधार छे माटे घणी बळवान जणायछे अने ते थकी जळ वळी घणुं बळवान जणायछे जे जळने विषे पृथ्वी छाणानी पेठे तरेछे अने जळथकी तेजमां घणुं बळ जणायछे अने तेजथकी वायुमां घणुं बळ जणायछे अने आकाशनुं तो कांइ बळ जणातुं नथी पण आकाश सर्वथी बळवान् छे कांजे ए चारेनो आकाश आधाररूप छे' तेम मान रहित जे ए भक्तनां ज्ञान, वैराग्य अने भक्ति ते आकाश सरखां बळवान् छे माटे उपरथी तो जणाय नहि पण निर्मानिभक्त ते सर्वथी श्रेष्ठ छे अने जेम बाळक होय ते दिवस कांइ माननो घाटसंकल्प होय नहि तेमज साधुने तो गमे तेटली पूजा प्रतिष्ठा थती होय पण बाळकनी पेठे मान रहित वर्तवुं.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे "इंद्रियो अंतःकरण अने प्राण तथा जाग्रत स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था तथा स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण शरीर ए सर्व थकी जीवनुं स्वरूप न्यारुं छे एवुं सत्संगमांथी सांभळीने दृढ निश्चय कर्योछे तोय पण इंद्रियो अंतःकरणादिक मेळो मळीने सुखरूप एवो जे जीवात्मा ते परमात्मानुं भजन स्मरण करतो थको संकल्पने योगे करीने दुःखीयो केम थइ जायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे', केटलाक

१ भगवानना माहात्म्यज्ञानथी उपासनानुं बळ वृद्धि पामेछे. उपासनानुं बळ वधवाथी ज्ञाननिष्ठा के जे त्रण देहथी विलक्षण आत्मस्वरूपना विचाररूप छे तेनी परिपक्वता थाय छे, ते थवाथी दैहिक समग्र दुःखनो नाश थायछे, आटलो तात्पर्यार्थ छे तेने विवेचन करी कहेछे।

सिद्ध थायछे ने केटलाक सर्वज्ञ थायछे ने केटलाक देवता थायछे इत्यादिक अनंत प्रकारनी मोट्यप पामेछे तथा परमपदने पामेछे ए सर्वे भगवाननी उपासनाने बळे पामेछे पण उपासना विना कोइ वात सिद्ध थती नथी, माटे शास्त्रमांथी आत्मा अनात्मानी विगत समझीने अथवा कोइक मोटा संतना मुखथी वात सांभळीने जाणे जे 'हुं आत्मा अनात्मानी विगती करी लउं' एम विगती थती नथी, एतो ए जीवने जेटली पोताना इष्टदेव जे परमेश्वर तेनेविषे निष्ठा होय तेटलोज आत्मा अनात्मानो विवेक थायछे पण इष्टदेवना बळ विना-तो कोइ साधन सिद्ध थतां नथी. अने जेने गोपीयोना जेवी प्रेमलक्षणा भक्ति छे तेनेतो सर्वे साधन संपूर्ण थयां छे अने जेने एवो प्रेम न होय तेनेतो भगवाननो महिमा समझवो जे 'भगवान् तो गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप, ब्रह्ममहोल तेना पति छे अने मनुष्य जेवा जणायछे तेतो भक्तना सुखने अर्थे जणायछे पण एनी मूर्ति छे ते गोलोकादिक जे पोतानां धाम तेनेविषे एक एक नखमां कोटि कोटि सूर्यना प्रकाशे युक्त जणायछे अने मर्त्यलोकनेविषे तो ए भगवाननी मनुष्य सेवा करेछे ने दिवो करे त्यारे एने आगळ प्रकाश थायछे पण एतो सूर्य चंद्रादिक सर्वने प्रकाशना दाता छे अने गोलोकादिक जे धाम छे तेनेविषे तो राधिका लक्ष्मी आदिक जे पोताना भक्त छे तेमणे निरंतर सेव्या एवा ए भगवान् छे अने ज्यारे ब्रह्मांडोनो प्रलय थइ जायछे त्यारे आ प्रगट भगवान् छे तेज एक रहेछे अने पछी सृष्टि रचवाने समे पण प्रकृतिपुरुषद्वारे करीने अनंतकोटि ब्रह्मांडोने एज भगवान् उपजावेछे, एवी रीते भगवाननो महिमा विचारवो एज आत्मा

१ उत्पत्त्यादिकने जाणनारा। २ देह।

अनात्माना विवेकनुं कारण छे अने जेटली ए भक्तने भगवानना माहात्म्ये सहित भगवानने विषे निष्ठा छे तेटलोज ए भक्तना हृदयमां वैराग्य आवेछे माटे बीजा साधनना बळने तजीने एकलुं भगवाननी उपासनानुं बळ राखवुं अने जे एवो भक्त होय ते तो एम समझे जे 'गमे तेवो पापी होय ने अंतसमे जो तेने 'स्वामिनारायण' एवा नामनुं उच्चारण थाय तो ते सर्व पापथकी छुटीने ब्रह्ममोहोलनेविषे निवास करे तो जे ए भगवाननो आश्रित होय ते ए भगवानना धामने पामे एमां शो संशय छे?' एम माहात्म्य समझे, ते सारु जे भगवाननो भक्त होय तेने भगवाननी उपासनानुं बळ सत्संग करीने दिवसे दिवसे वृद्धि पमाडवुं । इति वचनामृतम् ॥ ५६ ॥

संवत् १८७६ ना फागण शुदी २ द्वितीयाने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां साधुनी जायगानेविषे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने प्रश्न उत्तर करतां आवडे ते एक एक प्रश्न पुछो, पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! मोक्षनुं असाधारण कारण ते शुं छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान अने भगवाननुं माहात्म्य जाणवुं ए बे [1]असाधारण मोक्षना हेतु छे.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं "जे भगवाननेविषे जे स्नेह तेनुं शुं रूप छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, [2]स्नेहनुं रूप तो ए छे जे

१ भक्तिद्वारा । २ स्नेह बे प्रकारनो छे–एक तो भगवानना माहात्म्य ज्ञानथी थनारो अने एक साहजिक (स्त्रीपुत्रादिकमां जेम स्वाभाविक दृढ स्नेह थाय छे तेम भगवानमां स्नेह थाय ते) तेमां प्रथम साहजिक स्नेह कहेछे ।

स्नेहमां कोइ जातनो विचार न जोइए अने ज्यारे जे गुण विचारीने स्नेह करे तेतो ज्यारे अवगुण देखे त्यारे तेनो स्नेह त्रुटि जाय माटे हेततो जेम थयुं होय तेमने तेम रहेवा देवुं पण विचार करीने वारे वारे स्थापन उत्थापन करवुं नहि ने मूढपणे भगवाननेविषे हेत करवुं अने जे गुणने विचारीने हेत करे ते हेतनो विश्वास नहि माटे हेततो जेम देहना संबन्धी संघाथे छे तेवुं भगवाननेविषे हेत करवुं अने ए हेतने मूढपणानुं हेत कहीए अने भगवाननुं माहात्म्य जाणीने जे हेत थायछे तेतो बीजीज[1] रीतनुं छे एम जाणवुं.

पछी शिवानंदस्वामीए पुछ्युं जे "सत्संगमां रहेवानो खप छे तोपण कोइक अयोग्य स्वभाव छे ते केम टळतो नथी?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे स्वभाव सत्संगमां अंतराय करतो होय ते उपर जेने अभाव न आवे त्यांसुधी एने क्यां सत्संगनो पुरो खप छे? अने ते स्वभावने पण क्यां पुरो शत्रु जाण्योछे? त्यां दृष्टांत छे जेम 'कोइक पुरुष आपणो मित्र होय ने तेज पुरुषे आपणा भाइने मारी नाख्यो होय तो पछी ते साथे मित्रपणुं न रहे अने तेनुं माथुं कापवाने तैयार थाय कांजे मित्र करतां भाइनो संबन्ध अधिक छे' तेम जो एने पोतानो स्वभाव वर्तमानमां भंग पडावीने सत्संगथी विमुख करे एवो छे ने तोयपण एनी उपर वैरभाव आवतो नथी अने ते स्वभाव उपर रीस चडती नथी तो जो एने सत्संगमां पुरुं हेत नथी अने जो जेवुं भाइमां हेत मनुष्यने छे तेवुं जो सत्संग उपर हेत होय तो भुंडा स्वभावने तत्काळ टाळी नाखे, शा माटे जे जीव तो अति समर्थ छे,

१ प्रतिदिन वृद्धि पामीने, सुदृढ थइने, भगवाननां मनुष्यचरित्रने जोइनेपण क्यारेयपण क्षीण नहि पामनारुं माटे साहजिकनी अपेक्षाए उत्तम छे।

केमजे मन अने इंद्रियो ए सर्वे तो क्षेत्र छे अने जीव तो एनो क्षेत्रज्ञ छे माटे जे करे ते थाय । इतिवचनामृतम् ॥ ५७ ॥

संवत् १८७६ ना फागण शुदि ५ पंचमीने दिवस संध्या आरतीने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां जे परमहंसनी जायगा त्यां विराजमान हता अने सर्व धोळां वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रश्न करो, पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! ज्यारे भजन स्मरण करवा बेसे त्यारे भगवानना भक्तना अंतरमां रजोगुण तमोगुणना वेग आवे त्यारे भजन स्मरणनुं सुख आवतुं नथी, ते ए गुणना वेग केम टळे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए गुणनी प्रवृत्तिना कारणतो देह[१], कुसंग अने पूर्वसंस्कार[१] ए त्रण छे, तेमां देहने योगे करीने जे गुण प्रवर्त्या होय तेतो अत्मा अनात्माना विचारे करीने टळी जायछे अने कुसंगे करीने प्रवर्त्या होय ते संतने संगे करीने टळेछे अने जे रजोगुण तमोगुणना वेग ए बेये करीने पण न टळे तेतो कोइक पूर्वना भूंडा संस्कारने योगे करीने छे माटे ए टळवा घणा कठण छे.

पछी आनंदानंदस्वामीए पुछ्युं जे "पूर्वना संस्कार मलिन होय ते केम टळे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, अतिशय जे मोटा पुरुष होय तेनो जे उपर राजीपो थाय तेना गमे तेवा मलिन संस्कार होय तो नाश पामे अने मोटा पुरुषनो राजीपो थयो होय तो रांक होय ते

१ राग मोह विगेरे । २ देहाध्यास (देहमां आत्मापणानी अभिमति) ३ पूर्वजन्ममां करेला कर्मनो संस्कार ।

राजा थाय अने गमे तेवां भूंडां प्रारब्ध होय तो रुडां थाय अने गमे तेवुं तेने माथे विघ्न आवनारुं होय ते नाश थइ जाय.

पछी वळी आनंदानंदस्वामीए पुछ्युं जे "शो उपाय करे तो मोटा पुरुष राजी थाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, प्रथम तो मोटा संत साथे निष्कपटपणे वर्ते अने काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा, अहंकार अने ईर्ष्या ए सर्वनो त्याग करे अने संतनो गुलाम थइने रहे ने अंतरमां मान टळेभावे रहे पण देहे करीने सर्वेने नमतो रहे, तो एनी उपर मोटा संत राजी थायछे.

पछी महानुभावानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! सत्संगमां रहेते थके जेटला अवगुण होय ते सर्वे नाश पामी जाय अने दिनदिन प्रत्ये भगवाननी भक्ति वृद्धि पामती जाय एनो शो उपाय छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मोटा पुरुषनो जेमजेम गुण ग्रहण करतो जाय तेमतेम एनी भक्ति वृद्धि पामती जाय अने अतिशय जे मोटा होय तेने जो अतिशय निष्कामी जाणे तो पोते कुतरा जेवो कामी होय ते निष्कामी थाय अने जो मोटा पुरुषनेविषे कामीपणानो दोष परठे तो गमे तेवो निष्कामी होय तोयपण अतिशय कामी थाय अने मोटानेविषे क्रोधी लोभीपणुं परठे तो पोते क्रोधी लोभी थाय अने जो मोटा पुरुषने अतिशय निष्कामी, निर्लोभी, निःस्वादी, निर्मानी, निःस्नेही समझे तो पोते पण ए सर्व विकारथी रहित थइ जाय अने पाको हरिभक्त थाय. ते पाका हरिभक्तनुं शुं लक्षण छे? तो, सारा जे शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पंच विषय तेनो जेम दुःखदायक वस्तुनो सहजे अभाव रहेछे तेम जेने सहजे अभाव रहेछे अने एक परमेश्वरना स्वरूपने विषे अचळ निष्ठा वर्तेछे तेने पाको हरिभक्त जाणवो, ते एवो पाको हरिभक्त

थयानो तो एज उपाय छे जे, परमेश्वरना दासनो गुलाम थइने रहे अने एम जाणे जे 'ए सर्व भक्त मोटा छे ने हुंतो सर्वथी न्यून छुं' एम जाणीने हरिभक्तनो दासानुदास थइ रहे अने एवी रीते जे वर्ते तेना सर्व विकार नाश पामे अने तेने दिवसे दिवसे ज्ञान, वैराग्य, भक्ति आदिक जे शुभ गुण ते वृद्धि पामता जायछे । इति वचनामृतम् ॥ ५८ ॥

संवत् १८७६ ना फागण शुदि १४ चतुर्दशीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे हिरकोरनुं धोळुं धोतीयुं बांध्युं हतुं ने ललाटने विषे चंदननी अर्चा विराजमान हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो, पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज ! भगवानने विषे असाधारण प्रेम थाय तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एकतो भगवाननो विश्वास होय जे 'आ मने मळ्या छे ते निश्चयज भगवान् छे' तथा आस्तिकपणुं होय तथा भगवानना जे ऐश्वर्य तेने जाणे जे 'आ भगवान् छे ते ब्रह्ममहोल, गोलोक, श्वेतद्वीप ए आदिक सर्वे धामना पति छे तथा अनंतकोटी ब्रह्मांडना पति छे तथा सर्वना कर्ता छे अने पुरुष, काळ, कर्म, माया, त्रण गुण, चोवीश तत्त्व, ब्रह्मादिक देव ए कोइने आ ब्रह्मांडना कर्ता जाणे नहि, एक भगवान् पुरुषोत्तमनेज कर्ता जाणे अने सर्वना अंतर्यामी जाणे' एवी रीतनी समझणे

१ उपमावर्जित । २ स्वतंत्रपणे । ३ स्वतंत्रकर्ता ।

सहित जे प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनेविषे निश्चय तेज परमेश्वरनेविषे असाधारण स्नेहनुं कारण छे.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "एवो भगवाननो महिमा पण जाणतो होय अने असाधारण हेत न थाय तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जो ए भगवाननो आवो महिमा जाणेछे तो एने भगवानने विषे असाधारण हेत छे पण ए जाणतो नथी, 'जेम हनुमानजीमां अपार बळ हतुं पण कोइकना जणाव्या विना जणाणुं नहि' अने 'जेम प्रलंबासुर बळदेवजीने लइ चाल्यो त्यारे पोतामां बळ तो अपार हतुं पण पोते जाणता न हता पछी ज्यारे आकाशवाणीए कह्युं त्यारे जाण्युं' तेवी रीते एं भक्तने भगवानने विषे असाधारण प्रीतितो छे पण जणाती नथी.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "ए प्रीतिना बळने जणायानुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सत्संग अने सत्शास्त्रनुं श्रवण करते सते एने भगवानने विषे असाधारण प्रीति छे ते जणाइ आवेछे.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे देश, काळ अने क्रिया ते

---

१ समुद्र उलंघन करवानुं। २ जांबुवानना। जांबुवाने हनुमानजिने तेमनुं बळ जणाव्युं ते रामायणमां—"जांबवान्समुदीक्ष्यैवं हनुमन्तमथाब्रवीत्। वीरवानर! लोकस्य सर्वशास्त्रविदां वर!। तूष्णीमेकान्तमाश्रित्य हनुमन्किं न जल्पसि॥" इत्यादि वचनोथी कहेलुं जाणवुं। ३ प्रलंबासुरने हणवानुं। ४ भगवाने। श्रीकृष्णभगवाने बळदेवजीने तेमनुं बळ जणाव्युं ते विष्णुपुराणमां—"इति संस्मारितो विप्र कृष्णेन सुमहात्मना। विहस्य पीडयामास प्रलम्बं बलवान् बलः॥" इत्यन्तवचनोथी जणावेलुं जाणवुं। ५ कोइक भक्तना जणाव्या विना।

भूंडा थाय अथवा भला थाय तेनुं कारण ते संग छे के कोइ बीजो छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, देश तो पृथ्वी कहेवाय ते सर्व ठेकाणे सरखो छे अने काळ पण सरखो छे पण अतिशय जे मोटा समर्थ पुरुष होय ते जे देशमां रहेता होय तेने प्रतापे करीने भूंडो देश होय, भूंडो काळ होय, भूंडी क्रिया होय, ते सर्वे सारां थइ जायछे अने अतिशय भूंडा पापी पुरुष जे देशमां रहेता होय तेने योगे करीने सारो देश ने सारी क्रिया ने सारो काळ होय तेपण भूंडा थइ जायछे माटे शुभ ने अशुभ एवा जे देश काळ ने क्रिया तेना हेतु तो पुरुष छे ते पुरुष जो अतिशय समर्थ होय तो सर्व पृथ्वीमां देश काळ ने क्रिया ते पोताना स्वभाव प्रमाणे प्रवर्तावे ने तेथी उतरतो होय तो एक देशमां प्रवर्तावे ने तेथी उतरतो होय तो एक गाममां प्रवर्तावे ने तेथी उतरतो होय तो एक फळी तथा एक पोतानुं घर तेमां प्रवर्तावे एवीरीते ए शुभ अशुभ जे देश काळ ने क्रिया तेना हेतु तो शुभ ने अशुभ ए बे प्रकारना पुरुष छे । इति वचनामृतम् ॥५९॥

संवत् १८७६ ना फागण वदि १ प्रतिपदाने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां परमहंसनी जायगाने विषे विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती अने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती ने ते पाघने विषे धोळा पुष्पना तोरा विराजमान हता ने कंठमां धोळा पुष्पना हार विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सर्व साधन करतां वासना टाळवी ए साधन मोटुं छे ते वासना टाळवानी एम विगति छे जे शब्द,

स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए जे पंच विषय तेनेविषे जेटली पोताने तृष्णा होय तेनो विचार करवो जे मारे जेटली भगवाननेविषे वासना छे तेटलीज जगतनेविषे छे के ओछी वधु छे? तेनी परीक्षा करवी ने जेटली भगवाननी वात सांभळवामां श्रोत्र इंद्रिय लोभाती होय तेटलीज जगतनी वात सांभळवामां लोभाती होय तो एम जाणवुं जे 'भगवानमां ने जगतमां बरोबर वासना छे' एवीज रीते स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए सर्वे विषयनो तपास करवो अने ज्यारे एवीरीते तपास करतो करतो जगतनी वासनाने घटाडतो जाय ने भगवाननी वासनाने वधारतो जाय तेणे करीने एने पंच विषयनेविषे समबुद्धि थइ जायछे ने समबुद्धि थया पछी निंदा ने स्तुति सरखां लागे अने सारो स्पर्श ने भूंडो स्पर्श सरखो लागे तेमज सारुं रूप ने भूंडुं रूप तथा बाळ युवान ने वृद्ध एवी जे स्त्रीयो तथा कचरो ने कंचन ए सर्वे सरखुं भासे तेमज सारा ने भूंडा जे रस ने गंध ते पण सरखा भासे, एवी रीते स्वाभाविकपणे वर्ताय त्यारे जाणीए जे वासना जीताणी. अने वासना रहित वर्तवुं ए एकांतिकनो धर्म छे अने वासना जराक रही जाय तो समाधिवाळो होय अने नाडी प्राण तणाता होय तोयपण वासना समाधिमांथी पाछो खेंची लावेछे, माटे वासना टाळे तेज एकांतिक भक्त छे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "वासना टाळ्यानो शो उपाय[1] छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एकतो आत्मनिष्ठानी दृढता जोइए अने बीजुं पंच विषयनुं तुच्छपणुं जाण्युं जोइए अने त्रीजुं भगवाननुं अतिशय माहात्म्य जाण्युं जोइए जे 'भगवान् वैकुंठ, गोलोक, ब्रह्म-

१ मुख्य उपाय।

महोल ए सर्वे धामना पति छे माटे एवा भगवानने पामीने तुच्छ विषयनां सुखमां हुं शुं प्रीति राखुं?' एवी रीते भगवानना महिमानो विचार करे. अने वळी एम विचार करे जे 'भगवानने भजताथका पण जो कोइक खोट रही जशे ने कदापि जो भगवानना धाममां नहि जवाय ने इंद्रलोक तथा ब्रह्मलोकनेविषे भगवान मुकशे तोयपण आ लोकना करतां तो त्यां कोटिघणां वधु सुख छे' एवो विचार करीने पण आ संसारना तुच्छ सुखथकी वासनाए रहित थवुं अने एवी रीते भगवाननो महिमा जाणीने वासनाए रहित थायछे त्यारे पछी एने एम जणायछे जे 'मारे कोइ काळे वासना हतीज नहि अने एतो मने व-चमां कांइक भ्रम जेवुं थयुं हतुं पण हुं तो सदा वासनाए रहित छुं' एवुं भासेछे अने आवी रीतनो जे एकांतिक धर्म तेतो जे एवा नि-र्वासनिक पुरुष होय अने जेने भगवानने विषे स्थिति थइ होय तेने वचने करीनेज पमाय पण ग्रंथमां लखी राख्यो होय तेणे करीने नथी पमातो अने कोइक सांभळीने तेवीने तेवी वात कहेवा जाय तो कहेतां पण आवडे नहि, माटे जेने एकांतिकना धर्ममां स्थिति थइ होय तेथकी-ज एकांतिकनो धर्म पमायछे । इति वचनामृतम् ॥ ६० ॥

संवत् १८७६ ना फागण वदि ३ त्रिजने दिवस श्रीजिमहाराज श्री-गढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्षने हेठे ओटानेविषे ढोलिया उपर विराजमान हता ने हीरकोरनुं श्वेत धोतियुं मस्तके बांध्युं हतुं ने श्वेत पछेडी ओढी हती ने श्वेत खेस पहेर्योहतो ने कंठमां श्वेत पुष्पना हार धारण कर्या हता ने श्वेत पुष्पना तोरा पाघमां डावी कोरे लटकता हता ने पोताना मुखारविं-दनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "काम, क्रोध, लोभ तथा भय एमने योगे करीने पण धीरज डगे नहि तेनो शो उपाय छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, 'हुं देह नहि हुं तो देहथी नोंखो ने सर्वेनो जाणनारो एवो जे आत्मा ते छुं' एवी जे आत्मनिष्ठा ते ज्यारे अतिशय दृढ थाय त्यारे कोइ रीते करीने धीरज डगे नहि अने आत्मनिष्ठा विना बीजा अनेक उपाय करे तोपण धीरज रहे नहि.

पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जे आत्मनिष्ठा होय ते अंतसमे केटली सहाय करेछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम नदी तरवी होय त्यां तो जेने तरतां आवडतुं होय ते तरी जाय ने जेने तरतां न आवडतुं होय तेतो उभो थइ रहे, पण ज्यारे समुद्र तरवो होय त्यारे तो ते बेयने वहाणनुं काम पडेछे, तेम टाढ, तडको, भूख, तरस, मान, अपमान, सुख, दुःख, ते रूपी जे नदी तेने तो आत्मनिष्ठावाळो होय ते तरी जाय पण मृत्यु समय तो समुद्र जेवो छे माटे त्यां तो आत्मनिष्ठावाळो होय तथा वगर आत्मनिष्ठावाळो होय ए बेयने भगवाननी उपासनारूपी वहाणनुं काम पडेछे, माटे अंतकाळे तो भगवाननो दृढ आशरो होय तेज काममां आवेछे पण अंतसमे आत्मनिष्ठा कांइ काममां आवती नथी, ते सारु भगवाननी उपासनाने दृढ करीने राखवी.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भगवाननो भक्त होय तेने सिद्धियो आडी आवेछे ते जेने भगवानना निश्चयमां डगमगाट होय तेनेज आवेछे के निश्चयवाळाने आवेछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सिद्धियो तो जेने परिपक्व भगवाननो निश्चय होय तेनेज आवेछे

१ तेणे युक्त एवी जे उपासना । २ केवळ ।

अने बीजाने तो सिद्धियो घणी दुर्लभ छे. अने ए सिद्धियोने पण ए भक्तनी परीक्षा लेवा सारु भगवानज प्रेरेछे जे 'एने मारी उपर घणुं हेत छे के सिद्धियो उपर घणुं हेत छे?' एवी रीते भगवान् पोताना भक्तनी परीक्षा जुवेछे, पछी जो ए पाको भक्त होय ने भगवान् विना बीजुं कांइ न इच्छे ने निर्वासनिक एवो एकांतिकभक्त होय तो भगवान् पोते ते भक्तने वश्य थइ जायछे, 'जेम वामनजीए बळीराजानुं त्रिलोकीनुं राज्य लइ लीधुं अने चौद लोकनां बे पगलां कर्या अने त्रीजा पगला सारु ते बळीराजाए पोतानुं शरीर आप्युं, एवी रीते श्रद्धासहित भगवानने सर्वस्व आप्युं तोय भगवाने एने वगर वांके बांध्यो तोपण भक्तिथकी पड्यो नहि त्यारे एवी पोतानी अनन्य भक्ति जोइने पोते भगवान् ते बळीना बंधनमां आवता हवा. अने भगवाने तो बळीराजाने क्षणमात्र बांध्यो हतो अने भगवानतो एनी भक्तिरूपी दोरीए करीने बंधाया छे ते आज दिवस सुधी पण अखंड भगवान् बळीने दरवाजे उभा छे अने बळीराजानी दृष्टिथकी पळमात्र पण भगवान् छेटे थता नथी, एवी रीते आपणे पण बीजी सर्वे वासना टाळीने अने भगवानने सर्वस्व अर्पण करीने भगवानना दास थइ रहेशुं अने एम करतांय भगवान् आपणने वधु दुःख देशे तो भगवान् पण पोते आपणे वश्य थइ जशे, शा माटे जे पोते भक्तवत्सळ छे अने कृपासिंधु छे ते जेनी पोतानेविषे अतिदृढ भक्ति देखे तेने पोते आधीन थइ जायछे, पछी ते प्रेमभक्तिए युक्त जे भक्तनुं मन ते मनरूपी दोरीए करीने बंधनमां आवेछे पछी छुटवाने समर्थ थता नथी, माटे जेम जेम भगवान् आपणने कसणीमां राखे तेमतेम वधु राजी थवुं जोइए 'जे भगवान् जेमजेम मने वधु दुःख देशे तेमतेम वधु मारे वश्य

थशे अने पलमात्र माराथी छेटे नहि रहे' एवुं समझीने जेमजेम भगवान् अति कसणी देता जाय तेमतेम अतिराजी थवुं पण कोइ रीते दुःख देखीने अथवा देहना सुख सारु पाछो पग भरवो नहि। इति वचनामृतम् ॥ ६१ ॥

संवत् १८७६ ना फागण वदी ४ चोथने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरवारमां चोक वच्चे ढोलीया उपर विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो अने धोळी चादर ओढी हती अने माथे श्वेत पाघ विराजमान हती अने ते पाघने विषे श्वेत पुष्पना हार तथा श्वेत पुष्पना तोरा विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए पुछ्युं जे "श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे—"सत्यं[1] शौचं दया क्षान्तिस्त्यागः सन्तोष आर्जवम्। श-

---

१ सत्यम्–सर्वे भूतप्राणिमात्रनुं हित करवुं अथवा सत्यवचन बोलवुं। शौचम्–समस्त हेयनुं विरोधिपणुं अर्थात् निर्दोषपणुं। दया–परदुःखनुं असहन। क्षान्तिः–अपराधि जनना अपराध सहन करवा। त्यागः–पोते पूर्णकाम छे माटे कोइनोपण आदर नहि करवो अथवा पोताना स्वरूपसुखिनुं दातापणुं। सन्तोषः–क्यारेयपण क्लेशे रहितपणुं। आर्जवम्–मन, वाणी अने कायनुं एकरूपपणुं एटले जेवुं मनमां तेवुंज वाणीमां अने तेवीज क्रिया करवी, अर्थात् मनमां बीजुं अने वाणीमां बीजुं अने क्रियामां बीजुं एम नहि। शमः–मननो निग्रह करवो। दमः–बाह्य इन्द्रियोनो निग्रह करवो। तपः–जगद्व्यापारमां उपयोगि आलोचन करवुं। साम्यम्–शत्रुमित्रादि भावे रहितपणुं। तितिक्षा–सुखदुःखादि द्वन्द्वथी नहि पराभव पामवापणुं। उपरतिः–व्यर्थ व्यापारथी निवृत्त थवुं। श्रुतम्–सर्वशास्त्रार्थनुं यथार्थ जाणवापणुं। ज्ञानम्–आश्रितोना अनिष्टनी निवृत्ति अने इष्टनी प्राप्ति करी आपवामां उपयोगि ज्ञान। विरक्तिः–विषयोमां निःस्पृहपणुं अथवा विषयोथी चित्तनुं न आकर्षण थवापणुं। ऐश्वर्यम्–पोताथी व्यतिरिक्त सर्वनुं नियन्तापणुं। शौर्यम्–युद्धमांथी पाछुं न वळवुं। तेजः–कोइथीपण न पराभव

मो दमस्तपः साम्यं तितिक्षोपरतिः श्रुतम् ॥ ज्ञानं विरक्तिरैश्वर्यं शौर्यं तेजो बलं स्मृतिः । स्वातन्त्र्यं कौशलं कान्तिर्धैर्यं मार्दवमेव च ॥ प्रागल्भ्यं प्रश्रयः शीलं सह ओजो बलं भगः। गाम्भीर्यं स्थैर्यमास्तिक्यं कीर्तिर्मानोऽनहंकृतिः ॥ ए जे ओगणचाळीस कल्याणकारी गुण ते भगवानना स्वरूपने विषे निरंतर रहेछे" ते ए गुण[1] संतनेविषे केवी रीते आवेछे?"[2] पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, "ए गुण संतमां आव्यानुं कारणतो ए छे जे, एने भगवानना स्वरूपनो यथार्थ निश्चय थाय तो ए कल्याणकारी गुण भगवानना छे ते संतमां आवेछे, ते निश्चय केवो होय तो जे 'भगवानने काळ जेवा न जाणे, कर्म जेवा न जाणे, स्वभाव जेवा न जाणे, माया जेवा न जाणे, पुरुष जेवा न जाणे, अने सर्वथकी भगवानने जुदा जाणे अने ए सर्वना नियंता जाणे ने सर्वना कर्ता जाणे अने

पामवापणुं । **बलं**-सर्वनी प्राणवृत्तियोने नियमन करवानुं सामर्थ्य । **स्मृतिः**-भक्तोना मोटा अपराधोमांपण उपकारनुं स्मरण करवुं । **स्वातन्त्र्यम्**-अन्यनी अपेक्षाए रहितपणुं । **कौशलम्**-निपुणपणुं । **कान्तिः**-"न तत्र सूर्यो भाति" ए श्रुतिमां कहेली दीप्ति । **धैर्यम्**-जेम पोताना घरमां प्रवेश करे तेम युद्धमां प्रवेश करवानुं सामर्थ्य । **मार्दवम्**-क्रूरताए रहितपणुं । **प्रागल्भ्यम्**-सभामां प्रगल्भपणुं । **प्रश्रयः**-महापुरुषनी आगळ विनयभाव । **शीलम्**-सद्वृत्तांत । **सहः**-प्राणनुं स्वाभाविक सामर्थ्य । **ओजः**-अन्नादि जनित सामर्थ्य । **बलम्**-धारण करवानुं सामर्थ्य । **भगः**-ज्ञानादिगुणनो उत्कर्ष । **गाम्भीर्यम्** अभिप्राय न जाणी शकाय ते । **स्थैर्यम्**-क्रोध थवानां निमित्त सतेपण विकार न थाय ते । **आस्तिक्यम्**-शास्त्रार्थमां विश्वास । **कीर्तिः**-यश । **मानः**-पूजानी योग्यता । **अनहंकृतिः**-गर्वे रहितपणुं ।

१ केवा । २ केवा संतमां भगवानना गुणो आवेछे अने केवी रीते आवेछे ए बे प्रश्नो छे तेमां प्रथम प्रश्ननो उत्तर आपेछे ।

ए सर्वने कर्ताथका पण ए निर्लेप छे एम भगवानने जाणे' अने एवी रीते जे प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय कर्योछे ते कोइ रीते करीने डगे नहि, ते गमे तेवां तरेतरेनां शास्त्र सांभळे अने गमे तेवा मतवादिनी वात सांभळे अने गमे तेवा पोतालुं अंतःकरण कुतर्क करे पण कोइ रीते करीने भगवानना स्वरूपमां डगमगाट थाय नहि, एवी जातनो जेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय होय तेने भगवाननो संबन्ध थयो कहेवाय, माटे जेने जे संघाथे संबन्ध होय तेना गुण तेमां सहजे आवे, जेम आपणां नेत्र छे तेने ज्यारे दिवा संघाथे संबन्ध थायछे त्यारे ते दिवानो प्रकाश नेत्रमां आवेछे तेणे करीने नेत्र आगळ अंधारुं होय तेनो नाश थइ जायछे, तेम जे भगवानना स्वरूपनो दृढ निश्चये करीने संबन्ध थायछे तेने विषे भगवानना कल्याणकारी गुण आवेछे, पछी जेम भगवान् सर्वप्रकारे निर्बंध छे अने जे चहाय ते करवाने समर्थ छे तेम ए भक्त पण अतिशय समर्थ थायछे अने निर्बंध थायछे.

पछी निर्विकारानंदस्वामीए पुछ्युं जे "निश्चय होय तोयपण रुडा गुणतो आवता नथी अने मान ने ईर्ष्या तो दिवसे दिवसे वधतां जायछे तेनुं शुं कारण हशे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ७ भगवान् पासे

१ कुटिल युक्तिजाळथी गुथाएला माटे मोह थाय तेवा। २ असच्छास्त्र। ३ शुष्कवेदान्ति विगेरे। ४ आ परमेश्वर छे पण बीजाओथी भयभावना आदिक केम करेछे? इत्यादिक वितर्क। ५ बीजा प्रश्ननो उत्तर आपेछे। ६ सत्य शौचादिक। ७ दैवी अने आसुरी ए बे प्रकारना जीवो छे, तेमना गुणदोषो गीतामा पृथक् पृथक् कह्याछे, ते बन्ने जीवो भगवानना संबन्धने पामीने पण स्वाभाविक पोताना गुणदोषोने त्याग करी शकता नथी, तेमा दैवी जीवो भगवानना संबन्धथी तेमना सत्यादिगुणोने पामेछेज अने आसुरी जीवोतो भगवानना संबन्धथी तेमना गुणोने नथीज पामता, आसुरी जीवोमातो कोइकज कदाचित् मोटा पुरुषना अनुग्रहथी पोताना दोषोने त्याग करीने दैवी संपत्तिना गुणोने

एक अमृत लावीए अने सिंगडीयो वछनाग लावीए अने दुधपाक ने साकर लावीए अने अफीण लावीए अने ते सर्वेने भगवानना थाळमां धरीए तोपण जेनो जेवो गुण होय तेनो तेवोने तेवोज रहे पण पलटाइ जाय नहि, तेम जे जीव आसुरी अने अतिकुपात्र होय ते भगवानने समीपे आवे तोयपण पोताना स्वभावने मुके नहि, पछी ए कोइक गरीव हरिभक्तनो द्रोह करे तेणे करीने एनुं भुंडुं थाय, शामाटे जे भगवान् सर्वमां अंतर्यामीरूपे करीने रह्याछे ते पोतानी इच्छा आवे त्यां तेटली सामर्थि जणवेछे, माटे ते भक्तने अपमाने करीने ते भगवाननुं अपमान थायछे त्यारे ते अपमानना करनारानुं अतिशय भुंडुं थइ जायछे, जेम हिरण्यकशीपु हतो तेणे त्रिलोकी पोताने वश करी राखी हती एवो बळवान् हतो पण तेणे जो प्रह्लादजीनो द्रोह कर्यो तो भगवान् स्तंभमांथी नृसिंहरूपे प्रकट थइने ते हिरण्यकशीपुनो नाश करी नाख्यो, एम विचारीने भगवानना भक्त होय तेने अतिशय गरीबपणुं पकडवुं पण कोइनुं अपमान करवुं नहि, कांजे भगवानतो गरीबना अंतरनेविषे पण विराजमान रह्याछे ते ए गरीबना अपमानना करतलनुं भुंडुं करी नाखेछे, एवुं जाणीने कोइ अल्प जीवने पण दुःखववो नहि अने जो अहंकारने वश थइने जेने तेने दुःखवतो फरे तो गर्वगंजन एवा जे भगवान् ते अंतर्यामीरूपे सर्वमां व्यापक छे ते खमी शके नहि, पछी गमे ते द्वारे प्रकट थइने ए अभिमानी पुरुषना अभिमानने सारी पेठे नाश करेछे,

पामीने भगवानना सत्यादिगुणोने पामेछे, दैवी जीवोमां पण जो कोइक कदाचित् प्रमादथी अथवा जाणी जोइने महागुणी रांक भक्तजननुं अपमान करे तो ते दैवी जीव पण असुरनी पेठे गुणहीन थइने दोषयुक्त थाय अने तेनामां भगवानना गुणो आवे नहि, विगेरे भावार्थ छे, तेने दृष्टान्त कहेवा पूर्वक विवेचन करीने कहेछे ।

ते माटे ते भगवानथी डरीने जे साधु होय तेने लेशमात्र अभिमान राखवुं नहि अने एक कीडी जेवा जीवने पण दुःखववो नहि एज निर्मानी साधुनो धर्म छे । इति वचनामृतम् ॥ ६२ ॥

संवत् १८७६ ना फागण वदि ७ सप्तमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने धोळुं हिरकोरनुं धोतीयुं माथे बांध्युं हतुं ने कंठने विषे श्वेत पुष्पना हार विराजमान हता अने पाघने विषे गुलाबना पुष्पना तोरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी नृसिंहानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भगवानना निश्चयमां कसर होय तेने केवा संकल्प थाय ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने निश्चयमां कसर होय तेने ज्यारे भगवानमां कांइ सामर्थि देखाय त्यारे अति आनंद थाय अने ज्यारे सामर्थि न देखाय त्यारे अंतर झांखुं थइ जाय. अने पोताना हृदयमां भुंडा संकल्प थता होय ने तेने टाळे तोयपण टळे नहि त्यारे भगवानमां अवगुण परठे जे 'हुं आटला दहाडाथी सत्संग करी करीने मरी गयो तोयपण भगवान् मारा भुंडा घाट टाळता नथी' एवी रीते भगवानमां दोष परठे अने जे पदार्थमां पोताने हेत होय अने कोइ प्रकारे ते पदार्थमांथी मन पाछुं न वळतुं होय त्यारे तेवोने तेवो दोष भगवाननेविषे परठे जे 'जेम मारे विषे कामादिक दोष छे तेम भगवाननेविषे पण छे पण ए भगवान् छे ते मोटा कहेवायछे' एवी रीतना जेने अंतरमां घाट थता होय तेना निश्चयमां कसर जाणवी एनो परिपक निश्चय न कहेवाय.

पछी परमचैतन्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! जेने भगवाननो परिपक्व निश्चय होय तेने केवी जातना घाट थाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने परिपक्व निश्चय होय तेनेतो मनमां एम रहे जे 'मारे सर्वे प्राप्ति थइ रहीछे अने ज्यां प्रत्यक्ष भगवान् रह्याछे त्यांज परमधाम छे अने आ संत सर्वे ते नारद सनकादिक जेवा छे अने सत्संगी सर्व तेतो जेवा उद्धव, अक्रूर, विदुर, सुदामा अने वृंदावनना गोप तेवा छे अने जे बाइयो हरिभक्त छे तेतो जेवी गोपीयो तथा द्रौपदी, कुंताजी, सीता, रुक्मिणी, लक्ष्मी, पार्वती एवी छे अने हवे मारे कांइ करवुं रह्युं नथी अने गोलोक, वैकुंठ, ब्रह्मपुर तेने हुं पामी रह्योछुं' एवी रीतना घाट थाय अने पोताना हृदयमां अति आनंद वर्ते, एवी रीते जेना अंतरमां वर्ततुं होय तेने परिपक्व निश्चय जाणवो.

एम कहीने पछी श्रीजिमहाराज एम बोल्या जे, तत्त्वे करीने भगवाननुं स्वरूप जाण्या पछी एने कांइ जाणवुं रहेतुं नथी, ते तत्त्वे करीने जाण्यानी रीत कहीए ते सांभळो, जे सांभळीने परमेश्वरना स्वरूपनो अडग निश्चय थायछे जे, प्रथमतो एने भगवाननी मोटाइ जाणी जोइए, 'जेम कोइक मोटो राजा होय तेना जे गोला अने गोलीयो होय तेने पण सात भूमिनी तो हवेलीयो रहेवानी होय अने बागबगीचा ने घोडा वेल्यो घरेणां ए आदिक जे सामग्रीयो तेणे करीने देवलोक सरखां तेनां घर जणाय त्यारे ते राजानो जे दरबार तथा तेमां जे सामग्रीयो तेतो अति शोभायमान होय' तेम श्रीपुरुषोत्तम भगवाननी आज्ञामां वर्तता एवा जे ब्रह्मांडना अधिपति ब्रह्मादिक तेना जे लोक अने ते लोकना वैभव तेनो पार पमातो नथी तो जेना नाभिकमळमांथी ब्रह्मा उत्पन्न थया एवा जे विराट्पुरुष तेना वैभवनो पारतो

क्यांथी पमाय ? अने एवा अनंतकोटि जे विराट्पुरुष तेमना स्वामी जे पुरुषोत्तम भगवान् तेनुं धाम जे अक्षर, जेने विषे एवां अनंतकोटि ब्रह्मांड ते एक एक रोम प्रत्ये अणुनी पेठे उडतां फरेछे एवुं ए भगवाननुं धाम छे अने ते धामनेविषे पुरुषोत्तम भगवान् पोते दिव्यरूपे करीने सदा विराजमान छे अने ते धाममां अपार दिव्य सामग्री छे ते भगवाननी मोव्यपनो पारतो आवेज केम ? एवी रीते भगवाननी मोव्यप समझे. [1]अने जे जेथकी मोटो होय ते तेथकी सूक्ष्म होय अने ते तेनुं कारण पण होय, 'जेम पृथ्वीथकी जळ मोटुं छे अने ते पृथ्वीनुं कारण छे अने तेथकी सूक्ष्म पण छे अने जळथकी तेज मोटुं छे अने तेजथकी वायु मोटो छे अने वायुथकी आकाश मोटो छे' एवी रीते अहंकार, महत्तत्त्व, प्रधानपुरुष, प्रकृतिपुरुष अने अक्षर ए सर्वे एक बीजाथी मोटा छे अने एक बीजाथी सूक्ष्म छे ने कारण छे अने ए सर्वे मूर्तिमान् छे पण भगवाननुं जे अक्षरधाम छे तेतो अत्यंत मोटुं छे; जेना एक एक रोमनेविषे अनंतकोटी ब्रह्मांड अणुनी पेठे उडतांज फरेछे, 'जेम कोइ मोटो हस्ति होय तेना शरीर उपर कीडी चाली जाती होय ते कशी गणतीमां आवे नहि' तेम ए अक्षरनी मोटाइ आगळ बीजुं कोइ कांइ गणतीमां आवतुं नथी, 'जेम झीणां मच्छर होय तेने मध्ये कीडी होय ते मोटी देखाय अने कीडीने मध्ये वींछी होय ते मोटो देखाय ने वींछीने मध्ये साप होय ते मोटो देखाय अने सापने मध्ये समळा होय ते मोटी देखाय ने समळाने मध्ये पाडो होय ते मोटो देखाय ने पाडाने मध्ये हाथी होय ते मोटो देखाय ने हाथीने मध्ये गिरनार सरखो पर्वत होय ते मोटो देखाय अने ते पर्वतने

[1] फरीथी पण प्रकारान्तरथी मोव्यप कहेछे ।

मध्ये मेरु पर्वत मोटो देखाय अने ते मेरु जेवा पर्वतने मध्ये लोकालोक पर्वत ते अति मोटो जणाय अने लोकालोक पर्वतथकी पृथ्वी अति मोटी जणाय अने पृथ्वीनुं कारण जे जळ ते तेथकी मोटुं पण छे अने सूक्ष्म पण छे' एवी रीते जळनुं कारण ते तेज छे, तेजनुं कारण वायु छे, वायुनुं कारण आकाश छे, आकाशनुं कारण अहंकार छे, अहंकारनुं कारण महत्तत्त्व छे, महत्तत्त्वनुं कारण प्रधान ने पुरुष छे अने प्रधान ने पुरुषनुं कारण मूळ प्रकृति नु ब्रह्म छे अने ए सर्वेनुं कारण अक्षरब्रह्म छे अने ते अक्षर तो पुरुषोत्तम भगवाननुं धाम छे. अने ए अक्षरनी संकोच ने विकास अवस्था थती नथी सदाय एकरूपे रहेछे अने ते अक्षर मूर्तिमान् छे पण अति मोटा छे माटे कोइनी नजरे अक्षरनुं रूप आवतुं नथी, 'जेम चोवीस तत्त्वनुं कार्य जे ब्रह्मांड ते पुरुषावतार कहेवायछे अने ते विराट्पुरुष जेते करचरणादिके करीने युक्त छे पण तेनी मूर्ति अतिशय मोटी छे माटे नजरे आवती नथी. अने तेनी नाभिमांथी थयुं जे कमळ तेना नाळमां ब्रह्मा सो वर्ष लगी चाल्या पण तेनो अंत न आव्यो अने जो कमळनोज अंत न आव्यो तो विराट्पुरुषनो पार केम आवे? माटे ते विराटनुं रूप नजरे आवतुं नथी' तेम अक्षरधाम पण मूर्तिमान् छे पण कोइने नजरे आवे नहि, ते शामाटे जे एवां एवां ब्रह्मांड एक एक रोममां असंख्यात उडतांज फरेछे एवडा मोटा छे ते अक्षरधामने विषे पुरुषोत्तम भगवान् पोते सदा विराजमान छे अने पोतानी अंतर्यामीशक्तिए करीने अक्षरधाम अने अनंतकोटी ब्रह्मांड अने ते ब्रह्मांडना जे ईश्वर ते सर्वेनेविषे अन्वयपणे रह्याछे अने ते अक्षर-

१ आ स्थले मूळपुरुषने 'ब्रह्म' शब्दथी कह्या छे।

धामनेविषे पोताना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा जे अनंत कोटी मुक्त ते ए भगवाननी सेवानेविषे रहेछे अने ते भगवानना सेवकना एक एक रोमनेविषे कोटि कोटि सूर्यना जेवो प्रकाश छे माटे जेना सेवक एवा छे तो एमना स्वामी जे पुरुषोत्तम भगवान् तेनो महिमा तो केम कहेवाय ? एवा अतिसमर्थ जे भगवान् ते पोते अक्षरमां प्रवेश करीने अक्षररूपे थायछे अने पछी मूळप्रकृति-पुरुषरूपे थायछे अने पछी प्रधानपुरुषरूपे थायछे अने पछी प्रधानमांथी थयां जे चोविश तत्त्व तेनेविषे प्रवेश करीने ते रूपे थायछे अने पछी ते तत्त्वे करीने सरजाणा जे विराट्पुरुष तेने विषे प्रवेश करीने ते रूपे थायछे अने पछी ब्रह्मा, विष्णु, शिवमां प्रवेश करीने ते ते रूपे थायछे, एवी रीते अतिसमर्थ अने अतिप्रकाशे युक्त अने अति मोटा जे ए भगवान् ते पोतानुं जे आवुं ऐश्वर्य अने तेज तेने पोतामां समावीने जीवना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा थायछे अने मनुष्य दर्शन करी शके तथा सेवा अर्चनादिक करी शके एवुं रूप धारण करेछे, 'जेम कीडीना पगमां झीणो कांटो वाग्यो होय तेने घरछी तथा नरेणीए करीने काढे तो नीसरे नहि तेतो अतिशय झीणुं लोढुं होय तेणे करीने नीसरे' तेम भगवानपण पोतानी मोटाइने पोतामां समावीने अतिशय अल्प रूपनुं धारण करेछे, 'जेम अग्नि पोतानो प्रकाश अने ज्वाळा तेने समावीने मनुष्य जेवो थाय' तेम भगवानपण पोतानी सामर्थि छपावीने जीवना कल्याणने अर्थे मनुष्यनी पेठे वर्तेछे. अने जे मूर्ख होय तेतो एम जाणे जे 'भगवान् कांइ सामर्थि केम प्रकट करता नथी' पण भगवानतो मुळगी जीवना कल्याणने अर्थे पोतानी सामर्थि ढांकीने वर्तेछे. अने जो पोतानी मोटयप प्रकट करे तो ब्रह्मांड पण नजरमां न आवे

तो जीवनी शी गणना ? एवी रीते महिमाए सहित जे भगवाननो निश्चय ते जेने हृदयमां दढपणे थयो होय तेने काळ, कर्म, माया कोइ बंधन करवा समर्थ नथी, माटे एवी रीते तत्त्व करीने जे भगवानने जाणे तेने कांइ करवुं रह्युं नथी.

पछी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "एवी रीते अनुक्रमे करीने भगवान् मनुष्याकृति धरेछे के अनुक्रम विना पण मनुष्याकृति धरेछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,अनुक्रमनो कांइ मेळ नथी, त्यां दष्टांत-जेम कोइ पुरुष होय ते तळावनेविषे डबकी खाय ते डबकी खाइने गमे तो त्यांने त्यां निसरे अथवा कांठे निसरे अथवा आसपास निसरे, तेम पुरुषोत्तम भगवान् छे ते अक्षररूप धामनेविषे डबकी खाइने गमे तो त्यांथी पाधराज मनुष्याकृतिने धरेछे अने गमे तो एवी रीते अनुक्रमे करीने मनुष्याकृतिने धरेछे.

एम वार्ता करीने पछी वळी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने अतिदढ निश्चय होय तेनुं थोडाकमां लक्षण कहुं ते सांभळो जे, जेने परिपक्व निश्चय होय अने ते पोते अत्यंत त्यागी होय तोयपण ते पासे गमे तेवी प्रवृत्ति मार्गनी क्रिया करावीए तो ते करे पण तेमांथी पाछो हठे नहि अने कचवाइने पण करे नहि राजीथको करे अने बीजुं ए लक्षण जे, गमे तेवो पोतामां कोइक स्वभाव होय अने ते कोटी उपाय करे तोयपण टळे एवो न होय ने जो ते स्वभावने मुकाव्यानो परमेश्वरनो आग्रह देखे तो ते स्वभावने तत्काळ मुके अने त्रीजुं ए लक्षण जे, पोतामां कांइक अवगुण होय तोपण परमेश्वरनी कथा कीर्तन तथा भगवानना संत ते विना घडिमात्र रहेवाय नहि अने पोतानो अवगुण ले ने संतनो अति गुण ग्रहण करे अने भगवाननी कथा कीर्तन अने भगवानना संतनो

अतिमहिमा समझे, एवुं जेने वर्तेतुं होय तेने परिपक्क निश्चय जाणवो, एवा निश्चयवाळाने कोइक दिवस कोइक प्रारब्धयोगे करीने कांइक वर्तवामां फेर पडी जाय तोयपण तेनुं अकल्याण न थाय अने एवो निश्चय न होय ने ते गमे तेवो त्यागी होय तोयपण तेना कल्याणमां फेर छे । इति वचनामृतम् ॥ ६३ ॥

संवत् १८७६ ना फागण वदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने काळा छेडानो खेस ओढ्यो हतो ने मस्तके हीरकोरनुं धोतीयुं बांध्युं हतुं ने तुलसीनी नवी कंठी कंठनेविषे पहेरी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पुरुषोत्तमना शरीर जे आत्मा ने अक्षर तेनेविषे अत्यंत विलक्षणपणुं जोइए ते कहो केम विलक्षणपणुं छे?" पछी सर्वे मुनिए जेनी जेवी बुद्धि तेणे तेनो उत्तर कर्यो पण यथार्थ उत्तर कोइथी थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीए जे, 'आत्मा अने अक्षर ए बेने जे पुरुषोत्तम भगवाननुं शरीरपणु तेतो व्याप्यपणुं, आधीनपणुं अने असमर्थपणुं तेणे करीने छे, केवी रीते तो भगवान् जेते पोतानी अंतर्यामीशक्तिए करीने आत्मा ने अक्षर तेनेविषे व्यापक छे ने ए बेय तो व्याप्य छे अने भगवान् जेते स्वतंत्र छे ने आत्मा ने अक्षर तेतो भगवानने आधीन छे—परतंत्र छे अने भगवान् जेते अतिसमर्थ छे ने आत्मा ने अक्षर तेतो भगवाननी आगळ अति असमर्थ छे, एवी रीते भगवान् जेते ए बेयना शरीरी छे अने ए बेय जेते भगवाननुं शरीर छे अने शरीरी एवा जे पुरुषोत्तम भगवान् तेतो सदाय दिव्य मूर्तिमान् छे. अने एवा जे ए भगवान् ते जेते व्यापक छे ने द्रष्टा

१ 'शीर्यते तच्छरीरं' ए 'शरीर' शब्दनो मुख्यार्थ नथी मुख्यार्थतो जे व्याप्यपणु आधीनपणु अने असमर्थपणु ते छे, अन्याधीन होय तथापि कदाचित् क्वचित् कोइक क्रिया करवामां समर्थपण थाय तेनी व्यावृत्ति माटे असमर्थपणु कह्यु छे, एटले बन्ने शब्दनो 'तदेकाधीन' एवो अर्थ थयो, आधीन शब्द परतन्त्रपर्याय छे, परतन्त्रपणु एटले नियाम्यपणु, परतन्त्रपणु पण राजानी अपेक्षाए राष्ट्रनु जेम छे तेम नथी, परंतु व्याप्यपणे करीने छे, ते सूचववामाटे व्याप्यपणु कह्यु छे, त्रणे शब्दो मळीने एकज लक्षण छे, अन्त प्रवेश करीने सर्वप्रकारे नियममां करी शकाय ते शरीर कहेवाय' आटलो फलितार्थ छे, ते "य आत्मनि तिष्ठन्नात्मनोऽन्तरो यमात्मा न वेद यस्यात्मा शरीरं य आत्मानमन्तरो यमयति स त आत्माऽन्तर्याम्यमृत" इत्यादिश्रुतियोथी सिद्ध थायछे। श्रीभाष्यादिकमां शरीरनां बीजा लक्षणो कह्यां छे ते तेथकी जाणवां।

एवा जे सर्वे आत्मा अने ते आत्माने व्याप्य ने आत्माने दृश्य एवा जे देह ए सर्वेमां पोतानी अंतर्यामीशक्तिए करीने आत्मापणे रह्याछे अने एवी रीते सर्वेना आत्मा जे पुरुषोत्तम भगवान् ते ज्यारे रूपवान् एवुं जे दृश्य तेना आत्मापणे करीने शास्त्रने विषे कह्या होय त्यारे ते पुरुषोत्तमने दृश्यरूपे करीने प्रतिपादन कर्या होय अने ज्यारे ए द्रष्टाना आत्मापणे करीने प्रतिपादन कर्या होय त्यारे ए पुरुषोत्तमने अरूपपणे करीने शास्त्रमां कह्या होयछे अने वस्तुताए तो रूपवान् जे दृश्य अने अरूप जे आत्मा ए बेयथकी पुरुषोत्तम भगवान् न्यारा छे ने सदा मूर्तिमान् छे ने प्राकृत आकारे रहित छे अने मूर्तिमान् थकापण द्रष्टा ने दृश्य ए बेयना द्रष्टा छे अने ए आत्मा ने अक्षर ए

१ पृथिव्यादिक । २ पृथिव्यादिरूपे । ३ जीवात्माना । ४ जीवात्मापणे । ५ भावार्थ एटलो छे के—ज्यां परमात्मानुं पृथिव्यादिरूपे के जीवात्मारूपे वर्णन होय त्यां तेना आत्मापणे वर्णवानो अभिप्राय छे एम जाणवुं, शरीरवाचक शब्दनो शरीरिमा पर्यवसान थवुं ते स्वभाव छे माटे शरीरशब्दथी शरीरिनुं ग्रहण थइ शकेछे, जेम "देवदत्त जानाति" आ स्थळे पिंड विशेषनो वाचक एवो पण देवदत्तशब्द शरीरी चेतनने जणावेछे, तेवा श्रुतिस्मृतिना प्रयोगो छे—"निरुक्तं चानिरुक्तं च निलयनं चानिलयनं च विज्ञानं चाविज्ञानं च सत्यं चानृतं च सत्यमभवत्" "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" "इदं सर्वं यदयमात्मा" "पुरुष एवेदं सर्वं" "अयमात्मा ब्रह्म" "तत्त्वमसि" "सर्वमात्मैवाभूत्" "त्वं वै अहमस्मि" "सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः" "क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि" "आदित्यानामहं विष्णुः" "ज्योतींषि विष्णुर्भुवनानि विष्णुर्वनानि विष्णुर्गिरयो दिशश्च । नद्यः समुद्राश्च स एव सर्वं यदस्ति यन्नास्ति च विप्रवर्य ।" "सर्वगत्वादनन्तस्य स एवाहमवस्थितः" "जगच्च सः" "इदं हि विश्वं भगवान्" इत्यादि । चिदचिदात्मक जगतना आत्मा परमात्मा छे, तेवी श्रुतिस्मृतियो छे—"यस्यात्मा शरीरं" "यस्य पृथिवी शरीरं" "ऐतदात्म्यमिदं सर्वं" "इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः । वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च" "द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः । वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः" इत्यादि । आटलो भावार्थ छे ।

सर्वेना प्रेरक छे ने स्वतंत्र छे ने नियंता छे ने सकळ ऐश्वर्ये संपन्न छे ने परथकीपर एवुं जे अक्षर तेथकी पण पर छे, एवा जे पुरुषोत्तम भगवान् ते जीवना कल्याणने अर्थे कृपाए करीने पृथ्वीनेविषे मनुष्य जेवा जणायछे तेने जे आवी रीते सदा दिव्य मूर्तिमान् जाणीने उपासना–भक्ति करेछे तेतो ए भगवानना साधर्म्यपणाने पामेछे अने अनंत ऐश्वर्यने पामेछे अने ब्रह्मभावने पाम्यो जे पोतानो आत्मा[3] तेणेकरीने प्रेमे सहित निरंतर परम आदरथकी पुरुषोत्तमभगवाननी सेवानेविषे वर्तेछे. अने जे ए भगवानने निराकार जाणीने ध्यान–उपासना करेछे[4] तेतो[5] ब्रह्मसुषुप्तिनेविषे[6] लीन थायछे ते पाछो कोइ दिवस निसरतो नथी अने भगवानथकी कोइ ऐश्वर्यने पण पामतो नथी.[7] अने आ जे वार्ता ते अमे प्रत्यक्ष देखीने कहीछे.[8] माटे एमां कांइ संशय नथी. अने आ वार्ता तो जेने ए भगवानना स्वरूपमां सदा दिव्य साकारपणे उपासनानी दृढ निष्ठा थइ होय ते थकीज पमायछे पण बीजाथकीतो पमातीज नथी, माटे आ वार्ताने अतिदृढ करीने राखज्यो । इति वचनामृतम् ॥ ६४ ॥

संवत् १८७६ ना फागण वदि १४ चौदशने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने पोढवाना ओरडानी ओसरीए गादी तकीया नखावीने विराजमान हता ने सर्व श्वेत

१ मायाना गुणथी न पराभव थवो विगेरे सामर्थ्य । २ दिव्यभाव । ३ देह । "ब्राह्मीं संविशते तनुम्" "गुणापाये ब्रह्मशरीरमेति" ब्रह्ममय (दिव्य) तनुमा प्रवेश करेछे अर्थात् पामेछे, एम स्मृतिमां कह्युं छे । ४ कैवल्यार्थी भक्तो । ५ देहने अंते । ६ सुषुप्तिने तुल्य अक्षरब्रह्मतेजमां । ७ तो भगवाननी सेवानुं सुख न पामे तेमां शुं कहेवुं ? । ८ पण कोइथकी साभळीने कही नथी ।

वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने श्रीजिमहाराज कथा करावता हता ते समे मोटा मोटा परमहंसने पोताने समीपे बोलाव्या, पछी कथानो अध्याय पुरो थयो त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, हवे जेटला मोटा मोटा साधु छो ते परस्पर प्रश्न उत्तर करो, केमजे प्रश्न उत्तर करो त्यारे जेने जेवी बुद्धि होय ते जाण्यामां आवे, पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए परमानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे "आकाशनी उत्पत्ति अने लय ते कये प्रकारे छे?" त्यारे परमानंदस्वामी ए प्रश्ननो उत्तर करवा लाग्या पण थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम बाळक होय ने ते ज्यारे प्रथम माताना उदरमां होय त्यारे तथा जन्म समयमां तेने हृदयादिक जे इंद्रियोनां छिद्र ते सूक्ष्म होय ने पछी जेमजेम ते बाळक वृद्धिने पामतो जाय तेमतेम ते छिद्रनी वृद्धि थती जाय ने तेमां आकाशपण उत्पन्न थतो जणाय अने ज्यारे ए वृद्ध अवस्थाने पामे त्यारे एनां इंद्रियोनां छिद्र ते संकोचने पामतां जाय ने तेमां आकाशपण लय थतो जणाय, तेम ज्यारे विराटदेह उपजे त्यारे तेने अवांतर हृदयादिक छिद्रमां आकाश उत्पन्न थतो जणाय अने ज्यारे ए विराटदेहनो लय थाय त्यारे आकाश लय पाम्यो जणाय, एम आकाशनी उत्पत्ति अने लय छे, पण जे आकाश सर्वेनो आधार छे तेतो जेम प्रकृतिपुरुष नित्य छे तेम नित्य छे, एनी उत्पत्ति ने लय ते कहेवाय नहि.

१ सृष्टिसमयें आकाशनी उत्पत्ति थायछे अने प्रलयसमये लय थायछे तेनो आ स्थळे प्रसंग नथी, परंतु शरीरमां जे आकाशनी उत्पत्ति अने लयनो व्यवहार थायछे तेनो प्रसंग छे, ते व्यवहारपण वास्तविक नथी, औपाधिक छे, आटलो अभिप्राय छे।

अने वळी समाधिए करीने पण आकाशनी उत्पत्ति ने लय छे तेनी रीतने तो जे समाधिवाळा छे ते जाणेछे.[1]

पछी परमानंदस्वामीए स्वयंप्रकाशानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे "सुषुम्णा नाडी ते देहने मांहिलि कोरे केम रहीछे अने देहथी बहार केम रही छे?" त्यारे ए प्रश्ननो उत्तर स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए करवा मांड्यो पण थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, [2]आ ब्रह्मांडमां जेटलुं कारखानुं छे तेटलुंज आ पिंडमां पण छे. ते पिंडमां अल्प छे ने ब्रह्मांडमां महत् छे अने जेवो आ पिंडनो आकार छे तेवोज ब्रह्मांडनो आकार छे अने जेम ब्रह्मांडमां नदीयो छे तेम पिंडमां नाडीयो छे अने जेम ब्रह्मांडमां समुद्र छे तेम पिंडमां कुक्षिनेविषे जळ छे अने जेम त्यां चंद्र सूर्य छे तेम पिंडमां इंडा पिंगला नाडीनेविषे चंद्र सूर्य छे इत्यादिक सामग्री जेम ब्रह्मांडमां छे तेम पिंडमां छे[3] अने आ पिंडमां जे इंद्रियोनी नाडीयो छे तेनी ब्रह्मांड[4] साथे एकता छे ते जिह्वानो अंतने पामे त्यारे वरुणदेवने पमायछे अने वाक् इंद्रियना अंतने पामे त्यारे अग्निदेवने पामेछे अने त्वचाना अंतने पामे त्यारे वायुदेवने पामेछे अने शिष्णना अंतने पामे त्यारे प्रजापतिने पामेछे अने हाथना अंतने पामे त्यारे इंद्रने पामेछे अने तेमज हृदयनेविषे रही जे सुषुम्णा नाडी तेनुं अंत जे ब्रह्मरंध्र तेने

१ ते ४६ मा वचनामृतमा कह्योछे। २ पिंड अने ब्रह्माडनी रचना तुल्य छे। ३ अने जे ब्रह्माड छे ते वैराजपुरुषनो देह छे, तेनु वर्णन भागवतमा "पातालमेतस्य हि पादमूल" इत्यादिश्लोकथी कर्युं छे। ४ वैराजपुरुषना इन्द्रियो साथे। ५ जिह्वा आदिक तेते इन्द्रियोमा रहेली वरुणा आदिक तेते नाडीओना तेते अन्तभागने ज्यारे योगी पुरुष पामे त्यारे वैराजपुरुषना रसना आदिक तेते इन्द्रियोरूप वरुणादिक देवने पामेछे, आटलो अभिप्राय छे।

ज्यारे पामे त्यारे शिशुमार चक्रनेविषे रही जे वैश्वानर नामे अग्नि अभिमानी देवता तेने पामेछे, त्यारे ब्रह्मरंध्रथी लइने प्रकृतिपुरुष सुधी एक तेजनो मार्ग सलंग रह्योछे तेने देखेछे ते तेजना मार्गने सुषुम्णा कहीएं, एवी रीते सुषुम्णा नाडी पिंडमां ने ब्रह्मांडमां रही छे.

पछी वळी परमानंदस्वामीए स्वयंप्रकाशानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे "[2]प्रथम जाग्रत अवस्थानो लय छे के स्वप्ननो लय छे के सुषुप्तिनो लय छे?" त्यारे ए प्रश्ननो उत्तर स्वयंप्रकाशानंदस्वामीने न आव्यो, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जाग्रत अवस्थानेविषे स्नेहे करीने भगवाननी मूर्तिने विषे लक्ष[3] थाय त्यारे प्रथम जाग्रत अवस्थानो लय थायछे अने पछी स्वप्ननो ने सुषुप्तिनो लय थायछे. अने ज्यारे मनेकरीने चिंतवन करते करते स्वप्ननेविषे भगवाननी मूर्तिमां लक्ष थाय त्यारे प्रथम स्वप्ननो लय थाय अने पछी जाग्रतनो ने सुषुप्तिनो लय थायछे. अने ज्यारे भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन करते करते उपशमपणे करीने लक्ष थायछे त्यारे प्रथम सुषुप्तिनो लय थायछे अने पछी जाग्रतनो ने स्वप्ननो लय थायछे, एवी रीते ए प्रश्ननो उत्तर कर्यो.

पछी वळी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए परमानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननेविषे ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति अने इच्छाशक्ति छे ते केम समजवी?" त्यारे श्रीजिमहाराज हसीने बोल्या जे, एनो उत्तर तो तमने पण नहि आवडतो होय, एम कहीने पोते उत्तर करवा लाग्या जे, आ जीव ज्यारे सत्त्वगुण प्रधानपणे वर्ततो होय अने त्यारे जे कर्म

१ ते नाडी भगवानना धामना मार्गरूप छे। "तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेति" एम श्रुतिनां कहुछे। २ समाधिमा त्रण अवस्थानो लय थायछे, तेमां। ३ समाधि।

करे ते कर्मनुं फळ ते जाग्रत अवस्था छे. अने आ जीव ज्यारे रजोगुण प्रधानपणे वर्ते अने ते समयमां जे कर्म करे ते कर्मनुं फळ स्वप्न अवस्था छे. अने ज्यारे आ जीव तमोगुण प्रधानपणे वर्ततो होय अने ते समयमां जे कर्म करे तेनुं फळ ते सुषुप्ति अवस्था छे. अने ते सुषुप्ति अवस्थाने आ जीव पामेछे त्यारे जेवी पाणानी शीला होय ते जेवो जड थइ जायछे अने एने कोइ प्रकारनुं ज्ञान रहेतुं नथी जे 'हुं पंडित छुं के मूर्ख छुं के आ काम कर्युं छे के आ काम करवुं छे के आ मारी जाति छे के आवो मारो वर्ण छे के आवो मारो आश्रम छे के आ मारुं नाम छे के आ मारुं रूप छे के हुं देव छुं के मनुष्य छुं के बाळक छुं के वृद्ध छुं के धर्मिष्ठ छुं के पापिष्ठ छुं' इत्यादिक कोइ प्रकारनुं ज्ञान रहेतुं नथी अने एवी रीतनो ज्यारे आ जीव थइ जायछे त्यारे जे भगवान् छे ते एने ज्ञानशक्तिए करीने सुषुप्तिमांथी जगाडीने एने एनी सर्वे क्रियानुं ज्ञान आपेछे तेने ज्ञानशक्ति कहीए. अने ए जीव जेजे क्रियानेविषे प्रवर्तेछे ते भगवाननी जे क्रियाशक्ति तेनुं अवलंबन करीने प्रवर्तेछे तेने क्रियाशक्ति कहीए. अने ए जीव जेजे कोइ पदार्थनी इच्छाने प्राप्त थायछे ते परमेश्वरनी इच्छाशक्तिने अवलंबने करीने प्राप्त थायछे तेने इच्छाशक्ति कहीए. अने ए जीवने जाग्रत, स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था भोगवायछे ते केवळ कर्मे करीनेज नथी भोगवाती, एतो एने कर्मना फळप्रदाता जे परमेश्वर ते ए जीवने ज्यारे कर्मफळने भोगवावेछे त्यारे भोगवेछे, केमजे आ जीव ज्यारे जाग्रत् अवस्थाना फळने भोगवतो होय ने त्यारे ए इच्छे जे मारे स्वप्नमां जवुंछे तो एनीवते स्वप्नमां जवाय

१ कर्मफळनुं भोगस्थान । २ कहेला अर्थने फरीथी स्फुट बोधमाटे स्पष्टपणे कहेछे ।

नहि, शामाटे जे फळप्रदाता जे परमेश्वर ते एनी वृत्तियोने रुंधी राखेछे अने स्वप्नमांथी जाग्रतमां आववाने इच्छे तो जाग्रतमां अवाय नहि अने सुषुप्तिमां पण जवाय नहि अने सुषुप्तिमांथी स्वप्नमां तथा जाग्रतमां अवाय नहि, एतो ज्यारे जे कर्मना फळना भोगवावनारा परमेश्वर छे ते एने जे अवस्थाना कर्मफळने भोगवावे तेनेज भोगवी शकेछे पण ए जीव पोतानी इच्छाए करीने अथवा कर्मे करीने कर्मना फळने भोगवी शकतो नथी, एवी रीते भगवाननेविषे ज्ञानशक्ति *क्रियाशक्ति अने इच्छाशक्ति ते रही छे' एम श्रीजिमहाराजे कृपा* करीने उत्तर कर्यो । इति वचनामृतम् ॥ ६५ ॥

संवत् १८७६ ना फागण वदी अमासने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने काळा छेडानो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी पछेडी ओढी हती ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, श्रीमद्भागवतनेविषे वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न अने अनिरुद्ध ए चतुर्व्यूहनीज वार्ता छे, ते कोइ ठेकाणे एने सगुण करी कहेछे अने कोइ ठेकाणे एने निर्गुण करी कहेछे, ते ज्यारे निर्गुण करीने कहेछे त्यारे वासुदेव भगवानने कहेछे अने ज्यारे सगुण करीने कहेछे त्यारे संकर्षण, अनिरुद्ध, प्रद्युम्नने कहेछे, माटे ज्यारे निर्गुणपणे कथा होय त्यारे[2] सांभळनाराने

१ ते शक्तियो सर्वजीवोना गुणकर्मानुसारे जीवमा रहेली ज्ञानादि शक्तियोने प्रेरेछे माटे भगवानमां विषमता नथी । २ निर्गुणादि पदना अर्थमां ।

वांचनारानी मति भ्रमि जायछे अने एम जाणेछे जे 'भगवानने तो आकार नथी' ते समझनारानी अवळी समझण छे. अने शास्त्रमां जे शब्द छे ते एकांतिक भक्त विना बीजाने समझाता नथी, ते कया शब्द तो जे 'भगवान् अरूप छे ज्योतिःस्वरूप छे निर्गुण छे ने सर्वत्र व्यापक छे' एवां वचन सांभळीने मूर्ख होय ते एम जाणे जे 'शास्त्रमांतो भगवानने अरूपज कह्याछे' अने जे एकांतिक भक्त होय तेतो एम जाणे जे 'शास्त्रमां भगवानने जे अरूप ने निर्गुण कह्याछे तेतो मायिक एवा जे रूप ने गुण तेना निषेधने अर्थे कह्याछे पण भगवानतो नित्य दिव्य मूर्ति छे अने अनंत कल्याण गुणे युक्त छे' अने तेजना पुंजरूप कह्याछे तेतो मूर्ति विना तेज होय नहि माटे ए तेज ते मूर्तिनुं छे, जेम अग्निनी मूर्ति छे ते मूर्तिमांथी अग्निनी ज्वाळा प्रकट थायछे तेणे करीने ते अग्निनी मूर्ति देखाती नथी अने ज्वाळा देखायछे पण समझु होय ते एम जाणे जे अग्निनी मूर्तिमांथीज ज्वाळा निकळेछे, तेमज वरुणनी मूर्तिमांथी जळ प्रकट थायछे ते जळ देखायछे अने वरुणनी मूर्ति देखाती नथी पण समझु होय ते एम जाणे जे वरुणनी मूर्तिमांथी सर्वे जळ छे, तेम ब्रह्मसत्तारूप जे कोटि सूर्य जेवो प्रकाश छे ते पुरुषोत्तम भगवानी मूर्तिनो प्रकाश छे. अने शास्त्रमां एवां वचन होय जे 'जेम कांटे करीने कांटो काढीने पछी बेयनो त्याग करे तेम भगवान् पृथ्वीनो भार उतारवाने काजे देहने धरेछे ते भार उतारीने देहनो त्याग करेछे' एवां जे शब्द तेने सांभळीने मूर्ख होय ते भूला पडेछे अने भगवानने अरूप समझेछे पण भगवाननी जे मूर्ति तेने दिव्य जाणता नथी. अने एकांतिक भक्त होय तेतो एम जाणे जे, ज्यारे श्रीकृष्णभगवान् अर्जुननी प्रतिज्ञा राखवाने काजे ब्राह्मणनी पुत्र लेवाने गया त्यारे द्वारिकामांथी रथ

उपर बेसीने अर्जुन सहित चाल्या ते लोकालोक पर्वतने उल्लंघीने मायानो जे अंधकार तेने सुदर्शनचक्रे करीने कापीने तेनेविषे रथने हांकीने ने तेजःपूंजनेविषे प्रवेश करीने अने भूमापुरुष पासेथी ब्राह्मणना पुत्रने लइ आवता हवा, माटे श्रीकृष्णभगवान् दिव्यमूर्ति हता तो तेने प्रतापेकरीने लाकडानो जे रथ अने पंच भूतना देहवाळा जे घोडा ते सर्व दिव्य ने मायापर जे चैतन्य ते रूपे थता हवा. अने जो दिव्यरूप न थया होय तो जेटलुं मायानुं कार्य होय तेटलुं मायामांज लीन थाय पण मायाथी पर जे ब्रह्म त्यांसुधी पहोंचे नहि, माटे जे भगवाननी मूर्तिने प्रतापे मायिक पदार्थ हतां तेपण अमायिक थयां एवुं जे भगवाननुं स्वरूप तेने मूर्ख होय ते मायिक समझे अने जे एकांतिक संत छे तेतो भगवाननी मूर्तिने अक्षरातीत समझेछे अने मूर्तिमान् एवा जे पुरुषोत्तम भगवान् तेने ब्रह्मरूप जे अनंत कोटि मुक्त अने अक्षरधाम ए सर्वेना आत्मा जाणेछे, माटे कोइ गमे तेवां शास्त्र वंचातां होय अने तेमां भगवाननुं निर्गुणपणेकरीने प्रतिपादन आवे ते ठेकाणे एम जाणवुं जे ए भगवाननी मूर्तिनो महिमा कह्योछे पण भगवानतो सदा मूर्तिमानज छे, एवी रीते जे समझे तेने एकांतिक भक्त कहीए । इति वचनामृतम् ॥ ६६ ॥

संवत् १८७६ ना चैत्र शुदि ७ सातमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां मुनिने उतारे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ ज्योतिर्मय अक्षरब्रह्मधाम । २ अक्षरब्रह्मधाम ।

पछी श्रीजिमहाराजे मुनि प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "कोई सत्पुरुष छे तेने आ लोकना सुखमांतो प्रीतिज नथी अने परलोक जे भगवाननुं धाम तथा भगवाननी मूर्ति तेनेविषे वासना छे अने जे तेनो संग करे तेनुं पण एवीज जातनुं हित करे जे 'आ मारो संगी छे तेने आ संसारनी वासना तुटी जाय ने भगवाननेविषे प्रीति थाय तो घणुं सारुं छे' अने जेटलुं कांइ जतन करे ते सर्वे देहने मुकीने भगवानना धाममां गया केडे सुख आपे एवुंज करे पण देहना सुखने अर्थेतो कांइ क्रिया करेज नहि, एवा जे सत्पुरुष होय तेना सरखा जे गुण ते मुमुक्षुनेविषे केम समझे तो आवे ने केम समझे तो न आवे ?" ए प्रश्न छे, पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, जेने आ लोकना सुखमां इच्छा नथी एवा सत्पुरुष छे तेनेविषे देवनी बुद्धि राखे अने जे वचन कहे ते सत्य माने अने ते प्रमाणे वर्ते तो ए सत्पुरुषना गुण होय ते मुमुक्षुमां आवे अने जे एवो न होय तेमां न आवे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ए उत्तर तो खरो पण आम समझे तो मोटा सत्पुरुषना गुण मुमुक्षुमां आवेछे ते समझ्यानी रीत कहीए ते सांभळो जे, जे पुरुषने परमेश्वर विनानी बीजे क्यांइ प्रीति न होय तेनो एम गुण ग्रहण करे जे 'आ पुरुषतो अतिशय मोटा छे अने एने आगळ लाखो माणस हाथ जोडीने उभां रहेछे तोपण लेशमात्र संसारना सुखने इच्छता नथी अने हुंतो अतिशय पामर छुं जे केवळ संसारना सुखमां आसक्त थइ रह्योछुं अने परमेश्वरनी वातमांतो लेशमात्र समझतोज नथी माटे

१ "यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ। तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः॥" "जेवी देवमां परा भक्ति छे तेवी गुरुमां थाय तो तेने सर्व अर्थो सिद्ध थायछे॥" २ करेला उत्तरमां जे न्यूनता छे तेने पूर्ण करे छे।

मने धिकार छे' एवी रीते अनुताप करे अने मोटा पुरुषनो गुण ग्रहण करे अने पोताना अवगुण ग्रहण करीने अनुताप करे पछी एमने एम परिताप करते करते एना हृदयनेविषे वैराग्य उपजे अने पछी तेमां सत्पुरुषना जेवा गुण आवेछे। हवे जेना हृदयमां सत्पुरुषना गुण नज आवे तेनां लक्षण कहीए ते सांभळो जे, जे पुरुष एम समझे जे, 'आ मोटा कहेवायछे पण विवेकतो कोइ प्रकारनो नथी अने खातां पीतां पण आवडतुं नथी अने ओढतां पहेरतां पण आवडतुं नथी अने परमेश्वरे सुख घणुं आप्युं छे तेने भोगवतां पण आवडतुं नथी अने कोइने आपेछे तेपण विवेक विनानुं आपेछे' एवी रीते सत्पुरुषमां अनंत प्रकारना अवगुण परठे, एवो जे कुमति पुरुष होय तेनेविषे कोइ काळे सत्पुरुषना गुण आवेज नहि। इति वचनामृतम् ॥ ६७ ॥

संवत् १८७६ ना चैत्र शुदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लींबडाना वृक्ष हेठे ढोलिया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती अने माथे धोळुं हीरकोरनुं धोतीयुं बांध्युं हतुं अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे अमे एक प्रश्न पुछीए छीए, त्यारे मुनिए कह्युं जे पुछो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "ओगणतेरा काळमां अमने एक महिना सुधी ज्यारे निद्रा[1] आवे त्यारे एम भासतुं जे, अमे पुरुषोत्तमपुरीने विषे रहने श्रीजगन्नाथजीनी मूर्तिनेविषे प्रवेश करीने रह्या छीए अने ते मूर्तितो काष्ठनी जणाय पण तेने

१ समाधि।

करीने अमे सर्वने देखता अने पूजारीनो भक्तिभाव तथा छळकपट सर्व देखता अने एवी रीते आपणा सत्संगमां जे समाधिनिष्ठ पुरुष होय तेपण समाधिए करीने बीजाना देहमां प्रवेश करीने सर्वने देखेछे अने सर्व शब्दने सांभळेछे. अने शास्त्रमां पण एवां वचन छे जे 'शुकजी वृक्षमां रहीने बोल्या हता' माटे मोटा जे सत्पुरुष होय अथवा जे परमेश्वर होय ते ज्यां इच्छा आवे त्यां प्रवेश करेछे, माटे ते परमेश्वरे पोतानी आज्ञाए करीने जे मूर्ति पूजवा आपी होय ते मूर्ति अष्टप्रकारनी कहीछे तेमां पोते साक्षात् प्रवेश करीने विराजमान रहेछे ते मूर्तिने जे भगवाननो भक्त पूजतो होय त्यारे 'जेम प्रत्यक्ष भगवान् विराजता होय अने तेनी मर्यादा राखे' तेम ते मूर्तिनीपण राखी जोइए अने तेमज संतना हृदयमां भगवाननी मूर्ति रहीछे ते संतनी पण मर्यादा राखी जोइए, तेवो ए भक्त लेशमात्र राखतो नथी अने मूर्तिने तो चित्रामणनी अथवा पापाणादिकनी जाणेछे अने संतने बीजा माणस जेवा जाणेछे. अने भगवाने तो श्रीमुखे एम कह्युंछे जे 'मारी अष्टप्रकारनी जे प्रतिमा तथा जे संत तेनेविषे हुं अखंड निवास करीने रहुंछुं' अने ए भक्ततो भगवाननी प्रतिमा आगळ तथा संत आगळ गमे तेटलां फेलफतुर करेछे पण लेशमात्र भगवाननो डर राखतो नथी एने भगवाननो निश्चय छे के नथी ?" ए प्रश्न छे, त्यारे परमहंस बोल्या जे, ज्यारे ए भगवानने अंतर्यामी जाणीने मर्यादा नथी राखतो तो एने भगवाननो निश्चयज नथी.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "एने निश्चय तो नथी अने उपरथी पाखंड जेवी भक्ति करेछे त्यारे एनुं कल्याण थशे के नहि थाय ?"

१ "पुनेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदु" आ श्लोकथी भागवतमा कह्युंछे।

पछी संत बोल्या जे, एनुं कल्याण नहि थाय, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने भगवाननी मूर्तिनेविषे नास्तिकपणुं आवे अने संतने विषे नास्तिकपणुं आवे तेने एटलेज नहि रहे एनेतो जेनुं भजन स्मरण करेछे एवा जे प्रत्यक्ष भगवान् तेनेविषे पण नास्तिकपणुं आवशे अने ए भगवाननां जे गोलोक ब्रह्मपुर आदिक धाम छे तेनेविषे पण नास्तिकपणुं आवशे अने जगतनी जे उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय तेने पण काळे करीने ने मायाये करीने ने कर्मे करीने मानशे पण परमेश्वरवते करीने नहि माने एवो पाको नास्तिक थशे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "ए नास्तिकपणानो हेतु ते कोइ पूर्वनुं कर्म छे के कोइ कुसंग छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, नास्तिकपणाना हेतु तो नास्तिकना ग्रंथ सांभळवा एज छे अने नास्तिकना ग्रंथनेविषे जेने प्रतीति होय तेनो जे संग तेपण नास्तिकपणानो हेतु छे. अने वळी काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, मान अने ईर्ष्या एपण नास्तिकपणाना हेतु छे, केमजे ए मांयलो एके स्वभाव वर्ततो होय त्यारे नारद सनकादिक जेवा साधु वात करे तोयपण मनाय नहि. अने ए नास्तिकपणुं मटे क्यारे तो ज्यारे श्रीमद्भागवत जेवा आस्तिक ग्रंथनेविषे कही जे जगतनी उत्पत्ति स्थिति प्रलयरूप एवी भगवाननी लीला तेने सांभळे तथा भगवाननुं अने संतनुं माहात्म्य समझे त्यारे एनुं नास्तिकपणुं जाय अने आस्तिकपणुं आवे । इति वचनामृतम् ॥६८॥

संवत् १८७६ ना चैत्र शुदि १२ द्वादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने

पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीवासुदेवनारायणनी संध्या आरती थइ रही ते पछी नारायणधुन्य करीने पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "धर्म ते केनुं नाम छे एनो शास्त्रनी रीते करीने उत्तर करो? अने जे हिंसक राजा हता तेपण शरणे आव्यो होय तेने मारता नहि अने मारवा पण देता नहि, माटे शरणे आव्यो जे जीव तेने मार्यानुं जेम पाप छे तेम बीजाने मार्यानुं पाप छे के नथी?" पछी एनो उत्तर जेम जेने भास्यो तेम तेणे करवा मांड्यो पण श्रीजिमहाराजे आशंका करी एटले कोइथी उत्तर थयो नहि, पछी मुनि सर्वे बोल्या जे हे महाराज! अमे एज तमने प्रश्न पुछीए छीए जे, यज्ञादिकनेविषे पशुहिंसा सहित धर्म कह्योछे अने अहिंसारूप पण धर्म कह्योछे माटे ए जेम यथार्थ होय तेम कहो? पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे. हिंसायुक्त जे धर्म छे तेतो धर्म, अर्थ अने कामपर छे, तेपण हिंसाना संकोचने अर्थे कह्योछे अने अहिंसामय जे धर्म छे ते मोक्षपरायण छे अने ए साधुनो धर्म छे अने हिंसामय जे धर्म छे तेतो रागप्राप्त छे पण कल्याणने अर्थे नथी अने जे अहिंसा रूप धर्म छे तेतो केवळ कल्याणने अर्थे छे, माटे गृहस्थ अथवा त्यागी ए सर्वेने अहिंसारूप जे धर्म तेज कल्याणने अर्थे कह्योछे, जेम राजा उपरिचरवसु राज्यमां हता तोयपण अहिंसाधर्मनेविषे रह्या हता, ते माटे साधुने तो मन कर्म वचने करीने कोइनुं भुंडं वांचवुं नहि. अने कोइ वातनो अहंकार पण राखवो नहि अने सर्वना दासानुदास थइने रहेवुं अने क्रोधे युक्त जे प्रकृति तेतो दुष्टनो धर्म छे अने शांतस्वभावे वर्तवुं तेज साधुनो धर्म छे. अने कोइ कहेशे जे 'हजारो माणसने

नियममां वर्ताववा होय तेने केम साधुता ग्रहण कर्ये चाले ?' तो एनो उत्तर ए छे जे, राजा युधिष्ठिरनुं हजारो गाउमां राज्य हतुं तोयपण साधुता राखी हती अने डारा देनारा तो भीमसेन जेवा हजारो होय ते वारीए तोयपण ते कर्या विनानुं रहेवाय नहि, माटे तीखा स्वभाववाळानी तो कांइ खोट नथी एवातो घणाय होय पण साधु थवुं एज घणुं दुर्लभ छे । इति वचनामृतम् ॥ ६९ ॥

संवत् १८७६ ना चैत्र शुदि १५ पुन्यमने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमने द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने माथे हीरकोरनुं धोळुं धोतीयुं बांध्युं हतुं ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने हस्तकमळमां तुलसीनी माळा लइने फेरवता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मोटा मोटा परमहंस मांहोमांही प्रश्न उत्तर करो तथा कोइ हरिभक्तने पुछवुं होय तो परमहंसने पुछो. त्यारे गाम रोजकाना हरिभक्त काकाभाइए नित्यानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे "अंतरने मांहीली कोरे एक कहेछे जे विषयने भोगवीए अने एक तेनी ना पाडेछे, ते ना पाडेछे ते कोण छे ने हा पाडेछे ते कोण छे?" त्यारे नित्यानंदस्वामीए कह्युं जे ना पाडेछे ते जीव छे ने हा पाडेछे ते मन छे, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए जे,[1] आ आपण छीए ते जे दिवसथी समझणा थया अने माबापनी

[1] जीवने ज्यांसुधि ज्ञानप्राप्ति थइ नथी त्यांसुधि मनना संबन्धे रहित थतो नथी, मनपण जीवना संबन्ध विना रही शक्तुं नथी, जेम तुष अने तंडुलनो संबन्ध नित्य छे,

ओळखाण पडी ते दिवसथी मावापे निश्चय कराव्यो जे "आ तारी मा ने आ तारो वाप ने आ तारो काको ने आ तारो भाई ने आ तारो मामो ने आ तारी बेंन ने आ तारी मामी ने आ तारी काकी ने आ तारी माशी ने आ तारी भेंश ने आ तारी गाय ने आ तारो घोडो ने आ तारुं लुगडुं ने आ तारुं घर ने आ तारी मेडी ने आ तारुं खेतर ने आ तारां घरेणां" इत्यादिक जे कुसंगीना शब्द ते आ जीवनी बुद्धिमां रह्याछे, ते केवी रीते रह्याछे तो जेम कोइक स्त्रियो भरत भरेछे तेमां काचनो कटको होयछे तेम भरतने ठेकाणे बुद्धि छे अने काचना कटकाने ठेकाणे ते जीव छे ते बुद्धिमां ए कुसंगीना शब्द ने तेनां रूप ते पंच विषये सहित रह्यांछे अने ते जीवने पछी सत्संग थयो त्यारे संते परमेश्वरना महिमानी ने विषय खंडननी ने जगत् मिथ्यानी वार्ता करी ते संतनी वार्ता ने ते संतनां रूप तेपण ए जीवनी बुद्धिमां रह्यांछे ते ए बे लश्कर छे ने सामसामां उभां छे 'जेम कुरुक्षेत्रनेविषे कौरव ने पांडवनां लश्कर सामसामां उभां हतां ने परस्पर तीर ने बरछी ने बंधुक ने तोप ने जंजाळोनी लडाइ थती हती अने कोइक तरवारे लडता हता ने कोइक गदाए लडता हता ने कोइक बथोबथ लडता हता ने तेमां कोइनुं माथुं उडी गयुं ने कोइनी साथळ कपाइ

तेम ते बन्नेनो सबन्ध नित्य छे तो हवे तेमनो पृथक्भाव स्वीकारीने "मन विषयोने भोगवे छे अने जीव भोगवतो नथी" एम कहेवु ते अशास्त्रीय होवाथी अयुक्त छे, माटे नित्यानंदमुनिए करेला उत्तरने अयथार्थ जाणीने पोते श्रीहरिज उत्तर करेछे ।

१ 'आ तारो पिता नथी, आ तारी माता नथी, आ तारुं गृह नथी, आ तारुं धन नथी, तु तो नित्यसिद्ध ज्ञानस्वरुप आत्मा छुं अने भगवाननो दास छुं' इत्यादिक वार्ता ।

गइ एम कचरघाण उडतो हतो' तेम आ जीवना अंतःकरणमां पण जे कुसंगीनां रूप छे ते पंच विषयरूपी शस्त्र वांधीने उभां छे अने वळी जे आ संतनां रूप छे तेपण 'भगवान् सत्य ने जगत् मिथ्या ने विषय खोटा' एवा जे शब्द तेरूपी शस्त्र बांधीने उभा छे अने ए बेने परस्पर शब्दनी लडाइ थायछे ते ज्यारे कुसंगीनुं बळ थायछे त्यारे विषय भोगव्यानी इच्छा थइ आवेछे ने ज्यारे आ संतनुं बळ थायछे त्यारे विषय भोगव्यानी इच्छा नथी थती. एम परस्पर अंतःकरणमां लडाइ थायछे ते जेम "यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम" ए श्लोकमां कह्युं जे "ज्यां योगेश्वर एवा जे श्रीकृष्णभगवान् छे अने धनुपना धरतल अर्जुन छे त्यांज लक्ष्मी छे, विजय छे, ऐश्वर्य छे अने अचळ नीति छे" तेम जेनी कोरे आ संतमंडळ छे तेनोज जय थशे एम निश्चय राखवो.

त्यारे वळी ते काकाभाइए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! ए संतनुं बळ वधे ने कुसंगीनुं बळ घटे तेनो शो उपाय छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, अंतरमां जे कुसंगी रह्या छे ने बहार रह्या छे ते बे एक छे अने वळी अंतरमां संत रह्याछे ने बहार रह्याछे ते बे एक छे पण जे अंतरमां कुसंगी छे तेनुं बहारना कुसंगीने पोषणे करीने बळ वधेछे अने अंतरमां जे संत छे तेनुं पण बहारना जे संत छे तेने पोषणे[1] करीने बळ वधेछे, माटे बहारना कुसंगीनो संग न करे ने बहारना जे संत छे तेनोज संग राखे तो कुसंगीनुं बळ घटी जाय ने संतनुं बळ वधे एम छे, एम श्रीजिमहाराजे कह्युं.

१ बहारना सन्तो जे जे प्रकारे प्रसन्न थाय तेम तेम करवुं तेज अंतरना सन्तोनुं पोषण कर्युं छे ।

त्यारे वळी काकाभाइए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज ! एकनेतो कुसंगीनी लडाइ आळशी गइ छे ने संतनुंज बळ छे एक एवो छे अने एकनेतो एमने एम लडाइ थती रहेछे ते ए बेमां जेने लडाइ आळशी गइ छे ते मरे त्यारे तेने भगवानना धामनी प्राप्ति थाय तेमां तो कांइ संशय नथी पण जेने लडाइ एम ने एम थायछे ते मरे तेनी शी गति थाय ते कहो?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम एक लडवा निसर्यो तेने आगळ वाणिया के गरीब वर्ण आव्या तेने जीती गयो तेपण जीत्योजतो अने एकतो लडवा निसर्यो तेने आगळ आरबनी बेरख आवी तथा रजपुत आव्या तथा काठी तथा कोळी आव्या तेनेतो जितवा कठणज छे पण कांइ ए वाणियानी पेठे तरत जिताइ जाय एवा नथी माटे एतो एमने एम लडेछे अने तेमां जो जित्यो तो जित्यो अने जो लडते लडते शत्रुनो हठाव्यो तो न हट्यो पण देहनो आयुष आवी रह्यो अने मृत्युने पाम्यो तोपण जे एनो धणी छे ते शुं नहि जाणे ? जे 'एने आगळ आवां करडां माणस आव्यां हतां ते नहि जिताय अने आनी आगळतो वाणिया आव्या हता ते जिताय एवा हता' एम ए बेय धणीनी नजरमां होय, तेम एनी भगवान् सहाय करे जे 'आने आवा संकल्पविकल्पनुं बळ छे अने लडाइ लेछे माटे एने शाबाश छे' एम जाणीने भगवान् एनी सहाय करेछे माटे बेफिकर रहेवुं कांइ चिंता राखवी नहि भगवानने एमने एम भज्या करवुं ने संतनो समागम अधिक राखवो ने कुसंगीथी छेटे रहेवुं, एम प्रसन्न थइने श्रीजिमहाराज बोलता हवा.

त्यारे गाम जसकावाळा जीवाभाइए नित्यानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननो अडग निश्चय केम थाय?" त्यारे नित्यानंदस्वामी

बोल्या जे, कुसंगीथकी छेटे रहीए अने संतनो समागम अतिशय राखीए तो ते संतनी वाते करीने भगवाननो अडग निश्चय थाय अने जो कुसंगीनो संग करीए तो अडग निश्चय न थाय। त्यारे वळी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे एनो उत्तर करीए जे,[1] भगवाननो निश्चय करवो ते एकलो पोताना जीवना कल्याणनेज अर्थे करवो पण कोइक पदार्थनी इच्छाए करीने न करवो जे 'हुं सत्संग करुं तो मारो देह मांदो छे ते साजो थाय अथवा वांझियो छुं ते दिकरो आवे के दिकरा मरी मरी जायछे ते जीवता रहे के निर्धन छुं ते धनवान् थउं के गामगरास गयोछे ते सत्संग करीए तो पाछो आवे' एवी जातनी जे पदार्थनी इच्छा ते राखीने सत्संग न करवो. अने जो एवी जातनी इच्छा राखीने सत्संग करे अने ए पदार्थनी इच्छा पुरी थाय तो अतिशय पाको सत्संगी थइ जाय अने जो इच्छा पुरी न थाय तो निश्चय घटी जाय, माटे सत्संग करवो ते पोते पोताना जीवना कल्याणनेज अर्थे करवो पण कोइ पदार्थनी इच्छा तो राखवीज नहि, कांजे घरमां दश माणस होइए अने ते दशेनुं मृत्यु आव्युं होय तेमांथी एकजण जो उगरे तो शुं थोडो छे ? के हाथमां रामपत्तर आववानुं होय अने रोटला खावा मळे तो शुं थोडा छे ? सर्वे जनारुं हतुं तेमांथी एटलुं रह्युं तेतो घणुं छे एम मानवुं, एम अतिशय दुःख थवानुं होय तो तेमांथी परमेश्वरनो

१ कुसंगथी छेटे रहेतां अने सत्समागम करतां पण कोइ कामनाथी करेलो भगवाननो निश्चय, ते कामना न सिद्ध थाय तो समूळो लय थइ जतो देखायछे, माटे 'पोताना मोक्षमाटेज निश्चय करवो' एम हेतु बताव्यो नथी तेथी प्रश्ननो उत्तर यथार्थ न थयो एम जाणीने श्रीहरि पोतेज ते प्रश्ननो उत्तर कहेछे। पोताना मोक्षमाटेज करेलो निश्चय नित्यानंदमुनिए कहेला साधनथी सुस्थिर थायछे, कोइ कामनाने उद्देशीने करेलो निश्चयतो सुस्थिर थतो नथी, आटलो उत्तरनो आशय छे।

आशरो करीए तो थोडुंक ओछुं थाय खरुं पण ए जीवने एम समझातुं नथी. अने जो सुळी लखी होय तो कांटेथी टळी जाय एटलो तो फेर पडेछे, त्यां एक वार्ता छे जे एक गाममां चोर बहु रहेता तेमांथी एक चोर साधुने पासे बेसवा आवतो हतो तेने मार्गनेविषे पगमां कांटो वाग्यो ते पगमां सोंसरो निकळ्यो तेणे करीने पग सुंण्यो ते चोरीए न जवाणुं अने बीजा चोरतो चोरी करवा गया ते एक राजानो खजिनो फाडीने घणुंक धन लइ आव्या अने सौए मांहोमांहि वहेंची लीधुं ते पैसा बहु आव्या, तेने सांभळीने जे चोर साधु पासे आवतो हतो ने कांटो लाग्यो हतो तेनां मा बाप स्त्री अने सगां सर्वे वढवा लाग्यां जे 'तुं चोरी करवा न गयो अने साधु पासे गयो ते आपणुं भूंडुं थयुं ने ते चोर चोरी करीने लाव्या तो केटलाय पैसा एमने आव्या' एम वार्ता करेछे त्यां राजानुं लश्कर आव्युं ते ते सर्वे चोरने झालीने सुळीए दीधा तेने भेळे एने पण झालीने सुळीए देवा सारु लइ गया त्यारे ते सर्वे गामने माणसे तथा साधुए साख पुरी जे 'आ तो चोरी करवा नोतो गयो एने तो कांटो वाग्यो हतो' त्यारे ते उगर्यो, एम सत्संग करेछे तेने सुळी जेटलुं दुःख होय तो कांटे मटेछे, कांजे अमे रामानंदस्वामी पासे मागी लीधुं छे जे 'तमारा सत्संगी होय तेने एक विंछिनुं दुःख थवानुं होय तो ते मने एक एक रुंवाडे कोटि कोटि विंछिनुं दुःख थाओ पण तमारा सत्संगीने ते थाओ नहि अने तमारा सत्संगीने प्रारब्धमां रामपत्तर लख्युं होय ते रामपत्तर मने आवे पण तमारा सत्संगी अन्न वस्त्रे करीने दुःखी न थाय ए बे वर मने आपो' एम में रामानंदस्वामी पासे माग्युं त्यारे मने रामानंदस्वामीए राजी थइने ए वर आप्योछे, माटे जे कोइ सत्संग करेछे तेने व्यवहारे दुःख

थवानुं लख्युं होय ते थाय नहि, तोयपण पदार्थ नाशवंत छे माटे ए पदार्थनी इच्छाए सत्संग करे तो एने निश्चयमां संशय थया विना रहेज नहि, माटे सत्संग करवो तेतो एकलो निष्कामपणे पोताना जीवना कल्याणनेज अर्थे करवो तो अडग निश्चय थाय, इत्यादिक घणीक वार्ता तो करीछे पण आतो दिशमात्र लखी छे। इति वचनामृतम् ॥ ७० ॥

संवत् १८७६ ना चैत्र वदी ४ चतुर्थीने दिवस सांझने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार मेडीनी आगळ ओटा उपर ढोलीयो ढळावीने विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने मुक्तानंदस्वामी आदिक साधु वाजित्र वजाडीने कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे हवे कीर्तनभक्तिनी समाप्ति करीने मांहोमांही प्रश्न उत्तर करो, पछी सोमले खाचरे प्रश्न पुछ्यो जे "भगवान् पोताना भक्तना सर्वे अपराध माफ करेछे पण एवो कयो अपराध छे जे भगवान् माफ न करे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, बीजा सर्वे अपराध माफ करेछे पण भगवानना भक्तनो द्रोह करे ए अपराधने भगवान् माफ नथी करता, माटे भगवानना भक्तनो कोइ प्रकारे द्रोह करवो नहि. अने वळी भगवानना सर्वे अपराधथकी जे भगवानना आकारनुं खंडन करवुं ए मोटो अपराध छे ते माटे ए अपराधतो क्यारेयपण करवो नहि अने ए अपराध करेतो एने पंच महापाप करतांपण अधिक पाप लागेछे. अने भगवानतो सदा

साकार मूर्ति छे तेने जे निराकार समझवा एज भगवानना आकारनुं खंडन कर्युं कहेवायछे अने पुरुषोत्तम एवा जे भगवान् ते जेते कोटि सूर्य चंद्र सरखुं तेजोमय एवुं पोतानुं अक्षरधाम तेनेविषे सदा दिव्याकारथका विराजमान छे अने ब्रह्मरूप एवा जे अनंत कोटि मुक्त तेमणे सेव्यां छे चरणकमळ जेनां एवा छे अने परब्रह्म पुरुषोत्तम एवा जे ए भगवान् तेज पोते कृपाए करीने जीवना कल्याणने अर्थे पृथ्वीनेविषे प्रकट थायछे त्यारे जे जे तत्त्वनो अंगीकार करेछे ते सर्वे तत्त्व ब्रह्मरूप छे, कांजे रामकृष्णादिक अवतारनेविषे स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह तथा जाग्रत स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था ते जणायछे तथा दश इंद्रियो पंच प्राण इत्यादिक सर्वे तत्त्व मनुष्यनी पेठे जणायछे पण ए सर्वे ब्रह्म छे पण मायिक नथी, ते माटे ए भगवानना आकारनुं खंडन क्यारेयपण न करवुं.

पछी मातरेधाधले प्रश्न पुछ्यो जे "ईर्ष्यानुं शुं रूप छे?". त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेनी उपर जेने ईर्ष्या होय तेनुं रुडुं थाय त्यारे तेथी खमाय नहि अने तेनुं भूंडुं थाय त्यारे राजी थाय ए ईर्ष्यानुं लक्षण छे.

पछी श्रीजिमहाराजे मुनि प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननी प्रत्यक्ष मूर्तिनो निश्चय होय अने भजन करतो होय ने सत्संगना नियम प्रमाणे वर्ततो होय अने तेनुं कल्याण थाय एतो सत्संगनी रीति छे पण शास्त्रमां कल्याणनी केम रीति छे, अने वेदनो अर्थतो अतिकठण

१ भूत इन्द्रियो विगेरे। २ दिव्यरूप। ३ दिव्य। "न भूतसंघसंस्थानो देहोऽस्य परमात्मनः" "न तस्य प्राकृता मूर्तिर्मांसमेदोऽस्थिसंभवा" "प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय" इत्यादि वचनोथी परमात्मानो देह प्राकृत नथी परंतु दिव्य अप्राकृत छे, एम प्रतिपादन कर्युं छे।

छे माटे तेनी कथा थती नथी अने श्रीमद्भागवत पुराण अने भारत एमां वेदनोज अर्थ छे ने सुगम छे माटे तेनी जगतमां कथा थायछे, माटे शास्त्रनी रीते करीने कल्याण थतुं होय तेम कहो ? अने शंकराचार्येतो निराकारपणे भगवाननुं प्रतिपादन कर्युंछे अने रामानुजादिक जे आचार्य तेमणेतो साकारपणे भगवाननुं प्रतिपादन कर्युंछे माटे एवी रीते शास्त्रनो मत लइने उत्तर करो ?" पछी मुनिए शास्त्रनी रीते निराकारनो पक्ष खोटो करीने साकार भगवानने भजने करीने कल्याण छे एवी रीते प्रतिपादन कर्युं पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे अमे पण एज पक्षनुं ग्रहण करीए छीए पण तेमां तमने एक प्रश्न पुछीए छीए जे "निराकार एवुं जे अक्षरब्रह्म तेथी पर ने सदा साकार एवा जे पुरुषोत्तम भगवान् ते पृथ्वी उपर प्रकट मळ्या ते केडे ब्रह्मपुर तथा गोलोक वैकुंठ श्वेतद्वीप ए आदिक जे भगवाननां धाम ते धामने देखवानी जेने लालच रहे त्यारे एने निश्चय छे के नथी ?" पछी मुनि बोल्या जे, भगवान् मळ्या पछी जेना मनमां एम रहेतुं होय जे 'ज्यारे अक्षरादिक धाम देखीशुं अथवा कोटि कोटि सूर्यनो प्रकाश देखीशुं त्यारे आपणुं कल्याण थयुं' एवी समझणवाळाने तो यथार्थ भगवाननो निश्चय नथी. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एणे ब्रह्मपुरादिक धामने तथा ब्रह्मस्वरूपने देख्वानी लालच राखी ए ते शुं एणे पाप कर्युं जे निश्चयनी ना पाडोछो ? पछी मुनि बोल्या जे, जेणे प्रत्यक्ष प्रमाण भगवानने दर्शने करीने कल्याण मान्युं होय ते ब्रह्मपुर गोलोक आदिक जे धाम छे तेपण भगवाननांज छे माटे तेनी पण अरुचि शा सारु राखे ? पण भगवान् विना एने इच्छे नहि. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "ते धाम ने ते धामनेविषे रह्या जे पार्षद तेतो चैतन्य मूर्ति छे ने माया

पर छे माटे एमां शुं दूषण छे जे एने इच्छे नहि ? अने भगवान् पृथ्वी उपर प्रकट विराजता होय ने त्यां जे सेवक होय तेपण मरी जाय एवा होय अने घर होय तेपण पडी जाय एवां होय ते केम समझोछो ?" पछी मुनि बोल्या जे, ए घरनेतो अमे ब्रह्मपुरादिक धाम समझीए छीए ने ए सेवकनेतो अमे ब्रह्मरूप समझीए छीए. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "ब्रह्मपुर ने ब्रह्मपुरनेविषे रह्या जे भगवानना पार्षद तेतो अखंड छे ने अविनाशी छे तेने मर्त्यलोकनां नाशवंत एवां जे घर ने पार्षद ते वे बरोबर केम कहोछो ?" पछी नित्यानंदस्वामी बोल्या जे हे महाराज ! एनो उत्तरतो तमे करो. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवान् जीवना कल्याणने अर्थे ज्यारे मूर्ति धारण करेछे त्यारे पोतानुं जे अक्षरधाम अने चैतन्यमूर्ति एवा जे पार्षद अने पोतानां जे सर्वे ऐश्वर्य ते सहितज पधारेछे पण ए बीजाना देख्यामां आवे नहि अने ज्यारे कोइक भक्तने समाधिनेविषे अलौकिक दृष्टि थायछे त्यारे तेने भगवाननी मूर्तिनेविषे कोटिकोटिसूर्यना सरखो प्रकाश भासेछे अने अनंत कोटि जे मुक्त तेपण मूर्ति भेळा भासेछे अने अक्षरधाम पण ए भगवाननी मूर्ति भेळुंज भासेछे, माटे ए सर्वे भगवान् भेळुं छे तोयपण भगवान् ते मनुष्य जे पोताना भक्त होय तेनींज सेवाने अंगीकार करेछे अने ते पोताना भक्तनां गार्य माटी ने पाणानां जे घर तेनेविषे विराजमान रहेछे अने ते भक्त धूप दीप अन्न वस्त्रादिक जे जे अर्पण करेछे तेने भगवान् प्रीतिए करीने अंगीकार करेछे, ते ए मनुष्य सेवक छे तेने दिव्यरूप पार्षद भेळा भेळववा वास्ते करेछे अने

१ "अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्। प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया" एम गीतामां कह्युं छे।

जे भक्तजन जेजे वस्तु भगवानने अर्पण करेछे तेते वस्तु भगवानना धामनेविषे दिव्यरूप थायछे अने ए भक्त दिव्यरूप थइने तेने पामेछे माटे एवुं अचळ अखंड सुख भक्तजनने पमाडवाने अर्थे भगवान् जेते मनुष्य एवा जे पोताना भक्तजन तेनी सर्वे सेवाने अंगीकार करेछे. माटे भगवानना भक्तने भगवानुं स्वरूप अक्षरधाम सहित पृथ्वी उपर विराजमान छे एम समजवुं अने बीजा आगळ पण एवी रीते वार्ता करवी । इति वचनामृतम् ॥ ७१ ॥

संवत् १८७६ ना चैत्र वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरने समीपे उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर उगमणे मुखारविंदे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! काल्यने दिवस तमे दादाखाचर आगळ बहु रुडी वार्ता करी हती ते वार्ता सांभळवानी अमारे सर्वेने घणी इच्छा छे," पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे भगवानना भक्तने भगवाननो निश्चय माहात्म्ये सहित होय ने संतनुं ने सत्संगीनुं माहात्म्य घणुं जाणतो होय ने ते भक्तनुं जो कर्म कठण होय ने काळपण कठण होय तोपण ते भक्तने एवी भक्तिनुं अतिशय बळ छे ते काळ ने कर्म ए बेय मळीने तेनुं भूंडुं करी शकता नथी. अने जेने भगवान् ने भगवानना संतनेविषे जो निष्ठामां कांइक फेर होय तो तेनुं भगवान् रुडुं करवाने इच्छे तोयपण रुडुं थतुं नथी.

१ सत्सगमायी शिथिलतारूप अशुभ । २ देश काळादिक शुभ सतेपण ।

अने जे गरीबने कलपावे तेनुं तो कोइ रीते रुडुंज थाय नहि अने महाभारतमां भीष्म पिताए राजा युधिष्ठिरने एम कह्युंछे जे, 'जो तुं गरीबने कलपाविश तो तुं तारा वंशे सहित बळीने भस थइ जइश' माटे भगवाननो भक्त होय अथवा कोइ बीजो होय पण गरीबमात्रने लेशमात्र दुःखववो नहि अने जो गरीबने दुःखवे तो तेनुं कोइ प्रकारे सारुं थाय नहि अने जो गरीबने दुःखवे तो ब्रह्महत्या जेटलुं पाप थायछे. अने तेमज कोइकने माथे जुठुं कलंक देवुं तेपण ब्रह्महत्या जेवुंज छे अने जो साचुं कलंक होय तोपण तेने एकांते तेडीने तेनुं रुडुं थाय एम कहेवुं पण तेने फजेत करवो नहि. अने तेमज पांच प्रकारनी जे स्त्रीयो छे तेनो जो धर्म भंग करावे तो तेनेपण ब्रह्महत्यानुं पाप लागेछे, ते पांच प्रकारनी स्त्रीयो केई तो—एकतो पोताने शरणे[1] आवी होय अने बीजी ते पोतानी स्त्री होय अने व्रत उपवासने दिवसे पोतानो संग करवा न इच्छती होय अने त्रीजी ते पतिव्रता होय अने चोथी ते विधवा स्त्री अने पांचमी ते विश्वासी[2] स्त्री, ए पांच प्रकारनी स्त्रीयोने संघाथे जो व्यभिचार करे तो तेने ब्रह्महत्यानुं पाप लागेछे, तेमां जे विधवा स्त्री छे तेनुं जो मन कुमार्गनेविषे डोलतुं होय तो तेने समझावीने धर्ममां राखवी.[3]

पछी मुनि जेते भगवानना रसिक कीर्तन गावा लाग्या तेने सांभळीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवान् जीवना कल्याणने अर्थे देह

---

१ धर्मिष्ठ माता पिता अने श्वशुर पक्षीयोना अभावथी धर्मस्थितिने माटे शरणे आवेली । २ 'आ पुरुष धर्मभ्रष्ट मने नहि पाडे' एम जाणीने तेनी सहायताथी निश्चित थइने तेमां विश्वासवाळी जेनो पति परदेशमां गएलो छे एवी स्त्री । ३ आवी रीते गइकाल्ये वार्ता करी हती ।

धरेछे त्यारे मनुष्यना जेवीज सर्वे क्रिया होय तेने देखीने जे भगवानना भक्त होय तेतो चरित्र करी जांणे अने विमुख जीव होय अथवा कांचोपोचो हरिभक्त होय तेतो ते चरित्रने विषे दोष परठे, जेम शुकजीए रास पंचाध्यायीनुं वर्णन कर्युं त्यारे राजा परीक्षितने संशय थयो पछी एम पुछ्युं जे 'भगवानतो धर्मनी मर्यादा स्थापन करवाने अर्थे प्रकट थया हता तेणे परस्त्रीनो संग करीने धर्मनो भंग केम कर्यो?' एवी रीते दोष लीधो. अने शुकजीएतो समझी विचारीने भगवाननुं गुणगान कर्युं जे, कामदेवे ब्रह्मादिक देवताने जीतीने पोताने वश कर्या तेनो कामदेवने अतिशय गर्व थयो ते गर्वने उतारवाने काजे भगवाने कामदेवने पडकार्यो, ते जेम कोइ बळवान् राजा होय ते शत्रुने पोतानी गांव्यनी दारु गोळी अपावीने पछी ते साथे लडवा जाय, तेम भगवाने कामदेवरूपी शत्रुने लड्यानो सामान मोरथी आप्यो, ते शुं तोकामदेवनुं बळ ज्यारे स्त्रीनो संवन्ध होय त्यारे थाय तेमां पण शरदऋतुने विषे रात्रिमां कामदेवनुं वधु बळ थाय तथा स्त्रीना राग रंग विलासना शब्द सांभळवा तथा स्त्रीनुं रूप जोवुं स्त्रीनो स्पर्श करवो तेणेकरीने कामदेवनुं अतिशय बळ वधेछे, ए सर्वे सामान श्रीकृष्णभगवाने कामदेवने आपीने तेने जीती लीधो अने अखंड ब्रह्मचारीनी पेठे ऊर्ध्वरेता रह्या अने एवी रीते कामनो गर्व उतार्यो एवुं अलौकिक सामर्थ्य भगवान् विना बीजामां होय नहि. एवुं अति भगवाननुं सामर्थ्य जाणीने शुकजिए भगवाननां चरित्र गान कर्यां अने राजा परीक्षितने ते वात समझाणी नहि त्यारे दोष परठ्यो, माटे कोइक एम कहे जे 'तमे परमहंस थइने रसिक कीर्तन केम गाओछो?' तो तेने

१ पोते एकांतिकभक्तपणामां अपक्व हतो तेथी।

एम कहेवुं जे 'जो अमे रसिक कीर्तन न गाइए अने भगवानना रसिक चरित्रने विषे दोष परठिए तो अमेपण राजा परीक्षित् तथा बीजा जे नास्तिक विमुख जीव तेनी पंक्तिमां भळीए माटे अमारे तो विमुखनी पंक्तिमां भळवुं नथी, शामाटे जे परमहंसमात्रना गुरु जे शुकजि तेणे भगवानना रसिक चरित्र गायांछे माटे अमारे पण जरुर गाववां' अने क्षर अक्षरथी पर एवा जे पुरुषोत्तम भगवान् छे ते ज्यारे जीवना कल्याणने अर्थे ब्रह्मांडने विषे मनुष्य जेवी मूर्ति करीने विचरेछे त्यारे सर्वे मनुष्यना जेवांज चरित्र करेछे अने जेम मनुष्यने विषे हारवुं, जीतवुं, भय, शोक, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा, ईर्ष्या इत्यादिक मायिक स्वभाव होय तेवाज स्वभाव भगवान् पण पोतामां देखाडेछे ते सर्वे जीवना कल्याणने अर्थे छे, पछी जे भक्त होय तेतो ए चरित्रने गाइने परमपदने पामेछे अने जे विमुख होय ते दोष परठेछे. अने ए भगवानतो जेम क्षरना आत्मा छे तेमज प्रकृति पुरुषथकी पर जे अक्षरब्रह्म तेनापण आत्मा छे अने क्षर अक्षर ए बेयने पोतानी शक्तिए करीने धरी रह्याछे अने पोतेतो क्षर अक्षरथी न्यारा छे. अने भगवाननी मोटाइ तो एवी छे जे 'जेना एक एक रोमना छिद्रने विषे अनंत कोटि ब्रह्मांड परमाणुनी पेठे रह्यांछे' एवा जे मोटा भगवान् ते जीवना कल्याणने वास्ते मनुष्य जेवडाज थायछे त्यारे जीवने सेवा कर्यानो योग आवेछे अने जो भगवान् जेवडा छे तेवडा ने तेवडा रहे तो ब्रह्मादिक जे ब्रह्मांडना अधिपति देव तेनेपण दर्शन कर्यानुं के सेवा कर्यानुं सामर्थ्य रहे नहि तो मनुष्यने तो रहेज क्यांथी? अने जेम वडवानळ अग्नि छे ते समुद्रना जळने विषे रह्योछे अने समुद्रना जळने पिवेछे ने समुद्रनो ओलाव्यो ओलातो नथी एवो मोटो छे ते

अग्नि ज्यारे आपणे घरमां दिवो जोइतो होय त्यारे आवीने आपणा घरमां बेसे तो आपणने दिवा जेवुं सुख थाय नहि अने वळीने सर्वे भस्म थइ जइए अने तेज अग्नि दिवारूपे होय तो अजवाळुं करे ने आनंद थाय अने ते दिवो छेतो तेनो तेज अग्नि; पण फुंकिए तथा हाथे करीने ओलावीए तो ओलाइ जाय एवो असमर्थ छे तोपण ते थकीज आपणने सुख थाय पण वडवानळ अग्निथी सुख न थाय, तेमज भगवान् मनुष्य जेवा असमर्थ जणाता होय पण अनेक जीवनुं कल्याण ए थकीज थाय पण जेना एक एक रोममां अनंत कोटि ब्रह्मांड रह्यांछे एवी मूर्तिनुं तो जीव दर्शन करवा पण समर्थ थाय नहि माटे एवे रूपे करीने कल्याण न थाय, ते माटे भगवान् मनुष्य जेवी मूर्ति धारीने जेवां जेवां चरित्र करेछे ते सर्वे गान करवा योग्य छे, पण एम न समझवुं जे 'भगवान् थइने एम शुं करता हशे ?' अने भगवाननां चरित्र तो सर्वे कल्याणकारिज समझवां एज भक्तनो धर्म छे अने एवुं समझे तेज भगवाननो पुरो भक्त कहेवायछे.

पछी रोजकाना हरिभक्त काकाभाइए पुछ्युं जे "जेने माहात्म्य विनानो एकलो भगवाननो निश्चय होय तेनां शां लक्षण छे? अने जेने महात्म्ये सहित निश्चय होय तेनां शां लक्षण छे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने एकलो निश्चय होय तेने एम घाट थाय जे 'भगवान् तो मळ्या छे पण शुं जाणीए कल्याण तो थशे के नहि थाय?' अने जेने माहात्म्ये सहित निश्चय होय तेने तो एम समझाय जे 'जे दिवसे भगवाननुं दर्शन थयुं ते दिवसथीज कल्याण तो थइ रह्युं छे अने जे जीव भावे करीने मारुं दर्शन करे तथा मारुं वचन माने तेनुं पण कल्याण थइ जाय तो मारे कल्याणनो श्यो संशय छे ? हुंतो कृतार्थ

छुं अने जे कांइ साधन करुंछुं तेतो भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे करुंछुं एम समझे तेने भगवाननो माहात्म्ये सहित निश्चय जाणवो.

पछी वळी काकाभाइए पुछ्युं जे "उत्तम, मध्यम अने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारना जे भगवानना भक्त तेनां शां लक्षण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे भक्त पोताने देहथकी जुदो जे आत्मा तेरूप माने अने देहना गुण जे जड, दुःख, मिथ्या, अपवित्रपणुं इत्यादिक छे ते आत्मानेविषे माने नहि अने अछेद्य, अभेद्य, अविनाशि इत्यादिक जे आत्माना गुण ते देहने विषे माने नहि अने पोताना शरीरने विषे रह्यो जे जीवात्मा तेने देखे अने ते आत्मानेविषे रह्या जे परमात्मा तेनेपण देखे अने बीजाना देहमां जे आत्मा रह्योछे तेनेपण देखे. अने एवो समर्थ थयोछे तोपण ए आत्मदर्शनथकी भगवान् अने भगवानना संत तेने अधिक जाणेछे पण पोताने आत्मदर्शन थयुंछे तेनुं अभिमान लेशमात्र न होय, एवां जेनां लक्षण छे ते उत्तम भक्त कहेवाय। हवे जेने भगवाननो निश्चय होय अने आत्मनिष्ठा पण होय तोपण भगवानना भक्त उपर ईर्ष्या आवे अने जो भगवान् एनुं अपमान करे तो भगवान् उपर पण ईर्ष्या आवे जे 'मोटा थइने वगर वांके आम शिद करता हशे' एवां लक्षण होय ते मध्यम भक्त जाणवो। अने भगवाननो निश्चय तो होय पण आत्मनिष्ठा न होय अने भगवानने विषे प्रीति होय अने जगतना व्यवहारने विषे पण प्रीति होय अने सांसारिक व्यवहारने विषे हर्ष शोकने पामतो होय तेने कनिष्ठ भक्त जाणवो। इति वचनामृतम् ॥ ७२ ॥

संवत १८७६ ना चैत्र वदी अमासने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोता-

नां उताराने विषे उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने श्वेत चादर ओढी हती तथा श्वेत फेंटो मस्तक उपर बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुक्तानंदस्वामी आदिक मोटेरा साधु चार तथा पचासने आशरे हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी गोपाळानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "कामनुं शुं रूप छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वीर्य एज कामनुं रूप छे, पछी आशंका करी जे "वीर्यतो सात धातु मांहिलो धातु छे[1] माटे एज कामनुं रूप केम कहेवाय? अने ते वीर्यनी उत्पत्ति शाणे करीने छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मनोवहा नामे नाडीनेविषे मन रह्युंछे ते मननेविषे ज्यारे स्त्रीसंबन्धी संकल्प थायछे त्यारे जेम दही होय ते रवाइए करीने मथाय त्यारे घी होय ते सर्व उपर तरी आवेछे, तेम स्त्रीसंबन्धी संकल्पे करीने वीर्य जे ते शरीरमांथी मथाइने मनोवहा नाडीनेविषे भेळुं थइने शिश्नद्वारे आवेछे अने जेने वीर्य शिश्नद्वारे न आवे ते ऊर्ध्वरेता पुरुष कहेवाय अने ते नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहेवाय अने श्रीकृष्णभगवाने रासक्रीडानेविषे स्त्रीयोनो संग करीने पण वीर्यपात थवा दीधो नहि तेमाटे ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी कहेवाणा ने कामने जील्यो. माटे वीर्य तेज कामनुं रूप छे, जेणे वीर्यने जीतीने वश राख्युं तेणे कामने जील्यो.

पछी वळी गोपाळानंदस्वामीए पुछ्युं जे "ज्यारे ए देहने बाळी देछे त्यारे सप्तधातु देह भेळा बळी जायछे माटे जो वीर्यज कामनुं रूप होय तो देह भेळे वीर्यने बळवे करीने कामपण बळी गयो जोइए, त्यारे ए जीव बीजा देहमां जायछे त्यारे कामना केम उदय

१ ते अन्नरसथी उत्पन्न थायछे।

थायछे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सूक्ष्मदेह भेळुं वीर्य रहे-छे ते सूक्ष्म देहने योगे करीने स्थूळदेह उदय थइ आवेछे, जेम भूत होय ते सूक्ष्म देह प्रधान होय पछी सूक्ष्मदेहमांथी स्थूळदेहने धरीने स्त्रीनो संग करेछे अने ते स्त्रीने भूतथकी बाळक उत्पन्न थायछे, माटे सूक्ष्मदेह भेळुंज वीर्य रहेछे.

पछी वळी गोपाळानंदस्वामीए पुछ्युं जे "शिवजी ऊर्ध्वरेता हता पण मोहिनीरूपने जोइने वीर्यपात थयो, तेम जेना देहमां वीर्य होय अने तेने जाग्रतमां अथवा स्वप्नमां स्त्रीनो योग थाय त्यारे वीर्यपात थया विना रहे नहि, माटे ज्यांसुधी देहमां वीर्य होय त्यांसुधी नि-ष्कामी केम कहेवाय ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, शिवजीने पण एटली योगकळामां खोट कहेवायछे अने जेने जाग्रत् अथवा स्वप्नने योगे करीने स्त्रीना संकल्पथकी वीर्यपात थाय तो तेने पाको ब्रह्मचारी कहेवाय नहि, माटे आ संसारमां दृढ ब्रह्मचर्यवाळातो एक नरनारायण ऋषि छे अने ते नरनारायणनो आपणे आश्रय छे तेना प्रतापथकी धीरे धीरे ए नरनारायणनुं भजन करीने आपणेपण ए सरखाज निष्कामी थइशुं. अने देहमां जे वीर्य रहेछे तेने बाळी नाखवाने अर्थे योगी केटलाक प्रकारनुं जतन करेछे अने श्रीकृष्ण-भगवाने स्त्रीयोने संगे रहीने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य राख्युं ते एवुं सामर्थ्यतो भगवानमांज होय पण बीजाथी एम रहेवाय नहि, माटे बीजा योगीनेतो जाग्रतमां अथवा स्वप्नमां स्त्रीनो संकल्प न थाय एवुं जतन करवुं.

पछी शुकमुनिए पुछ्युं जे "द्वारिकामां सोळ हजार एकसो ने आठ जे भगवाननी स्त्रीयो हती तेमां एक एक स्त्रीनेविषे दश दश पुत्र अने एक एक पुत्री थइ एमपण कह्युंछे तेनुं केम समझवुं ?"

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, द्वारिकानी वात बीजी छे अने व्रजनी बीजी छे, द्वारिकामां तो भगवान् सांख्यमतने आश्रयी हता. ते सांख्यमतवाळो होय ते देह इंद्रियो मन ए सर्वथकी पोतानुं स्वरूप भिन्न समझे अने सर्व क्रियाने करतो थको पोताने अकर्ता समझे ने ते क्रियाए करीने हर्ष शोकने पामे नहि, ए मतने भगवान् आश्रयी हता माटे भगवानने निर्लेप कह्या अने भगवान् द्वारिकामां जे सांख्यमतने आश्रयी हता ते मततो जनक जेवा राजाओनो छे, जे राजा गृहस्थाश्रममां रहीने प्रभुने भजे तेज सांख्यमतने अनुसरे एम भगवान् पण गृहस्थाश्रममां हता अने द्वारिकाना राजा कहेवाता हता माटे सांख्यमतने अनुसर्या थका एम निर्लेप हता. अने वृंदावनने विषे तो योगकळाने आश्रयी हता ते स्त्रीयोनो संग करीनेपण नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत राख्युं, ए ठेकाणे तो पोताने विषे नरनारायण ऋषिपणुं देखाड्युं, ते श्रीमद्भागवतमां कपिलदेवे देवहूती प्रत्ये कह्युं छे जे 'स्त्रीरूप जे मारी माया तेने जीतवाने अर्थे नरनारायण ऋषि विना बीजो कोइ समर्थ नथी' माटे श्रीकृष्णभगवाने स्त्रीयोने संगे रहीने कामने जीत्यो. अने[1] ज्यारे दुर्वासा ऋषि आव्या त्यारे भगवाने सर्वे गोपीयोने अन्नना थाळ भरावीने मोकलवा मांडी त्यारे गोपीयो बोली जे 'अमे यमुनाजी केम उतरीशुं ?' पछी श्रीकृष्णभगवाने कह्युं जे 'यमुनाजीने एम कहेज्यो जे 'जो श्रीकृष्ण सदा बाळब्रह्मचारी होय तो अमने माग देज्यो''पछी गोपीयोए एम कह्युं त्यारे यमुनाजीए माग दीधो, पछी सर्वे गोपीयो ऋषिने जमाडीने बोलीयो जे 'अमारे आडां यमुनाजी छे ते अमे घेर केम करीने जइशुं ?' पछी ऋषिए कह्युं जे 'केम करीने आव्यां हतां' पछी गोपीयोए कह्युं जे अमे यमुनाजीने एम कह्युं जे 'श्रीकृष्ण सदा ब्रह्मचारी

१ आ कथा गोपालतापिनी उपनिषद्मां कही छे।

होय तो माग देज्यो' एटले यमुनाजीए माग दीधो पण हवे केम करीने घेर जइए. पछी दुर्वासा ऋषि बोल्या जे यमुनाजीने एम कहेजो जे 'दुर्वासा ऋषि सदा उपवासी होय तो माग देज्यो' पछी गोपीयोए एम कह्युं त्यारे यमुनाजीए माग दीधो, त्यारे गोपीयोना मननेविषे अतिआश्चर्य थयुं पण भगवानना तथा ते ऋषिनो जे महिमा तेने न जाणी शकती हवी अने भगवानतो नैष्ठिक व्रत राखीने गोपीयोने संगे रम्या हता माटे ब्रह्मचारी हता अने दुर्वासा ऋषितो विश्वात्मा जे श्रीकृष्णभगवान् तेनेविषे पोताना आत्माने एक करीने सर्वे गोपीयोना थाळ जमी गया माटे ऋषिपण उपवासीज हता अने अन्नतो सर्वे भगवानने जमाड्युं हतुं, माटे एवा अति मोटा होय तेनी क्रिया कळ्यामां आवे नहि. अने सांख्यवाळाने खोळीए तो हजारो जडे पण योगकळाए करीने ऊर्ध्वरेता होय एवा तो एक नरनारायणज छे अथवा जे नरनारायणना अनन्य भक्त होय तेपण तेना भजनने प्रतापे करीने दृढ ब्रह्मचर्यवाळा थायछे पण बीजाथी थवातुं नथी. अने जेने इंद्रियद्वारे करीने जाग्रत् अथवा स्वप्नमां वीर्यनो पात थायछे ते ब्रह्मचारी कहेवाय नहि अने जे स्त्रीनो अष्टप्रकारे त्याग राखेछे तेतो ब्रह्मचर्यने मार्गे चाल्योछे ते हवे नरनारायणने प्रतापे करीने धीरे धीरे दृढ ब्रह्मचारी थशे. अने ज्यारे अमे नाना हता त्यारे एम सांभळ्युं हतुं जे 'वीर्यतो परशेवाद्वारे करीने पण निकळी जायछे' पछी ते वीर्यने ऊर्ध्व राखवाने सारु अमे बे प्रकारनी जळबस्ति[१] शिख्या हता अने

१ नाभिसुधी जळमा उभा रहीने गुदाद्वारा जळनुं आकर्षण करीने बस्तिने ('नाभिथी नीचला प्रदेशने) धोइ नाखीने त्याग करे एटले गुदाथी आकर्षण करेला जळने गुदाथीज बहार काढे. ते एक बस्ति कह्यो छे । लिंगथी जळने आकर्षण करीने फरीथी लिंगथीज बहार काढे अथवा गुदाथी बहार काढे ते बीजो बस्ति कह्यो छे ।

कुंजरक्रिया शिख्या हता अने कामने जीत्या सारु केटलाक आसन शिख्या हता अने रात्रिए सुता त्यारे गोरखं आसन करीने सुता जेणे करीने स्वप्नमांपण वीर्यनो पात थवा पामे नहि, पछी ते काम जीत्यानुं एवुं साधन कर्युं जे 'शरीरमांथी परशेवोज नीकळे नहि अने टाढ तडको पण लागे नहि' पछी अमे रामानंदस्वामी पासे आव्या. त्यारे स्वामीए परशेवो वळ्या सारु बधे शरीरे आचळना पाटा बंधाव्या हता तोपण शरीरमां परशेवो आव्यो नहि, माटे काम जीत्यानुं साधनतो सौथी घणुं कठण छे एतो जेने भगवानना स्वरूपनी उपासनानुं दृढ बळ होय अने अतिशय पंच विषयमांथी निर्वासनिक थयो होय अने ते निर्वासनिकपणानी अतिशय गांठ बंधाणी होय तो ते पुरुष भगवानने प्रतापे करीने निष्कामी थायछे.

पछी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "निर्वासनिक थयानुं कारण ते आवी वात सांभळवी ते छे के वैराग्य छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वैराग्यतो एकलो टकी शके नहि अंते जतो नाश थइ जायछे. अने ज्यारे आत्मनिष्ठा होय अने भगवाननी मूर्तिनुं यथार्थ ज्ञान होय पछी एम विचारे जे 'हुं तो आत्मा छुं सचिदानंदरूप छुं अने पिंड ब्रह्मांड तो मायिक छे ने नाशवंत छे माटे हुं क्यां? ने ए पिंड ब्रह्मांड क्यां? अने मारा इष्टदेव जे पुरुषोत्तम भगवान् तेतो अनंत कोटी ब्रह्मांडना आधार जे अक्षर ते थकीपण पर छे ते भग-

१ प्रथम मुखथी जळपान करीने फरीथी ते जळने मुखथीज वमन करवु ते गजकरणी क्रिया कही छे। २ भद्रासननेज गोरक्षासन कहे छे। वृषणनी नीचे सीवनी (लिंगनी नीचेनुं सूत्र) ना बे पार्श्वभागमा गुल्फाने राखे तेमां वामगुल्फाने सीवनीना वामभागमां अने दक्षिणगुल्फाने सीवनीना दक्षिणभागमा राखे अने सीवनीना पार्श्वभागना समीपमां राखेला बे पादने बे हाथथी (पश्चिम करीने लोम विलोम करेला) ग्रहणकरे, आ उत्तम भद्रासन कह्युं छे।

वाननो मारे दृढ आशरो थयोछे' एवां विचारमांथी जे वैराग्य उदय थाय ते वैराग्य ज्ञाने युक्त कहेवाय ने ए वैराग्यनो कोइ काळे नाश थाय नहि, जेम अग्नि बळतो होय तेने माथे जळ पडे तो ओलाइ जाय अने वडवानळ अग्नि समुद्रनेविषे छे ते जळनो ओलाव्यो ओलातो नथी, तेम जे ज्ञाने युक्त वैराग्य छे तेतो वडवानळ अग्नि तथा वीजळीनो अग्नि तेवो छे ते कोइ काळे ओलाय नहि अने ते विना वीजा वैराग्यनो तो विश्वास आवे नहि. अने अमारो जे वैराग्य तेतो जेवो वीजळीनो अग्नि तथा वडवानळ अग्नि ते सरखो छे ते अमारा स्वभावने तो जे अतिशय अमारे भेळा रह्या हशे ते जाणेछे अने जे छेटे रहेछे तेने अमारो स्वभाव जाण्यामां आवतो नथी अने आ मुकुंद ब्रह्मचारी छे ते भोळा जेवा जणायछे तोपण अमारा स्वभावने यथार्थ जाणेछे जे 'महाराज तो आकाश जेवा निर्लेप छे अने एमने कोइ पोतानुं पण नथी अने पारकुं पण नथी' अने एवीरीते जो अमारा स्वभावने जाणेछे तो जेवा ईश्वरमां गुण होय तेवा गुण ब्रह्मचारीमां वर्तेछे अने अंतर्यामी सौमां रह्याछे ते धाई भाइने मनमां एम समझावेछे जे 'ब्रह्मचारीमां कोइ वातनी खोट्य नथी' ते एवा रुडा गुण आव्यानुं कारण ए छे जे, मोटा पुरुषनेविषे जे निर्दोष बुद्धि राखेछे ते पोते सर्व दोषथकी रहित थायछे अने जे मोटा पुरुषनेविषे दोष परठेछे ते दोषना परठनारानी बुद्धि भ्रष्ट थइ जायछे अने कामादिक जे शत्रु ते सर्वे तेना हइयामां आवीने निवास करेछे, पछी ए सत्पुरुषनेविषे दोषबुद्धिनो परठनारो जे पुरुष तेना हइयामां भुंडा भुंडा घाट पण पीड्या करेछे अने ए सत्संग करेछे तोयपण दुःखीयो मटे नहि. अने जे बुद्धिमान् छे तेतो अमारे समीपे रहीने

१ आत्मनिष्ठा अने उपासनाना।

अमारी सर्वे प्रकृतिने जाणेछे जे 'जेटलां संसारमां मोह उपजाववानां पदार्थ धन स्त्री अलंकारादिक तथा खानपानादिक छे ते कोइमां महाराजने हेत नथी अने महाराजतो सर्वथकी उदासी छे अने कोइकने दया करीने पासे बेसवा देछे के ज्ञानवार्ता करेछे तेतो केवळ तेना जीवना कल्याणने अर्थे दया करीने करेछे' अने जे मूर्ख होय तेतो पासे रहे तोयपण अमारा स्वभावने एम न जाणे अने छेटे रहे तेपण एम न जाणे. अने आ वात समझायपण तेने, जेने आत्मनिष्ठा होय अने ते आत्मानेविषे परमेश्वरनी मूर्तिने धारीने तेनी भक्ति करतो होय अने पोते ब्रह्मरूप थइ गयो होय तोयपण भगवाननी उपासनानो त्याग करे नहि माटे आत्मनिष्ठा अने भगवाननी मूर्तिनो महिमा समझ्याथकी कोइ पदार्थनेविषे वासना रहेती नथी अने वासना टळ्या पछी जेवुं पोताना देहनुं प्रारब्ध होय तेवा सुख दुःखने भोगवे खरो पण इंद्रियोनी तीक्ष्णता मटी जायछे. अने मनोमय चक्रनी जे धारा तेतो इंद्रियो छे ते ज्यारे ब्रह्म अने तेथी पर जे परब्रह्म तेनुं साक्षात् दर्शन थायछे त्यारे बुठियो थइ जायछे, पछी जेम कोइ पुरुषे लिंबु चुश्यां होय ने दांत अतिशय अंबाइ गया होय ने पछी तेने चणा चाववा पडे त्यारे तेथी कोइ रीते चवाय नहि अने अतिशय भूख्यो थयो होय तो ते चणाने गळी जाय पण चवाय नहि, तेम जेणे आत्मानो ने भगवाननो यथार्थ महिमा जाण्योछे तेने कोइ लोकना विषयसुखनेविषे आनंद थाय नहि अने देहनुं प्रारब्ध होय त्यांसुधी खानपानादिक सर्वे भोग भोगवे खरो पण जेम दांत अंबाइ गया होय ने चणा आखा गळी जाय एम भोगवे. अने वासना टळवी एपण काम अतिशय भारे छे, वासनातो समाधिनिष्ठ थाय तोपण रही जायछे. अने समाधि थया केडेतो ब्रह्मनां स्वरूपमांथी

देहमां कोइ रीते अवातुं नथी अने जो अवायछे तो तेना त्रण हेतु छे, तेमां एकतो जो कांइ संसारना सुखनी वासना होय तो समाधिमांथी पाछो देहमां आवे अने कांतो अतिसमर्थ होय ते समाधिमां जाय ने पोतानी इच्छाए पाछो देहमां आवे अने कांतो कोइक पोतायकी अतिसमर्थ होय ते पाछो समाधिमांथी देहमां लावे ए त्रण प्रकारे समाधिमांथी पाछो देहमां आवेछे. अने ज्यारे समाधि थायछे अने तेमां ब्रह्मनुं दर्शन थायछे त्यारे कोटि कोटि सूर्य सरखो ब्रह्मनो प्रकाश देखीने जो थोडी समझण होय तो प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवाननी जे मूर्ति छे तेनेविषे न्यूनपणुं समझे अने ब्रह्ममां अधिकपणुं मानी ले एटले उपासनानो भंग थयो. माटे प्रत्यक्ष मूर्तिनेविषे अतिदृढ निश्चय थयो जोइए तो सर्वे काम सरे अने अमेपण एम दृढ निश्चय कर्योछे जे 'कोइ अमने साचो थइने मन अर्पे अने लेशमात्र अंतराय राखे नहि तो तेमां अमे कोइ वातनी कसर रहेवा दइए नहि.'

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जेणे मन दीधुं होय तेनां केवां लक्षण होय अने मन न दीधुं होय तेनां केवां लक्षण होय ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेणे मन अर्पण कर्युं होय तेने जो परमेश्वरनी वात थती होय तथा परमेश्वरनां दर्शन थतां होय अने ते समे जो पोते न होय तो तेनी अतिशय पोताना हैयामां दाझ(दुःख) थाय अने ज्यारे भगवाननी वात सांभळे ,तथा भगवाननां दर्शन करे तेनेविषे अधिक अधिक प्रीति थती जाय पण तेमांथी मन पाछुं हठे नहि. अने परमेश्वर ज्यारे कोइकने परदेश मुक्यानी आज्ञा करता होय त्यारे जेणे मन अर्प्युं होय तेना मनमां एम थाय जे 'जो मने आज्ञा करे तो बरानपुर तथा काशी ज्यां मुके त्यां राजीथको जउं' एवी रीते परमेश्वरना गमवामां रहीने जे राजी रहेतो होय तेतो

हजार गाउ गयो होय तोय अमारे पासे छे अने जेणे एवी रीते मन न अर्प्युं होय अने ते अतिशय अमारे समीपे रहेतो होय तोय लाखो गाउ छेटे छे अने जेणे अमने मन न अर्प्युं होय तेनेतो उपदेश करतां पण बीक लागे जे शुं जाणीए सवळुं समझशे के अवळुं समझशे, एवी रीते मन अर्प्युं होय ने न अर्प्युं होय तेनां लक्षण छे। इति वचनामृतम् ॥ ७३ ॥

संवत् १८७६ ना वैशाख शुदी ११ एकादशीने दिवस सवारमां स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लींबडाना वृक्षनी हेठे ओटा उपर ढोलीयो बिछाव्यो हतो ते उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने जेटलो वैराग्य होय अने जेने जेटली समझण होय तेतो ज्यारे कोइक विषयभोगनी प्राप्ति थाय अथवा ज्यारे कोइक आपत्काळ आवी पडे त्यारे कळाय पण ते विना कळाय नहि, अने झाझी संपत् के आपत् आवे एनी वात शी कहेवी? पण आ दादाखाचरने थोडुंज आपत्काळ जेवुं आव्युं हतुं तेमां पण जेनुं अंतःकरण जेवुं हशे तेवुं सौने जणाणुं हशे, पछी मुक्तानंदस्वामी बोल्या जे, भगवानना भक्तनो पक्षतो हइयामां रहेछे खरो तेपण समझीने रहेछे जे, जो सत्संगनुं उत्कृष्टपणुं होय तो घणा जीवोने समास थाय अने ज्यारे कांइ सत्संगनुं अपमान जेवुं होय त्यारे कोइ जीवने समास थाय नहि एटला माटे हर्ष शोक जेवुं थइ आवेछे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आपणतो श्रीकृष्णनारायणना दास छीए ते श्रीकृष्णनारायणने जेम गमे तेम राजी रहेवुं अने ए श्रीकृष्णभ-

गवाननी इच्छा हशे तो सत्संगनी वृद्धि थशे ने जो एमने घटाडवो हशे तो घटी जशे. अने ए भगवान् आपणने हाथीए बेसारे तो हाथीए बेसीने राजी रहेवुं अने गधेडे बेसारे तो गधेडे बेसीने राजी रहेवुं अने ए भगवानना चरणारविंद विना बीजे क्यांइ प्रीति राखवी नहि अने ए भगवाननी इच्छाए करीने जेवी रीते सत्संगनी वृद्धि थती जाय तेवी रीते राजी रहेवुं, पछी ए भगवाननी इच्छा होय तो वधुं जगत् सत्संगी थाओ अथवा एनी इच्छाए करीने सर्वे सत्संगी मटी जाओ पण कोइ रीते हर्ष शोक मनमां धारवो नहि, ए भगवानतुं कर्युं सर्वे थायछे माटे सुकुं पानडुं जेम वायुने आधारे फरेछे तेम ए भगवानने आधीन रहीने आनंदमां ए परमेश्वरतुं भजन करवुं अने कोइ जातनो मनमां उद्वेग आववा देवो नहि।

इति वचनामृतम् ॥ ७४ ॥

संवत् १८७६ ना वैशाख वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ लींबडाना वृक्ष हेठे ढोलीया उपर विराजमान हता अने पीळा पुष्पना हार कंठनेविषे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी सुराखाचरे प्रश्न पुछ्यो जे "जेना कुळमां भगवाननो एक भक्त थाय तो तेनां एकोत्तर[१] परियां उद्धरेछे" एम कह्युंछे अने तेना

१ एकोत्तर शब्दथी एकोत्तर शत १०१ अथवा एकोत्तर विंशति २१ कहेवानो अभिप्राय छे। दश पूर्वना अने दश पछीना अने एक पोते एम मळीने एकविंश कुळनो उद्धार थायछे, एम स्मृतिमा कह्युछे। पितानां २४, मातानां २०, भार्यानां १६ भगिनीनां १२ दुहितानां ११ फोइनां १० मासीनां ८ एम सात गोत्रनां मळीने एकसो अने एक कुळनो उद्धार थायछे एम पण कह्युंछे। उपर कहेलां माता पिता विगेरेनां कुळमां अर्धां पूर्वनां अने अर्धां पछीनां जाणवां। २ कुळ।

गोत्रमां केटलाकतो संतना ने भगवानना द्वेषी पण होय त्यारे तेनो केवी रीते उद्धार छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम कर्दम ऋपिनो देवहूतिए पतिबुद्धिए करीने प्रसंग कर्यो हतो तोपण कर्दम ऋपिनेविपे स्नेह हतो तो एनो उद्धार थयो अने मांधाता राजानी दिकरीयो पचास ते सौभरी ऋपिनुं रूप जोइने वरीयो तेने कामनाए करीने सौभरीनेविपे हेत हतुं तो ते सर्वेनुं कल्याण ऋपिना जेवुं थयुं माटे जेना कुळमां भक्त थयो होय अने तेना कुटुंबी सर्व एम माने जे 'आपणुं मोटुं भाग्य छे जे आपणा कुळमां भगवाननो भक्त थयोछे' एवी रीते भक्तनुं माहात्म्य समझीने हेत राखे तो ते सर्व कुटुंबिनुं कल्याण थाय अने मरीने पित्रि जे स्वर्गमां गया होय तेपण जो एम जाणे जे 'आपणा कुळमां भगवाननो भक्त थयो ते आपणुं मोटुं भाग्य छे' एम समझीने भगवानना भक्तमां हेत राखे तो ते पित्रिनुंपण कल्याण थाय अने जे भगवानना भक्त संघाथे वैरबुद्धि राखे तेनुंतो कल्याण न थाय अने जेमजेम वैर करतो जाय तेमतेम तेनी बुद्धि भ्रष्ट थती जाय अने हेद मुके त्यारे पंच महापापना करनारा जे नरकना कुंडमां पडे तेपण तेज कुंडमां पडेछे, ते माटे भगवानना भक्तमां जेने हेत होय तो संबन्धी होय अथवा बीजो कोइ होय ते सर्वेनुं कल्याण थायछे.

पछी नाजे भक्ते प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननो भक्त होय ते एकतो दृढ निश्चयवाळो होय अने एकतो थोडा निश्चयवाळो होय अने उपरथी तो बेय सारा देखाता होय ते बे केम ओळख्यामां आवे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने आत्माना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान होय अने दृढ वैराग्य होय अने भक्ति ने स्वधर्म पण परिपूर्ण होय तेनो निश्चय परिपूर्ण जाणवो अने एमांथी जो एके चाजुं ओछुं होय तो निश्चय

छे तोपण माहात्म्य विनानो छे अने ए चार वानां संपूर्ण होय ते माहात्म्य सहित भगवाननो निश्चय जाणवो । इति वचनामृतम् ॥७६॥

संवत् १८७६ ना प्रथम ज्येष्ठ शुदी ११ एकादशीने दिवस श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज पोताना उतारानेविषे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मोटामोटा साधु केटलाक बेठाहता.

तेमनी आगळ श्रीजिमहाराजे वार्ता करी जे, क्रोधी, ईर्ष्यावाळो, कपटी अने मानी ए चार प्रकारना जे मनुष्य ते जो हरिभक्त होय तोपण ते साथे अमारे बने नहि अने क्रोध ने ईर्ष्या ए बेय मानने आश्चरे रहेछे अने कामीनो तो अमारे कोई काळे विश्वासज नथी जे 'ए सत्संगी छे' अने कामीतो सत्संगमां होय तोय विमुख जेवो छे. अने जेने पंच वर्तमानमां कोइ वाते खोट्य न होय अने गमे तेवा वचनना भीडामां लइए अने एवुं गमतुं मुकावीने अमारा गमतामां राखीए तोपण कोइ रीते देहपर्यंत मुंझाय नहि एवो होय ते पाको सत्संगी छेअने एवा हरिभक्त उपर अमारे वगर कर्युं सहजेज हेत थायछे अने एवा गुण न होय तो हेत करवा जाइए तोय पण हेत थाय नहि अने अमारी तो एज प्रकृति छे जे जेना हृदयमां भगवानननी एवी परिपूर्ण भक्ति होय ते उपरज हेत थायछे । इति वचनामृतम् ॥ ७६ ॥

संवत् १८७६ ना द्वितीय ज्येष्ठ वदी ३० अमावास्याने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदीर आगळ आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने मुनि मांहोमांहि प्रश्न उत्तर करता हता पछी एक मुनिए अणसमझणे करीने भगवानना निश्चयनुं बळ लइने धर्मने खोटा जेवा करवा मांड्या, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवानना ज्ञाननी ओथ[1] लइने जे धर्मने खोटा करी नाखे तेने असुर जाणवो अने भगवानना स्वरूपमां तो एवा कल्याणकारी अनंत गुण रह्याछे ते श्रीमद्भागवतनेविषे प्रथमस्कंधमां पृथ्वीए धर्म प्रत्ये कह्याछे[2] माटे जेने भगवाननो आशरो होय तेमांतो भगवानना कल्याणकारी गुण आवेछे अने जेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय होय तेमां एकादश-स्कंधमां कह्यां एवां जे साधुनां त्रिंश[3] लक्षण ते आवेछे माटे जेमां त्रिंश लक्षण संतनां न होय तेने पुरो साधु न जाणवो अने जेने

---

१ ओथ्य–आश्रय–वा बळ। २ ६२ ना वचनामृतमां ते गुणो कह्याछे। ३ "कृपालुर-कृतद्रोहस्तितिक्षुः सर्वदेहिनाम् । सत्यसारोऽनवद्यात्मा समः सर्वोपकारकः ॥ कामैरहत-धीर्दान्तो मृदुः शुचिरकिंचनः । अनीहो मितभुक् शान्तः स्थिरो मच्छरणो मुनिः ॥ अप्रमत्तो गभीरात्मा धृतिमान् जितषड्गुणः । अमानी मानदः कल्यो मैत्रः कारुणिकः कविः ॥ आज्ञायैवं गुणान् दोषान् मयादिष्टानपि स्वकान् । धर्मान् सन्त्यज्य यः सर्वान् मा भजेत स सत्तमः ॥ ज्ञात्वाज्ञात्वाऽथ ये वै मा यावान् यश्चास्मि यादृशः । भजन्त्यन-न्यभावेन ते मे भक्ततमा मताः ॥" कृपालु–स्वार्थनी अपेक्षा विना पारकुं दुःख न सहन थाय ते अथवा परदुःख टाळवानी इच्छावाळो । सर्वदेहिनां अकृतद्रोह–सर्वदेहिओमां मित्रादिभाव छे माटे कोइनोपण द्रोह नहि करनारो । तितिक्षु–द्वन्द्वने सहन करनारो । सत्यसार–सत्य तेज सार (बळ) जेने छे । अनवद्यात्मा–द्वेष असूया आदि दोषथी रहित आत्मा (मन) जेनुं छे । सम–स्वपरमां समदृष्टिवाळो । सर्वोपकारक–सर्वने उपकारज करनारो । कामैरहतधी–विषयभोगथी बुद्धिमा क्षोभ नहि पामनारो । दान्त–जेनां इन्द्रियो नियममा छे । मृदु–मृदु चित्तवाळो । शुचि–बाह्य अने आन्तर शौचवाळो । तेमां स्नानादिजन्य शौच ते बाह्य शौच अने विष्णुचिंतनजन्य शौच ते आन्तर शौच कह्युं छे । अकिञ्चन–अन्यप्रयोजने रहित ।

भगवाननो निश्चय होय तेना हृदयामांतो प्रभुना कल्याणकारी गुण जरुर आवे. अने ज्यारे प्रभुना गुण संतमां आवे त्यारे ते साधु त्रिश लक्षणे युक्त होय, माटे आजथी जे कोइ पंच वर्तमानरूप जे धर्म तेने मुकीने ज्ञाननुं के भक्तिनुं बळ लेशे ते गुरुद्रोही वचनद्रोही छे अने एवी धर्मभंग वात जे कोइ करतो होय तेने विमुख कहेवो अने एम कहेवुं जे 'तमे तो असुरनो पक्ष लीधो छे ते अमे नहि मानीए' एम कहीने ते अधर्मीनी वातने खोटी करी नाखवी.

पछी संते प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! कोइक भगवाननो अति दृढ भक्त होय ने देह मुकवा टाणे तेने पीडा थइ आवेछे अने बोल्यानुं पण कांइ ठेकाणुं रहेतुं नथी अने कोइकतो कांइ पाको हरिभक्त ज-

---

अनीह–लौकिकव्यापारे रहित अथवा दृष्टादृष्ट फळनी इच्छाए रहित । **मितभुक्**–मिताहार करनारो । **शान्त**–अन्तःकरण जेनुं नियममां छे । **स्थिर**–स्थिर चित्तवाळो । **मच्छरण**–हुंज शरण (रक्षिता अने प्राप्तिनो उपाय) जेने छे । **मुनि**–शुभाश्रयनुं मनन करनारो । **अप्रमत्त**–सावधान । **गभीरात्मा**–जेनो अभिप्राय जाणी शकाय नहि ते । **धृतिमान्**–आपत्काळमां धैर्यवाळो । **जितषड्गुण**–छ गुणो (अशना पिपासा शोक मोह जरा मृत्यु) जेणे जित्या छे । **अमानी**–पोताना देहना सत्कारनी अभिलाषा नहि राखनारो । **मानद**–बीजाओने मान आपनारो । **कल्प**–हितोपदेश करवामां समर्थ । **मैत्र**–कोइने ठगनारो नहि । **कारुणिक**–करुणाथीज प्रवर्तनारो पण स्वार्थ लोभथी नहि । '**कवि**–चित् अचित् अने ईश्वर ए त्रण तत्त्वोने यथार्थ जाणनारो । में वेदद्वारा उपदेश करेला गुणदोषोने जाणीने, पोताना सर्व धर्मोने फळद्वारा त्याग करीने, जे मने उपायोपेयभावथी भजे ते उत्तम साधु जाणवो । वळी हुं जेवा स्वरूपवाळो छुं, जेवा स्वभाववाळो छुं, अने जेटली विभूतिवाळो छुं तेवी रीते जाणी जाणीने एटले वारंवार विचार करीने अनन्यभावथी जे भजेछे तेज उत्तम भक्त मान्या छे ॥" एवी रीते साधुनां त्रिश लक्षण कह्यां छे ।

णातो न होय ने ते देह मुकवाने समे तो अतिसमर्थ जणायछे ने अतिशय भगवानना प्रतापने जाणीने ने भगवाननो महिमा मुखे कहीने सुखीयो थको देह मुकेछे एनुं शुं कारण छे जे सारो होय तेनुं अंतसमे सारुं न देखाय ने जेवो तेवो होय तेनुं अंतसमे सारुं देखायछे एनुं कारण कहो?" ए प्रश्न छे. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे[1], देश, काळ, क्रिया, संग, ध्यान, मंत्र, दीक्षा अने शास्त्र ए आठ जेवां होय तेवी पुरुषनी मति थायछे, ते जो सारा होय तो सारी मति थायछे अने भूंडा होय तो भूंडी मति थायछे अने पुरुषना हृदयने विषे परमेश्वरनी मायाना प्रेर्या थका चारे युगना धर्म वाराफरती वर्तता होय ते जो अंतसमे सत्ययुगनो धर्म आवी जाय तो मृत्यु बहु शोभी उठे अने त्रेता ने द्वापरनो धर्म आवे तो तेथी थोडुं शोभे अने कळीनो धर्म मृत्युसमे आवे तो अतिशय भूंडुं देखाय, एम अंतसमे सारुं नरसुं तेतो काळे करीने छे अथवा जाग्रत् स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था छे तेमां जो अंत समे जाग्रत् अवस्था वर्तती होय तो पापी होय तेपण बोलतां चालतां देह मुकेछे अने अंतसमे स्वप्न अवस्था वर्तती होय तो झंख्यां जेवुं कांइने कांइ बोलतो थको भगवाननो भक्त होय तोपण देह मुके अने अंतसमे सुषुप्ति अवस्था प्रधान वर्ते तो भगवाननो भक्त होय अथवा विमुख होय तोपण घेनमांने घेनमां रहीने देह मुके पण सारुं के नरसुं कांइ बोलाय नहि अने अंतकाळे ए त्रण अवस्थाथकी पर अने ब्रह्मरूप एवो पोताना

---

१ तेनां बे कारण छे-एक काळ अने बीजी अवस्था, ते बन्ने शुभ अने अशुभ छे, तेमां शुभ काळ अने अवस्था अन्तसमये वर्ते तो मृत्यु शोभेछे अने अशुभ वर्ते तो शोभे नहि, आगळ गतिमातो शुभाशुभ काळ अने अवस्था हेतु नथी तेमा तो पोतानुं धर्मानुष्टान हेतु छे आटलो उत्तरार्थ छे तेने विस्तारथी स्पष्टपणे कहेछे ।

जीवात्माने साक्षात्कार मानतो थको जे देह मुके तेतो जेवी ईश्वरने सामर्थि होय तेवी सामर्थि जणावीने देह मुकेछे अने एम ब्रह्मरूप थइने ने सामर्थि जणावीने देह मुकवो ते भगवानना भक्तनेज थाय छे पण बीजा विमुख जीवने एम थायज नहि, एवी रीते काळे करीने अंतसमे सारुं नरसुं जणायछे. अथवा अवस्थाओने योगे करीने सारुं नरसुं जणायछे. अने विमुख होय ने तेने अंतकाळे जाग्रत् अवस्था वर्तती होय ने बोलतो बोलतो देह मुके तेणे करीने कांइ तेनुं कल्याण थतुं नथी, विमुखतो सारी रीते देह मुके अथवा भूंडी रीते देह मुके पण नरकेज जाय अने भगवाननो भक्त होय ते बोलतो बोलतो देह मुके अथवा झंख्या जेवुं बोलीने देह मुके अथवा शून्यमान रहीने देह मुके पण तेनुं कल्याणज छे पण एमां कांइ संशय नथी एम भगवानना भक्तने जाणवुं. अने भगवाननो भक्त होय तेने अंतसमे स्वभादिकने योगे करीने उपरथी पीडा जेवुं जणातुं होय पण एने अंतरमां तो भगवानने प्रतापे करीने अति आनंद वर्ततो होय माटे नकी हरिभक्त होय ने अंतसमे लावांझंखां करतो थको देह मुके पण एना कल्याणमां लेशमात्र संशय राखवो नहि। इति वचनामृतम् ॥ ७७ ॥

संवत् १८७७ ना आषाढ शुदी २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ आथमणे बारणे ओरडानी ओसरीए विराजमान हता ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती ने मस्तक उपर श्वेत पाघ विराजमान हती ने कंठनेविषे श्वेत पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सर्वे संत सांभळो एक प्रश्न पुछीए छीए, पछी संते कह्युं जे पुछो महाराज, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "देश, काळ, क्रिया, संग, मंत्र, देवतानुं ध्यान, दीक्षा अने शास्त्र ए आठ सारां होय तो पुरुषनी बुद्धि निर्मळ थायछे अने ए आठ भूंडां होय तो पुरुषनी बुद्धि भ्रष्ट थायछे माटे ए आठेमां पूर्वसंस्कार कर्मनुं कांइ जोर छे के नथी?" पछी मुनि बोल्या जे पूर्वकर्मनुं जोर जणायछे तो खरुं, जो सारां पूर्वकर्म होय तो पवित्र देशनेविषे जन्म आवे ने भूंडां पूर्वकर्म होय तो भूंडा देशनेविषे जन्म आवे, तेमज काळादिक सात छे तेमांथी पण जेवां पूर्वकर्म होय तेवानो योग बनेछे, माटे सर्वेमां पूर्वकर्मनुं प्रधानपणुं जणायछे अने देशकाळादिक जे आठ तेनुं तो कोइक ठेकाणे प्रधानपणुं होय ने पूर्वकर्मनुं तो सर्वे ठेकाणे प्रधानपणुं छे. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, देशकाळथी लइने देवता जे परमेश्वर त्यांपर्यंत सर्वेनेविषे पूर्वकर्मने प्रधान कहोछो ते कया शास्त्रने मते कहोछो तेनुं कोइ वचन भणी देखाडो? अने एक कर्मनुंज प्रधानपणुं तो जैनना शास्त्रमां छे पण बीजामां नथी, बीजा शास्त्रमां तो परमेश्वर अने परमेश्वरना भक्तनो संग तेनुंज प्रधानपणुं छे, माटे तमे केवळ पूर्वकर्मनुं प्रतिपादन करोछो ते उपरथी सत्संगी छो ने छाना नास्तिक छो के शुं? केमजे नास्तिक विना बीजो तो कोइ कर्मनुं प्रतिपादन करतो नथी. अने नास्तिकतो वेद, शास्त्र, पुराण अने इतिहास जे भारतादिक तेने खोटा जाणेछे ने पोताना मागधि भाषाना जे ग्रंथ तेनेज साचा मानेछे माटे मूर्ख थका कर्मनुं प्रतिपादन करेछे. अने जो पूर्वकर्मे करीने देशादिक आठ फरता होय तो मारवाडनेविषे केटलाक पुन्यवाळा राजा थया छे तेमने अर्थे सो

हाथ उंडां पाणी हतां ते उपरछलां थयां नथी अने जो पूर्वकर्मने वश देश होय तो पुण्यकर्मवाळाने अर्थे पाणी उंचां आव्यां जोइए ने पापीने अर्थे उंडां गयां जोइए पण एमतो थतुं नथी अने मारवाड देशमांतो पापी होय अथवा पुण्यवाळो होय पण उंडां पाणी उपजे पण ते देश पोताना गुणनो त्याग करतो नथी माटे देशकाळादिकतो पूर्वकर्मना फेरव्या फरे नहि, ते माटे जे पोताना कल्याणने इच्छे तेनेतो नास्तिकनी पेठे कर्मनुं बळ राखवुं नहि अने भूंडा देशकाळादिक आठ होय तेनो त्याग करीने रुडा जे देशकाळादिक आठ तेनुं सेवन करवुं. अने देशतो वारणे पण सारो नरसो होय अने पोतानो देहरूप जे देश तेपण सारो नरसो होय ते ज्यारे देहरूप जे सारो देश तेनेविषे जीव होय त्यारे शील, संतोष, दया, धर्म इत्यादिक जे कल्याणकारी गुण ते वर्तता होय अने ज्यारे आ देहरूप जे भूंडो देश तेनेविषे जीव रह्यो होय त्यारे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर इत्यादिक भूंडा गुण वृद्धि पामेछे. अने सारो भूंडो जे संग थायछे तेनी विगती एम छे जे, जेनो संग थाय ते साथे कोइ रीते अंतर रहे नहि त्यारे तेनो संग थयो जाणवो अने उपरथी तो शत्रुने पण हइयामां घालीने मळेछे पण अंतरमां तो ते साथे लागो गउनुं छेडुं छे एवी रीते उपरथी संग होय ते संग न कहेवाय अने मन कर्म वचने करीने जे संग करे तेज संग कर्यो कहेवाय माटे एवी रीते मन कर्म वचने संगतो परमेश्वर अथवा परमेश्वरना भक्त तेनोज करवो जेथी जीवनुं कल्याण थाय पण पापीनो संगतो क्यारेय न करवो.

पछी मध्याह्न समे श्रीजिमहाराजे सर्वे नाना नाना विद्यार्थी साधुने पोताने समीपे बोलाव्या अने एम कह्युं जे 'तमे सर्वे विद्यार्थी मने प्रश्न पुछो,' पछी मोटा शिवानंदस्वामीए, पुछ्युं जे "जेने भगवाननो

अचळ निश्चय होय ते केम ओळखाय ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने अचळ निश्चय होय तेने भगवान् सारी क्रिया करे अथवा नरशी क्रिया करे ते सर्वे कल्याणकारी भासे अने भगवान् जीते अथवा हारे अथवा कोइक ठेकाणे भागे अथवा क्यारेक राजी थाय क्यारेक शोक करे इत्यादिक अनंत प्रकारनी भगवाननी क्रियाओ तेने जोइने निश्चयवाळो भक्त होय ते एम कहे जे 'प्रभुनी सर्व क्रिया कल्याणने अर्थे छे' ते ज्यारे बोले त्यारे एवुंने एवुं बोलतो होय तो तेने परिपक्व निश्चयवाळो जाणवो.

पछी निर्मानानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भगवान् अने भगवानना संत तेनेविषे दोषबुद्धि न आवे तेनो शो उपाय छे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेवो प्रथम कह्यो एवो भगवाननो[1] अचळ निश्चय होय तो तेने कोइ रीते भगवाननेविषे दोषबुद्धि आवे नहि अने एवा मोटा जे भगवान् तेना दासनो महिमा ज्यारे विचारे त्यारे भगवानना भक्तनो पण कोइ रीते अवगुण आवे नहि.

पछी निर्मानानंदस्वामी अने नाना प्रज्ञानानंदस्वामी ए बेए मळीने पुछ्युं जे "जाग्रत् स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रणे अवस्थानेविषे भगवाननी मूर्ति अखंड केम जणाय ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, पूर्वजन्मनो कोइक शुभ संस्कार[2] बलिष्ठ होय तेने भगवाननी मूर्ति त्रणे अवस्थामां अखंड देखायछे अथवां भय, काम अने स्नेह ए त्रण जेनेविषे अखंड होय तेने भगवान् विना बीजुं पदार्थ होय तेपण त्रण अवस्थामां अखंड देखायछे तो भगवान् देखाय एमां शुं कहेवुं ? एतो देखायजे.[3]

१ माहात्म्यज्ञानपूर्वक। २ पूर्वजन्ममां संपादन करेली प्रेमपूर्वक नवधा भक्तिरूपी भावना। ३ द्रौपदीने अतिस्नेहथी, गोपीयोने कामभावथी अने कंसने अतिभयथी श्रीकृष्णभगवान् त्रण अवस्थामां अखंड देखाता हता।

पछी नाना शिवानंदस्वामीए पुछ्युं जे "सत्संगनेविषे अचळ पायो जेनो होय ते केम जणाय?" एकतो ए प्रश्न छे अने बीजो प्रश्न ए छे जे "मान, काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्सर अने ईर्ष्या इत्यादिक जे शत्रु ते कये प्रकारे करीने नाश पामेछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने सत्संगनो अतिदृढ पक्ष होय ते ज्यारे कोइ सत्संगनुं घसातुं बोले त्यारे खमी शकेज नहि, जेम पोताना कुटुंबी होय ने ते साथे कचवाण थइ होय तोयपण ज्यारे तेनुं कोइ घसातुं बोले त्यारे खमाय नहि, एवी रीते जेनो देहना संबन्धीनो पक्ष छे तेवो जेने सत्संगनो पक्ष होय तेनो पायो सत्संगनेविषे अचळ छे. अने बीजा प्रश्ननो ए उत्तर छे जे,जेने एवो सत्संगनो पक्ष छे ते संत अथवा सत्संगी ते संघाथे मान, मत्सर, ईर्ष्या केम राखी शके? माटे जेने सत्संगनो पक्ष होय तेना मान, मद, मत्सर, ईर्ष्या आदिक सर्व शत्रुनो नाश थइ जायछे. अने जेने सत्संगीनो पक्ष न होय अने सत्संगी ने कुसंगीनेविषे समभाव होय तो गमे तेवो सत्संगमां मोटो कहेवातो होय पण अंते जतां जरुर विमुख थाय.

पछी नाना आत्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भगवान् अने भगवानना संत ते कोइकने तो निधडक थइने जेम कहेवुं घटे तेम कहेछे अने तेनी कोरनो एम भरुंसो आवेछे जे 'आनुं मान करीशुं अथवा तिरस्कार करीशुं तोयपण कोइ रीते ए पाछो नहि पडे' एवो जे भरुंसो ते भगवान् ने भगवानना संतने केम आवे?" एकतो ए प्रश्न छे. अने बीजो प्रश्न ए छे जे "जे संतने पासे रहेता होइए तेने जेवुं आपणा उपर हेत होय तेवुं समग्र संतने केम रहे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेवो शिवानंदस्वामीना प्रश्ननो उत्तर कर्यो छे तेवो सत्संगनो जेने दृढ पक्ष होय तो तेने कहेतां सांभळतां भगवान् ने भगवानना संतने संशय थाय नहि

अने एनो कोइ रीते कुविश्वास आवे नहि जे 'आने कहेशुं तो आ संत्संगमांथी जतो रहेशे' तेनी कोरनो तो दृढ विश्वासज होय जे 'एनो सत्संगतो अचळ छे माटे एने कहेशुं तेनी कांइ फीकर नथी' अने बीजा प्रश्ननो उत्तर ए छे जे, जेने पासे पोते प्रथम रहेतो होय अने तेने साथे पोताने न बन्युं त्यारे बीजापासे जइने रहे तोपण जेने पासे प्रथम रह्यो होय तेनुं जो कोइक घसातुं बोले तो खमी शके नहि त्यारे सर्वे संतने एम समझाय जे 'आतो कृतघ्नी नथी जेने पासे चार अक्षर भण्योछे तेनो गुण मुकतो नथी माटे बहु रुडो साधु छे' एम जाणीने सर्वे संतने हेत रहे अने जेनी पासे प्रथम रह्यो होय तेने मुकीने बीजा पासे जाय त्यारे प्रथम जेनी पासे रह्यो होय तेनी निंदा करे त्यारे सर्व संतने एम जणाय जे 'आ कृतघ्नी पुरुष छे ते ज्यारे आपणी साथे नहि बने त्यारे आपणी पण निंदा करशे' पछी ते उपर कोइने हेत रहे नहि.

पछी दहरानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भगवानतो अक्षरातीत छे अने मनवाणीथकी पर छे अने सर्वने अगोचर छे ते सर्वने प्रत्यक्ष देखायछे तेनो शो हेतु छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, अक्षरातीत ने मन वाणीथकी पर ने अगोचर एवा जे भगवान् तेज पोते कृपा करीने एम धारेछे जे 'ज्ञानी अज्ञानी एवा जे मृत्युलोकनां मनुष्य ते सर्वे मने देखो' एम धारीने सत्यसंकल्प एवा जे भगवान् ते कृपाए करीने मृत्युलोकनां सर्वे मनुष्य देखे एवा थायछे.

पछी त्यागानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भगवान् राजी केम थाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने भगवानने राजी करवा होय तेनेतो देहना सुखने इच्छवुं नहि अने दर्शननो पण लोभ राखवो नहि ने भगवान् जेम कहे तेम करवुं एज भगवानने राजी थयानुं साधन छे.

पछी लक्ष्मणानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवान् ने भगवानना संतनो जे समागम ते आश्चर्य सरखो केम समझीए त्यारे जणाय अने आठे पहोर अहो अहो सरखुं केम रहे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे भक्त एम समझे जे 'आ भगवान् ने आ संत ते सर्वे वैकुंठ, गोलोक अने ब्रह्मपुर तेना निवासी छे ते संत ने परमेश्वर ज्यां विराजमान छे त्यांज ए सर्वे धाम छे अने ए संत भेळो मारो निवास थयोछे ते मारुं अतिवडुं भाग्य छे', एवी रीते समझे तो आठे पहोर आश्चर्य सरखुं रहे अने आठे पहोर आनंदना समुद्रमां झीलतो रहे.

पछी परमात्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "संतनां एकादशस्कंधमां जे त्रिश लक्षण कह्यांछे ते शो उपाय करे तो आवे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे त्रिश लक्षणे युक्त संत होय तेनेविषे गुरुबुद्धि ने देवबुद्धि राखीने मन कर्म वचने एनो संग करे तो ए संगना करनारानेविषे पण ए त्रिश लक्षण आवेछे, एवी रीते सर्वे शास्त्रमां कह्युं छे जे 'संतने सेवे त्यारे संत सरखो थायछे'.

पछी शान्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "एकतो अखंड भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखतो होय अने बीजोतो भगवाननुं भजन स्मरण पण करे अने कथा कीर्तन पण करे ने सांभळे ए बे प्रकारना जे भगवानना भक्त तेमां कयो श्रेष्ठ छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने निर्विकल्प समाधि थती होय अने देहनी खबर रहे नहि एवो होय तो ते कथा कीर्तन न करे तोपण श्रेष्ठ छे अने जेने देहनी खबर रहेती होय ने भजनमांथी पोतानी मेळे उठीने खावुं पीवुं देहनी क्रिया ते सर्वे करतो होय अने जो भगवाननी कथा कीर्तन न करे

१ ध्यानमार्गी।

ने न सांभळे तो तेथकीतो भगवाननी कथा कीर्तन करतो होय ने सांभळतो होय ते श्रेष्ठ छे.

पछी आधारानंदस्वामीए पुछ्युं जे "केवी रीते वर्तिए तो भगवान् ने भगवानना संत प्रसन्न थाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, पंच वर्तमान संपूर्ण राखीए ने तेमां कोइ रीते खोट आववा दइए नहि तो भगवान् ने भगवानना संत प्रसन्न थायछे एमां लेशमात्र संशय नहि.

पछी वेदांतानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "जेणे प्रथम कांइक गोबरुं वर्ताणुं होय पछी ते शो उपाय करे त्यारे तेनी उपर भगवान् ने भगवानना संत राजी थाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे पोतामां भूंडो स्वभाव होय तेने देखीने भगवान् अने भगवानना संत कुराजी थता होय ते स्वभाव साथे ज्यारे वैर करीए त्यारे जेने जे साथे वैर होय तेतो सर्वे जगत् जाणे एवुं होय ते संतने पण खबर पडे पछी संततो ते स्वभावना वैरी छे ते आपणा पक्षमां भळीने अने आपणी उपर दया करे अने जे प्रकारे ते स्वभावने जीतीए एवो उपाय बतावे माटे जे स्वभावे पोताने फजेत कर्यो होय ते स्वभाव साथे सुधुं दृढ वैर बांधीने तेनुं मूळ उखडी जाय एवो उपाय करवो अने ज्यारे एवी रीते वर्तिए त्यारे भगवान् ने भगवानना संत आपण उपर पूर्ण दया करे अने ज्यारे हरिनी ने हरिजननी जे उपर दया थाय त्यारे तेने हइयामां अतिशय सुख वर्त्या करे अने कल्याणने मार्गे चालवानी पण सामर्थी वधे अने पोताना शत्रु जे काम, क्रोध, लोभादिक तेनुं बळ घटी जायछे, माटे जे पोताना हृदयनेविषे अतिशय शत्रु पीडतो होय ते साथे अतिशय वैर करीए तो तेनी परमेश्वर सहाय करेछे माटे पोताना शत्रु जे कामादिक ते साथे जरुर वैर करवुं घटेछे अने पोताना अंतःशत्रु साथे वैर कर्यामां घणोज लाभ छे.

पछी भगवदानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! जेवी भगवाननी बीक पासे बेठा होइए ने रहेछे तेवीने तेवी बीक छेटे जइए तोपण रहे ते केम समझीए तो रहे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेवी पासे भगवाननी मर्यादा रहेछे तेवी छेटे जाय तोयपण रहे जो भगवाननुं पुरुं माहात्म्य समझे तो, ते माहात्म्य एम समझवुं जे 'अक्षरातीत एवा जे पुरुषोत्तम भगवान् तेनी इच्छाए करीने अनंत कोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थायछे अने ते ब्रह्मांडने पोतानी शक्तिए करीने धरी रह्याछे अने ते भगवान् व्यतिरेक थका सर्वमां अन्वयपणे रह्याछे अने अन्वय थकापण व्यतिरेक छे अने ते भगवान् जेवा प्रत्यक्ष प्रमाणछे तेवाने तेवा अणु अणु प्रत्ये अंतर्यामिरूपे विराजमान छे अने ते भगवानना डोलाव्या विना एक तृणपण डोलवाने समर्थ नथी अने अनंत कोटि ब्रह्मांडनेविषे जे उत्पत्ति स्थिति प्रलय थायछे अने तेनेविषे सुखदुःखनो जीवोने संबन्ध थायछे ते सर्वे पुरुषोत्तमभगवानना हाथमां छे जेटलुं भगवान् करे तेटलुंज थायछे एवा जे भगवान् ते जीवोना कल्याणने अर्थे पृथ्वी उपर पधारेछे त्यारे पोते घोडे चडीने चाले त्यारे घोडो भगवानने उपाडी चालेछे पण एतो घोडाना आधार छे अने पृथ्वी उपर बेठा होय त्यारे एम जणाय जे पृथ्वी भगवानने धरी रही छे पण एतो स्थावर जंगम सहित समग्र पृथ्वीने धरी रह्याछे अने ज्यारे रात्रि होय त्यारे चंद्रमा के दीवो के मशाल तेने अजवाळे करीने भगवाननुं दर्शन थाय अने दिवसे सूर्यने अजवाळे करीने दर्शन थाय पण ए भगवानतो सूर्य चंद्रमा अग्नि ए सर्वने प्रकाशना दाता छे एवी अद्भुत सामर्थी छे तोपण जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा थइने मने दर्शन आपेछे' एवी रीते माहात्म्य समझे तो जेवी पासे रहे मर्यादा रहेछे तेवीने तेवी छेटे जाय तोयपण रहे.

पछी वळी भगवदानंदस्वामीए बीजो प्रश्न पुछ्यो जे "भगवानना कर्या विना कांइ थतुं नथी सर्वे भगवाननुंज कर्युं थायछे त्यारे भगवानने अथवा भगवानना भक्तने कांईक ज्यारे भुंडो देश काळ आवेछे त्यारे ते दुःखने केम भगवान् टाळता नथी अने तेने टाळ्याना मनसुबा केम करेछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एतो ज्यारे भगवान् मनुष्यदेह धारण करेछे त्यारे भगवाननी एवी रीतिज छे जे 'मनुष्यनी पेठे सर्वे व्यवहार करे पण अलौकिक सामर्थिने प्रगट करे नहि' एवी रीते सर्वे शास्त्रमां भगवाननां चरित्र कह्यां छे, तेथी ज्यारे भगवान् कांइक नवां चरित्र करे त्यारे संशय करज्यो पण ज्यांसुधी पूर्वे अवतार थयाछे तेना जेवां चरित्र करे त्यांसुधीतो संशय करवो नहि.

पछी निर्मळानंदस्वामीए पुछ्युं जे "केम समझीए त्यारे प्रभुना संतनो महिमा अतिशय जणाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मत्स्य, कच्छ, वराह, वामन, परशुराम अने रामकृष्णादिक ए जे भगवानना अनंत अवतार तेनो महिमा विचारे जे 'जे भगवाने रामकृष्णादिक अवतारेकरीने अनंत जीवनो उद्धार कर्यो छे ते भगवानना आ संत छे तेनो मारे समागम मळ्योछे तेमाटे हुंपण अतिवडभागी छुं' एम समझे तो दिवसे दिवसे संतनो महिमा अतिशय जणातो जाय.

पछी नारायणानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "स्थूल, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देहनेविषे जीव अन्वयपणे केम छे ने व्यतिरेकपणे केम छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यारे देहनेविषे सुखदुःखनो योग थायछे त्यारे ते सुखदुःखने जीव पोतानेविषे माने त्यारे ते जीव अन्वयपणे छे अने ज्यारे त्रणे देहना सुखदुःखथी पोताने न्यारो समझे त्यारे ए जीव व्यतिरेक छे.

पछी शून्यातीतानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "ज्यारे सत्संग करे छे त्यारे तो संतमां ने सत्संगीमां अतिशय हेत होय अने पछी केम ओछुं थइ जायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, प्रथमतो एने संतनेविषे अलौकिक मति होय ने पछी तो ते संतनो अल्प दोष जोइने पोतानी कुबुद्धिए करीने झाझो दोष परठेछे पछी एनी असद्वासना थइ जायछे तेणेकरीने संतनेविषे ओछो भाव थइ जायछे ते जो विचारीने असद्वासनाने टाळे तो प्रथम हतो तेवो शुद्ध थाय अने जो असद्वासना न टाळे तो अंते जतां विमुख थइ जायछे.

पछी प्रसादानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जीवने मोक्षनो शो हेतु छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम संत कहे तेमज संशय रहितथको करे एज जीवने मोक्षनो हेतु छे.

पछी त्रिगुणातीतानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "देश, काळ, क्रिया, संग एवुं विषमपणुं होय त्यारे त्यां शो उपाय करवो?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, देशादिक विषम होय त्यांतो उगर्यानो एज उपाय छे जे त्यांथी जेते प्रकारेकरीने भागी छुटवुं.

पछी नाना निर्विकारानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवानना निश्चय छे तोपण असद्वासना केम टळती नथी?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवाननुं माहात्म्य यथार्थ जाण्युं नथी एटले असद्वासना टळती नथी.

पछी मोटा योगानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भगवाननो निश्चय परिपूर्ण छे तोपण भगवाननेविषे ने भगवाननी कथानेविषे हेत केम थतुं नथी?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवाननुं जेवुं माहात्म्य छे

१ मुख्य.

तेवुं एने समझ्यामां आव्युं नथी अने जो यथार्थ भगवाननुं माहात्म्य समझाय तो भगवान् विना बीजामां हेत राखे तोपण रहे नहि ने एक भगवान् अने भगवानना संत अने भगवाननी कथा कीर्तन तेनेविषेज अचळ हेत थायछे.

पछी प्रतोषानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भगवाननी भक्ति अचळ केम रहे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, संकर्षण अने वासुदेव ए जे चतुर्व्यूह तथा केशवादिक जे चोवीश मूर्तियो तथा वराहादिक जे अवतार ए सर्वेना कारण एवा जे प्रत्यक्ष श्रीकृष्णपुरुषोत्तम भगवान् तेनो महिमा अतिशयपणेकरीने समझे तो तेने भगवाननी श्रवणादिक जे नवधा भक्ति ते अचळ रहे.

एवी रीते सर्व मुनिना प्रश्ननो उत्तर करीने पछी श्रीजिमहाराज सर्वेने पुछता हवा जे, "काम, क्रोध अने लोभ ए त्रण नरकनां द्वार छे एमांथी जेने जे अतिशय जीत्यामां आव्यो होय ते सर्वे कहो?" पछी जेने जे वातनी अतिशय दृढता हती ते तेवी रीते बोल्या ते मुनिना वचन सांभळीने श्रीजिमहाराज अतिशय राजी थया अने आत्मानंदस्वामी तथा योगानंदस्वामी तथा भगवदानंदस्वामी तथा शिवानंदस्वामी ए चार जणाने राजी थइने हृदयनेविषे चरणारविंद दीधां अने एम बोल्या जे 'जेम महानुभावानंदस्वामी आदिक जे मोटेरा छे ते भेळा आ चार पण छे माटे एमनुं कोइने अपमान करवा देशो मा' एम मुक्तानंदस्वामी आदिक जे मोटेरा साधु तेमने भलामण करीने श्रीजिमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने पोताने उतारे जमवा पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ ७८ ॥

प्रथमप्रकरणं समाप्तम् ।

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम्।

श्रीसारंगपुर-वचनामृतम्।

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि ५. पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसजानंदजी महाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "जितं जगत् केन मनो हि येन" ए श्लोकमां[1] एम कह्युंछे जे—जेणे पोतानुं मन जीत्युं तेणे सर्व जगत् जित्युं,[2] ते मन जीत्युं केम जणाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए जे पंच विषय तेमांथी ज्यारे इंद्रियो पाछां हठे अने कोइ विषय पामवानी इच्छा रहे नहि त्यारे सर्वे इंद्रियो वश थायछे अने ज्यारे इंद्रियो विषयनो स्पर्शज न करे त्यारे मनपण इंद्रियो लगण आवे नहि अने हइयामां ने हइयामां रहे एवी रीते जेने पंच विषयनो त्याग अतिदृढपणे करीने थयो त्यारे तेनुं मन जीत्युं जाणवुं अने जो विषय उपर कांइ प्रीति होय तो मन जीत्युं होय तोपण जीत्युं न जाणवुं.[3]

१ मणिरत्नमालाना। २ भागवतमां प्रह्लादजिए हिरण्यकशिपु प्रत्ये पण "दस्यून्पुरा पण्णविजित्य लुंपतो मन्यन्त एके स्वजिता दिशो दश" इत्यादि कह्युं छे। ३ "यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः" ए श्लोकने आरंभीने "तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः", आ श्लोकपर्यन्तना गीताश्लोकोनो अर्थ आ स्थळे अनुसंधान करवो।

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "विषयनी निवृत्ति थयानुं कारण ते वैराग्य छे के परमेश्वरनेविषे प्रीति छे[1]?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एकतो विषयनी निवृत्तिनुं कारण आत्मनिष्ठा छे अने बीजुं माहात्म्ये सहित जे भगवाननुं ज्ञान ते छे, तेमां आत्मनिष्ठातो एवी रीतनी जोइए जे 'हुं चैतन्य छुं ने देह जड छे अने हुं शुद्ध छुं ने देह नरकरूप छे अने हुं अविनाशी छुं ने देह नाशवंत छे अने हुं आनंदरूप छुं ने देह दुःखरूप छे' एवी रीते ज्यारे देहथकी पोताना आत्माने सर्व प्रकारे अतिशय विलक्षण समझे त्यारे देहने पोतानुं रूप मानीने विषयमां प्रीति करेज नहि एवी रीते आत्मज्ञाने करीने विषयनी निवृत्ति थायछे. अने भगवाननो महिमा एम विचारे जे 'हुं आत्मा छुं अने जे प्रत्यक्ष भगवान् मळ्याछे ते परमात्मा छे अने गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप तथा ब्रह्मपुर तथा अनंत कोटि ब्रह्मांडना पति जे ब्रह्मादिक देव ए सर्वेना स्वामी जे श्रीपुरुषोत्तमभगवान् ते मने प्रत्यक्ष मळ्याछे अने ते मारा आत्मानेविषे पण अखंड विराजमान छे अने ते भगवाननुं जे एक निमेषमात्रनुं दर्शन ते उपर अनंत कोटि ब्रह्मांडनां जे विषय सुख छे ते सर्वेने वारी फेरीने नाखी देइए अने भगवानना एक रोममां जेटलुं सुख रह्युंछे तेटलुं सुख जो अनंत कोटि ब्रह्मांडना विषयसुख भेळां करीए तोपण तेना कोटिमा भागनी बरोबर पण थाय नहि अने जे भगवाननुं अक्षरधाम छे तेनी आगळ बीजा जे देवताना लोक छे तेने मोक्ष-[3]

१ स्वधर्मनुंपण उपलक्षण जाणवुं । २ जेनामां आत्मनिष्ठा आवेछे तेनामां वैराग्यपण सहजेज आवी जायछे अने जेने माहात्म्यज्ञान सिद्ध थायछे तेनामां स्वधर्म अने प्रीतिपण आवी जायछे माटे तमे कहेलां वैराग्यादि त्रण साधननी अपेक्षाए आत्मनिष्ठा अने माहात्म्यज्ञान तेज विषयनी निवृत्ति थवामां अत्युत्कृष्ट साधन छे । ३ "स्थानानि निरया एव स्थानस्य परमात्मनः" आ श्लोकथी कह्युंछे ।

धर्मनेविषे नरक तुल्य कह्याछे एवा जे भगवान् ते मने प्रकट मळ्याछे तेने मुकीने नरकना कुंड जेवां जे विषयनां सुख तेने हुं शुं इच्छुं? अने विषय सुखतो केवळ दुःखरूपज छे' एवी रीते भगवाननुं माहात्म्य जाणवे करीने विषयनी निवृत्ति थायछे अने एवी रीते जे आत्मज्ञान अने परमात्मानुं ज्ञान तेमांथी जे वैराग्य प्रकटे ते वैराग्ये करीने सर्व विषय सुखनी वासनानी निवृत्ति थइ जायछे अने जेणे एवी रीते समजीने विषयसुखनो त्याग कर्यो तेने पाछी विषयमां प्रीति थायज नहि अने एनुंज मन जीताणुं कहेवाय अने एवी समजण विना झाझुं हेत जणातुं होय पण ज्यारे कोइक सारा विषयनी प्राप्ति थाय त्यारे भगवानने पख्या मुकीने विषयमां प्रीति करे अथवा पुत्रकलत्रादिकनेविषे प्रीति करे अथवा रोगादिक संबन्धी पीडा थाय अथवा पंचविषयनुं सुख होय ते मटी जाय त्यारे भगवाननेविषे प्रीति रहे नहि अने विकळ जेवो थइ जाय. अने जेम कुतरानुं गलुडीयुं होय तेपण नानुं होय त्यारे सारुं दिसे तेम एवानी भक्ति प्रथम सारी दिसे पण अंते शोभे नहि[3] । इति वचनामृतम् ॥ १ ॥ ७२ ॥

संवत् १८७७ना श्रावण वदी ६ छठने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरी उपर ढोलियो विछाव्यो हतो ते उपर उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने श्वेत पाघ मस्तक उपर बांधी हती तथा श्वेत पछेडी ओढी हती तथा श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

---

१ माहात्म्यज्ञान । २ आत्मनिष्ठा अने माहात्म्यज्ञान विना । ३ आत्मनिष्ठा अने माहात्म्यज्ञाने वर्जित एवो स्वधर्मपण शोभे नहि एमपण जाणी लेवुं ।

पछी श्रीजिमहाराज मुनि प्रत्ये बोल्या जे, मांहोमांहि प्रश्न उत्तर करो, पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवानना भक्तने[1] भगवाननी मूर्तिमां अतिशय हेत कये प्रकारे थाय?" पछी ते प्रश्ननो उत्तर मुनिए मांहोमांहि करवा मांड्यो पण थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराजे तेनो उत्तर करवा मांड्यो जे, स्नेहतो रूपे करीने पण थायछे तथा कामे करीने पण थायछे तथा लोभे करीने पण थायछे तथा स्वार्थे करीने पण थायछे तथा गुणे करीने पण थायछे, तेमां रूपे करीने जे स्नेह थायछे तेतो ज्यारे तेना देहमां पीत्त नीसरे अथवा कोढ नीसरे त्यारे स्नेह थयो होय ते नाश पामेछे तेमज लोभ, काम अने स्वार्थे करीने जे हेत थयुं होय तेपण[2] अंते नाश पामेछे अने जे गुणे[3] करीने स्नेह थयो होय तेतो अंते रहेछे[4]। त्यारे श्रीजिमहाराज प्रत्ये सोमलोखाचर बोल्या जे "ए ते गुण कया उपरला[5] के मांहिला[6]?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, उपरले गुणे शुं थाय[7]? एतो वचने करीने, देहे करीने अने मने करीने जे गुण होय अने ते गुणे करीने जे हेत थयुं होय ते नथी नाश पामतुं। अने तमे पुछोछो ते भक्तने भगवान् उपर स्नेह थाय एमज केवळ पुछोछो? के भगवानने भक्त उपर स्नेह थाय एम पण पुछोछो? त्यारे स्वयंप्रकाशानंदस्वामी बोल्या जे ए बेयने पुछीए

१ प्रत्यक्ष। २ पोतपोताना हेतुनी सिद्धि न थतां। ३ भगवानना सत्यशौचादिक जे गुण तेना दर्शने करीने। ४ अने भगवाननेपण भक्त उपर जे स्नेह थायछे ते गुणे करीनेज थायछे, ते गुणो जेमणे संपादन कर्या होय तेमनी उपर भगवानने दृढ स्नेह थायछे अने तेवा भक्तोनेपण भगवान् उपर दृढ स्नेह थायछे। ५ व्यवहारक्रियामां कुशळता विगेरे लौकिक। ६ स्वधर्म, ज्ञान वैराग्यादिक अलौकिक। ७ तेवा गुणोतो विमुखमां पण होयछे, पण भगवानमां तेमने स्नेह होतोज नथी माटे ते गुणो भगवत्स्नेहमां कारण नथी।

छीए, पछी श्रीजिमहाराजे तेनी विस्तारे करीने वार्ता करवा मांडी जे, वचने करीने तो कोइ जीव प्राणिमात्रने दुःखववा नहि. अने परमेश्वर साथे अथवा मोटा संत साथे प्रश्न उत्तर करता होइए अने तेमां परस्पर वाद विवाद थतो होय अने तेमां पोते जीतीए एम जणाय तोपण जे मोटाथी नानो होय तेने मोटाने समीपे नमी देवुं अने आपण करतां मोटा संत होय ते सभामां प्रश्न उत्तरे करीने भूंठा पडे एम करवुं नहि मोटा संत आगळ अने परमेश्वर आगळतो जरूर हारी जवुं अने परमेश्वर तथा मोटा संत ते पोताने कोइ वचन योग्य कहे अथवा अयोग्य कहे त्यारे ते वचनने तत्काळ स्नेहे सहित मानवुं, तेमां योग्य वचन होय तेमांतो आशंका थाय नहि पण कोइ अयोग्य वचन कह्युं होय अने तेमां आशंका थाय एवुं होय तोपण ते समानेविषे ना पाडवी नहि एतो होज पाडवी अने एम कहेवुं जे 'हे महाराज? जेम तमे कहेशो तेम हुं करीश' अने ते वचन पोताने मनाय नहि एवुं होय तो परमेश्वर तथा मोटा संत तेनी मरजी होय तो तेमने हाथ जोडीने भक्तिए सहित एम कहेवुं जे 'हे महाराज? तमे जे वचन कह्युं तेतो ठीक छे पण आटली मने तेमां आशंका थायछे' ए प्रकारनुं दीन थइने वचन कहेवुं अने जो परमेश्वरनी मरजी न होय तो तेमने समीपे रहेता होय जे मोटा संत तथा हरिभक्त तेमने आगळ कहेवुं जे 'आवी रीते परमेश्वरे वचन कह्युंछे तेतो मने मान्यामां आवतुं नथी' पछी तेनुं मोटा संत समाधान करे तथा परमेश्वर आगळ कहीने ए वचननुं समाधान करावे पण परमेश्वरे वचन अयोग्य के योग्य कह्युं होय ते समे ना पाडवी नहि, एवी रीतनी युक्तिए मोटाना वचनने पाछुं ठेलवुं पण कह्युं ने तत्काळ ना पाडवी नहि, एवी रीतेतो वचनने गुणे करीने व-

तेवुं. पछी ते भक्तने उपर परमेश्वर तथा मोटा संत तेने स्नेह थायछे अने ते भक्तने पण भगवाननेविषे दृढ स्नेह थायछे। हवे देहने गुणे केम वर्तवुं तो[१] पोताना देहमां जो कांइ उन्मत्तपणुं जणाय तो भजनमां वेसवे करीने अथवा चांद्रायण व्रते करीने देहने निर्बळ करी नाखवुं पछी तेने देखीने तेना देहनी मोटा संत अथवा परमेश्वर खबर रखावे तो भले पण पोताने जाणे देहनुं जतन करवुं नहि तथा देहे करीने भगवाननी अने भगवानना भक्तनी टेल चाकरी करवी, एवी रीते ज्यारे ए देहने गुणे करीने वर्ते त्यारे तेने देखीने तेने उपर परमेश्वरने ने मोटा संत तेने स्नेह थायछे अने ए भक्तने पण भगवाननेविषे प्रीति थायछे। हवे मनने गुणे जेम वर्तवुं तेनी रीत कहीए छीए जे, [२]परमेश्वरनां ज्यारे दर्शन करवां त्यारे मने सहित दृष्टिने एकाग्र राखीने करवां अने परमेश्वरनां दर्शन करतो होय ने त्यां कोइ मनुष्य आव्युं अथवा श्वान आव्युं के बीजुं कोइ पशु पक्षी आव्युं त्यारे परमेश्वरनां दर्शनमांथी वृत्ति त्रोडीने आडी अवळी उंची नीची दृष्टि करीने तेनांपण भेळां दर्शन करतो जाय पछी एवी फाटेल दृष्टिवाळाने परमेश्वर के मोटा संत देखीने राजी थता नथी अने ए दर्शन करेछे ते केवां करेछे तो जेम अन्य मनुष्य करेछे तेम तेपण करेछे अने एवी लौकिक दृष्टिवाळो तो जेम खिलखोडी बोलेछे ते भेळे पुंछडुं उंचुं करेछे तेवो जाणवो, शा-सारु जे परमेश्वर भेळे बीजा दर्शन करेछे. अने एवा लौकिक दर्शन ज्यारे ए करवा मांडे त्यारे जेवो प्रथम सारो होय तेवो रहे नहि अ-

१ भगवान अने तेमना एकांतिक साधुओए निषेध करेला हिंसा चोरी आदिक धर्म क्यारेय पण देहथी करवा नहि अने। २ भगवानना दर्शन, श्रवण, ध्यान अने पूजा आदिकमा एकाग्रपणु (बीजा सकल्पनो त्याग करवाथी अव्याकुळपणु) ते मननो गुण कह्यो छे तेमा।

ने ते दिवसे दिवसे उतरतो जाय, ते माटे परमेश्वरनां दर्शन करतां करतां आडी अवळी दृष्टि करवी नहि परमेश्वरनां दर्शनतो प्रथम पहेले नवीन थयां होय ने ते समयनेविषे जेवुं अंतरमां अलौकिकपणुं होय तेवुं ने तेवुं मनमां अलौकिकपणुं रहेतुं जाय ने एक दृष्टिए करीने मूर्तिने जोते जवुं अने दृष्टि पलटीने अंतरमां तेवी ने तेवी ते मूर्तिने उतारवी, जेम धर्मपुरमां कुशळ कुंवर वाई हतां ते अमारां दर्शन करतां जतां हतां अने दृष्टि पलटावीने मूर्तिने अंतरमां उतारतां, तेम दर्शनतो मने युक्त दृष्टिने एकाग्र राखीने करवां पण जेम बीजां दर्शन करेछे तेम न करवां अने जो परमेश्वरनां दर्शन भेळे बीजां दर्शन मनुष्यनां के कुतरा वलाडानां करेछे तो तेने ज्यारे स्वप्न थाय त्यारे परमेश्वर पण देखाय अने ते अन्य पदार्थ पण भेळे देखाय, ते माटे परमेश्वरनां दर्शनतो एक दृष्टिए करवां पण चपळ दृष्टिए न करवां. अने परमेश्वरनां दर्शन दृष्टिने नियममां राखीने करेछे तेने ए दर्शन नवीननां नवीन रहेछे अने परमेश्वरे जेजे वचन कह्यां होय तेपण तेने नवीननां नवीन रहेछे अने लौकिक बाह्य दृष्टिए करीने दर्शन कर्यां होय तेने परमेश्वरनां दर्शन तथा वचन ए सर्वे जुनां थइ जायछे ते रोज दर्शन कर्या करे पण एवाने तो जेम न थयां होय तेवांने तेवां रहेछे, ते ज्यारे भजनमां बेसे त्यारे तेनुं मन स्थिर रहे नहि बहुधाराए युक्त थाय अने परमेश्वरने धारे त्यारे ते भेळे बीजां दर्शन जेजे कर्यां छे तेपण वगर धार्यां आवीने हैयामां स्फुरेछे ते माटे दर्शनतो एक परमेश्वरनांज करवां अने एम जे दर्शन करेछे तेनुं मन भजन स्मरण करते एक परमेश्वरमांज रहेछे पण तेनी बहुधारा नथी रहेती एक रहेछे अने जे चपळ दृष्टिए दर्शन करेछे तेने हुं जाणुंछुं अने जेनां दृष्टि ने मन नियममां होय एवा जे मोटा

वृत्तिए करीने जेजे रूप जोयुं होय ते सर्वे भजन करतां सांभरी आवे-छे ते सारु ए वे इंद्रियोने तो अतिशय नियममां राखवां अने नेत्रनी ने श्रोत्रनी वृत्ति ज्यारे मूर्तिनां दर्शन करता होइए ने मूर्तिने मेलीने अन्यमां तणाय तो तेने एम उपदेश देवो जे 'हे मूर्ख ! तुं भगवाननी मूर्ति विना अन्यरूपने जुवेछे के परमेश्वरनी वार्ता विना अन्य वार्ताने सांभळेछे तेमां तने शुं प्राप्त थशे ? अने हजी तने सिद्धदशातो आवी नथी जे जेवुं चिंतव्युं तेवुं तने तत्काळ मळे, शासारु जे हजीतो तुं साधक छुं माटे जे विषयने तुं चिंतवीश ते विषय मळशे नहि अने ठालां वलखां करीने परमेश्वरने शा वास्ते मेली देछे ? अने कांइक जो तने अल्प विषय मळशे तो तेना पापमां यमपुरीनो मार खातांखातां अंत नहि आवे' एवी रीते नेत्रने अने श्रोत्रने उपदेश देवो. अने वळी एम कहेवुं जे 'ज्यारे तुं भगवाननी मूर्तिमां एकाग्र थइश तो तेमांथी तुं सिद्धदशाने पामीश पछी तुं जेजे ब्रह्मांडमां वार्ता थायछे तेने सहजे सांभळीश अने ब्रह्मा, विष्णु अने शिवना जेवा रूपने इच्छिश तो तेवा रूपने पामीश अने लक्ष्मी के राधिका जेवो भक्त थवा इच्छिश तो तेवो थइश अने भगवाननुं भजन करतां करतां सिद्धदशाने देह छते नहि पाम्य तो देह पड्या पछी मुक्त थइश त्यारे सिद्धदशा मळशे पण सिद्धदशा आव्याविना रूपने जोइजोइने मरी जइश तोपण ते रूप मळशे नहि अने ग्राम्य शब्दने पण सांभळी सांभळीने मरी जइश तो तेणे करीने बुद्धितो अतिशय भ्रष्ट थइ जशे पण तेमांथी कांइ प्राप्ति नहि थाय' एवी रीते नेत्रने अने श्रोत्रने उपदेश देइने एक भगवाननी मूर्तिमांज राखवां अने एवी[1]

1 वचन, देह अने मनना गुणे करीने ।

रीते जे वर्ते तेने भगवाननी मूर्तिमां दिवसे दिवसे अधिक स्नेहथायछे अने ते भक्त उपर परमेश्वरने ने मोटा साधुने स्नेह होय तेथी पण दिवसे दिवसे वधतो जायछे। इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ ८० ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदी ७ सातमने दिवस सांझने समे[1] श्रीजिमहाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबारमां ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने श्वेत पाघ मस्तके बांधी हती ने काळा छेडानो खेस ओढ्यो हतो ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज ! एक भक्ततो नाना प्रकारनी पूजासामग्री[2] लइने प्रत्यक्ष भगवाननी पूजा करेछे अने एक भक्ततो नानाप्रकारना मानसिक उपचारे करीने भगवाननी मानसी पूजा करेछे, ए बे भक्तमां श्रेष्ठ ते कोण छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जो भगवानने विषे प्रेमेकरीने अतिरोमांचित गात्र थइने तथा गद्गद कंठ थइने जो भगवाननी प्रत्यक्ष[3] पूजा करेछे अथवा एवी रीतेज भगवाननी मानसी पूजा करेछे तो ए बेय श्रेष्ठ छे अने प्रेमे करीने रोमांचित गात्र अने गद्गद कंठ थया विना केवळ शुष्क मने करीने प्रत्यक्ष भगवाननी पूजा करेछे तोय न्यून छे अने मानसी पूजा करेछे तोय न्यून छे.

त्यारे सोमलेखाचरे पुछ्युं जे "एवी रीते जे प्रेममग्न थइने प्रत्यक्ष भगवाननी पूजा करतो होय अथवा मानसी पूजा करतो होय ते भक्त कये लक्षणे करीने ओळखाय?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने

१ छ घडी दिवस बाकी हतो त्यारे। २ चंदन पुष्पादिक। ३ चंदन पुष्पादिके करीने।

भगवाननी पूजा[1] सेवा[2]नेविषे तथा कथा वार्ता कीर्तननेविषे अतिशय श्रद्धा होय तथा भगवाननुं अतिशय माहात्म्य समझतो होय ने ए बे वानां दिवसे दिवसे नवां ने नवांज रहेतां होय पण क्यारेय गौण न पडे, जेम मुक्तानंदस्वामीने अमे प्रथम लोजपुरमां दीठा हता अने जेवी श्रद्धा ने भगवाननुं माहात्म्य हतुं तेवुं ने तेवुंज आज दिवस सुधी नवुं ने नवुं छे पण गौण पड्युं नथी, ए बे लक्षणे करीने ते भक्तने ओळखवो अने एवी रीते माहात्म्य ने श्रद्धा विनाना सर्वे यादव[3] श्रीकृष्णभगवान् भेळाज रहेता अने जेम बीजा राजानी सेवा चाकरी करे तेम सेवा चाकरी करता तोपण तेनुं कोइ नाम जाणतुं नथी अने ते भक्तपण कहेवाया नथी. अने उद्धवजी जो श्रीकृष्णभगवाननी श्रद्धा माहात्म्ये सहित सेवा चाकरी करता तो ते परमभागवत कहेवाया अने तेनी शास्त्रमां तथा लोकमां अतिशय प्रसिद्धि छे.

पछी निर्विकारानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! श्रवण, मनन, निदिध्यास अने साक्षात्कार ते केने कहेवाय?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, श्रोत्रे करीने वार्ता सांभळवी तेने श्रवण कहीए अने जे वार्ता श्रवण करी होय ते वार्तानो मने करी विचार करीने जेटली वार्ता त्याग कर्या योग्य होय तेटलीनो त्याग करे अने जेटली वार्ता ग्रहण कर्या योग्य होय तेटलीनुं ग्रहण करे तेने मनन कहीए. अने जे वार्ता निश्चय करीने मनने विषे ग्रहण करी होय तेने रात दिवस संभारवानो जे अभ्यास राखवो तेने निदिध्यास कहीए. अने ते वार्ता

---

१ चंदन पुष्पादि उपचारथी। २ चरण चापवा विगेरे। ३ आ अर्थ भागवतमां "दुर्भगो बत लोकोऽयं यदवो नितरामपि। ये संवसन्तो न विदुर्हरिं मीना इवोडुपम्" आ श्लोकथी कह्यो छे।

जेवी होय तेवीने तेवीज चिंतवन कर्या विनापण सर्वे मूर्तिमाननी पेठे इदं सांभरी आवे तेने साक्षात्कार कहीए. अने जो एवी रीते आत्माना स्वरूपनुं श्रवणादिक कर्युं होय तो आत्मस्वरूपनो एवी रीते साक्षात्कार थाय अने जो भगवाननो एवी रीते श्रवण, मनन, निदिध्यास कर्यो होय तो भगवाननो एवी रीते साक्षात्कार थायछे, पण मनन ने निदिध्यास ए बे कर्या विना केवळ श्रवणे करीने साक्षात्कार थतो नथी अने जो भगवानना स्वरूपनुं दर्शन करीने तेनुं मनन अने निदिध्यास ते न कर्यो होय तो लाख वर्ष सुधी दर्शन करे तोपण ते स्वरूपनो साक्षात्कार न थाय अने ते दर्शनतो केवळ श्रवणमात्र सरखुं कहेवाय अने जेणे भगवानना अंग अंगनुं दर्शन करीने पछी ते अंग अंगनुं मनन ने निदिध्यास ते कर्यो हशे तो ते अंग आज सहजे सांभरी आवतुं हशे अने जे अंगनुं दर्शनमात्रज थयुं हशे तो ते अंगने संभारतो हशे तोपण नहि सांभरतुं होय. अने केटलाक हरिभक्त कहेछे जे 'अमे तो महाराजनी मूर्तिने ध्यानमां बेसीने घणाय संभारीए छीए तोपण एके अंग धार्यामां नथी आवतुं तो समग्र मूर्तितो क्यांथी आवे?' तेनुंपण एज कारण छे जे भगवाननी मूर्तिनां दर्शनमात्र करेछे पण मनन ने निदिध्यास नथी करतो माटे केम धार्यामां आवे? कांजे जे मायिक पदार्थ छे तेपण केवळ दृष्टिमात्रे देख्युं होय ने केवळ श्रवण मात्रे सांभळ्युं होय अने तेने जो मनमां संभारी न राख्युं होय तो ते विसरी जायछे तो जे अमायिक ने दिव्य एवुं जे भगवाननुं स्वरूप तेतो मनन ने निदिध्यास कर्या विना क्यांथी सांभरे? माटे भगवा-

१ आ अर्थ "आत्मा वारे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः" आ श्रुतिमां कह्योछे । दर्शनशब्दथी साक्षात्कार कह्यो छे ।

नतुं दर्शन करीने तथा वार्ता सांभळीने जो तेनुं मनन ने निदिध्यास निरंतर कर्या करे तो तेनो साक्षात्कार थाय नहि तो आखी उमर दर्शन श्रवण करे तोपण साक्षात्कार थाय नहि । इति वचनामृतम् ॥३॥ ८१ ॥

संवत् १८७७ नां श्रावण वदी ८ अष्टमीने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबारमां ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता ने मस्तके श्वेत पाघ बांधी हती ने श्वेत पछेडी ओढी हती ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज ! आत्मा अनात्मानी चोखी जे विक्ति ते केम समझवी ? जे समझवे करीने आत्मा अनात्मा एक समझायज नहि." पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,[1] एक श्लोके करीने अथवा बे श्लोके करीने अथवा पांच श्लोके करीने अथवा सो श्लोके करीने अथवा हजार श्लोके करीने जे चोखुं समझाय ते ठीक छे जे समझाणा केडे आत्मा अनात्माना एकपणानो लोचोज रहे नहि. अने चोखुं समझाइ जाय तेज समझण सुखदायी थायछे अने गोबरी समझण सुखदायी थती नथी, माटे एम चोखुं समझे जे 'हुं आत्मा ते मारा जेवो गुण देहनेविषे एकेय आवतो नथी अने जड, दुःख अने मिथ्यारूप जे देह तेना जे गुण ते हुं चैतन्य ते मारेविषे एकेय आवतो नथी' एवी विक्ति समझीने ने अत्यंत निर्वासनिक थइने चैतन्यरूप थको पुरुषोत्तम भगवाननुं चिंतवन करे एवो जे जड चैतन्यनो विवेक तेने दढ विवेक जाणवो अने घडिक

१ सच्छास्त्रनुं श्रवण करीने अथवा भणीने तेमज गुरुनी सेवा करीने ।

पोताने आत्मारूप माने अने घडीक देहरूप मानीने स्त्रीनुं चिंतवन करे एने गोबरो जाणवो माटे एना अंतरमां सुख न आवे, जेम सुंदर अमृत सरखुं अन्न होय ने तेमां थोडुंक झेर नाख्युं होय तो ते अन्न सुखदायि न थाय सामुं दुःखदायि थायछे, तेम आठे पहोर आत्मानो विचार करीने एक घडी पोताने देहरूप मानीने स्त्रीनुं चिंतवन करे एटले एनो सर्वे विचार धूळमां मळी जायछे माटे अत्यंत निर्वासनिक थवाय एवो चोखो आत्मविचार करवो.

अने कोइकने[1] एवो संशय थाय जे 'अत्यंत निर्वासनिक नहि थइए ने काचाने काचा मरी जइशुं तो शा हवाल थशे?' तो एवो विचार भगवानना भक्तने[2] करवो नहि अने एम समझवुं जे 'मरशे तो देह मरशे पण हुंतो आत्मा छुं अने अजर अमर छुं माटे हुं मरुं नहि' एवुं समझीने हइयामां हिमत राखवी अने परमेश्वर विना सर्वे वासना त्याग करीने अचळ मति करवी अने एम वासना टाळतां टाळतां जो कांइक थोडी घणी वासना रही गइ तो जेवा मोक्षधर्ममां नरक कह्याछे तेवा नरकनी प्राप्ति थशे. ते नरकनी विगती जे भगवाननो भक्त होय तेने कांई जगत्नी वासना रहे तेने इंद्रादिक देवताना जे लोक तेनी प्राप्ति थाय ने ते लोकनेविषे जइने अपच्छराओ तथा विमान तथा मणिमय महोल ए आदिक जे वैभव ते सर्वे परमेश्वरना धामनी आगळ नरक जेवा छे तेने भोगवेछे पण विमुख जीवनी पेठे यमपुरीमां जाय नहि अने चोराशीमां पण जाय नहि, माटे जो सवासनिक भगवानना भक्त हशो तोपण घणुं थशे तो देवता थवुं पडशे ने देवतामांथी पडशो तो

---

१ आ योगानंदमुनिनो संशय छे। २ तेनी तो भगवान् रक्षा करेछे, "अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः। अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण! गच्छति" आ अर्जुनना संशयमां "नहि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति" एम भगवाने उत्तर आप्यो छे।

मनुष्य थशो ने मनुष्य थइने वळी पाछी भगवाननी भक्ति करीने ने निर्वासनिक थइने अंत्ये भगवानना धामने पामशो पण विमुख जीवनीपेठे नरक चोराशीने नहि भोगवो, एवुं जाणीने भगवाननो भक्त होय तेने वासनानुं बळ देखीने हिमत हारवी नहि ने आनंदमां भगवाननुं भजन कर्या करवुं अने वासना टाळ्याना उपायमां रहेवुं अने भगवान् ने भगवानना संतना वचनमां दृढ विश्वास राखवो।

इति वचनामृतम् ॥ ४ ॥ ८२ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदी ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "वासनानी निवृत्ति थयानो एवो शो जबरो उपाय छे जे एक उपायने विषे सर्वे साधन आवी जाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने श्रद्धा तथा हरि अने हरिजनना वचननेविषे विश्वास तथा भगवानने विषे प्रीति तथा भगवानना स्वरूपनुं माहात्म्य ए चार वानां जेना हृदयमां होय तेनी वासना निवृत्त थइ जायछे,तेमां पण जो एक माहात्म्य अतिशय दृढ होयतो श्रद्धा तथा विश्वास तथा प्रीति ए त्रण दुर्बळां होय तोपण महाबळवान् थायछे अने माहात्म्य विनानी भक्ति जो झाझी जणाती होय तोपण अंते नाश थइ जायछे, जेम दश बार वर्षनी कन्या होय ने तेने क्षय रोग थाय पछी ते कन्या युवान थया मोरज मरी जाय पण युवान थाय नहि, तेम जेने माहात्म्य विनानी भक्ति होय तेपण परिपक्व थती थती नाश

थइ जायछे अने जेना हृदामां माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति होय तो बीजा कल्याणकारी गुण न होय तोपण तेना हृदामां सर्वे आवेछे अने जो माहात्म्ये सहित भक्ति जेना हृदामां नथी तो शमदमादिक जे कल्याणकारी रुडा गुण ते तेना हृदामां छे तोयपण नहि जेवाज छे केमजे अंते नाश पामी जशे माटे एक माहात्म्ये सहित भक्ति होय तो तेनी वासना पण निवृत्त थइ जाय अने कल्याणकारी जे गुण ते सर्वे आवीने हृदयने विषे निवास करीने रहे ते माटे माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति एज वासना टाळ्यानुं महामोटुं अचळ साधन छे.

पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "जीव अन्वयपणे केम छे ने व्यतिरेकपणे केम छे अने ईश्वर अन्वयपणे केम छे ने व्यतिरेकपणे केम छे अने अक्षरब्रह्म अन्वयपणे केम छे ने व्यतिरेकपणे केम छे अने पुरुषोत्तम भगवानने अन्वयपणे केम जाणवा ने व्यतिरेकपणे केम जाणवा ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जन्म मरणनुं भोक्ता एवुं जे जीवनुं स्वरूप ते अन्वय जाणवुं अने अछेद्य अभेद्य अविनाशी एवुं जे जीवनुं स्वरूप ते व्यतिरेक जाणवुं. अने विराट सूत्रात्मा अने अव्याकृत ए त्रण शरीरमां एकरसपणे वर्ते ए ईश्वरनुं अन्वयस्वरूप जाणवुं अने पिंड ब्रह्मांडथी पर सच्चिदानंदपणे करीने जे निरूपण कर्युं छे ते ईश्वरनुं व्यतिरेक स्वरूप जाणवुं. अने प्रकृति पुरुष तथा सूर्य चंद्रादिक सर्वे देवता तेनुं जे प्रेरक ते अक्षरनुं अन्वय स्वरूप जाणवुं अने जे स्वरूपने विषे पुरुष प्रकृति आदि कांइ उपाधि रहेती नथी एक पुरुषोत्तम भगवानज रहेछे ए अक्षरनुं व्यतिरेक स्वरूप छे. अने बद्ध जीव तथा मुक्त जीव ए बेना हृदयमां साक्षिरूप थका रह्याछे अने बद्धपणुं ने मुक्तपणुं जेने अडतुं नथी तेमज

ईश्वरना ने अक्षरना हृदयमां साक्षिरूपे रह्याछे अने तेते उपाधि थकी रहित छे ए पुरुषोत्तमनुं अन्वय स्वरूप छे अने जीव ईश्वर ने अक्षर ते थकी पर जे अक्षरातीत स्वरूप ए पुरुषोत्तमनुं व्यतिरेक स्वरूप जाणवुं, एवी रीते अन्वयव्यतिरेकपणुं छे.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भगवानना दर्शननो जे महिमा तथा भगवानना नाम स्मरणनो जे महिमा तथा भगवानना स्पर्शनो जे महिमा ते भगवानना भक्तने अर्थे छे के सर्वे जीवने सारु छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, दर्शनादिकनो तो भेद जुदोज छे तेकहीए ते सांभळो जे, ज्यारे ए दर्शननो करनारो भगवाननां दर्शन करेछे त्यारे एनुं मन छे ते दृष्टि द्वारे आवीने ते सहित दृष्टि जो दर्शन करे तो ते दर्शन एवुं थायछे जे विसारे तोयपण विसरे नहि, एवी रीते मने सहवर्तमान त्वचा स्पर्श करे तो ते स्पर्शपण विसरे नहि, जेम गोपांगनाओनां भगवान् प्रत्ये भागवतमां वचन छे जे 'हे भगवन्! जे दिवसथी तमारां चरणनो स्पर्श थयो छे ते दिवस थकी तम विना जे जे संसारनां सुख छे ते अमने विष जेवां लागेछे' एवी रीते सर्वे ज्ञान इंद्रिये करीने मने सहवर्तमान जे दर्शन स्पर्श श्रवणादिक थायछे ते कोइ काळे विसरी जतां नथी, जेम अज्ञानी जीव होय तेणे मने सहवर्तमान जे पंच ज्ञान इंद्रियो तेणे करीने जेजे विषय भोगव्या होय ते विसारे तोयपण विसरे नहि, एवी रीते भगवाननुं पण मने सहवर्तमान जे दर्शनादिक करेछे तेनेज दर्शनादिक जाणवुं अने बीजानेतो दर्शन थयुंछे तोयपण न थया जेवुं छे, काजे जे समे एणे दर्शन कर्यां ते समे एनुं मनतो क्यांइये फरतुं हतुं माटे ए दर्शन एने कांतो एक दिवसमां विसरी जशे अथवा पांच दिवसमां अथवा

पचास दिवसमां अथवा छ महिनामां अथवा वर्षमां अथवा पांच वर्षमां जरुर विसरी जशे पण अंते रहेशे नहि, माटे जे महात्म्य जाणीने अतिशय प्रीतिए करीने मने सहित दृष्टि आदिक ज्ञान इंद्रिये करीने दर्शन स्पर्शादिक करेछे तेनेज तेमनुं फळ छे अने बीजानेतो जे परमेश्वरनां दर्शनादिक थायछे तेनुं बीजवळ थायछे अने यथार्थ महिमातो जे मने सहवर्तमान दर्शनादिक करेछे तेने अर्थे छे। इति वचनामृतम् ॥ ५ ॥ ८३ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदी १० दशमीने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "एकएक अवस्थानेविषे बीजी बेबे अवस्थाओ केम रहीछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ जीवात्मा जेते 'जेनेविषे रहीने विषयभोगने भोगवेछे' तेने अवस्था कहीए, तें अवस्था जाग्रत् स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रण प्रकारनी छे, [1]तेमां जे जाग्रत् अवस्था छे ते वैराज पुरुषनी जे स्थिति अवस्था तेनुं कार्य छे ने सत्वगुणा[2]त्मक छे ने नेत्र स्थानकनेविषे रही छे एवी जे जाग्रत् अवस्था तेनेविषे [3]विश्वाभिमानी नामे जे आ जीवात्मा ते जेते स्थूळदेहना अभिमाने सहित थको दश इंद्रियो ने चार अंतःकरणे करीने विवेके सहित यथार्थपणे

१ ते अवस्थाओ परस्पर नहि मळेला सत्त्वादिक गुणना कार्यरूप छे अने सत्त्वादिगुणना मिश्रीभावथी परस्पर मळेलीपण छे। २ सत्त्वगुणना कार्यरूप। ३ स्थूल, सूक्ष्म अने कारण आ त्रण देहना अभिमानथी जीवना विश्व, तैजस अने प्राज्ञ आ त्रण नाम पड्या छे ते वास्तविक नथी उपाधिथी छे।

पोताना पूर्वकर्मने अनुसारे बाह्य शब्दादिक पंच विषयना भोगने भोगवेछे तेने सत्त्वगुणप्रधान एवी जाग्रत् अवस्था कहीए अने ए जाग्रत्ने विषे जो ए जीवात्मा भ्रांतिए करीने अयथार्थपणे बाह्य विषय भोगने भोगवेछे तो तेने जाग्रतने विषे स्वप्न कहीए अने ए जीवात्मा जेते जाग्रतने विषे शोक तथा श्रमादिके करीने विवेके रहित थको जो बाह्य विषय भोगने भोगवेछे तो तेने जाग्रतने विषे सुषुप्ति कहीए। अने जे स्वप्न अवस्था छे ते हिरण्यगर्भनी जे उत्पत्ति अवस्था तेनुं कार्य छे ने रजोगुणात्मक छे ने कंठ स्थानकनेविषे रही छे एवी जे स्वप्न अवस्था तेनेविषे तैजसाभिमानी नामे जे जीवात्मा ते सूक्ष्म देहना अभिमाने सहित रह्यो थको इंद्रियो अंतःकरणे करीने पूर्वकर्मने अनुसारे सुख दुःखरूप वासनामय भोगने भोगवेछे तेने रजोगुणप्रधान स्वप्न अवस्था कहीए अने ए स्वप्ननेविषे ए जीवात्मा जेते ज्यारे जाग्रतनी पेठेज विवेके करीने जाणतो थको वासनामय भोगने भोगवेछे त्यारे तेने स्वप्ननेविषे जाग्रत् अवस्था कहीए अने ए स्वप्ननेविषे जणाणा जे वासनामय भोग तेमने ए जीवात्मा जेते भोगवतो थको पण जो जडपणे करीने न जाणे तो तेने स्वप्नने विषे सुषुप्ति कहीए। अने जे सुषुप्ति अवस्था छे ते ईश्वरनी जे प्रलय अवस्था तेनुं कार्य छे ने तमोगुणात्मक छे ने हृदय स्थानकने विषे रही छे एवी जे सुषुप्ति अवस्था ते ज्यारे ए जीवने आवेछे त्यारे इंद्रियो अंतःकरणनी जे वृत्तियो तथा विषयभोगनी वासना तथा ज्ञातापणुं ने कर्तापणुं ए

१ रजोगुण प्रधान। २ तमोगुण प्रधान। ३ रजोगुणना कार्यरूप। ४ अभ्यन्तर, विनाशि अने अस्थिर एवा शब्दादि विषयना भोग। ५ सत्त्वगुण प्रधान। ६ प्रियाप्रियपणे करीने। ७ तमोगुण प्रधान। ८ तमोगुणना कार्यरूप। ९ जीवनुं विषयोने जाणवापणुं। १० जीवनुं अहंवृत्तिथी विषयो माटे कर्मनुं करवापणुं।

सर्वे कारण देहने विपे लीन थइ जायछे अने ते कारण देहनो अभिमानी जे प्राज्ञ नामे जीवात्मा तेनुं प्रधान पुरुषरूप सगुणब्रह्मना सुखलेशने विपे अतिशय लीनपणुं थइ जायछे तेने तमोगुणप्रधान सुपुप्ति अवस्था कहीए अने ए सुपुप्तिनेविपे कर्म संस्कारे करीने कर्तावृत्तिनुं जे उत्पन्न थवुं तेने सुपुप्तिनेविपे स्वप्न कहीए अने जाग्रत् ने स्वप्नने विपे जे पीडा तेना ताप थकी वळी ते सुपुप्तिनां सुखने विपे प्रवेश करती जे कर्तावृत्ति तेना प्रतिलोमपणानुं जे ज्ञान तेने सुपुप्तिने विपे जाग्रत कहीए। एवी रीते एकएक अवस्थाने विपे बीजी बेबे अवस्थाओ रहीछे अने ए जे अवस्थाना भेद तेनुं जे ज्ञान ते जीवात्माने जे वते थायछे अने वळी तेते अवस्थाने विपे ए जीवने कर्मानुसारे जे फळना पमाडनारा छे तेने तुर्य पद कहेछे अंतर्यामी कहेछे द्रष्टा कहेछे ब्रह्म कहेछे परब्रह्म कहेछे.

पछी वळी नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "परा, पश्यंती, मध्यमा अने वैखरी ए जे चार वाणी" तेने केम समजवी ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए वार्तातो बहु मोटी छे ने अतिशय सूक्ष्म छे अने श्रीमद्भागवतना एकादश स्कंधने विपे श्रीकृष्णभगवाने उद्धवजी प्रत्ये कहीछे तेने संक्षेपे करीने कहीए ते सांभळो जे, प्रथम उत्पत्तिकाळने विपे पुरुषोत्तम भगवान् जेते वैराजपुरुषना मस्तकने विपे रह्युं जे सह-

१ सगुण ब्रह्मरूप प्रधान पुरुष। २ कर्मनो कर्ता जे जीव तेनी वृत्तिनुं। ३ रजोगुण प्रधान। ४ प्रथम सुपुप्ति अवस्थामां अनुभवेला सगुण ब्रह्मसंबन्धि आनंदमां। ५ सत्त्वगुण प्रधान। ६ त्रण अवस्थाथी पर। ७ चोथुं वासुदेव नामनुं। ८ प्राप्य स्वरूप। ९ वेदान्तमां। १० ते जीवना अने वैराजना देहमां रहि छे। ११ "स एप जीवो विवरप्रसूतिः" आ श्लोक श्रीधरस्वामीए चार प्रकारनी वाणीपर व्याख्यान कर्यो छे।

स्रंदळनुं कमळ तेनेविषे प्रवेश करीने अक्षरब्रह्मात्मक एवो जे नाद तेने करता हवा पछी ते नाद जे ते सुषुम्णा मार्गे करीने ते विराट्पुरुषना नाभिकंद प्रत्ये व्यापीने महाप्राणे सहित थको त्यांथी उंचो वृद्धिने पामतो हवो तेणे करीने ते विराट्पुरुषनुं जे नाभिपद्म ते अधोमुख हतुं ते ऊर्ध्वमुख थतुं हवुं, एवी रीते ते विराट्पुरुषना नाभिकंदने विषे जे नाद थयो तेने परा वाणी कहीए अने ते परा वाणी जे ते वेदनी उत्पत्तिने अर्थे पोते भगवाने बीजरूपे करीने प्रकाशी छे ने तेजना प्रवाहरूप छे ने अर्धमात्रारूप छे, पछी ते परा वाणी जे ते त्यां थकी ते विराटना हृदयाकाशने पामीने पश्यंती नामे थती हवी ने त्यां थकी कंठदेशने पामीने मध्यमा नामे थती हवी ने त्यांथी ते विराटना मुखने पामीने वैखरी संज्ञाने पामती हवी अने अकार उकार ने मकार ए त्रण वर्णरूपे थइने प्रणवरूपे थती हवी ने पछी बावन अक्षररूपे थइने चार वेदरूपे थती हवी, एवी रीते विराट्पुरुषनेविषे परा,पश्यंती, मध्यमा अने वैखरी ए चार वाणी समजवी.

हवे आ जीवना देहनेविषे पण चार वाणी कहीए ते सांभळो

१ "सहस्रदलनुं कमळ जेमां छे एवुं जे वैराजपुरुषनुं मस्तक तेमां रहेलुं जे ब्रह्मरन्ध्र" एवो वाक्यार्थ समजवो। २ अक्षरब्रह्मद्वारा प्रकट करेलो। ३ जेने स्फोट कहेछे। ४ सूत्रात्म्य वायु। ५ हृदयपर्यन्त। ६ अर्धमात्राना कारणरूप। ७ नाभि आदिक चार स्थानमां परा आदिक चार वाणिमांथी अनुक्रमे अर्धमात्रा मकार उकार अने अकार आटला वर्ण उत्पन्न थायछे। ८ जीवनां पण नाभि, हृदय, कंठ अने मुखमां भगवाननी इच्छाथीज चार प्रकारनी वाणी उद्भवेछे तेमां शरीरनी अंदरना त्रण प्रकारना वाणीना भेदतो ज्ञानिओने पण दुर्बोध छे, मनुष्यो तो केवळ वैखरी नामना चोथा भेदनेज जाणेछे, जी वर्नी वैखरी वाणीमाज वाणीना चार भेद में निश्चय करेला छे ते स्पष्टपणे कहुछु।

जे, एना ए पुरुषोत्तम भगवान ते जीवनेविषे अंतर्यामिरूपे करीने रह्याछे ने ए जीवनी जे त्रण अवस्था तेनेविषे स्वतंत्र थका अनुस्यूत छे एवा जे भगवान् तेज जीवना कल्याणने अर्थे पृथ्वीनेविषे अवतार धारेछे त्यारे ए जीव जेते ते भगवानना स्वरूपनुं जे प्रतिपादन करे तथा ते भगवानना जे धाम गुण अने ऐश्वर्य तेनुं प्रतिपादन करे तथा तेना चरित्रनुं वर्णन करे तथा आत्मा अनात्मानो विवेक करी देखाडे तथा जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म, परब्रह्म तेना भेदने पृथक् पृथक् कही देखाडे एवी जे वाणी तेने परा वाणी कहीए. अने जे मायिक पदार्थ तथा विषय तेमने विवेके सहित यथार्थपणे कही देखाडे तेने वैखरी वाणी कहीए. अने पदार्थने ने विषयने भ्रांतिए सहित अयथार्थपणे कही देखाडे तेने मध्यमा वाणी कहीए. अने ए पदार्थने ने विषयने अंधधंध सरखुं कही देखाडे ने कांइ समझ्यामां न आवे तेने पश्यंती वाणी कहीए. एवी रीते,जीवनी जाग्रत् अवस्थानेविषे ए चार वाणीनुं रूप समझ्यामां आवेछे अने स्वप्न ने सुषुप्तिनेविषे तो कोइक समाधिवाळाने ए चार वाणीनां रूप समझ्यामां आवे पण बीजाने समझ्यामां आवतां नथी । इति वचनामृतम् ॥ ६ ॥ ८४ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदी ११ एकादशीने दिवस रात्रिने[1] समे श्रीजिमहाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने श्रीजिमहाराजे श्रीमद्भागवत पुराणना प्रथम स्कंधनी कथा वं-

१ सन्ध्या आरती पछी ।

चाववानो आरंभ कराव्यो हतो त्यारे तेमां एम वार्ता आवी जे 'ज्यां मनोमय चक्रनी धारा कुंठित थाय त्यां नैमिशारण्य क्षेत्र जाणवुं' ए वार्ताने सांभळीने मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! ए मनोमय चक्र ते शुं छे ने एनी धारा ते शी समझवी ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मनोमय चक्र ते मनने जाणवुं अने एनी धारा ते दश इंद्रियो छे एम जाणवुं अने ते इन्द्रियोरूप जे मननी धारा ते जे ठेकाणे घसाइने बुंठि थइ जाय तेने नैमिशारण्य क्षेत्र जाणवुं, ते ठेकाणे जप, तप, व्रत, ध्यान, पूजा ए आदिक जे सुकृत तेनो जे आरंभ करे ते दिनदिन प्रत्ये वृद्धि पामे एवुं जे नैमिशारण्य क्षेत्र ते जे ठेकाणे भगवानना एकांतिक साधु रहेता होय ते ठेकाणे जाणवुं अने ज्यारे मनोमय चक्रनी इन्द्रियोरूप जे धारा ते बुंठि थइ जाय त्यारे शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पंच विषयने विषे क्यांइ प्रीति रहे नहि अने ज्यारे कोइ रूपवान स्त्री देखाय अथवा वस्त्र अलंकारादिक अतिसुंदर पदार्थ देखाय त्यारे मुळगो तेना मनमां अतिशय अभाव आवे पण तेमां इन्द्रियोनी वृत्ति जइने चोटे नहि, जेम अति तिखी अणिवाळुं बाण होय ते जे पदार्थमां चोंटाडे ते पदार्थने विंधिने मांहि प्रवेश करी जायछे अने पाछुं काढ्युं पण निसरे नहि अने तेना ते बाणमांथी फळ काढी लीधुं होय ने पछी थोथुं रह्युं होय तेनो भिंतमां घा करे तो त्यांथी उथडकीने पाछुं पडेछे पण जेम फळ सोतुं भिंतनेविषे चोटी जायछे तेम चोटे नहि, तेम ज्यारे मनोमय चक्रनी

१ "नैमिशेऽनिमिषक्षेत्रे" आ श्लोकनी श्रीधरी टीकामा नैमिशारण्य शब्दनो अर्थ करवामा वायुपुराणनी आख्यायिका लखीछे तेमा । २ मार्गरूप शब्दादि विषयोमां प्रवर्तवुं नहि ते ।

धारा जे इन्द्रियो ते बुंठियो थइ जाय त्यारे गमे तेवो श्रेष्ठ विषय होय तेमां पण इंद्रियोनी वृत्ति चोटे नहि अने थोथानी पेठे इंद्रियोनी वृत्तियो पाछी हटे, एवुं वर्ताय त्यारे जाणीए जे मनोमय चक्रनी धारा कुंठित थइ गइ, एवुं संतना समागमरूपि नैमिशारण्य क्षेत्र ज्यां देखाय त्यां कल्याणने इच्छवुं अने त्यां अतिदृढ मन करीने रहेवुं । इति वचनामृतम् ॥ ७ ॥ ८५ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदी १२ द्वादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी चैतन्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! ईर्ष्यानुं शुं रूप छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेना हृदयमां मान होय ते मानमांथी ईर्ष्या प्रवर्तेछे अने क्रोध मत्सर ने असूया तेपण मानमांथी प्रवर्तेछे अने ईर्ष्यानुं ए रूप छे जे 'पोताथी जे मोटा होय तोपण तेनुं ज्यारे सन्मान थाय त्यारे तेने देखी शके नहि,' एवो जेनो स्वभाव होय तेने एम जाणवुं जे आना हृदयामां ईर्ष्या छे अने यथार्थ ईर्ष्यावाळो जे होय तेतो कोइनी मोटाइने देखी शके नहि । इति वचनामृतम् ॥ ८ ॥ ८६ ॥

---

१ जेम चक्रनी धारा कुंठित थाय त्यारे ते चक्र भ्रमण करी शके नहि, तेम ज्यारे विषयोमांथी इंद्रियो पाछा वळे त्यारे मन विषयोमा भ्रमण करे नहि, जेम बाण फळाए रहित थाय तो लक्ष्यने विंधवा माटे समर्थ थाय नहि तेमज मन पण ज्यारे इंद्रियोनी सहायताए रहित थाय त्यारे विषय ग्रहण करवा समर्थ थाय नहि, आटलो तात्पर्यार्थ छे।

संवत् १८७७ ना श्रावण वदी १३ तेरशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज पोताना भक्तजनने सुख देवाने अर्थे सारंगपुरथी चाल्या ते गाम श्रीकुंडळ पधार्या अने ते कुंडळमध्ये अमरापटगरना आथमणा ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर उत्तर मुखारविंदे विराजमान हता अने मस्तक उपर धोळी पाघ बांधी हती तथा धोळी पछेडी ओढी हती तथा धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो तथा धोळो अंगरखो पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! जीवना हृदयमां युगना धर्म प्रवर्तेछे[1] तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, युगना धर्म प्रवर्तेछे तेनुं कारणतो गुण[2] छे ते ज्यारे शुद्ध सत्त्वगुण वर्ततो होय त्यारे तेना हइयामां सत्ययुगनी प्रवृत्ति होय अने ज्यारे सत्त्वने रज भेळा वर्तता होय त्यारे तेना हइयामां त्रेतायुगनी प्रवृत्ति होय अने ज्यारे रज ने तमोगुण भेळा वर्तता होय त्यारे तेना हइयामां द्वापरयुगनी प्रवृत्ति होय अने ज्यारे एकलो तमोगुण वर्ततो होय त्यारे तेना हइयामां कळियुगनी प्रवृत्ति होय, एम गुणे करीने युगनी प्रवृत्ति छे.[3]

१ जेम बहार युग प्रवर्तेछे तेम। २ पुरुषना हृदयमां रहेला सत्त्वादिक। ३ ज्यारे सत्त्वगुणना कार्यरूप ज्ञान तपमां रुचि उत्पन्न थाय त्यारे मारा हृदयमां सत्ययुग प्रवर्त्यो छे एम जाणवुं। रजोगुणना कार्यरूप काम्यकर्मादिकमां ज्यारे रुचि उत्पन्न थाय त्यारे मारा हृदयमां त्रेतायुग प्रवर्त्यो छे एम जाणवुं। ज्यारे रजोगुण अने तमोगुणना कार्यरूप काम्यकर्मादि अने लोभादिकमां रुचि उत्पन्न थाय त्यारे मारा हृदयमां द्वापरयुग प्रवर्त्यो छे एम जाणवुं। तमोगुणना कार्यरूप माया अनृत आदिकमा ज्यारे रुचि उत्पन्न थाय त्यारे मारा हृदयमां तमोगुण प्रवर्त्यो छे एम जाणवुं। ते भागवतमां "सत्त्वं रजस्तम इति" आ श्लोकने आरंभीने "यदा मायानृतं तन्द्रा" इत्यादि पांच श्लोकथी निरूपण कर्युं छे। आटलो तात्पर्यार्थ छे।।

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "गुणनी प्रवृत्ति थयानो शो हेतु छे ?"पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,गुणनी प्रवृत्तिनुं कारणतो कर्म छे ते जेवां पूर्वकर्म होय तेवा गुणनी प्रवृत्ति थायछे, माटे जेने रजोगुण ने तमोगुण वर्तता होय ने ते जो एकाग्र थइने भगवाननुं ध्यान करवा जाय तो थाय नहि माटे एवाने तो आत्मनिष्ठानुं बळ राखवुं अने भगवानना महिमानुं बळ राखवुं ने एम समझवुं जे 'हुं तो आत्मा छुं ते मारेविषे मायाकृत उपाधि होय नहि ने हुंतो गुणातीत छुं' अने भगवाननो महिमा एम विचारवो जे 'अजामेळ महापापी हतो ने दीकराने योगे नारायण एवुं नाम लीधुं ते सर्व पापथी छुटीने परमपदने पाम्यो तो मनेतो ते भगवान् प्रत्यक्ष मळ्याछे अने रात दिवस ते भगवाननुं हुं नाम लउंछुं माटे हुं तो कृतार्थ थयोछुं' एवी रीते विचारीने आनंदमां रहेवुं पण जेने तमोगुण ने रजोगुण वर्तता होय तेने ध्यान धारणाने अर्थे आग्रह करवो नहि अने जेवुं बनी आवे तेवुं भजन स्मरण करवुं ने देहे करीने भगवाननी तथा संतनी परिचर्या श्रद्धाए सहित करवी ने पोतपोताना धर्ममां रहेवुं ने पोताने पूरणकाम मानवुं.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जेने तामसि कर्म घणां होय तेना हइयामां कळियुग वर्ते ते कोइ उपाये टळे के न टळे ?"पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जो एने संत तथा परमेश्वरना वचननेविषे अतिशय श्रद्धा होय अने अतिदृढ विश्वास होय तो गमे तेवां तामसि कर्म होय पण तेनो नाश थइ जाय अने कळियुगना धर्म मटीने सत्ययुगना धर्म होय ते वर्ते, माटे अति साचे भावे करीने सत्संग करे तो तेने कोइ जातनो दोष हइयामां रहे नहि अने देह छतांज ब्रह्मरूप थइ जाय.

१ अने जेवा गुणवाळाए जेवी भक्ति करवानी होय तेपण कहो ? ।

पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए पुछ्युं जे "स्थान ते केने कहीए?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, चार वर्ण अने चार आश्रम तेने जे पोतपोतानो धर्म तेने स्थान जाणवुं. अने तमे त्यागी छो ते तमाराथी जो त्यागनो पक्ष मुकीने गृहस्थने मार्गे चलाय तो ने स्थानकथकी भ्रष्ट थवाणुं एम जाणवुं माटे गमे तेवो आपत्काळ पडे अथवा अमे आज्ञा करीए तोपण तमारे पोताना धर्ममांथी चळवुं नहि. अने जेम गृहस्थ वस्त्र तथा अलंकारे करीने अमारी पूजा करवाने इच्छे तेम तमारे इच्छवुं नहि, तमारे तो पत्र, पुष्प, फळ अने जळे करीने पूजा करवी ने एवी पूजाए करीनेज आनंद मानवो पण पोताना धर्मथी चळायमान थइने परमेश्वरनी पूजा करवी ए ठीक नहि, माटे सर्वने पोताना धर्ममां रह्या थका जेटली पूजा थाय तेटली करवी ए अमारी आज्ञा छे तेने दृढ करीने सर्वे राखज्यो । इति वचनामृतम् ॥ ९ ॥ ८७ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि १४ चौदशने दिवस श्रीजिमहाराज सर्वे संतनुं मंडळ लइने गाम कुंडळथी चाल्या ते वाटमां गाम रांभडे आव्या ने त्यां पींपरना वृक्ष हेठे उतर्या पछी ते गामना माणसे ढोलीयो लावीने ते उपर पधराव्या अने ते समे श्रीजिमहाराजे सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताने चारे कोरे साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा बेठी हती.

अने साधु कीर्तन गाता हता ते कीर्तन रखावीने श्रीजिमहाराजे ते गामना माणस आगळ वात करी जे, आ संसारने विषे धर्मवाळा ने अधर्मी ए बे प्रकारना माणस छे, तेमां धर्मवाळा जे माणस होय ते चोरी तथा परस्त्रीनो संग तथा चाडी चुगली ए आदिक सर्वे पापनो त्याग करीने ने परमेश्वरथी डरीने धर्ममर्यादामां चालेछे, तेनो सं-

सारमां जे पोताना कुटुंबी होय अथवा कोइ बीजा होय पण ते सर्वे विश्वास करे ने ते जे बोले ते वचन सौने सत्यज भासे अने एवा जे धर्मवाळा होय तेनेज साचा संतनो समागम गमे। अने जे अधर्मी माणस होय तेतो चोरी, परस्त्रीनो संग, मद्यमांसनुं भक्षण, वटलवुं, वटलाववुं ए आदिक जे सर्वे कुकर्म तेनेविषेज भरपुर होय ने तेनो संसारमां कोइ विश्वास करेज नहि ने एनां सगां होय तेपण कोइ एनो विश्वास न करे अने एवा जे अधर्मी होय तेने साचा संतनो समागमतो गमेज नहि अने जो कोइ बीजो ते संतनो समागम करे तो तेनो पण द्रोह करे, माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने अधर्मिने मार्गे चालवुंज नहिं अने धर्मवाळाने मार्गे चालीने साचा संतनो समागम करवो तो निश्चयज ए जीवनुं कल्याण थाय एमां कांइ संशय नथी, एटली वार्ता करी तेने सांभळीने ते गामना केटलाक माणसे श्रीजिमहाराजनो आश्रय कर्यो.

पछी त्यांथी श्रीजिमहाराज पाछा सारंगपुर पधार्या पछी जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान थया ने ते समे पोते सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप, ब्रह्मपुर ए सर्वे जे भगवानना धाम तेने बाह्यदृष्टिए करीने जोइए तो घणां छेटे छे अने आत्मदृष्टिए करीने जोइए तो एक अणु जेटलुं पण छेटुं नथी, माटे बाह्यदृष्टिवाळानी समझण छे ते मिथ्या छे अने आत्मदृष्टिवाळानी समझण छे ते सत्य छे[१] अने जे साधु एम समझतो होय जे 'मारा चैतन्य-

१ अन्तर्दृष्टिथी पोतानी समीपे भगवानना धाम जोवानो प्रकार कहेछे।

ने विषे भगवान् सदाय विराजमान छे ते जेम देहमां जीव होय तेम मारा जीवने विषे भगवान् रह्या छे अने मारो जीव छे तेतो शरीर छे अने भगवानतो मारा जीवना शरीरी छे' अने पोताना जीवात्माने स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण शरीरथकी पृथक् माने अने तेनेविषे अखंड भगवान विराजमान छे ' एम समझे तो ते संतथकी भगवान अथवा भगवाननां धाम ते अणुमात्र छेटे नथी. अने एवी रीतनो जे संत होय तेतो जेवो श्वेतद्वीपमां मुक्त छे ते सरखो छे अने एवा संतनुं दर्शन थयुं त्यारे एम जाणवुं जे 'मने साक्षात्कार भगवाननुं दर्शन थयुं' ने एवी समझणवाळो जे संत तेतो कृतार्थ छे अने जेने आवी समझणतो आवी शके नहि ने जो ते संतना समागममां पड्यो रहे ने ते संत नित्य पांच खासडां मारे तोपण ते अपमाननुं सहन करे ने संतनो समागम मुकी शके नहि जेम अफीणनो बंधाणी होय ते तेने मुकी शकतो नथी तेम ए पण कोइ रीते संतनो समागम तजी शके नहि तो जेवा प्रथम संत कह्या ते सरखो एनेपण जाणवो अने जेवी प्राप्ति ते संतने थायछे तेवीज जे संत समागममां पड्यो रहेछे तेने पण थायछे। इति वचनामृतम्॥१०॥८८॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदी ३० अमासने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "पुरुषप्रयत्न शास्त्रमां कह्युंछे ते पुरुषप्रयत्ने करीने केटलुं काम थायछे अने परमेश्वरनी कृपाए क-

१ ज्यां भगवान विराजमान छे त्यांज तेमना धामादिक पण छे।

रीने केटलुं काम थायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सद्गुरु ने सत्शास्त्रने वचने करीने दृढ वैराग्यने पाम्यो होय अने दृढ श्रद्धावान् होय अने अष्ट प्रकारनुं जे ब्रह्मचर्य तेने अतिदृढ पाळतो होय अने अहिंसाधर्मने विषे दृढ प्रीतिवान् होय अने आत्मनिष्ठा पण अतिपरिपक्व होय तो तेने माथेथी जन्ममरणनी निवृत्ति थइ जायछे, जेम शाळने माथेथी फोतरुं उतर्युं ते शाळ पाछी उगे नहि, तेम कह्या एवे गुणे करीने जे युक्त होय ते अनादि अज्ञानरूप जे माया तेथी छुटेछे ने जन्ममरण थकी रहित थायछे ने आत्मसत्ताने पामेछे आटलुं तो पुरुषप्रयत्ने करीने थायछे. अने परमेश्वरनी कृपा पण जे एवे लक्षणे युक्त होय ते उपरज थायछे अने ज्यारे परमेश्वरनी कृपा थाय त्यारे ए भगवाननो एकांतिक भक्त थायछे अने श्रुतिये कह्युं छे जे— "निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति" ए श्रुतिनो ए अर्थ छे जे अंजन जे माया ते थकी जे रहित थयो ते भगवानना तुल्यपणाने पामेछे कहेतां जेम भगवान शुभ अशुभ कर्मे करीने बंधाता नथी तेम ते मुक्तपण शुभ अशुभ कर्मे करीने बंधाय नहि. अने जेम लक्ष्मीजी छे ते हेते करीने क्यारेकतो भगवानना स्वरूपमां लीन थइ जायछे ने क्यारेकतो नोखां रह्यां थकां भगवाननी सेवामां रहेछे तेम ते भक्तपण अतिशय हेते करीने भगवाननेविषे क्यारेकतो लीन थइ जायछे अने क्यारेकतो मूर्तिमान थको भगवाननी सेवामां रहेछे अने जेम भगवान स्वतंत्र छे तेम ए भगवाननो भक्तपण स्वतंत्र थायछे आवी रीतनी जे सामर्थी तेतो भगवाननी कृपा थकी आवेछे.

पछी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जेमां ए सर्वे अंग संपूर्ण होय

१ डागर।

तेनी उपरतो भगवाननी कृपा थायछे अने जो ए अंगमांथी कांइक न्यूनता होय तो तेनी शी गति थायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वैराग्य, ब्रह्मचर्य, श्रद्धा, अहिंसाधर्म अने आत्मनिष्ठा एमांथी कोइ अंगमां न्यूनता होय तो आत्यंतिक मोक्ष जे भगवाननुं अक्षरधाम तेने तो न पामे अने ए विना बीजां जे भगवानना धाम छे तेने पामे अथवा बधु सवासनिक होय तो देवलोकने पामे, जे देवलोकने भगवानना धाम आगळ मोक्षधर्मनेविषे नरक तुल्य कह्याछे अने देवतामांथी मनुष्य थाय ने मनुष्यमांथी वळी देवता थाय अने "अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्" ए श्लोकनो पण एज अर्थ छे जे, जे भगवाननो भक्त सवासनिक होय ते नरक चोराशीमांतो न जाय अने देवतामां ने मनुष्यमांतो अनंत जन्म धरे पछी ज्यारे पूर्वे कह्यां एवां वैराग्यादिक लक्षणे युक्त थाय त्यारेज भगवाननी कृपानुं पात्र थाय अने पछी भगवाननो एकांतिक भक्त थइने [illegible] ाम तेने पामेछे, माटे एक जन्मे [illegible] ।थम कह्या एवे लक्षणे युक्त थइने अतिशय निर्वासनिक थशे त्यारेज भगवाननी कृपानुं पात्र थशे ने आत्यंतिक मोक्षने पामशे पण ते विनातो नहिज पामे.

पछी नृसिंहानंदस्वामीए पुछ्युं जे "आ देहे करीनेज सर्वे कसरमात्र मटी जाय एवो कोइ उपाय छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जो खबडदार थइने मंडे तो आने आ देहेज सर्वे कसर मटी जाय अथवा देहपर्यंत कसर न मटी होय अने अंतसमेज निर्वासनिक थाय ने भगवानने विषे अतिशय प्रीति थाय तो अंतकाळे पण भगवाननी कृपा थाय ने भगवानना धामने पामे, माटे एक देहे अथवा अनंत

देहे अथवा अंत समे एक घडी मृत्यु आडि रही होय त्यारेपण जो अतिशय भगवाननेविषे वृत्ति जोडाइ जाय तो ते भक्तने कोइ जातनी कसर रहेती नथी। इति वचनामृतम् ॥ ११ ॥ ८९ ॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदी १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी निर्विकारानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "साधुनेविषे कया गुण अखंड रहेछे ने कया गुण आवे जाय एवा छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एक तो आत्मनिष्ठा अने बीजो स्वधर्म अने त्रीजो भगवानना स्वरूपनो निश्चय ए त्रणे गुणतो अखंड रहेछे अने बीजा गुणतो आवे खरा ने पाछा जाय पण खरा माटे बीजा गुणतो आव्या गया रहेछे अने ए त्रण गुणतो अखंड रहेछे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "देहनी ने आत्मानी नोखी विक्ति समझाणी होय तोयपण ते विक्तिने भुलीने पाछो देहाभिमानी केम थायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, देह आत्मानी विक्ति एकवार चोखी समझाणी होय तो पछी पाछी भुलाय नहि अने एम माने जे 'हुं देह छुं तोपण देह पोतानुं रूप मनायज नहि' अने भगवाननो निश्चयपण जो एकवार दृढ थयो होय तो पाछो टाळे तोपण टळे नहि.

१ आत्मनिष्ठाथी वैराग्य अने निश्चयथी भक्ति ए बेपण जाणी लेवा। २ कृपालुता विगेरे। ३ शुभ देशादिकनो योग थवाथी। ४ अशुभ देशादिकनो योग थवाथी।

अने एम जणायछे जे आत्मबुद्धि मटीने देहबुद्धि आवी जायछे एतो खोटो खोटो मनमां भ्रम पडेछे पण देहाभिमानतो आवतुंज नथी अने एवो जे परिपक्व ज्ञानी तेनेतो आत्मानुंज अभिमान दृढ रहेछे ने ते पोताना आत्माने ब्रह्मरूप मानेछे अने ते ब्रह्मनेविषे परब्रह्म जे पुरुषोत्तम भगवान ते अखंड विराजमान छे अने ते भगवानना स्वरूपनो निश्चयपण एने अखंड ने अखंड रहेछे.

पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए पुछ्युं जे "पोताना आत्मानो विचार केम करवो?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यारे अंतःकरण सामुं दृष्टा एवो जे जीवात्मा ते जोइ रहे त्यारे बाहेर जे स्थूळ शरीर अने ते संबंधी जे विषय ते सर्वे विसरी जायछे अने अंतःकरण ने दृष्टा ए बेना वचमां जे विचार ठरेछे ते विचारे करीने मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ए सर्वना रूपने जाणवां पछी विचारनी दृष्टिए ए अंतःकरणना घाट सामुं जोतां जोतां ज्यारे घाट बंध थइ जाय त्यारे भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं अने ज्यां सुधी घाट–संकल्पनुं बळ होय त्यांसुधी तो संकल्प सामुं जोइ रहेवुं पण ध्यान न करवुं. अने जे बाहेर स्थूळ देहनेविषे पंच ज्ञान इंद्रियो छे ते ज्यारे पोतपोताना विषय सामा जायछे त्यारे विचारने बे प्रकारे करवो एकतो जे विषयने आकारे इंद्रियो थयां होय ते विषयने आकारे विचार करवो अने बीजो ते इंद्रियोना गोलकनेविषे जे जोनारो दृष्टा छे ते दृष्टाने आकारे विचार करवो, पछी विषयने आकारे ने दृष्टाने आकारे ए बे प्रकारे जे विचार छे ते एक थइ जायछे पछी ते विषयमांथी वृत्ति अतिशय तुटी जायछे. अने एम विचार्या विना जो बलात्कारे करीने विषयमांथी वृत्तिने तोडे तो ते वृत्तिने विषयमांथी प्रीति मटे नहि अने ज्यारे विचा-

१ विषयो दुःखरूप छे एवो। २ आत्मा सदा सुखरूप छे एवो।

रीने वृत्तिने पाछी वाळे त्यारे ते वृत्ति पाछी विषयमां जोडायज नहि, माटे ज्यांसुधी इंद्रियोनी वृत्तिने विषयसन्मुख प्रीति होय त्यांसुधी भगवाननुं ध्यान करवुं नहि ने ज्यारे इंद्रियोनी वृत्ति स्थिर थाय त्यारे भगवाननुं ध्यान करवुं अने ज्यारे बाहेर स्थूळ देहमां दृष्टा वर्ततो होय त्यारे चोखो विभाग करी राखवो जे ज्यारे स्थूळ देहमां वर्तवुं त्यारे सूक्ष्म देहना घाट सामुंतो जोवुंज नहि अने ज्यारे अंतःकरण सन्मुख जोवुं त्यारे स्थूळ देहने विसारी देवुं अने द्रष्टाने ने दृश्यने मध्ये जे विचार छे ते विचारे करीने एम समझवुं जे 'दृष्टा ने दृश्य ते अतिशय जुदांज छे' एम समझीने देहना भाव ते देहनेविषे होमवा अने दृष्टा जे चैतन्य तेना भाव ते चैतन्यनेविषे होमवा. अने बाळ, यौवन, वृद्ध, स्थूळ, कृश, जीववुं मरवुं ए सर्वे देहना भाव छे ते आत्मानेविषे मानवाज नहि अने अछेद्य, अभेद्य, अजर, अमर, ज्ञानरूप, सुखरूप, सत्तारूप ए जे सर्वे आत्माना भाव छे ते कोइ काळे देहनेविषे समझवाज नहि ए गुणतो आत्मानेविषे समझवा एवो जे विचार ते ज्यांसुधी घाट—संकल्पनुं बळ होय त्यांसुधी मुकवो नहि, जेम राजा होय ते ज्यांसुधी शत्रुनुं बळ होय त्यांसुधी राजगादिए बेसीने सुख भोगवे नहि अने ज्यारे शत्रुमात्रनो नाश थइ जाय त्यारे पोताना राज्यना जे वैभव छे तेने भोगवेछे, तेम जे भगवाननो भक्त होय तेने ज्यांसुधी मन ने इंद्रियोरूपी शत्रु पीडता होय त्यांसुधी पूर्वे कह्यो एवो जे विचार ते दृढपणे राखवो अने ज्यारे मन इंद्रियोना घाट सर्वे शमी जाय त्यारे परमेश्वरना स्वरूपनुं ध्यान करवुं । इति वचनामृतम् ॥१२॥ ९०॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबार-

मां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय प्रथम थइने पछी मटी जायछे तेने ते प्रथम निश्चय थयो हतो के नहोतो थयो?" पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामी बोल्या जे, जेने पोताना जीवात्मानेविषे निश्चय थयो होय तेतो कोइ रीते टळे नहि अने शास्त्रनी रीते जो निश्चय थयो होय तो शास्त्रमां न मळे एवुं चरित्र ज्यारे परमेश्वर करे त्यारे भगवाननो निश्चय होय ते टळी जायछे. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "शास्त्रनेविषे तो परमेश्वरनुं समर्थपणुं, असमर्थपणुं, कर्तापणुं, अकर्तापणुं एवी अनंत जातनी वात छे माटे एवुं कयुं शास्त्र बहार चरित्र परमेश्वरे कर्युं हशे जे जेणे करीने एनो निश्चय टळी गयो?" ए प्रश्ननो उत्तर करो, पछी सर्वे मुनि बोल्या जे "शास्त्र बहार तो कोइ चरित्र नथी माटे हे महाराज! ए जीवने निश्चय थइने पाछो टळी जायछे तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने भगवाननो निश्चय थायछे तेने शास्त्रे करीनेज थायछे, कां जे शास्त्रमां परमेश्वरनांपण लक्षण कह्यां होय अने संतनांपण कह्यां होय, माटे शास्त्रे करीने निश्चय थाय तेज अचळ रहेछे अने शास्त्र विना पोताने मने करीने जे निश्चय कर्यो होय ते निश्चय टळी जायछे. अने वळी धर्मनी प्रवृत्तिनुं जे कारण छे तेपण शास्त्रज छे अने जेणे शास्त्र कोइ दिवस सांभळ्यांज नथी एवा जे अज्ञानी जीव तेमनेविषेपण मा, बेन, दिकरी अने स्त्रीतेनी विगतीरूप जे धर्मनी मर्यादा ते आज सुधी चाली आवेछे तेनुं कारणपण शास्त्रज छे, केम-

जे शास्त्रमांथी कोइके प्रथम एवी वात सांभळी छे ते परंपराए करी-ने सर्वे लोकमां प्रवर्तीछे माटे जेने भगवाननो निश्चय थइने टळी जायछे तेनेतो शास्त्रना वचननी प्रतीतिज नथी एतो केवळ मनमुखी छेने नास्तिक छे अने जो शास्त्रनी प्रतीति होय तो कोइ काळे परमेश्वरथी विमुख थायज नहि कांजे शास्त्रमांतो अनंत जातनां भगवाननां चरित्र छे माटे परमेश्वर गमे तेवां चरित्र करे पण शास्त्रथी वारणे होयज नहि, माटे जेने शास्त्रना वचननो विश्वास होय तेनेज भगवानना स्वरूपनो निश्चय अडग थायछे अने कल्याणपण तेनुंज थायछे अने ते धर्ममांथी पण कोइ काळे डगेज नहि । इति वचनामृतम् ॥१३॥९१॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि ३ त्रीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबारमां ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने काळा छेडानो श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने श्वेत चादर ओढी हती ने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती ने कान उपर पीळा पुष्पना गुच्छ विराजमान हता अने पाघमां पीळा पुष्पनां छोगां धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे पीळा पुष्पनो हार नाभिसुधी हिंडळतो विराजमान हतो अने आथमणुं मुखारविंद करीने श्रीजिमहाराज विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवानना भक्त होय ते भगवाननां धाम जे वैकुंठादिक तेने पामीने पाछा पडता नथी एम भगवाने गीतामां कह्युंछे अने जे पडतो हशे ते शे दोषे करीने पाछो

१ "यद्गत्वा न निवर्तन्ते" "सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च" "मामुपेत्य तु कौन्तेय ! पुनर्जन्म न विद्यते" इत्यादि वचनथी ।

पडतो हशे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, कोण भगवानना धामने पामीने पाछो पड्योछे एकतो बतावो ? पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए क्ह्युं जे, एकतो वैकुंठमांथी जय विजय भगवानना पार्षद पड्या[1] अने गोलोकमांथी राधिकाजी ने श्रीदामा पड्या, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जय विजय पड्या एतो भगवाने पोताना संतनो महिमा देखाडवा सारु पाड्या जे 'सनकादिक जेवा संतनो द्रोह करे तो वैकुंठादिक जेवा धामने पाम्यो होय तोयपण पडी जायछे' अने जय विजयतो पाछा त्रीजे जन्मे भगवानना वैकुंठधाममां पहोंच्या माटे ए कांइ पड्या न कहेवाय एतो भगवाननी इच्छाए थयुं, अने पड्यो-तो ते कहेवाय जे जेने पाछो भगवाननो संबन्धज न रहे अने गोलोकथी राधिकाजी पड्यां तेपण भगवाननीज इच्छा हती अने पोताने-पण मनुष्यदेह धरीने अनंत जीवनो उद्धार करवो हतो अने पोतानां कल्याणकारी जे चरित्र तेने विस्तारवां हतां, माटे राधिकाजीने कोइ पड्यां कहे तो भगवानपण ते भेळे पड्या कहेवाय, ते सारु भगवाननी इच्छाए जे गोलोकथी पृथ्वीनेविषे आव्यां एते कांइ पड्यां न कहेवाय ए ठेकाणेतो भगवाननीज इच्छा जाणवी, ते भगवाननी इच्छाएतो अक्षरधाममांथी पण देह धरे अने जड होय ते चैतन्य थइ जाय अने चैतन्य होय ते जड थइ जाय केमजे भगवानतो अति-समर्थ छे ते जेम करे तेम थाय पण ते भगवाननी इच्छा विनातो भगवानना धामने पामीने कोइ पडेज नहि. अने जे पडेछे तेतो आधुनिक अपक्व भक्त होय ते साधनकाळमांथीज पडेछे तेतो योग-भ्रष्ट कहेवाय. पण वैराग्य, आत्मनिष्ठा, भगवाननी भक्ति अने ब्रह्म-

१ "पार्षदप्रवरौ विष्णोर्विप्रशापात्पदाच्युतौ" एम भागवतमां कह्युं छे । २ आ वात ब्रह्मवैवर्तपुराणमां प्रसिद्ध छे ।

चर्यादिक जे धर्म तेणे करीने जे सिद्ध थाय तेतो जेवां श्वेतद्वीपने-विषे मुक्त छे ते सरखा छे तेतो कोइ काळे पडता नथी.

एवी रीते श्रीजिमहाराज एटली वात करीने पछी बोल्या जे ल्यो हवे अमे एक प्रश्न पुछीए, पछी मुनिए कह्युं जे पुछो, त्यारे श्रीजि-महाराज बोल्या जे "महाभारतना उद्योग पर्वने विषे सनत्सुजात ऋ-षिए धृतराष्ट्र प्रत्ये कह्युंछे जे 'एकतो प्रमाद अने बीजो मोह ए बेयनो जे त्याग करे ते सर्व प्रकारे भगवाननी मायाने तरी रह्योछे अने प्रमाद ने मोह एनुंज नाम माया छे' माटे आपणे त्यागी एवा भगवा-नना भक्त कहेवाइए छीए ने तेमां जेने प्रमाद ने मोह वर्तता हशे ने भगवानना महिमानुं बळ लइने ते भक्त प्रमादने ने मोहने टाळ्यानो खटको नहि राखतो होय ते भक्तने देह छते केवुं सुख हशे अने मरीने ते केवा सुखने पामशे ए प्रश्न छे?" पछी स्वयंप्रकाशानंद-स्वामी बोल्या जे, जे भगवाननो भक्त होय ते भगवाननुं माहात्म्य अतिशय विचारीने प्रमाद के मोह न टळे तोपण तेनी कांइ झाझी चिंता राखे नहि.[१] पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "भगवाननो भक्त होय ने तेने प्रमाद ने मोह वर्तता होय ने तेने टाळ्यानो खटको राखे तेने खोट्य केटली छे अने जे टाळ्यानो खटको न राखे तेमां शो विशेष छे?" पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामी बोल्या जे, भग-वाननुं बळ राखे अने साधननुं बळ न राखे माटे ए विशेषज छे तो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने प्रमादने मोहरूप शत्रु रह्याछे तोयपण जे गाफल रहेछे तेने तो तमे श्रेष्ठ कहोछो, जेम

१ प्रमाद अने मोहनी निवृत्ति अनायासथी थती होय तो भले, अथवा ते बन्ने भग-वानना भक्तमां रहीनेपण भगवानना महिमानी आगळ अतिराक एवा ते बन्ने शो अनर्थ करी शकवाना छे ? काइपण नहि, आटलो तात्पर्यार्थ छे।

पतिव्रता स्त्री होय ने ते पोताना पतिनी बीके ने पतिव्रतानो धर्म राख्यानी बीके अतिशय मनमां खटको राखीने कोइ पुरुष साथे हसीने ताळी ले नहि अने तेने एम मनमां बीक रहे जे 'जो हुं गाफलाइ राखीश तो मारो पति मने व्यभिचारिणी जाणशे तो मारी सेवा अंगीकार नहि करे एटले मारे पतिव्रताना धर्ममां खोव्य पडशे' एवुं जाणीने मनमां खटको राखेछे, तेम जे भक्त ए पतिव्रताना जेवी भक्ति राखे ने प्रमादने ने मोहने टाळवानो खटको राखे तेनेतो तमे मुळगी खोव्य बतावोछो. अने वळी जेम कोइक स्त्री पोताने मनमां आवे ते पुरुष साथे ताळीयो देती फरे ने पतिव्रतानो धर्म पाळवानो खटको न राखे तेम जे भक्त प्रमादने ने मोहने टाळ्यानो खटको न राखे तेनेतो तमे श्रेष्ठ बतावोछो ए ते शुं तमारी एवी अवळी समझण छे के केम छे? अने जे गाफलाइ राखशे ने ते भगवानना भक्त हशेतो तेने प्रमाद ने मोह ए बे शत्रु नड्या विना नहि रहे, जेम मदिरा पीवे तथा भांग्य पीवेतो जेम विमुखने केफ चडेछे तेमज भगवानना भक्त होय तेनेपण केफ चडे ने गांडो थाय,तेम मदिरा ने भांग्यरूप जे प्रमाद ने मोह तेतो जेम विमुख जीवने नडे तेमज भगवानना भक्तने पण नडे. अने विमुखमां ने हरिभक्तमां एटलोज फेर छे जे 'विमुखने ए बे शत्रु टळे नहि अने भगवानना भक्त जो खटको राखीने टाळवानो उपाय करेतो ए बे शत्रु नाश पामी जाय' एटलो भगवानना भक्तने विशेष छे अने जे गाफलाइ राखे तेतो भगवानना भक्त होय तोय सारो नहि.

पछी श्रीजिमहाराजे फरीने प्रश्न पुछ्यो जे "स्थूळ शरीर ते केटला तत्त्वनुं छे अने सूक्ष्म शरीर ते केटला तत्त्वनुं छे? अने स्थूळ देहमां ने सूक्ष्म देहमां बरोबर तत्त्व छे के कांइ ओछां अधिक छे? ए बे शरीरनुं

रूप करो ?" पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए ए प्रश्ननो उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहि, पछी सर्वे मुनि बोल्या जे हे महाराज! एनो उत्तर तमे कृपा करीने करो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, स्थूळ देह छे तेतो पृथ्वी आदि पंच महाभूत नामे जे पांच तत्त्व तेनुं छे अने सूक्ष्म देह छे तेतो पांच ज्ञानेंद्रियो पांच कर्मेंद्रियो पंचप्राण अने चार अंतःकरण ए नामे जे ओगणीश तत्त्व तेनुं छे अने ते स्थूळ देहनेविषेपण ज्यारे सूक्ष्म देह अनुस्यूतपणे वर्तेछे त्यारेज सर्वे क्रिया यथार्थपणे थायछे पण ते विना थती नथी, केमजे कान नेत्र आदिक जे इंद्रियोनां गोलक तेमणे युक्त एवो जे स्थूळ देह तेनेविषे तेते इंद्रियादिके युक्त एवो जे सूक्ष्म देह ते भळेछे तेणेकरीने तेते इंद्रियोना विषयनुं ग्रहण थायछे पण केवळ स्थूळ देहना गोलके करीने थतुं नथी ते माटे पंच तत्त्वनुं जे स्थूळ देह तेनेविषे ओगणीश तत्त्वनुं जे सूक्ष्म देह ते अनुस्यूतपणे रह्युं छे ते सारु स्थूळ देहनेविषे पण चोवीश तत्त्व छे अने तेमज सूक्ष्म देहनेविषे पण पंच तत्त्वनुं जे स्थूळ देह ते एकत्वपणे वर्तेछे त्यारेज सूक्ष्म देहना भोग सिद्ध थायछे अने सूक्ष्म देह ओगणीश तत्त्वनुं छे तेनेविषे पंच तत्त्वनुं स्थूळ देह भळेछे माटे सूक्ष्म देहपण चोवीश तत्त्वनुं छे. अने जो सूक्ष्म देहमां स्थूळ देह छे तो सूक्ष्म देहमां स्त्रीनो संगे[1] करेछे तेनो स्थूळ देहमां वीर्यपात थइ जायछे माटे स्थूळ देहने सूक्ष्म देहनी जाग्रत अवस्थानेविषे ने स्वप्न अवस्थाने विषे एकता छे.

पछी मुनिए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! आतो जेवुं स्थूळ देह छे तेवुंज सूक्ष्म देह थयुं त्यारे जेम स्थूळ देहमां कर्म लागेछे तेमज सूक्ष्म देहमां लागेछे के कांइ फेर छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,

१ सकल्पात्मक सभोग ।

स्थूळ देहनेविषे जेवी द्द पोतापणानी मानीनता छे तेवीज जो सूक्ष्म देहनेविषे मानीनता होय तो जेवुं स्थूळ देहमां कर्म लागेछे तेवुंज सूक्ष्म देहमांपण लागे. अने जे सूक्ष्म देहनां कर्मने अल्प कह्यां छे तेतो जीवने हिमत देवा सारु छे. अने जेने स्थूळ देहनेविषे तथा सूक्ष्म देहनेविषे अभिमान नथी तेनेतो स्थूळ देहनुं कर्मपण लागतुं नथी ने सूक्ष्म देहनुंपण लागतुं नथी, केमजे एतो केवळ आत्मसत्तारूपेज वर्तेछे माटे एवा जे आत्मज्ञानी होय तेनेतो स्थूळदेहसंबन्धि तथा सूक्ष्मदेहसंबन्धि कर्म लागे नहि. अने ते आ देहे करीने अशुभ कर्मने तो करेज नहि अने प्रारब्धानुसारे जे सुख दुःख आवे तेने तो भोगवे अने भोगवतो थको एम माने जे 'हुं एनो भोक्ता नथी हुं तो आत्मा छुं' अने जे अज्ञानी देहाभिमानी होय तेने तो स्थूळ देह अथवा सूक्ष्म देहसंबन्धि सर्व कर्म लागेछे अने ते कर्म प्रमाणे सुखदुःखने पण भोगवेछे, केमजे जे अज्ञानी छे ते जेजे विषयने भोगवे ते भोगवतो थको पोताने देहरूपे मानीने एम माने जे 'हुं ए विषयनो भोक्ता छुं' पछी ज्यारे अंत समो आवे त्यारे ते अज्ञानी जीवनेतो यमना दूत देखाय ने देहनी विस्मृति थइ जाय ने मूर्छा अवस्था आवेछे पछी ते यमना दूत देहने मुकावीने जीवने जुदो करेछे त्यारे ए जीवने प्रेतनो देह बंधायछे पछी ते देहे करीने यमपुरीना कष्टने भोगवेछे. अने ज्ञानी एवो जे भगवाननो भक्त तेनेतो अंतकाळे भगवान् के भगवानना संत देखायछे ने एनेपण देहनी विस्मृति थइ जाय ने मूर्छा अवस्था आवेछे पछी ए देहने मुकीने जुदो थायछे त्यारे ए भक्तने भगवान् भागवती तनु आपेछे ने ते देहे करीने ए भगवानना धामनेविषे रहेछे। इति वचनामृतम् ॥ १४ ॥ ९२ ॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि ४ चोथने दिवस श्रीजिमहाराज

गामश्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ल्यो अमे प्रश्न करीए छीए जे "बे प्रकारना भगवानना भक्त छे तेमां एकनेतो भगवाननेविषे अत्यंत प्रीति छे अने भगवानना दर्शन विना क्षणमात्रपण रहेवातुं नथी अने तेनो प्रेम बाहेर पण घणो दीठामां आवेछे. अने बीजो जे भगवाननो भक्त छे तेनेतो आत्मनिष्ठा पण छे अने वैराग्यपण परिपूर्ण छे अने भगवाननेविषे प्रीति पण छे तोपण तेनो प्रेम प्रथम कह्यो जे भक्त तेना जेवो जणातो नथी अने प्रथम कह्यो तेनेतो आत्मनिष्ठा ने वैराग्य ए बेय नथी तोपण एनी भक्ति अतिशय शोभेछे अने आत्मनिष्ठा ने वैराग्ये युक्त छे तोपण तेनी भक्तितो प्रथम कह्यो जे भक्त तेना जेवी शोभती नथी ए बे प्रकारना भक्तमां केनी भक्ति श्रेष्ठ छे ने केनी भक्ति कनिष्ठ छे ए प्रश्न छे १" पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामी बोल्या जे, आत्मनिष्ठा अने वैराग्य नथी तोपण जेने भगवानमां अतिशय प्रेम छे तेज सरस छे. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "जेने वैराग्य ने आत्मनिष्ठा नथी तेने श्रेष्ठ कहोछो ते शी समझणे कहोछो ? केमजे एतो देहाभिमानी छे माटे ज्यारे एना देहने सुख थाय एवा पंच विषयनो योग थशे त्यारे एने विषयमां प्रीति थइ जशे पछी भगवाननेविषे एवी प्रीति नहि रहे तेने तमे श्रेष्ठ केम कहोछो ?" पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामी बोल्या जे, जेने विषयमां प्रीति थइ जाय एने अमे प्रेमी कहेता नथी अमेतो गोपीयो जेवा

१ "क्षणं युगशतमिव यासां येन विनाऽभवत्" आ वचनथी भगवानमां गोपीयोनो प्रेम वर्णव्यो छे ।

भक्त होय तेने कहीए छीए. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे गोपीयो कांइ भोळियो नहोती एतो आत्मनिष्ठा ने वैराग्ये युक्त होय तेनी समझणने उल्लंघी जाय एवी डाहियो हती, जेम कोइक राजनीतिनो जाणनारो होय ने ते बोले तेना जेवुंतो गोपीयोने बोल्यामां डहापण हतुं अने भगवानने पण जेम यथार्थपणे जाण्या जोइए तेम जाणती हती अने सर्वे यादवमां अतिशय डाह्या ने भगवानना चोवटिया एवा जे उद्धवजी ते गोपीयोनी समझण जोइने गद्गद कंठ थइ गया अने ते उद्धवजी एम बोल्या जे 'गोपीयो पासे मने ज्ञान कहेवा मोकल्यो तेतो भगवाने मारी उपर अतिशय अनुग्रह कर्यो' अने पोते गोपीयोने उपदेश करवा गया हता पण गोपीयोनां वचन सांभळीने पोते सामो उपदेश ग्रहण कर्यो. अने तमे कहेशो जे 'गोपीयोतो एवी बुद्धिमान नहोती' तो एमांतो मुग्धा, मध्या अने प्रौढा ए त्रण प्रकारना भेद हता, तेमां मुग्धानुं एवुं लक्षण छे जे एकतो भगवान् उपर धोखो घणो करे अने एम बोले जे 'अमे तमारे अर्थे करी करीने मरी गयां तोपण तमे नजरमां लावता नथी' अने एम करतां जो वधु छेडे तो भगवान् साथे रीश करे अने तोछडां तोछडां वचन बोले जे 'जाणीए हमणां विमुख थइ जशे' एवी जातनां जेनां शास्त्रनेविषे वचन होय ते गोपीने मुग्धा जाणवी. अने जे मध्या होय तेतो कोइ दिवस भगवान् सामो क्रोध न करे अने तोछडुं वचन पण न कहे अने डहापणे करीने युक्ति युक्तिए पोतानुं स्वार्थीपणुं बीजाने जणावा दे नहि अने पोतानुं काम साधे ते भेळुं भगवाननुं गमतुं करे पण एकलुं भगवाननुं गमतुं करे नहि अने जो भगवाननुंज गमतुं करवुं पडे तोपण कांइक पोतानुं गमतुं करवानी युक्ति जरुर राखे एवां जेनां शास्त्रनेविषे वचन होय ते गोपीने मध्या जाणवी. अने जे प्रौढा होय

तेतो केवळ भगवानना गमता प्रमाणेज चाले अने कोइ रीते पोताना स्वार्थने अर्थे युक्ति करे नहि अने केवळ भगवानने राजी करवाने इच्छे अने जे रीते भगवान् राजी थाय ते रीतेज पोते राजी रहे अने पोतानी वरोबरनी जे बीजी गोपीयो होय ते उपर ईर्ष्या क्रोध करेज नहि अने मान मत्सर आदिक सर्वे विकारनो त्याग करीने भगवानती सेवामां सावधान रहे अने जेणे करीने भगवान् कुराजी थाय तेवुं आचरणतो मन कर्म वचने करीने कोइ काळे करे नहि एवां जेनां शास्त्रमां वचन होय ते गोपीने प्रौढा जाणवी. एवी रीते मुग्धा, मध्या अने प्रौढा एवा गोपीयोना भेद छे माटे गोपीयोनी समझणमांतो अतिशय विवेक हतो ते माटे एनी प्रीति अणसमझणनी कहेवाय नहि अने गोपीयोतो यथार्थ भगवानना महिमाने जाणती हती अने ते महिमाने प्रतापे करीने आत्मनिष्ठा ने वैराग्य सहजे एना हइयामां वर्तता हता माटे ए गोपीयोने विपेतो आत्मनिष्ठा ने वैराग्य आदिक अनंत जे कल्याणकारी गुण ते भगवानना माहात्म्यने प्रतापे करीने सर्वे संपूर्ण हता. अने एवा भक्तनी रीततो आम छे जे 'शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए जे पांच विपय ते भगवान संबन्धीज इच्छे पण बीजा कोइ संबन्धी इच्छे नहि अनें भगवाननेविपे ए पंच विपये करीने जे अतिशय हेत ते हेते करीने वैराग्य ने आत्मनिष्ठा नथी तोपण भगवान् विना बीजो कोइ जगतनो घाट हइयामां थाय नहि' अने जेम वर्षात न वरस्यो होय त्यारे नाना प्रकारनां तृणनां जे बीज ते पृथ्वी उपर कांइए भासे नहि अने ज्यारे वर्षात वरशे त्यारे एटलां तृण उगे जे पृथ्वीज देखाय नहि, तेम जे आत्मनिष्ठा ने वैराग्ये करीने रहित छे तेने जो भगवान् विना बीजा कोइ विपयना घाट जणाता

नथी तोयपण ज्यारे एने कुसंगनो योग थशे त्यारे विषयना धाट थवा लागशे ने बुद्धि भ्रष्ट थइ जशे ने परमेश्वरनीतो हृदयामां स्मृतिपण नहि रहे ने अखंड विषयनुं ध्यान थशे पछी ए जे वैराग्य ने आत्मनिष्ठा विनानो प्रेमी तेने एम भासशे जे 'मारे भगवानमां लेशमात्र प्रीति नथी' माटे आत्मनिष्ठा ने वैराग्य विनानो जे प्रेमी भक्त जणातो होय तेतो अतिशय न्यून छे अने जेने आत्मनिष्ठा छे ने वैराग्य छे ने भगवानमां प्रीतिपण साधारण जेवीज छे तेतो एम जाणेछे जे 'मारा जीवात्माने विषेज आ भगवाननी मूर्ति अखंड विराजमान छे' एम जाणीने उपरथीतो भगवाननी मूर्तिनां दर्शन स्पर्शादिकनेविषे आतुरता जेवुं नथी जणातुं ने शांतपणा जेवुं जणायछे तोपण एनी प्रीतिनां मूळ उंडां छे ते कोई कुसंगने योगे करीने पण एनी प्रीति ओछी थाय एवी नथी माटे ए भक्त श्रेष्ठ छे ने एकांतिक छे । इति वचनामृतम् ॥ १५ ॥ ९२ ॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि ५ पंचमीने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी परमानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे 'श्रीनरनारायण ऋषि जेते बदरिकाश्रममां रह्या थका आ भरतखंडना सर्वे मनुष्यनां कल्याणने अर्थे अने सुखने अर्थे तपने करेछे' त्यारे सर्वे मनुष्य कल्याणना मार्गनेविषे केम नथी प्रवर्तता ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तरतो ते श्रीमद्भागवतना पंचम

१ "भारतेऽपि वर्षे ....अनुग्रहायात्मवतामनुकम्पया" आ गद्यमा कह्यु छे ।

स्कंधने विषेज छे जे 'ए भगवान् तप करेछे तेतो पोताना भक्तने अर्थे करेछे पण अभक्तने अर्थे नथी करता' केवी रीतेतो आ भरतखंडने-विषे अतिशय दुर्लभ एवो जे मनुष्य देह तेनेजाणीनेजे जन भगवानना शरणने पामेछे ने भगवाननी भक्ति करेछे ते जनना अनुग्रहने अर्थे तपस्विना जेवो छे वेष जेनो एवा जे श्रीनरनारायण भगवान् ते जेते कृपाए करीने मोटुं तप करेछे अने पोतानेविषे निरंतर अधिकपणे वर्तता एवा जे धर्म, ज्ञान, वैराग्य, उपशम, ऐश्वर्य ए आदिक गुण तेणे युक्त एवुं जे तप तेने करता थका ते भगवान् जेते आ जगतनो रात्रिप्रलय थाय त्यांसुधी बदरिकाश्रमने विषे रह्या छे अने भरतखंडने विषे रह्या जेते पोताना भक्तजन तेमना जे धर्म ज्ञानादिक गुण ते जे ते अतिशय अल्प होय तोपण ते भगवानना गुणे युक्त तपने प्रतापे करीने थोडाक काळमांज अतिशय वृद्धिने पामेछे अने ते पछी ते भक्तजनना हृदयनेविषे भगवाननी इच्छाए करीने जणातुं जे अक्षरब्रह्ममय एवुं तेज तेनेविषे साक्षात् एवा जे श्रीकृष्णभगवान् तेनुं दर्शन थायछे एवी रीते जे पोताना भक्त छे तेमनुं ते भगवानना तपे करीने निर्विघ्न कल्याण थायछे पण जे भगवानना भक्त नथी तेमनुं कल्याण थतुं नथी, एवी रीते ए प्रश्ननो उत्तर छे। इति वचनामृतम्॥ १६॥ ९४॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि ६ छठ्यने दिवस संध्यासमे श्रीजिमहाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवानना भजननो करनारो जे

जीव तेनी दृष्टि जेमजेम सूक्ष्म थती जायछे तेमतेम एने परमेश्वरनुं परपणुं जणातुं जायछे अने भगवाननो महिमापण अधिक अधिक जणातो जायछे, ते ज्यारे ए भक्त पोताने देहरूपे मानतो होय त्यारे भगवानने जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिना साक्षी जाणे अने ज्यारे पोताने जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति थकी पर माने त्यारे भगवान् तेथकी पर भासेछे, पछी जेमजेम सूक्ष्म दृष्टि थती जाय तेमतेम भगवानने पोताथकी पर जाणतो जाय अने महिमापण वधु वधु समझतो जाय अने पछी जेमजेम पोतानी वृत्ति हेते करीने भगवान् संघाथे चोटती जाय तेमतेम उपासना सुधी दृढ थती जाय, त्यां दृष्टांत छे-जेम समुद्र छे तेनेविषे कीडी पण जइने पाणी पीवे अने चरकलुं पण पीवे ने मनुष्य, पशु, घोडा, हाथी तथा मोटा मोटा मगर मत्स्य ए सर्वे समुद्रनुं जळ पीइने बळीया थायछे पण समुद्र लेशमात्र ओछो थतो नथी अने जेजे जीवनुं जेवुं जेवुं मोटुं गजुं होय तेते जीव ते प्रमाणे समुद्रनो महिमा वधु जाणेछे. वळी बीजुं दृष्टांत छे-जेम आकाश छे तेनेविषे मच्छर उडे ने चरकलुं उडे ने समळा उडे ने सीचाणोपण उडे ने अनळपक्षीपण उडे ने गरुडपण उडे तोपण ए सर्वेने आकाश अपारनो अपार रहेछे अने जेने पांसने विषे वधु बळ होय ते आकाशनो महिमा वधु जाणेछे अने पोतानेविषे न्यूनपणुं समझतो जाय छे, तेम मरीच्यादिक प्रजापतिनी पेठे अल्प उपासनावाळा भक्ततो मच्छर जेवा छे अने ब्रह्मादिकनी पेठे तेथी अधिक उपासनावाळा भक्ततो चरकला जेवा छे अने विराट्पुरुषादिकनी पेठे तेथी अधिक उपासनावाळा भक्ततो समळा जेवा छे अने प्रधानपुरुषनी पेठे तेथी अधिकउपासनावाळा भक्ततो सिचाणा जेवा छे अने शुद्ध प्रकृतिपुरुषनी पेठे तेथी अधिक उपासनावाळा भक्ततो अनळपक्षी जेवा छे

अने अक्षरधाममां रहेनारा जे अक्षरमुक्त तेनी पेठे तेथी अधिक उपासनावाळा भक्ततो गरुड जेवा छे. अने ए सर्वे भक्त जेमजेम वधु वधु सामर्थिने पाम्याछे तेमतेम भगवाननो महिमा वधु वधु जाणता गयाछे अने जेमजेम वधु सामर्थिने पामता गया तेमतेम भगवानने विषे स्वामीसेवकपणानो भावपण अतिदृढ थतो गयोछे. अने ज्यारे भजननो करनारो जीवरूपे हतो त्यारे ए जीवमां खद्योत जेटलो प्रकाश हतो पछी जेमजेम भगवाननुं भजन करतां करतां आवरण टळतुं गयुं तेमतेम दिवा जेवो थयो पछी मशाल जेवो थयो पछी अग्निनी ज्वाळा जेवो थयो पछी दावानळ जेवो थयो पछी विजळी जेवो थयो पछी चंद्रमा जेवो थयो पछी सूर्य जेवो थयो पछी प्रलयकाळना अग्नि जेवो थयो पछी महातेज जेवो थयो, एवी रीते प्रकाशपण वृद्धिने पाम्यो अने सामर्थिपण वृद्धिने पामी अने सुखपण वृद्धिने पाम्युं, एवी रीते खद्योतथी करीने महातेज पर्यंत आद्य, मध्य अने अंत जे भेद कह्या ते सर्वे मुक्तना भेद छे, ते जेमजेम अधिक स्थितिने पामता गया ने भगवाननो महिमा अधिक जाणता गया तेमतेम मुक्तपणामां विशेषपणुं आवतुं गयुं, एम कहीने श्रीजिमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने उठ्या, पछी आंबलीनी डाळखीने झालीने उगमणे मुखारविंदे उभा रह्या थका बोल्या जे, जेम पुन्यमना चंद्रमानुं मंडळ होय ते आंहिथीतो नानी थाळी जेवुं देखायछे पण जेमजेम एनी समीपे जाय तेमतेम मोटुं मोटुं जणातुं जाय पछी अतिशय ढुंकडो जाय त्यारेतो दृष्टिपण पहोंचि शके नहि एवुं मोटुं जणाय, तेम मायारूपी अंतराय टळीने जेमजेम भगवानने ढुंकडुं थवायछे तेमतेम भगवाननी पण अति अपार मोटप जणाती जायछे अने भगवाननेविषे दासपणुं पण अतिदृढ थतुं जायछे। इति वचनामृतम् ॥ १७ ॥ ९५ ॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि ८ आठमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीसारंगपुरमध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती अने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती ने उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे श्रद्धावान् पुरुष होय अने तेने जो साचा संतनो संग मळे अने ते संतना वचनने विषे श्रद्धावान् थाय तो एना हृदयने विषे स्वधर्म, वैराग्य, विवेक, ज्ञान, भक्ति आदिक जे कल्याणकारी गुण ते सर्वे प्रकट थइ आवेछे अने कामक्रोधादिक जे विकार ते वळी जायछे. अने जो कुसंग मळे ने कुसंगीना वचनने विषे श्रद्धावान् थाय तो वैराग्य विवेकादिक जे गुण ते सर्वे नाश पामी जायछे, जेम खार भूमि होय ने तेनेविषे गमे तेटलो मेघ वरसे पण तेमां तृणादिक उगतां न होय अने तेज खार भूमिनेविषे जो पाणीनी रेल आवे तो खार सर्वे धोवइ जाय अने जे ठेकाणे खार हतो ते ठेकाणे कांप चडी जाय पछी ते कांप भेळां वड पिंपळा आदिक वृक्षनां बीज आव्यां होय ते बीज उगीने मोटां मोटां वृक्ष थायछे, तेम जेना हृदयनेविषे पूर्वे कह्या जे स्वधर्मादिक गुण ते दृढ होय अने जगत् संबन्धि विषय सुखनो अंकुरपण उठे एम न होय ने तेने जो कुसंग थाय तो तेना हृदयनेविषे कुसंगरूपी पाणीने वेगे करीने जगतवार्तारूपीयो आवीने कांप भराय पछी ते कांपमां काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सरादिक जे बीज रह्यां छे ते सर्वे उगीने मोटां मोटां वृक्ष थायछे माटे भगवानना भक्त होय तेने कोइ दिवस कुसंग न करवो. अने वळी पोतामां कोइ स्वभाव होय ने तेने संतनो समागम करीने समजी

विचारीने टाळे तो ते स्वभावनो नाश थइ जायछे पण मूर्खाइए करीने गमे तेटला उपाय करे तोय भूंडो स्वभाव टळे नहि अने मूर्ख होय ते ज्यारे मुंझाय त्यारे कांतो सुइ रहे ने कांतो रुवे अने कांतो कोइक साथे वढे ने कांतो उपवास करे ए चार प्रकारे करीने मुंझवण टाळ्यानो उपाय करे अने एम करतां जो अतिशय मुंझाय तो छेली वाकी मरे पण खरो, एवी रीते मूर्खने शोक टाळ्यानो उपाय छे पण एम कर्या थकी दुःखपण मटे नहि ने स्वभावपण टळे नहि अने समझीने टाळे तो दुःख ने स्वभाव ए वेय टळी जाय माटे समझु होय तेज सुखी थायछे. अने जेम अग्निनी मोटी ज्वाळा होय ने जो उपरथी जळ वरसे तो तत्काळ ओलाइ जाय अने विजळीना अग्निनोतो थोडोक झबकारो थतो होय पण ते अग्नि मेघनी घटामां रहेछे तोपण ओलातो नथी, तेम समझ्या विना गमे तेटलो वैराग्य होय अथवा भगवानमां प्रीति होय तोपण अग्निनी ज्वाळानी पेठे कुसंगरूपी जळे करीने सर्वे नाश थइ जायछे अने समझीने जे वैराग्य ने प्रीति होय तेतो वीजळीना अग्नि जेवी छे ते थोडी होय तोपण नाश न पामे.

पछी निर्विकारानंदस्वामीए पुछ्युं जे, "हे महाराज! कोइक पुरुषमां क्रोधादिक भूंडा स्वभाव होय ते टळे के न टळे?" पछी श्रीजिमहाराज वोल्या जे, जेम वाणीयो होय ते जेटलो वेपार करे तेनुं नामुं मांडी राखेछे तेनी पेठे जे दिवस थकी सत्संग थयोछे ते दिवसथी जेणे नामुं मांडी राख्युं होय तेनो स्वभाव टळेछे अने ते एम विचारे जे 'ज्यारे मारे सत्संग नहोतो त्यारे मारे आटलो मलिन स्वभाव हतो अने सत्संग कर्या पछी आटलो स्वभाव उत्तम थयोछे अने वर्षोवर्ष पोतानो वधारो थतो होय अथवा कांइ फेर रहेतो होय ते सर्वेने तपास्या करे

पण मूर्ख वाणीयो जेम नामुं मांडे नहि तेनी पेठे न करे' एवी रीते जे सत्संग करीने पोतानो जो तपास करतो रहे तो तेना जेजे स्वभाव होय ते सर्वे नाश पामी जायछे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "कुसंग होय त्यारे तो भूंडो स्वभाव होयज पण संतनो समागम करीने पछी मलिन स्वभाव आवी जायछे तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यारे बाळ अवस्था होय त्यारे काम, क्रोध, लोभादिक शत्रु होय नहि अने भगवानमां प्रीतिपण विशेष होय पछी ज्यारे युवान अवस्था आवे त्यारे कामादिक शत्रुनो वधारो थाय अने देहाभिमान पण वधे पछी ते जो जे संतनेविषे कामादिक शत्रु न होय तथा देहाभिमाने रहित होय एवा संतनो समागम राखे तो युवान अवस्थारूपी समुद्रने तरी जायछे अने जो एम न करे तो कामादिक शत्रुए करीने पराभव पामीने भ्रष्ट थइ जायछे. अने जेनी प्रौढ अवस्थाहोय अने ते सत्संग करतां थकां वगडेछे तेनुंतो कारण ए छे जे मोटा पुरुष होय तेनेविषे जेजे जातना दोष परठे तेते जातना दोष पोताना हइयामां आवीने निवास करेछे अने जो मोटा पुरुषना गुणनुं ग्रहण करे अने एम जाणे जे "मोटा पुरुष जेजे स्वभाव राखेछे तेतो जीवना कल्याणने अर्थे छे अने मोटा पुरुषतो निर्दोष छे अने मने दोष जणाणो तेतो मारी कुमतिए करीने जणाणो छे" एम विचारीने सत्पुरुषनो गुण ग्रहण करे अने पोताना अपराधने क्षमा करावे तो ते पुरुषनी मलिनता मटी जायछे.

पछी महानुभावानंदस्वामीए पुछ्युं जे "राजसी तामसी ने सात्त्विकी ए जे त्रण गुणना स्वभाव ते साधन करतां थकां टळेछे के नथी टळता?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए सर्वे स्वभाव टाळ्या टळेछे.

पछी वळी महानुभावानंदस्वामीए पुछ्युं जे "दुर्वासादिक मुक्त थया छे तोपण ते तामसी केम रह्या छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, दुर्वासादिकमां जे तमोगुण आदिक गुण वर्तेछे तेतो पोताने ए गुण राखवा छे माटे रह्या छे अने ते एम जाणेछे जे 'कोइक अवळो चालतो होय तेने शिक्षा कर्या सारु आपणे तमोगुण छे ते बहु रुडो छे' एम गुण जाणीने राख्योछे अने ज्यारे पोतामां जे स्वभाव वर्ततो होय ने ते उपर अभाव आवे जे 'हुं भगवाननो भक्त छुं ते मारे आवो भूंडो स्वभाव जोइये नहि' एवी रीते दोषरूप जाणीने जेजे स्वभावने तजवाने इच्छे तो भगवानने प्रतापे करीने तेते स्वभावनी निवृत्ति थइ जायछे । इति वचनामृतम् ॥ १८ ॥ ९६ ॥

श्रीसारंगपुरप्रकरणं समाप्तम् ।

श्रीकारियाणी-वचनामृतम् ।

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि १२ द्वादशीने दिवस गाम श्रीकारियाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए सुरतना हरिभक्त जादवजी छपरपलंग लाव्या हता ते ढाळ्यो हतो ने ते पलंग उपर रेशमनुं गादलुं घोळा ओछाडे सहित विछाव्युं हतुं ने तेनी उपर धोळो तकीयो तथा लाल मशरुनां ढीचणीयां मुक्यां हतां अने ते पलंगनी उपर चारेकोरे सोनेरी कसबना सेजबंध लटकता हता एवी शोभाए युक्त जेते पलंग तेनी उपर श्रीजिमहाराज उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने सोनेरी छेडानो धोळो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो अने सोनेरी छेडानुं शेलुं ओढ्युं हतुं ने काळा छेडानो धोळो खेस पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. अने श्रीजिमहाराजना मुखारविंदरूप चंद्रमा सामा चकोरनी पेठे सर्वे भक्तजन जोइ रह्या हता.

पछी श्रीजिमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे मांहोमांहि प्रश्न उत्तर करो, त्यारे भूधरानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननो निश्चय थायछे ते अंतःकरणमां थायछे के जीवमां थायछे?" त्यारे तेनो उत्तर शिवानंदस्वामीए करवा मांड्यो पण थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ जीव छे ते बुद्धिए करीने जाणेछे अने ते बुद्धि छे ते सर्वनुं[1] कारण छे ने सर्वथी मोटीछे माटे ते बुद्धि मन-

१ सर्वे ज्ञाननुं ।

नेविषे रहीछे चित्तनेविषे रहीछे अहंकारनेविषे रहीछे श्रोत्रनेविषे रहीछे चक्षुनेविषे रहीछे घ्राणनेविषे रहीछे जिह्वानेविषे रहीछे वाणीनेविषे रहीछे त्वचानेविषे रहीछे हाथनेविषे रहीछे पगनेविषे रहीछे शिश्ननेविषे रहीछे गुदानेविषे रहीछे एवी रीते बुद्धि जेते नखशिखापर्यन्त आ शरीरनेविषे व्यापीने रहीछे अने ते बुद्धिनेविषे जीव रह्योछे पण ते जीव जणातो नथी अने एकली बुद्धि जणायछे, त्यां दृष्टांत छे–जेम अग्निनी ज्वाळा घटेछे ने वधेछे ते वायुए करीने वधेछे ने घटेछे अने ते अग्निनी ज्वाळा वधती घटती जणायछे पण वायु जणातो नथी अने जेम अग्नि लइने छाणामां मुकीए ने ते छाणामां सळगवा मांडे तेने लइने ज्यां वायु न होय त्यां मुकीए ते धुंमाडो उंचो चडवा मांडे ते धुंमाडोज उंचो चडतो जणाय पण तेमां वायु जणातो नथी अने जेम आकाशने विषे वादळां चालेछे ते वायुए करीने चालेछे ते वादळां चालतां जणायछे पण तेमां रह्यो एवो जे वायु ते जणातो नथी, तेम ज्वाळा धुंमाडो ने वादळां तेने ठेकाणे बुद्धि जाणवी अने वायुने ठेकाणे जीव जाणवो, ते जीव केवो छे तो बुद्धिए कर्यो जे निश्चय तेने जाणेछे अने ते बुद्धिमां निश्चयनी विगतीनो करनारो जे ब्रह्मा तेनेपण जाणेछे अने मनना संकल्पने जाणेछे अने ते मनना संकल्पनी विगतीनो करनारो जे चंद्रमा तेनेपण जाणेछे अने चित्तना चिंतवनने जाणेछे अने ते चित्तना चिंतवननी विगती करनारा जे वासुदेव तेनेपण जाणेछे अने अहंकारनी अहंमतिने जाणेछे अने ते अहंमतिनी विगतीना करनारा जे रुद्र तेनेपण जाणेछे एवी रीते जे चार अंतःकरण ने दश इंद्रियो तेना जे विषय ने ते विषयनी विगतीना करनारा जे देवता ए सर्वेने एककळावच्छिन्न जाणेछे, एवो जे जीव ते जीव जेते एकदेशस्थ जणायछे अ-

ने वरछीनी अणी जेवो तीखो जणायछे अने अतिशय सूक्ष्म जणायछे ते बुद्धिए सहित छे माटे एवो सूक्ष्म जणायछे पण ज्यारे ए जीवने देह इंद्रियो अंतःकरण देवता अने विषय तेना प्रकाशकपणे जाणीए त्यारेतो जीव बहु मोटो जणायछे अने व्यापक जणायछे ते बुद्धिए रहित छे अने अनुमाने करीने जणायछे पण साक्षात्कार नथी जणातो, त्यां दृष्टांत छे-जेम कोइक दश मणनी तरवार होय तेने जोइने माणस अनुमान करे जे 'ए तरवारनो उपाडनारो बहु मोटो हशे?' तेम ए सर्व देह इंद्रियादिकने एककाळे प्रकाशेछे माटे ए जीव बहु मोटो छे एवी रीते अनुमाने करीने जणायछे, एवी रीते श्रीजिमहाराजे उत्तर कर्यो.

त्यारे नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! एमांते शुं उत्तर थयो?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एमांतो ए उत्तर थयो जे, ज्यारे बुद्धिमां निश्चय थयो त्यारे जीवमांपण निश्चय थइ गयो एम जाणवुं, ते केवी रीते थायछे तो प्रथम इंद्रियोमां निश्चय थायछे पछी अहंकारमां निश्चय थायछे पछी चित्तमां निश्चय थायछे पछी मनमां निश्चय थायछे पछी बुद्धिमां निश्चय थायछे पछी जीवमां निश्चय थायछे, एम श्रीजिमहाराजे कह्युं.

त्यारे नित्यानंदस्वामीए वळी पुछ्युं जे "हे महाराज? इंद्रियोमां निश्चय होय ते केम जणाय ने अंतःकरणमां निश्चय होय ते केम जणाय ने जीवमां निश्चय होय ते केम जणाय?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे इंद्रियोमां निश्चय ते एम जाणवो जे, आ जगतनेविषे जे जे पदार्थ छे ते दिठामां सांभळ्यामां सुंघ्यामां अड्यामां आवेछे तेमां केटलांक शुभ

[1] १ युधिष्ठिरद्वारा धर्मप्रवर्तन विगेरे।

छे ने केटलांक अशुभ[1] छे अने केटलांक सुखरूप[2] छे ने केटलांक दुःखरूप[3] छे अने केटलांक प्रिय[4] छे ने केटलांक अप्रिय[5] छे अने केटलांक योग्य[6] छे ने केटलांक अयोग्य[7] छे ए सर्वे भगवानमां जणाय तेणे करीने कोइ संशय न थाय तो एने इंद्रियोमां निश्चय जाणवो। अने सत्त्व रज अने तम ए त्रण गुणनां जे कार्य छे तेमां आळस निद्रादिक तमोगुणनुं कार्य छे अने काम क्रोधादिक रजोगुणनुं कार्य छे अने शमदमादिक सत्त्वगुणनुं कार्य छे ए सर्वे भगवानमां देखाय पण तेमां कोइ संशय न थाय तो एने अंतःकरणमां भगवाननो निश्चय जाणवो। अने जेम ऋषभदेव भगवान् निर्विकल्प समाधिए करीने उन्मत्त थका विचर्या ने मुखमां पाणो राख्यो ने पोतानो देह दावानळमां बळी गयो तोय खबर न रही एवी रीते जे गुणातीत स्थिति ते भगवानमां जणाय तेमां कोइ संशय न थाय तो एने जीवनेविषे निश्चय जाणवो। त्यां दृष्टांत छे-जेम समुद्रमां वहाण चालेछे तेमां जे लोढानां नांगळ होय तेने समुद्रमां नाखे ते जो धरती लगण न पुग्यो होय ने तेने जो तरत ताणी ले तो झाझी महेनत न पडे ने तरत निसरी आवे अने तेने धरती लगण जवा दइने ताणे तो घणी महेनते निसरे अने जो धीरे धीरे जवा दे ने धरतीमां खुते ने भराइजाय तो पाछो ते ताण्यो तणाय नहि ने निसरे पण नहि, एम जेने जीवनेविषे निश्चय थाय तो तेनो निश्चय कोइ प्रकारे ताण्यो तणाय

---

१ युधिष्ठिरद्वारा कपटादिथी पृथ्वीना भारभूत राजाओनुं निकंदन विगेरे। २ समुद्रमां द्वारिका निर्माणादिक। ३ राजाओ साथे वैर बाधवुं विगेरे। ४ "यातावलामजं दामं" (हे अबळाओ तमे व्रजमां पाछी जाओ) आवी उक्ति विगेरे। ५ गोपीयोसाथे रमण विगेरे। ६ अघासुरादिअसुरोथी गोपबाळकादिनुं रक्षण विगेरे। ७ मातुल कंसनो वध आदिक।

नहि, एवी रीते श्रीजिमहाराजे वार्ता घणीक करी पण आतो दिश-मात्र लखी छे.

पछी चैतन्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! भगवानतो मन वाणीथकी पर छे अने गुणातीत छे तेने मायिक एवां जे इंद्रियो अंतःकरण ते केम पामे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ देह इंद्रियो ने अंतःकरण तेने जाणनारो जे जीव ते ज्यारे सुषुप्तिमां लीन थायछे त्यारे एनां इंद्रियो अंतःकरण पण सुषुप्तिमां लीन थायछे त्यारे ते समयमां ए जीवने भगवान प्रकाशेछे अने ज्यारे सुषुप्तिमांथी स्वप्नमां आवेछे त्यारे ते स्वप्न संबंधी जे स्थान भोग विषय अने जीव ए सर्वेने भगवान प्रकाशेछे अने जाग्रतमांपण भगवान प्रकाशेछे एवी रीते रूपपणे ने अरूपपणे करीने रह्यो जे जीव तेने भगवान् प्रकाशेछे अने प्रधानमांथी महत्तत्त्व थयुं अने महत्तत्त्वमांथी त्रण प्रकारनो अहंकार थयो ने ते अहंकारमांथी इंद्रियो देवता पंच भूत पंच मात्रा ए सर्वे थयां तेमनेपण जे भगवाने प्रकाश्यां छे अने ए सर्वे तत्त्वे मळीने रच्यो एवो जे विराट् तेनेपण भगवान प्रकाशेछे अने ए सर्वे ज्यारे मायामां लीन थायछे त्यारे ते मायानेपण भगवान प्रकाशेछे, एवी रीते जीव अने ईश्वर ए बेय ज्यारे रूपपणे थायछे त्यारे जे भगवान् प्रकाशेछे अने ज्यारे ए जीव ने ईश्वर बेय नामरूप रहित थका सुषुप्तिमां ने प्रधानमां रहेछे त्यारेपण जे भगवान प्रकाशेछे अने जे काळ ते ए मायादिक तत्त्वने

१ तामसकर्मना फळरूप भोगने भोगवावेछे। २ राजसकर्मना फळरूप स्वप्न भोगने भोगवावेछे। ३ सात्त्विककर्मना फळरूप भोगने भोगवावेछे। ४ जाग्रत् स्वप्नमा देहेन्द्रियादिभावे सहितपणे। ५ सुषुप्तिमां देहेन्द्रियादिभावे रहितपणे। ६ पोतपोताना कार्यमाटे शक्तिमान् करेछे।

नामरूपपणाने पमाडेछे ने अरूपपणाने पमाडेछे एवो जे काळ ते काळनेपण जे भगवान् प्रकाशेछे एवा जे भगवान् ते जेते ए इंद्रियो अंतःकरणे करीने केम जाण्यामां आवे? ए तमारो प्रश्न के नहि? त्यारे सौए कह्युं जे हे महाराज! एज प्रश्न छे, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो एम उत्तर छे जे, एवा जे भगवान् तेने आ जगतनी उत्पत्ति अने स्थितिनुं करवुं छे ते कांइ पोताने अर्थे नथी, कांजे श्रीमद्भागवतमां कह्युंछे जे–"बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् जनानाम-सृजत्प्रभुः। मात्रार्थं च भवार्थं च ह्यात्मनेऽकल्पनाय च॥" ए श्लोकमां एम कह्युंछे जे 'सर्वे जननां बुद्धि, इंद्रियो, मन अने प्राण तेने भगवान जेते सृजता हवा ते जीवने विषय भोगने अर्थे तथा जन्मने अर्थे तथा लोकांतरमां जवाने अर्थे तथा मोक्षने अर्थे सृज्यांछे' माटे आ जगतनी उत्पत्ति करेछे तेपण जीवना कल्याणने अर्थे करेछे अने स्थिति करेछे तेपण जीवना कल्याणने अर्थे करेछे अने प्रलय करेछे तेपण जीवने अर्थे करेछे, कांजे नानाप्रकारनी संसृतिए करीने थाक्या जे जीव तेना विश्रामने अर्थे प्रलय करेछे, एवी रीते सर्वप्रकारे जीवना हितने अर्थे प्रवर्त्या एवा जे भगवान् ते जेते ज्यारे कृपा करीने मनुष्य सरखा थायछे त्यारे जे जीव ते भगवानना संतनो समागम करेछे ते जीवना जाण्यामां केम न आवे? एतो आवेजं, एम श्रीजिमहाराजे कह्युं.

त्यारे भजनानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! आ श्रुतिमां एम केम कह्युंछे जे "यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह" त्यारे श्रीजिमहाराज प्रसन्नथका बोल्या जे एनुं एम छे जे, जेम पृथ्वी आका-

१ "सर्वे जनो मने, जाणो अने जुवो" आवो भगवाननो सकल्प होवाथी प्राकृत देहेन्द्रियादि भाववाळा पण प्रत्यक्ष भगवानने जाणे अने जुवेज, आटलो तात्पर्यार्थ छे।

शमां रहीछे पण आकाशना भावने नथी पामती अने जळ आकाशने विषे रह्युंछे पण आकाशना भावने नथी पामतुं अने तेज आकाशने विषे रह्युंछे पण आकाशना भावने नथी पामतुं अने वायु आकाशने विषे रह्योछे पण आकाशना भावने नथी पामतो, एमे मन वाणी भगवानने नथी पामतां.

त्यारे नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! श्रुति स्मृतिमां एम कह्युंछे जे "निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति" "बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एतो अमे अभक्तनां मन इंद्रियोने कह्युंछे पण भक्तनां मन इंद्रियोतो भगवानने साक्षात्कारपणे पामेछे, जेम आकाशने विषे रही छे जे पृथ्वी ते प्रलयकाळने समे आकाशरूप थइ जायछे अने जळपण आकाशरूप थइ जायछे अने तेजपण आकाशरूप थइ जायछे अने वायुपण आकाशरूप थइ जायछे, एम जे भगवानना भक्त होय तेनां जे देह, इंद्रियो, अंतःकरण अने प्राण ते सर्व भगवानने ज्ञाने करीने भगवानने आकारे थइ जायछे ने दिव्य थइ जायछे, कांजे भगवान पोते दिव्यमूर्ति छ तेनां इंद्रियो अंतःकरण देह तेने आकारे ए भक्तनां देह इंद्रियो अंतःकरण थायछे माटे दिव्य थइ जायछे, त्यां दृष्टांत छे—जेम भमरी इयळने झाली लावेछे ने तेने चटको लइने उपर गुंजारव करेछे तेणे करीने ते इयळ तेने ते देहे करीने तदाकार थइ जायछे पण कोइ अंग इयळनुं रहेतुं नथी भमरी जेवीज भमरी थइ जायछे, तेम भगवाननो भक्तपण एने ए देहे करीने भगवानने आकारे थइ जायछे. अने आ जे अमे वार्ता कही तेनुं हार्द

१ स्थितिकाळमा । २ सूक्ष्मताने । ३ परमेश्वरनी अपेक्षाए वागादि इन्द्रियो अतिस्थूल छे माटे तेना विषयमा भगवान् आवे नहि, एटलो तात्पर्यार्थ छे ।

ए छे जे, आत्मज्ञाने सहित जे भक्तिनिष्ठावाळो छे तथा केवळ भक्तिनिष्ठावाळो छे ते बेयनी ए गति कही छे पण केवळ आत्मनिष्ठावाळो जे कैवल्यार्थी तेनां देह, इंद्रियो अने अंतःकरण तेनुं भगवाननी मूर्तिने तदाकारपणुं नथी थतुं एतो केवळ ब्रह्मसत्ताने पामेछे, एम वार्ता करीने बोल्या जे हवे एटली वार्ता राखो अने सभा सर्वे शून्य थइ गइ छे माटे कोइक सारां सारां कीर्तन बोलो, एम कहीने पोते ध्यान करवा मंड्या ने संत कीर्तन गावा लाग्या । इति वचनामृतम् ॥ १ ॥ ९७ ॥

संवत् १८७७ ना आसो शुदि २ द्वितीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीकारीयाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने श्रीजिमहाराजनी आज्ञाए करीने नाना नाना परमहंस आगळ आवीने प्रश्न उत्तर करता हता, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे एक प्रश्न पुछीए, त्यारे सर्वे बोल्या जे पुछो महाराज, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "एकनी बुद्धितो एवी छे जे जे दहाडाथी सत्संग कर्यो होय ते दहाडाथी भगवाननो तथा संतनो अवगुण आवे खरो पण रहे नहि टळी जाय, पण एमने एम गुण अवगुण आव्या करे पण सत्संग मुकीने कोइ दिवस जाय नहि, शामाटे जे एने बुद्धि छे ते एम जाणे जे 'आवा संत ब्रह्मांडमां क्यांय नथी अने आ महाराज विना बीजो कोइ भगवान् नथी' एम समझणुं होय माटे सत्संगमां अडगपणे

१ निराकार अक्षरभावने ।

रहेछे. अने एकनीतो एवी बुद्धि छे जे संतनो अथवा भगवाननो कोइ दिवस अवगुणज आवतो नथी. अने बुद्धितो ए बेयनी सरखी छे अने भगवाननो निश्चय पण बेयने सरखो छे पण एकने अवगुण आव्या करेछे ने एकने नथी आवतो, ते जेने अवगुण आवेछे तेनी बुद्धिमां शो दोष छे ? ए प्रश्न नाना शिवानंदस्वामीने पुछीए छीए ?" पछी शिवानंदस्वामीए एनो उत्तर करवा मांड्यो पण उत्तर थयो नहि, पछी भगवदानंदस्वामी बोल्या जे, एनी बुद्धि शापित छे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ए ठीक कहेछे एनो उत्तर एज छे, जे कोइ जगतमां कहेतां नथी जे 'एनेतो कोइकनो फटकार लाग्योछे' एम मोटा संतने दुःखव्या होय अथवा कोइ गरीबने दुःखव्या होय अथवा मावापनी चाकरी न करी होय ते माटे एमणे शाप दीधो होय तेणे करीने एनी बुद्धि एवी छे.

पछी भगवदानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! एनी शापितबुद्धि छे ते केम सारी थाय ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनुंतो एम छे जे, एकतो अमे आ माथे बांधी रह्या ए वस्त्रने धोवुं होय अने एकतो मोद्य जेवुं जाडुं वस्त्र तेने धोवुं होय त्यारे ते कांइ सरखे दाखडे धोवाय नहि ? कांजे आ झीणुं वस्त्र धोवुं होय त्यारे तेमां लगारेक साबु देइने धोइ नाखीए एटले तरत उजलुं थाय अने ज्यारे जाडा वस्त्रने धोवुं होय त्यारे तेने बे चार दिवस सुधी पाणीमां पलाळी मुके ने पछी अग्निए करीने बाफे ने पछी साबु देइने धुवे त्यारे उजळुं थाय, तेम जेनी बुद्धि शापित होय ते सर्वे पाळेछे एटलुंज पाळे तो ए दोष टळे नहि अने बीजा जेम निष्कामी रहेछे निःस्वादी रहेछे निर्लोभी रहेछे निःस्नेही रहेछे निर्मानी रहेछे तेमज एने न रहेवुं; बीजा निष्कामी रहेता होय तेथी एने विशेषे निष्कामी रहेवुं अने बीजा निर्लोभी रहेता होय

तेथी एने विशेपे निर्लोभी रहेवुं अने बीजा निःस्वादी रहेता होय तेथी एने विशेपे निःस्वादी रहेवुं अने बीजा निःस्नेही रहेता होय तेथी एने विशेपे निःस्नेही रहेवुं अने बीजा निर्मानी रहेता होय तेथी एने विशेपे निर्मानी रहेवुं अने बीजा सुइ रहे ते केडे घडी मोडुं एने सुवुं अने बीजा माळा फेरवे तेथी ए विशेपे माळा फेरवे अने बीजा उठे तेथी घडी वहेलो उठे एम सर्वथी विशेपे पाळे तो एनी बुद्धि शापित टळे, नहि तो टळे नहि.

पछी मोटा शिवानंदस्वामीए मोटा योगानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे "कर्म मूर्तिमान् छे के अमूर्त छे?" त्यारे मोटा योगानंदस्वामीए कह्युं जे एनो उत्तर तो मने आवडे एम जणातुं नथी, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वस्तुताए कर्मतो अमूर्त छे अने कर्ममांथी थयुं एवुं जे शुभ अथवा अशुभ एवुं फळ तेतो मूर्तिमान् छे अने जे कर्मने मूर्तिमान् कहेछे तेतो नास्तिक कहेछे, कांजे कर्म जे क्रिया ते कांइ मूर्तिमान न होय, एवी रीते श्रीजिमहाराजे घणीक वार्ता करी तेमांथी आतो दिशमात्र लखीछे । इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ ९८ ॥

संवत् १८७७ ना आसो वदि ७ सातमने दिवस सायंकाळने समे श्रीजिमहाराज गाम श्रीकारियाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादा द्वारना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने माथे श्वेत फेंटो बांध्यो हतो ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने श्वेत चादर ओढी हती ने उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ शुकमुनि बहु मोटा साधु छे अने जे दिवसथी अमारी पासे रह्याछे ते दिवसथी एनो चडतो ने चडतो रंग छे पण मंदतो पडतो नथी माटे एतो मुक्तानंदस्वामी जेवा छे,

एम कहीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मनुष्यने परस्पर हेत थायछे ते गुणे करीने थायछे अने अवगुण आवेछे ते दोषे करीने आवेछे, ते गुणने दोषतो माणसनी उपरनी प्रकृतिए करीने ओळखाता नथी, कांजे कोइक मनुष्यतो बिडालानी पेठे हेठुं जोइने चालतो होय पण मांहितो अतिकामी होय तेने देखीने अणसमझु होय ते कहे जे 'आतो बहु मोटो साधु छे' अने कोइकतो फाटी दृष्टिए चालतो होय तेने जोइने अणसमझणवाळो होय ते एम कहे जे 'आतो असाधु छे' पण ते मांहितो महानिष्कामी होय, माटे शरीरनी उपरनी प्रकृति जोइने मनुष्यनी परीक्षा थाय नहि परीक्षातो भेळां रह्यां थायछे, भेळो रहे त्यारे बोल्यामां जणाय चाल्यामां जणाय खाते जणाय पीते जणाय सुते जणाय उठते जणाय बेठते जणाय इत्यादिक क्रियानेविषे जणायछे. अने विशेषे करीनेतो गुण अवगुण युवा अवस्थामां जणायछे पण बाळ अवस्था तथा वृद्ध अवस्थामांतो नथी जणाता, कांजे कोइक बाळ अवस्थामां ठीक न होय ने युवा अवस्थामां सरस थाय अने कोइक बाळ अवस्थामां सारो होय ने युवा अवस्थामां बगडी जायछे. अने जेने खटको होय जे 'मने आ घाट-थयो ते ठीक नहि' ने ते घाटने टाळ्यानो यत्न कर्या करे अने ते-ज्यांसुधी टळे नहि त्यांसुधी खटको राखे, एवो जेनो स्वभाव होय ते युवा अवस्थामां वधी जाय अने जेने खटको न होय ने प्रमादी होय ते वधे नहि. अने एवो सारो होय तेतो बाळरूपणामांथीज जणाय, ते उपर पोते पोताना बाळकपणाना त्यागी स्वभावनी घणीक वार्ता करीने बोल्या जे, सारो होय तेनेतो बाळपणामांथीज छोकरानी सोबत गमे नहि ने जिह्वानो स्वादीयो होय नहि ने शरीरने दम्या करे, जुवोने मने बाळपणामां स्वामी कार्तिकनी पेठे एवोज वि-

चार उपज्यो जे 'मारे मारा शरीरमां मातानो भाग जे रुधिर ने मांस ते रहेवा देवुं नथी' माटे घणेक प्रयत्ने करीने शरीर एवुं सुकवी नाख्युं जे 'शरीरमां कांइक वागेतो पाणीनुं टीपुं निसरे पण रुधिरतो निसरेज नहि' एवी रीते जे सारो होय तेतो बाळपणामांथीज जणाय.

त्यारे भजनानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! एवो विचार ते मने करीने राखे तो ठीक के शरीरने दमे ते ठीक?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, केटलाकतो शरीरना दोष छे ते जाण्या जोइए अने केटलाकतो मनना दोष छे तेपण जाण्या जोइए, तेमां शरीरना दोष ते शुं जे, शिश्न इंद्रिय वारंवार जाग्रत् थाय तथा तेमां चेळ थाय तथा ठेकडो भरवो तथा घडी एकमां सर्वने जोइ वळवुं तथा घडी एकमां घणाक प्रकारना गंध सुंघी लेवा तथा विश पचिश गउनी मजल करवी तथा बळे करीने कोइकने मळीने तेनां हाडकां भांगी नाखवां तथा स्वममां वीर्यपात थाय इत्यादिक जे दोष छे ते सर्वे देहना दोष छे पण मनना नथी, ते ए शरीरना जे दोष ते अतिशय क्षीण थइ जाय तोयपण मनमां जे कामनो संकल्प तथा खाधानो तथा पीधानो तथा चाल्यानो तथा स्पर्शनो तथा गंधनो तथा शब्दनो तथा स्वादनो जे संकल्प ते रह्या करे ते मनना दोष जाणवा, एम मनना ने शरीरना दोष जाणीने शरीरना दोषने शरीरने दमवे करीने टाळवा अने शरीर क्षीण थया पछी जे मनना दोष रह्या तेने विचारे करीने टाळवा जे 'हुं आत्मा छुं ने संकल्पथकी भिन्न छुं ने सुखरूप छुं' एवी रीते शरीरनुं दमन ने विचार ए बे जेने होय ते मोटो साधु छे अने जेने एकलुं दमन छे ने विचार नथी तो ते ठीक नहि तथा जेने एकलो विचार छे ने दमन नथी तेपण ठीक नहि, माटे ए बे जेने होय ते श्रेष्ठ छे. अने शरीरनुं

दमन ने विचार ए वे वानांतो गृहस्थ सत्संगीने पण जरुर राख्यां जोइए त्यारे त्यागीनेतो जरुर राख्यांज जोइए.

त्यारे निष्कुळानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! एम जे रहेवायछे ते विचारे करीने रहेवायछे के वैराग्ये करीने रहेवायछे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एतो मोटा संतना समागमे करीने थायछे अने जेने मोटा संतना समागमे करीनेपण न थाय तेतो महापापी छे। एम कहीने वळी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, त्यागी थइने गृहस्थने भोगववा योग्य भोगनी इच्छा राखेछे ते खड खायछे, कांजे एने ए भोग प्राप्त थनारछे नहि अने तेनी इच्छा राखेछे माटे एना समझ्यामां ए वात आवी नथी, कांजे जे गाम जवुं नहि तेनुं नाम शुं पुछवुं? तेम एणे जे पदार्थनो त्याग कर्योछे ने तेनी पाछी अभिलाषा राखेछे ते शुं आ देहे करीने एने प्राप्त थवानुं छे? तेतो जो आ सत्संगमांथी विमुख थाय तो प्राप्त थाय पण सत्संगमां रह्ये थकेतो थाय नहि, माटे सत्संगमां रह्ये थके ते भोगनी जे इच्छा राखेछे ते मूर्ख छे, केमजे सत्संगमां जे रहेशे तेनेतो जरुर पाळ्युं जोइशे, जेम कोइ सती थवाने नीसरी ने पछी अग्नि जोइने पाछी चळे तो तेने शुं तेनां सगां पाछी चळवा दे? एतो जोरे करीने बाळे. अने जेम कोइक ब्राह्मणी होय ने ते विधवा थइने ते जो सुवासिनीना जेवो वेष राखे ते शुं तेनां सगां राखवा दे? न राखवा दे, तेम जे सत्संगमां रहीने अयोग्य स्वभाव राखेछे तेने एवी रीते वात समझ्यामां आवी नथी अने जो आवी होय तो अयोग्य स्वभाव रहे नहि, एवी रीते वात करीने श्रीजिमहाराज जय स्वामिनारायण कहीने शयनने अर्थे पधारता हवा। इति वचनामृतम् ॥ ३ ॥ ९९ ॥

संवत् १८७७ ना आसो वदि ८ अष्टमीने दिवस दोढ पहोर

दिवस चढते श्रीजिमहाराज गाम श्रीकारियाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मांहोमांहि प्रश्न उत्तर करो, त्यारे गोपाळानंदस्वामीए भजनानंदस्वामीने पुछ्युं जे "आ देहने विषे जीवनुं जाणपणुं केटलुं छे ने साक्षीनुं जाणपणुं केटलुं छे ?" पछी भजनानंदस्वामीए उत्तर करवा मांड्यो पण उत्तर थयो नहि, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, बुद्धि छे ते आ देहनेविषे नखशिखापर्यंत व्यापीने रहीछे ते बुद्धि जेते सर्व इंद्रियोनी क्रियाने एककाळावच्छिन्न जाणेछे ते बुद्धिने विषे जीव व्यापीने रह्योछे ते जीवना जाणपणाने कहेवे करीने बुद्धिनुं जाणपणुं कहेवायुं अने ते जीवने विषे साक्षी रह्याछे माटे साक्षीना जाणपणाने कहेवे करीने जीवनुं जाणपणुं पण कहेवायुं.

त्यारे श्रीजिमहाराजने नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! जे आ जीवने विषे साक्षी रह्याछे ते साक्षी जे होय तेतो मूर्तिमान् होय

१ जीवना अन्तर्यामी परमात्मानु । २ जीवमां स्वाभाविकपणे ज्ञातृत्व रहेलुछे परतु ससारदशामा तेनु प्रसरण बुद्धिद्वारा थायछे तेथी 'बुद्धि जाणेछे' एवो तेमा उपचार थायछे, बुद्धितो जड छे माटे तेमा स्वत ज्ञातृत्व सभवे नहि, माटेज "जीवना जाणपणाने कहेवे करीने बुद्धिनु जाणपणु कहेवायु" एम कहेछे । जीवमा रहेलु ज्ञातृपण स्वतत्र नथी परतु तेमा अन्तर्यामीपणे रहेला परमात्माने आधीन छे परमात्मानी प्रेरणा सिवाय ज्ञाता जीवात्मा कोइपण प्रवृत्ति करी शक्तो नथी माटे जीवनी ज्ञातृता पण परमात्मानी आगळ अकिंचित्कर छे, माटेज "साक्षीना जाणपणाने कहेवे करीने जीवनु जाणपणु कहेवायु" एम कहेछे । आटलो तात्पर्यार्थ छे ।

ने जे मूर्तिमान् होय ते व्यापक केम होय?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मूर्तिमान् होय तेपण व्यापक होय, जेम अग्निदेव छे ते पोताना लोकने विषे मूर्तिमान् छे ने पोतानी शक्तिए करीने काष्ठने विषे रह्योछे, तेम भगवान पण पोताना अक्षरधामने विषे मूर्तिमान् थका पोतानी अंतर्यामीशक्तिए करीने जीवोने विषे व्यापीने रह्याछे ने मूर्तिमाननी पेठे क्रियाने करेछे माटे एनेपण मूर्तिमान् जाणवा। इति वचनामृतम् ॥ ४ ॥ १०० ॥

संवत् १८७७ ना आसो वदि १४ चौदशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीकारियाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए छपरपलंग उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, अमे एक प्रश्न पुछीए छीए, पछी मुनि बोल्या जे पुछो महाराज, पछी श्रीजिमहाराजे पुछ्युं जे "भगवान जीवना कल्याणने अर्थे पृथ्वी उपर अवतार धरेछे ते अवतार धर्या विना पोताना धाममां रह्या थका शुं कल्याण करवाने समर्थ नथी? अने कल्याणतो भगवान जेम धारे तेम करे त्यारे अवतार धर्यानुं शुं प्रयोजन छे? अने जो अवतार धरे त्यारेज भगवानमां कल्याण करवानी सामर्थि होय अने अवतार धर्या विना जीवना कल्याण न करी शकता होय तो भगवानने विषे पण एटलुं असमर्थपणुं आवे, माटे भगवानतो अवतार धरीने पण कल्याण करे अने अवतार न धरे तोपण जीवनां कल्याण करवा समर्थ छे. माटे एवा जे भगवान् तेने अवतार धर्यानुं शुं प्रयोजन छे?" ए प्रश्न छे. पछी मोटा मोटा संत हता तेमणे जेनी जेवी

बुद्धि तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं कोइथी समाधान न थयुं अने श्रीजिमहाराजे आशंका करी ते सर्वेना उत्तर खोटा थइ गया, पछी मुनि सर्वे हाथ जोडीने बोल्या जे "हे महाराज! ए प्रश्ननो उत्तरतो तमेज करो तो थाय," पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवानने अवतार धर्यानुं एज प्रयोजन छे जे, भगवाननेविषे अतिशय प्रीतिवाळा जे भक्त होय तेनी भक्तिने आधीन थइने ते भक्तने सुख देवाने अर्थे जेवी भक्तनी इच्छा होय तेवा रूपनुं धारण करेछे, पछी जेवा जेवा पोताना भक्तना मनोरथ होय ते सर्वे पुरा करेछे अने ते भक्त होय ते स्थूळभावे युक्त छे अने देहधारी छे माटे भगवानपण स्थूळभावने धारण करीने देहधारी जेवा थायछे अने ते पोताना भक्तने लाड लडावेछे अने पोतानी सामर्थीने छपाडीने ते भक्त संघाथे पुत्रभावे वर्तेछे अथवा सखाभावे वर्तेछे अथवा मित्रभावे वर्तेछे अथवा सगा संबंधीने भावे वर्तेछे तेणे करीने ए भक्तने भगवाननी झाझी मर्यादा रहेती नथी पछी जेवी ए भक्तने इच्छा होय तेवी रीते लाड लडावेछे, माटे पोताना जे प्रेमी भक्त तेना मनोरथ पुरा करवा एज भगवानने अवतार धर्यानुं [2]प्रयोजन छे अने ते भेळुं असंख्य जीवनुं कल्याणपण करेछे ने धर्मनुं स्थापनपण करेछे, [1]हवे एमां आशंका थती होय तो बोलो, पछी मुनिए कह्युं जे हे महाराज! यथार्थ उत्तर थयो । इति वचनामृतम् ॥ ५ ॥ १०१ ॥

संवत् १८७७ ना आसो वदि अमांस जे दिवाळी तेने दिवस गाम श्रीकारियाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी

१ मुख्य । २ आ अर्थ "परित्राणाय साधूनां" आ भगवद्गीता श्लोकना रामानुजभाष्यमां निरूपण कर्योछे ।

आगळ दीपमाळा पुरी हती अने ते दीपमाळा मध्ये मंच बांध्यो हतो ने ते मंच उपर छपरपलंग बिछाव्यो हतो ते उपर स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज विराजमान हता अने सोनेरी बुट्टादार राता किनखापनो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने नरनारायण स्वामिनारायण नामे अंकित एवा काळा किनखापनी डगली पहेरी हती अने माथा उपर सोनेरी तारना फरता छेडानी कसुंबल पाघ बांधी हती अने असमानी रंगनो फेंटो कमरे कसीने बांध्यो हतो अने कंठनेविषे पीळा पुष्पना हार धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी दिवबंदरना हरिभक्त आव्या हता तेणे श्रीजिमहाराजनी पूजा कर्याने अर्थे प्रार्थना करी, पछी श्रीजिमहाराजे ते सिंहासन उपरथी उतरीने ने ते भक्तजन सामा जइने तेनी पूजा अंगीकार करी, पछी तेनां आपेलां वस्त्र तथा पीळुं छत्र तथा पादुका तेनुं ग्रहण करीने पाछा ते सिंहासन उपर विराजमान थता हवा.

पछी श्रीजिमहाराज एम बोल्या जे, आटलां आटलां वर्ष थयां तेमां अमारे अर्थे केटलाक हरिभक्त वस्त्र तथा हजारो रुपीयाना अलंकार लावेछे पण अमे आवी रीते कोइ सामा जइने लेता नथी अने आवी रीते कोइनां वस्त्र घरेणां पहेरीने राजी थया नथी आजतो अमारे ए हरिभक्त उपर अतिशय राजीपो थयो, पछी मुनि बोल्या जे एवाज ए प्रेमी हरिभक्त छे, एवा समामां दीनानाथ भट्ट आवीने श्रीजिमहाराजने पगे लागीने बेठा पछी श्रीजिमहाराजे भारे भारे वस्त्र हतां ते सर्वे दीनानाथ भट्टने आप्यां.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! भगवान् पोताना

भक्त उपर कये गुणे करीने राजी थता हशे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे भक्तजन काम, क्रोध, लोभ, कपट, मान, ईर्ष्या[1] अने मत्सर एटलां वानांए रहित थइने भगवाननी भक्ति करे तेनी उपर भगवान् राजी थायछे, तेमांपण मत्सर छे ते सर्व विकारमात्रनो आधार छे, माटे श्रीव्यासजीए श्रीमद्भागवतने विषे निर्मत्सर एवा जे संत तेनेज भागवतधर्मना अधिकारी कह्याछे, माटे मत्सर ते सर्व विकारथी झीणो छे अने मत्सर टळवो तेपण घणो कठण छे.

पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "मत्सर टाळ्यानो शो उपाय छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, संतने मार्गे चाले ने जे संत होय तेनोतो मत्सर टळे अने जेने संतने मार्गे न चालवुं होय तेनेतो मत्सर न टळे.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "मत्सर उपज्यानो शो हेतु छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एक स्त्री, धन अने सारुं सारुं भोजन ए त्रण मत्सरना हेतु छे अने जेने ए त्रण वानां न होय तेने मान छे ते मत्सरनो हेतु छे अने जे मत्सरवाळो हशे तेनेतो अमे आ भट्टने वस्त्र दिधां तेमांपण मत्सर आव्यो हशे पण मत्सरवाळाने एवो विचार न आवे जे 'वस्त्र लाव्या हता तेने धन्य छे जे 'आवां भारे वस्त्र महाराजने पहेराव्यां' अने महाराजने पण धन्य छे जे 'तरत ब्राह्मणने देइ दीधां' एवो जे विचार ते मत्सरवाळाना हृदयमां न आवे अने कोइक ले अने कोइक दे तोपण मत्सरवाळो होय ते ठालो ठालो वचमां बळी मरे. अने अमारेतो काम, क्रोध, लोभ, मान, मत्सर, ईर्ष्या ए सर्वेनो क्या-

[1] ईर्ष्याशब्द अने मत्सरशब्द घणे स्थळे एकज अर्थमां वपरायछे, ज्यां बन्ने शब्दो पृथक् होय त्यां 'पोताने समान अन्यनो उत्कर्ष न सहन करी शकाय' ते ईर्ष्या अने 'पोताने समान के असमान अन्यनो उत्कर्ष न सहन करी शकाय' ते मत्सर, एवो सहज अर्थभेद समजवो।

रेथ हइयामां लेशपण आवतो नथी अने शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए जे पंच विषय तेनोतो हइयामां अतिशय अभाव वर्तेछे पण पंच विषयमांथी एकेने विषे लेशमात्र भाव थतो नथी अने जेटलुं कांइक अन्न वस्त्रादिकनुं ग्रहण करता हइशुं तेतो भक्तनी भक्तिने देखीने करता हइशुं पण पोताना देहना सुखने अर्थे नथी करता अने अमारे जे खावुं पीवुं ओढवुं पहेरवुं छे ते सर्वे संत ने सत्संगीने अर्थे छे अने जो एमने अर्थे न जणाय ने पोताने अर्थे जणाय तो अमे एनो तत्काळ त्याग करी दइए अने अमे आ देह राखीए छीए तेपण सत्संगीने अर्थेज राखीए छीए पण बीजो कोइ देह राख्यानो अर्थ नथी. ते अमारा स्वभावनेतो मूळजी ब्रह्मचारी ने सोमलो खाचर आदिक जे हरिजन छे ते केटलाक वर्षथी अमारे पासे ने पासे रहेछे ते जाणेछे जे 'महाराजने एक प्रभुना भक्त विना कोइ संघाथे हेत संबन्ध नथी ने महाराजतो आकाश सरखा निर्लेप छे' एम निरंतर अमारे पासेना रहेनारा छे ते अमारा स्वभावने जाणेछे. अने अमेतो जे मन, कर्म, वचने परमेश्वरना भक्त छे तेने अर्थे अमारो देहपण श्रीकृष्णार्पण करी राख्योछे माटे अमारेतो सर्व प्रकारे जे कोइ भगवानना भक्त छे ते संघाथे संबन्ध छे अने भगवानना भक्त विना तो अमारे चौद लोकनी संपत्ति ते त्रखला जेवी छे. अने जे भगवानना भक्त हशे ने भगवान् संघाथेज दृढ प्रीति हशे तेने पण रमणीय जे पंच विषय तेने विषेतो आनंद उपजेज नहि अने देहने राख्या सारु तो जेवा तेवा जे शब्दादिक विषय तेणे करीने गुदराण करे पण रमणीय विषय थकीतो तत्काळ उदास थइ जाय अने एवा जे होय तेज भगवानना परिपूर्ण भक्त कहेवाय। इति वचनामृतम् ॥ ६ ॥ १०२ ॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि १ पडवाने दिवस रात्रिने समे गाम श्रीकारियाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी आगळ दीपमाळा पुरी हती अने ते दीपमाळा मध्ये मंच हतो ने ते उपर पलंग विछाव्यो हतो ने ते पलंग उपर श्रीजिमहाराज विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हवां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी गाम बोचासणवाळा काशीदासे श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! त्यागी होय तेतो निवृत्तिमार्गने अनुसर्या छे ते अखंड भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखेछे अने जे गृहस्थाश्रमी छे तेतो प्रवृत्तिमार्गने अनुसर्या छे माटे तेनेतो संसारनी अनंत विटमणा वळगीछे माटे ते गृहस्थाश्रमी केम समझे तो अखंड भगवानना स्वरूपमां वृत्ति रहे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, गृहस्थनेतो एम समझवुं जे 'जेम पूर्वे चोराशी लाख जातनां मारे मावाप तथा स्त्री छोकरां थयां हतां तेवांने तेवांज आ देहनांपण छे ने केटलाक जन्मनी मा बोन दीकरीयो ते केटलीक रझळती हशे तेनी जेम मारे ममता नथी तेम आ देहना संबन्धी तेनीपण मारे ममता न राखवी' एवी रीते विचार करीने सर्वमांथी प्रीति तोडीने भगवानने विषे दृढ प्रीति करे ने साधुनो समागम राखे तो गृहस्थनेपण त्यागीनी पेठे अखंड भगवानमां वृत्ति रहे.

पछी एवी रीते श्रीजिमहाराजनी वात सांभळीने जे गृहस्थ सर्वे सभामां वेठा हता तेमणे हाथ जोडीने पुछ्युं जे "हे महाराज! जे गृहस्थने एवी रीते न वर्ताय तेना शा हाल थशे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एतो जे भगवान् विना अन्य पदार्थमांथी वासनामात्रने टाळीने

भगवानमां अखंड वृत्ति राखे तेनी वात कहीछे. अने जे एवो बळीयो न होय तेनेतो सत्संगनी धर्ममर्यादामां रहेवुं अने संत ने भगवान् तेनो जे पोताने आशरो छे तेनुं बळ राखवुं जे 'भगवानतो अधम उद्धारण ने पतितपावन छे ते मने साक्षात् मळ्याछे' पछी एवां श्रीजिमहाराजनां वचन सांभळीने सर्वे हरिजन अतिशय राजी थया.

पछी श्रीजिमहाराजे संतने प्रश्न पुछ्यो जे "वैराग्य उदय थयानुं शुं कारण छे?" पछी जेने जेवो भाश्यो तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी सर्वे मुनि बोल्या जे हे महाराज! एनो उत्तर तमे करो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वैराग्यनुं कारणतो ए छे जे सद्ग्रंथ ने सत्पुरुषनां वचन तेने सांभळीने जेने चटकी लागे अने चटकी लागे ते पाछी मटेज नहि एवी जे चटकी तेज वैराग्यनो हेतु छे बीजो वैराग्यनो हेतु नथी. अने जेने चटकी लागती होय ने ते तामसी होय तथा राजसी होय तथा सात्विकी होय ते सर्वेने वैराग्य उपजे अने जेने चटकी लागती न होय तेने वैराग्य न उपजे अने जेने चटकी लागीने थोडा दिवस केडे टळी जती होय तेनेतो ए चटकीनो वैराग्य अतिशय खुवार करे, केमजे ज्यारे चटकी लागे त्यारे घर मुकीने जतो रहे पछी भेख लीधा केडे जे चटकी लागी होय ते उतरी जाय अने पछवाडे घरतो धुडधाणी थइ गयुं होय पछी जेम धोबीनो कुतरो वाटनो नहि ने घाटनो नहि तेम ते पुरुष उभयभ्रष्ट थायछे अने जे दृढ वैराग्यवाळा होयछे ते परमपदने पामेछे.

पछी श्रीजिमहाराज अतिप्रसन्न थका बीजो प्रश्न परमहंस प्रत्ये पुछता हवा जे "आत्यंतिक कल्याण ते केने कहीए? अने आत्यंतिक कल्याणने पामीने जे सिद्धदशाने पाम्यो होय ते पुरुषनी सर्वे क्रियाने

विषे केवी दशा वर्तती होय?" पछी जेने जेवो भाश्यो तेवो सर्वे मुनिए उत्तर कर्यो पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी सर्वे मुनि हाथ जोडीने श्रीजिमहाराज प्रत्ये बोल्या जे हे महाराज! एनो उत्तर तमे करो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यारे ब्रह्मांडनो प्रलय थायछे त्यारे प्रकृतिनां कार्य जे चोविश तत्त्व ते सर्वे प्रकृतिनेविषे लीन थइ जायछे अने ते प्रकृतिपुरुषपण अक्षरब्रह्मना तेजमां अदृश्य थइ जायछे अने पछी एकलुं सचिदानंद (चिद्घन) जे तेज ते रहेछे अने ते तेजनेविषे दिव्यमूर्ति एवा जे पुरुषोत्तम भगवान् वासुदेव ते अखंड विराजमान रहेछे अने तेज पोते दिव्यमूर्तिथका जीवना कल्याणने अर्थे मनुष्याकृतिए करीने पृथ्वीनेविषे सर्व जनने नयनगोचर थका विचरेछे त्यारे जे जगतमां अणसमझु मूर्ख जीव छे ते ते भगवानने मायिकगुणे युक्त कहेछे पण ए मायिकगुणे युक्त नथी एतो सदा गुणातीत दिव्यमूर्तिज छे. अने तेनुं ते जे भगवाननुं साकार दिव्यस्वरूप तेने जे वेदांतशास्त्र छे ते निर्गुण अछेद्य अभेद्य सर्वत्र व्यापक एवी रीते करीने प्रतिपादन करेछे ते जीवनी बुद्धिमांथी मायिक भाव टाळवाने अर्थे निर्गुणपणे करीने प्रतिपादन करेछे अने ए भगवानतो उत्पत्ति स्थिति अने प्रलय ए सर्वे काळनेविषे एकरूपे करीनेज विराजमान छे पण मायिक पदार्थनी पेठे विकारने पामता नथी सदा दिव्यरूपे करीने विराजमान रहेछे, एवी रीते प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमनेविषे जे दृढ निष्ठा तेने आत्यंतिक कल्याण कहीए. अने एवी निष्ठाने पामीने जे सिद्धदशाने पाम्यो होय तेनी आवी दशा होय जे 'पिंड ब्रह्मांडनो तथा प्रकृतिपुरुषनो प्रलय थया पछी अक्षरधामनेविषे जे भगवाननी मूर्ति अखंड विराजमान रहेछे ते मूर्तिने स्थावर जंगम सर्वे आकारने

विषे ज्यांज्यां दृष्टि जाय त्यांत्यां साक्षात्कार देखे अने ए मूर्ति विना बीजुं अणुमात्र पण भासे नहि' ए सिद्धदशानुं लक्षण छे। इति वचनामृतम् ॥ ७ ॥ १०३ ॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि ४ चतुर्थीने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीकारियाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! वेद, शास्त्र, पुराण अने इतिहासने विषे भगवाननुं सगुण स्वरूप निरूपण कर्युंछे अने निर्गुण स्वरूपपण निरूपण कर्युंछे, ते भगवान् जे श्रीपुरुषोत्तम तेनुं निर्गुण स्वरूप केवी रीते समझवुं अने सगुण स्वरूप ते केवी रीते समझवुं? अने ते भगवाननुं निर्गुण स्वरूप समझवे करीने भगवानना भक्तने केटलो समास छे अने ते भगवाननुं सगुण स्वरूप समझवे करीने केटलो समास छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवाननुं निर्गुण स्वरूप छे तेतो सूक्ष्मथकी पण अतिसूक्ष्म छे अने पृथ्वी आदिक जे सर्व तत्त्व तेनुं आत्मा छे अने तेथकी पर जे प्रधानपुरुष तेनुं आत्मा छे अने ते प्रधानपुरुषथकी पर जे शुद्ध पुरुष ने प्रकृति तेनुं आत्मा छे अने तेथी पर जे अक्षर तेनुंपण आत्मा छे अने ए सर्वे भगवाननुं शरीर छे. अने जेम देह थकी जीव छे ते सूक्ष्म छे ने शुद्ध छे ने घणो प्रकाशमान छे तेम ए सर्वे थकी भगवान् अतिशय सूक्ष्म छे अने अतिशय शुद्ध छे अने अतिशय निर्लेप छे अने अतिप्रकाशे युक्त छे.

१ "अणोरणीयान् महतो महीयान्" आ श्रुतिमां कह्युं छे। २ धारक, नियन्ता अने शेषी।

अने जेम आकाश छे ते पृथ्वीआदिक चार भूतमां व्यापक छे ने पृथ्वीआदिक चार भूतथकी असंगी छे अने ए चार भूतनी उपाधि ते आकाशने अडती नथी आकाशतो अतिशय निर्लेप थको ए चार भूतने विषे रह्योछे तेम पुरुषोत्तम भगवान् सर्वना आत्मारूपे करीने सर्वने विषे रह्याछे तोपण अतिशय निर्विकार छे ने असंगी छे ने पोते पोताने स्वभावे युक्त छे अने ते सरखो थवाने कोइ समर्थ नथी थतो, जेम आकाश चार भूतमां रह्यो छे पण चार भूत आकाश जेवां निर्लेप तथा असंगी थवाने समर्थ नथी थता, तेमज पुरुषोत्तमभगवान् सर्वना आत्मा छे तोपण अक्षरपर्यंत कोइपण पुरुषोत्तमभगवान् जेवा समर्थ थवाने समर्थ नथी थता, एवी रीते जे अतिशय सूक्ष्मपणुं अने अतिशय निर्लेपपणुं अने अतिशय शुद्धपणुं अने अतिशय असंगीपणुं अने अतिशय प्रकाशे युक्तपणुं अने अतिशय ऐश्वर्ये युक्तपणुं ते ए भगवाननी मूर्तिनेविषे निर्गुणपणुं छे। अने जेम गिरनार पर्वत छे तेने लोकालोक पर्वतनी पासे मुकीए त्यारे ते अतिशय नानो भासे पण गिरनार पर्वत कांइ नानो थयो नथी एतो लोकालोकनी अतिशय मोटाइ आगळ नानो जणायछे, तेम पुरुषोत्तमभगवाननी मोटाइ आगळ अष्ट आवरणे युक्त जे अनंत कोटी ब्रह्मांड ते अणुनी पेठे अतिसूक्ष्म भासेछे पण ते ब्रह्मांड कांइ नानां थइ गयां नथी एतो भगवाननी मोटप आगळ नानां जणायछे एवी रीते भगवाननी मूर्तिने विषे जे अतिशय मोटाइ ते भगवाननुं सगुणपणुं छे। त्यारे कोइकने एम आशंका थाय जे "भगवान् निर्गुणरूपे तो अतिसूक्ष्म करतांपण सूक्ष्म छे अने सगुणरूपे तो अतिस्थूळ करतांपण स्थूळ छे त्यारे ए बेय रूपनुं धरनारुं जे भगवाननुं मूळ स्वरूप ते केवुं छे?' तो तेनो उत्तर ए

छे जे, प्रकट प्रमाण मनुष्याकारे देखायछे एज भगवाननुं सदाय मूळ स्वरूप छे, अने निर्गुणपणुं ने सगुणपणुं एतो ए मूर्तिनुं कोइक अलौकिक ऐश्वर्य छे, जेम श्रीकृष्णभगवान् ब्राह्मणना पुत्र लेवा सारु अर्जुन सहित रथे वेसीने चाल्या ते लोकालोक पर्वतने उल्लंघीने मायानुं तम आव्युं तेने सुदर्शन चक्रे करीने कापीने तेथी पर जे ब्रह्मज्योति तेनेविषे रह्या जे भूमापुरुष तेनी पासेथी ब्राह्मणना पुत्रने लइ आव्या त्यारे ते रथ ने घोडा ते मायिक हता ने स्थूळभावे युक्त हता पण ते श्रीकृष्णभगवानने योगे करीने अतिसूक्ष्म ने चैतन्यरूपे थइने भगवानना निर्गुण ब्रह्मधामने पाम्या, एवी रीते जे स्थूळ पदार्थने सूक्ष्मपणाने पमाडी देवुं ए श्रीकृष्णभगवाननी मूर्तिनेविषे निर्गुणपणुं छे। अने एज श्रीकृष्णभगवान् तेणे पोतानी माता जे यशोदाजी तेने पोताना मुखनेविषे अष्टावरणे युक्त समग्र ब्रह्मांड देखाड्युं अने वळी अर्जुनने पोतानी मूर्तिनेविषे विश्वरूप देखाड्युं अने अर्जुन विना जे वीजा हता तेतो साडात्रण हाथनी भगवाननी मूर्तिने देखता हता अने ज्यारे भगवाने वामनावतार धर्यो त्यारे प्रथमतो वामनरूपे दर्शन आप्युं अने त्रण पगलां धरती वळी पासे श्रीकृष्णार्पण कराव्या पछी एवुं पोताना स्वरूपने वधार्युं जे सात पाताळनुं तो एक पगलुं कर्युं अने आकाशमांतो पोतानुं शरीर अमेय माई रह्युं अने वीजुं पगलुं उंचुं मेल्युं तेणे सात स्वर्गने वेंधीने अंडकटाह फोड्युं एवुं जे भगवाननुं मोटुं स्वरूप थयुं तेने वळी राजाए दीठुं अने वळी विना जे वीजा हता तेणेतो जेवुं वामन स्वरूप भगवाने धारण कर्युं हतुं तेवुंने तेवुं दीठुं एवी रीते जे भगवानने विषे अतिशय मोटाइ थकी जे मोटाइ देखाय ए भगवाननी मूर्तिनेविषे सगुणपणुं जाणवुं। जेम आकाश छे ते शीतकाळे तथा उष्णकाळे वाद-

ळांए रहित होय अने ज्यारे वर्षा ऋतु आवे त्यारे असंख्य वादळांनी घटाए करीने भराइ जायछे, ते काळे करीने आकाशमां वादळां उपजेछे ने पाछां लीन थइ जायछे, तेम भगवान् पोतानी इच्छाए करीने पोतामांथी निर्गुण ने सगुणरूप जे ऐश्वर्य तेने प्रकट करीने पाछुं पोताने विषे लीन करेछे. अने एवा जे भगवान् ते मनुष्य जेवा जणाता होय पण तेना महिमानो पार कोइ पामतो नथी अने जे भक्त एवी रीते भगवानी मूर्तिमां निर्गुणपणुं ने सगुणपणुं समझे ते भक्तने काळ, कर्म अने माया ते बंधन करवाने समर्थ थता नथी अने तेने आठे पहोर अंतरमां आश्चर्य रह्या करेछे। इति वचनामृतम् ॥ ८ ॥ १०४ ॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि ५ पांचमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीकारियाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादा ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे नित्यानंदस्वामी तथा ब्रह्मानंदस्वामी प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "जेने एवी मलिन रीस होय जे जेनी उपर आंटी पडे ते संघाथे आंटी मुकेज नहि पाडानी पेठे रीस राख्याज करे एवो जे होय तेने ते साधु कहीए के न कहीए?" पछी ए बे बोल्या जे, जे एवो होय तेने ते साधु न कहेवाय.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! जे भगवानो भक्त होय ने तेने कोइक भगवदीयनो हइयामां अवगुण आवतो होय अने तेणे करीने ते भगवानना भक्त उपर रीस चढती होय तो ते अवगुण टाळ्यानो शो उपाय छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,

जेना हइयामां भगवाननी भक्ति होय ने भगवाननो महिमा जाणतो होय तेने भगवानना भक्तनो अवगुण आवे नहि अने भगवानना भक्त उपर रीसनी आंटी बंधायज नहि, जेम उद्धवजी जो भगवानना महिमाने समझता हता तो एम वर माग्यो जे 'आ गोपीयोना चरणरजना अधिकारी एवां जे वृंदावननेविषे लता तथा तृण तथा गुच्छ तेनेविषे हुंपण कोइक थउं' अने श्रीकृष्णभगवाने वृंदावननेविषे वृक्षने तथा पक्षीने तथा मृगलांने बळदेवजी आगळ अति मोटां भाग्यवाळां कह्यां-छे. अने ब्रह्माए पण श्रीकृष्णभगवान् पासे एम वर माग्योछे जे 'हे प्रभो! आ जन्मनेविषे अथवा पशु पक्षिना जन्मनेविषे हुं जेते तमारा दासनेविषे रहीने तमारां चरणारविंदने सेवुं एवुं मारुं मोटुं भाग्य थाओ' माटे एवो ज्यारे भगवानना भक्तनो महिमा समझे त्यारे तेने भगवानना भक्त उपर कोइ दिवस अवगुणनी गांठ न बंधाय. अने पोताना ईष्ट जे प्रत्यक्ष भगवान् तेनो जे भक्त तेनेविषे जे कोइक अल्प दोष होय ते महिमाना समझनारानी दृष्टिमां आवेज नहि अने जे भगवानना महिमाने जाणतो होय तेतो भगवानना संबन्धने पाम्यां एवां जे पशु पक्षी तथा वृक्ष वेली आदिक तेनेपण देवतुल्य जाणे तो जे मनुष्य होय ने भगवाननी भक्ति करता होय तथा वर्तमान पाळता होय तथा भगवाननुं नामस्मरण करता होय ने तेने देवतुल्य जाणे ने अवगुण न ले तेमां शुं कहेवुं? माटे भगवाननो महिमा समझे तेने भगवानना भक्त संघाथे वैर न बंधाय अने जे महात्म्य न समझे तेनेतो भगवानना भक्त संघाथे वैर बंधाय खरुं, माटे जे भगवाननुं तथा भगवानना भक्तनुं माहात्म्य न जाणतो होय ने ते सत्संगी छे तोपण तेने अर्धो विमुख जाणवो अने भगवाननो ने

भगवानना भक्तनो जे महिमा समझे तेनेज पुरो सत्संगी जाणवो।
इति वचनामृतम्॥ ९॥ १०५॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि १० दशमीने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीकारियाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडाने विषे विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ दश वार मोटेरा साधु बेठा हता तथा पांच छो हरिभक्त बेठा हता. अने श्रीजिमहाराजना शरीरमां कांइक ताव जेवुं जणातुं हतुं अने आगळ शघडी मेलीने तापता हता. पछी श्रीजिमहाराजे मुक्तानंदस्वामीने कह्युं जे अमारी नाडी जुवो शरीरमां कांइक कसर जणायछे, पछी मुक्तानंदस्वामीए नाडी जोइने कह्युं जे हे महाराज! कसरतो बहु छे. अने वळी एम कह्युं जे, हे महाराज! हमणां सत्संगीने कठण काळ वर्तेछे, केमजे हे महाराज! तमेतो सर्वे सत्संगीना जीवनप्राण छो ते महाराजने शरीरे कसर जेवुं छे एज सर्वे सत्संगीने कठण काळ छे.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवानने प्रसन्न करवाने अर्थे नारदजीए केटलाक युगपर्यंत टाढ तडकाने तथा क्षुधा तरसने सहन करीने महातप कर्युं अने ते तपे करीने भगवानने राजी कर्या, एवी रीते जे विवेकी होय तेतो जाणीने पोतानां देह इंद्रियोने दमीने तप करेछे,माटे जे विवेकी साधु होय तेनेतो जाणीने देह इंद्रियोने कष्ट थाय एम वर्त्युं जोइए तो ईश्वर इच्छाए जे कांइ कष्ट आवे तेने शीद टाळवाने इच्छे? अने वळी त्यागी साधुनेतो पोताना मनमां एम दृढ रुचि राखी जोइए जे 'मारेतो देवलोक ब्रह्मलोक अने वैकुंठादिक लोकना जे पंच विषय संबन्धी भोग सुख ते नथी जोइता अने मारेतो हमणां देह छते तथा देहनो त्याग करिने बदरिकाश्रम तथा श्वेतद्वीपमां जइने ते तप क-

रीने भगवानने राजी करवा छे ते एक जन्म तथा बे जन्म तथा सहस्र जन्मसुधी पण तप करीनेज भगवानने राजी करवा छे' अने जीवनुं कल्याणतो आटलीज वातमां छे जे 'प्रकट प्रमाण एवा जे श्रीकृष्णनारायण तेनुंज कर्युं सर्वे थायछे पण काळ कर्म ने मायादिक कोइनुं कर्युं कांइ थतुं नथी' एवी रीते भगवाननेविषेज एक कर्तापणुं समझवुं एज कल्याणनुं परम कारण छे अने जे तप करवुं तेतो भगवाननी प्रसन्नतानुं कारण छे. अने ते तपने विषेपण जेवो राधिकाजी तथा लक्ष्मीजी भगवाननेविषे प्रेमलक्षणा भक्तिए करीने भाव राखेछे तेवो भाव राखवो. अने जो तप न करे ने भगवाननेज सर्वकर्ता जाणे तोयपण जन्ममरणना दुःखथीतो जीव तरी जाय पण तप कर्याविना ते जीव उपर भगवाननो राजीपो थाय नहि. अने जे जीव भगवानने सर्वकर्ता हर्ता नथी जाणतो तो तेथी बीजो कोइ पापी नथी अने गौहत्या ब्रह्महत्या गुरुस्त्रीनो संग तथा ब्रह्मवेत्ता सद्गुरुनो द्रोह तेथकीपण एने वधु पापी जाणवो, कांजे भगवान् विना बीजा जे काळकर्मादिक तेने ए कर्ता जाणेछे, माटे एवो जे नास्तिक चंडाळहोय तेनीतो छायामांपण उभुं रहेवुं नहि ने भुल्यमां पण तेना मुखनुं वचन सांभळवुं नहि. अने जे भगवानना भक्त होय ते भगवानने प्रतापे करीने ब्रह्मा, शिव, शुकजी, नारद ते जेवापण थाय अने प्रकृतिपुरुष जेवापण थाय अने ब्रह्म तथा अक्षर जेवापण थाय तोपण श्रीपुरुषोत्तमनारायण जेवो थवाने तो कोइ समर्थ नथी, माटे जेनो संग कर्या थकी तथा जे शास्त्र सांभळ्या थकी भगवाननी उपासनानुं खंडन थइने स्वामीसेवकभाव टळी जतो होय तो ते संगनो तथा ते शास्त्रनो श्वपचनी पेठे तत्काळ त्याग करवो.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! जे भक्त सुंदर वस्त्र तथा अलंकार तथा नानाप्रकारनां भोजनादिक वस्तु तेणे करीने भगवाननी सेवा करेछे तेपण भगवानने राजी करवाने इच्छेछे अने तमेतो तपे करीनेज भगवान् राजी थाय एम कहोछो, ते तप विना एवी सेवाए करीने राजी करे तेमां शो बाध छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे सारां सारां पदार्थे करीने भगवाननी भक्ति करेछे ते जो निष्कामभावे करीने केवळ भगवाननी प्रसन्नताने अर्थेज करतो होय तोतो ठीक छे पण जो पोतेपण भगवाननी प्रसादी जाणीने ते पदार्थनेविषे लोभाइने ने भगवानने पच्या मेलीने ते पदार्थनेविषे प्रीति करे तो ते पदार्थने भोगवतो थको विषयी थइने भ्रष्ट थइ जायछे ए बाध छे, माटे जे त्यागी भक्त होय तेनेतो भगवानने सर्वकर्ता जाणीने तपे करीनेज भगवानने राजी करवा अने राधिकाजी तथा लक्ष्मीजी तेनी पेठे भगवानने प्रेमलक्षणा भक्तिए करीने भजवा ए अमारो सिद्धांत छे.

पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! अमारुं आ लोकनेविषे तथा परलोकनेविषे सारुं थाय ते कहो[1]" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ[2] जे अमारो सिद्धांत छे तेज आ लोक ने परलोकने विषे परमसुखनो हेतु छे.

पछी गोपालानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! त्यागनो ने तप करवानो मनमां इशक तो होय अने त्याग के तप करतां वचमां कोइक विघ्न आवी पडे तो तेनुं केम करवुं?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,

---

१ यद्यपि आत्यन्तिक कल्याणना हेतुरुप पोतानो सिद्धान्त कह्यो छे तथापि कल्याण माटे तेथीपण कोइक सुखेथी थाय तेवो उपाय कहेशे एवा अभिप्रायथी प्रश्न पुछेछे।
२ पूर्वोक्त।

जेने जे वातनो इशक होय ने ते वचमां हजारो अंतराय आवे तोपण ते अंतरायनो रोक्यो रोकाय नहि त्यारे तेनो साचो इशक जाणवो, जुवोने अमे एकवीश वर्ष थयां श्रीरामानंदस्वामी पासे आव्या छीए तेमां अनंत भातनां वस्त्र तथा अलंकार तथा खानपानादिक तेणे करीने सेवाना करनारा अनंत भक्त मळ्या छे पण अमारुं मन कोइ पदार्थमां लोभाणुं नथी, शामाटे जे अमारे त्यागनोज इशक छे. अने आ संसारनेविषे केटलीक रांडो छे ते धणी मरी गयो होय तो तेने वांसे छाती कुटिकुटिने रोयाज करेछे अने केटलीक बाइयो छे ते पोताना परण्या धणीनो पण त्याग करीने भगवाननुं भजन करेछे. अने केटलाक मूर्ख पुरुष होयछे ते पोतानी स्त्री मरी गइ होय तो तेने वांसे रोया करेछे अने बीजी स्त्रीने वास्ते हाय चोय करता फरेछे अने केटलाक वैराग्यवान् पुरुष होय ते घरमां परणेली स्त्री होय तेनो त्याग करीने परमेश्वरनुं भजन करेछे, एवी रीते सौ सौना इशक जुदीजुदी जातना छे. अने अमारोतो एज इशक छे ने एज सिद्धांत छे जे 'तपे करीने भगवानने राजी करवा ने भगवानने सर्वेना कर्ता हर्ता जाणीने अने स्वामीसेवकने भावे करीने ते भगवाननी भक्ति करवी अने कोइ रीते ते भगवाननी उपासना खंडन थवा देवी नहि' माटे तमोपण सर्वे आ अमारा वचनने परम सिद्धांत करी मानज्यो । इति वचनामृतम् ॥ १० ॥ १०६ ॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीकारियाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उगमणेद्वार ओरडानी ओसरीए रात्रिने समे विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती अने मस्तक उपर धोळी पाघ

वांधी हती अने पीळां ने रातां जे गुलदावदीनां पुष्प तेना हार पहेर्या हता अने पाघमां पीळा पुष्पना तोरा लटकता हवा अने पोतानी आगळ बे फोरे बे चाळंद मशाल लइने उभा हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजने सच्चिदानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवानने विषे प्रीति होय तेनां शां लक्षण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने पोताना प्रियतम जे भगवान् तेनेविषे प्रीति होय ते पोताना प्रियतमनी मरजीने लोपे नहि ए प्रीतिनुं लक्षण छे, जो गोपीयोने श्रीकृष्णभगवानने विषे प्रीति हती तो ज्यारे श्रीकृष्णभगवान् मथुरां जवा तैयार थया त्यारे गोपीयो सर्वे मळीने एम विचार कर्यो जे 'आपणे कुटुंबनी तथा लोकनी लाजनो त्याग करीने भगवानने जोराइए राखीशुं' पछी चालवा समे श्रीकृष्णभगवानना नेत्र सामुं जोयुं त्यारे भगवाननी रह्यानी मरजी देखी नहि त्यारे सर्वे डरीने छेटे रहीयो अने अंतरमां एम बीनीयो जे 'जो आपणे भगवानना गमतामां नहि रहीए तो भगवानने आपणा उपरथी हेत उतरी जशे' एम विचारीने कांइ कही शकीयो नहि, पछी भगवान् मथुरां पधार्या त्यारेपण त्रण गउ उपर भगवान् हवा तोपण गोपीयो कोइ दिवस मरजी लोपीने दर्शने गइ नहि अने गोपीयोए एम जाण्युं जे 'भगवाननी मरजी विना जो आपणे मथुरां जइशुं तो भगवानने आपणा उपर हेत छे ते टळी जशे' माटे हेतनुं एज रूप छे जे 'जेने जे साथे हेत होय ते तेनी मरजी प्रमाणे रहे' अने जो पोताना प्रियतमने पासे रह्ये राजी जाणे तो पासे रहे अने जो पोताना प्रियतमने छेटे रह्ये राजी जाणे तो छेटे रहे पण कोइ रीते पोताना प्रियतमनी आज्ञाने

लोपे नहि ए प्रेमनुं लक्षण छे, जो गोपीयोने भगवाननेविषे साचो प्रेम हतो तो आज्ञा विना भगवानने दर्शने गइ नहि अने ज्यारे भगवाने कुरुक्षेत्रमां तेडी त्यारे भगवाननुं दर्शन कर्युं पण कोइ रीते भगवानना वचननो भंग कर्यो नहि, माटे जेने भगवाननेविषे प्रीति होय ते भगवाननी आज्ञा कोइ काळे लोपे नहि जेम भगवाननुं गमतुं होय तेमज रहे ए प्रीतिनुं लक्षण छे.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो एक अमे प्रश्न पुछीए, पछी मुनिए कह्युं जे हे महाराज! पुछो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "जे भगवाननो भक्त होय ते भगवाननी मूर्तिना संबन्ध विनाना जे अन्यसंबन्धी पंच विषय तेने तुच्छ करी नाखेछे अने पंचे प्रकारे एक भगवाननो संबन्ध राखेछे एवो जे भक्त तेने भगवान् एम आज्ञा करे जे 'तमे अमथकी छेटे रहो' त्यारे ते जो भगवानना दर्शननो लोभ राखे तो एने आज्ञानो भंग थाय अने जो आज्ञा न पाळे तो भगवानने ए भक्त उपर हेत न रहे माटे ए भक्त जेम मायिक शब्दादिक पंच विषयनो त्याग कर्योछे तेमज भगवान संबन्धी जे शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पंच विषय छे तेनोपण त्याग करे के न करे?" ए प्रश्न छे, पछी सर्वे मुनि मळीने जेने जेवी बुद्धि हती तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण ए प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराजने कह्युं जे हे महाराज! एनो उत्तर तमे करो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने भगवानने विषे दृढ प्रीति छे अने भगवानने अखंड संबन्धे रहित जे मायिक पंच विषय तेने तुच्छ करी नाख्या छे अने शब्दादिक पंचविषये करीने भगवान् संघाथे दृढपणे जोडाणोछे ते भक्त भगवाननी आज्ञाए करीने ज्यांज्यां जायछे त्यांत्यां भगवाननी मूर्तिपण

ए भक्त मेळीज जायछे ने जेम ए भक्तने भगवान विना रहेवातुं नथी तेमज भगवानने पण ए भक्त विना रहेवातुं नथी अने ए भक्तना हृदामांथी आंख्यनुं मटकुं भरीए एटली वार छेटे रहेता नथी माटे ए भक्तने पांचे प्रकारे भगवान संघाथे अखंड संबंध रहेछे, केमजे जे शब्दादिक पंच विषय विना जीवमात्रने रहेवातुं नथी ते शब्दादिक पंच विषयने एणे तुच्छ कर्याछे ने पंचे प्रकारे करीने भगवानने विषे जोडाणोछे ते माटे ए भक्तने भगवान साथे अखंड संबंध रहेछे। इति वचनामृतम् ॥ ११ ॥ १०७ ॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि १५ पुन्यमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीकारियाणीमध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती अने धोळो फेंटो चोकाना सहित बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो, पछी मुनिए मांहोमांहि घणीवार सुधी प्रश्न उत्तर कर्या, तेमां स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण शरीरनो विचार निसर्यो तथा विराट्, सूत्रात्मा अने अव्याकृत ए त्रण शरीरनो विचार निसर्यो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, कारण शरीर छे ए जीवनी माया छे तेज कारण शरीर ते स्थूळ सूक्ष्मरूपे थायछे माटे स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण जीवनी माया छे तेमज विराट्, सूत्रात्मा अने अव्याकृत ए ईश्वरनी माया छे ते जीवनी कारण शरीररूप जे माया ते वज्रसार जेवी छे ते कोइ रीते जीवथी जुदी पडती नथी, माटे ज्यारे ए जीवने संतनो समागम मळे ने ते

संतने वचने करीने परमेश्वरनुं स्वरूप ओळख्यामां आवे ने ते परमेश्वरना स्वरूपनुं ध्यान करे ने ते परमेश्वरना वचनने हृदामां धारे तेणे करीने ए कारण शरीर छे ते बळीने खोखा जेवुं थइ जायछे, जेम आंबलीनुं बीज होय ने ते बीजनी छाल बीज साथे अतिदृढ चोटी होय पछी तेने ज्यारे अग्निमां शेके त्यारे ते छाल दाझीने खोखा जेवी थइ जाय ने पछी हाथमां लइने चोळे तो जुदी थइ जाय, तेम भगवाननुं ध्यान ने भगवाननुं वचन तेणे करीने कारण शरीर शेकाइने आंबलीना फोतरानी पेठे जुदुं थइ जायछे. अने ते विना बीजा कोटी उपाय करे तोयपण कारण शरीररूप जे अज्ञान तेनो नाश थतो नथी, एवी रीते श्रीजिमहाराजे वार्ता करी.

पछी श्रीजिमहाराजे मुनि प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "जाग्रत् अवस्थामां सत्त्वगुण वर्तेछे अने सर्वे पदार्थनुं यथार्थ ज्ञान वर्तेछे तोपण जाग्रत् अवस्थामां जे श्रवण कर्युं होय तेने सूक्ष्म देहमां ज्यारे मनन करे त्यारे ते सांभळ्युं होय ते पाकुं थायछे अने सूक्ष्म देहमां तो रजोगुण वर्तेछे ते रजोगुणमां तो अयथार्थ ज्ञान रह्युंछे तोपण जे जाग्रतमां सांभळ्युं होय तेनुं सूक्ष्म देहमां मनन करे त्यारे यथार्थ ज्ञान थायछे एनुं शुं कारण छे ?" पछी मुनि सर्वे मळीने जेनी जेवी बुद्धि हती तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी मुनि सर्वे हाथ जोडीने बोल्या, जे हे महाराज ! आ प्रश्ननो उत्तर तो तमे करोतो थाय, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तरतो ए छे जे, हृदयने विषे क्षेत्रज्ञ जे जीव तेनो निवास छे ते क्षेत्रज्ञ चौद इंद्रियोनो प्रेरक छे तेमां अंतःकरण जे छे ते क्षेत्रज्ञने समीपे वर्तेछे माटे अंतःकरणमां मनन करे त्यारे दृढ थायछे,

कांजे क्षेत्रज्ञ छे ते सर्वे इंद्रियो अंतःकरण थकी समर्थ छे, माटे क्षेत्रज्ञ प्रमाण करे ए वात अतिदृढ थायछे, एवी रीते ए प्रश्ननो उत्तर कर्यो, त्यारे सर्वे मुनिए कह्युं जे हे महाराज ! यथार्थ उत्तर कर्यो एवो उत्तर बीजा कोइथी थाय नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, गमे तेवो कामी, क्रोधी, लोभी, लंपट जीव होय अने जो आवी रीतनी वातमां विश्वास राखीने प्रीतिए करीने सांभळे तो तेना सर्वे विकार टळी जायछे, जेम कोइ पुरुषने प्रथमतो काचा चणा चावे एवुं दांतमां बळ होय ने ते जो काची केरी खारी पेठे खाय तो तेथी भातपण चवाय नहि, तेम गमे तेवो कामादिकने विषे आसक्त होय पण आवी रीतनी वातने आस्तिक थइने श्रद्धाए सहित सांभळे तो ते पुरुष विषयनां सुख भोगववाने समर्थ रहे नहि अने तप्तकृच्छ्र चांद्रायणादिक व्रते करीने जो देहने सुकवी नाखे तोपण जेवुं आवी भगवद्वार्ता सांभळनारानुं मन निर्विषयि थायछे तेवुं तेनुं थतुं नथी अने आवी वात सांभळीने जेवुं तमारुं सर्वेनुं मन निर्विकल्प थतुं हशे तेवुं ध्यान करता हशो तथा माळा फेरवता हशो त्यारे नहि थतुं होय, माटे विश्वास राखीने प्रीतिए सहित जे भगवान् पुरुषोत्तम नारायणनी वात सांभळवी एथी बीजुं मनने स्थिर थवानुं ने निर्विषयि थवानुं कोइ मोटुं साधन नथी । इति वचनामृतम् ॥ १२ ॥ १०८ ॥

श्रीकारियाणीप्रकरणं समाप्तम् ।

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।



श्रीलोया–वचनामृतम् ।

संवत् १८७७ ना कार्तिक वदी १० दशमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां परमहंसना उतारा मध्ये ढोलिया उपर विराजमान हता अने रूनो भरेलो धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती अने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज मुनि प्रत्ये बोल्या जे "शंकर शब्दनो शो अर्थ छे?" पछी मुनि बोल्या जे, सुखने करे ते शंकर कहीए, पछी ए वातने सांभळीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आज पाछली चार घडी रात हती ते समे स्वप्नमां अमने शिवजीए दर्शन दीधां ते शिवजी मोटो जबरो नंदीश्वर ते उपर बेठा हता अने शरीरे बहु पुष्ट हता ने चाळीस वर्षनी अवस्था हती ने मोटी जबरी जटा हती ने ते शिवजी भेळे पार्वती हतां तेणे धोळां वस्त्र पहेर्यां हतां अने ते शिवजी मोटा संतनी पेठे शांतमूर्ति हता अने मारे उपरतो शीवजीने घणुं हेत जणायुं तोपण मारेतो शिव उपर हेत न जणायुं, केमजे हुं एम जाणुंछुं जे 'शिवतो तमोगुणना देवता छे अने आपणेतो शांतमूर्ति एवा जे श्रीकृष्णनारायण तेना उपासक छीए' तेमाटे रजोगुणी तमोगुणी देव एवा जे ब्रह्मा शिव अने इंद्रादिक देवता तेमनी उपर भाव बेसे नहि. अने तेमांपण क्रोध उपरतो मारे घणुं वैर छे ने क्रोधी जे माणस अथवा देवता ते मने गमेज नहि तथापि जे शिवजीने अमे

मानीए छीए तेनुं शुं कारण छे तो शिवजी तो त्यागी छे ने योगी छे ने भगवानना मोटा भक्त छे माटे शिवने मानीए छीए. अने क्रोधतो केवो छे तो 'जेवुं हडकायुं कुतरुं होय तेवो छे' जेम हडकाया कुतरानी जे लाळ ते ढोर अथवा मनुष्य जेने अडे ते हडकाया कुतरानी पेठे डाचियो नांखीने मरी जाय, तेम क्रोधनी जेने लाळ अडे तेपण हडकाया कुतरानी पेठे डाचियो नाखीने संतना मार्गथकी पडी जाय. अने वळी क्रोध केवो छे तो जेवा कसाइ, आरब, भावर, वाघ, दीपडो, काळो सर्प, ते जेम सर्वने विचरावेछे अने बीजाना प्राणने हरि लेछे, तेम क्रोध छे तेपण सौने विचरावेछे अने बीजाना प्राणने हरि लेछे एवो जे क्रोध ते जो साधुमां आवे तेतो अतिभुंडो लागे, केमजे साधुतो शांत होय पण ज्यारे तेमां क्रोध आवे त्यारे ते साधु बीजाने क्रूर लागे अने ते साधुनी आकृतिपण फरी जाय, केमजे ए क्रोधनुं नाम विरूप छे माटे ए क्रोध जेना देहमां आवे तेना देहने विरूप करी नाखे.

त्यारे शुकमुनिए पुछ्युं जे "हे महाराज! जे लगारेक क्रोध चढी आवे ने पछी तेने टाळी नाखे एवो जे क्रोध ते कांइ नडतर करे के न करे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम आ सभा बेठी छे तेमां जो हमणे सर्प नीकळे ने कोइने करडे नहि तोपण उठीने सौने भागवुं पडे तथा सौना अंतरमां त्रास थाय, अने वळी जेम गामने झांपे आवीने वाघ हुंकारा करतो होय अने कोइने मारे नहि तोपण सौं माणसने अंतरमां भय लागे ने बारणे निकळाय नहि, तेम थोडोक क्रोध उपजे तेपण अतिशय दुःखदायी छे.

पछी नाना निर्मानानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "कामने मूळमांथी

उखेडी नाखवो तेनुं शुं साधन छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एकतो आत्मनिष्ठा अतिदृढ होय अने अष्टप्रकारे ब्रह्मचर्य व्रत राखवुं ए आदिक जे पंच वर्तमान तेने दृढ करीने पाळे अने भगवाननो महिमा अतिशय समझे ए उपाये करीने कामनुं मूळ उखडी जायछे अने कामनुं मूळ उखडी जाय तोपण ब्रह्मचर्यादिक नियममांथी कोइ रीते डगवुं नहि अने अतिशय कामनुं मूळ उखड्यानो तो उपाय एछे जे, भगवाननो महिमा सारी पेठे समझवो.

अने ते पछी भजनानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! कनिष्ठ वैराग्य ने मध्यम वैराग्य ने उत्तम वैराग्य ए त्रण प्रकारना वैराग्यनुं शुं रूप छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, कनिष्ठ वैराग्यवाळो जे होय तेतो धर्मशास्त्रमां कह्या जे स्त्रीना त्याग संबंधी नियम तेमां सारी पेठे वर्ते त्यांसुधीतो एने ठीक रहे पण जो कोइ स्त्रीना अंगने देखी जाय तो ते अंगमां एनुं चित्त चोटी जाय अने एनुं ठेकाणुं न रहे तेने कनिष्ठ वैराग्यवाळो कहीए. अने जे मध्यम वैराग्यवाळो होय तेतो कदाचित् जो स्त्रीने उघाडी थकी देखी जाय तोयपण जेम पशुने उघाडां देखीने क्षोभ थतो नथी तेम तेना मनमां क्षोभ न थाय ने ते स्त्रीना अंगमां चित्त चोटी जाय नहि तेने मध्यम वैराग्यवाळो कहीए. अने जे उत्तम वैराग्यवाळो होय तेनेतो जो कदाचित् एकांतमां स्त्रीयादिक पदार्थनो योग थाय तोपण ए डगे नहि तेने उत्तम वैराग्यवाळो कहीए.

अने वळी भजनानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "कनिष्ठ, मध्यम अने उत्तम ए त्रण प्रकारे जे भगवाननुं ज्ञान तेनुं शुं स्वरूप छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, कनिष्ठ ज्ञानवाळो तेतो प्रथम भगवाननो प्रताप देखीने निश्चय करे अने पछी तेवो प्रताप न देखाय ने भगवाननो कोइक दुष्ट जीव द्रोह करता होय तेनुं कांइ भूंडुं न थाय त्यारे तेने नि-

श्चय रहे नहि एने कनिष्ठ ज्ञानवाळो कहीए. अने मध्यम ज्ञानवाळो जे होय तेतो ज्यारे भगवानना शुभ अशुभ एवां मनुष्य चरित्रने देखे त्यारे तेमां मोह थाय ने निश्चय रहे नहि तेने मध्यम ज्ञानवाळो कहीए. अने उत्तम ज्ञानवाळाने तो एम वर्ते जे भगवानने गमे तेवी शुभ अशुभ क्रियाने करता देखीनेपण तेमां मोह थाय नहि ने निश्चय जाय नहि तथा जेणे पोताने निश्चय कराव्यो होय ने तेज वळी कहे जे 'ए भगवान् नथी' त्यारे तेने एम जाणे जे 'एनुं माथुं फर्युंछे' एवो जे होय तेने उत्तम ज्ञानवाळो कहीए. अने तेमां जे कनिष्ठ ज्ञानवाळो तेतो अनेक जन्मे करीने सिद्ध थाय अने मध्यम ज्ञानवाळो बे त्रण जन्मे करीने सिद्ध थाय अने उत्तम ज्ञानवाळो तेज जन्मे करीने सिद्ध थाय, एवी रीते वार्ता करी.

त्यार पछी मोटा शिवानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननो निश्चयतो संपूर्ण होय तोपण अंतरमां कृतार्थपणुं मनातुं नथी तेनुं शुं कारण छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान इत्यादिक जे शत्रु तेणे करीने जेनुं अंतःकरण दग्ध वर्ततुं होय ने तेने निश्चय होय तोपण पोताने कृतार्थ माने नहि.

पछी नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "ए कामादिक शत्रुने टाळ्यानो शो उपाय छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए कामादिक शत्रु तो टळे; जो एने उपर निर्दय थको दंड देवाने तत्पर रहे, जेम धर्मराजा छे ते पापीने मारवाने अर्थे दंड लइने रात दिवस तैयार रहेछे तेम इंद्रियो कुमार्गे चाले तो इंद्रियोने दंड दे अने अंतःकरण कुमार्गे चालेतो अंतःकरणने दंड दे, तेमां इंद्रियोने कृच्छ्र चांद्रायणे करीने दंड दे अने अंतःकरणने विचारे करीने दंड दे तो ए कामादिक

१ आत्मा अनात्माना स्वरूपनो विवेक ।

शत्रुनो नाश थइ जाय अने पोताने भगवानना निश्चये करीने संपूर्ण कृतार्थ माने.

✓त्यार पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "संपूर्ण सत्संग थयो ते केने कहीए?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एकतो अतिशय दृढ आत्मनिष्ठा होय अने ते पोताना आत्माने देह इंद्रियो अंतःकरणथी अतिशय असंगी माने अने ए देह इद्रियादिकनी क्रियाओ ते पोतानेविषे न माने तोपण पंच वर्तमानना नियममां लेशमात्र फेर पडवा दे नहि अने पोते ब्रह्मस्वरूपे वर्ते तोपण परब्रह्म जे पुरुषोत्तम भगवान् तेनुं दासपणुं मुके नहि स्वामिसेवकपणे करीने भगवाननी दृढ उपासना करे अने प्रत्यक्षमूर्ति जे भगवान् तेने आकाशनी पेठे अतिशय असंगी समझे, जेम आकाश छे ते चार भूतमां अनुस्यूतपणे व्यापीने रह्योछे अने चार भूतनी जे क्रिया ते आकाशनेविषे थायछे तोपण आकाशने ए पृथ्वी आदिक चार भूतना विकार अडता नथी, तेम प्रत्यक्ष जे श्रीकृष्णनारायण ते शुभ अशुभ सर्व क्रियाने कर्ता थका आकाशनी पेठे निर्लेप छे एम जाणे अने ते भगवाननां जे असंख्यात ऐश्वर्य छे तेने समझे जे 'आ भगवान् जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा जणायछे तोपण ए अनंत कोटी ब्रह्मांडना कर्ता हर्ता छे अने गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप ब्रह्मपुर इत्यादिक जे धाम ते सर्वेना स्वामी छे अने अनंत कोटी एवा जे अक्षररूप मुक्त ते सर्वना स्वामी छे' एवो भगवाननो महिमा जाणीने ते भगवाननेविषे श्रवणादिक भक्तिने दृढ करीने राखे अने ते भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी करे, एवी रीते जे वर्ते तेनो संपूर्ण सत्संग कहीए.

पछी नाना शिवानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "क्यारेकतो भगवान

ना भक्तनो महिमा अतिशय समझायछे ने क्यारेकतो अतिशय समझातो नथी तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, संत छे तेतो धर्मवाळा छे ते ज्यारे कोइकने अधर्ममां चालतो देखे त्यारे तेने टोके पछी जे देहाभिमानी होय तेने सवळो विचार करीने शिक्षा ग्रहण करतां आवडे नहि ने सामो ते संतनो अवगुण ले माटे ज्यांसुधी एने दुःखाडीने कहे नहि त्यांसुधी माहात्म्य रहे ने ज्यारे हितनी वार्त-पण दुःखाडीने कहे त्यारे अवगुण ले ने माहात्म्य न जाणे अने जेने संतनो अवगुण आव्यो तेने कोइ रीते प्रायश्चित्त करीने पण शुद्ध थवातुं नथी जेम कामादिक दोषनां पाप निवारण छे तेम संतना द्रोहनुं पाप निवारण छे नहि ने जेम कोइने क्षय रोग थाय तेने टाळयानुं कोइ ओषध नथी तेतो निश्चय मरे तेम जेने संतनो अवगुण आव्यो तेनेतो क्षय रोग थयो जाणवो तेतो पांच दिवस मोडो वहेलो निश्चय विमुख थशे अने वळी जेम मनुष्यनां हाथ पग नाक आंख्य आंगळीयो ए आदिक जे अंग ते कपाय तोपण ए मनुष्य मुवो कहेवाय नहि अने ज्यारे धड-मांथी माथुं कपाइ जाय त्यारे तेने मुवो कहेवाय, तेम हरिजननो जेने अवगुण आवे तेनुंतो माथुं कपाणुं अने बीजा वर्तमानमां कदाचित् फेर पडे तो अंग कपाणुं कहेवाय पण ते जीवे खरो कहेतां ते सत्संगमां टके खरो अने जेने संतनो अवगुण आव्यो तेतो निश्चय सत्संगथी ज्यारे त्यारे विमुखज थाय ए एनुं माथुं कपाणुं जाणवुं.

पछी भगवदानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हरिजननो अवगुण आव्यो होय तेने टाळ्यानो कोइ उपाय छे के नथी?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे,उपायतो छे पण अतिकठण छे ते अतिशय श्रद्धावाळो होय तेथी थायछे ज्यारे कोइ संतनो अवगुण आवे त्यारे एम विचार करे जे 'मं

अति मोटुं पाप कर्युं, जेमाटे ब्रह्मस्वरूप एवा जे भगवानना भक्त तेनो अवगुण लीधो' एवा विचारमांथी अतिशय दाझ हैयामां थाय ते दाझने-मारे अन्न जमे तो तेना स्वादु कुस्वादुपणानी खबर पडे नहि तथा रात्रिने विषे निद्रापण आवे नहि अने ज्यांसुधी संतनो अवगुण हैयामांथी टळे नहि त्यांसुधी जेम जळ विनानुं माछलुं तडफडे तेम अतिव्याकुळ थाय अने ज्यारे ए संतनो हैयामां अतिशय गुण आवे ने ते संत कोइ वाते दुःखाणा होयतो तेने अतिदीन थइने प्रसन्न करे एवी जातनो जेना हृदयमां विचार रहेतो होय तो तेने संतनो अवगुण आव्यो होय तेपण टळी जाय ने सत्संगमांथी पण विमुख न थाय पण ए विना बीजो कोइ एनो उपाय नथी कह्यो; एज एक उपाय छे। इति वचनामृतम्॥१॥१०९॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां दक्षिणादे मुखारविंदे ढोलिया उपर विराजमान हता अने राता कीनखापनो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने नरनारायण नामे अंकित एवो जे काळो किनखाप तेनी डगली पहेरी हती अने माथे बुरानपुरी असमानी रंगनो रेटो सोनेरी तारना फरता छेडानो बांध्यो हतो अने कुसुंबी रंगनो रेटो केड्ये बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने मुक्तानंदस्वामी आदिक जे परमहंस ते दुकड, सरोदा, सतार, मंजीरादिक वाजित्रने वजाडीने कीर्तननुं गान करता हता.

पछी कीर्तननी समाप्ति थइ रही त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे सर्वे परमहंस सांभळो हुं तमने एक प्रश्न पुछुंछुं, त्यारे मुनि बोल्या जे हे महाराज! पुछो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "आ सत्संगमां हरिभ-

क्तने क्यारे मृत्युनो भय टळी जाय ने देहछतेज पोतानुं कल्याण मनाइ जाय?" पछी मुक्तानंदस्वामीए जेवो आवड्यो तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी बीजा परमहंस बोल्या जे हे महाराज! ए प्रश्ननो उत्तरतो तमेज करो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, तमे ज्यांसुधी कीर्तन बोल्या त्यांसुधी अमे एनो विचार कर्योछे ते अमारी नजरमांतो एम आव्युंछे जे, चार प्रकारना हरिभक्त होय तेने मृत्युनो भय नाश पामेछे अने कृतार्थपणुं मनायछे, ते चार प्रकारना हरिभक्तनी विक्ति-एकतो विश्वासी बीजो ज्ञानी त्रिजो शूरवीर चोथो प्रीतिवाळो, ए चार प्रकारना जे भक्त तेनेतो मृत्युनो भय नथी रहेतो अने देहछते कृतार्थपणुं मनायछे. हवे ए चार प्रकारना भक्तनां लक्षण कहीए छीए, तेमां जे विश्वासी होय तेतो प्रत्यक्ष भगवान् ने तेना साधु तेना वचननेविषे अतिशय विश्वासने पाम्योछे माटे ते भगवानना निश्चयना बळवडे करीने मृत्युनो भय राखे नहि अने एम जाणे जे 'मने प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान् मळ्याछे माटे हुं कृतार्थ छुं.'अने ज्ञानीनेतो आत्मज्ञाननुं बळ होय ते एम माने जे 'हुंतो ब्रह्मस्वरूप एवो भगवाननो भक्त छुं' माटे एनेपण मृत्युनो भय होय नहि. अने शूरवीर होय तेथकी तो इंद्रियो तथा अंतःकरण ए सर्वे थरथर कंपतां रहे अने बीजा कोइथीपण डरे नहि माटे एने कोइ रीते परमेश्वरनी आज्ञामां भंग थाय नहि माटे पोताने कृतार्थपणुं माने अने मृत्युनो त्रास तेना मनमां लेशमात्र पण होय नहि. अने चोथो जे प्रीतिवाळो तेनेतो पतिव्रतानुं अंग छे, जेम पतिव्रता स्त्री होय तेने पोताना पति विना बीजे ठेकाणे वृत्ति डोले नहि ने एक पोताना पतिने विषेज प्रीति राखे, तेम ते भगवाननो

* १ जन्ममरणना प्रवाहरूप संसारनो ।

भक्त ते पतिव्रतानी पेठे पोताना पति एवा जे भगवान् तेने विषेज प्रीति राखे माटे पोताने कृतार्थपणुं माने अने तेने मृत्युनो भयपण लेशमात्र होय नहि. अने ए चार अंग मांहिलुं एक प्रधान होय ने बीजां त्रण गौण होय तोपण जन्म मृत्युना भय [illegible] होय तेनेतो मृत्युनो भय टळे [illegible] हाराज सर्व परमहंस तथा हरिभक्त प्रत्ये बोल्या जे, ए चार मांहिलां जेने जे अंग प्रधानपणे वर्तता होय ते कहो? पछी परमहंस समग्रने जेजे अंग वर्तता हतां ते कह्यां अने हरिभक्तने पण जेने जे अंग वर्तता हतां ते कह्यां, ते सांभळीने श्रीजिमहाराज घणा प्रसन्न थया, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए चार अंगमांथी जेने शूरवीरनुं अंग होय ते सर्वे आवीने अमारे पगे लागो, पछी जेने जेने शूरवीरनां अग वर्ततां हतां ते सर्वे श्रीजिमहाराजना चरणारविंदने छातिमां लइने पगे लाग्यां.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे वळी जेने प्रश्न पुछवो होय ते पुछो, त्यारे ब्रह्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जे कारण होय तेतो कार्यथी मोटुं जोइए त्यारे वडनुं बीज तेतो नानुं छे ने तेथकी मोटो वड केम थायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, कारण होय तेतो नानुं होय ने सूक्ष्म होय तोपण मोटा कार्यनी उत्पत्ति करवाने समर्थ छे एज कारणमां मोटाइ छे, जेम मूळ प्रकृतिनां कार्य एवां जे अनंत प्रधान तेनो मोटो विस्तार छे पण कारणरूप जे मूळप्रकृति तेतो स्त्रीने आकारे छे तथा पृथ्वीनुं कारण जे गंध ते सूक्ष्म छे अने तेनुं कार्य जे पृथ्वी ते मोटी छे एमज आकाश आदिक जे बीजां चार भूत तेनो मोटो विस्तार छे अने तेनां कारण जे शब्दादिक ते सूक्ष्म छे. अने जे कारण होय ते नानुं होय तोपण ते मोटा कार्यने उत्पन्न करवा समर्थ थाय एवी एमां कळा रहीछे, जेम अग्निदेव छे तेतो

मनुष्य जेवो मूर्तिमान् छे अने माणस जेवडो छे अने तेनुं कार्य जे अग्निनी ज्वाळाओ तेतो अति मोटी छे तथा जेम वरुणनी मूर्ति तेतो मनुष्य जेवडी छे अने तेनुं कार्यरूप जे जळ तेतो अति झाझुं छे अने जेम सूर्यनी मूर्तितो मनुष्य जेवी रथमां बेठी छे अने तेनुं कार्य जे प्रकाश तेतो आखा ब्रह्मांडमां व्यापी रह्योछे, तेम सर्वना कारण एवा जे श्रीपुरुषोत्तमनारायण श्रीकृष्ण तेतो मनुष्य जेवडा छे तोपण अनंतकोटि ब्रह्मांडना कारण छे. अने जे मूर्ख होय तेतो एम समझे जे 'जेनुं कार्य आवडुं मोटुं छे तो तेनुं कारणतो केवडुं मोटुं हशे?' एतो मूर्खनी समझण छे. अने सर्वना कारणरूप एवा भगवान् ते मनुष्य जेवा छे तोपण पोताना अंगमांथी योगकळाए करीने अनंतकोटि ब्रह्मांडने उत्पन्न करवाने समर्थ छे ने पाछां पोतानेविषे लय करवाने समर्थ छे, जेम अग्नि, वरुण, सूर्य ते पोताना कार्यरूपे मोटा जणायछे ने वळी कार्यने पोतामां लीन करीने एक पोतेज रहेछे, तेम भगवानना एक एक रोममां अनंतकोटि ब्रह्मांड अणुनी पेठे रह्यांछे ते अष्टावरण ने चौद लोकसुधां रह्यांछे, एवी रीते कारणमां अलौकिकपणुं छे ने मोटाइपणुं छे, तेने समझु होय ते जाणे जे 'भगवान् मनुष्य जेवा जणायछे तोपण ए भगवान् सर्वना कारण छे अने सर्वना कर्ता छे ने समर्थ छे' एम कहीने श्रीजिमहाराज शयन करवा पधार्या। इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ ११० ॥

संवत १८७७ ना कार्तिक वदी १३ तेरशने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराखाचरना दरबारमां रात्रिने समे[१] ढोलिया उपर विराजमान हता ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती तथा रुनो भरेलो धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो ने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो तथा

१ सध्या आरती कर्या पछी।

धोळी पछेडी ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना सत्संगीनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समयने विषे श्रीजिमहाराजने भगवदानंदस्वामी तथा शिवानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवान् तथा संत तेनो जेने माहात्म्यज्ञाने सहित निश्चय होय तेनां शां लक्षण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने भगवाननो ने संतनो माहात्म्यज्ञाने सहित निश्चय होय तेथी भगवानने अर्थे ने संतने अर्थे शुं न थाय? एने अर्थे कुटुंबनो त्याग करे, लोकलाजनो त्याग करे, राज्यनो त्याग करे, सुखनो त्याग करे, धननो त्याग करे, स्त्रीनो त्याग करे अने स्त्री होय ते पुरुषनो त्याग करे. एम कहीने पछी आ सर्वे हरिभक्तनी वार्ताओ एक बीजा केडे करी. गाम डड्डसरवाळा रजपुत गलुजी तथा धर्मपुरवाळां कुशळकुंवर बाई तथा पर्वतभाइ तथा राजबाई तथा जीवुबाई तथा लाडुबाई तथा मोटां रामबाई तथा दादोखाचर तथा मांचोभक्त तथा मूळजी ब्रह्मचारी तथा भुजवाळां लाधीबाई ने मातजी तथा मुक्तानंदस्वामी तथा वाळाक देशनो आहीर पटेल सामत तथा गाम मानकुवाना मूळजी तथा कृष्णजी तथा वाळाक देशमां गुंदाळी गामना बे काठी हरिभक्त इत्यादिक जे सत्संगी तेमणे भगवानने अर्थे ने संतने अर्थे जेजे कर्युं तेने विस्तारीने कहेता हवा. अने वळी एम कह्युं जे, जेने भगवाननो निश्चय माहात्म्यज्ञाने सहित होय ते भगवानना वचनमां फेर पाडे नहि ने जेम कहे तेम करे, ते उपर पोतानी वात करी जे, अमारो स्वभाव केवो हतो तो 'गोदोहनमात्र एक स्थानकमां रहेवाय पण वधु रहेवाय नहि' एवा त्यागी हता अने वैराग्य अतिशय हतो ने श्रीरामानंदस्वामी उपर हेत पण असाधारण हतुं तोपण स्वामीए भुजनगरथी कही मोकल्युं जे 'जो सत्संगमां

खप होय तो थांभलाने बाथ लइने पण रहेवुं पडशे' एम मयाराम-भट्ट आवीने कह्युं त्यारे अमे थांभलाने बाथ लीधी, त्यार पछी तेमणे कह्युं जे 'मुक्तानंदस्वामीनी आज्ञामां रहो' पछी अमे स्वामीनां दर्शन थया मोर नव महिना सुधी मुक्तानंदस्वामीनी आज्ञामां रह्या, एवे लक्षणे करीने जेने संतनो ने भगवाननो एवो निश्चय होय तेने जाणीए. अने पछी सुंदरजी सुतार ने डोसा वाणीयानी वात करी. अने वळी जेने भगवाननो ने संतनो एवो निश्चय होय तेने तेनी कोरनो केफ वर्ते एम कहीने राणाराजगरनी वार्ता करी. अने प्रह्लादनी वार्ता करी जे प्रह्लाद जेते नृसिंहजी प्रत्ये बोल्या जे 'हे महाराज ! हुं आ तमारा विकराळ रूपथी नथी बीतो ने तमे जे मारी रक्षा करी तेने हुं रक्षा नथी मानतो ने तमे ज्यारे मारा इंद्रियोरूप शत्रुना गणथकी रक्षा करशो त्यारे हुं रक्षा मानीश' माटे जे भगवाननो भक्त होय ते दैहिक रक्षा भगवान् करे तेणे करीने हर्ष न पामे ने रक्षा न करे तेणे करीने शोक न करे अने अलमस्त थको भगवानने भजे. अने भगवान् ने संत तेनुं माहात्म्य बहु जाणे, ते उपर गाम कठलालनी डोसीनी वात करी. अने आवी रीतनो जे हरिभक्त होय तेनो देह पग घसीने पडे, वाघ खाइ जाय, सर्प करडे, शस्त्र वागे, पाणीमां बुडी जाय इत्यादिक गमे तेवी रीते अपमृत्युए करीने देह पडे तोपण एम समझे जे 'भगवानना भक्तनी अवळी गति थायज नहि एतो भगवानना धामनेज पामे अने भगवानथी विमुख होय तेनो देह सुधी सारी पेठे पडे ने चंदनना लाकडामां संस्कारे युक्त बळे तोपण तेतो निश्चय यमपुरीमां जाय' ए बेनी विक्ति सारीपेठे समझे, ए सर्वे प्रकारनी जेना हृदयमां दढ गांठ पडी जाय तेने भगवान ने संतनो माहात्म्ये सहित निश्चय छे एम जाणवुं अने एवो निश्चयवाळो जे

होय ते जरुर ब्रह्ममहोलमांज पुगे पण बीजे क्यांइ कोइ धाममां ओरो रहे नहि । इति वचनामृतम् ॥ ३ ॥ १११ ॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक वदी १४ चौदशने दिवस पहोर एक दिवस चडते स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां विराजमान हता अने धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती अने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी अखंडानंदस्वामीए श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "अनंत कोटी ब्रह्मांड छे ते ब्रह्मांडने विषे जेवी आ ब्रह्मांडमां वर्तमान काळे भगवाननी मूर्ति छे तेवीने तेवीज देखायछे के नथी देखाती?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,' भगवान् पोते पोताना अक्षरधामने विषे सदा विराजमान छे अने मूळमायामांथी उपज्यां जे अनंतकोटी प्रधान पुरुष तेथकी अनंतकोटी ब्रह्मांड उपजेछे पछी ते भगवान् पोताना अक्षरधाममां एक ठेकाणे रह्या थका पोतानी इच्छाए करीने ते अनंतकोटी ब्रह्मांडने विषे पोताना भक्तने अर्थे अनंत रूपे देखायछे.

पछी वळी अखंडानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "श्रीकृष्ण नारायणतो सदा मनुष्याकृति छे ने ते भगवाननुं स्वरूप सर्वकाळे सत्य छे अने तेज भगवान् क्यारेक मत्स्य, कच्छ, वराह, नृसिंहादिक अनंतरूपे करीने

१ आ ब्रह्मांडमा जेम भगवान् पोताना अनन्यभक्तोने दर्शनादि आपीने सुख आपवा माटे मनुष्याकारे प्रकट थायछे तेम अनेक ब्रह्मांडमा पण भगवान् प्रकट थायछे के नहि? आटलो प्रश्ननो आशय छे । तेनो "अनेक ब्रह्मांडमां पोताना अनन्यभक्तोने दर्शनादिकनु सुख आपवामाटे कृपा करीने स्वेच्छाथी आ ब्रह्मांडनी पेठेज प्रकट थाय छे" आवा अभिप्रायथी उत्तर आपेछे ।

भासे छे ते केम समझवुं? अने वळी ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये कल्याणनी रीति तथा भगवाननी मूर्ति ते एक सरखी छे के जुदीजुदी छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवाननी मूर्तितो सदा एक सरखी छे तोपण भगवान् पोतानी मूर्तिने [२] ज्यां जेवी देखाडी जोइए त्यां तेवी पोतानी इच्छाए करीने देखाडेछे अने ज्यां जेटलो प्रकाश करवो घटे त्यां तेटलो प्रकाश करेछे अने पोतेतो सदा द्विभुज छे तोपण पोतानी इच्छाए करीने क्यांइ चार भुज क्यांइ अष्ट भुज क्यांइ अनंत भुजने देखाडेछे तथा मत्स्य कच्छादिकरूपे करीने भासेछे, एवी रीते ज्यां जेवुं घटे त्यां तेवुं रूप प्रकाशेछे अने पोतेतो सदा एकरूपेज विराजमान रहेछे. अने वळी एक ठेकाणे रह्या थका अनंतकोटी ब्रह्मांडनेविषे अंतर्यामीरूपे व्यापीने रहेछे जेम व्यासजी एक हता तेणे शुकजीने साद कर्यो त्यारे स्थावर जंगम सर्वे जीवमां रहीने साद कर्यो अने शुकजीए हुंकारो दीधो त्यारेपण स्थावर जंगम सर्वे सृष्टिमां रहीने हुंकारो दीधो, एवी रीते शुकजी जेवा मोटा सिद्ध होय तेपण जे सर्व जगतमां व्यापवाने समर्थ थायछे. तेतो भगवानना भजनना प्रतापे करीने एवी योगकळाने पाम्याछे तो पोते भगवान् पुरुषोत्तम तेतो योगेश्वर छे ने सर्व योगकळाना निधि छे ते एक ठेकाणे रह्याथका अनंतकोटी ब्रह्मांडमां पोतानी इच्छाए करीने ज्यां जेम घटे त्यां तेम भासे तेमां शुं कहेवुं? अने ए भगवानमां एम होय तेनुं शुं आश्चर्य छे? केमजे कोइक गोडीयो होय ते तुच्छ मायाने जाणेछे तेमांपण लोकोने केवुं आश्चर्य थायछे ने तेनी यथार्थ खबर पडती नथी; तो भगवानमांतो सर्व योगकळाओ

१ भगवान् सदा मनुष्याकृति होय तो अन्याकृति केम घटे? एवो पुछवानो अभिप्राय छे। २ कार्यवशात्।

रहीछे ते महा आश्चर्यरूप छे तेने जीव केम जाणी शके? माटे भागवतमां कह्युंछे जे 'आटला भगवानना मायाने तर्याछे' अने वळी एम कह्यु जे 'कोइ भगवाननी मायाना वळने पार पाम्या नथी' तेणे करीने एम जाणवुं जे, ए भगवाननी योगकळामां ब्रह्मादिक जेवाने कुतर्क थाय तो ए भगवाननी मायाना वळना पारने न पाम्या कहेवाय, ते कुतर्क ते शुं तो जे 'ए भगवान् ते केम एम करता हशे' अने भगवानने एम समझे जे 'एतो समर्थ छे ते जेम करता हशे ते ठीक करता हशे' एवी रीते भगवानने निर्दोष समझे तो मायाने तर्या कहेवाय. अने कल्याणनी रीतितो एक सरखी छे पण भजनारा जे पुरुष तेनेविषे उत्तम मध्यम अने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारना भेद छे ने तेमनी[1]श्रद्धा अनंत प्रकारनी छे तेने योगे करीने कल्याणना मार्गमां पण अनंत भेद थयाछे अने वस्तुगते तो कल्याणनो मार्ग एक छे अने भगवाननुं सरूपपण एकज छे अने ते भगवान् अतिसमर्थ छे ने ते जेवो थवाने काजे अक्षरपर्यंत कोइ समर्थ थतो नथी ए सिद्धांत छे.

पछी मुक्तानंदसामीए श्रीजिमहाराजने कह्युं जे "झीणोभाइतो आज बहु दिलगीर थया अने एम बोल्या जे ज्यारे महाराज अमारे घेर अव्या नहि त्यारे अमारेपण घरमां रह्यानुं शुं काम छे?" ए वात सांभळीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मुंझाइने रीसे करीने जे प्रेम करे ते प्रेम अंते नभवानो नहि अने रीसवाळानी भक्ति तथा प्रेम ए सर्वे अंते खोटां थइ जायछे माटे मुंझाइने झांखुं मुख करवुं तेतो अति मोटी खोट छे, पछी झीणाभाइए कह्युं जे, भगवान् ने भगवानना संत ते पोताने घेर आवे त्यारे मुख प्रफुल्लित थयुं जोइए अने ज्यारे भगवान् ने संत न आवे

१ सात्त्विकी आदिक ।

त्यारे तो मुख झांखुं थयुंज जोइए अने हैयामां शोकपण थयो जोइए, पछी ए वार्ता सांभळीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवान् ने संत ते आवे त्यारे राजि थवुं पण शोक तो क्यारेय पण करवो नहि अने जो शोक कर्यानो स्वभाव होय तो अंते जरुर कांइक भुंडं थया विना रहे नहि. माटे पोतपोताना धर्ममां रहीने जे रीतनी भगवाननी आज्ञा होय तेने राजिथका पाळवी पण पोतानुं गमतुं करवा सारु कोइ रीते मुंझावुं नहि अने भगवान् क्यांइक जवानी आज्ञा करे ने जो शोक करीने मुंझाय तो प्रथम जे भगवाने दर्शन आप्यां होय तथा प्रसाद आप्यो होय तथा अनंतप्रकारनी ज्ञानवार्ता करी होय इत्यादिक क्रियाए करीने जे पोताने सुख प्राप्त थयुं होय ते जतुं रहे अने मुंझवणे करीने बुद्धिमां एकलो तमोगुण छाइ जाय तेणे करीने केवळ दुःखीयो थकोज ज्यां मुके त्यां जाय पछी ए मुंझवणे करीने आज्ञापण यथार्थ पळे नहि, माटे भगवानना भक्तनेतो सदा अतिप्रसन्न रहेवुं अने प्रसन्नमने करीने भगवाननुं भजन करवुं पण गमे तेवो भूंडो देश काळ होय तोपण हैयामां लेशमात्र मुंझवण आववा देवी नहि । इति वचनामृतम् ॥ ४ ॥ ११२ ॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक वदि अमासने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां विराजमान हता अने धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने धोळी छींटनीडगली पहेरी हती ने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे सर्व परमहंसने प्रश्न पुछ्यो जे "केटला संकल्प कहेवाय त्यारे निष्कपट कहेवाय ने केटला संकल्प न कहेवाय त्यारे

कपटी कहेवाय?" पछी परमहंसवते एनो उत्तर न थयो, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, पंच वर्तमान संबंधि पोतामां काच्यप होय ने ते पोताथी विचारे करीने टळती न होय तो ते काच्यप जेमां न होय एवा जे संत तेने आगळ कहेवुं अने कोइक संतनो अवगुण पोताने आव्यो होय तो ते कहेवो तथा भगवानना निश्चयमां अनिश्चयनो घाट थयो होय तेपण कहेवो त्यारे ते निष्कपट कहेवाय अने ए मांहीलो संकल्प थयो होय ने तेने जे संतनी आगळ[1] न कहे तेने कपटी जाणवो.

पछी वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे[2] "एवो कपटी होय ने ते डाह्यो होय तेने केवी बुद्धिए करीने ओळखीए?" त्यारे एनो उत्तर पण परमहंसने न आवड्यो, त्यारे श्रीजिमहाराजे कह्युं जे एतो एम ओळखाय जे, एनो सहवास होय ने खाधे पीधे बेठते उठते चालते हालते पोता भेळो रहेतो होय त्यारे पोते तेनी खबर राखे ने पोताथी नांखो पडे त्यारेपण बीजा माणसपासे तेनी छानी खबर रखावे त्यारे तेनुं कपट ओळख्यामां आवे.

पछी वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "दंभे करीने वर्तमान पाळे ने दंभे करीने भगवाननो निश्चय राखतो होय ने ते पोते बुद्धिवाळो होय ने मानी होय ते पोताना वर्तमानने ने पोताना निश्चयने बीजाना साचा वर्तमान ने निश्चय तेनी आगळ अधिक करी देखाडतो होय त्यारे तेने एम केम कळीए जे एनो दंभे करीने वर्तमान ने निश्चय छे?" त्यारे ए प्रश्ननो उत्तरपण परमहंसवते न थयो,

---

१ दंभ, मान, मद के लज्जायी। २ पोते कपटी होय पण उपरथी साधुवेष धारीने पोते बुद्धिमान् छे माटे दंभर्थीज उपरथी सदाचरणने बतावतो होय ते बुद्धिवाळी पुरुषोए 'आ कपटी छे' एम शी रीते ओळखी शकाय? आटलो पुछवानो अभिप्राय छे।

त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनी प्रतिष्ठानो[1] भंग थाय त्यारे[2] एनो दंभ कळाय नहितो न कळाय.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "भगवानना निश्चय तथा वर्तमान ते बेमांथी केवो घाट होय ते पाडे अने केवो घाट होय तोपण न पाडे अने तेनो अवधि होय ते केवो जे क्यां सुधी ए घाट रहे ते धर्ममांथी पाडे ने भगवानना निश्चयमांथी पाडे?" त्यारे एनो उत्तरपण परमहंसवते थयो नहि, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे घाटने टाळ्यानो जतन करे तोपण टळे नहि एवो जे कांइक धर्म पाळ्यामां अयोग्य घाट रहेतो होय अने ते घाट पनर दिवस तथा महिना सुधी न थाय ने वळी कोइक दिवस प्रकट थइ आवे एवो जे घाट ते धर्ममांथी पाडे अने एमज भगवानना निश्चयमां पण जाणवुं अने जे घाट थयो ने तेने विचारे करीने टाळी नाखे ने पाछो फरीने ते घाट थाय नहि एवो जे घाट ते ए बेमांथी पाडी सके नहि.।

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "सत्संगमां दृढ पायो केनो थाय ने केनो न थाय?" पछी एनो उत्तरपण परमहंसने न आवड्यो, त्यारे श्रीजिमहाराजे कर्यो जे, जेम दत्तात्रेये पंच भूत, चंद्रमा, पशु, वेश्या, कुमारी, पोतानो देह इत्यादिक सर्वेमांथीपण गुण लीधा, एवी रीते संतमां जेने गुण ग्रहण कर्यानो स्वभाव होय तेनोज सत्संगमां दृढ पायो थायछे अने जेने संतमां गुण लीधानो स्वभाव न होय ते सत्संगमां रह्यो छे तोपण एनो दृढ पायो नथी.

पछी वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "संत तथा शास्त्र तथा पोतानो विचार ए त्रणे होय त्यारे अतिशय इंद्रियो अंतःकरण जीताय

१ मानभंग। २ शोक, क्रोधनो उदय इत्यादि लक्षणथी।

के एमांथी ए केरानुं होय तोपण जीताय ? अने जो एम कहेशो जे 'ए त्रणे वानां भेळां होय तो जीताय' त्यारे संत पासेथी केवी युक्ति शीखवी अने शास्त्रमांथी शी युक्ति शीखवी अने पोताने विचार करीने शी युक्ति शीखवी ते कहो ?" त्यारे एनो उत्तरपण परमहंसथी थयो नहि, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, शास्त्रे करीनेतो भगवान् तथा संत तेनुं माहात्म्य समझवुं अने संतथी एम शिखवुं जे जे रीते संत इंद्रियोने जीत्यानी युक्ति बतावे जे 'आवी रीते नेत्रनी दृष्टि नासिका उपर राखवी तथा ग्राम्यवार्ता न सांभळवी' इत्यादिक जे युक्ति ते संतथी शिखवी अने ते संते शिखावी जे युक्ति तेने पोताने विचारे करीने पोताना कल्याणने अर्थे सवळी समझीने मानवी ने तेम वर्तवा लागवुं एम त्रणे वानांए करीने इंद्रियो अंतःकरण जितायछे.

अने ते पछी वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "इंद्रियोने जीत्ये अंतःकरण जीतायछे के अंतःकरणने जीत्ये इंद्रियो जीतायछे ?" पछी ए प्रश्ननो उत्तरपण परमहंसने न आवड्यो, त्यारे श्रीजिमहाराजे कर्यो जे, बाह्य इंद्रियोने देहदमने करीने जीते अने देहदमने करीने बाह्य इंद्रियो जीताणी होय तोपण पांच वर्तमानना नियममां दृढ थइने रहेतो होय तो बाह्य इंद्रियो जीतवे करीने अंतःकरण जीताय पण एकले अंतःकरणने जीतवे करीने बाह्य इंद्रियो जीताय नहि. अने बाह्य इंद्रियोने जीतवे करीनेतो अंतःकरण जीतायछे, केमजे जो बाह्य इंद्रियोने जीते ने विषयमां प्रवर्तवा दे नहि त्यारे अंतःकरण मांहिली कोरेथी निराश थइ जायछे जे 'आ देहे करीने आ वात बनवानी नथी.'

अने ते पछी वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "बाह्य इंद्रियो शाणे करीने जीताय ने अंतःकरण शाणे करीने जीताय ?" पछी एनो

उत्तरपण परमहंसने न आवड्यो, त्यारे श्रीजिमहाराजे कर्यो जे, धर्मशास्त्रमां कह्या छे जे त्यागीना नियम तेने राखे तथा आहारने नियममां राखे तथा तप्तकृच्छ्र चांद्रायणादिक व्रत करे तथा जाणी जाणीने ताढ, तडको, भुख, तरस तेनुं सहन करे अने भगवाननां कथा कीर्तन वार्ता करे तथा भजन स्मरणमां बेसे तथा आसन जीते इत्यादिक साधने करीने बाह्य इंद्रियो जीतायछे अने भगवानना माहात्म्यनो विचार ने भगवाननुं ध्यान तथा आत्मनिष्ठा एटले करीनें अंतःकरण जीतायछे । इति वचनामृतम् ॥५॥११२॥

संवत् १८७७ ना मागशर शुदी १ पडवाने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराखाचरना दरबारमां रात्रिने समे विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी छींटनी डगली पहेरी हती तथा धोळो फेंटो बांध्यो हतो तथा बीजे धोळे फेंटे करीने बोकानी वाळी हती ने ते धोळा फेंटानुं छोगलुं माथे लटकतुं हतुं ने चोफाळ ओढ्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "सत्संग थया पछी दुर्लभमां दुर्लभ ते शुं साधन मान्युंछे?" पछी ए प्रश्ननो उत्तर परमहंसवते न थयो, त्यारे श्रीजिमहाराजे कर्यो जे, एकांतिकपणुं एमां आवे ए अतिशय दुर्लभ छे. ते एकांतिकपणुं ते शुं तो-धर्म, ज्ञान अने वैराग्य ए त्रणे युक्त जे भगवाननी भक्ति करवी तेने एकांतिकपणुं कहीए.

पछी वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "धर्म संबन्धि साधनमां एवुं कयुं साधन छे जे एक राख्ये करीने सर्वे धर्म रहे अने भगवान

१ न बनी शके तेवुं कठिन ।

संबन्धि जे भजन स्मरण कीर्तन वार्ता ए आदिक साधन छे तेमां एवुं एक साधन कयुं छे जे आपत्काळ होय ने सर्वे जाय ने जो एक रहे तो सर्वे रहे?" पछी तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, धर्म संबन्धि साधनमां तो एक निष्कामपणुं होय तो सर्वे साधन आवे अने भगवान संबन्धि तो ए साधन छे जे निश्चय[१] रहे तो सर्वे आवे.'

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "केवी मति एक प्रकारनी राख्ये रुडुं थाय ने तेने जो फेरवीए तो भुंडुं थाय अने केवी मतिने वारंवार फेरवीए तो रुडुं थाय ने न फेरवीए तो भुंडुं थाय?" पछी तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, भगवानना निश्चयरूप जे मति तेनेतो फरवाज देवी नहि भगवाननुं माहात्म्य सांभळीने तेनी पुष्टि वारंवार कर्या करवी तो रुडुं थाय ने ए मतिने वारंवार फेरवे तो भुंडुं थाय. अने पोते पोताना मनने जाण्ये जे मतिमां निश्चय कर्यो होय जे 'मारे आम करवुंछे' ते मतिने संतने वचने करीने वारंवार फेरववी ने संत कहे जे 'अहीं बेसवुं नहि ने आ करवुं नहि' तो ते ठेकाणे बेसवुं नहि ने ते करवुं नहि,' एवी रीते मतिने फेरवे तो रुडुं थाय ने ए मतिने फेरवे नहि ने पोतानुं धार्युं करे तो भुंडुं थाय.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, केवी जातनो सत्संगी अथवा परमहंस होय अने धर्ममां संपूर्ण रहेतो होय ने तेने पासे बेसीए ने वात सांभळीए तो दोष लागे?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, जेने भगवाननो निश्चय होय ने धर्ममां पण पोते रहेतो होय तोपण जो

१ "भक्त्या सञ्जातया भक्त्या" इत्यादिवचनथी यद्यपि 'प्रेमलक्षणा भक्तिना श्रवणादिक साधनो छे' एम कह्युंछे तथापि ते साधनोपण निश्चयमूळ छे माटे आ स्थळे निश्चयने साधनपणे कह्यो छे. माटे निश्चयनेज भक्तिमा साधनपणे अने मूळपणे कहेवामा दोष नथी ।

तेने व्यवहारमां आसक्ति होय तथा देहाभिमान होय तथा मान होय ने तेने भगवान् तथा संत ते खोदे तो ते भगवाननो ने संतनो अवगुण जरुर ले पछी बीजाने आगळपण भगवानना तथा संतना अवगुणनी वात करीने तेने विमुख जेवो करे, एनो जे होय तेनो कोइ रीते संबंध न राखवो अने राखे तो भुंडुं थाय.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "केवो साधु होय ने ते धर्ममां रहेतो होय ने निश्चयपण होय तोपण तेने भेळे नावा जवुं नहि ने पासे पथारी करवी नहि ने तेनी वातपण न सांभळवी?" पछी तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, जे संत हिमतरहित वात करतो होय जे 'शुं एक जन्मे करीने निष्कामादिक गुण आवेछे? एतो भगवान कृपा करे तो आवे, नहितो अनेक जन्मे करीने कल्याण थाय पण आज देहे करीने शुं कल्याण थायछे?' एवी रीते जे हिमतरहित वात करतो होय तेना संगनो सर्वप्रकारे त्याग करवो अने जे एम कहेतो होय जे 'आने आ देहे करीने कृतार्थ थया छीए ने काम, क्रोध, मद, मत्सर, मान इत्यादिक दोषनो शो भार छे? भगवान ने संतना प्रतापे करीने ए सर्वेनो नाश करी नाखीशुं' एम जे कहेतो होय ने ते कामादिक दोषने नाश करवाना उपायमां तत्पर थइने मंड्यो होय तेनो संग सर्वप्रकारे करवो.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "केवो साधु हिमतसहित वात करतो होय तोपण तेनो त्याग करवो?" पछी तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे जे संत केवळ पोताना पुरुषार्थनेज अधिक कहेतो होय अने पुरुषार्थे करीनेज पोताने कृतार्थ मानतो होय पण भगवाननुं बळ न राखे अने एम न समझे जे 'आ साधने करीने भगवानने राजी करवा छे' तो तेनोपण त्याग करवो.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "केवो साधु होय तेनो संग करवो ने केवानो न करवो ?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, वर्तमानपण सुधां सारां पाळतो होय ने निश्चय सुधो होय ने ते पासे आपण रहेता होइए ने आपणने टोके नहि ने पंपोळीने राखे ने जापरो राखे तो ते मुक्तानंदस्वामी जेवो लोकव्यवहारे मोटो कहेवातो होय तेनोपण संग न करवो. अने जे संत पोताने टोक्या करे ने जे स्वभाव देखे ते उपर खटको राखे ने ते न टळे त्यांसुधी वात कर्या करे ने ललोचपो राखे नहि ने ते लोकव्यवहारे मोटो न कहेवातो होय तोपण तेनो संग करवो.

पछी वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "जे संतमां बधा गुण सारा मोटा मोटा भक्ति ज्ञानादिक होय पण तेमां एक एवो कयो भुंडो दोष होय जेणे करीने तेनो संग न करीए ?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, जेने आळस बहु होय ने निद्रा बहु होय ने स्नान ध्यानादिक जे नियम तेने पाळवानुं कोइक कहे तो कहे 'हमणां करीशुं शी उतावळ छे धीरेधीरे थशे ?' एम बोले ते सुधो सारो होय तोपण तेनो संग न करवो.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "सुधी सारी वात करतो होय पण तेनी वात न सांभळीए एवो एनी वाणीमां शो दोष जाणवो ?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, वात करवामां पोतानेविषे जे भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, धर्म तेनीज अहंकारे करीने पोते सरसाइ देखाडे ने बीजा संतमां जे ज्ञान भक्ति आदिक गुण तेनी कांइक न्यूनता देखाडे एवो जेनी वाणीमां दोष होय तेनी वात न सांभळवी.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "जेनी वाणीमांतो कुत्सि-

तपणुं होय तोपण ते वाणीने अमृतनी पेठे पान करीए एवी ते कयी वाणी छे?" पछी तेनोपण पोते उत्तर कर्यो जे, जे संत वात करे त्यारे पोते पोताना संबंधी मावाप बोन भाइ तथा पोतानी जाति तेनी कुत्सित शब्दे करीने निंदा करतो होय तो तेनी ते वाणी सारी जाणवी, शासारु जे ते वाणीने जे सांभळे तेने ते संतनी कोरनो एम गुण आवे जे 'आ संतनेतो कोइ रीते पोताना देह संबंधी आदिकमां हेत नथी' माटे ते वाणीने अमृतनी पेठे पान करवी.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "कये ठेकाणे मान राखवुं ने कये ठेकाणे मान न राखवुं?" पछी तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, भगवाननो दृढ आश्रित होय ने ते जेवो तेवो गरीब हरिभक्त होय तोपण ते आगळ मान न राखवुं. अने जेने सत्संगथकी कांइक पाछो पग पडी गयो होय तेने आगळ तो मान राखवुं पण तेथी दबइ जवुं नहि ने प्रश्न उत्तरमां तेना वेण उपर वेण लाववुं.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "कये ठेकाणे भगवानना दर्शनादिकनेविषे तथा संतनेविषे हेत न राखवुं ने कये ठेकाणे राखवुं?" त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, अमे सर्वे संतने साधारणपणे कहेता होइए जे 'बुरानपुर तथा काशीए कोण जशे' त्यारे कोइ बोले नहि त्यारे ते सभामांथी पोते उठीने अमने एम कहेवुं जे'कहो तो हे महाराज! हुं जाउं' एम कहीने अमारी आज्ञा लइने त्यां जवुं एवे ठेकाणे अमारी प्रसन्नताने अर्थे अमारा दर्शनादिकनुं तथा संतसमागमनुं हेतपण न राखवुं अने अमे तथा संत ते जेने कचवाणा होइए ने चढीने तिरस्कार करीने बहार काढी मुक्यो होय ने ते शोके करीने रोतो होय ने ते पासे कोइ एकडमल विमुख जेवो आवीने संतनो अथवा अमारो अवगुण कहेवा लागे त्यारे तेनी आगळ ते संतनी कोरनुं ने

भगवाननी कोरखुं वहु हेत जणावे अने एम कहे जे 'हुंतो एनो वेचाण छुं ने मारा कटका करी नाखे तोपण मारे एमनो अवगुण न आवे एतो मारा कल्याणना करतल छे' एवी रीते ते ठेकाणे अतिशय हेत जणवे.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "जेणे करीने भगवान् राजी थता होय तोपण ते करवुं नहि अने जेणे करीने भगवान् कुराजी थाय तोपण ते करवुं एवुं ते शुं छे?" पछी एनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, अमे कोइक वचन कहीए ने तेमां जो अधर्म जेवुं होय तो तेनेविषे चिरकारी थवुं कहेतां तेमां घणीक वार लगाडवी पण तुरत मानवुं नहि, जेम श्रीकृष्णभगवाने अर्जुनने कह्युं जे 'अश्वत्थामानुं माथुं कापी नाखो' पछी ते वचन अर्जुने न मान्युं, तेम एवी रीतनुं जे वचन तेमां अमे राजी थता होइए तोपण न मानवुं तथा पंच वर्तमान संबंधी जे नियम कह्या छे तेमांथी जेणे करीने भंग थतो होय एवुं जे वचन ते न मानवुं अने ए बे वचन न मानीए ने भगवान कचवाता होय तो सारी पेठे कचवाववा पण तेमां राजी न करवा.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननुं ध्यान करते थके मननेविषे अनेक प्रकारना भुंडा घाटना तरंग उठवा मांडे जेम समुद्रना मोटामोटा तरंग उठे तेम भुंडा घाट उठवा लागे त्यारे ते घाटने केम टाळवा?" पछी एनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, ज्यारे एवा भुंडा घाट थवा मांडे त्यारे ध्यानने पडयुं मुकीने जीभे करीने उच्च स्वरे निर्लज्ज थइने ताळी वजाडीने स्वामिनारायण स्वामिनारायण भजन करवुं अने हे दीनबंधो! हे दयासिंधो! एवी रीते भगवाननी प्रार्थना करवी तथा भगवानना संत जे मुक्तानंदस्वामी जेवा मोटा होय तेनां नाम लइने तेनी प्रार्थना करवी तो घाट सर्वे टळी जाय ने निरांत थाय पण ए विना बीजो एवो घाट टाळ्यानो उपाय नथी.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "आ सत्संगमां जे अति मोटो गुण जणातो होय ने ते गुणनां सर्वे वखाण करता होय तोपण ते त्याग करवा योग्य होय एवो कयो गुण छे? अने दोष होय ने ते ग्रहण करवा योग्य होय एवो कयो दोष छे?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, मुक्तानंदस्वामी जेवा होय ते सर्वेथी सरस वर्तमान पाळता होय ने तेणे करीने बीजा संतने उद्वेग थाय केमजे एसनी बरोबर वर्ताय नहि ते सारु ए गुण यद्यपि मोटो छे तोपण तेनो त्याग करीने सर्व संतने बरोबर वर्तवुं. अने बरोबर वर्तवारूप दोष छे तोपण एनुं ग्रहण करवुं.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "आ संतमां एवो कयो एक दोष छे जे जेनो त्याग करे त्यारे सर्वे दोषमात्रनो त्याग थइ जाय अने एवो कयो एक गुण छे जे एक आव्ये सर्वे गुण आवे?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, जो देहाभिमानरूप दोष छे तो तेमां सर्वे दोष रह्या छे ने तेनो त्याग करे तो सर्वे दोषनो त्याग थइ जायछे अने 'हुंतो देहथी नोखो जे आत्मा ते छुं' एवो जे आत्मनिष्ठारूप एक गुण ते आवे तो सर्वे गुणमात्र आवेछे.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "केवा पंच विषयने सेववे करीने बुद्धिमां प्रकाश थायछे अने केवा पंच विषयने सेववे करीने बुद्धिमां अंधकार थइ जायछे?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, भगवान् संबंधी जे पंच विषय तेने सेवे तो बुद्धिमां प्रकाश थायछे अने जगत संबंधी पंच विषयने सेवे तो बुद्धिमां अंधकार थइ जायछे.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "केवो देश, केवो काळ, केवो संग, केवी क्रिया जेनो संबंध भगवाननी आज्ञाए करीने पण न

करवो?"-त्यारे एनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, ;जे देशमां रहे थके पोताना देहना संबंधीनो वारंवार वेठा उथ्यानो योग थतो होय तो ते देशमां भगवाननी आज्ञाए करीनेपण न रहेवुं अने अमारां दर्शन थतां होय ने ते भेळे स्त्रीयोनां दर्शन थतां होय एवो संग तथा क्रिया होय त्यां अमे वेसारीए अने कहीए जे 'अमारां दर्शन करो' तोपण ते ठेकाणे वेसवुं नहि कोइक मिप लइने उठी जवुं अने जे काळमां विषमपणुं वर्ततुं होय ने मारकुट थती होय ने जो भगवाननी आज्ञा होय तोपण त्यांथी चाली नीकळवुं पण तेज ठेकाणे रहीने मार न खावो.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "कयां शास्त्रोने सांभळवां ने भणवां अने कयां शास्त्रोने न सांभळवां ने न भणवां?" पछी तेनो उत्तरपण पोते कर्यो जे, जे शास्त्रमां भगवाननुं साकारपणुं प्रतिपादन न कर्युं होय तथा भगवानना अवतारनुं निरूपण न होय अने ते ग्रंथ शुद्ध वेदांतना होय ने एक अद्वितीय निराकारनुं प्रतिपादन करता होय ने ते ग्रंथ सुधा बुद्धिवानना करेला होय तोपण ते ग्रंथने कोइ दिवस भणवा नहि ने सांभळवा पण नहि अने जो रणछोडभक्तना जेवां कीर्तनज होय ने तेमां भगवाननी मूर्तिनुं वर्णन होय तो तेने गाववां ने सांभळवां तथा एवी रीतना जे ग्रंथ होय तेने भणवा ने सांभळवा । इति वचनामृतम् ॥ ६ ॥ ११४ ॥

संवत् १८७७ ना मागशर शुदी ३ त्रीजने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराखाचरना दरवारमां ढोलिया उपर विराजहता अने माथे धोळी पाघनुं छोगलुं विराजमान हतुं तथा धोळी छींटनी डगली पहेरी हती अने रुनो भरेलो धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने धोळी पछेडी ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

अने ते समयमां वचनामृतनुं पुस्तक नित्यानंदस्वामीए लावीने श्रीजिमहाराजने आप्युं, पछी ते पुस्तकने जोइने बहु राजी थया अने परमहंस प्रत्ये बोल्या जे आजतो भारे भारे प्रश्न पुछो तो वात करीए, त्यारे मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "श्रुतिमां कह्युं छे जे "ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः[1]" "तमेवं विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय[2]" ए श्रुतिमां एम कह्युं जे 'भगवाननुं साक्षात् ज्ञान थाय त्यारे जीवनुं कल्याण थायछे' त्यारे शास्त्रमां जे बीजां साधन[3] कल्याणने अर्थे बताव्यां छे तेनुं शुं प्रयोजन छे? केमजे कल्याणतो ज्ञाने करीनेज थायछे?" एवा प्रश्नने सांभळीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्ञान ते जाणवानुं नाम छे[4]. त्यारे नित्यानंदस्वामीए आशंका करी जे, जाणवुं एज ज्ञान होय तो शास्त्रे करीने भगवानने सर्वे जगत् जाणेछे तेने करीने सर्वेनुं कल्याण थतुं नथी. त्यारे श्रीजिमहाराज बो-

---

१ अर्थः-ज्ञान विना मुक्ति न थाय। २ अर्थः-परमात्माने जाणीने संसारने उल्लंघन करेछे, मुक्तिमाटे ज्ञान सीवाय बीजो मार्ग नथी। ३ स्वधर्म तप योग विगेरे। ४ ज्ञाधातुनुं केवळभावमां 'ज्ञान' एवुं रूप थायछे माटे ज्ञाननो बीजो पर्याय वेदन छे ते ज्ञान पदार्थविषयवाळुं छे एटले 'केनुं ज्ञान' एम ज्ञानमां विषयनी अपेक्षा छे. विषय विना ज्ञाननुं निरूपणज थतुं नथी. पदार्थ अनेक प्रकारना छे माटे ज्ञान पण अनेक प्रकारनुं छे जेमके रसज्ञान रूपज्ञान इत्यादिक पदार्थना अवलंबनवाळा अनेक प्रकारना ज्ञानने मध्ये तमे कया पदार्थवाळुं ज्ञान मुक्तिमां कारण मानोछो, केमके तमोए कहेली "**ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः**" आ श्रुतिमां तो ज्ञाननो विषय स्पष्टपणे कह्यो नथी। आवुं वचन सांभळीने मुक्तानंदमुनिए कह्युं के-में कहेली श्रुतिमांना ज्ञानना विषयतो प्रत्यक्ष भगवान मान्या छे, तेमना ज्ञानथीज मुक्ति थायछे, केमके-मायिक पदार्थनुं ज्ञानतो अज्ञानज छे, साक्षात् भगवाननुं ज्ञानतो मुक्तिनुं मुख्य साधन छे, ते-"**तमेव विदित्वातिमृत्युमेति**" "**ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपापैः**" **तमेव विद्वानमृत इह भवति**" इत्यादिक श्रुतियोमां कह्युं छे। (आटलो विशेष आ स्थळे लेवो).

ल्या जे, शास्त्रे करीने परोक्षपणे भगवानने जाण्या तेणे करीने जेम कल्याण नथी तेमज रामकृष्णादिक भगवानना अवतार हता त्यारे तेमने सर्वे मनुष्ये प्रत्यक्ष दीठा हता तो तेणे करीने पण शुं कल्याण थयुं छे? । त्यारे मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, जेणे भगवानने प्रत्यक्ष दीठा होय तेनुंतो जन्मांतरे कल्याण थायछे. त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेणे शास्त्रे करीने भगवानने जाण्या तेणे करीने पण जन्मांतरे कल्याण थायछे, कांजे जेने शास्त्रे करीने जाण्या छे तेनेज नेत्रे करीने देखेछे अने जेने नेत्रे करीने देखेछे तेनेज शास्त्रे करीने जाणेछे माटे बेयनुं बीजबळ बरोबर थायछे ने बेयनुं जन्मांतरे कल्याणपण बरोबर छे, केमजे श्रवणे करीने भगवानने सांभळ्या तेमां शुं ज्ञान नथी? पण तेने ते सांभळ्याज कहेवाय अने त्वचाए करीने स्पर्श कर्यो तेमां शुं ज्ञान नथी? पण तेने ते स्पर्श कर्योज कहेवाय अने नेत्रे करीने जोया तेमां शुं ज्ञान नथी? पण तेने ते जोयाज कहेवाय अने नासिकाए करीने सुंघ्या तेमां शुं ज्ञान नथी? पण तेने ते सुंघ्याज कहेवाय अने जिह्वाए करीने वर्णन कर्या तेमां शुं ज्ञान नथी? पण तेने ते वर्णन कर्याज कहेवाय, एवी रीते बाह्य इंद्रियोए करीने ज्ञान छे तथा अन्तःकरणे करीने जे ज्ञान छे अने अंतःकरण इंद्रियो पर जे जीवसत्ता तदाश्रित जे अनुभव ज्ञान छे तेमांथी तमे कया ज्ञानने कहोछो? अने जे भगवान छे तेणेतो आ जगतनी उत्पत्तिने अर्थे अनिरुद्ध एवुं स्वरूप धार्युं छे जेने विषे स्थावर जंगमरूप जे विश्व ते सावकाशे करीने रह्युं छे अने संकर्षणरूपे करीने जगतनो संहार करेछे अने प्रद्युम्नरूपे करीने जगतनी स्थिति करेछे तथा मत्स्य कच्छादिक अवतारनुं धारण करेछे, एवी रीते ज्यां जेवुं कार्य त्यां तेवा कार्यनी सिद्धिने अर्थे तेवा

रूपनुं ग्रहण करेछे तेमां कोइ कार्यतो एवुं छे जे जेमां अंतःकरण इंद्रियो नथी पुगतां केवळ अनुभवज्ञाने करीनेज जणायछे त्यारे तेवा कार्यनी सिद्धिने अर्थे भगवानपण तेवा स्वरूपनुं धारण करेछे अने कोइ कार्य एवुं छे जे इंद्रियो अंतःकरणे करीने जाण्यामां आवेछे त्यारे ते कार्यनी सिद्धिने अर्थे भगवानपण तेवाज थायछे[1] माटे तमे कया भगवानना स्वरूपने ज्ञाने करीने कल्याण थाय एम पुछोछो? त्यारे नित्यानंदस्वामीए कह्युं जे, जे भगवानना स्वरूपने विषे इंद्रियो, अंतःकरण अने अनुभव ए त्रणे पुगे एवा भगवानना स्वरूपने ज्ञाने करीने मोक्ष थाय एम कहीए छीए, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एवा जे भगवान् तेतो श्रीकृष्ण छे तेतो पोते पोताने एम कहे छे जे "यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः। अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः॥"[2] "विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्"[3] "मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय!। मयि

१ अभिप्राय एटलो छे के—ज्यारे भगवान् अनिरुद्धादिरूपे होय त्यारे तेमनो आश्रय करनाराने चक्षु आदिक बाह्य करणथी अने चित्तादि आंतर करणथी ग्रहण थायछे अने ज्यारे तेम न होय त्यारे तो ध्यान समाधिमां तेने करनाराने बाह्य आन्तर इन्द्रियोने अगोचर होवाथी केवळ स्वानुभवाथीज ग्रहण थायछे। २ अर्थः—पूर्व श्लोकमां कहेला स्वभावथी क्षर पुरुषने हुं अतीत छुं एटले तेना दोषोनो स्पर्श मने नथी अने अक्षर मुक्तथकी पण उक्त हेतुओथी अतिशय उत्कृष्ट छुं माटे "परं ज्योतिरुपसंपद्य स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते स उत्तमः पुरुषः" इत्यादि श्रुतिमां अने "अंशावतारं पुरुषोत्तमस्य ह्यनादिमध्यान्तमजस्य विष्णोः" इत्यादिस्मृतिमां 'पुरुषोत्तम' नामथी प्रख्यात छुं। ३ अर्थः—आ जडचिदात्मक समग्र जगतने मारा महिमाना (नियमन करवानुं सामर्थ्य) एक अंशथी आक्रमण करीने हुं रह्यो छुं। ४ अर्थः—हे अर्जुन! माराथी व्यतिरिक्त कोइपण ज्ञानबळादिगुणयोगथी परतर नथी, जेम सूत्रमां मणिगणो प्रोत छे तेम आ मारा शरीरभूत चिदचिदात्मक समग्र जगत् मारे विषे प्रोत छे एटले आश्रित छे।

सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव॥" "पश्य मे पार्थ! रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः। नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च॥"[1] इत्यादिक वचने करीने पोते पोताने इंद्रियो अंतःकरण थकी अगोचर कहेछे, [2] माटे भगवानने तत्त्वे करीने समझवा तेतो एम छे जे, इंद्रियो अंतःकरण तथा अनुभव ए त्रणे करीने यथार्थपणे प्रत्यक्ष भगवानने जाणे त्यारे पुरो ज्ञानी कहेवाय अने ए त्रण प्रकारमांथी जो एके ओछों होय तो तेने आत्यंतिक ज्ञान न कहेवाय ने तेणे करीने जन्म मृत्युने पण न तरे. [3] अने कोइक साधने करीने ब्रह्मस्वरूपने पाम्यो होय तेपण जो प्रत्यक्ष भगवानने एवी रीते न जाणे तो तेपण पुरो ज्ञानी न कहेवाय. [3] माटे श्रीमद्भागवतमां कह्युंछे जे "नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं न शोभते ज्ञानमलं निरञ्जनम्" [4] तथा गीतामां कह्युंछे जे "कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।

---

१ अर्थः—हे पार्थ! मारा सर्वना आश्रयरूप अनेक रूपने जो. जे रूपो नाना प्रकारनां अने दिव्य अने शुक्लादि नाना वर्णवाळा अने सुरनरादि नाना आकृतिवाळां छे। २ माहात्म्यज्ञाने सहित स्वरूपज्ञानने विशेषपणे कहेछे। ३ माटे शुकादिक ब्रह्मस्वरूप थया हता पण भगवाननी भक्तिए युक्त एवा ज्ञानथी पोतानी न्यूनताने टाळता हवा. भगवानना ज्ञाने सहित एवी भक्ति ब्रह्मात्मज्ञानना फळरूप छे, तेवी भक्ति विनानुं निष्फळ एवु जे ज्ञान तेनी भगवन्निष्ठ भक्तजनो प्रशंसा करता नथी। (आटलो विशेष आ स्थळे लेवो) ४ नैष्कर्म्य जे आत्माना यथार्थ उपासनरूप ज्ञान ते यद्यपि निरंजन एटले रागद्वेषादिरूप अंजने रहित छे पण जो भगवाननी भक्तिए रहित छे तो ते अत्यंत शोभतुं नथी अर्थात् भक्तियोग विनानो केवळ ज्ञानयोग शोभतो नथी। ५ अर्थः—मुमुक्षुए करवा योग्य कर्ममां जाणवुं रह्युं छे तथा विकर्म जे नाना प्रकारना वैदिक काम्यकर्म तेमांपण जाणवानुं रह्युं छे तथा अकर्म जे ज्ञान तेमांपण जाणवानुं रह्युं छे एवी रीते कर्मनी गति गहन छे एटले तेनुं तत्त्व न जाणी शकाय तेवुं छे।

अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः" अकर्म जे ज्ञान तेनेविषे पण जाणवुं रह्युंछे ते शुंतो जे ब्रह्मरूप थयो तेनेपण परब्रह्म पुरुषोत्तम ते जाणवा रह्या छे. अने जे ब्रह्मरूप थयो तेनेज पुरुषोत्तमनी भक्तिनो अधिकार छे. ते भक्ति ते शुं तो जेम श्वेतद्वीपवासी जे निरन्न मुक्त छे ते ब्रह्मरूप थका चंदन पुष्पादिक नाना प्रकारनी पूजासामग्रीए करीने परब्रह्म जे वासुदेव तेने पूजेछे तेम एपण ब्रह्मरूप थको प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति चंदन पुष्प श्रवण मननादिके करीने करे. ते भगवाने गीतामां कह्युंछे जे "[1]ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति। समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्॥" माटे ब्रह्मरूप थइने जे परब्रह्मनी भक्ति न करे तो तेपण आत्यंतिक कल्याणने न पाम्यो कहेवाय. अने[2] "[3]भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च। अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥" ए व्याप्य एवी जड प्रकृति छे अने "[4]अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे

१ अर्थः—जे ब्रह्मरूप थयो छे कहेतां आत्मस्वरूपनो जेने आविर्भाव थयो छे अने प्रसन्नमन छे एटले क्लेशकर्मादि दोषथी जेनुं मन कलुषित नथी अने कोइनोपण शोक करतो नथी, तेम कोइ पदार्थने इच्छतो नथी, सर्व भूतमां जे सम छे एटले कोइनोपण आदर नहि करनारो अर्थात् सर्व वस्तुने तृणवत् मानेछे ते पुरुष मारेविषे परा भक्तिने पामेछे अर्थात् जेने आत्मानो साक्षात् अनुभव थयो होय तेनेज परा भक्तिमां अधिकार थायछे। २ जेनी भक्ति करवानी कही छे एवा जे परब्रह्म प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम श्रीकृष्णभगवान् तेज बे प्रकृतिना आधार छे. ते गीतामां कह्युं छे जे—। ३ अर्थः—आ विचित्र अने अनन्त एवां भोग्य, भोगनां उपकरण अने भोगस्थानरूपे रहेला जगतनी आ प्रकृति पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, आकाश, मन आदि इन्द्रियो, महत्तत्त्व अने अहंकार आ आठ प्रकारे परिणाम पामी छे ते प्रकृति मदात्मक छे एम जाण, अर्थात् हुं अचेतन प्रकृतिथी विलक्षण छुं। ४ अर्थः—आ मारी अपरा (अप्रधानभूता) प्रकृति छे आ अचेतन प्रकृतिथी विलक्षण आकारवाळी, परा [प्रधानभूता] अने चेतनरूप एवी प्रकृति छे ते

पराम् । जीवभूतां महाबाहो ! ययेदं धार्यते जगत् ॥" ए व्यापक एवी चैतन्य प्रकृति छे. अने जे प्रत्यक्ष भगवान् छे ते केवा छे तो ए अष्ट प्रकारनी जे व्याप्य प्रकृति अने तेने विषे व्यापक एवी जे चैतन्य प्रकृति ते बेयना[1] आधार छे, जेम आकाश छे ते पृथिव्यादिक चार तत्त्वनो[2] आधार छे. अने पृथ्वीनी ज्यारे संकोच अवस्था थायछे ते भेळो आकाशपण संकोचने पामेछे ने पृथ्वीनी विकास अवस्था थायछे ते भेळी आकाशनीपण विकास अवस्था छे तथा जळ तेज अने वायुनी संकोच विकास अवस्था भेळी आकाशनीपण संकोच विकास अवस्था छे अने पृथिव्यादि तत्त्वनी संकोचविकास अवस्था ते बेय आकाशने विषे थायछे,[3] तेम ए बे प्रकृतिनी संकोचविकास अवस्था भेळी भगवाननीपण[4] संकोचविकास अवस्था छे ने ए बे प्रकृतिनी संकोचविकास अवस्था ते भगवानने विषे छे[5], एवा जे भगवान् ते सर्वना आत्मा छे, त्यां श्रुतियो छे—"अन्तः-

---

मदीया छे एम जाण, जे चेतन प्रकृतिए आ अचेतन समग्र जगत् धारण करेलुं छे, अर्थात् हुं चेतन प्रकृतिथी विलक्षण छुं ।

१ धारक व्यापकपणे करीने । २ धारक व्यापकपणे करीने । ३ तथापि आकाश पोताना सामर्थ्यथी निर्लेप छे । ४ यद्यपि आकाशमां संकोचविकास वस्तुताए नथी तथापि पोते पृथिव्यादि भूतोमां व्यापिने रह्यो छे तेथी ते भूतोमां थता संकोच विकासनो परंपराए आकाशमां उपचारमात्र थायछे, तेम निर्विकारि परमात्माना स्वरूपमा साक्षात् संकोचविकास नथी परतु पोताना शरीररूप जडाजड बे प्रकृतिमां अन्तर्यामिपणे पोते व्यापिने रह्याछे तेथी ते बे प्रकृतिमा थता संकोच विकासनो शरीरी परमात्मामां परंपराए उपचारमात्र थायछे, आवो भावार्थ समजवो । ५ तथापि भगवान् निर्लेप छे एटले जडाजड प्रकृतिना दोषोनो तेमने स्पर्श नथी । ६ अर्थः—सर्वे जनोना आत्मापणे सर्वमां अन्तःप्रवेश करीने सर्वने शिक्षण करनारा-नियमन करनारा छे ।

प्रविष्टः शास्ता जनानां सर्वात्मा" 'यस्याक्षरं शरीरं.... ....एप सर्वभूतान्तरात्माऽपहतपाप्मा दिव्यो देव एको नारायणः'[1] 'यस्यात्मा शरीरं य आत्मानमन्तरो यमयति स त आत्मान्तर्याम्यमृतः'[2] 'यस्य[3] पृथिवी शरीरं यः पृथिवीमन्तरो यमयति स त आत्मान्तर्याम्यमृतः' इत्यादिक श्रुतियो छे. तथा अन्नमयं ब्रह्म कह्योछे मनोमय ब्रह्म कह्योछे विज्ञानमय ब्रह्म कह्योछे आनंदमय ब्रह्म कह्योछे इत्यादिक घणीक प्रकारनी ब्रह्मविद्या कहीछे तेनुं शुं तात्पर्य छे जे, भगवान् सर्वना कारण छे ने सर्वेना आधार छे माटे ए सर्वेने ब्रह्म कह्याछे पण ए सर्व शरीर छे अने ए सर्वेना शरीरी ते भगवान श्रीकृष्ण प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम छे ते भगवानने विषे ए जड चैतन्यरूप जे बे प्रकृति ते संकोच विकास अवस्थाए करीने पोताना कार्य सहित सुखे करीने रही छे अने ए सर्वेने विषे भगवान् जेते अंतर्यामिरूपे कारणपणे करीने रह्याछे अने तेज भगवान् आ प्रत्यक्ष प्रमाण छे एवी रीते महिमाए सहित जे भगवानने जाणे ने देखे तेने परिपूर्ण ज्ञान कहीएँ.

---

१ अर्थः—जे परमात्मानुं अक्षर शरीर छे......आ सर्वभूतोना अन्तरात्मा अपहतपाप्मा (निर्दोप) दिव्य देव एक नारायण छे। २ अर्थः—जे परमात्मानुं जीवात्मा शरीर छे, जे परमात्मा जीवात्मामा अंत प्रवेश करीने नियमन करेछे आ अन्तर्यामी तारा अमृत आत्मा छे अर्थात् निरुपाधिक अमृतशाली परमात्मा छे। ३ "यस्यात्मा शरीरं" आ श्रुतिना जेवोज अर्थ छे। ४ आ अर्थ तैत्तिरीयोपनिषद्मां—"अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्" "प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात्" "मनो ब्रह्मेति व्यजानात्" "विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात्" "आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्" इत्यादिथी निरूपण कर्यो छे। ५ ते ज्ञान मुक्तिमा हेतु छे, बीजा साधनोतो मुक्तिना हेतुभूत ज्ञानना अंग छे, ते साधनोनुं मुक्ति प्रत्ये स्वतंत्रपणे हेतुपणुं नथी, जेने एवुं ज्ञान होय अने तेवुंज भगवाननुं दर्शन होय ते भक्तो परिपूर्ण ज्ञानी छे, तेमने काइपण अपूर्णपणुं नथी।

त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "एवी रीते देखातुं तो न होय ने अंतःकरणमांतो एवी रीतनी दृढ आंटी होय तेने परिपूर्ण ज्ञान कहेवाय के नहि ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम अंधारुं घर होय ने तेमां कोठी तथा थांभला रह्या होय तेने देखेछे तोपण यथार्थ देख्या न कहेवाय, तेम पुरुषोत्तम भगवाननेविषे जड चित् प्रकृति रहीछे ने ए प्रकृतिने विषे पोते रह्याछे तेने अनुमाने करीने जाणेछे पण जो देख्यामां नथी आवतुं तो परिपूर्ण ज्ञानी न कहेवाय[1] अने जो एने एवी आंटी ठावकी छे तो कांइक एने अलौकिकपणुं जणायुं जोइए, नहितो जणाशे. अने निःसंदेह एवी आंटी छे ने जणातुं नथी तो एम ए समझे जे 'ए भगवानने विषे तो सर्वे छे पण मने देखाडता नथी एवीज एनी इच्छा छे' एम समझीने ते भगवाननी भक्ति करतो थको पोताने कृतार्थ मानेछे तो ए परिपूर्ण ज्ञानी छे, माटे इंद्रियो अंतःकरण अने अनुभव ए त्रणे प्रकारे करीने जे भगवानने यथार्थपणे जाणतो होय तेने ज्ञानी कहीए. अने तेवा ज्ञानीने भगवाने गीतामां श्रेष्ठपणे कह्योछे–"आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ !। तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ॥" एवो जे ज्ञानी तेतो सदा साकारमूर्ति एवा जे प्रत्यक्ष भगवान् तेने प्रकृति पुरुष अक्षर तेथकी पर ने सर्वना कारण सर्वना आधार जाणीने अनन्यपणे सेवेछे, एवी रीते जे समझवुं तेने ज्ञान कहीए अने ए ज्ञाने करीने आत्यंतिक मोक्ष थायछे। अने जे एम नथी समझता ने केवळ शास्त्रे करीने "अहं ब्रह्मास्मि" थइ बेसेछे ने कहेछे जे 'राम कृष्णादिक तो ब्रह्मरूप ए-

१ भगवानना स्वरूपनुं पूर्वोक्त ज्ञान । २ केमके कदाचित् संशय थवानो संभव रहेछे । ३ आ श्लोकनो अर्थ ५६ ना वचनामृतनी टीपणीमां कर्यो छे। ४ अर्थः—हुं ब्रह्म छुं।

वो जे हुं ते मारी लहेरी छे'[1] एवा जे ब्रह्मकुंदाळ[2] आधुनिक वेदांती तेतो अतिदुष्ट छे ने महापापी छे अने मरीने नरकमां पडेछे ते कोइ दिवस एनो छुटको थतो नथी। इति वचनामृतम् ॥ ७ ॥ ११५ ॥

संवत् १८७७ ना मागशर शुदी ५ पंचमीने दिवस रात्रिने समे श्रीजिमहाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां विराजमान हता अने धोळो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समयने विषे श्रीजिमहाराजने मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "जे भोळो होय तेनेतो कोइ स्वभाव देखीने संतनो अवगुण आवे पण जे डाह्यो होय तेने संतनो अवगुण केम आवेछे[3] ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे डाह्यो होय तेने पोतामां जे कोइ अयोग्य स्वभाव देख्यामां आव्यो ने तेनी उपर पोते अति दोषबुद्धि राखीने द्वेषे सहित ते स्वभावने टाळ्यानो दाखडो करतो होय अने ते स्वभाव उपर पोताने अतिखार होय अने तेनो ते स्वभाव कोइ बीजा संतमां देखाय त्यारे तेनो अभाव आवेछे. अने जे मूर्ख होय तेतो पोताना स्वभावने

१ तरंग; एटले मारामां अने परमात्मामां भेद नथी। २ भगवान अने तेमना अवतारने खंडन करनारा छे, माटे परब्रह्म परमात्माने कोदाळाथीज शुं ? एम खोदनारा। ३ अल्पबुद्धिवाळो बीजाना दोषने ग्रहण करे तेतो, तेने बुद्धिना अभावथी अने पोतामां सारा स्वभावना अभावथी युक्तज छे परंतु जे महाबुद्धिवाळो छे तेनेतो बुद्धिनुं आधिक्य छे अने पोतामां सारा स्वभाव छे माटे पारका दोषनुं ग्रहण थवुं ते अयुक्त छे एटले घटे नहि. तोपण कदाचित् तेनामां ते दोष देखायछे तेमां शो हेतु छे, एटलो प्रश्न पुछवानो अभिप्राय छे।

टाळे नहि ने बीजा संतमां कांइक ते स्वभाव देखे तो तेनो अवगुण लेछे तेने मूर्ख कहीए.[1]

त्यार पछी श्रीजिमहाराज नाना नाना परमहंसने तेडावीने पोते प्रश्न शिखवचा लाग्या ने पोते उत्तर करवा लाग्या, तेमां प्रथमतो पोते एम प्रश्न पुछ्यो जे "काम, क्रोध अने लोभादिक शत्रुनो जे वेग तेनुं जे तीव्रपणुं ने मंदपणुं ते बाळ, यौवन अने वृद्ध तेणे करीने छे, केवी रीते तो बाळपणामां मंद वेग होय अने यौवन अवस्थामां तीव्र वेग होय ने वळी पाछुं वृद्धपणामां मंदपणुं थाय, एम कामादिकनुं तीव्र मंदपणुं छे तेतो जणायछे पण विचारे करीने एनुं मंदपणुं छे के नहि ?" त्यारे तेनो उत्तर पोतेज कर्यो जे, विचारे करीनेपण कामादिकनुं मंदपणुं छे. ते विचार केम करे तो–बाळक अवस्थामां मंदपणुं छे ने यौवन अवस्थामां तीव्रपणुं छे ने वृद्ध अवस्थामां पाछुं मंदपणुं छे तेतो आहारे करीने छे; जे बाळ अवस्थाने विषे पण आहार थोडो छे माटे कामपण ओछो छे ने वृद्ध अवस्थामां पण आहार ओछो होय एटले कामपण ओछो होय अने यौवन अवस्थामां आहारनी वृद्धि होय एटले कामनीपण वृद्धि होय, ते माटे जो यौवन अवस्थामां आहार ओछो करे अने[3] देहे करीने शीत, उष्ण, वर्षात, सुख तेनुं जाणीजाणीने सहन करे एवो जे विचार राखे अने मोटा साधुनो समागम राखे तो तेने यौवन अवस्थामां पण काम मंद पडी जाय.

---

१ अभिप्राय एटलो छे के–पोतामा रहेला अनेक दोषोने एक दोष जेटलो पण नहि गणीने अने ते दोषनो त्याग नहि करीने पण बीजाना बहु एवापण गुणोने नहि गणीने अल्पमात्र दैहिकादि कोइ दोषने उद्देशीने तेना अवगुणनेज ग्रहण करेछे अर्थात्–पोताना मेरु जेटला छिद्रो छे तेने जोतो नथी अने बीजाना सर्षप जेटलापण छिद्रने जुवेछे, तेज एनुं मूर्खपणुं छे। २ युवावस्थामा कामादिकना तीव्रवेगनुं। ३ हुं आत्मा छुं एवी बुद्धिथी पोताने।

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "जीवने नाना प्रकारनां व्यसन पडेछे कोइकने भांग्यनुं, अफीणनुं, दारुनुं, गांजानुं इत्यादिक अनेक प्रकारनां पडेछे ते व्यसन क्रियमाण छे के प्रारब्धे करीने छे?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोतेज कर्यो जे, ए व्यसनतो कर्यां थायछे पण प्रारब्धे करीने नथी. माटे जो ए व्यसनने टाळ्यानो श्रद्धासहित आग्रह करे ने शूरवीरपणुं होय तो ते टळी जाय पण श्रद्धा न होय ने फोशी होय तेथी ए स्वभाव टळे नहि.

पछी वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "केटलाक बाळकनेतो वृद्धना सरखी प्रकृति होयछे ने केटलाकनेतो अतिचंचळ प्रकृति होय-छे ते संगे करीने थायछे के एना जीवमांज एवी प्रकृति रहीछे?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोतेज कर्यो जे, बहुधातो संगे करीनेज सारी नरसी प्रकृति थायछे अने केटलाकने पूर्वकर्मानुसारेपण थायछे.

पछी कपिलेश्वरानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! पूर्वनो स्वभाव होय ते केम जाणवो ने हमणांनो स्वभाव होय ते केम जाणवो?" त्यारे श्रीजिमहाराजे तेनो उत्तर कर्यो जे, जे स्वभाव हमणांनो होय तेतो जो रुडा संतने संगे रहीने थोडोक तेने टाळ्यानो उपाय करे तो टळी जाय, जेम वंडी उपर तृण उग्यां होय ते पांच दहाडा मेघ न वरसे तो सुकइ जाय, तेम हमणांनो जे स्वभाव तेतो थोडाक दिवसमां टळी जायछे. अने जे पूर्वनो स्वभाव होय तेने टाळ्यानो तो अति दाखडो करे त्यारे मांडमांड टळे, जेम धरतीमां धरोनो छोड होय अथवा बोरडीनां झाड होय तेनेतो खेडुत अग्नि लगाडीने बाळे तोपण पाछो फुटी आवे ने जो कोदाळी लइने मूळमांथी खोदी नाखे तो जाय, तेम जे पूर्वनो स्वभाव होय तेने रुडा संतना समागममां रहीने अतिप्रयासे करीने टाळे तो मांडमांड टळे.

अने त्यार पछी वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "जेनी इंद्रियो चंचळ होय ते चंचळताने टाळ्याना पृथक् पृथक् कया उपाय छे?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोतेज कर्यो जे चक्षु इंद्रियनी चंचळता टाळ्यानो ए उपाय छे जे, नासिकाग्र दृष्टि राखे ने आडुं अवळुं जुवे नहि भणवुं होय तो भण्या करे तथा भजन स्मरण कर्या करे अने एम करतां स्त्री आदिक देखाइ जाय ने अयोग्य घाट न थयो होय तोपण नेत्रने उघाडां राखीने मेषोन्मेषे रहित करीने ज्यांसुधी नेत्र सारी पेठे बळे ने आंसु चाले त्यांसुधी घडी बे घडी पर्यंत जोइ रहे त्यारे तेनी दृष्टि चंचळ होय तोपण वश थइ जायछे। अने नासिका इंद्रिय छे ते कोइनुं शरीर अथवा मुख के वस्त्र ते गंधातुं होय तेनो गंध ले त्यारे ते न गमे त्यारे तेनो एम विचार करे जे 'मारो देहपण उपरथी सारो छे पण मांहितो रुधिर मांस हाडकां छे तथा पेटमां मळ मूत्र आंतरडां छे' एम विचारे तो नासिकानी चंचळता टळे। अने काननी चंचळता एम टळे जे, कोइ रमुज थती होय अथवा भवाइ थती होय तो तेने सांभळ्यामां हेत थाय ने भगवाननी कथा कीर्तन सांभळ्यामां निद्रा आवे त्यारे उभा थवुं ने निद्रा आळसने टाळवुं ने भगवाननी कथा सांभळ्यामां श्रद्धा राखवी ने हेत राखवुं तो कान जीताय। अने त्वचा इंद्रियने एम जिते जे, जाणी जाणीने टाढ तडको वरसाद तेने खमवो ने गोदडी होय ते उंशीके मुकी राखवी ने सारी पेठे टाढ वाय त्यारे ओढवी तथा ज्यां त्यां पडी रहेवुं एम करीने त्वचाने बाळी नाखे एम करेतो त्वचा इंद्रियनी चंचळता टळे। अने हाथनी चंचळता एम टळे जे, ज्यारे हाथ नवरा होय त्यारे हाथमां माळा राखीने श्वासोच्छ्वासे भगवाननुं नाम लइने ते माळा फेरववी पण उतावळी लहरके माळा न फेरववी

अने केटलाक एम कहेछे जे 'मने करीनेतो नाम वधु लेवाय' ए वात खोटी छे जेटलां जीभे लेवाय तेटलांज मने करीने लेवायछे एम करेतो हाथनी चंचलता टळे। अने पग चंचळ होय तो आसनने जीतवुं तो पग जिताय। अने शिश्न चंचळ होय तो जेम झीणी खस होय के राती दादर होय तेने खंजोळीए तो लोही नीकळे त्यांसुधी खरज टळे नहि अने जो न खंजोळीए तो ते एम ने एम वळी जाय, तेम शिश्न इंद्रियमां चळ आवे तोपण तेने हाथे करीने अडेज नहि अने जो शिश्नमां वायु भरातो होय तो आहार थोडो करे ने उपवास कर्या करे ने देहने बळहीन करी नाखे तो शिश्न जिताय। अने जिह्वा इंद्रियने जीतवी होय तो जे वस्तु जीभने गमती होय ते वस्तु न आपवी अने आहार युक्त करवो तो जिह्वानी चंचलता टळे। अने वाणी चंचळ होय तो एम टळे जे, मुक्तानंदस्वामी जेवा वार्ता करता होय तथा कथा वांचता होय ते वचमां पोते डह्यापण करीने बोलवुं नहि अने जो वचमां बोलाइ जाय तो पंचवीश माळा फेरववी तो वाणीनी चंचलता टळी जाय.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "ए सर्वे इंद्रियो छे तेमांथी एकने परिपक्व जीते तो सर्वे इंद्रियो जीताय एवी कइ इंद्रिय छे?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोतेज कर्यो जे, एक जिह्वाने परिपक्व जीते तो बीजां सर्वे इंद्रियो जीतायछे'.

त्यार पछी वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "जे पुरुषने अंतरमां काम व्याप्यो होय तेने बहारथी केम जाणीए जे 'एने काम व्याप्यो छे'

१ ते भागवतमा कह्यु छे जे—"तावज्जितेन्द्रियो न स्याद्विजितान्येन्द्रियःपुमान्। न जयेद्रसनं यावज्जितं सर्वं जिते रसे॥" अर्थ.—ज्यासुधि रसनेन्द्रिय जिती नथी त्यांसुधि बीजा इद्रियो जित्यां होय तोपण ते पुरुष जितेन्द्रिय थतो नथी ज्यारे रसना इन्द्रियने जितेछे त्यारे सर्व इन्द्रियो जितायछे।

अने एनुं जे अंग तेतो वस्त्रमां ढांक्युं होयछे?" त्यारे एनो उत्तरपण पोतेज कर्यो जे, जेने काम व्यापे तेनां नेत्र आदिक जे सर्वे इंद्रियो ते चंचळ थाय त्यारे जाणवुं जे ए कामे व्याकुळ थयोछे.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "जेनो चंचळ स्वभाव होय तेने शांत थवुं अने जेनो शांत स्वभाव होय तेने चंचळ थवुं ते कया विचारे करीने थायछे?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोतेज कर्यो जे, जे चंचळ होय ते एम विचारे जे 'हुं आत्मा छुं ब्रह्म[1] छुं अलिंग[2] छुं अने आकाशनी पेठे स्थिर छुं' एवे विचारे करीने उपशम अवस्थाने पामे तो चंचळ होय ते शांत थाय. अने जे शांतने चंचळ थवुं होय तेनेतो भगवान् ने भगवानना भक्तनुं माहात्म्य जाणवुं ने माहात्म्य जाणे त्यारे भगवानननी नव प्रकारे भक्ति करे तथा भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी करे तेणे करीने एनो चंचल स्वभाव थायछे.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "श्रीमद्भागवतादिक जे आठ सत्शास्त्र तेमांथी कोइ त्याग करवा योग्य छे के सर्वे ग्रहण करवा योग्य छे?" त्यारे तेनो उत्तरपण पोतेज कर्यो जे, ए सर्वे ग्रंथमांपण अनेक प्रकारनां प्रकरण छे ते सर्वे प्रकरणे करीने भगवानने[3] पाम्या जे भक्त तेमनां[4] अंग कह्यां छे माटे ए सर्वे ग्रहण कर्या योग्य छे पण सर्व प्रकरणमांथी जे प्रकरण पोताना अंगमां मळतुं आवतुं होय तेने ग्रहण करवुं ने बीजानो त्याग करवो अने एम जाणवुं जे 'ए छे तो साचुं पण ए बीजा भक्तने अर्थे छे पण मारे अर्थे नथी'.[5]

---

१ ब्रह्मरूप। २ देवमनुष्यादि आकारे रहित। ३ भगवानना शरणने पाम्या। ४ अधिकारने अनुसारे। ५ आ अभिप्राय गीतामां–"त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन!। निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्॥ यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके। तावान् सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः॥" आ बे श्लोकथी कह्योछे,।

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "आ तमे सर्वे नाना छोकरा वेठा छो तेमांथी कोइकने तो आ सर्वे संत प्रमाण करेछे ने कोइकने तो नथी करता अने सर्वेनी अवस्था सरखी छे ने संगपण एक सरखो छे अने भोजन, वस्त्र, उपासना, शास्त्र, उपदेश, मंत्र ते सर्वेने एक सरखां छे तोपण जे न्यूनाधिकपणुं रही गयुं तेनुं शुं कारण छे? अने जे संत छे तेतो समदृष्टिवाळा छे ने निर्पक्ष छे ने धर्मवाळा छे तेतो जे जेवो होय तेने तेम कहे माटे एनो उत्तर कहो?" पछी पोतेज एनो उत्तर कर्यो जे, जेनां संत वखांण करेछे तेनेज श्रद्धा छे माटे धर्म पाळ्याने विषे तेनो वधारो छे ने तेने संतनी सेवा करवानेविषे तथा भगवाननी वात सांभळवाने विषे पण श्रद्धा छे ने संतनो विश्वास छे माटे ए वधी गयो अने जे आवा समागममां रह्यो थको वध्यो नहि ते श्रद्धा रहित छे एम जाणवुं। इति वचनामृतम् ॥८॥११६॥

संवत् १८७७ ना मागशर शुदि ६ छठ्यने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां विराजमान हता ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती तथा धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो तथा धोळो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सर्वे परमहंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो, त्यारे आत्मानंदस्वामीए अखंडानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे "वैराग्य, ज्ञान, भक्ति अने धर्म ए चारने उपज्यानो हेतु शो छे?" पछी तेनो उत्तर श्रीजिमहाराजे कर्यो जे, वैराग्यतो एम उपजे जे जो काळनुं स्वरूप जाण्यामां आवे, ते काळनुं स्वरूप ते शुं तो–नित्यप्रलयने जाणे, नैमित्तिकप्रलयने जाणे, प्राकृतप्रलयने जाणे अने आत्यंतिक प्रलयने जाणे,

तथा ब्रह्मादिक स्तंबपर्यंत सर्वजीवना आयुपने जाणे अने एम जाणीने पिंडब्रह्मांड सर्व पदार्थने काळनुं भक्ष समझे त्यारे वैराग्य उपजे। अने ज्ञान तो एम थाय जे, जो बृहदारण्य, छांदोग्य, कठवल्ली आदिक जे उपनिषद् तथा भगवद्गीता तथा वासुदेवमाहात्म्य तथा व्याससूत्र इत्यादिक ग्रंथनुं सद्गुरुथकी श्रवण करे तो ज्ञान उपजे। अने धर्मतो एम उपजे जो याज्ञवल्क्यस्मृति, मनुस्मृति, पराशरस्मृति, शंखलिखितस्मृति, इत्यादि स्मृतिनुं श्रवण करे तो धर्म उपजे ने तेमां निष्ठा आवे। अने भक्ति एम उपजे जे, भगवाननी जे विभूतियो छे तेने जाणे, ते केम जाणे तो, खंड खंड प्रत्ये भगवाननी मूर्तियो जे रहिछे तेनुं श्रवण करे तथा भगवानना गोलोक, वैकुंठ, ब्रह्मपुर, श्वेतद्वीपादिक धाम छे तेने सांभळे तथा जगतनी उत्पत्ति स्थिति प्रलयरूप जे भगवाननी लीला तेने माहात्म्ये सहित सांभळे तथा रामकृष्णादिक जे भगवानना अवतार तेनी जे कथाओ तेने हेते सहित सांभळे तो भगवानने विषे भक्ति उपजे। अने ए चारमां जे धर्म छे तेतो काचि बुद्धि होयने प्रथमज कर्मकांडरूप जे स्मृतियो तेनुं श्रवण करे तो उपजे अने ज्यारे धर्मने विषे दृढता थाय त्यार पछी उपासनाना ग्रंथनुं श्रवण करे त्यारे एने ज्ञान भक्ति वैराग्य ए त्रण्ये उपजे एवी रीते ए चारने उपज्याना हेतु छे।

इति वचनामृतम् ॥ ९ ॥ ११७ ॥

संवत् १८७७ ना मागशर शुदी ८ आठम्यने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराखाचरना दरबारमां ढोलिया उपर प्रातःकाळने समे विराजमान हता ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती तथा धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो तथा धोळो फेंटो मस्तक उपर बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समयमां नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "आ जगतमां केटलाक मनुष्यने स्त्रीयादिक पदार्थमां एवुं हेत थायछे जे 'तेनो वियोग थयो होय तो प्राणनो त्याग थइ जाय' अने केटलाकने स्त्रीयादिक पदार्थमां हेत छे पण साधारण छे माटे तेना वियोगे करीने प्राणनो त्याग न थाय ए बे प्रकारना जीव छे ते जेम संसारमां हेते करीने जोडायछे तेम ते हेतवाळाने जो भगवान् मळे तो तेमांपण एमज जोडाय जे 'भगवानना वियोग थाय तो प्राण जाय' अने जेने संसारमां साधारण हेत छे ने तेने भगवान् मळे तो भगवानमां पण साधारण हेत थाय ते ए बे प्रकारना जे मनुष्य तेनेविषे कर्मे करीने एवो भेद छे के ए बे प्रकारना जीव अनादिनाज छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए भेद जीवमां स्वाभाविक नथी एतो कर्मे करीने थायछे, ते केवी रीते थायछे तो ज्यारे जीव कर्म करेछे त्यारे जीवनी वृत्तिनो वेग त्रण प्रकारे थायछे एक मंदवेग बीजो मध्यमवेग अने त्रीजो तीव्र वेग, तेमां जेवे वेगे वृत्ति पदार्थमां चोटे त्यारे तेने तेवी जातनुं कर्म लागेछे ते कर्मे करीने स्नेहमांपण त्रण प्रकार छे.

पछी वळी नित्यानंदस्वामीए पुंछ्युं जे "वृत्तिना वेगमां ए त्रण प्रकार थया ते गुणे करीने थया के कोइ बीजा हेतुए करीने थया?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए त्रण प्रकारना जे भेद ते गुणे करीने नथी एतो जे पदार्थमां केवळ इंद्रियोज प्रवर्ते त्यारे मंदवेग थाय छे अने ज्यारे मने सहित इंद्रियो पदार्थमां जाय त्यारे मध्यमवेग थायछे अने ज्यारे इंद्रियो मन अने जीव ए त्रणे भेगां थइने पदार्थमां प्रवर्तेछे त्यारे ते वृत्तिनो तीव्रवेग थायछे अने ते तीव्रवेग एक चक्षु इंद्रियने विषे लाग्यो होय तो बीजी इंद्रियो तेने अनुवर्ती थइने सर्वे

इंद्रियोमां लागेछे, एवी रीते जेजे इंद्रियमां मुख्यपणे तीव्रवेग लाग्यो होय त्यारे बीजी इंद्रियो तेने अनुवर्ती थइ रहेछे अने ए जे तीव्रवेग ते रजोगुणी सत्त्वगुणी अने तमोगुणी ए त्रण्येने लागेछे अने एक एक इंद्रियमांतो सर्वने तीव्रवेग होयछे अने तदनुसारे पदार्थमां हेत थायछे.

त्यारे वळी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "एने भगवानमां केम तीव्रवेगे करीने हेत थतुं नथी ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, देश, काळ, क्रिया, ध्यान, शास्त्र, दीक्षा, मंत्र अने संग एटलाने योगे करीने शुभ अथवा अशुभ आचरण थायछे ते जो रुडा देश काळ संगादिक प्राप्त थया होय तो भगवाननेविषे पण तीव्रवेगे करीने स्नेह थायछे अने जो भुंडा देशादिकनो योग थाय तो भगवान विना अन्य पदार्थमां प्रीति थायछे.

त्यारे चैतन्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "काळ विषम होय त्यारे केम करवुं ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यारे जे स्थळमां काळनुं विषमपणुं होय त्यारे ते ठेकाणेथी अन्यस्थळमां भागी जवुं पण विषम काळमां रहेवुं नहि अने काळ सत्ययुग त्रेता द्वापर कळिरूपे करीने बहार वर्तेछे ने पोताना अंतरमांपण वर्तेछे, ते ज्यारे हइयामां कळि वर्ततो होय त्यारे भगवाननी मूर्ति हइयामां धारवी नहि बहार नेत्रने आगळ धारवी.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जेना हृदयमां मंदवेग, मध्यमवेग अने तीव्रवेग वर्ततो होय ते केम जाणवो ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यारे मंदवेग वर्ततो होय त्यारे नानी बाळकी तथा नव यौवनवाळी स्त्री तथा वृद्ध स्त्री ए त्रण्येने देखीने सरखो भाव रहे, केमजे त्यां एकली इंद्रियनीज वृत्ति गइ छे माटे तेमां मंदवेग छे. अने ज्यारे इंद्रियने विषे मन भळेछे ने ए त्रण प्रकारनी स्त्रीने देखेछे त्यारे बाळ-

की ने वृद्ध स्त्री तेनोतो भुंडो घाट नथी थतो अने युवान स्त्रीने विषे भुंडो घाट थायछे ने विकारने पामी जायछे एने मध्यमवेग जाणवो. अने ज्यारे इंद्रियने विषे मन ने जीव ए बेय भळीने ए त्रण प्रकारनी स्त्रीने देखेछे त्यारेतो ए त्रण्ये प्रकारनी स्त्रीनेविषे भुंडा घाट थायछे ने विकारने पामेछे अने पोतानी मा बोन होय तो तेने देखीनेपण विकारने पामे एने तीव्रवेग जाणवो.[1]

पछी ब्रह्मानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "त्रण प्रकारनी जे स्त्रीयो तेने देखीने व्यक्ति[2] जणाय तथा रूप कुरूपपण जणाय अने विकारतो थाय नहि त्यारे तेने[3] कयो वेग जाणवो[4]?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, "जे पदार्थने अत्यंत दुःखदायी जाणीने मनन थयुं होय पछी ते मनने करीने ते पदार्थनेविषे अत्यंत दोष जणायछे ते दोषनो मनमां विचार थइने जीवमां ते दोष प्रवेश करेछे अने जीवथी पर जे साक्षी तेणेपण ते दोषनुं प्रमाण कर्युं छे तेणे करीने ए दोषनी अतिदृढता थइछे माटे पदार्थने विषे ज्यारे इंद्रियनी वृत्ति जायछे त्यारे ते वृत्ति भेळे मन तथा जीव ए बेय आवेछे पण जीवमां जे अतिशय दोषनी दृढता छे ते दोषनी सेध्य मन इंद्रियोने विषे सोंसरी निसरेछे माटे ते पदार्थ यथार्थ देखाय ने जाण्यामां आवे पण तेनेविषे अत्यंत अभाव आवी जायछे,

१ एवी रीते बीजी इन्द्रियोमांपण त्रण प्रकारनो वेग जाणी लेवो। २ बाल्यादि अवस्थानी व्यक्ति। ३ चक्षुमां। ४ स्त्रीना रूप अवस्थानी व्यक्ति बरोबर जणायछे माटे तीव्र वेग होय एमतो जणायछे परंतु तीव्र वेगनुं कार्य जे क्षोभ ते थतो नथी माटे त्रण वेगमाथी कयो वेग हशे? एम संशय थवाथी आ प्रश्न पुछ्यो छे। ५ आ वेग तीव्र छे एम जाणवु, पण ते वेग सदोष छे माटे तेना कार्यभूत मन क्षोभमां तीव्रता नथी. वेगमां जे प्रकारे दोषनो प्रवेश थायछे ते प्रकार एवी रीते छे के।

जेम दुध साकरनुं पात्र भर्युं होय ने तेमां सर्प लाळ नाखी होय ने तेने नांखतां दीठी होय पछी ते दुध जेवुं पूर्वे देखातुं हतुं तेवुंने तेवुंज देखाय पण तेनो अति अभाव हइयामां वर्तेछे, केमजे एने एम जाण्युं छे जे 'एने पीवे तो तत्काळ प्राण जाय' तेम जेने एम समझायुं, जे 'आ रूपवान स्त्री छे ते कल्याणना मार्गमां विरोधी छे'अने आलोक परलोकने विषे परम दुःखदायी छे ने स्त्रीनी प्राप्तितो मने सर्वे पशु आदिक जन्मनेविषे अनंतवार थइछे अने हजी जो परमेश्वरने नहि भजुं तो अनंत स्त्रीनी प्राप्ति थशे माटे ए वात दुर्लभ नथी अने भगवान् ने भगवानना संत तेनो संग तेवो महादुर्लभ छे अने ए दुर्लभ वस्तुनी प्राप्तिने विषे ए स्त्रीज परम विघ्नरूप छे एवुं जाणीने जे हइयामां दोषनी दृढता थइ छे तेणे करीने गमे तेवी रूपवान स्त्री देखाइ जाय तोपण विकार थाय नहि. अने वळी एनेविषे अविकारी रह्यानुं बीजुंपण कारण छे,जेम जनक विदेही जेवा जे मोटा भगवानना भक्त राजा हता ते राज्यमां रह्या हता ने रमणीय एवा जे शब्दादिक पंच विषय तेने भोगवता थका पण ज्ञाननी दृढताए करीने निर्विकारपणे रह्या अने ए जनक जेवा जे ज्ञानी होय ते एम विचारे जे 'हुं आत्मा छुं, शुद्ध छुं, चेतन छुं, निर्विकार छुं, सुखरूप छुं,अविनाशी छुं अने स्त्रीयादिक जे विषय छे तेतो दुःखरूप छे,तुच्छ छे, जड छे अने नाशवंत छे' एम विचारीने केवळ पोताना आत्मस्वरूपनेज सुखरूप जाणेछे अने'शब्दादिक विषयमां जे सुख जेवुं जणायछे ने सारा जेवुं जणायछे ते आत्मावते जणायछे अने आत्मा देहमांथी नीकळी जाय त्यारे सुखरूप होय ते भुंडुं थइ जायछे' एवी रीते पोताना आत्माने विचारे अने आत्मा थकी पर जे परमात्मा तेनो विचार करे जे 'आवुं जे माया थकी पर शुद्ध आत्मानुं ज्ञान तेने हुं पाम्यो ते संतने प्रतापे

पाम्यो छुं अने ते संत परमेश्वरना भक्त छे अने परमेश्वर छे तेतो सर्वात्मा एवा जे ब्रह्म तेनापण आत्मा छे अने अक्षरनापण आत्मा छे अने अनंतकोटि जे मुक्त तेनापण आत्मा छे एवा जे परब्रह्म परमात्मा नारायण तेनो हुं ब्रह्मरूप एवो दास छुं.' अने ते भगवाननो महिमांतो एम समझे जे-"द्युपतय एव ते न ययुरन्तमनन्ततया त्वमपि" इत्यादिक श्रुतिये भगवाननो महिमा अतिशय प्रतिपादन कर्योछे, एवी रीते पोताना स्वरूपनुं तथा परब्रह्मना स्वरूपनुं जेने ज्ञान छे तेने गमे तेवा सुंदर विषय प्राप्त थाय पण तेणे करीने कांइ लेशमात्र पण तेनुं मन विकारने पामे नहि अने अवश्य जे शब्दादिक विषय ग्रहण कर्या जोइता होय तेने ग्रहण करे पण ते विषयने आधीन थइ जाय नहि स्वतंत्रपणे ग्रहण करे, जेम करोळीयो पोतानी लाळने विस्तारीने पाछी स्वतंत्रपणे गळवी घटे त्यारे गळी लेछे, तेम एवो जे ज्ञानी ते पोतानां इंद्रियोनी वृत्तिने विषयमां प्रसारीने पाछो स्वतंत्र थको संकेली लेछे. अने एवो जे होय ते राज्यमां होय तोपण वनमां छे अने वनमां होय तोपण तेने राज्य करतां वधतो आनंद छे अने एवो जे ज्ञानी ते राज्यमां रह्यो होय ने हजारो मनुष्य पोतानी आज्ञामां रहेतां होय ने समृद्धिए युक्त होय तेणे करीने पोताने कांइ एम न माने जे 'हुं वहु मोटो थइ गयो' अने ते राज्यनो नाश थइ जाय ने हाथमां मृत्तिकानुं पात्र लइने घरोघर मागी खाय तेणे करीने एम न माने जे'हुं हवेतो गरीब थइ गयो' केमजे तेतो पोताना केफमां महा अलमस्त रहे तथा तेणे पोताना स्वरूपनो तथा भगवानना स्वरूपनो महिमा जाण्यो छे

---

१ सर्वमां व्यापक । २ निरवयव अक्षरब्रह्म। ३ सावयव अक्षरधाम । ४ अर्थः—ब्रह्मादिदेवोगण तमारा महिमाना पारने पामता नथी केमके अपार छे, किंबहुना तमेपण तमारा महिमाना अतने पामता नथी ।

ते माटे एने सोनुं कुचो लोढुं पाषाण ए सर्वनेविषे समबुद्धि वर्तेछे तथा मान अपमानने विषे समबुद्धि वर्तेछे अने एवो जे ज्ञानी तेने कोइ पदार्थ बंधन करवा समर्थ नथी, केमजे एनी दृष्टितो अति मोटी थइ गइ छे ने मायिक सर्वे पदार्थने तुच्छ जाण्यां छे, जेम कोइक पुरुष प्रथम कंगाल होय, ने पछी तेने राज्य मळे त्यारे तेनी दृष्टि मोटी थायछे अने प्रथम लाकडांना भारा वेचतो होय तथा बीजां तुच्छ तुच्छ काम करतो होय ते सर्वे एने विसरी जाय ने मोटां मोटां राज्य संबन्धि कार्य करवा लागे, तेम एवा ज्ञानीने सर्व पदार्थमात्र तुच्छ थइ जायछे ने एवा ज्ञानने विषे एनी विशाळ दृष्टि थायछे. अने एवी रीते जे समझ्योछे ते सुखीयो छे. तथा जे विश्वासी होय कहेतां एम समझतो होय जे 'आवा मोटा संत तथा भगवान जे वात कहेछे ते एमज छे पण एमां कांइ संशय नथी' एम समझीने ते भगवान तथा संत जेम कहे तेम करवा लागे ए बे जणज सुखीया छे ने ए विना जे बीजा छे ते सुखीया नथी. त्यां श्लोक छे—"यश्च मूढतमो लोके यश्च बुद्धेः परं गतः। तावुभौ सुखमेधेते क्लिश्यत्यन्तरितो जनः॥" तथा भगवद्गीतामां कह्युं छे जे—"विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य

१ अर्थः—जे भक्त लोकमां (श्रुतिस्मृतिना अर्थज्ञानमां) मूढतम (अतिशय अज्ञानी) छे एटले शास्त्रनुं ज्ञान नथी पण केवळ भगवान् अने तेमना भक्तना वचनमां दृढ विश्वासथी तेमना कहेवा प्रमाणे भगवानने भजेछे, अने जे बुद्धिथी पर (आत्मापरमात्माना स्वरूप) ने पाम्योछे एटले श्रुतिस्मृतिना अर्थने जाणवा पूर्वक साक्षात् भगवाननी एकांतिक उपासनाथी आत्मापरमात्माना यथार्थ ज्ञानने पाम्यो छे, ते बन्ने सुखेथी वृद्धि पामेछे एटले भगवाननी सेवारूप मुक्तिने पामेछे. अने जे अंतरित जन (ज्ञानी के विश्वासी नहि ते) छे तेतो क्लेशने पामेछे एटले भगवाननुं सुख नहि पामतां बीजा लोकनां भोगरूपदुःखरूप फळने पामेछे। २ अर्थः—चक्षुरादि बेते इंद्रियोना दर्शनादि

देहिनः । रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥" एवी रीते जेनी अलौकिक दृष्टि थायछे तेने परमेश्वर विना सर्वे पदार्थ तुच्छ थइ जायछे अने आ बे श्लोक छे तेनोपण एक सरखो भाव छे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए श्रीजिमहाराजने कह्युं जे हे महाराज ! हवे तमे जे प्रश्न पुछता हता ते पुछो, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे "मायामां ते केवळ दुःख छे के सुखपण कांइक छे ?" ए प्रश्न छे, पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, मायातो केवळ दुःखदायी छे. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "मायामांथी उपज्या एवा जे सत्त्व, रज अने तम ए त्रण गुण तेमां जे सत्त्व छे तेतो सुखरूप कहेवायछे तथा श्रीमद्भागवतमां कह्युंछे जे "सत्त्वं यद्ब्रह्मदर्शनम्" तथा सत्त्वगुणनी संपत्ति ते ज्ञान वैराग्य विवेक शमदमादिक छे एवी जे माया ते केवी रीते दुःखरूप छे? अने वळी एकादशस्कंधमां कह्युं छे जे-"विद्याविद्ये मम तनू विद्ध्युद्धव ! शरीरिणाम् । बंधमोक्षकरी आद्ये मायया मे विनिर्मिते ॥" माटे मोक्षने करे एवी जे विद्यारूप माया ते केवी रीते दुःखदायी छे?" पछी ए प्रश्नने सांभळीने मुक्तानंदस्वामी आदिक सर्वे परमहंस बोल्या जे हे महाराज ! एनो उत्तर अमथी थाय नहि एनो उत्तरतो कृपा करीने तमेज करो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,

तेते आहारने नहि करनारा मनुष्यना रस (राग) वर्जित विषयो निवृत्त थायछे, विषयो निवृत्त थायछे पण राग निवृत्त थतो नथी. रसपण उत्कृष्ट आत्मस्वरूपने जोइने निवृत्ति पामेछे । १ अर्थः—जे सत्त्वगुण छे ते परमब्रह्मनुं दर्शन करावनारो छे। २ अर्थः—हे उद्धव ! विद्या अने अविद्या ते मारा शरीरभूत छे अने मारी माया (संकल्प) थी निर्माण थएली ने आदिभूत छे ते विद्या अने अविद्या शरीरीओने बंधमोक्ष करनारी छे. विद्याशक्ति मोक्ष करनारी छे अने अविद्या शक्ति बन्धन करनारी छे ।

जेम यमराजानुं जे रूप ते पापी जीवने अतिभयानक विकराळ जणायछे तथा मोटा मोटा दांत ने मोटुं मुख भयानक देखायछे तथा काजळ जेवुं काळुं ने पर्वत जेवुं मोटुं ने काळ जेवुं भयानक एवुं दुःखरूप देखायछे. अने पुण्यवाळा जे जीव तेनेतो ते यमराजानुं रूप अतिशय सुखदायि विष्णुना जेवुं जणायछे, तेम माया छे ते जे भगवानथी विमुख छे तेनेतो अतिबंधन करनारी छे ने अतिदुःखदायी छे अने जे भगवानना भक्त छे, तेनेतो ए माया अतिशय सुखदायी छे अने मायानां कार्य जे इंद्रियो अंतःकरण अने देवता ते सर्वे भगवाननी भक्तिने अतिपुष्ट करेछे माटे भगवानना भक्तनेतो माया दुःखदायी नथी परम सुखदायी छे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे "ज्यारे माया सुखदायी छे त्यारे परमेश्वरनो भक्त होय ते भगवाननी मूर्तिने हृदयमां धारीने भजन करवा वेसेछे त्यारे एने अंतःकरणरूप माया ते संकल्प विकल्परूपे करीने केम दुःख आपेछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने भगवाननुं माहात्म्य सारी प्रेठे समझीने अतिशय दृढ भगवाननो आश्रय होय तेनेतो अंतःकरणरूप माया छे ते दुःख देती नथी, अने जेने एवा आश्रयमां फेर होय तेने दुःख देछे, जेम काचो सत्संगी होय तो तेने कुसंगी होय ते डगाववानो आग्रह करे पण जे पाको सत्संगी होय तेने डगाव्यानी कोइ लालच राखे नहि अने तेने सांभळतां कोइ सत्संगनुं घसातुं बोली शके नहि, तेम जेने एवो परिपक्व परमेश्वरनो आशरो थयो छे तेने डगाव्यानी लालच अंतःकरणरूप माया राखे नहि अने सामी तेनी भक्तिमां पुष्टि करवा लागे. अने जेना जीवने विषे एवा आशरामां कांइ काच्यप होय तेने ए माया डगावेछे ने दुःख

देछे अने ज्यारे एनो ए जीव एवी रीते भगवानननो परिपक्व आश्रय करशे त्यारे एने डगाव्याने अर्थे ने पीडवाने अर्थे माया समर्थ नहि थाय, माटे एनो उत्तर एज छे जे 'जेने भगवाननो एवो परिपक्व निश्चय छे तेने कोइ रीते माया दुःख देवाने अर्थे समर्थ थतीज नथी' । इति वचनामृतम् ॥ १० ॥ ११८ ॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदी ८ आठमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराखाचरना दरबारमां प्रातःकाळने समे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजने शुकमुनिए प्रश्न पुछयो जे "श्रीमद्भागवत तथा भगवद्गीता ए आदिक जे सत्शास्त्र तेथकी असत्पुरुष जेते केवी समझणनु ग्रहण करेछे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर करीए छीए जे असत्पुरुषनी एम समझण छे जे, आ विश्वनेविषे स्थावर जंगमरूप एवी जे स्त्री पुरुषनी सर्वे आकृतियो ते जेते विराट्रूप एवा जे आदिपुरुष नारायण तेथकी मायाए करीने उपजी छे माटे ए सर्वे आकृतियो ते नारायणनीज छे, ते सारु जे मुमुक्षु कल्याणने इच्छतो होय तेने प्रथम पोतानुं मन वश करवुं ते मन जेते स्त्रीयो तथा पुरुषरूप एवी उत्तम नीच जेजे आकृतियो तेनेविषे आसक्त थाय त्यारे तेने तेज आकृतिनुं मननेविषे ध्यान करवुं तो एने सद्य समाधि थाय अने ते आकृतिनेविषे जो मन दोषने कल्पे तो तेमां ब्रह्मनी भावना लाववी जे 'समग्र जगत् ते ब्रह्म छे' एम विचार करीने ते संकल्पने खोटो करवो, एवी रीते जे सत्शास्त्रमांथी अनुभवनुं ग्रहण करवुं ते असत्पुरु-

पनी समझण छे अने एम समझवुं ए एना मननो अतिदुष्ट भाव छे अने एनुं फळ अंतकाळे घोरतम नरक छे ने संसृति छे.

त्यारे वळी श्रीजिमहाराजने शुकमुनिए प्रश्न कर्यो जे "ए सत्शास्त्रथकी सत्पुरुष जेते केवी समझणनुं ग्रहण करेछे ते कहो?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे ए सत्शास्त्रने विषेज ए प्रश्ननो उत्तर कर्यो छे जे, एक पुरुषोत्तमनारायण विना बीजा जे शिव ब्रह्मादिक देवता तेनुं ध्यान जे मोक्षने इच्छतो होय तेने करवुं नहि अने मनुष्यनेविषे तथा देवतानेविषे जे पुरुषोत्तमनारायणनी रामकृष्णादिक मूर्तियो तेनुं ध्यान करवुं. अने तेनेविषे पण जे डाह्या छे ते जेते जे स्थानकमां ए रामकृष्णादिक भगवाननी मनुष्यरूप मूर्तियो रहीछे ते स्थानकनेविषे [illegible]

मान् उद्धवादिक तेनेविषे करेछे अने कोटिकोटि सूर्य चंद्रमा अग्नि तेना प्रकाश जेवी प्रकाशमान एवी जे ते लोकोने विषे रही पुरुषोत्तमनारायणनी दिव्यमूर्तियो तेनी भावना ते रामकृष्णादिकनेविषे करेछे, एवी रीते जे सत्शास्त्रथकी समझणनुं ग्रहण करीने दिव्यभावे सहित मनुष्यरूप भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करेछे तेने भगवानना अवतारनी जे मूर्तियो तथा ते विनाना जे अन्य आकार ते बेयनेविषे समपणुं थायज नहि

१ भविष्यत्पुराणान्तर्गत श्रीविष्णुधर्ममा—"आब्रह्मस्तम्बपर्यन्ता जगदन्तर्व्यवस्थिताः। प्राणिनः कर्मजनितसंसारवशवर्तिनः॥ यतस्ततो न ते ध्याने ध्यानिनामुपकारकाः। अविद्यान्तर्गताः सर्वे ते हि संसारगोचराः॥ पश्चादुद्भूतबोधाश्च ध्याने नैवोपकारकाः। नैसर्गिको न वै बोधस्तेषामप्यन्यतो यतः॥ तस्मात्तदमलं ब्रह्म निसर्गादेव बोधवत्।" इत्यादि वचनथी बद्ध अने मुक्तोना ध्याननो निषेध करीने एक परब्रह्म परमात्मानुंज ध्यान करवानु कह्यु छे।

अने भगवानना अवतारनी जे मूर्तियो ते छेतो द्विभुज अने तेनेविषे चार भुजनी भावना अष्ट भुजनी भावना कही छे तेपण भगवाननी मूर्ति ने ते विनाना अन्य आकार ते बेमां जे अविवेकी पुरुषने समभाव थायछे तेनी निवृत्तिने अर्थे कहीछे. अने जेवी भगवाननी मूर्ति पोताने मळी होय तेनुंज ध्यान करवुं अने पूर्वे भगवानना अवतार थइ गया ते मूर्तिनुं ध्यान न करवुं. अने पोताने भगवाननी मूर्ति मळी होय तेनेविषेज पतिव्रतानी पेठे टेक राखवी, जेम पार्वतीए कह्युंछे जे "कोटि जन्मलग रगड हमारी। वरूं शंभु के रहुं कुमारी" एवी रीते पतिव्रतापणानी टेक तेपण भगवाननुं रूप ने अन्यजीवनुं रूप ते बेयनेविषे अविवेकी पुरुषने समभाव थायछे तेनी निवृत्तिने अर्थे कहीछे, केमजे पोताने मळी जे मूर्ति तेने मुकीने तेनाज पूर्वे परोक्ष अवतार थयाछे तेनुं जो ध्यान करे तो ते भगवान विना बीजा जे देवमनुष्यादिक आकार छे तेनुंपण ध्यान करे माटे पतिव्रताना जेवी टेक कहीछे पण भगवाननी मूर्तिओने विषे भेद नथी, आवी रीते सत्पुरुषनी समजण छे, माटे जे सत्शास्त्रनुं श्रवण करवुं ते सत्पुरुषथकीज करवुं पण असत्पुरुषथकी सत्शास्त्रनुं कोइ दिवस श्रवण करवुं नहि। इति वचनामृतम्॥ ११ ॥ ११० ॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदी ९ नवमीने दिवस,स्वामी श्रीमहजानंदजी महाराज,गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां रात्रिने समे विराजमान हता ने गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती ने,बीजां सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी होती.

पछी श्रीजिमहाराजे प्रश्न कर्यो जे "भगवाननो निश्चय बे प्रकारनो छे एक सविकल्प ने बीजो निर्विकल्प अने ते बेमांपण उत्तम, मध्यम अने

कनिष्ठ ए त्रण प्रकारना भेद छे ते वे मळीने छो भेद थया तेनां लक्षण पृथक् पृथक् करीने कहो ?" पछी तेनो उत्तर परमहंसवते थयो नहि, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्याजे, "सविकल्प निश्चयमां कनिष्ठ भेदतो ए जे, भगवान् जेते अन्यमनुष्यनी बरोबर काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, मान ए आदिकने विषे प्रवर्ते त्यांसुधीतो भगवाननो निश्चय रहे पण जो वधारो करे तो न रहे। अने मध्यम भेदतो ए जे, मनुष्यथकी बमणा कामादिकनेविषे अधिक प्रवर्ते त्यांसुधी पण निश्चय रहे। अने उत्तम भेदतो ए जे, भगवान गमे तेवुं नीच जातिनी पेठे आचरण करे तथा मद्य, मांस, परस्त्री, क्रोध, हिंसा इत्यादिक गमे तेवुं आचरण करे तोपण संशय थाय नहि, केमजे ए भक्त भगवानने एम जाणेछे जे 'भगवानतो सर्वना कर्ता छे ने परमेश्वर छे ने सर्वना भोक्ता छे माटे जेजे क्रिया प्रवर्तेछे ते अन्वयपणे नियंतारूपे करीने सर्वनेविषे रह्या जे भगवान् तेथकीज प्रवर्तेछे तो एतो कांइक थोडीक एवी नीच जेवी क्रिया करी तेणे करीने एमने कांइ बाध नथी, केमजे एतो सर्वकर्ता छे' एवी रीते भगवाननेविषे सर्वेश्वरपणुं जाणे माटे एने उत्तम सविकल्प निश्चयवाळो भगवद्भक्त कहीए। अने हवे निर्विकल्पमां कनिष्ठ भक्त कयो तो भगवानने सर्व शुभ अशुभ क्रिया करता देखे तोपण एम समझे जे 'सर्व क्रियाने

१ आ स्थळे सविकल्पनिर्विकल्प शब्द, यथाश्रुतार्थ न ग्रहण करवा, किन्तु पोताना आत्माना अज्ञानथी जन्य एवो जे देहिकभाव तेमा सविकल्पशब्द रूढ छे, अने सत्समागमजन्य एवी आत्मज्ञानवी स्थितिमा निर्विकल्पशब्द रूढ छे, तेमां देहिकभावनी तारतम्यताथी निश्चयनुं तारतम्यपणु छे तेथी सविकल्पनिश्चयमा कनिष्ठ मध्यम उत्तम एवा त्रण भेद थायछे अने आत्मज्ञाननी स्थितिना तारतम्यपणाथी निर्विकल्पनिश्चयमा त्रण भेद थायछे तेमा प्रथम सविकल्पनिश्चयना भेदनुं लक्षण कहेछे।

करेछे तोपण अकर्ता छे केमजे ए भगवानतो ब्रह्मरूप छे ते ब्रह्म केवुं छे तो आकाशनी पेठे सर्वने विषे रह्युं छे ने सर्वनी क्रियायो तेनेविषेज थायछे' एवुं जे ब्रह्मपणुं ते भगवानने विषे जाणे, जेम रासपंचाध्यायीमां शुकजी प्रत्ये परीक्षित् राजाए प्रश्न पुछ्यो जे "धर्मरक्षक भगवाननो अवतार तेणे परदारानो संग केम कर्यो ?" त्यारे तेनो उत्तर शुकजीए कर्यो जे, श्रीकृष्णतो अग्निनी पेठे तेजस्वी छे ते जेजे शुभ अशुभ क्रियाने करेछे ते सर्वे भस्म थइ जायछे. एवी रीते भगवानने निर्लेप एवा ब्रह्मरूप जाणे तेने कनिष्ठ निर्विकल्प निश्चयवाळो कहीए। अने श्वेतद्वीपने विषे रह्या जे षट् ऊर्मिए रहित एवा निरन्नमुक्त ते जेवो पोते थइने वासुदेवनी उपासना करे तेने मध्यम निर्विकल्प निश्चयवाळो कहीए। अने अष्टावरणे युक्त एवां जे कोटि कोटि ब्रह्मांड ते जे अक्षरनेविषे अणुनी पेठे जणायछे एवुं जे पुरुषोत्तम नारायणनुं धामरूप अक्षर तेरूपे पोते रह्यो थको पुरुषोत्तमनी उपासना करे तेने उत्तम निर्विकल्प निश्चयवाळो कहीए.[१]"

त्यारे चैतन्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! एवी रीते निश्चयना भेद ते शाणे करीने थयाछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यारे मुमुक्षु प्रथम गुरु पासे आवे त्यारे वक्ता जे गुरु तेनेविषे देश, काळ, संग, दीक्षा, क्रिया, मंत्र शास्त्रादिकनुं जे शुभ अशुभपणुं तथा पोतानी जे श्रद्धा तेनुं जे मंद तीक्ष्णपणुं तेणे करीने एवा भेद पडी जायछे, माटे सारा देशादिकने सेववा तथा वक्तापण सुधो शांत होय ने तेमां कोइ दोष न होय ते समे तेथकी ज्ञान सांभळवुं.

त्यारे वळी चैतन्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "कदाचित् कोइक योगे

१ ए निश्चयभेदोनु उत्तरोत्तर श्रेष्ठपणु जाणवु ।

करीने कनिष्ठ निश्चय थयो होय तेने पाछो वळी उत्कृष्ट निश्चय थाय के नहि?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जो श्रोताने उत्कृष्ट श्रद्धा उपजे तथा रुडा देशादिक प्राप्त थाय तथा उत्कृष्ट ज्ञानवाळो वक्ता मळे तो सर्वोत्कृष्ट निश्चय थाय, नहितो जन्मान्तरे करीने उत्कृष्ट निश्चयने पामे। इति वचनामृतम् ॥ १२ ॥ १२० ॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदी १० दशमीने दिवस प्रातःकाळने समे श्रीजिमहाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराखाचरना दरबारमां ढोलीया उपर विराजमान हता अने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने बीजा धोळा फेंटानी बोकानी वाळी हती ने गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने चोफाळ ओढ्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे मोटेरा मोटेरा परमहंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो, त्यारे गोपाळानंदस्वामीए ब्रह्मानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे "केवो पुरुष होय तेने देश, काळ, क्रिया, संगादिके करीने पराभव न थाय ने केवो होय तेने थाय? अने सांभळ्यामांतो एम आवेछे जे 'ब्रह्मानेपण सरस्वतीने देखीने मोह थयो ने शिवजीनेपण मोहिनीने दर्शने करीने मोह थयो' माटे विचारीने उत्तर करो, केमजे एवा मोटानेपण देशकाळादिके करीने पराभव थयो?" पछी तेनो उत्तर ब्रह्मानंदस्वामीए करवा मांड्यो पण थयो नहि, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर ए छे जे, नाडी प्राण संकेलाइने निर्विकल्प स्थितिए करीने श्रीनारायणना चरणारविंदमां रह्यो होय तो तुच्छ जेवो जीव होय तेनेपण देश काळ संगादिके करीने पराभव न थाय अने एवी रीते ब्रह्मा-

दिक रह्या होय तो तेनेपण पराभव न थाय अने एवी रीते स्थिति न थइ होय ने देहमां वर्तता होय तो बीजा जीवने पराभव थाय ने एवा मोटा जे ब्रह्मादिक तेनेपण थाय. अने एम न होय तो "तत्सृष्टसृष्टसृष्टेषु को न्वखण्डितधीः पुमान् । ऋषिं नारायणमृते योषिन्मय्येह मायया ॥" ए श्लोकनो अर्थ ठीक बेसे नहि माटे एनेविषे रह्याथकातो एक नारायणऋषिने पराभव न थाय अने बीजोतो गमे एवो मोटो होय ने ते जो नारायणना चरणारविंदनेविषे निमग्न न रहे तो तेने पराभव थाय अने जो निमग्न रहे तो न थाय, एवी रीते अमे अमारा अंतरमां अचळ सिद्धांत करी राख्योछे. अने ते भागवतमां कह्युं छे जे–"एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः । न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥" तथा भगवाने कह्युंछे जे–"दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया । मामेव ये प्रप-

१ अर्थः—ब्रह्माए सर्जेला मरीच्यादिक तेमणे सर्जेला कश्यपादिक तेमणे सर्जेला देवमनुष्यादिक ते सर्वेने मध्ये आ लोकमां कयो पुरुष एक नारायण ऋषि विना स्त्रीरूपी मायाथी मननुं आकर्षण न थाय तेवो छे? सर्व कोइनुं मन आकर्षण थायज । २ अर्थः—जेम भगवानना भक्तनुं भगवानना स्वरूपसबंधि ज्ञान, भक्तना देहमां रहेला सतत परिणामित्वादि दोषथी अने जीवमां रहेला अविद्यादि दोषथी लेपातुं नथी, तेम परमेश्वर, प्रकृति अने जीववर्गमां व्यापीने रह्या छे तथापि प्रकृतिना सत्त्वादिगुणथी अने जीवना अविद्या अस्मिता रागद्वेषादि दोषथी लेपाता नथी, आटलुंज परमेश्वरनुं परमेश्वरपणुं छे अर्थात् भक्तनुं भगवानना स्वरूपसबन्धि ज्ञान, देहात्माना दोषथी लेपातुं नथी तो जडाजडमां अन्तर्यामीपणे रहेला भगवान् जडाजड प्रकृतिना दोषथी न लेपाय तेमां कहेवुज शुं? । ३ अर्थः—मारी आ सत्त्वादिगुणमयी माया जे हेतुमाटे दैवी छे एटले स्वच्छन्दपणे अघटितघटना करवामां समर्थ परमेश्वर एवा में लीलाने माटे प्रवर्तावी छे माटेज ते माया अनीश्वर एवा सर्व भूतोथी पण मारी प्रपत्ति विना न उल्लंघन थइ शके तेवी छे. माराज शरणने जे पामेछे ते

यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥" एवी रीते मायाए करीने निर्लेपपणुं ते एक नारायणनेज छे अथवा ते नारायणने निर्विकल्पपणे पाम्यो होय तेनेपण पराभव न थाय. अने सविकल्पपणे जो नारायणने पाम्यो होय तो ते गमे तेवो मोटो होय तेने पण पराभव थाय.

अने त्यार पछी नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! ज्यांसुधी ए मुक्तोने गुणनो संबंध छे त्यांसुधीतो तेने देश काळादिके करीने विपर्ययपणुं थाय अने नारायण छे तेतो गुणमां रह्या थका देश काळादिके करीने पराभवने न पामे एतो ठीक; पण ज्यारे ए सर्वे मुक्तोने गुणनो संबंध न होय ने निर्गुणपणे करीने अक्षरधामनेविषे रह्या होय अने नारायणपण त्यां तेवीज रीते रह्या होय ते वारे ए सर्वे चैतन्यमय छे ने निर्गुण छे ने "[3]मम साध- [illegible] छे एवा जे मु[illegible]रे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम चंद्रमा छे ने तारा छे तेमां भेद छे के नहि? जुओने प्रकाशपणे करीने सरखा नथी अने नियमांपण घणो भेद छे अने सर्व ओषधीनुं पोषण तेपण चंद्रमावतेज थाय पण बीजे तारे न थाय अने रात्रिनो अंधकार तेपण चंद्रमाए करीने टळे पण ताराए करीने टळे नहि, तेम नारायण तथा मुक्तोमां भेद छे. अने वळी जेम राजा ने राजाना चाकर ते मनुष्य जातिए करीने सरखा छे पण राजानुं सामर्थ्य, ऐश्वर्य, रूप, लावण्यता ते सर्वोपरि छे अने जे राजावते थाय ते चाकरवते थाय नहि सुझे एवडो मोटो

आ गुणमयी दुरत्यय मायानेपण तरेछ एटले मायानो त्याग करीने मारी उपासना करेछे।

१ अर्थ —मारा साधर्म्य (समानगुणयोग) ने पामेला, ते गुण अपहतपाप्मत्वादि आठ कह्या छे।

होय तोपण न थाय, तेम पुरुषोत्तमनारायण ते सर्वकर्ता छे, सर्व कारण छे, सर्वनियंता छे, अतिरूपवान् छे, अतितेजस्वी छे, अतिसमर्थ छे अने कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ छे ते जो पोतानी इच्छामां आवे तो ए अक्षरधामनेविषे रह्या जे मुक्त ते सर्वने पोताना तेजनेविषे लीन करीने पोते एकज विराजमान रहे अने सुझेतो ए सर्वे मुक्त तेमणे सव्या थका एमनी भक्तिने अंगीकार करे ने ए सहित विराजमान रहे अने जे अक्षरधामनेविषे पोते रह्या छे ते अक्षरनेपण लीन करीने पोते स्वराट्‌थका एकलाज विराजमान रहे अने पोताने मनमां आवे तो ए अक्षरधाम विनापण अनंतकोटी मुक्तने पोताने ऐश्वर्ये करीने धारवाने समर्थ छे. जेम पृथु भगवाने पृथ्वीने कह्युं जे 'मारा धनुषथकी निसर्यां जे बाण तेणेकरीने तने मारीने मारा सामर्थ्ये करीने आ सर्व जगतने धारवाने हुं समर्थ छुं' तेम ए नारायण पोताने ऐश्वर्ये करीने सर्वोपरि वर्तेछे ते एने ने बीजा अक्षरादिक मुक्तने सरखा कहेछे ते दुष्टमतवाळा जाणवा ने तेने अतिपापी जाणवा अने एनां दर्शनपण करवां नहि. अने एवी रीतनी समझणवाळानां दर्शन करीए तो पंच महापाप जेवुं पाप थाय अने ए नारायणने लइनेतो जेनेविषे मोटप कहीए तेनेविषे संभवे अने एने लइने ब्रह्मा, शिव, नारद, सनकादिक ए सर्वेने भगवान् कहेवायछे अने उद्धवजीनेविषे ए नारायणने लइने उद्धवने भगवान् कहेवाय. अने हमणां आ मुक्तानंदस्वामी जेवा संतनेविषे ए नारायणने लइए तो एमनेपण भगवान् जेवा कहेवाय अने ए नारायणने लीधा विनातो अक्षरनेपण भगवान् न कहेवाय तो बीजानी शी वार्ता कहेवी? अने "अपरिमिता ध्रुवास्तनुभृतो यदि सर्वगतास्तर्हि न शा-

अर्थः—हे ध्रुव! जीवो अपरिमित अने ध्रुव (नित्य) छे ते जीवो जो परमात्मानी पेठे सर्वगत (सर्वव्यापक-विभु मानवामा आवे तो सर्वे परमा-

स्यतेति नियमो ध्रुव! नेतरथा।" ए वेदस्तुतिना गद्यनो पण एज अर्थ छे. अने जो एम न होय तो आ आपण सर्वे छीए ते आ देहथकी नोखो जे आत्मा तेने ब्रह्मरूप जाणीए छीए अने ज्ञान वैराग्यादिक साधने युक्त छीए तोपण ए नारायणने प्रसन्न करवाने अर्थे रात दिवस उजागरा करीए छीए ने कीर्तन नामसरण ते ताळीयो वजाडी वजाडीने हाथनी आंगळीयो फाटी जाय एम करीए छीए तथा कथा वार्ता रात दिवस करीए करावीए छीए ते जो ए नारायण सरखा थइ जवातुं होय तो एवडो दाखडो शुं करवा करीए? माटे ए नारायण जेवातो एक नारायणज छे पण बीजो कोइ ए जेवो थतो नथी. अने "एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म" ए श्रुतिनोपण एज अर्थ छे जे 'ए नारायण जेवातो एक नारायणज छे' एम सर्वशास्त्रनो सिद्धांत छे. एवी रीते भक्तजननी शिक्षाने अर्थे श्रीजिमहाराजे वार्ता करी ने पोतेतो साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण छे। इति वचनामृतम् ॥ १३ ॥१२१॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदी ११ एकादशीने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां ढोलीया उपर विराजमान हता ने माथे धोळो फेंटो धारण कर्यो हतो तथा धोळी चादर ओढी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

त्माने समान थया एटले परमात्माथी के जीवात्माथी शास्यता (नियाम्यता) घटे नहि, एम सते शास्त्रसिद्ध जे नियाम्यनियामक भाव छे तेनो नियम रहे नहि अने जो जीवोने सर्वगत मानवामां न आवे तो नियाम्यवानो नियम विगेरे घटतु आवे, नियाम्यतापण राजराष्ट्रन्यायथी नहि परंतु अंत प्रवेश करीने नियाम्यता छे, ते श्रुतिमा कह्युं छे के- "अन्त.प्रविष्टः शास्ता जनानां सर्वात्मा" इत्यादि।

पछी श्रीजिमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे पूर्वे आचार्य थइ गयाछे तेने पृथक् पृथक् रुचि छे, तेमां शंकरस्वामीने अद्वैतज्ञानांश-प्रधान जणायछे. तथा रामानुजनो एम मतछे जे 'जीव माया अने पुरुषोत्तम ए त्रण्ये नित्य छे ने पुरुषोत्तम छे ते जीव मायाना नियंता छे ने सर्वना कारण छे ने पोताना अक्षरधामनेविषे सदा दिव्य आकार थका विराजमान छे ने सर्वे जे अवतार ते तेना छे एवा जे पुरुषोत्तमनारायण तेनी उपासना जीवने करवी' एवी रीते रामानुजनी समझण जणायछे तथा वल्लभाचार्यने केवळभक्ति उपर निष्ठा बहु जणायछे अने ए सर्वे आचार्ये पोताना ग्रंथोमां प्रसंगे करीने बीजी वार्ताओ लखी छे पण गमेतेवी रीते करीने अंते पोतानी रुचि उपर जाय एम तेमना ग्रंथोनेविषे तेमनां वचन छे तेणे करीने तेमनो अभिप्राय यथार्थ जाण्यामां आवेछे. तेम अमारी वार्ता सांभळीने तमने सर्वेने अमारी केवी रुचि जणायछे अने जेम सोय केडे दोरो चाल्यो जायछे ने वळी जेम माळाना मणकानेविषे दोरो सुंसरो छे तेम अमारी जे सर्वे वार्ता तेमां शो अभिप्राय निरंतर सुंसरो चाल्यो आवेछे ते जेने जेम जणातो होय ते तेम कहो ?" त्यारे सर्वे मोटेरा परमहंसे जेने जेम जणायुं तेणे तेम कह्युं, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे अमारो अभिप्राय तथा रुचि ते कहीए, एकतो अमने ए गमेछे जे ऋषभदेव भगवान् वासुदेव संघाथे एकात्मताने पाम्या हता तोपण ज्यारे सिद्धियो आवी प्राप्त थइयो त्यारे पोते भगवान् हता तोपण बीजा त्यागीनी शिक्षाने अर्थे ते सिद्धियोने ग्रहण न करता हवा. ते श्रीमद्भागवतमां कह्युंछे जे 'योगी सिद्ध थयो होय ने पोतानुं मन वश थयुं होय,

१ जीवात्मा परमात्मानुं ऐक्यज्ञान ।

तोपण ते मननो विश्वास न करवो. त्यां श्लोक छे–"न कुर्यात्कर्हिचित्सख्यं मनसि ह्यनवस्थिते। यद्विस्रंभाचिराचीर्णं चस्कन्द तप ऐश्वरम्॥ नित्यं ददाति कामस्य छिद्रं तमनु येऽरयः। योगिनः कृतमैत्रस्य पत्युर्जायेव पुंश्चली॥"एवी रीते जे मननो विश्वास न करे तेवो त्याग अमने गमेछे तथा अमारा मनमां श्वेतद्वीप तथा वदरिकाश्रम जेवा गमेछे तेवा बीजा लोक गमता नथी अने एम मनमां रहेछे जे श्वेतद्वीपनेविषे तथा वदरिकाश्रमनेविषे जइने निरन्नपणे रह्याथका तप करीए ते बहु सारूं लागे पण बीजा लोकोमां अनेक प्रकारना वैभव भोगववा ते नथी गमता तथा भगवानना जे घणाक अवतार थयाछे तेने एम जाणीए छीए जे ए सर्वे अवतार नारायणना छे तोपण ते अवतारमां ऋषभदेवजी बहु गमे[3] तथा तेथी उतरता कपिलजी तथा दत्तात्रेय ए बे सरखा जणायछे अने ए त्रण्ये अवतार करतां कोटिघणुं श्रीकृष्णनेविषे अमारे हेत छे अने एम जाणीए छीए जे 'बीजा सर्वे अवतार करतां आ अवतार बहु मोटो थयो ने बहु स-

---

१ अर्थ.—मन अति चचळ होवाथी सर्वदा एकस्थिति विनानु छे माटे तेनो क्यारेपण 'मारे वश थयु छे माटे अनर्थ करशे नहि' एवो विश्वास करवो नहि, कमके जे मननो विश्वास करवाथी बहुकाळे महाप्रयासथी सपादन करेलु मोटा मोटा सौभरि विगेरे ईश्वरोनुपण तप क्षय थइ गयु छे। २ अर्थ —मननो विश्वास करनार योगिनु मन, कामने पेसवानो अवकाश निरतर आपेछे, योगिना मनमा कामने पेसवानो अवकाश आप्या पछी जे क्रोधादि अन्त शत्रुओ छे तेमने पेसवानो अवकाश आपेछ, जेम विश्वास करनारा पतिने पुंश्चली स्त्री जारने अवकाश आपीने घात करावेछे तेम मन पण कामादिकथी योगीने भ्रष्ट करेछ। ३ केमके तेमनामा सत्पुरुषना क्षमादिक गुण छे।

मर्थ छे-अने-एमां अवतार अवतारी एवो भेद नथी जणातो' अने बीजा जे मत्स्य कच्छादिक भगवानना अवतार छे पण तेमां अमारी अतिरुचि नथी. अने आवी रीतेतो अमारे उपासना छे जे, सर्वेथी पर एक मोटो तेजनो समूह छे ते तेजनो समूह अधो ऊर्ध्व तथा चारे कोरे प्रमाणे रहित छे ने अनंत छे अने ते तेजना समूहना मध्यभागने विषे एक मोटुं सिंहासन छे ने तेनी उपर दिव्यमूर्ति एवा जे श्रीनारायण पुरुषोत्तम भगवान् ते विराजमान छे ने ते सिंहासनने चारे कोरे अनंत कोटि मुक्त बेठा थका ते नारायणनां दर्शन करेछे एवा जे मुक्ते सहित श्रीनारायण तेने अमे निरंतर देखीए छीए अने ते भगवानने विषे तेजनुं अतिशयपणुं छे तेणेकरीने ज्यारे ए सभासहित ते भगवाननां दर्शन नथी थतां त्यारे अमने अतिशय कष्ट थायछे अने ते तेजनो समूहतो निरंतर देखायछे तोपण एनेविषे रुचि नथी अने भगवाननी मूर्तिनां दर्शने करीनेज अतिसुख थायछे. अमारे एवी रीते उपासना छे. अने ए भगवाननेविषे भक्तितो जेवी गोपीयोने हती तेवी गमेछे. ते सारु अमे सौ माणसने जोता रहीए छीए जे कोइक कांमी स्त्री होय तेने पुरुषनेविषे जेवुं हेत होय तथा कामी पुरुषने स्त्रीनेविषे जेवुं हेत होय तेने देखीने एम थाय जे 'एवुं हेत आपणे भगवानमां होय तो ठीक' तथा कोइकने पुत्रमां धनमां बहु हेत जणाय तेने देखीने एम थाय जे 'एवुं हेत आपणे भगवानमां होय तो ठीक' तथा कोइक गातो होय तो तेने सांभळीने तेने पासे कोइ माणसने मोकलीए अथवा अमे पंडे एनी पासे जइए ने जाणीए जे 'ए बहु ठीक करेछे' अने अमारे सुवाणतो एवा साथे थायछे जे 'जेमां काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान, ईर्ष्या, दंभ, कपट इत्यादिक दोष न होय ने धर्मशास्त्रमां कह्युंछे

एवी रीते धर्म पाळतो होय ने भगवाननी भक्तिए युक्त होय' ते
साथेज अमारे बेठा उठ्यानी सुवाण थायछे अने एवो न होय ने ते
अमारे भेगो रहेतो होय तोपण तेनी साथे सुवाण थाय नहि तेनीतो
उपेक्षा रहेछे. अने मोरे तो अमारे कामी उपर बहु अभाव रहेतो
अने हवे तो क्रोध, मान, ईर्ष्या ए त्रण जेमां होय ते उपर बहु अभाव
रहेछे, कांजे कामी होय तेतो गृहस्थनी पेठे निर्मानी थइने सत्सं-
गमां पड्यो रहेछे अने जेमां क्रोध, मान, ईर्ष्या होयछे तेतो सत्सं-
गमांथी जरुर पाछा पडी जता देखायछे, माटे ए त्रण उपर बहु खेद
रहेछे. ते मान ते शुं तो जे मानी होय तेने पोताथी मोटो होय तेनी
आगळपण स्तब्धपणुं रहे पण तेनी आगळ हलको थइने तेनी से-
वामां वर्ताय नहि. अने ए सर्वे जे अमारो अभिप्राय ते थोडाकमां
ल्यो कहीए जे, जेवी रीते शंकरस्वामीए अद्वैतब्रह्मनुं प्रतिपादन कर्युं
छे तेनेविषेतो अमारे रुचि नथी तथा रामानुजस्वामीए जेवी रीते
क्षर अक्षर थकी पर जे पुरुषोत्तम भगवान् तेनुं निरूपण कर्युंछे ते
पुरुषोत्तम भगवानने विषेतो अमारे उपासना छे तथा गोपीयोना
जेवीतो ए पुरुषोत्तमभगवानने विषे अमारे भक्ति छे तथा शुकजीना
जेवो तथा जडभरतना जेवो तो अमारे वैराग्य छे ने आत्मनिष्ठा
छे, एवी रीते अमारो अभिप्राय तथा रुचि छे ते अमारी वार्ताए
करीने तथा अमे मान्या जे अमारा संप्रदायना ग्रंथ तेणे करीने जो
पूर्वापर विचारीने जुवे तो जे बुद्धिवान् होय तेना जाण्यामां आवेछे,
एवी रीते पोताना भक्तजननी शिक्षाने अर्थे श्रीजिमहाराजे वार्ता
करी ने पोतेतो साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण छे। इति वचना-
मृतम् ॥ १४ ॥ १२२ ॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदी १२ तेरशने दिवस रात्रिने समे श्रीजिमहाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां विराजमान हता अने धोळो फेंटो माथे बांध्यो हतो तथा बीजे धोळे फेंटे बोकानी वाळी हती तथा गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळो चोफाळ ने धोळी पछेडी ते भेगां करीने ओढ्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ देशदेशना हरिभक्तनी सभा तथा परमहंसनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज कृपा करीने बोल्या जे, आ जीव छे ते[1] अध्यात्म[2], अधिभूत[3] अने अधिदेवपणे[4] करीने सर्वदेहमां नखशिखापर्यंत[6] व्यापीने रह्यो छे अने देवता ने इन्द्रियोरूपे करीने जीवनुं भोक्तापणुं छे पण देवता इन्द्रियोथी पृथकपणे भोक्ता नथी.[8]

त्यारे नित्यानंदस्वामीए आशंका करी जे "हे महाराज! त्यारे एम कहेवायछे जे जीव जेते सामान्यपणे सर्व देहमां व्यापीने विशेषपणे हृदयाकाशमां रह्योछे त्यारे सर्वे ठेकाणे सरखुं जाणपणुं नथी जणातुं तेनुं केम समझवुं ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, [9]जेम सूर्य छे ते किरणेकरीने सर्वपदार्थमां व्यापीने रह्योछे पण आगळ जेवुं पदार्थ छे त्यां तेवो सूर्यनो प्रकाश जणायछे, केम जे काचनी भूमि होय तथा स-

१ जण देहथी विलक्षण छे अने पोतपोताना हृदयमां विशेपसत्ताथी रह्यो छे, देहेन्द्रियादिकने चेतन करेछे तेथी ते चिद्रूप कहेवायछे ते । २ चक्षुरादि इन्द्रियो । ३ इन्द्रियोनां नेत्रादि गोलक । ४ इन्द्रियोना अधिष्ठाता सूर्यादि देवताओ । ५ अधिदेवना प्रकाशकपणे । ६ सामान्यसत्ताथी । ७ द्वारे । ८ आ अर्थ "**आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः**" आ श्रुतिमा वर्णव्यो छे । ९ अध्यात्मादिकमा सामान्यसत्ताथी व्याप्त एवा आत्मदर्शनमां स्वत. न्यूनाधिकभाव नथीज परंतु इन्द्रियोरूप आधारनी तारतम्यताथी आत्मप्रकाशनुं तारतम्यपणुं जणायछे ।

च्छ निर्मळ पाणी होय त्यां जेवी रीते सूर्यनो शुद्ध प्रकाश जणायछे तेवी रीते पाणानी भूमि रेतीनी भूमि तथा डोळायेलुं पाणी तेमां जणातो नथी एवी रीते सूर्यना प्रकाशमां न्यून अधिकपणुं जणायछे, तेम ए जीव इंद्रियो अंतःकरण गोलक ए सर्वनेविषे समानपणे रह्यो छे पण इंद्रियोनेविषे स्वच्छपणुं छे माटे तेनेविषे विशेष प्रकाश जणायछे, जुवोने नेत्रमां जेवुं तेज जणायछे तेवुं नाक कानमां कोइ दिवस जणायछे? नथी जणातुं. अने चार अंतःकरणनुं अति स्वच्छपणुं छे तो त्यां जीवनो अधिक प्रकाश जणायछे अने बीजां इंद्रियोमां न्यून जणायछे पण जीवतो सर्व देहने विषे[2] समानपणे रह्यो छे.[3]

त्यारे ब्रह्मानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "ए जीवने केटलाकतो तारा जेवो देखेछे तथा दीवानी ज्योत्य जेवो देखेछे तथा बपोरीया जेवो देखेछे ते केम समझवुं?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे एतो एम छे जे, जेम जेने अक्षिविद्या छे तेने नेत्रद्वाराए जीवनुं दर्शन थायछे ने तेने विषे भगवाननी मूर्तिनेपण देखेछे तेम जेने इंद्रियद्वारा लक्ष थयो ते तेवो आत्माने देखछे, जेम काचनुं पुतळुं मनुष्यने आकारे कर्युं होय तेने जेजे अवयव तथा सुवाळा तथा नाडीयो ते सर्वे काचनां होय ने ते पुतळानी मांहिलीकोरे तेज भर्युं होय ते तेज देखाय ते जेवो अंगळीनो अवकाश होय ते प्रमाणे देखायछे पण समग्र नथी देखातुं, तेम ए जीवनुं स्वरूप जेणे जेवुं दीठुं छे ते तेवुं कहेछे पण एनी निरावरण दृष्टि नथी थइ माटे एने जेवो आत्मा छे तेवो नथी देखातो. अने ज्यारे एनी निरावरण दृष्टि थइने आत्मा-

१ ज्ञानप्रभाथी । २ ज्ञानप्रभाथी । ३ माटे-आत्मप्रकाशमां न्यूनाधिक भेद जाणशो नहि केमके ते स्वतः विषम नथी ।

कारे थायछे त्यारे इंद्रियोना गोलकना जे विभाग ते एनी दृष्टिमां नथी आवता ने जेवो आत्मा छे तेवो जणायछे, जेम जे आकाशनी दृष्टिने पाम्यो होय तेनी दृष्टिमां बीजां चार भूत नथी आवतां, तेम जेनी निरावरण दृष्टि थायछे तेने गोलक, इंद्रियो, देवता, अंतःकरण तेणे करीने जणाता जे जीवना प्रकाशना भेद ते दृष्टिमां नथी आवता ने जेवो जीव छे तेवो यथार्थ जणायछे. अने भेददृष्टिवाळाने जेवो छे तेवो नथी जणातो, जेम कोइके गायनुं पुछडुं दीठुं कोइके मुख दीठुं खुर दीठो पेट दीठुं स्तन दीठो तेणे जेजे अंग दीठुं ते गायनुंज दीठुं छे पण जेवी गाय छे तेवी कोइए दीठी नथी अने एक अंग दीठुं माटे गाय दीठीपण कहेवाय, तेम आत्माना प्रकाशनुं दर्शन जेटलुं जेने इंद्रियोद्वारा अथवा अंतःकरणद्वारा थयुं तेटलो ते आत्मदर्शी कहेवाय पण सम्यक् आत्मदर्शन एने कहेवाय नहि, माटे अमेतो ए जीवनेविषे एवी रीते सामान्यविशेषपणुं कहीए छीए.

त्यारे नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! तमे जीवनेतो निराकार कह्यो त्यारे ते जीवनेविषे भगवान् रह्याछे तेपण अलिंगपणे[1] रह्याछे के मूर्तिमान् रह्याछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवान् तो इंद्रियो, देवता, अंतःकरण अने जीव ए सर्वना आश्रयपणे रह्याछे. ते श्रीकृष्णभगवाने उद्धव भेळे गोपीयोने कहेवराव्युंछे जे "इंद्रियो, अंतःकरण, देवता अने जीव तेना आश्रयपणे करीने तमारे समीपे हुं रह्योछुं, जेम पंच महाभूत ब्रह्मांडनेविषे रह्यांछे ने तेनां तेज सर्वना देहमां रह्यांछे, तेम जे हुं आ मथुरामां रह्योछुं तेतो जेम महाभूत विशेषपणे करीने ब्रह्मांडने विषे रह्यांछे तेम रह्योछुं अने जेम ए

१ निराकार।

भूत जीवोना देहोमां सामान्यपणे रह्याछे तेम हुं तमारे पासे रह्यो छुं. अने जे हुं देखातो नथी तेतो तमारा चित्तनी वृत्तिनो मारे विषे निरोध थाय तेने अर्थे नथी देखातो; पण रह्योतो मूर्तिमान् छुं."

त्यारे वळी नित्यानंदस्वामिए पुछ्युं जे "हे महाराज ! ए भगवान् इंद्रियादिकना आश्रयपणे रह्याछे ते पुरुषरूपे करीने रह्याछे के अक्षररूपे रह्याछे के पोते स्वयंपुरुषोत्तमपणे रह्याछे ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जीव, पुरुष, अक्षर अने पुरुषोत्तम ए सर्वेनुं तेज प्रकाशपणेतो सजातीयछे माटे एमना प्रकाशना भेद पाडवानेतो कोइ समर्थ छे नहि अने भेदतो अतिशय छे पण ते भेदने देखवाने कोइ समर्थ नथी अने जेने ए भगवान कृपा करेछे तेणे करीने तेने प्रकाशमय एवो दिव्यदेह बंधायछे पछी ते एम जाणेछे जे 'आ हुं छुं ने आ पुरुष छे ने आ अक्षर छे ने ए सर्वेथी विलक्षण एवा आ पुरुषोत्तम छे' एवी रीते ए सर्वेने पृथक्पणे देखेछे ने एमना प्रकाशने पण विलक्षणपणे देखेछे पण बीजोतो कोइ पृथक् देखवाने अर्थे समर्थ थाय नहि, माटे ए भगवान् सुझे ए रूपे करीने रह्याछे पण पोतेज रह्याछे.

अने वेदांत जे उपनिषद् तथा योग तथा सांख्य ए त्रण शास्त्र सनातन छे ते ए श्रीकृष्णपरमात्मानुंज वर्णन करेछे, ते ए त्रण शास्त्रना मत तमने अमे पृथक् पृथक्पणे करीने कहीए ते सांभळो, तेमां जे सांख्यवाळा छे तेतो चोवीश तत्त्वने कहीने तेथी पर पचविशमा परमात्माने कहेछे पण जीव ईश्वरने पृथक्पणे नथी कहेता, तेनो ए अभिप्राय छे जे तत्त्व छे ते जीव विनानां होय नहि माटे तत्त्व भेळो तदात्मकपणे रह्यो जे जीव तेने तत्त्वरूपज कहेछे पण तत्त्वथकी पृथक् नथी कहेता. अने जेम जीवने चोवीश तत्त्वरूप मानेछे तेम

ब्रह्मांडाभिमानी जे ईश्वर तेनेपण चोवीश तत्त्वरूप मानेछे एवी रीते जीव ईश्वर ए बेयने तत्त्वरूप मानीने तत्त्व भेळेज एने गणेछे पण तत्त्वथी नांखा नथी गणता अने ए पचविशमा परमात्माने कहेछे ए सांख्यनो मत छे पण एम न समझवुं जे जीव नथी, कांजे सांख्यवाळे पट्'संपत्ति, श्रवण, मनन, निदिध्यासनादिक साधन कह्यांछे ते जीवनेज करवानां कह्यांछे पछी ते साधने करीने विचारने पामे ने ते विचारे करीने तत्त्वथकी पोते नोखो पडे ने पोताने ब्रह्मरूप माने ने परमात्माने भजे एवी रीते सांख्यमत छे. ते मोक्षधर्ममां शुकजी प्रत्ये नारदजीए कह्युं जे "त्यज धर्ममधर्मं च उभे सत्यानृते त्यज। उभे सत्यानृते त्यक्त्वा येन त्यजसि तत्त्यज॥" एनो एम अर्थ छे जे "ज्यारे मुमुक्षु आत्मविचार करवा वेसे त्यारे तेने आडा जे धर्मरूप अथवा अधर्मरूप सत्यरूप असत्यरूप जेजे संकल्प आवे तेनो त्याग करीने अने जे विचारे करीने एने तजेछे ते विचारनोपण त्याग करीने ब्रह्मरूपे रहेवुं पण देहे करीने धर्मरूप नियमनो त्याग करवो कह्यो नथी, ए श्लोकनो ए अर्थ छे. अने योगवाळा छे ते चोवीश तत्त्वने पृथक् गणेछे ने जीव ईश्वरने पचविशमा कहेछे ने परमात्माने छवीशमा कहेछे अने विवेके करीने पचविशमाने तत्त्वथकी पृथक् समझीने तेनेविषे पोतापणानी दृढता मानीने चोवीस तत्त्वनी जे वृत्तियो तेनो पिंडीभाव करीने बळात्कारे छवीशमाने विषे राखे पण विषय सन्मुख जवा दे नहि अने एम समझे जे 'मारी वृत्ति भगवानने मुकीने बीजे ठेकाणे जशे तो मने संसृति थशे' माटे अति आग्रह करीने इंद्रियो अंतःकरणनी जे वृत्तियो तेने भगवाननेविषे राखे। अने जे सांख्यवाळो छे, तेतो एम समझे जे

१ शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान अने श्रद्धा।

'मारे इन्द्रियो अंतःकरणज नथी तो जशे क्यां ?' माटे पोताने ब्रह्मरूप मानीने निर्भय रहेछे. अने जे योगवाळो छे तेतो डरतोज रहेछे, जेम कोइक पुरुषना हाथमां तेलनुं माथा लगण भरेलुं पात्र होय ने ते पुरुषने पगथीयाने उपर उंचुं चढवुं होय ने बे कोरथी उघाडी तरवारवाळा पुरुष डरावबाने उभा रह्या होय ने ते तेलने ढळवा देवुं न होय ने ते पुरुष जेवो भयने पामे, तेम योगवाळो विषय थकी बीयने भगवानने विषे वृत्तिओने राखेछे ए योगनो मत छे. अने वेदांत जे उपनिषद् तेनो मत ए छे जे, सर्वना अतिशय मोटा कारण एवा जे पुरुषोत्तमनारायण ब्रह्म तेनुंज ग्रहण करीने बीजा सर्वने मिथ्या मानेछे, जेम आकाशनी दृष्टिने जे पाम्यो होय ते बीजा तत्त्वने देखे नहि तेम ए ब्रह्मने जे देखतो होय ते बीजा कोइने देखे नहि, एवी रीते वेदांतनो मत छे। इति वचनामृतम् ॥ १५ ॥ १२३ ॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदी १४ चौदशने दिवस संध्या आरती थया केडे श्रीजिमहाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां ढोलिया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पेहेर्यो हतो तथा गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती तथा माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने बीजे धोळे फेंटे करीने बोकानी वाळी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे सर्वे परमहंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो, एम कहीने पोतेज प्रश्न पुछ्यो जे "जेने वासना कुंठित न थइ होय ने जेने वासना कुंठित थइ गइ होय ने जेने वासना निर्मूळ थइ गइ होय तेनां शां लक्षण छे?" पछी मुक्तानंदस्वामीए ए प्रश्ननो उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहि, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेनी वासना

कुंठित न थइ होय तेनी इन्द्रियोनी वृत्ति विषयमां चोटी जाय ते पाछी विचारे करीनेपण निसरे नहि अने जेने कुंठित वासना थइ गइ होय तेनी वृत्ति विषयमां तत्काळ प्रवेश करे नहि अने कदाचित् वृत्ति विषयमां प्रवेश करी जाय ने ते वृत्तिने पाछी वाळे तो तरत पाछी वळे पण विषयमां आसक्त थाय नहि. अने जेने वासना निर्मूळ थइ गइ होय तेनेतो जाग्रतनेविषे सुषुप्तिनी पेठे विषयनो अभाव वर्ते ने सारा नरसा जे विषय ते बेय समानपणे जणाय अने पोते गुणातीतपणे वर्ते.

त्यारे गोपाळानंदस्वामीए पूछ्युं जे "वासना कुंठिततो होय पण ते मूळमांथी टळी नथी जती तेनुं शुं कारण छे ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर ए छे जे, आत्मनिष्ठारूप एवुं जे ज्ञान तथा प्रकृतिनां कार्य एवां जे पदार्थमात्र तेनेविषे अनासक्तिरूप एवो जे वैराग्य तथा ब्रह्मचर्यादिकरूप जे धर्म तथा माहात्म्ये सहित एवी जे भगवाननी भक्ति ए चार वानां जेमां संपूर्ण होय तेने वासना निर्मूळ थइ जायछे अने ए चारमां जेटली न्यूनता रहेछे तेटली वासना निर्मूळ थती नथी.[1]

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे प्रश्न पुछीए जे "मुमुक्षुने भगवाननी प्राप्तिने अर्थे अनंत साधन करवानां कह्यांछे तेमां एक एवुं मोटुं कयुं साधन छे जेणे करीने सर्वे दोष टळी जाय ने तेमां सर्वे गुण आवे ?" त्यारे ए प्रश्ननो उत्तर परमहंसथते थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराजे एनो उत्तर कर्यो जे, भगवाननुं माहात्म्य जेम कपिलदेवजीए देवहूती प्रत्ये कह्युंछे जे—"मद्भयाद्वाति वातोऽयं सूर्यस्तपति म-

१ माटे मूळमाथी वासनानो उच्छेद करवा इच्छता भक्तजने स्वधर्मादि साधन अतिदृढपणे साधवां । २ अर्थः—मारा भयथी वायु वायछे, मारा भयथी सूर्य तपेछे ।

द्भयात्” एवी रीते अनंत प्रकारना माहात्म्ये सहित एवी जे भगवाननी भक्ति ते जेने होय तेना दोपमात्र टळी जायछे अने तेने ज्ञान वैराग्य धर्म ए न होय तोपण ए सर्वे आवेछे, माटे ए साधन सर्वमां मोटुं छे.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे “जे कपटी होय ने ते बुद्धिवाळो होय माटे पोताना कपटने जणावा दे नहि तेनुं कपट केवी रीते कळाय ते कहो?” तारे एनो उत्तर ब्रह्मानंदस्वामीए कर्यो जे, जेनी बेठ्यक उठ्यक ते जे सत्संगनो द्वेषी होय ने संतनुं ने भगवाननुं घसातुं बोलतो होय ते पासे होय तेणे करीने ते ओळखाय पण बीजी रीतेतो न ओळखाय, पछी ए उत्तरने श्रीजिमहाराजे मान्यो अने पछी पोते बोल्याजे “एवानो संग न करतो होय तो केम कळीए?”त्यारे ब्रह्मानंदस्वामीए कह्युं जे, कोइक देशकाळनुं विपमपणुं आवे त्यारे एनुं कपट कळाइ जाय, त्यारे श्रीजिमहाराजे कह्युं जे ए ठीक उत्तर कर्यो.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे “एवो कयो एक अवगुण छे जे जेणे करीने सर्व गुणमात्र ते दोपरूप थइ जायछे, ते कहो?” त्यारे श्रीपात देवानंदस्वामी बोल्या जे, भगवानना भक्तनो जे द्रोह करे तेना जे सर्व गुण ते दोपरूप थइ जायछे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ए उत्तरपण खरो, पण अमेतो एनो उत्तर बीजो धार्यो छे जे सर्वे गुणे संपन्न होय ने जो भगवानने अलिंग समझतो होय पण मूर्तिमान् न समझे ए मोटो दोप छे एणे करीने एना बीजा सर्वे गुण दोपरूप थइ जायछे.

अने वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे “संतनो अभाव शाणे करीने आवेछे ते कहो?” पछी एनो उत्तर परमहंसे करवा मांड्यो पण

थयो नहि, त्यारे श्रीजिमहाराजे एनो उत्तर कर्यो जे, जेने मान होय तेने संतनो अभाव आवेछे, केमजे जे मानी होय तेनो एवो स्वभाव होय जे 'जे पोताने वखाणे तेमां सो अवगुण होय ते सर्वने पच्या मुकीने तेमां एक गुण होय तेने बहु माने अने जे पोताने वखाणतो न होय ने तेमां सो गुण होय ते सर्वने पच्या मुकीने तेमां कोइक जेवो तेवो एक अवगुण होय तेने बहु मानीने तेनो प्रथमतो मन तथा वचन तेणे करीने द्रोह करे ने पछी देहे करीनेपण द्रोह करे' माटे ए मानरूप मोटो दोष छे अने ते मान समझुमांज होय ने भोळामां न होय एम जाणवुं नहि भोळामांतो समझु करतांय झाझुं होयछे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! ए मान केम टळे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे भगवाननुं माहात्म्य अतिशय समझतो होय तेने मान न आवे केमजे जुवोने उद्धवजी केवा डाह्या हता ने नीतिशास्त्रमां कुशळ हता ने देहे करीने राजा जेवा हता पण जो भगवाननुं महात्म्य समझता हता तो गोपीयोनेविषे भगवाननो स्नेह जोइने तेनी आगळ पोतानुं मान न रह्युं अने एम बोल्या जे 'ए गोपीयोना चरणनी रज जेने अडती होय एवा जे वृक्ष, लता, तृण, गुच्छ ते मांहेलो हुं कोइक थाउं' अने तुळसीदासजीए कह्युंछे जे—"तुलसी ज्याके मुखनसे भूले निकसे राम। ताके पगकी पेहेनीयां मेरे तनकी चाम॥"एम जेने भूलेपण भगवाननुं नाम मुखथी निसरे तेने अर्थे पोताना शरीरना चर्मना जोडा करावी आपे तो जे भगवानना भक्त होय ने भगवाननुं निरंतर नामसरण भजन कीर्तन वंदन करता होय ने जो भगवाननुं महात्म्य समझतो होय तो तेने आगळ शुं मान रहे? नज रहे, माटे माहात्म्य सम-

झे त्यारे मान जायछे पण माहात्म्य समझ्या विनातो मान जतुं नथी ते सारु जेने मान टाळवुं होय तेने भगवाननुं ने संतनुं माहात्म्य समझवुं । इति वचनामृतम् ॥ १६ ॥ १२४ ॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदी अमासने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां ढोलिया उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने बीजे धोळो फेंटे करीने बोकानी वाळी हती तथा गरमपोसनी रातिं डगली मांहेली कोरे धोळे अंगरखे सहित पहेरी हती तथा धोळो खेस पेहेर्यो हतो तथा चोफाळ ओढीने ते उपर पीळी रजाइ ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती एवी रीते श्रीजिमहाराज प्रसन्न थका रात्रिने समे विराजमान हता.

पछी श्रीजिमहाराज पोतानी मेळे बोल्या जे, जुवोने भगवाननी मायानुं बळ केवुं छे जेणे करीने विपरीतपणुं घणुं थायछे, केमजे प्रथम केत्रो सारो जणातो होय ने पछी अतिशय भूंडो थइ जायछे, एम कहीने पछी वळी परमहंस प्रत्ये बोल्या जे आजतो प्रश्न पुछो तो वार्ता करीए, त्यारे नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! प्रथम सारो होय ने स्तुति करतो होय अने तेनो ते पाछो निंदा करवा मांडेछे; माटे सुझे एवो देश,काळ,क्रिया, संग, विषम थाय तोपण सारो ने सारोज रहे पण कोइ रीतें विपरीत मति थाय नहि ते शाणे करीने थाय ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने देहनो अनादर होय ने दृढ आत्मनिष्ठा होय ने पंच विषयमां वैराग्य होय अने भगवाननो माहात्म्ये सहित यथार्थ निश्चय होय एवाने सुझे एवुं देशकाळादिकनुं विषमपणुं थाय तोपण एनी मति अवळी थाय नहि. अने जे देहाभिमानी होय ने पंच विषयनो अतिशय

अभाव न थयो होय तेने ज्यारे संत ए विषयनुं खंडन करे त्यारे ते संत मोटेरा होय तेनोपण अभाव आवे ने भगवाननोपण अभाव आवे. अने भगवाननोतो यथार्थ निश्चय होय तोपण जो पंच विषयनो अत्यंत अभाव न थइ गयो होग ने तेनी आसक्ति होय ने ते विषयनुं मुक्तानंद स्वामी जेवा खंडन करे तो तेनुं माथुं शस्त्रेकरीने मुकावीदे एवो द्रोह करे.

पछी वळी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "कोइकने देहाभिमान तथा पंच विषयनी आसक्ति होय तोपण ते सत्संगमां नभ्यो जायछे ते केम समजवुं?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्याजे, एने ज्यांसुधी कोइक धको नथी लाग्यो त्यांसुधी नभ्यो जायछे पण ज्यारे कोइक मोटा संत अथवा भगवान् ते मानने खोदशे तथा स्वाद, देहाभिमान, लोभ, काम, क्रोध एने खोदशे त्यारे एने जरुर ते संतनो अभाव आवशे त्यारे ए जरुर संतनो द्रोह करशे ने सत्संगमांथी विमुख थशे, जेम सर्प लाळ नांखी होय एवुं जे दुध साकर तेने जेणे पीधुं होय ने ते जीवेछे तोपण ते घडी बे घडीमां सांज सवारे आज काल जरुर मरनारोछे,तेम जे देहाभिमानी छे ते महिने बे महिने वर्षे बे वर्षे दश वर्षे देह मुक्या समे देह मुकीने ज्यारे त्यारेपण ए जरुर संतनो अभाव लइने पडी जशे अने जेने देहाभिमान न होय अने एम समजतो होय जे 'अंतःकरण इन्द्रियोनो प्रकाशक ने जेणे करीने देह चालेछे हालेछे एवो जे सत्तारूप आत्मा ते हुं छुं ते हुं धन स्त्रीयादिक कोइ पदार्थे करीने सुखी थउं एवो नथी ने ए पदार्थ न मळे तेणे करीने दुःखी थउं एवो नथी' एम दृढ समजण जेने होय तेने संत गमे तेवी रीते पंच विषयनुं खंडन करे तथा देहाभिमाननुं खंडन करे तोपण ते संतनो अभाव कोइ रीते आवे नहि अने तुच्छ पदार्थ सारु संत साथे वखेडो थाय नहि ने आंटीपण पडे नहि.

पछी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जेने पंच विषयनो अभाव होय ते केम जणाय?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने विषयनो अभाव होय ते एम जणाय जे ज्यारे कांइ सारुं खावानुं आवे त्यारे तेने खाय पण जेम जेवुं तेवुं खातो होय ने तेमां आनंद होय तेवो आनंद रहे नहि मुंझाइ जाय अने लुगडां जेवां तेवां जाडां पहेरतो होय तेमां आनंद होय तेवो झीणां लुगडां पहेरवां पडे तेमां आनंद न रहे ने मन मुंझाय तेमज सारी पथारी होय अथवा कोइक मान दे इत्यादिक जेजे सारा पदार्थनो योग थाय त्यारे तेमां तेनुं मन मुंझाय पण तेमां कोइ रीते आनंद पामेज नहि त्यारे तेने एम जाणीए जे 'एने विषयनेविषे अभाव छे.'

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज ! ए पंच विषयनो अभाव केम थाय?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, विषयनो अभाव थयानुं मुख्य साधनतो परमेश्वरनुं माहात्म्य छे ने ते पछी आत्मनिष्ठा ने वैराग्य छे, ते माहात्म्य ते शुं तो जे 'भगवाननी बीके करीने इंद्र वर्षेछे, सूर्य अग्नि चंद्रमा प्रकाश करेछे, पृथ्वी सर्वने धारी रहीछे, समुद्र मर्यादा नथी लोपता, ओषधियो ऋतुने पामीने फळेछे. अने जे भगवान् जगतनी उत्पत्ति स्थिति प्रलयने करेछे अने जेनी शक्ति काळ छे माया छे पुरुष छे अक्षर छे' एवी रीते जे भगवाननी मोटयपने समझतो होय तेने जगतमां एवुं शुं पदार्थ छे ते बंधन करे? ते काम, क्रोध, लोभ, मान, ईर्ष्या, स्वाद सूक्ष्मवस्त्र, धन, स्त्री तथा जेजे पंच विषयसंबन्धी पदार्थ ते एने कोइ बंधन करे नहि, कांजे एणेतो सर्वनुं परिमाण करी राख्युंछे जे 'भगवान् ते आवा छे ने आवो ए भगवानना भजन स्मरण कथा वार्ताने विषे माल छे अने अक्षर ते आवो

छे ने आवुं ए अक्षर संबन्धी सुख छे तथा गोलोक वैकुंठ श्वेतद्वीप संबन्धी सुख ते आवुं छे तथा प्रकृतिपुरुष संबन्धी सुख ते आवुं छे अने ब्रह्मलोक संबन्धी सुख ते आवुं छे ने स्वर्गनुं सुख ते आवुं छे तथा राज्यादिकनुं सुख ते आवुं छे' एवी रीते ए सर्वना सुखनुं अनुमान करीने अने भगवानना सुखने सर्वथी अधिक मानीने जे भगवानने विषे जोडाणो होय तेने एवो कयो पदार्थ छे ते भगवानना चरणारविंदथी पाडे ? कोइ न पाडे, जेम पारसमणि होय ते कोइक लोढाने अडीने तेनुं सोनुं थयुं ते सोनुं पाछुं पारसमणिनुं कयुंपण लोढुं थाय नहि, तेम एवुं जेणे भगवाननुं माहात्म्य जाण्युंछे ते भगवाननो पाव्यो पण ते भगवानना चरणारविंदथी पडे नहि तो शुं बीजे पदार्थे करीने ए पडे ? न पडे. अने ए भगवानने भजता होय एवा जे संत तेनुंपण ए बहु माहात्म्य समजे जे 'एवा मोटा जे भगवान् तेना साक्षात् उपासक ए संत छे माटे ए बहु मोटा छे' जेम उद्धव पोते केवा मोटा हता पण जो आवी रीते भगवाननुं माहात्म्य समझता हता तो पोताने कांइ डहापणनुं मान नं रह्युं ने गोपीयोना चरणनी रजने पामवाने इछ्या अने वृक्षवेलीनो अवतार माग्यो, केमजे एवा मोटा भगवान् जेना मार्गने वेदनी श्रुति खोळेछे ते भगवाननेविषे ए गोपीयोनी प्रीति अतिशय भाळी, तेम एवा भगवानना संत होय तेने आगळ मान केम रहे ? अने तेने नमाय केम नहि ? तेने आगळतो दासानुदास थइने रहेवाय अने पांच पांच खासडां मारे तोपण खमे अने एम समझे जे 'मारां मोटां भाग्य थयां जे एवा संतनो हुं तिरस्कार सहुंछुं नहितो प्रारब्धवश थइने बायडी छोकरांना तिरस्कार सहेवा पडत तथा मावापना तथा राजाना तिरस्कार सहेवा पडत अने प्रारब्धवश थइने डोडिनी भाजि खावी

पडत तथा मोथ्य खोदीने खावी पडत, ते करतां आ संतने संगे रहीने हुं निःस्वादी वर्तमान पाळुंछुं ते मारां मोटां भाग्य छे अने प्रारब्धवश थइने जेवां तेवां वस्त्र तथा चींथरां पहेरवा पडत, ते करतां आ संतने संगे रहीने हुं गोदडी ओढुंछुं ते ए मारां मोटां भाग्य छे.' अने संतनी सभामां जायछे ने पोताने मान जडतुं नथी त्यारे ए संतनो अवगुण लेछे त्यारे एने संतनी मोट्यप जाण्यामां आवी नथी नहितो अवगुण लेत नहि, जेम मुंबईनो गवर्नर साहेब खुरसी नाखीने बेठो होय ने तेनी सभामां कोइ गरीब माणस जाय ने तेने खुरसी न नाखी दे ने आदर कोइ न करे त्यारे कांइ एने ते इंग्रेज उपर धोखो थायछे? ने कांइ तेने गाळ दीधानुं मनमां थायछे? लेशमात्र पण थतुं नथी, शामाटे जे ए इंग्रेजनी मोटाइ जाणी छे जे 'एतो मुलकनो पादशाह छे ने हुंतो कंगाल छुं' एवुं जाणीने धोखो थाय नहि, तेम जो संतनी मोटाइ जाणी होय तो ते संत गमे तेवो तिरस्कार करे तोपण धोखो थाय नहि अने जेटलो ले एटलो पोतानो अवगुण ले पण संतनो अवगुण तो कोइ रीते लेज नहि, माटे जेने भगवाननुं ने संतनुं माहात्म्य समझाणुं छे तेनो पायो सत्संगमां अचळ छे अने जेने माहात्म्य नथी समझाणुं तेनो विश्वास नहि। इति वचनामृतम् ॥ १७ ॥ १२५ ॥

संवत् १८७७ ना पोष शुदी १ पडवाने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीलोयामध्ये सुराभक्तना दरबारमां ढोलिया उपर विराजमान हता अने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने बीजे धोळे फेंटे करीने बोकानी वाळी हती तथा गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती तथा चोफाळे सहित रजाई ओढी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा

तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ते समयमां संध्या आरती तथा स्तुति परमहंस करी रह्या पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे कीर्तन गाओ, पछी वाजित्र वजाडीने मुक्तानंदस्वामी आदिक परमहंसे कीर्तन गायां.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे हवे कीर्तन राखो हवेतो अमे वार्ता करीशुं अने अमे आ वात करीए तेमां जेने आशंका उपजे ते पुछज्यो. एम कहीने बोल्या जे, भगवाननो निश्चय थवो ते सौथी महा कठण छे ते निश्चयनी वार्ता अति अटपटी छे माटे कहेतां बीक लागेछे जे 'शुं जाणीए वात करीए ने तेमांथी कोइने अवळुं पडे ने तेणे जे पोताना अंगनी दृढता करी होय ते अंग आ वाते करीने त्रुटी जाय तो ते मूळगेथी जाय' अने ए वात कर्या विनापण चालतुं नथी अने ए वात जो समझतां न आवडे तो दूषणपण घणां आवे अने आ वात समझे नहि त्यांलगण तेना निश्चयमांपण काच्यप घणी रहेछे ते सारु वात करीए छीए जे, भगवाने वराहनो देह धार्यो ते भुंडनुं रूप ते अतिकुरूप कहेवाय तथा मत्स्यावतार धार्यो त्यारे माछला जेवुंज रूप हतुं तथा कच्छावतार धार्यो त्यारे वीजा काचवा जेवुंज रूप हतुं तथा नृसिंहावतार धार्यो त्यारे वाघना जेवुं भयानक रूप हतुं तथा वामनावतार धार्यो त्यारे ते वामनरूपना हाथ पग ठुंका ने केड्य धींगी ने शरीर धींगुं एवा ठुंकडा हता तथा व्यासावतार धार्यो त्यारे ते व्यास काळा हता ने शरीरमां रुवाळा घणा हता ने शरीर गंधातुं हतुं इत्यादिक जे भगवाने आकृतियो धारण करी हती त्यारे तेने ते काळे जेजे मळ्या तेमणे तेवातेवा रूपनुं ध्यान कर्युं छे अने ते ध्याने करीने तेते भगवानना रूपने पाम्याछे, तेमां जे वराहने मळ्या ते शुं धामनेविषे भग-

१ साधर्म्य ।

वानने वराहरूपज देखेछे ? अने मत्स्यजीने मळ्या ते शुं धामनेविषे मत्स्यरूपज देखेछे ? अने कूर्मने मळ्या ते शुं धामनेविषे कूर्मरूपज देखेछे ? अने नृसिंहने मळ्या ते शुं धामनेविषे नृसिंहरूपज देखेछे ? अने हयग्रीवने मळ्या ते शुं धामनेविषे घोडारूपज देखेछे ? अने जेणे वराहने पतिभावे भज्या ते शुं भुंडण थइ ने सखाभावे भज्या ते शुं भुंड थयो ? अने मत्स्यने पतिभावे भज्या ते शुं माछली थइ ने सखाभावे भज्या ते शुं माछलो थयो ? अने कूर्मने पतिभावे भज्या ते शुं काचबी थइ ने सखाभावे भज्या ते शुं काचबो थयो ? अने नृसिंहने पतिभावे भज्या ते शुं सिंहण थइ ने सखाभावे भज्या ते शुं सिंह थयो? अने हयग्रीवने पतिभावे भज्या ते शुं घोडी थइ ने सखाभावे भज्या ते शुं घोडो थयो ? माटे जो भगवाननुं मूळरूप वराहादिक जेवुंज होय तोतो तेते अवतारना भक्तोने तेना ध्याने करीने तदाकारपणुं थाय त्यारेतो कह्युं तेमज थयुं जोइए पण ए वात एम नथी, त्यारे तमे कहेशो जे 'ते भगवाननुं केवुं रूप छे' तो कहीए छीए जे, भगवानतो सच्चिदानंदरूप छे ने तेजोमयमूर्ति छे अने जेना एक एक रोमनेविषे कोटिकोटिसूर्य जेवो प्रकाश छे ने कोटि कामदेवनेपण लज्जा पमाडे एवा ते भगवान् रूपाळा छे अने अनंतकोटि ब्रह्मांडना पति छे राजाधिराज छे सर्वना नियंता छे सर्वना अंतर्यामी छे अने अतिशय सुखस्वरूप छे अने जेना सुखनी आगळ अनंत रूपवान स्त्रीयोने जोयानुं जे सुख ते तुच्छ थइ जायछे अने आ लोक परलोक संबन्धी जे पंच विषयनां सुख ते भगवाननी मूर्तिना सुख आगळ तुच्छ थइ जायछे; एवुं भगवाननुं स्वरूप छे. ते स्वरूप सदा द्विभुजज छे ने पोतानी इच्छाए करीने क्यारेक चतुर्भुजपण जणायछे अष्टभुजपण जणायछे अने सहस्रभुजपण देखायछे. अने तेज भगवान् मत्स्यकच्छ

वराहादिक रूपने तथा रामकृष्णादिक रूपने कोइक कार्यने अर्थे धारण करेछे पण जे ए पोतानुं मूळ रूप छे तेने तजीने ए अवतारनुं धारण नथी करता, तेज भगवान् पोते अनंत ऐश्वर्य ने अनंत शक्ति सहितज मत्स्य कच्छादिक रूपने धारण करेछे. अने जे कार्यनिमित्त जे देहनुं धारण कर्युं होय ते कार्य थइ रहेछे त्यारे ते देहनो त्यागपण करेछे. ते भागवतमां कहुंछे "भूभारः क्षपितो येन तां तनूं विजहावजः। कण्टकं कण्टकेनैव द्वयं चापीशितुः समम्॥" जेजे देहे करीने भगवाने पृथ्वीनो भार उतार्यो तथा जीवोने देहाभिमानरूप जे चैतन्यमां कांटो खुंची रह्यो हतो तेने काढीने ने काढवाना कांटा रूप जे पोतानो देह तेने-पण त्याग कर्यो. अने राक्षसने मारवाने अर्थे भगवाने नृसिंहरूप धार्युं ने पछी ते कार्यने करीने पछी ते देहनो त्याग करवाने इच्छया पण ते सिंहने कोण मारे? पछी पोताने इच्छाए करीने काळरूप शिव ते शरभनुं रूप धारीने आव्या ने नृसिंहने ने शरभने युद्ध थयुं पछी बेय जणे देह मुक्यो तेणे करीने शिव शरभेश्वर महादेव थया अने नृसिंहजीए देह मुक्यो ते नारसिंही शीला थइ, माटे चित्रामणमां ज्यांज्यां मत्स्य कूर्मादिक भगवानना अवतारनां चित्रामण करेछे त्यांत्यां थोडोक मत्स्य कच्छादिकनो आकार करीने पछी ते उपर शंख, चक्र, गदा, पद्म, वैजयंती माळा, पीतांबर वस्त्र, किरीट-मुकुट, श्रीवत्सनुं चिह्न इत्यादिक चिह्ने सहित भगवाननी मूर्तिने लखेछे तो जो भगवाननुं रूप अनादि एवुंज छे. अने श्रीकृष्णभगवाने प्रथम जन्मसमयमां वसुदेवदेवकीने चतुर्भुजरूपे दर्शन दीधुं अने अक्रूरने चतुर्भुजरूपे दर्शन जळनेविषे दीधुं तथा रुक्मिणीने मूर्च्छा आवी त्यारेपण चतुर्भुजरूपे दर्शन दीधुं अने अर्जुनेपण एम कहुं जे "तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव वि-

१ अर्थः-हे सहस्रबाहो! हे. विश्वमूर्ते! तेना तेज चतुर्भुजरूपे तमे थाओ।

श्वमूर्ते!" माटे अर्जुनपण चतुर्भुजरूप देखता अने यादवास्थळीकरीने पींपळानी हेठे श्रीकृष्णभगवान् बेठा हता ते समयमां उद्धवजीए तथा मैत्रेयऋषिए भगवाननुं रूप चतुर्भुज शंख चक्र गदा पद्म पीतांबर सहित दीठुं अने श्रीकृष्णभगवानतो श्याम हता ने तेनुं रूपतो कोटि कामने लज्जा पमाडे एवुं कह्युंछे माटे एवा मनुष्य जेवा जणायछे तेनेविषेज पूर्वे कह्यो एवो प्रकाश ने सुख ते सर्वे रह्यांछे. ते जेने ध्यान धारणा समाधिनुं अंग होय तेने एनी ए मूर्ति छे तेज कोटिकोटि सूर्यना प्रकाशे युक्त देखायछे पण मशाल दीवानुं काम पडतुं नथी. अने एवो प्रकाश ए भगवाननेविषे छे ने ते नथी देखातो तेतो ए भगवाननी एवी इच्छा छे अने ए भगवान् इच्छे जे 'एवो प्रकाशवान् हुं आ भक्तने देखाडुं' तो ते प्रकाशे युक्त एवी एज मूर्तिने देखेछे, माटे जेने भगवाननो निश्चय होय तेतो एम समझे जे 'गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप, ब्रह्मपुर ए धामनां जे ऐश्वर्य समृद्धि तथा पार्षद तेणे सहित ए भगवान् छे अने एमनी सेवाना करतलतो राधिका लक्ष्मी आदिक छे, एवा परमभावे सहित भगवानने देखेछे. अने जे मूढ छे ते माणस जेवा देखेछे, ते श्रीकृष्णभगवाने गीतामां कह्युंछे "अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्। परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्॥" माटे जे मूढ छे ते भगवानना एवा परमभावने जाण्या विना भगवाननेविषे पोताना जेवा मनुष्यना भावने परठेछे, ते मनुष्यभाव ते शुं? तो काम, क्रोध, लोभ,

---

१ अर्थः—पोते करेलां पापकर्मथी मूढ एवा पुरुषो मारो परंभाव नहि जाणीने सर्वभूतोनो महेश्वर अने परम करुणाथी सर्वना समाश्रय माटे मनुष्यने सजातीय तनुने आशरेलो हुं ते मारी 'अवज्ञा करेछे एटले मने' प्राकृत मनुष्यने सजातीय मानीने तिरस्कार करेछे।

मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा इत्यादिक अंतःकरणना भाव छे तथा हाड, चाम, मळ, मूत्रादिक तथा जन्म, मरण, बाळ, यौवन, वृद्ध ए सर्वे देहना भाव छे इत्यादिक जे मनुष्यभाव ते सर्वे भावने भगवाननेविषे परठेछे, माटे एवा भावनो परठनारो जे होय तेने भगवानना निश्चय जेवुं जणायछे तोपण तेनो निश्चय काचो छे. अने ए जरुर सत्संगमांथी पडशे. अने ए भगवानतो परम दिव्यमूर्ति छे ने भगवाननेविषेतो ए मनुष्यभावनो लेश नथी माटे ए भगवानमांथी मनुष्यभावने टाळीने देवभाव लाववो पछी ब्रह्मादिकनो भाव लाववो पछी प्रधानपुरुषनो भाव आवे पछी प्रकृतिपुरुषनो भाव आवे पछी अक्षरनो भाव आवे पछी अक्षरातीत एवा पुरुषोत्तम तेनो भाव आवेछे, जेम व्रजना गोपने आश्चर्यरूप श्रीकृष्णभगवानना चरित्र देखीने प्रथमतो देवभाव आव्यो पछी गर्गाचार्यना वचनने संभारीने नारायणनो भाव आव्यो पछी एम कह्युं जे 'तमेतो नारायण छो माटे अमने तमारुं धाम देखाडो' त्यारे अक्षरधाम देखाड्युं, एवी रीते भगवाननेविषे जेने दिव्यभाव छे तेने पुरो निश्चय जाणवो. अने एम कहेछे जे 'आने प्रथम भगवाननो निश्चय नहोतो ने हवे थयो' ते शुं ए प्रथम भगवानने नोतो देखतो ? देखतो तो हतो पण मनुष्यभावे सहित देखतो हतो अने पछी ज्यारे निश्चय थयो त्यारे दिव्यभावे सहित दर्शन कर्युं त्यारे एने निश्चय थयो जाणवो अने ज्यारे भगवाननेविषे एवो दिव्यभाव न समझे त्यारे एने वातेवाते धोखो थाय ने गुण अवगुण लिधा करेछे जे 'आनीकोरनो पक्ष राखेछे ने अमारो पक्ष राखता नथी तथा आने वधु बोलावेछे ने अमने नथी बोलावता अने आने उपर वधु हेत छे ने अमारी उपर नथी' एवी रीते गुण अवगुण परठ्या करेछे तेणे करीने एनुं अं-

तर दिवसेदिवसे पाछुं पडीने अंत्ये ते विमुख थायछे माटे भगवानने-विपेतो मनुष्यभाव नज परठवो. अने भगवानना भक्तनेविपे पण मनुष्यभाव न परठवो, कांजे देहे करीनेतो भगवानना भक्तमां कोइक आंधळो होय, लुलो होय, कोढियो होय, बहेरो होय, वृद्ध होय, कुरूप होय अने ते ज्यारे देह मुकेछे त्यारे शुं भगवानना धाममां एवा आंधळा लुलाज रहेछे ? नथी रहेता, एतो सर्वे मनुष्यपणाना भाव छे तेने मुकीने दिव्यरूप थायछे–ब्रह्मरूप थायछे, माटे हरिना भक्तनेविपे मनुप्यभाव न परठाय तो परमेश्वरनेविपे केम परठाय ? अने आ जे वात छे ते सुझेतो आज समझो तो एटली समझवी छे अने सुझेतो सो वर्षे करीने समझो तोपण एटली समझवी छे. अने आ वात समझीने एनी दृढतानी गांठ पड्या विना छुटको नथी माटे आ अमारी वात छे ते सर्वे हरिभक्तने याद राखीने परस्पर करवी अने ज्यारे कोइने अणसमझणे करीने धोखो थाय त्यारे तेने आ वात करीने चेतावी देवो. अने आ जे अमारी वार्ता छे तेने नित्य प्रत्ये दिवसमां एकवार करवी एम अमारी आज्ञा छे तेने भुलशो मां, जरुर भुलशो मां, एम कहीने श्रीजिमहाराज सर्वे हरिभक्तने जय स्वामिनारायण कहीने हसता थका पोताने उतारे पधार्या, एवी रीते श्रीजिमहाराजनी वार्ता सांभळिने सर्वे साधु तथा सर्वे हरिभक्त ते श्रीजिमहाराजने सर्वे अवतारना कारण अवतारी जाणीने दिव्यभावनी अतिशय दृढता करता हवा । इति वचनामृतम् ॥ १८ ॥ १२६ ॥

[illegible]

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

श्रीपंचाळा-वचनामृतम् ।

संवत् १८७७ ना फागण शुदी ४ चोथने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीपंचाळामध्ये झीणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलियो ढळाविने विराजमान हता ने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो तथा धोळो अंगरखो पहेर्यो हतो तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी पछेडी ओढी हती अने माथाना फेंटानो पेच जमणी कोरे छुटो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समयमां संध्या आरती थइ रहि तेकेडे श्रीजिमहाराज तकिया उपर विराजमान थइने बोल्या जे अमे आ सर्वे मोटा परमहंस तथा मोटा हरिभक्तने प्रश्न पुछीए छीए जे "भगवानमां हेत होय तथा धर्ममां निष्ठा होय तोपण जो विचारने न पाम्यो होय तो अति सारा जे शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पंच विषय ते जेते अतिशय भूंडा जे शब्दादिक पंच विषय ते सरखा थाय नहि अथवा तेथी अतिशय उतरतापण थाय नहि, माटे कया विचारने पामे त्यारे अति सारा जे पंच विषय ते अतिशय भूंडा जे पंच विषय ते सरखा थइ जाय अथवा ते करतांपण अतिशय भुंडा थइ जाय?" ए प्रश्न सर्वे मोटेरा परमहंसने तथा सर्वे मोटेरा हरिभक्तने अमे पुछीए छीए, ते जेणे जेवे विचारे करीने ए सारा पंच विषयने भूंडा पंच विषय जेवा जाण्या होय अथवा भुंडाथीपण अतिशय भुंडा जाण्या होय ते जे पोतपोतानो विचार ते कहो? पछी

ते सर्व परमहंसे तथा सर्व हरिभक्ते पोतपोतानो विचार कही देखाड्यो, त्यार पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे तमारो सर्वेनो तो ए विचार सांभळ्यो पण हवे अमे जे विचार कर्योछे ते कहीए छीए, जेम कोइकनो कागळ परदेशथी आव्यो होय तेने वांचिने ते कागळना लखनाराना जेवी बुद्धि होय तेवी जणाइ आवेछे तथा जेम पांच पांडव, द्रौपदी, कुंताजी तथा रुक्मिणी, सत्यभामा, जांबवती आदिक भगवाननी पटराणीयो तथा सांब जे भगवाननो पुत्र इत्यादिक भक्तनां रूप तथा वचन ते शास्त्रमां लख्यां छे ते शास्त्रने श्रवणेकरीने तेमना रूपनुं प्रमाण ते दर्शन जेवुंज थायछे तथा तेमना वचनेकरीने तेमनी बुद्धिनुं प्रमाण थायछे, तेम पुराण भारतादिक ग्रंथेकरीने एम सांभळ्यामां आवेछे जे 'भगवान् जेते आ जगतनी जे उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय तेना कर्ता छे ने सदा साकार छे अने जो साकार न होय तो तेनेविषे कर्तापणुं कहेवाय नहि. अने जे अक्षरब्रह्म छे तेतो ए भगवानने रहेवानुं धाम छे एवा दिव्यमूर्ति प्रकाशमय ने सुखरूप जे भगवान् ते जेते प्रलयकाळे मायामां कारण शरीर सहित लीन हता जे जीव; तेमने उत्पत्तिकाळे बुद्धि, इंद्रियो, मन अने प्राणने आपेछे, ते शाने अर्थे आपेछे तो उत्तम, मध्यम अने कनिष्ठ जे विषय तेना भोगने अर्थे ने मोक्षने अर्थे आपेछे अने ए जीवोने अर्थे भोग ने भोगनां स्थानक ते भगवाने रच्यां छे; तेमां जे उत्तम पंच विषय कर्याछे ते भूंडा पंच विषयना दुःखनी निवृत्तिने अर्थे कर्याछे, जेम कोइक भारे शाहुकार होय ते रस्ताने बेय कोरे छायाने अर्थे झाड रोपावेछे तथा पाणीनी परब बंधावेछे तथा सदाव्रत करावेछे तथा धर्मशाळा करावेछे ते गरीब सारु करावेछे, तेम ब्रह्मा, शिव अने इंद्रादिक देव छे,तेतो ए भगवाननी आगळ जेवा सडताळाना

रांक होय ने पींपरनी टेटी चाफीने खाता होय ते जेवा गरीव छे, ते ब्रह्मादिक देव मनुष्यना सुखने अर्थे उत्तम एवा पंच विषय ते भगवाने रच्याछे अने जेम शाहुकारे सदाव्रत धर्मशाळादिकमां सुख जेवां रांकने अर्थे रच्यांछे ते करतां ते शाहुकारना घरमां सुख ते अतिशय उत्तम हशे एम जणायछे, तेम ए भगवाने ब्रह्मादिकने अर्थे एवां सुख रच्यांछे तो पोताना धाममांतो एकरतां अति उत्तम सुख हशे एम बुद्धिवाळो होय तेने जाण्यामां आवेछे, माटे ए भगवानना धामना सुखनुं अतिशयपणुं बुद्धिवानने जाण्यामां आवेछे तेणे करीने साराविषय ते भुंडा थइ जायछे. अने संसारमां जे पशु, मनुष्य, देवता, भूत इत्यादिक ज्यांज्यां पंच विषय संबन्धी सुख जणायछे ते धर्मे सहित जे किंचित् भगवाननो संबन्ध तेणेकरीने छे पण पंडे भगवानमां जेवुं सुख छे तेवुं कोइनेविषे नथी, जेम आ मशाल बळेछे ते मशालने समीपे जेवो प्रकाश छे तेवो थोडेक छेटे नथी अने तेथी घणे छेटे तो मुळगो नथी, तेम बीजे ठेकाणेतो किंचित् सुख छे अने संपूर्ण सुखतो भगवानना समीपमां रह्युंछे. अने जेटलुं भगवानथी छेटे थवायछे तेटला सुखमां न्यूनता थायछे, माटे जे मुमुक्षु होय ते पोताना हृदयमां एम विचारे जे 'जेटलुं मारे भगवानथी छेटुं थशे तेटलुं दुःख थशे अने महादुःखीयो थइश अने थोडेक भगवानने संबन्धे करीने एवुं सुख थायछे माटे मारे भगवाननो संबन्ध अतिशय राखवो छे अने हुं अति संबन्ध राखीश तो मारे उत्कृष्ट सुखनी प्राप्ति थशे' एम विचारीने अने भगवानना सुखनो लोभ राखीने जेम भगवाननो संबन्ध अतिशय रहे तेम उपाय करे तेने बुद्धिवान् कहीए. अने पशुना सुखथी मनुष्यमां अधिक सुख छे ने ते करतां राजानुं सुख अधिक छे ने तेथी देवतानुं सुख अधिक

छे ने तेथी इंद्रनुं अधिक छे ने तेथी बृहस्पतिनुं ने तेथी ब्रह्मानुं ने तेथी वैकुंठलोकनुं ने तेथी गोलोकनुं सुख ते अधिक छे अने तेथी भगवानना अक्षरधामनुं सुख अति अधिक छे एवीं रीते भगवानना सुखने अतिशय जाणीने बिजां जेजे पंच विषयनां सुख तेनेविषे बुद्धिवानने तुच्छता थइ जायछे अने ते भगवानना सुख आगळ ब्रह्मादिकनुं सुखतो जेवुं भारे गृहस्थने बारणे कोइक रांक ठींकरुं लइने मागवा आव्यो होय तेना जेवुं छे. अने ए भगवानना धामना सुखनो ज्यारे विचार करीए छीए त्यारे सर्व जे बीजां सुख तेथी उदास थइने मनमां एम थायछे जे 'आ देह मुकीने ए सुखने क्यारे पामीए' अने स्वाभाविकपणे पंच विषयनुं ग्रहण करता होइए तेमांतो कांइ झाझो विचार थतो नथी पण जो ते विषयमां कांइक सारप्य मनायछे त्यारे तुरत ए भगवानना सुखमां दृष्टि पुगी जायछे अने मन अति उदासी थइ जायछे. अने आ जे सर्वे वात छे ते जे बुद्धिवाळो होय तेने जाण्यामां आवेछे माटे बुद्धिवाळा उपर अमारे हेत छे, केमजे अमे बुद्धिवाळा छीए तो एवी रीते अमारी दृष्टि पुगेछे माटे बुद्धिवाळो जे होय तेनीपण दृष्टि पुगे खरी. अने आवी रीते अमारो विचार ते तमारा सर्वेना विचार करतां अमने अधिक जणायोछे ते सारु आ अमारा विचारने अतिदृढपणे करीने हइयामां सौ राखज्यो. अने आ विचार विनातो जो रमणीय पंच विषयमां वृत्ति चोटी होय तेने अतिबळे करीने उखाडे त्यारे मांडमांड उखडे अने जो आ विचारने पाम्यो होय तो ते वृत्तिने खेंच्यामां लेशमात्र प्रयास पडे नहि सहजेज विषयनी तुच्छता जणाइ जायछे अने आ जे वार्ता छे ते जेने झाझी बुद्धि होय ने झाझा सुखना लोभने इच्छे तेने समझायछे, जेम कोडी करतां पैसामां वधु माल छे ने तेथी रुपीयामां

वधु माल छे ने तेथी सोनामहोरमां वधु माल छे ने तेथी चिंतामणिमां वधु माल छे, तेम ज्यांज्यां पंच विषयनुं सुख छे तेथी भगवानना धाममां भगवाननुं सुख अति अधिक छे; माटे जे बुद्धिवाळो होय ने जेनी दृष्टि पुगे तेने आ विचार हृदयमां ठरेछे. अने आ विचार जेना हृदयमां दृढ ठर्यो होय ने ते वनमां बेठो होय तो पोताने एम जाणे जे 'हुं अनंत माणस तथा राज्य समृद्धिए विटाणो छुं' एम समझे पण दुःखियो न माने. अने इंद्रना लोकमां होय तो जाणे जे 'वनमां बेठो छुं' पण ते इंद्रना लोकना सुखे करीने सुखीयो न माने ते सुखने तुच्छ जाणे; ते सारु आ विचारने राखीने एम सर्वे निश्चय राखज्यो जे 'हवेतो भगवानना धाममांज ठेठ पुगवुंछे पण वचमां कोइ ठेकाणे तुच्छ जे पंच विषय संबन्धी सुख तेमां लोभावुं नथी' एवी रीते सौ दृढ निश्चय राखज्यो अने आतो जे अमारो सिद्धांत छे ते तमने सर्वेने कह्योछे माटे दृढ करीने राखज्यो। इति वचनामृतम् ॥ १ ॥ १२७ ॥

संवत् १८७७ ना फागण शुदी ७ सातमने दिवस गाम श्रीपंचाळामध्ये झीणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलियो ढाळ्यो हतो ते उपर श्रीजिमहाराज विराजमान हता अने धोळो फेंटो मस्तक उपर बांध्यो हतो तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळि पछेडी ओढी हती अने परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने श्रीजिमहाराजना मुखारविंद आगळ बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मोक्षधर्मनुं पुस्तक मंगावो तो सांख्यना अध्यायनी तथा योगना अध्यायनी कथा कराविए, ए वचनने सांभळीने[1] पुस्तक मंगाव्युं, पछी नित्यानंदस्वामिए कथा कर-

१ शुकानंदमुनिपासे ।

वानो आरंभ कर्यो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, योगवाळा छे ते पचविशमा जीव ईश्वरने कहेछे अने छविशमा परमात्माने कहेछे अने सांख्यवाळा छे ते चोविश तत्त्वने अवांतर जीव ईश्वरने कहीने पचविशमा परमात्माने कहेछे, तेमां जे योगवाळा छे तेनो एम मत छे जे, सुझे एवो आत्मा अनात्मानो विचार करो साधन करो पण प्रत्यक्ष भगवानना आश्रय विना मोक्ष न थाय. अने सांख्यवाळानो एम मत छे जे, सर्वे देव मनुष्यादिकनी जे गतियो तेने जाणीने अने विषयनेविषे वैराग्यने पामीने त्रण देहथकी पर एवो जे आत्मा तेने जाणे त्यारे मुक्त थाय. अने ए बे प्रकारना जे मत छे तेने पोतपोताना मतमां जे दूषण छे तेना निवारणने अर्थे युक्तिनुं ग्रहण करवुं; तेमां योगमतमां ए दूषण छे जे, जीवने पचविशमो कह्यो तथा ईश्वरने पचविशमा कह्या अने जीवनो चोविश तत्त्वनो देह कह्यो ने ईश्वरनोपण चोविश तत्त्वनो देह कह्यो; माटे ए बेयनेविषे तुल्य भाव आवि जाय जे स्थूळ ने विराट् ते तुल्य छे तथा सूक्ष्म ने सूत्रात्मा ते तुल्य छे अने कारण ने अव्याकृत ते तुल्य छे तथा जाग्रत् ने स्थिति अवस्था ते तुल्य छे तथा स्वप्न ने उत्पत्ति अवस्था ते तुल्य छे तथा सुषुप्ति ने प्रलय अवस्था ते तुल्य छे अने विश्व, तैजस अने प्राज्ञ ने विष्णु ब्रह्मा अने शिव ते तुल्य छे एम समझीने छविशमाने भजेछे, एवी रीते जीव ईश्वरनेविषे जे तुल्यभावरूप दोष छे तेने टाळवाने अर्थे कोइक मोटा पासेथी युक्ति शिखवी जे 'ईश्वरना देहमां जे पंच भूत रह्यां छे तेनी महाभूत एवी संज्ञा छे ने ते भूत सर्व जीवना देहोने धारी रह्यां छे अने जीवना देहमां जे पंच भूत छे ते अल्प छे ने बीजाने धारवाने समर्थ नथी अने जीव

१ काळथी अन्यथा थवारूप अवस्थाओ।

छे ते अल्पज्ञ छे ने ईश्वर छे ते सर्वज्ञ छे' एवी रीते युक्ति शिखिने जीव ईश्वरनेविषे समपणुं न समझवुं. अने जो एवी युक्ति न शिख्यो होय ने कोइ प्रतिवादी प्रश्न पुछे तो तेनो उत्तर करवो कठण पडे ने समझण चुंथइ जाय. अने कोइक प्रश्न करे तेतो जीव ईश्वरनेविषे समपणुं रहेवा दे नहि, माटे जीव ईश्वरनेविषे समपणुं न आवे एवी रीतनी युक्ति शिखवी अने एवी रीतनां जे वचन तेने सांभळवां. अने सांख्यवाळाने ए दूषण छे जे, चोविश तत्त्व कह्यांछे ने पचविशमा परमात्मा कह्याछे ने ते चोविश तत्त्वने मिथ्या कह्यांछे ने परमात्माने सत्य कह्याछे त्यारे ते परमात्माने पामेछे कोण? केमजे पामनारा जीवने तत्त्वथी भिन्न कह्यो नथी, माटे ए जे दूषण छे तेने टाळवाने अर्थे मोटा थकी एम युक्ति शिखवी जे 'ए चोविश तत्त्व कह्यां ते जीव विना होय नहि माटे ए तत्त्व भेळाज जीव ईश्वरने कह्याछे ते जीव ईश्वर ए तत्त्व थकी पृथक् छे ने परमात्माने पामेछे' एवी रीतनी युक्ति शिखवी अने आ युक्ति न शिखि होय ने कोइ प्रतिपक्षी प्रश्न पुछे तो संशय थाय जे 'तत्त्वतो मिथ्या छे त्यारे ते परमात्माने पाम्याने अर्थे ब्रह्मचर्यादिक धर्म कह्याछे तथा श्रवण, मनन, निदिध्यासादिक साधन कह्यांछे ते शाने अर्थे कह्यांछे?' माटे तत्त्वना तदात्मकपणाने[1] पाम्या जे जीव ईश्वर तेने तत्त्वरूपे[2] करीने कह्याछे पण ए तत्त्वथकी अति विलक्षण छे ते परमात्माने पामेछे' इत्यादिक जे युक्तियो तेने मोटा संतथकी सांख्यवाळाने शिखवी. अने योगवाळा जे छे ते 'प्रत्यक्ष मूर्ति एवा जे मत्स्य, कच्छ, वराह, नृसिंह, वामन, राम, कृष्णादिक भगवानना अवतार तेने ध्याने करीने मोक्ष थाय' एवी युक्तिनुं ग्रहण

१ लोढाना गोळामा अग्निनीपेठे एकपणाने । २ तत्त्वोना प्रकाशकपणे करीने ।

करेछे. अने जे सांख्यवाळा छे ते जेते "यतो वाचो निवर्तंते अप्राप्य मनसा सह" इत्यादिक श्रुतिशास्त्रे करीने कह्युं जे भगवाननुं स्वरूप तेने अनुभवे करीने यथार्थ जाणे त्यारे मोक्ष थाय' एवी युक्तिनुं ग्रहण करेछे अने ए बेय मत छे ते सारा छे ने मोटाए मान्या छे अने ए बेयनुं यथार्थ जो आचरण जे करे तो ते परम गतिने पामेछे. अने ए बे मत छे तेमां साधन सरखां कह्यां छे पण उपासनानी जे रीत ते सरखी नथी घणी पृथक् छे.

एवी रीते वार्ता करीने श्रीजिमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे हवेतो कीर्तन गाओ, पछी मुक्तानंदस्वामी आदिक जे परमहंस ते वाजित्र लइने कीर्तन गावा लाग्या, ते पछी वळी श्रीजिमहाराज बोल्या जे हवे कीर्तन राखो अने ए सांख्य ने योग ए बेयनो सिद्धांत तमे कीर्तन गायां त्यांसुधी अमे विचार्योछे ते कहीए ते सांभळो, जे योगवाळो छे तेने आत्यंतिक प्रलयनेविषे जे अक्षरधाममां तेजोमय एवी दिव्यरूप भगवाननी मूर्ति रहीछे ते ध्यान करवा योग्य छे अने तेथी ओरी प्रकृतिपुरुषरूप भगवान् ध्यान करवा योग्य छे अने तेथी ओरा प्रकृतिपुरुषनां कार्य जे चोविश तत्त्व तेरूप भगवान् ध्यान करवा योग्य छे अने तेथी ओरा हिरण्यगर्भ ने तेथी ओरा चोविश तत्त्वथी उपज्यो जे विराट् ते ध्यान करवा योग्य छे अने तेथी ओरा ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा पृथ्वीनेविषे जे मत्स्य, कूर्म, नृसिंह, वराहादिक भगवानना अवतार तथा शालग्रामादिक प्रतिमाओ ए सर्वे ध्यान

---

१ अर्थः—मने सहित वाणी जे परमात्माने नहि पामीने पाछी वळेछे अर्थात् परमात्मा मनवाणीने अगोचर छे। २ पाशुपतादिक मतनी अपेक्षाए। ३ व्यासादिक मुनिओए। ४ अर्वाचीन। ५ केमके तेमां भगवान् पुरुषोत्तमनो अन्वय छे।

करवा योग्य छे एवुं योगवाळानुं तात्पर्य जणाणुं. पछी सांख्यनो विचार उपज्यो त्यारे तेणे ए आकारमात्रनुं निराकरण करी नाख्युं अने एम जणाणुं जे 'ए सर्वना विचारनो करतल जे जीव छे ते जेवो शुद्ध कोइ नथी माटे जीवनुं ध्यान करवुं ए ठीक छे' एवो जे सांख्यनो विचार तेने टाळवाने अर्थे वळी योगनो विचार थयो जे, ए परात्पर एवा जे पुरुषोत्तम भगवान् तेनुं ए प्रकृति पुरुषादिक सर्वेनेविषे अन्वयपणुं छे माटे ए सर्वे भगवानज छे ने दिव्यरूप छे ने सत्य छे ने ध्येय छे. अने ए वातने दृढ करवाने अर्थे श्रुति छे जे "सर्वं[1] खल्विदं ब्रह्म" "नेह[2] नानास्ति किञ्चन" तथा "इदं[3] हि विश्वं भगवानिवेतरो यतो जगत्स्थाननिरोधसंभवाः" एवी रीतनो योगमार्ग छे तेनेविषे प्रवर्त्यो जे मुमुक्षु तेने कोइ विघ्न नथी, शामाटे जे ए मार्ग स्थूळ छे ने एनेविषे प्रत्यक्षमूर्ति भगवाननुं आलंबन छे ते सारु जेवो तेवो होय तेपण ए मार्गे करीने निर्विघ्नथको मोक्षने पामेछे. पण ए मार्गमां एक दोष छे जे ए सर्वथी पर जे पुरुषोत्तम भगवान् तेने अने प्रकृतिपुरुषादिकने अंश अंशिभाव आवी जायछे जे 'भगवानना अंश प्रकृतिपुरुष छे अने तेना अंश हिरण्यगर्भ विराटादिक छे' एवी रीते समझाय तो मोटो दोष आवे, कांजे भगवान् अच्युत छे निरंश छे निर्विकार छे अक्षर छे अखंड छे तेनेविषे च्युतभाव आवेछे ने अंश

---

१ अर्थ —आ सर्व जगत् ब्रह्म-ब्रह्मात्मक छे। २ अर्थ.—आ जगतमां काइपण नाना (भिन्न भिन्न) नथी सर्व जगत् ब्रह्मात्मक छे। ३ अर्थ—आ समग्र विश्व भगवान् रूप छे, भगवान् स्वरूप स्वभावथी विश्वथी विलक्षण छे जे भगवान् थकी जगतनी उत्पत्ति स्थिति प्रलय थायछे. अर्थात् भगवान् थकी जगतनी उत्पत्त्यादिक थायछे माटे जगत् भगवान् छे एम कहेवाय छे. वस्तुताए भगवान् विश्वथी विलक्षण छे।

अंशिभाव आवेछे; माटे एवो दोष आववा देवो नहि. अने एम समझवुं जे 'ए भगवान् जेवातो भगवानज छे ने बीजा जे प्रकृति पुरुषादिक छे तेतो एना भक्त छे अने एनुं ध्यान करेछे माटे ए भगवानरूप छे, जेम कोइ मोटा संत होय ने ते भगवाननुं ध्यान करता होय ने तेने भगवानरूप जाणेछे, तेम ए प्रकृति पुरुषादिक पण भगवानरूप छे. अने ए सर्वथी पर जे पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण तेज वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्धरूपे थायछे तथा रामकृष्णादिक अवतारनुं ग्रहण करेछे ते ध्यान करवा योग्य छे,' एम समझे तो ए योगमार्ग ते अतिशय निर्विघ्न छे ने श्रेष्ठ छे. अने सांख्यवाळा छे तेमां ए दोष छे जे ए सांख्यवाळा होय ते एम कहेछे जे 'अंतःकरणे करीने तथा इंद्रिये करीने जेजे ग्रहण कर्यामां आवेछे ते सर्व मिथ्या छे अने अनुभवे करीने जे ग्रहण कर्यामां आवेछे ते सत्य छे' एवी रीते आकारमात्रने मिथ्या करेछे ते मेळे जीवना कल्याणने अर्थे प्रकट थया जे भगवान् तेना रूपनेपण मिथ्या करेछे तथा अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, संकर्षण एमना रूपनेपण मिथ्या करेछे अने निर्गुण एवा जे वासुदेव तेनुंज ग्रहण करेछे एवो ए मोटो दोष छे, माटे ए सांख्यवाळा एम समझे तो ठीक जे 'सांख्य विचारनुं ग्रहण करीने प्रकृतिपुरुषथी जेजे उपज्युं तेने मिथ्या करीने पोताना आत्माने सर्वथी पृथक् शुद्ध ब्रह्मरूप मानिने ते पछी जीवना कल्याणने अर्थे प्रकट थया जे भगवान् तेना रूपने सत्य जाणिने तेनुं ध्यान करवुं' एवी रीते ए बे प्रकारना जे विचार छे ते कोइक अमारा जेवा मोटा पासेथी शिखे त्यारे आवडे नहि तो शास्त्रने भणे सांभळेपण आवडे नहि. अने छेतो एम जे 'प्रथम सांख्य विचारे करीने जे ब्रह्मरूप थयो होय तेनेअर्थे योगनो उपदेश छे, ते कह्युंछे जे "[1]ब्रह्मभूतः

[1] लोयाना ७ वचनामृतनी टीपणीमा आ श्लोकनो अर्थ कर्यो छे ।

प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति। समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्॥" तथा "आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रंथा अप्युरुक्रमे। कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थंभूतगुणो हरिः। परिनिष्ठितोऽपि नैर्गुण्ये उत्तमश्लोकलीलया। गृहीतचेता राजर्षे आख्यानं यदधीतवान्॥" एवी रीते सांख्यवाळाने योगनी अपेक्षा छे; कांजे ए सांख्यवाळो विचारे करीने पोताना आत्माथी व्यतिरिक्त जेजे कांइ पंच इंद्रियो ने चार अंतःकरणे करीने भोगववामां आवे एवा विषयभोगछे तेने अतिशय तुच्छ जाणेछे माटे ए कोइ पदार्थनेविषे आश्चर्य पामे नहि तथा बंधाय नहि. अने एनी पासे कोइ आवीने एम कहे जे 'आ पदार्थतो बहुज रुडुं छे' त्यारे तेने एम विचारे जे 'गमे तेवुं सारुं हशे पण इंद्रियो अंतःकरणे करीने ग्रहण कर्यामां आवे एवुं हशे ने इंद्रियो अंतःकरणना ग्रहणमां जे आवे तेतो असत्य छे नाशवंत छे' एवी ए सांख्यवाळाने दृढ समझण रहेछे अने पोताना आत्माने शुद्ध जाणेछे एवो जे सांख्यवाळो तेने योगमार्गे करीने भगवाननी जे उपासना ध्यान भक्ति ते करवां अने एम न करे तो एनेविषे अति न्यूनता कहेवायछे, एवी रीते सांख्यशास्त्र तथा योगशास्त्र तेनो जे सनातन सिद्धांत छे ते अमे यथार्थ विचारिने कह्योछे. अने जे आधुनिक योगवाळा ने सांख्यवाळा छे तेमणेतो ए बेय मार्गने बगाडी नाख्याछे. जे योगवाळा छे ते

१ अर्थ —आत्माराम अने रागद्वेषादिरूप ग्रन्थिए रहित एवापण मुनिओ भगवाननी फळानुसन्धाने रहित–निष्काम एवी भक्ति करेछे, तेवापण मुनिओ भक्ति करे एवा भगवानमां कारुण्य सौशील्य वात्सल्यादिक गुणो रह्या छे। २ अर्थ —हे राजर्षे! सत्त्वादिगुणना कार्यभूत त्रण देहथी विलक्षण आत्मस्वरूपमां सम्यक् निष्ठाने पामेलो एवोपण हु (शुक) उत्तमश्लोक भगवाननी लीलाथी आकर्षित चित्तवाळो थइने श्रीमद्भागवत पुराणरूप जे आख्यान तेने भणतो हवो।

आकारनुं स्थापन करवा जायछे त्यारे बीजा जीवना आकार तथा ब्रह्मा विष्णु शिवना आकार तथा राम कृष्णादिक अवतारना आकार ते सर्वेने तुल्यपणे जाणेछे अने सांख्यवाळा छे ते आकारनुं खंडन करेछे ते भेळे तीर्थ, व्रत, प्रतिमा, यम, नियम, ब्रह्मचर्यादिक धर्म, ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा राम कृष्णादिक अवतार ए सर्वेनुं खंडन करेछे, माटे आधुनिक जे सांख्यवाळा ने योगवाळा ते बेय मार्गने मुकीने कुमार्गे चाल्या छे ते नारकी थायछे । इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ १२८ ॥

संवत् १८७७ ना फागण शुदी ८ अष्टमीने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीपंचाळामध्ये झीणाभाइना दरबारमां ढोलिया उपर विराजमान हता अने धोळो फेंटो माथे बांध्यो हतो तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी पछेडी ओढी हती अने पोतानां मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सर्वे परमहंस मांहोमांही प्रश्न उत्तर करो, त्यारे मुनिबावे ब्रह्मानंदस्वामिने प्रश्न पुछ्यो जे "आवो सत्संगनो ने भगवाननो योग मळ्योछे ने बीजा विकार सर्वे टळि गया छे तथा सत्संगनो खप छे तोपण मान ईर्ष्या केम रही जायछे?" पछी एनो उत्तर ब्रह्मानन्दस्वामीए करवा मांड्यो पण थयो नहि. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एवो जे छे तेमां बुद्धि नथी अने जे बुद्धिवाळो छे तेतो पोतामां जेटला अवगुण होय तेने जाणे तथा जेटला गुण होय तेने पण जाणे अने बीजामां जे गुण तथा अवगुण होय तेनेपण जाणे. अने जे बुद्धिवाळो न होय तेतो पोतामां गुणज जाणे पण अवगुण होय तेनेतो जाणे नहि अने पोताने सन-

१ मान ईर्ष्यावाळो ।

कादिक जेवो मोटो जाणे ने बीजा मोटा होय तेनेपण पोताथी उतरता जाणे. अने जे बुद्धिवाळो होय ते पोताना अवगुणने जाणतो होय जे 'मारामां आटलो अवगुण छे' पछी तेनी उपर चाड राखीने ते अवगुणने टाळी नाखे तथा ते अवगुणने टाळवानी बीजा संत वार्ता करता होय तेने हितकारी माने माटे एमां मान ईर्ष्यादिक कोइ अवगुण रहे नहि अने कोइकमां मोटी बुद्धि जणाती होय ने ते जो पोताना अवगुणने न विचारतो होय तो तेनी व्यवहारिक बुद्धि जाणवी अने ते बुद्धि उपरथी तो बहु चोजाळी जणाय पण एने बुद्धिवाळो न कहेवाय तेनेतो अतिमूर्ख जाणवो ने एनी ए बुद्धि पोताना मोक्षना काममां आवे नहि अने थोडीक बुद्धि होय ने जो पोतामां अवगुण होय तेने जाणीने तेने टाळ्यानो उपाय करे तो एनी थोडी बुद्धिपण मोक्षने उपयोगी थायछे अने एनेज बुद्धिवाळो कहीए अने जे पोतामां तो कोइ वारे अवगुण परठे नहि ने गुणज परठे तेने मूर्ख कहीए अने पोतामां अवगुण परठे तेने बुद्धिवाळो कहीए.

पछी श्रीजिमहाराजे आज्ञा करी जे कीर्तन गाओ, पछी "सखि आज मोहन दिठारे सेरिये आवतारे" ए कीर्तन परमहंस गावा लाग्या, त्यारे वळी श्रीजिमहाराज बोल्या जे हवे कीर्तन राखो,अने आ कीर्तन गायां तेमां हेत बहु छे ते हेतनो अमे विचार कर्यो जे, हेत मोटी वात छे अने हेते करीने भगवानने भजवा ए ठीक छे. पण सारिपेठे विचारीने जोयुं त्यारे एम जणाणुं जे "हेत छे तेज भगवाननी माया छे' केमजे स्त्रीयो परस्पर बोलती होय जोती होय स्पर्श करती होय तेमां बीजी रीतनुं हेत छे अने पुरुष होय ने परस्पर बोले जुवे स्पर्श करे तेमां-

१ भगवान् सीवाय बीजामां जे।

पण बीजी रीतनुं हेत छे. अने पुरुष जेते स्त्रीने जोतो होय ने आलिंगन करतो होय तेनी वार्ता सांभळतो होय तेनो सुगंध लेतो होय ने तेनी वार्ता करतो होय तेनेविषे जेवुं हेत थायछे ने ते स्त्रीमां पुरुषनुं मन आकर्षण थइ जायछे तेवुं पुरुषने पुरुषमां नथी थतुं तथा स्त्री होय ने पुरुषने जोती होय आलिंगन करती होय इत्यादिक पुरुषना संबन्धे करीने स्त्रीने हेत जेवुं पुरुषमां थायछे ने तेनुं मन पुरुषमां समग्रपणे खेंचाइ जायछे तेवुं स्त्रीने स्त्रीमां नथी थतुं, माटे जेथकी जगतनो प्रवाह छे ने जे जीवने संसृति ने बंधननी करनारी छे एवी जे भगवाननी माया तेज हेतरूपे छे. पछी एम विचार थयो जे 'शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए जे पंच विषय छे ते बीजे ठेकाणेथी मिथ्या करीने एक भगवानमांज आत्यंतिक सुख जाणीने जोड्या होय तेतो ठीक छे ते माया नथी' पछी वळी तेमांपण विचार थयो जे एपण ठीक नहि, कांजे भगवानना रूप करतां अधिक रूप, अधिक स्पर्श, अधिक रस, अधिक गंध, अधिक शब्द ते बीजानेविषे जणाय तो भगवानने मुकीने तेनेविषे हेत थइ जाय, जेमं सोळ हजार ने एकसो जे श्रीकृष्णभगवाननी स्त्रीयो हती ते जन्मांतरे अप्सराओ हती तेमणे ब्रह्मा पासे वर माग्यो जे 'हे महाराज! अमे देव दैत्य अने मनुष्य ए सर्वेनो स्पर्श कर्योछे पण जे नारायण पुरुष छे तेनो पतिभावे स्पर्श नथी कर्यो माटे एवी कृपा करो जे ए अमारा पति थाय' पछी ब्रह्माए कह्युं जे 'तमे तप करो तमारा पति नारायण थशे' त्यारे तेमणे घणुं तप कर्युं, पछी तेमनी उपर अष्टावक्र ऋषि तथा नारदमुनि तेपण प्रसन्न थया ने वर आप्यो जे 'तमारा पति नारायण थशे' एवी रीते जन्मांतरे

१ आ कथा हरिवंशमा छे ।

घणुंक तप करीने श्रीकृष्णभगवानने पामी हती पण जो भगवान् करतां सांबनेविषे अधिक रूप दीठुं तो तेमां मोह पामी, माटे जेनी एक मति रहेती न होय तेने पंच इंद्रियोना विषयना सुख संबन्धे करीने भगवानमां प्रीति करवी ते ठीक नहि अने जेनी मति एकनी एक निस्तर्कपणे रह्या करे तेनेतो ठीक छे. अने जेने बुद्धि होय तेने भगवानमां हेत केम करवुं तो, जे चोविश तत्त्व छे तेथकी पोताना जीवने पृथक् जाणवो ने ते जीवनेविषे खुंतीने रही जे पंच इंद्रियोनी वृत्तियो तेने उखाडी नाखीने इंद्रियोनी वृत्ति विना जिवसत्तापणे रह्याथका निर्गुणपणे करीने जेटलुं भगवानमां हेत थाय तेटलुं करवुं. ते निर्गुणपणुं ते शुं? जे दश इंद्रियो ते रजोगुणनी संपत्ति छे अने अंतःकरण ने देवता ते सत्त्वगुणनी संपत्ति छे अने पंच भूत ने पंच विषय ते तमोगुणनी संपत्ति छे ते ए त्रण गुणनी संपत्तियो ने त्रण गुण तेने पृथक् मानीने केवळ जीव सत्ताए करीने रहे तेने निर्गुण कहीए. एवो निर्गुण थइने भगवानमां हेत करवुं, ते कह्युंछे जे "नैर्गुण्यस्था रमन्ते स्म गुणानुकथने हरेः" तथा "परिनिष्ठितोऽपि नैर्गुण्ये उत्तमश्लोकलीलया। गृहीतचेता राजर्षे आख्यानं यदधीतवान्॥" अने एवी रीतना जे ज्ञानी छे ते क्षेत्र ने क्षेत्रज्ञना रूपने जाणीने पोते क्षेत्रज्ञरूपे थइने भगवानमां प्रीति करेछे, ते क्षेत्र ते शुं तो स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह तथा जाग्रत्, स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था ए सर्वे क्षेत्र छे ते क्षेत्रने पोताना आत्माथी पृथक् जाणेछे जे 'ए मारेविषे कोइ दिवस होय नहि हुंतो एनो जाणनारो छुं ने अतिशुद्ध छुं अरूप

१ अर्थ—गुणातीत ब्रह्मभावापन्न स्वात्मस्वरूपमा रहेला मुनियो पण भगवानना गुणानुवादमा रमेछे। २ पंचाळाना २ वचनामृतनी टीपणीमां अर्थ कर्यो छे।

छुं अलिंग छुं चेतन छुं अने ए क्षेत्रतो अति मलिन छे जड छे नाशवंत छे' एम दृढपणे समझीने ने ए सर्वथी वैराग्यने पामीने स्वधर्मे सहित जे भगवाननेविपे भक्ति करवी तेने एकांतिकी भक्ति कहीए अने एने ज्ञानी कहीए. अने ए जे ज्ञानी ते सर्वथी श्रेष्ठ छे, ते भगवाने कह्युं छे जे "तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते। प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं सच मम प्रियः ॥ उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ॥" एम समझीने इंद्रियो अंतःकरण विषय ए सर्वेनां जे मूळ ते जीवमांथी उखेडी नाखीने भगवाननेविषे हेत करवुं एज ठीक छे. अने ज्यांसुधी एनां मूळ उखाडी नाख्यां न होय त्यांसुधी ए इंद्रियो अंतःकरणे करीने भगवाननां दर्शन स्पर्शनादिक रूप जे काम ते लेवुं पण एने पोताना हेतु न मानवा; वैरी मानवा अने एनो गुण न लेवो जे 'ए भगवाननी भक्तिनेविपे उपकार करेछे' केमजे नेत्रे करीने भगवाननां दर्शन थायछे, श्रवणे करीने भगवाननी कथा संभळायछे, त्वचाए करीने भगवाननो स्पर्श थायछे, नासिकाए करीने भगवाननी माळा ने तुलसीनो सुगंध लेवायछे, मुखेकरीने भगवाननां कथा कीर्तन कहेवायछे तथा जिह्वाए करीने भगवाननी प्रसादिनो रस लेवायछे इत्यादिक भगवाननी भक्तिनेविपे उपयोगी छे एम समझीने

१ अर्थ –आर्तादि चार प्रकारना भक्तोने मध्ये ज्ञानीभक्त श्रेष्ठ छे, केमके ते मारेविपेज सर्वथा जोडाएलो छे अने एक मारेविपेज भक्तिवाळो छे, बीजा त्रण तेवा नथी, वळी ज्ञानिने एटलो बधो हुं प्रिय छुं के सर्वज्ञ सर्वशक्ति एवोपण हुं ते माराथी कही शकातुं नथी के आटलोज हुं ज्ञानिने प्रिय छुं, केमके प्रियत्वनो माप नथी, तेमज मने ज्ञानी एटलो बधो प्रिय छे के ते माराथी कही शकातुं नथी के आटलोज प्रिय छे ॥ आर्तादि त्रण प्रकारना भक्तो उदार (मोटा) छे. ज्ञानीतो मारो आत्माज छे एटले आत्मवत् प्रिय छे एम हुं मानुं छुं।

एनो गुण न लेवो ने एनो विश्वास न करवो एनेतो वैरीज जाणवां, कांजे शुं जाणीएं ए भगवाननां दर्शन स्पर्शनादिके करीने सुख मानता थका स्त्रीयादिकना दर्शन स्पर्शनादिके करीनेज सुख मनावी दे तो शुंइं थाय, माटे ए पंच इंद्रियोरूप शत्रुने केदमां राखीने भगवाननी भक्तिरूप काम लेवुं, जेम कोइ राजाए पोताना शत्रुने पकड्यो होय तेने वेडिमां बांधी राखीने काम करावे पण छुटो मेले नहि ने विश्वासपण करे नहि अने जो तेने छुटो मेले ने विश्वास करे तो ते राजाने ते वैरी निश्चय मारे, तेम जो इंद्रियोरूप वैरीनो विश्वास करे ने छुटा मुके ने केदमां न राखे तो एने निश्चय भगवानना मार्गथकी पाडी नाखेछे माटे एनो विश्वास न करवो. अने वळी जेम इंग्रेज कोइक गुनेगारने पकडेछे त्यारे तेने पांजरामां उभो राखीने पुछेछे पण छुटो मुकतो नथी ने तेनो विश्वास करतो नथी, तेम ए इंद्रियो अंतःकरणने पंच वर्तमानना नियमरूप जे पांजरुं तथा वेडि तेमां राखीने भगवाननी भक्ति करावत्री पण एनेविषे गुण न लेवो; शत्रुभावज राखवो अने जो एमने भक्तिमां उपयोगी मानीने हेतु माने ने एनो गुण ले तो भगवानना दर्शन स्पर्शनादिकनेविषे सुख मनावते थके जो स्त्रीयादिकनेविषे कांइक सुख मनावी दे तो एनुं कर्युं कराव्युं सर्वे व्यर्थ थइ जाय, जेम झाझो दारुनो ढगलो होय ने तेमां एक अग्निनो तणखो पड्यो होय तो ते दारु सर्वे भस्म थइ जायछे, तेम एनुं कांइ ठेकाणुं रहेतुं नथी माटे केवळ आत्मारूप थये थके जे भगवाननेविषे हेत थाय ते ठीक छे एम अमारो सिद्धांत छे अने एवी रीते जे भगवानमां हेत करेछे ते अमने गमेछे. अने एमपण विचार करवो जे 'भगवानमां जेवुं रूप छे तेवुं बीजे नथी अने जेवो भगवाननो स्पर्श छे तेवो बीजे नथी अने जेवो भगवानमां

सुगंध छे तेवो बीजे नथी अने भगवानना श्रवणमां जेवुं सुख छे तेवुं बीजे नथी अने जेवो भगवानमां रस छे तेवो बीजे नथी,' एम इंद्रियो अंतःकरणने लोभ देखाडीने बीजा विषयथी पाछां वाळवां एपण समझण ठीक छे.

त्यारे स्वयंप्रकाशानंदस्वामिए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज ! आ जे सर्वे विचार ते कया स्थानके रहीने करवो ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, पोताना हृदयनेविषे एम विचार करे जे 'स्थूळदेह सूक्ष्मदेह कारणदेह ए हुं नहि अने जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति ए त्रण अवस्था हुं नहि अने पंच ज्ञान इंद्रियो ने पंच कर्म इंद्रियो ने चार अंतःकरण ने एमना देवता ए सर्वे हुं नहि हुंतो ए सर्वेथी पृथक् छुं चैतन्य छुं ने भगवानने भक्त छुं' अने इंद्रियो अंतःकरण कांइक चाळा करे तो एने कहेवुं जे 'केम तारे ते एक भगवाननुंज रूप जोवुंछे के बीजानुंपण जोवुंछे ? ने केवळ भगवाननो शब्द सांभळवोछे तथा गंध लेवोछे के बीजानोपण शब्द सांभळवोछे ? ने गंध लेवोछे ? अने जो भगवान् विना बीजा विषयमां तुं जईश तो तारे मारे शुं छे भाइ ? तुं कोण ? ने हुं कोण ? तारे मारे लेवुं देवुं नथी तमे करशो ते तमे भोगवशो' एम इंद्रियो अंतःकरणने कहीने पछी भगवाननी प्रार्थना करवी जे 'हे महाराज ! हे स्वामिन् ! हे भक्तवत्सळ ! हे दयानिधे ! आ इंद्रियो अंतःकरणनो वांक छे ने हुंतो एथी नांखो छुं ने ए तो मारा शत्रु छे माटे एथकी मारी रक्षा करज्यो' एम निरंतर प्रार्थना कर्या करवी ने पोताने क्षेत्रज्ञ चैतन्यरूप मानीने भगवाननेविषे हेत–भक्ति करवी। इति वचनामृतम् ॥३॥१२९॥

संवत् १८७७ ना फागण वदी ३ त्रिजने दिवस श्रीजिमहाराज गाम श्रीपंचाळामध्ये झीणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलियो ढळा-

वीने विराजमान हता अने धोळो फेंटो मस्तक उपर बांध्यो हतो तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा झीणी धोळी पछेडी ओढी हती ने हस्तकमळनेविषे तुळसीनी माळा फेरवता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे सर्वे परमहंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो, त्यारे मुनिभावे ब्रह्मानंदस्वामिने प्रश्न पुछ्यो जे "प्रथमतो भगवाननो निश्चय होय ने भजन स्मरण करतो होय अने पछी भगवाननां मनुष्य चरित्र देखीने ते निश्चयमां संशय थइ जायछे तेनुं शुं कारण छे ?" पछी ए प्रश्ननो उत्तर ब्रह्मानंदस्वामी करवा लाग्या पण थयो नहि, त्यारे श्रीजिमहाराज झाझीवार सुधी विचारी रह्या ने पछी बोल्या जे ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए छीए जे, 'वेद, पुराण, महाभारत, स्मृतियो इत्यादिक जे शास्त्र तेनेविषे भगवाननुं सनातन अनादि दिव्य एवुं जे मूळरूप पोताना अक्षरधाममां रह्युं छे, ते कह्युं छे जे भगवान् केवा छे तो आ चक्षु इंद्रिये करीने दीठामां आवेछे जे यत्किंचित् रूप ते जेवुं तेमनुं रूप नथी अने श्रवणे करीने सांभळ्यामां आवेछे जे कांइ शब्दमात्र; ते जेवो ए भगवाननो शब्द नथी अने त्वचाए करीने स्पर्शमां आवेछे जे स्पर्श; ते जेवो एनो स्पर्श नथी अने नासिकाए करीने सुंघ्यामां आवेछे जे सुगंध; ते जेवो एनो सुगंध नथी अने जिह्वाए करीने वर्णन कर्यामां आवे एवापण ए भगवान् नथी अने मनना संकल्पमां आवे एवा

१ जे निश्चयमा सशय थायछे ते निश्चय अपक्व छे-दृढ नथी, एम जाणवुं, भगवाननुं दिव्य अने मानुष ए बे रूप छे तेना सम्यक् एकत्वज्ञानथी ते सशय निवृत्त थायछे।

नथी तथा चित्तना चिंतवनमां आवे एवा नथी तथा बुद्धिना निश्चयमां आवे एवा नथी तथा अहंकारे करीने अहंपणुं धराय एवा नथी जे 'ए भगवाननो हुं छुं ने ए मारा छे' एवी रीते इंद्रियो अंतःकरणने अगोचर ए भगवान् रह्या छे. अने ए भगवाननुं जेवुं रूप छे तेवुं आ ब्रह्मांडमां ब्रह्मादिक स्तंबपर्यंत कोइनुं रूप नथी जे जेनी एने उपमा दइए तथा एनो जेवो शब्द छे तेवो बीजो आ ब्रह्मांडमां कोइनो शब्द नथी जे जेनी एने उपमा दइए अने ए भगवाननो जेवो सुगंध छे तेवो आ ब्रह्मांडमां कोइनो सुगंध नथी जे जेनी एने उपमा दइए तथा ए भगवाननो जेवो स्पर्श छे तेवो आ ब्रह्मांडमां कोइनो स्पर्श नथी जे जेनी एने उपमा दइए तथा ए भगवानमां जेवो रस छे तेवो आ ब्रह्मांडमां कोइनो रस नथी जे जेनी एने उपमा दइए. अने ए भगवाननुं जेवुं धाम छे तेवुं स्थानक आ ब्रह्मांडमां कोइ नथी जे जेनी एने उपमा दइए ते सप्तद्वीप ने नव खंडमां जेजे स्थानक छे तथा मेरु उपर घणिक शोभाए युक्त ब्रह्मादिकनां स्थानक छे तथा लोकालोकाचळनेविषे घणांक स्थानक छे तथा इंद्र, वरुण, कुबेर, शिव, ब्रह्मा एनां जे स्थानक छे तथा बिजांपण घणांक स्थानक छे ए सर्वे मांहिलुं एवुं एके स्थानक नथी जे जेनी भगवानना धामने उपमा थाय. अने ए भगवानना धामनेविषे रह्या जे भगवानना भक्त तेने जेवुं सुख छे तेवुं आ ब्रह्मांडमां कोइ सुख छे नहि जेनी एने उपमा दइए. अने ए भगवाननो जेवो आकार छे तेवो आ ब्रह्मांडमां कोइनो आकार नथी जेनी एने उपमा दइए, केमजे आ ब्रह्मांडमां जेटला पुरुषप्रकृतिथकी उत्पन्न थया जे आकार ते सर्वे मायिक छे अने भगवान छे ते दिव्य[1] छे ने

१ अलौकिक ।

अमायिक छे माटे ए बेयनेविषे अतिशय विलक्षणपणुं छे ते सारु एने ने एने सादृश्यपणुं केम थाय? जेम मनुष्यने कहीए जे 'आ माणस भेंस जेवो छे सर्प जेवो छे चरकला जेवो छे गधेडा जेवो छे कुतरा जेवो छे कागडा जेवो छे हाथी जेवो छे' एवी उपमा मनुष्यने संभवे नहि, केमजे मनुष्यथकी ए बीजा जे सर्वे ते विजातीय छे अने मनुष्य मनुष्यमांपण अतिशय सादृश्यपणुं नथी जेनी उपमा एम दइए जे 'आ ते आ जेवोज छे,' अने जो ते ते जेवोज होय तो तेनी ओळखाण केम थाय? माटे मनुष्य मनुष्य सजाति छे तेनेविषे पण सादृश्यपणुं अत्यंत छे नहि, जुवोने आ भगो मुळो बे सरखा कहेवायछे पण झाझा दिवस भेगा रहीए तो ओळखाइ जाय जे 'आ भगो छे ने आ मुळो छे' माटे जो विलक्षणता न होय तो ओळखाय केम? माटे मनुष्य मनुष्यमांपण अति सादृश्यपणुं नथी तो मायिक अमायिकनेविषे सादृश्यपणुं केम आवे? जेनी उपमा भगवानने दइए तथा भगवानना धामने दइए, कांजे 'ए भगवान् छे ते इंद्रियो अंतःकरणने अगोचर छे' एम सर्व शास्त्रमां कह्युं छे ते ए भगवान् ज्यारे जीवने पोतानुं दर्शन देवाने न इच्छे त्यारे तो आवी रीते दिव्यरूप अगोचर थका पोताना अक्षर धामनेविषे रह्या छे अने ए भगवान् महाराजाधिराज छे ने दिव्यरूप एवी जे असंख्य समृद्धि तथा असंख्य पार्षद तेणे युक्त छे ने अनंतकोटि ब्रह्मांडना पति छे, जेम आ लोकमां कोइक मोटो चक्रवर्ती राजा होय तेनुं सूर्यना उदय अस्त सुधी राज्य होय अने तेज राजा पोताना तपने बळे करीने देवताना जेवा ऐश्वर्यने पाम्यो होय ने स्वर्ग मृत्यु अने पाताळ ए त्रिलोकीना राज्यने करतो होय, जेम अर्जुन हता ते एनेए देहे करीने स्वर्गनेविषे इंद्रासनने उपर

१ अने तेमनुं धाम।

केटलाक वर्षसुधी रह्या तथा नहुष राजापण इंद्र थयो हतो,एवो जे प्रतापी चक्रवर्ती राजा तेने घेर जेटलां गाम छे तेनी गणती थाय नहि एत्तो असंख्य छे तथा गाम गामना जे पटेल तेनीपण गणती थायनहि अने ते गाम गामना असंख्य पटेल ते एना दरबारमां अरज करवा आवता होय अने ते राजाना धन, माल, भोग, स्थानक, समृद्धि तेपण गणतीमां आवे नहि, तेम ए भगवान् असंख्य कोटि जे ब्रह्मांडरूप गाम तेना राजाधिराज छे अने ए ब्रह्मांडरूप जे गाम तेना मुख्य पटेल तो ब्रह्मा, विष्णु अने शिव छे, जेम एक गाममां एक पटेल मोटो होय तेने ते गामनी सर्व प्रजा ते आविने नमे ने आज्ञामां रहे ने ते पटेल राजाने नमे, तेम ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये ब्रह्मा, विष्णु, शिव छे ते मोटेरा छे ने बीजा जे ब्रह्मांडमां देव, दैत्य, मनुष्य, ऋषि, प्रजापति ते एने भजेछे ने आज्ञामां रहेछे ने ब्रह्मा, विष्णु, शिव ते भगवान् पुरुषोत्तमने भजेछे ने आज्ञामां वर्तेछे ते ए ब्रह्मांड ब्रह्मांडना जे ब्रह्मा विष्णु अने शिव ते भगवाननी प्रार्थना करेछे जे 'हे महाराज! कृपा करीने तमे अमारा ब्रह्मांडमां पधारो' जेम कोइ गामनो पटेल होय ते चक्रवर्ती राजा आगळ जइने प्रार्थना करे जे 'हे महाराज! हुं गरीब छुं ते तमे मारे घेर पधारो माराथी जेवी तमारी चाकरी बनी आवशे तेवी करीश' तेम ब्रह्मा विष्णु शिव ते ए भगवाननी प्रार्थना करेछे जे 'हे महाराज! तमे अमने दया करीने दर्शन द्यो ने अमारा ब्रह्मांडमां पधारो' त्यारे ए जे भगवान् ते ब्रह्मांडमां देहनुं धारण करेछे, ते ज्यां जेवुं कार्य त्यां तेवा देहनुं धारण करेछे ने तेवी रीतेज वर्तेछे. जो देवमां देह धारण करेछे तो देवना जेवीज चेष्टा करेछे तथा पशुना देहनुं धारण करेछे त्यारे ते पशुनी पेठेज वर्तेछे, जेम वराहरूप भगवाने धार्युं त्यारे सुंघीने पृथ्वीने खोळी काढी तथा हयग्रीवरूपे थया त्यारे

घोडानी पेठे फुंफाडा मारवा मांड्या तथा मत्स्य कच्छादिक जळजंतुनो देह धारण कर्या त्यारे जळमांज फर्या पण पृथ्वीमां न फर्या तथा नृसिंहरूपे थया त्यारे सिंहनी पेठेज वर्त्या पण मनुष्यना जेवी चेष्टा न करी अने ए भगवान् मनुष्यना देहने धारण करेछे त्यारे मनुष्यना जेवीज क्रिया करेछे ते ज्यारे सत्ययुग होय त्यारे मनुष्यने लाख वर्षनी आवरदा होय त्यारे ए भगवान्पण लाख वर्षज देह राखे अने ते सत्ययुगनां माणस मनोवांछित भोगने भोगवे त्यारे भगवान्पण तेमज भोगने भोगवे पण अधिकपणे न वर्ते अने त्रेतायुगमां देह धारण करे त्यारे माणसने दश हजार वर्षनी आवरदा होय त्यारे भगवानपण तेटलाज वर्ष देह राखे अने द्वापरयुगमां हजार वर्षनी आवरदा होय ने दश हजार हाथीनुं बळ माणसमां होयछे त्यारे भगवाननुं पण एटलुं बळ ने एटली आवरदा होयछे अने कळिमां देह धारण करे त्यारे कळि प्रमाणे आयुष्य ने बळ तेनुं भगवान् धारण करेछे. अने जेम बाळक गर्भमां आवे ने ते गर्भ वृद्धिने पामे पछी जन्मेछे ने बाळ, यौवन, वृद्ध अवस्था थायछे ने मृत्युने पामेछे, तेमज भगवानपण एवीज मनुष्यनी चेष्टा करेछे. अने जेम मनुष्यमां काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, मान, स्नेह, मद, मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष, राग, मोह, सुख, दुःख, भय, निर्भय, शूरता, कायरता, भूख, तरश, आशा, तृष्णा, निद्रा, पक्षपात, पारकुं, पोतानुं, त्याग, वैराग्य इत्यादिक स्वभाव छे, तेम तेवाज ए सर्वे स्वभाव मनुष्यदेहने भगवान् धारे त्यारे तेमां जणायछे, ते ए मनुष्य स्वरूपपण भगवाननुं सर्व शास्त्रमां वर्णन कर्युछे अने मूळ जे दिव्यरूप छे तेनुंपण वर्णन कर्युछे ते ए बेय रूपनुं जेणे यथार्थ श्रवण मनन करीने दृढ निश्चय कर्यो होय तेनेतो कोइ रीते संशय थाय नहि अने जेने आवी रीतनी सम-

ज्ञणमां कसर होय तेने भगवानमां संशय थायछे अने एज दिव्य-रूप एवा भगवान् मनुष्यना देहनुं धारण करेछे त्यारे मनुष्यना जेवा स्वभावे युक्त वर्तता होय पण जे बुद्धिवान् होय तेने एम जणाय खरुं जे 'एमां काम छे ते बीजा मनुष्यना जेवो नथी तथा क्रोध, लोभ, स्वाद, मान इत्यादिक मनुष्यना स्वभाव ते ए भगवा-नमां छे पण बीजा माणस जेवातो नथी' एमां कांइक दिव्यभाव छे ते बुद्धिवानना जाण्यामां आवेछे तेणे करीने भगवानपणानो निश्चय करेछे, जेम शंकराचार्ये शृंगार रसनी वार्ता जाण्याने अर्थे राजाना दे-हमां प्रवेश कर्यो हतो त्यारे ते राजाना जेवाज सर्वे शृंगारादिक भाव ने देहनी चेष्टा ते हती पण ते राजानी राणी बुद्धिवाळी हती तेणे एम जाण्युं जे 'मारा धणीमां आवो चमत्कार नहोतो माटे आ देहनेविषे कोइक बीजे जीवे प्रवेश कर्यो छे' तेम मनुष्यरूप एवा जे ते भगवान् तेनेविषे दिव्यभाव जणायछे तेणे करीने भगवानपणानो निश्चय थाय-छे. त्यारे तमे कहेशो जे 'कांइक दिव्यभाव जाण्यामां आव्यो तेणे-करीने मनुष्यने भगवानपणानो निश्चय थयो त्यारे घणो दिव्यभाव जणावे तोतो बहु माणसने निश्चय थाय' तो एनुंतो एम छे जे-आ सूर्य छे तेने सर्व शास्त्रमां कह्याछे जे 'ए नारायण छे' ने ते ए सूर्य सर्व मनुष्यने दृष्टिगोचरपण छे ने नित्य एनुं दर्शन मनुष्यमात्र करेछे तोपण एने दर्शने करीने मनुष्यने पोताना कल्याणनो निश्चय नथी थतो जे 'मारुं कल्याण थयुं' अने मनुष्यपणे रह्या जे रामकृष्णादिक अवतार तथा ना-रद शुकादिक संत तेनां दर्शन करीने मनुष्यने एम निश्चय थायछे जे 'मारुं कल्याण निश्चय थयुं ने हुं कृतार्थ थयो छुं' अने ते भगवान् ने संत

१ आ आख्यान शंकर दिग्विजयमा छे।

तेमांतो कांइ प्रकाश छे नहि दीवो करीए त्यारे तेनां दर्शन थायछे तोपण एवो कल्याणनो निश्चय थायछे. तथा अग्नि छे तेपण साक्षात् भगवान् छे, कांजे भगवाने कह्युं छे "अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः । प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥"[1] एवो जे अग्नि तेनांपण सर्वने दर्शन छे पण मनुष्यने कल्याणनो निश्चय थतो नथी. अने भगवानने ने संतने दर्शने करीने थायछे तेनुं शुं कारण छे जे 'मनुष्यने ने सूर्य अग्निने विजातिपणुं छे' माटे एने दर्शने करीने कल्याणनो निश्चय नथी थतो, कांजे ए अग्निनो स्पर्श करे तो बळी मरे. तथा सूर्य छे तेने कुंताजीए दुर्वासाना आपेला मंत्रे करीने तेड्या त्यारे ते सूर्य कुंताजी पासे आव्या ते मनुष्यरूपे जेवां कुंताजी हतां तेवाज सूर्य थइने आव्या त्यारे तेनां अंग संगनुं सुख आव्युं ने कर्णरूप गर्भ रह्यो पण जेवा सूर्य प्रकाशवान् छे तेवा प्रकाशे सहित आव्या होत तो कुंताजी बळी मरत ने स्पर्शनुं सुखपण न आवत. तथा सत्राजित यादव पासे सूर्य आवता तेपण माणस जेवा थइने आवता. अने ज्यारे ए सूर्य कुंताजी पासे तथा सत्राजित् पासे आव्या त्यारे शुं आकाशमां नहोता? आकाशमां पण हता ने बीजेरूपे एना एज सूर्य कुंताजी ने सत्राजित् पासे आव्या. अने जेवो सूर्यनो प्रकाश छे ते सर्वे एमां छे खरो पण तेनो संकोच करीने माणस जेवा थइने आव्याछे, तेम ए जे भगवान् छे ते पोते पोताना दिव्यभाव सहितज जीवने जो दर्शन आपे तो मनुष्यने ठीक न पडे अने एम जाणे जे 'आ ते शुं भूत हशे के शुं हशे?' माटे ए भगवान् पोताना ऐश्वर्यनो संकोच करीने मनुष्य जेवाज थइने दर्शन आपेछे अने पोते

१ अर्थ.–हुं वैश्वानर (जाठराग्नि) रूपे थइने सर्व प्राणिओना देहमां प्रवेश करीने प्राणिओए जमेला चार प्रकारना (भक्ष्य भोज्य लेह्य चूष्य) अन्नने प्राणापानवृत्तिना भेदे समायुक्त थइने पचावुं छुं ।

पोताना धाममांपण विराजमान छे त्यारे ते मनुष्यने दर्शनमां स्पर्शमां तथा नव प्रकारनी भक्ति कर्यामां आवेछे अने जो भगवान् मनुष्य जेवा न थाय ने दिव्यभावे वर्ते तो मनुष्यने पोतामां हेत थाय नहि ने सुवाण न पडे, शामाटे तो मनुष्य मनुष्यनेविषे हेत थायछे ने सुवाण थायछे पण पशुने ने मनुष्यने हेत सुवाण्य थती नथी अने पशु पशुने परस्पर हेत ने सुवाण्य थायछे, केमजे सजाति सजातिमां हेत थाय पण विजातिमां थाय नहि, तेम भगवान् पोताना दिव्यभावनो संकोच करीने पोताना भक्तने पोतामां हेत थाय ते सारु माणस जेवाज भगवान् थायछे पण दिव्यभाव जणावता नथी अने दिव्यभाव जणावे तो विजातिपणुं थाय माटे भक्तने पोतामां हेत ने सुवाण्य थाय नहि. ते सारु मनुष्यरूपे ए भगवान् थायछे त्यारे पोतानो दिव्यभाव छे तेने छुपावी राखवो ते उपरज पोतानी दृष्टि रहेछे अने छुपावते छुपावते कदाचित् पोते कोइक कार्यमां उतावळा थइ जायछे त्यारे दिव्यभाव जणाइ आवेछे अने क्यारेक पोते पोतानी इच्छाए करीनेपण पोताना कोइ भक्तने जणावेछे, जेमं श्रीकृष्णभगवान् भीष्मने मारवाने उतावळा थया त्यारे मनुष्यभाव भूली गया ने पोतामां दिव्यभाव आव्यो तेणे करीने पोताना भारने पृथ्वी सहन करवा समर्थ न थइ तथा अर्जुनने दिव्यभाव[1] देखाड्यो ते पोतानी इच्छाए देखाड्यो पण ते दिव्यभावे करीने अर्जुनने सुख न थयुं ने बहु व्याकुळ थइ गया पछी श्रीकृष्णभगवाने पोतानुं मनुष्यपणे दर्शन अर्जुनने आप्युं त्यारे अर्जुनने सुख थयुं, त्यारे कह्युं जे "दृष्ट्वेदं[3]

१ आ अर्थ भागवतमां "धृतरथचरणोऽभ्ययाच्चलद्गु" आ श्लोकमां कह्यो छे। २ विश्वरूप। ३ अर्थ.-हे जनार्दन! अतिसौम्य आ तमारा मनुष्यरूपनां दर्शन करीने हमणाज हुं सचेत (प्रसन्नचित्त) थयो अने प्रकृति (स्वभाव) ने पाम्यो छुं।

मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन । इदानीमस्मि संवृत्तः स-चेताः प्रकृतिं गतः॥" माटे मनुष्यपणे करीने भगवान् वर्ते तोज जीवने सानुकूळ पडे नहितो न पडे, ते सारु ए भगवान् मनुष्यपणे वर्तेछे त्यारे जे आवी रीते नथी समझतो तेने मनुष्यभाव देखीने अवळुं पडेछे अने जो ए भगवान् दिव्यभावेज वर्ते तो मन वाणीने अगोचर होय ते जीवना जाण्यामां आवे नहि, माटे ए बे प्रकारे भगवानने शास्त्रमां कह्या छे, तेवीरीते जेणे यथार्थ जाण्या होय तेने संशय न थाय अने जो एम न समझे तो संशय जरुर थाय. अने जे एम कहेछे जे 'में भगवानने जाण्या छे ने मने निश्चय छे' ने जो ते आ वातने समझ्यो नथी तो तेनो निश्चय काचो छे, जेम कोइक पुरुष श्लोक शिख्यो होय तथा कीर्तन शिख्यो होय ने तेने पुछीए जे 'तने आ श्लोक तथा कीर्तन आवड्यो ?' त्यारे कहे जे आवड्यो, ने कंठथी मुख पाठे कही देखाडे पण पछी थोडाक दिवस थाय त्यारे ते श्लोक कीर्तनने भुली जाय, त्यारे ए ते शुं जे एने ज्यारे ए शिख्यो हतो त्यारेज एने एटलो आवड्यो नहोतो, केमजे श्रवण मनने करीने एनो दृढ अभ्यास थइने एना जीवमां ए श्लोक कीर्तन चोटी नहोतो गयो. अने कोइक वातनो बाळकपणामांज एवो अभ्यास थयो होयछे तो ए युवा थाय वृद्ध थाय तोपण ते वातनुं ज्यारे काम पडे त्यारे सांभरी आवेछे, तेम एणे भगवाननो निश्चय कर्यो हतो त्यारेज एना निश्चयमां कसर रही गइ हती अने जो कसर न रही होत ने आवी रीते प्रथमथीज श्रवण करीने ने तेनुं मनन करीने तेनो दृढ अभ्यास एना जीवमां थयो होत तो एने कोइ दिवस संशय थातज नहि । इति वचनामृतम् ॥ ४ ॥ १३० ॥

संवत् १८७७ ना फागण वदी ८ अष्टमीने दिवस श्रीजिमहाराज

गाम श्रीपंचाळामध्ये झीणाभाइना दरबारमां ओटानेविषे ढोलीया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती ने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामिए प्रश्न पुछ्यो जे "कये ठेकाणे मान सारुं छे ने कये ठेकाणे सारुं नथी ने कये ठेकाणे निर्मानीपणुं सारुं छे ने कये ठेकाणे सारुं नथी?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे सत्संगनो द्रोही होय ने परमेश्वरनुं ने मोटा संतनुं घसातुं बोलतो होय तेनी आगळतो मान राखवुं तेज सारुं छे अने ते घसातुं बोले त्यारे तेने तीखा बाण जेवुं वचन मारवुं पण विमुखनी आगळ निर्मानी थवुं नहि तेज रुडुं छे अने भगवान् ने भगवानना संतनी आगळतो जे मान राखवुं ते सारुं नथी ने तेनी आगळतो मानने मुकीने दासानुदास थइने निर्मानीपणे वर्तवुं तेज रुडुं छे । इति वचनामृतम् ॥ ५ ॥ १३१ ॥

संवत् १८७७ना फागण वदी ९ नवमीने दिवस रात्रिने समे श्रीजिमहाराज गाम श्रीपंचाळामध्ये झीणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलीयो ढळावीने विराजमान हता ने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने धोळे अंगरखे सहित गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी पछेडी ओढी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, अमे शास्त्री वार सुधी विचार कर्यो ने सर्वे शास्त्रमां नजर फेरवीने जोयुं त्यारे एम जणायुं जे 'श्रीकृष्ण जेवो अवतार सर्व शक्तिये युक्त बीजो कोइ नथी थयो' केमजे बीजी

जे सर्वे पोतानी अनंत मूर्तियो भिन्नभिन्नपणे रही छे ते सर्वेनो भाव श्रीकृष्णभगवाने पोतानेविषे देखाड्यो, केवी रीते तो प्रथम पोते देवकीथकी जन्म्या त्यारे शंख, चक्र, गदा, पद्म धारीने चतुर्भुजरूपे दर्शन दीधुं तेणे करीने लक्ष्मीपति जे वैकुंठनाथ तेनो भाव पोतामां जणाव्यो तथा माता यशोदाने पोताना मुखमां विश्वरूप देखाड्युं तेणे करीने सहस्रशीर्षापणे करीने अनिरुद्धपणुं पोतामां जणव्युं तथा अक्रूरने यमुनाना धरामां दर्शन दीधां तेणे करीने शेषशायीपणुं जणव्युं तथा अर्जुनने रणसंग्राममां विश्वरूप देखाड्युं जे–"पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः॥" एवी रीते अनंत ब्रह्मांड देखाडीने पुरुषोत्तमपणुं जणव्युं तथा पोते श्रीकृष्णे कह्युं जे "यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः। अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः॥" एवी रीते पोते पोतानुं पुरुषोत्तमपणुं जणव्युं तथा गोलोकवासी जे राधिकासहित श्रीकृष्ण तेतो पोतेज हता अने ब्राह्मणना बाळकने लेवा गया त्यारे अर्जुनने पोतानुं भूमापुरुषरूपे दर्शन कराव्युं तथा श्वेतद्वीपवासी वासुदेव तेणेतो पोतेज ए अवतार धर्यो हतो तथा नरनारायणतो समग्र भारतनेविषे तथा भागवतमां ए श्रीकृष्णनेज कह्याछे ते माटे ए श्रीकृष्णना अवतारनेविषे तो भिन्नभिन्नपणे रही जे एज भगवाननी मूर्तियो तथा शक्तियो ऐश्वर्य ते समग्र छे माटे ए अवतार ते बहु मोटो थयोछे अने बीजी मूर्तिनेविषे थोडुं ऐश्वर्य छे ने एनेविषे संपूर्ण ऐश्वर्य छे माटे कृष्णावतार जेवो कोइ अवतार नथी.. अने ए अवतार सर्वोपरी वर्तेछे अने बीजा अवतारे करीने थोडी शक्ति जणवीछे ने आ अवतारे करीने संपूर्ण ऐश्वर्य शक्तियो जणवी माटे आ अवतार सर्वो-

१ आ श्लोकनो अर्थ लोयाना वचनामृतनी टीपणीमा कर्यो छे।

स्कर्पपणे वर्तेछे एवी रीते जेनी प्रत्यक्ष श्रीकृष्णना स्वरूपमां अचळ मति होय ने ए मति कोइ दिवस व्यभिचारने न पामती होय ने तेनी-वते कोइ कुसंगे करीने कदाचित् कांइक अवळुं वर्ताइ गयुं होय तो-पण ते कल्याणना मार्गमांथी पडे नहि एनुं कल्याणज थाय, माटे तमे सर्वे परमहंस हरिभक्त छो तेपण एवी रीते जो उपासनानी दृढता भगवाननेविषे राखशो तो कदाचित् कांइक अवळुं वर्ताइ जशे तो-पण अंत्ये कल्याण थशे, एवी रीतनी वार्ताने सांभळीने सर्वे साधु तथा हरिभक्त ते श्रीजिमहाराजनेविषे सर्वकारणपणुं जाणीने उपासनानी दृढता करता हवा । इति वचनामृतम् ॥ ६ ॥ १३० ॥

संवत् १८७७ ना फागण वदी ११ एकादशीने दिवस छो घडी दिवस चढते श्रीजिमहाराज गाम श्रीपंचाळामध्ये झीणाभाइना दरवारमां ओटा उपर ढोलीयो ढळावीने विराजमान हता ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो तथा गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी झीणी पछेडी ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

अने श्रीजिमहाराज नित्यानंदस्वामि पासे श्रीमद्भागवतना प्रथमस्कंधनी कथा करावता हता तेमां 'जन्माद्यस्य यतः' ए श्लोक प्रथम आव्यो तेनो अर्थ कर्यो. त्यारे "यत्र त्रिसर्गो मृषा" एवुं जे ए श्लोकनुं पद तेनो अर्थ पोते श्रीजिमहाराज करवा लाग्या जे 'मायाना त्रण गुणनो सर्ग जे पंच भूत, इंद्रियो, अंतःकरण अने देवता ते भगवानना स्वरूपनेविषे त्रिकाळमां छेज नहि' एम समझे तथा ए श्लोकनुं पद जे "धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम्" केतां धाम जे पोतानुं

१ अर्थः—आ जगतनी उत्पत्ति स्थिति प्रलय जे परब्रह्म परमात्माथी थाय छे ।

स्वरूप तेणे करीने टाळ्युं छे ए मायाना सर्गरूप कपट जेणे एवुं भगवाननुं परम सत्यस्वरूप छे ते आत्यंतिक प्रलयने अंते अक्षरधामनेविषे जेवुं भगवाननुं स्वरूप अनंत ऐश्वर्य तेजे युक्त छे तेवुं ने तेवुंज प्रत्यक्ष मनुष्यरूप भगवाननेविषे जाणवुं तेणे तत्त्वे करीने भगवानने जाण्या कहेवाय. अने एज प्रत्यक्ष भगवानने मूढ जीव छे ते मायिक दृष्टिए करीने जुवेछे त्यारे पोता जेवा मनुष्य देखेछे अने जेम पोते जन्म्यो होय, बाळक थाय, युवा थाय, वृद्ध थाय ने मरी जाय तेमज भगवाननेपण जाणेछे अने ज्यारे भगवानना एकांतिक साधुना वचननेविषे विश्वास लावीने निष्कपटभावे करीने भगवानना चरणकमळने भजेछे त्यारे एनी मायिक दृष्टि मटेछे ते पछी एनी ए जे भगवाननी मूर्ति तेने परम चैतन्य सत् चित् आनंदमय जाणेछे, तेपण भागवतमां कह्युंछे जे–"स वेद धातुः पदवीं परस्य दुरन्तवीर्यस्य रथाङ्गपाणेः। योऽमायया संततयानुवृत्त्या भजेत तत्पादसरोजगन्धम्॥"अने ए भगवाननेविषे जे बाळक युवान वृद्धपणुं देखायछे तथा जन्ममरणपणुं देखायछे तेतो एनी योगमायाए करीने देखायछे पण वस्तुगत्ये तो भगवान् जेवा छे तेवाने तेवाज छे, जेम नटविद्यावाळो होय ते शस्त्र बांधीने आकाशमां इंद्रना शत्रु जे असुरना योद्धा ते साथे वढवा जायछे पछी कटका थइने हेठो पडे ने ते पछी ते कटकाने भेगा करीने ते नटनी स्त्री बळी मरे पछी थोडीकवारे ते नट पाछो आकाशमांथी हथियार बांधीने जेवो हतो तेवोने तेवोज आवे ने

१ अर्थ —जे भक्त निष्कपट अविच्छिन्न एवी अनुवृत्तिथी भगवानना चरणकमळने भजेछे ते भक्त सर्वाधार, अपरिमित ऐश्वर्यवाळा, चक्रपाणि परमात्मानी पदवी (मार्ग) ने जाणेछे ।

राजा पासे मोज मागे ने कहे जे 'मारी स्त्री लावो' एवी रीतनी जे नटनी माया तेपण कळ्यामां कोइने आवती नथी तो भगवाननी योगमाया कळ्यामां केम आवे? अने जे नटनी मायाने जाणतो होय तेतो एम जाणे जे 'ए नट मर्यो पण नथी ने वळ्योपण नथी जेवो छे तेवोने तेवोज छे' तेम भगवानना स्वरूपने जे तत्त्वे करीने समझतो होय तेतो भगवानने अखंड अविनाशी जेवा छे तेवाज समझे, जेम श्रीकृष्ण भगवाने देह मुक्यो त्यारे ए भगवाननी पत्नियो जे रुक्मिणी आदिक हती ते ए भगवानना देहने लइने वळी मरी त्यारे अज्ञानी हता तेणेतो एम जाण्युं जे 'हवे ए नाश थइ गया' अने जे ज्ञानी हता तेणेतो एम जाण्युं जे 'आहींथी अंतर्धान थइने बीजे ठेकाणे जणाणाछे' एम भगवानने अखंड समझे, ते पोते श्रीकृष्णे कह्युं छे जे–"अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्। परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥" माटे मूर्ख होय ते जो भगवानने साकार समझे तो केवळ मनुष्य जेवाज समझे अने जो निराकार समझे तो बीजा आकारने जेम मायिक जाणे तेम भगवानना आकारनेपण मायिक जाणे अने अरूप एवुं भगवाननुं स्वरूप कल्पे, माटे ए बे प्रकारे मूर्खनेतो अवळुं पडेछे अने जो भगवानने आकार न होय तो ज्यारे आत्यंतिक प्रलय हतो त्यारे श्रुतिये एम कह्युं जे 'स ईक्षत' कहेतां 'ते भगवान् जेते जोता हवा' त्यारे जो जोयुं तो ए भगवाननुं नेत्र श्रोत्रादिक अवयवे सहित साकार एवुं दिव्य स्वरूपज हतुं. अने वळी एमपण कह्युं छे जे–"पुरुषेणात्मभूतेन वीर्यमाधत्त वीर्यवान्" एवी रीते पुरुषरूपे थइने ए पुरुषोत्तम

१ लोयाना १८ वचनामृतनी टीपणीमा अर्थ कर्यो छे।

तेणे मायानेविपे वीर्यने धारण कर्युं त्यारे ए भगवान् प्रथमज साकार हता. अने ए जे पुरुपोत्तम नारायण ते कोइ कार्यने अर्थे पुरुपरूपे थायछे त्यारे ए पुरुप छे ते पुरुपोत्तमना प्रकाशमां लीन थइ जाय छे ने पुरुपोत्तमज रहेछे. तेमज मायारूपे थायछे त्यारे माया पण पुरुपोत्तमना तेजमां लीन थइ जायछे ने तेरूपे भगवानज रहेछे अने पछी ए भगवान् महत्तत्त्वरूपे थायछे ने तेमज महत्तत्त्वमांथी थयां जे बीजां तत्त्व तेरूपे थायछे अने पछी ते तत्त्वनुं कार्य जे विराट् तेरूपे थायछे तथा ते विराट्पुरुपथी थया जे ब्रह्मादिक ते रूपे थायछे तथा नारद सनकादिक रूपे थायछे, एवी रीते अनेक प्रकारना कार्यने अर्थे जेने जेनेविपे ए पुरुपोत्तम भगवाननो प्रवेश थायछे तेने तेने पोताना प्रकाशे करीने लीन करी नाखीने पोतेज तेरूपे करीने सर्वोत्कर्पपणे विराजमान थका रहेछे. अने जेनेविपे पोते विराजमान रहेछे तेना प्रकाशने पोते ढांकीने पोतानो प्रकाश प्रकट करेछे, जेम अग्नि लोढानेविपे आवेछे त्यारे लोढानो जे शीतळ गुण ने काळो वर्ण तेने टाळीने पोते पोताना गुणने प्रकाश करेछे तथा जेम सूर्य उदय थायछे त्यारे तेना प्रकाशमां सर्वे तारा चंद्रमादिकनां तेज लीन थइ जायछे ने एक सूर्यनोज प्रकाश रहेछे, तेम ए भगवान् जेने जेनेविपे आवेछे त्यारे तेना तेजनो पराभव करीने पोताना प्रकाशने अधिकपणे जणावेछे. अने जे कार्यने अर्थे पोते जेमां प्रवेश कर्यो हतो ते कार्य करी रह्या केडे तेमांथी पोते नोखा नीसरी जायछे त्यारेतो ते पंडे जेवो होय तेवो रहेछे अने तेमां जे अधिक दैवत जणातुं हतुं तेतो पुरुपोत्तम भगवाननुं हतुं एम जाणवुं, एवी रीते सर्वना कारण ने सदा दिव्य

साकार एवा जे प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम नारायण तेनी मूर्तिनेविषे साक-
रना रसनी मूर्तिनी पेठे त्याग भाग समझवो नहि ने जेवी मूर्ति
दीठी होय तेवुंज ध्यान–उपासना–भक्ति करवी पण तेथी कांइ
पृथक् न समझवुं. अने ते भगवानमां जे देहभाव जणायछे तेतो
नटनी मायानी पेठे समझवो. अने जे आवी रीते समझे तेने ते भग-
वाननेविषे कोइ रीते मोह थवो नथी. अने आ वार्ता छे ते केने सम-
झ्यामां आवेछे तो जेने एवी दृढ प्रतीति होय जे 'आत्यंतिक प्रलय
थायछे त्यारेपण भगवान् ने भगवानना भक्त ते दिव्य साकाररूपे
करीने अक्षर धामनेविषे दिव्यभोगने भोगवता थका रहेछे अने ते
भगवाननुं रूप ने भगवानना भक्तनां रूप ते अनंत सूर्य चंद्रना
प्रकाश सरखां प्रकाशे युक्त छे' एवी जातनी जेने दृढ मति होय
तेज आ वार्ताने समझी शके. अने एवा तेजोमय दिव्यमूर्ति जे
भगवान् ते जीवोना कल्याणने अर्थे ने पोतानेविषे नव प्रकारनी
भक्ति जीवोने कराववाने अर्थे कृपा करीने पोतानी जे सर्व श-
क्तियो, ऐश्वर्य, पार्षद तेणे सहित थकाज मनुष्य जेवा थायछे
त्यारेपण जे एवा मर्मना जाणनारा छे ते भगवाननुं स्वरूप अक्षर-
धामनेविषे जेवुं रह्युंछे तेवुंज पृथ्वीनेविषे जे भगवाननुं मनुष्य स्व-
रूप रह्युंछे तेने समझेछे पण ते स्वरूपनेविषे ने आ स्वरूपनेविषे
लेशमात्र फेर समझता नथी. अने आवी रीते जेणे भगवानने जाण्या
तेणे तत्त्वे करीने भगवानने जाण्या कहेवाय अने तेने मायानी नि-
वृत्ति थइ कहेवाय अने एम जे जाणे तेने ज्ञानी भक्त कहीए ने तेने
एकांतिक भक्त कहीए. अने आवी रीते जेने प्रत्यक्ष भगवानना
स्वरूपनी दृढ उपासना होय ने तेने भगवानना स्वरूपमां कोइ दि-

वस मायिकपणानो संशय न थतो होय ने तेने कदाचित् कोइ कुसंगने योगे करीने अथवा प्रारब्धकर्मने योगे करीने कांइ अवळुं वर्ताइ जाय तोपण तेनुं कल्याण थाय. अने जो आवी रीते भगवानने जाण्यामां जेने संशय होय ने ते जो ऊर्ध्वरेता-नैष्ठिक ब्रह्मचारी होय ने महात्यागी होय तोपण तेनुं कल्याण थवुं अति कठण छे अने जेणे प्रथम एवो दृढ निश्चय कर्यो होय जे 'ज्यारे आत्यंतिक प्रलय थायछे तेने अंतेपण भगवान् साकार छे' एवी दृढ ग्रंथि हृदयमां पडी होय ने पछी जो तेने तेजोमय अलिंगपणुं जे शास्त्रमां कह्युं होय तेनुं श्रवण थाय तथा एवी वार्ता कोइ थकी सांभळे तोपण तेने संशय थाय नहि, केमजे एतो एम समज्यो छे जे 'भगवानतो सदा साकारज छे पण निराकार नथी अने तेज भगवान् राम कृष्णादिक मूर्तियोने धारण करेछे' एवी रीते जेनी दृढपणे समझण होय तेनी परिपक्व निष्ठा जाणवी, एवी रीते श्रीजिमहाराजे पोताना भक्तजननी शिक्षाने अर्थे पोताना स्वरूपनी जे अनन्यनिष्ठा ते संबन्धी वार्ता करी तेने सांभळीने सर्वे परमहंस तथा हरिभक्त ते श्रीजिमहाराजना स्वरूपनी एवीज रीते विशेषे दृढता करता हवा।

इति वचनामृतम् ॥ ७ ॥ १२२ ॥

श्रीपंचाळाप्रकरणं समाप्तम्।

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

श्रीगढडा-मध्यप्रकरणम् ।

संवत् १८७७ ना ज्येष्ठ शुदी १५ पूर्णमासीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो अने धोळी चादर ओढी हती अने माथे धोळी पाघ बांधी हती अने धोळा पुष्पनो हार पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने पोतानी आगळ परमहंस झांझ मृदंग लइने गावता हता.

पछी श्रीजिमहाराजे कीर्तनीयाने कह्युं जे हमणां कीर्तन राखो ने प्रश्न उत्तर करो, पछी मुक्तानंदस्वामिए हाथ जोडीने नमस्कार करीने श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! मोहनुं शुं रूप छे? अने मोहनी निवृत्ति थयानो शो उपाय छे?" पछी श्रीजिमहाराज थोडीक वार विचारी रहीने पछी बोल्या जे, मोहनुं रूपतो मननेविषे भ्रांति जेवुं थइ जाय एज जणायछे अने ज्यारे पुरुषना हृदयमां मोह वृद्धि पामेछे त्यारे मनमां विभ्रांति विशेष थायछे, पछी आ करवा योग्य ने आ न करवा योग्य एवो विवेक रहेतो नथी. अने ते मोह थयानुं कारणतो आजज अमे विचार्युंछे[1] जे आज अर्ध रात हती त्यारे अमारे निद्रा[2] उडी गइ हती पछी[3] अमे उत्तरादि दिशा सामुं मुख करीने सुता ह[...]

१ अने पोताना अनुभव प्रमाणथीज निश्चित पण कर्युंछे । २ समाधि । ३ [...]श्रोना आधाररूप शिशुमार चक्र जोयुं पछी ।

पछी ध्रुवनो तारो दीठो त्यारे एम विचार थयो जे 'आतो उत्तर ध्रुव छे पण शास्त्रमां दक्षिण ध्रुव कह्योछे ते क्यां हशे?[1]' पछी अमे दक्षिण ध्रुव जोयो त्यारे तेपण दीठो. अने जेम कुवा उपर पाणी सिंचवानो फाळको होय तेवी रीते बे ध्रुवने वच्चे मोटो फाळको दीठो ने ते फाळकाना मेरुनां बे ठेवां ते बे कोरे ध्रुवने अडी रह्यांछे, जेम लाकडाना स्तंभ होय ने तेमां लोढानी आरो खुंतीने रही होय तेम छे अने ते फाळका उपर जेम सुतरनी फेल वींटी होय ने ते फाळका संघाथे जेम पीतळनी फुदडियो जडी होय तेम सर्वे तारा ने देवता ने नवग्रहादिक तेनां जे स्थानक ते फाळकाने आश्रीने रह्यांछे ते सर्वेने जोयां अने पछी सूर्य ने चंद्र तेनो उदय ने अस्त ते एकज[2] ठेकाणेथी थायछे तेपण जोयो, पछी अंतर्दृष्टिए करीने जोयुं त्यारे जेटलुं ध्रुवआदिक ब्रह्मांडमां छे तेटलुं सर्वे पिंडमांपण दिठुं, पछी आ देहनेविषे जे क्षेत्रज्ञ छे तेने पण दीठो पछी ते क्षेत्रज्ञमां पुरुषोत्तम भगवान् रह्या छे तेनेपण दीठा ते भगवानने जोइने भगवानना स्वरूपने विषे अतिशय वृत्ति जोडाइ गइ, पछी समाधिमांथी कोइ प्रकारे निकळायुं नहि, पछीतो कोइक भक्तजने आवीने अमारी स्तुति बहु करी तेनी दयाए करीने अमारे पाछुं देहमां अवायुं पछी अमारा हृदयमां विचार थयो जे 'अमारे जे समाधिमांथी नीसरायुं तेतो दयाए करीने नीसरायुं पण बीजाने[3] समाधिमांथी नीसरातुं हशे तेनुं शुं कारण हशे?' पछी अमने एम जणायुं जे 'एने कांइक विषयमां आसक्ति रहेछे तेणे करीने पाछुं नीकळायछे' अने मोहनुं जे कारण तेपण पंच विषयजछे ते विषयपण

१ सूर्यसिद्धान्तग्रन्थमां अने सिद्धान्तशिरोमणिग्रन्थमां बे ध्रुव कह्याछे । २ मुख्य ।
३ समाधिमां प्राप्तथता भगवानना सुखनो त्याग करीने ।

उत्तम, मध्यम अने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारना छे तेमां ज्यारे उत्तम विपयनी प्राप्ति थाय अने तेमांथी कोइ अंतराय करनारो आवे त्यारे ते उपर क्रोध थाय पछी क्रोध थकी मोह थायछे अने सामान्यपणेतो श्रोत्रने ने शब्दने सदा संबन्ध छे अने त्वचाने ने स्पर्शने सदा संबन्ध छे एवी रीते पंच ज्ञान इंद्रियोने पंच विपयनो संबन्ध छे माटे जे पदार्थने सामान्यपणे जोयुं होय ने ते पदार्थमांथी वृत्तिने तोडीने भगवानना स्वरूपमां राखवी होय तो तेमां कांइ दाखडो पडे नहि सहजेज ते रूप विपयमांथी वृत्ति तुटीने भगवानना स्वरूपमां रहे अने जो स्त्री आदिकनुं अतिशय रमणीयरूप दीठामां आवी गयुं होय ने तेमां वृत्ति जोडाणी होय ने पछी जो भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखवा जाय तो रहे नहि अने चित्त पण एक ठेकाणे रहे नहि, माटे ज्यांसुधी रमणीय पंच विपयमां चित्त लोभाय छे त्यां सुधी मोह टळे नहि अने ज्यारे एने गमतो विपय होय ने तेमां चित्त तणातुं होय ने संत तथा गुरु तथा पोताना इष्टदेव जे भगवान् ते जो निपेध करे तो ते उपर रीस चडे अने तेनो द्रोह थाय पण तेनुं वचन मनाय नहि एवुं जेना अंतरमां वर्ततुं होय तेने मोह कहीए ते भगवाने गीतामां कह्युंछे जे-"ध्यायतो विपयान् पुंसः संगस्तेपूपजायते। सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

१ अर्थ -विपयोनुं ध्यान करनारा पुरुपने फरीथीपण विपयोमां सग अतिशय वृद्धि पामेछे, सगमांथी काम उत्पन्न थायछे, सगनी विपाकदशाने काम कहेछे एटले पुरुप जे दशाने पामीने विपयोने भोगव्या विना रहि शके नहि ते काम कहेवाय, काममांथी क्रोध थायछे एटले काम वर्ततो होय अने ते समये विपयो समीपमां न होय तो वे वखते जे कोइ पासे पुरुपो होय तेना प्रत्ये "आमणे मारुं अभीष्ट नाश कर्युं" एम मानीने क्रोध थायछे अर्थात् कामज क्रोधरूपे परिणाम पामेछे, क्रोधथी समोह (कृत्याकृत्यविवेकनी शून्यता) थायछे तेथी न करवाना पापकर्म करेछे, समोहथी आरंभेला

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥" माटे आ वचन जे श्रीकृष्ण भगवाने कह्यां छे ते परमसिद्धांत छे. जे ज्यारे शब्दादिक कोइ विषयमां चित्त लोभायुं त्यारे गमे तेवो बुद्धिवान् होय पण तेनी बुद्धिनुं कांइ ठेकाणुं रहे नहि. अने पशु जेवो थइ जायछे, माटे मोहने उदय थवानुं कारण ते विषयमां आसक्ति तेज छे. अने जेने ए विषयमांथी चित्तने उखेडवुं होय तेने प्रथमतो आत्मनिष्ठा अतिदृढ करी राखवी जे 'हुं आत्मा छुं पण देह ते हुं नहि' एकतो ए विचार दृढ करवो अने बीजुं जे प्रकारे जगतनी उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय थायछे ते वार्तापण सारी पेठे समजवी अने त्रीजुं भगवानना स्वरूपनुं महात्म्य अतिशयपणे समजवुं ते एम विचारवुं जे 'पंच विषय छे तेतो भगवानना कर्या थयाछे माटे भगवानमां तो एथी अति झाझुं सुख छे, शामाटे जे शब्द होय तेमां एकलुं शब्दसंबन्धीज सुख होय पण बीजा जे चार विषय रह्या तेनुं सुख शब्दमां न होय एवीज रीते स्पर्शमां स्पर्शनुंज सुख होय पण बीजुं न होय तेमज रूपमां रूप संबन्धीज सुख होय तेमज रस ने गंध तेमांपण पोतपोता संबन्धीज सुख होय पण एक विषयमां पंच विषयनुं सुख भेळुं न आवे. अने भगवाननुं जे स्वरूप छे तेमांतो सर्वे सुख भेळां रह्यां छे ते एक दर्शन करे तोपण ते भक्त पूर्णकाम थइ जाय एवी रीते भगवानना स्पर्शादिकपण पोताना भक्तने पूर्णकाम करेछे.' अने मायिक जे विषयसंबन्धी सुख छे तेतो सर्वे

इन्द्रियजयादिक प्रयत्नमा स्मृतिभ्रश थायछे, स्मृतिभ्रंश थवाथी बुद्धिनाश (आत्मज्ञान सपादन करवानो जे व्यवसाय कर्यो हतो तेनो नाश) थायछे, बुद्धिनाश थवाथी नाश थायछे एटले फरीथीपण ससारमा निमग्न थायछे ।

नाशवंत छे अने भगवानसंबंधी सुख छे तेतो अखंड छे'एवो जे भगवान-
ना स्वरूपना माहात्म्यनो विचार तेपण अतिदृढ करवो, एजे त्रणविचार
कह्या तेणेकरीने विषयमांथी आसक्ति टळी जायछे अने ज्यारे विषय-
मांथी आसक्ति टळे त्यारे विषय सारा के नरसा तेनो भेद रहे नहि
जेवी रूपवान स्त्री तेवीज कुरूपवान स्त्री भासे अने तेवीज रीते पशु,
पक्षि, लाकडां, छाणां, पथरा, सुवर्ण ए सर्वेने तुल्यपणे जुवे पण सारुं
पदार्थ देखीने तेमां मोह न पामे एवी रीते पंच विषयनेविषे वर्ते पण
सारो के नरसो एवो बुद्धिनेविषे भेद रहे नहि एवुं जेने वर्ते तेने निर्मोही
कहीए, ते श्रीकृष्णभगवानेपण गीतामां कह्युंछे जे "समलोष्टाश्म-
काञ्चनः" एवां जेनां लक्षण होय तेणे भगवाननुं स्वरूप तत्त्वे करीने
जाण्युं छे अने एनेज अनन्यभक्त कहीए अने पतिव्रतानुं अंगपण तेनुंज
जाणवुं अने ज्ञानीपण तेनेज जाणवो अने भगवानपण तेनी उपरज राजी

हळवे आदर राखे तेने थायछे, जेम कुवाना कांठा उपर पथरो नाख्यो होय तेमां पाणि सिंचतां सिंचतां दोरडी नरम होय तोपण घणे काळे करीने ते पाणामां कापा पडे छे, अने जो लोढानी सांकळे करीने सिंचे तोपण उतावळे एवो कापो न पडे, माटे कल्याणने अर्थे जेने यत्न करवो होय तेने विषयमांथी आसक्ति टाळवी एनेविषे आकळा थइने अकळाइ जवुं नहि, एवी रीते गीतामांपण कह्युं छे जे "अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ।" माटे एम विचारवुं जे 'आ जन्मे जेटली विषयमांथी आसक्ति टळशे तेटली टाळवी छे अने एम करतां जो कांइ रही गइ तो बीजे जन्मेकरीने टाळवी छे पण भगवानना भक्त छीए ते नरकचोराशीमांतो जवुं नथी' एवी रीते भगवानना भक्तने हिम्मत राखीने धिरे धिरे मोहनुं मूळ उखाडवानो आदर राखवो अने ज्यांसुधी सारा.ने नरसा ए बे विषय तुल्य न जणाय त्यांसुधी ए भगवाननो भक्त साधनदशामां कहेवाय अने ज्यारे सारा नरसा विषय तुल्य भासे त्यारे ए भक्त सिद्धदशाने पाम्यो जाणवो अने ज्यारे विषयमांथी आसक्ति मुकीने सिद्धदशाने पामेछे त्यारे एने कृतार्थ थयो जाणवो अने वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास ए सर्वे ग्रंथनो एज गलितार्थ छे, आ जे अमे वात करीछे ते सर्वे शास्त्रनुं रहस्य छे माटे आ वार्ताने सर्वे हरिभक्त दृढ करीने राखज्यो । इति वचनामृतम् ॥ १ ॥ १३४ ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि ३ त्रीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ रेशमना चाकळा उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने मुनि झांझ मृदंग लइने कीर्तन गावता हता.

पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे कीर्तन राखो अमे वात करीए छीए, एम कहीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने आत्यंतिक कल्याण पामवुं होय अने नारद सनकादिक जेवा साधु थवुं होय तेने एम विचार करवो जे, आ देह छे तेनेविषे जीव रह्योछे अने इंद्रियो अंतःकरण छे ते जीवसाथे वळगी रह्यांछे अने इंद्रियो ने अंतःकरण छे ते बाहेरपण पंच विषयमां वळगी रह्यांछे. ते अज्ञाने करीने जीव इंद्रियो अंतःकरणने पोतानुं रूप मानेछे पण वस्तुगत्ये जीव इंद्रियो अंतःकरणथकी नोखो छे अने पंच विषय छे ते अंतःकरणथकी नोखा छे पण एतो विषयने अभ्यासे करीने अंतःकरणनेविषे पंच विषयनी एकता जणायछे अने विषयनी जे उत्पत्ति तेतो इंद्रियो थकी थायछे पण अंतःकरणमांथी नथी थती, जेम अतिशय तडको होय अथवा टाढ होय तेनो प्रथम बाहेर इंद्रियोने संबन्ध थायछे पछी इंद्रियोद्वारे करीने शरीरने मांहिली कोरे तेनो प्रवेश थायछे पण एनी उत्पत्ति मांहिली कोरेथी नथी एतो बाहेरथी उत्पन्न थइने मांहिली कोरे प्रवेश करेछे, तेम पंच विषय छे ते प्रथम अंतःकरणमांथी उपजता नथी एतो प्रथम इंद्रियोने बाहेर विषयनो संबन्ध थायछे ने पछी अंतःकरणमां प्रवेश करेछे, माटे जेम बाहेर गुंमडुं थयुं होय तेने ओषध चोपडे त्यारेज करार थाय पण केवळ वार्ता सांभळ्ये करार थाय नहि अने जेम क्षुधापिपासा लागी होय ते खाधे पीधेज निवृत्ति थाय पण अन्नजळनी वात कर्ये निवृत्ति न थाय, तेम पंच विषयरूपी जे रोग छे तेतो तेनुं ज्यारे ओषध करीए त्यारेज निवृत्ति थाय. ते ओषधनी रीत एम छे जे ज्यारे त्वचाने स्त्रीयादिक विषयनो स्पर्श थायछे त्यारे त्वचाद्वारे अंतःकरणमां तेनो प्रवेश थायछे अने अंतःकरणद्वारे थइने जीवमां प्रवेश करेछे पण मूळथकी विष-

यनी उत्पत्ति जीवमांथीपण नथी अने अंतःकरणमांथीपण नथी अने जेजे विषय अंतःकरणमांथी स्फुरता हशे तेपण पूर्वजन्मनेविषे बाहेरथीज इंद्रियोद्वारे करीने आव्याछे माटे विषय टाळ्यानुं एज ओषध छे जे त्वचाए करीने स्त्रीयादिक पदार्थनो स्पर्श तजवो अने नेत्रे करीने तेनुं रूप न जोवुं अने जिह्वाए करीने तेनी वात न करवी अने काने करीने तेनी वात न सांभळवी अने नासिकाए करीने तेनो गंध न लेवो एवी रीते पंच इंद्रियोद्वारे विषयनो त्याग दृढ राखे तो बाहेरथी विषयनो प्रवाह मांहिली कोरे प्रवेश करे नहि, जेम कुवामां पाणिनी सेर्य आवती होय पछी तेने गोदडाना गाभा भरीने बंध करे त्यारे ते कुवो गळाय, तेम बाह्य इंद्रियोने नियममां राखवे करीने बाह्य विषयनो अंतःकरणमां प्रवेश नथाय. अने जेम उदरमां रोग थयो होय तेतो उदरमां ओषध जाय त्यारेज टळे तेम प्रथमथी जे इंद्रियोद्वारे करीने विषय अंतःकरणमां भराया होय तेतो आत्मविचारे करीने टाळवा; ते आत्मविचार एम करवो जे 'हुं आत्मा छुं ने मारेविषे इंद्रियो अतःकरणनो संबन्ध नथी' एम दृढ विचार करीने अने ते चैतन्यनेविषे भगवाननी मूर्ति धारीने अने पोताना आत्मसुखवते करीने पूर्ण रहेवुं, जेम कुवो जळे करीने पूर्ण भरायो होय त्यारे जे बाहेरथी पोतामां सेर्यो आवती होय तेने पोतानुं पाणी ठेली राखेछे पण मांहिली कोरे ते सेर्यना पाणीनो प्रवेश करवा दे नहि अने जो उलेचाइने ठालो थाय तो सेर्यनुं पाणी बाहेरथी मांहि आवे, एवी रीते आत्मसुखे करीने मांहिली कोरे पूर्ण रहेवुं अने बाहेर पंच इंद्रियोद्वारे विषयनो मार्ग बंध राखवो एज कामादिकने जीत्यानो दृढ उपाय छे पण ए विना एकला उपवासे करीने कामादिकनो पराजय थतो नथी माटे आ विचार दृढ करीने राखज्यो। इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ १३५ ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि ४ चोथने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ चाकळा उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने पोतानी आगळ परमहंस झांझ मृदंग लइने कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजिमहाराज नेत्र कमळनी साने करीने सौने छाना राखीने बोल्या जे मोटेरा मोटेरा परमहंस हो ते आगळ आवो वात करवी छे, एम कहीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे "जे भगवानने भजता होय तेने मोटी पदवी पाम्याना बे उपाय छे अने पड्याना बे उपाय छे ते कहीए छीए जे, एकतो रसिकमार्गे करीने भगवाननी भक्ति करवी अने बीजो आत्मज्ञान ए बे मोक्षप पाम्यानापण मार्ग छे अने पड्यानापण छे तेमां रसिक मार्गेतो हझारो ने लाखो पडी गयाछे अने भगवाननेतो कोइक पाम्यो हशे अने मोटा आचार्य थया तेणेपण रसिकमार्गे करीने भक्ति करावीछे पण तेमां बगाड घणाने थयोछे अने सारुंतो कोइकनुं थयुंछे, कांजे रसिकपणे करीने ज्यारे भगवाननुं वर्णन करे त्यारे भगवान् भेळुं राधिकाजी तथा लक्ष्मीजी तथा तेनी सखीयो तेनुंपण वर्णन आवे अने ज्यारे स्त्रीयोनुं वर्णन आवे त्यारेतो तेना अंगोअंगनुं वर्णन थाय त्यारे वर्णनना करनारानुं मन निर्विकार केम रहे? अने इंद्रियोनोतो एज स्वभाव छे जे सारो विषय होय ते उपरज प्रीति होय अने राधिकाजी लक्ष्मीजी तेना जेवुंतो त्रिलोकिमां कोइ स्त्रीनुं रूप होय नहि अने एना जेवी कोइनी बोलीपण मीठी न होय अने एना देहनो सुगंधपण अतिशय होय माटे एवा रूपने देखीने अथवा सांभळीने कये

प्रकारे मोह न थाय ? एतो थायज. अने लेशमात्र जो मन विकार पामे तो ते कल्याणना मार्गमांथी पड्यो माटे रसिकनी रीते जे भगवानने भजे तेने ए मोटुं विघ्न छे. अने ब्रह्मज्ञानमांतो आवी रीते अवळुं समझायछे जे 'जे ब्रह्म छे तेज प्रकृतिपुरुषरूपे थायछे अने पछी तेज ब्रह्म ब्रह्मा, विष्णु, शिवरूपे थायछे ने पछी तेज ब्रह्म स्थावर जंगमरूपे थायछे अने ते स्थावर जंगमरूप जे आकार तेनेविषे रह्या जे जीव तेरूपेपण ब्रह्म थायछे' एवी रीते ब्रह्मज्ञानने अवळुं समझीने पछी समझनारो पोताना जीवनेपण भगवान् जाणेछे त्यारे एम समझनारने उपासनानो भंग थयो, माटे एपण भगवानना मार्गथकी पड्यो, एवी रीते ब्रह्मज्ञानमांपण उपासनानुं खंडन थाय ए मोटुं विघ्न छे,. कांजे समझी समझीने सर्वना कारण अने सर्वना स्वामी एवा जे भगवान् तेनुंज खंडन थयुं माटे एम समझनारोपण कल्याणना मार्गथकी पड्यो जाणवो अने ए वे मार्ग छे ते कल्याणना छे अने ए बेमां विघ्नपण अति मोटां छे माटे जे कल्याणने इच्छतो होय तेने केम करवुं ए प्रश्न छे तेनो उत्तर करो ?" पछी सर्वे परमहंस विचारी रह्या पण कोइथी उत्तर न थयो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तरतो ए छे जे, जेम पोतानी माता होय अथवा बेन होय तथा दीकरी होय ते घणी रूपवान् होय तोपण तेने देखीने मनने विषे विकार थतो नथी तेमज तेने साथे बोलेछे स्पर्श करेछे तोपण मनने विषे लेशमात्र विकार थतो नथी एवी रीते भगवानना भक्त जे बाइयो होय तेनेविषे मा बेन ने दीकरी तेनी बुद्धि रहे तो कोइ रीते विकार थाय नहि अने रसिकमार्गे करीने भगवानने भजीने अभयपदने पामे. अने ज्यारे एम न समझे अने कोइ मोटां भगवाननां भक्त बाइयो होय तेने देखीने अवळुं समझे त्यारे एने

मोटो दोष लागे. अने जे अन्य स्त्रीने देखवे करीने दोष लाग्यो होय तेतो भगवानना भक्तने दर्शने करीने टळेछे अने भगवानना भक्तने जोइने जे दोष लाग्यो होय तेने टाळ्वानो उपाय शास्त्रमां कह्योज नथी. तेमज भगवाननो भक्त जे पुरुष होय तेने देखीने जे स्त्री अवळुं समझे तेनेपण ए पापथकी कोइ काळे छुटाय नहि, त्यां श्लोक छे जे "अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति। तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति॥" ए श्लोकनो अर्थ ए छे जे 'बीजे ठेकाणे पाप कर्युं होय तेतो भगवान् के भगवानना भक्तपासे गये छुटे अने भगवान्ने भगवानना भक्तपासे जइने जे पाप करे तेतो तीर्थक्षेत्रनुं पाप छे ते वज्रलेप थायछे' माटे जेने रसिकमार्गे करीने भगवानने भजवा होय तेनेतो जेवी रीते अमे वात करी तेवी रीते निर्दोष बुद्धि राखवी. हवे जे ब्रह्म ज्ञाननो मार्ग छे तेमांतो एम समझवुं जे 'जे ब्रह्म छे तेतो निर्विकार छे ने निरंश छे माटे ए विकारने पामे नहि ने एना अंशपण थाय नहि' अने ए ब्रह्मने जे सर्वरूपे कहेछे तेनुंतो एम छे जे 'ए ब्रह्म जेत्ते प्रकृति पुरुष आदिक सर्वेना कारण छे ने आधार छे ने सर्वनेविषे अंतर्यामीशक्तिए करीने व्यापक छे माटे जे कारण ने आधार ने व्यापक होय ते कार्यथकी पृथक् होय नहि एम समझणने लइने ए ब्रह्मने शास्त्र जेत्ते सर्वरूप कहेछे' पण ए ब्रह्मज विकार पामीने चराचर जीवरूपे थइ गया एम न समझवुं. अने ए ब्रह्म थकी परब्रह्म जे पुरुषोत्तम नारायण ते नोखा छे ने ए ब्रह्मनापण कारण छे ने आधार छे ने प्रेरक छे एम समझीने पोताना जीवात्माने ए ब्रह्म संगाथे एकता करीने परब्रह्मनी स्वामिसेवकभावे उपासना करवी' एवी रीते समझे त्यारे ब्रह्मज्ञान छे तेपण परमपदने पाम्यानो निर्विघ्न मार्ग छे। इति वचनामृतम् ॥ ३ ॥ १२६ ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार मेडीनी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने परमहंस दुकड सरोदा सतार वजाडीने मलार रागनां कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे कीर्तन गाववां रहेवाद्यो हवेतो परमेश्वरनी वार्ता करीए, पछी परमहंसे कह्युं जे सारुं महाराज, पछी श्रीजिमहाराजे प्रश्न कर्युं जे "शास्त्रमां कह्या एवा धर्म पाळतो होय ने भगवाननी भक्तिपण करतो होय ने तेने एवो आपत्काळ आवे जे भक्ति राखवा जाय तो धर्म जाय ने धर्म राखवा जाय तो भक्ति जाय त्यारे केने राखवो ने केनो त्याग करवो[1]?" पछी ब्रह्मानंदस्वामी बोल्या जे, जो भगवान् भक्ति राख्ये राजी होय तो भक्ति राखवी अने जो धर्म राख्ये राजी होय तो धर्म राखवो.

त्यारे श्रीजिमहाराजे कह्युं जे "जेने प्रकट भगवान् मळ्या होय तेनेतो जेम भगवान् राजी होय तेमज करवुं ए ठीक छे पण ज्यारे भगवाननुं परोक्षपणुं होय त्यारे केम करवुं?" पछी मुक्तानंदस्वामी एनो उत्तर करवा लाग्या पण थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्या-

१ धर्मे ज्ञान वैराग्य अने भक्तिथी भगवाननी एकांतिकता थायछे तेमा ज्ञानवैराग्यमां अंत साधननी अपेक्षा छे माटे विषम देश काळादिकथीपण तेनी निवृत्तिनो भय नथी, श्रवणादिक भक्ति अने धर्मेमांतो बाह्य साधननी अपेक्षा छे माटे देशकाळादिकनी विषमता थए सते धर्मनो त्याग करीने भक्ति राखवी के धर्मने राखीने भक्तिनो त्याग करवो आमां शुं योग्य छे ते कहो? आटलुं प्रश्ननुं तात्पर्य छे। २ बेने मध्ये केनो त्याग करवो अने केने राखवुं।

रे भगवान् परोक्ष होय ने आपत्काळ पडे ने कोइ न रहे त्यारेतो भगवाननुं एक अखंड चिंतवन करवुं तो ए भगवानना मार्गथकी पडे नहि[1]

पछी वळी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "जे भगवाननो महिमा अतिशय समझतो होय तेणेकरीने एम जाणे जे 'गमे तेटलां पाप कर्या होय ने जो भगवाननुं एक नाम लीधुं होय तो सर्वे पाप बळीने भस थइ जाय' एवुं माहात्म्य समझतो होय तेने केवी रीते समझे त्यारे धर्ममांथी डगाय नहि ?" पछी मुक्तानंदस्वामीए ए प्रश्ननो उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे भगवाननो महिमा अतिशय जाणतो होय तेनेतो आवी रीते समझाय त्यारे धर्ममां रहेवाय जे 'मारेतो अखंड भगवाननुं चिंतवन करीने एकांतिक भक्त थवुंछे[2] अने जो काम क्रोध लोभादिक विकारनेविषे मारी वृत्ति जशे तो मारे भगवानना चिंतवनमां एटलो विक्षेप थशे एम जाणीने कुमार्गथकी अतिशेज डरतो रहे अने अधर्मनेविषे कोइ काळे प्रवर्तेज नहि' एवी रीते समझे तो भगवाननुं माहात्म्य अतिशय समझतो होय तोपण धर्ममांथी कोइ काळे पडे नहि[3] अने भगवाननुं जे अखंड चिंतवन थवुं ते कांइ

१ भक्ति अने धर्मनु साहचर्य होवाथी तेमाथी एकनो लोप थाय तो बन्नेनो लोप थवानो संभव छे माटे उपरथी ते बन्नेनो त्याग करवा पूर्वक आन्तर ते बे भगवानना चिंतवनद्वारा राखवा, जे सर्वथा अखंड भगवाननु चिंतवन करेछे तेणे भक्ति धर्म बन्नेने राख्याछे एमा लेशमात्र संशय नथी, केमके भगवाननी मूर्ति धर्मभक्तिना आधाररूप छे माटे भगवाननुं एकाग्रपणे करेला चिंतवनथी बन्नेनुं रक्षण संभवेछे, आवो भावार्थ समझवो । २ तेमा धर्मादिक चार हेतुओ छे तेमा धर्म मुख्य छे ते धर्म भगवानने अतिप्रिय छे केमके भगवान् धर्मरक्षण माटेज युगयुगमां प्रकट थायछे अने धर्मद्रोहिओनो नाश करेछे. भगवानने धर्म प्रिय छे माटे मारे धर्ममाज रहेवु । ३ अने अतकाळे भगवानना धामने पामे ।

थोडी वात नथी भगवाननुं चिंतवन करतां करतां जो देह मुके तो ते अति मोटी पदवीने पामेछे.

पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "एम जाणीए छीए तोपण अखंड चिंतवन रहेतुं नथी एनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एकतो अखंड चिंतवन थाय एवी श्रद्धा जोइए अने ज्यारे एवी श्रद्धा न होय त्यारे तेटलुं माहात्म्य जाण्यामांपण ओछ्यप छे अने ज्यारे माहात्म्य जाण्यामां ओछ्यप छे त्यारे भगवानना स्वरूपना निश्चयमांपण एटली ओछ्यप छे माटे जो भगवानना स्वरूपनुं माहात्म्य तथा श्रद्धा होय तो अखंड चिंतवन थाय ते माहात्म्य एम जाणवुं जे 'भगवानतो' जेवा प्रकृतिपुरुप थकी पर छे तेवा ने तेवाज प्रकृतिपुरुपमां आव्या छे तोपण प्रतापे युक्त छे अने प्रकृतिपुरुपनुं कार्य जे ब्रह्मांड तेनेविषे आव्या छे तोपण भगवान् तेवा ने तेवा प्रतापे युक्त छे पण भगवाननी मूर्तिनेविषे कोइ रीते मायानो लेश अडतो नथी, जेम अन्य धातु छे ने सोनुंपण छे तेने भेळां करीने पृथ्वीमां दाटे तो सोना विना अन्य धातु छे ते सर्वे घणे काळे करीने धूळ्य भेळां धूळ्य थइ जाय अने सोनुं होय तेतो जेम पृथ्वीमां रहे तेम वृद्धि पामे पण घटे नहि, तेम भगवान् अने बीजा जे ब्रह्मादिक देव तथा मुनि ते कांइ सरखा नथी; केमजे ज्यारे विषयरूपी धूळ्यनो योग थाय त्यारे भगवान् विना बीजा गमेतेवा मोटा होय तोपण विषयमां एकरस थइ जाय अने भगवानतो मनुष्य जेवा जणाता होय तोपण एने मायिक पदार्थ बाध करवाने समर्थ थाय नहि अने गमेतेवा विषय होय तो तेमां कोइ दिवस लोपाय नहि एवुं भगवाननुं अलौ-

१ सर्वदा अतिशुद्ध छे स्वतंत्र छे तथा निर्विकार छे अने ।

किक सामर्थ्य छे' एम भगवाननुं माहात्म्य जाणे तो तेने भगवाननुं अखंड चिंतवन थाय. अने ज्यांसुधी विषयनो लीधो लेवाय त्यांसुधी ए भक्त भगवाननो अलौकिक महिमा जाण्योज नथी अने जो उद्धवजी हता तेने भगवाने एम कह्युं जे 'हे उद्धव! हुंथकी अणुमात्र न्यून नथी' ते शामाटे जे उद्धवजिए अलौकिक भगवाननुं माहात्म्य जाण्युं हतुं ने पंच विषयना लिधा लेवाता नहोता अने जेने भगवाननो महिमा समझायछे तेने राज्य होय अथवा भीख मागी खाय ते बेय सरखुं वर्ते अने बाळक स्त्री अने सोळ वर्षनी स्त्री अने एशि वर्षनी स्त्री ते सर्वेमां सरखो भाव वर्ते अने जेजे संसारमां सारुं नरसुं पदार्थ होय ते सर्वेमां सरखी भावना रहे पण सारा पदार्थमां पतंगीयानी पेठे अंजाइ जाय नहि अने भगवान् विना बीजा कोइ पदार्थमां लोभाय नहि एक भगवाननी मूर्तिमांज लोभाय अने एवी रीते जे वर्ततो होय ते भक्त गमे तेवा मोटा विषय होय तेमां बंधाय नहि. अने जो एवो मर्म न समझायो होय तो फाटी लंगोटी तथा तुंबडी तेमांथीपण मनने उखेडवुं महा मुशकेल छे माटे आवी रीते भगवाननी मूर्तिनुं माहात्म्य जाण्या विना बिजां कोटि साधन करे तोपण भगवाननी मूर्तिनुं अखंड चिंतवन थतुं नथी अने जे भगवानना स्वरूपनो महिमा जाणेछे तेनेज भगवाननुं अखंड चिंतवन थायछे। इति वचनामृतम् ॥४॥१२७॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि ७ सातमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ ओटा उपर चाकळो नंखावीने विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने मुनि ताल मृदंग लइने गावता हता.

पछी श्रीजिमहाराजे नेत्रकमळनी साने करीने ते कीर्तन रखावी-ने बोल्या जे सर्वे सांभळो एक वात करीए छीए जे, जे भगवानना भक्त होय तेने एक पतिव्रतानो धर्म राखवो अने बीजुं शूरवीरपणुं राखवुं, जेम पतिव्रता स्त्री होय तेने पोतानो पति वृद्ध होय तथा रोगी होय तथा निर्धन होय तथा कुरूप होय पण पतिव्रता स्त्रीनुं मन कोइ बीजा पुरुषना रुडा गुण देखीने डोलेज नहि अने जो रांकनी स्त्री होय ने ते जो पतिव्रता होय तो मोटो राजा होय तोपण तेने देखीने ते पतिव्रतानुं मन चळेज नहि, एवी रीते भगवानना भक्तने पतिव्रतानो धर्म भगवाननेविषे राखवो. अने पोताना पतिनुं कोइ घसातुं बोले ते ठेकाणे कायर थइने गळी जवुं नहि अतिशय शूर-वीर थइने जवाब देवो पण पाजिपळावनी छायामां भगवानना भक्तने दबावुं नहि एवी रीते शूरवीरपणुं राखवुं. अने लोकमां एम कहेछे जे 'साधुनेतो समदृष्टि जोइए' पण ए शास्त्रनो मत नथी केमजे नारद सनकादिक ने ध्रुव प्रह्लादादिक तेमणे भगवाननो ने भगवानना भक्तनोज पक्ष राख्योछे पण विमुखनो पक्ष कोइए राख्यो नथी अने जे विमुखनो पक्ष राखतो हशे ते आ जन्मे अथवा बीजे जन्मे जातो जरूर विमुख थशे माटे जे भगवानना भक्त होय तेने जरुर भगवदीयनो पक्ष राख्यो जोइए अने विमुखनो पक्ष त्याग्यो जोइए. आ अमारी वार्ताने सर्वे अतिदृढ करीने राखज्यो । इति वचनामृतम् ॥ ५ ॥ १३८ ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्रीस-हजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासु-देवनारायणना मंदिर आगळ वेदि उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा

देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने परमहंस ताल मृदंग लइने कीर्तन गावता हता.

पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे कीर्तन राखो हवे भगवद्वार्ता करीए, पछी सर्वे मुनि हाथ जोडीने बेठा, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "आ संसारमां केटलाक यवन सरखा जीव होय ते एम कहेछे जे 'गंगाजीनुं पाणी ने बीजुं पाणी ए बेय सरखां जणायछे अने शालग्राम ने बीजा पाणा ते सरखा जणायछे अने तेमज तुळसी ने बीजां झाड ते सरखां जणायछे अने ब्राह्मण ने शूद्र तेपण सरखा जणायछे अने ठाकोरजीनी प्रसादी अन्न ने बीजुं अन्न ते बेय सरखां जणायछे अने एकादशीने दिवस भुख्या रह्या ने बीजे दिवस भुख्या रह्या ए बेय सरखां जणायछे अने साधु ने असाधु ए बेय सरखा जणायछे ते माटे आ विधिनिषेधनो जे विभाग ते मोटा पुरुष कहेवाया तेणे शासारु शास्त्रमां कह्यो हशे' एम दुष्टमतिवाळा जे जीव छे ते कहेछे, माटे सर्व संतने अमे आ प्रश्न पुछीए छीए जे ए विधिनिषेधनो विभाग मोटा पुरुषे शास्त्रमां कह्योछे ते साचो छे के कल्पित छे?" ते प्रश्ननो उत्तर नाना नाना परमहंस होय ते करो, पछी नाना नाना परमहंस हता ते बोल्या जे, विधिनिषेधनो भेद सत्य छे अने एम न होय तो स्वर्ग नरक केने माथे

रुपीयानो ढगलो थायछे, तेम मोटा पुरुषनी आज्ञाए करीने जे धर्म पाळे त्यारे हमणांतो कांइ विधिनिषेधमां विशेष जणातुं नथी पण अंते मोटा पुरुषनी आज्ञा पाळनारानुं कल्याण थायछे, जेम हुंडी-मांथी रुपीया नीसरेछे तेम, अने जे समर्थ साहुकारे हुंडी लखी होय अने तेनो विश्वास नकरे तेने मूर्ख जाणवो अने तेने ते साहुकारना प्रतापनी खबरज नथी, तेम नारद, सनकादिक, व्यास, वाल्मीक इत्यादिक जे मोटा पुरुष तेना वचननो जेने विश्वास नथी तेने नास्तिक जाणवो ने महा पापिष्ठ जाणवो. अने वळी जे नास्तिकमतिवाळा होय तेने एम समझायछे जे 'बीजा पाणामां ने ठाकोरजीनी मूर्तिमां शो फेर छे? सर्वे पाणा एक सरखा छे अने परणेली स्त्री ने न परणेली स्त्री तेमां शो फेर छे? सर्वे स्त्री सरखी छे अने घरनी स्त्री ने मा बेन तेमां शो फेर छे? सर्वेनो सरखोज आकार छे अने राम कृष्णादिक जे भगवाननी मूर्तियो तेपण सर्वे मनुष्य जेवी छे माटे अधिकन्यूनभावतो माणसे कल्पीने उभो कर्योछे पण शुं करीए माणस भेळुं रहेवुं ते माणसनी हायेहा कही जोइए पण विधिनिषेधनो मार्ग छे ते खोटो छे' एम पापी एवा जे नास्तिक ते पोताना मनमां समझेछे माटे जेनी आवी जातनी बोली सांभळीए तेने पापिष्ठ जाणवो ने नास्तिक जाणवो अने एने चांडाळ जाणीने एनो कोइ प्रकारे संग राखवो नहि.

अने वळी श्रीजिमहाराजे बीजी वार्ता करी जे, मनुष्यमात्रनुं चित्त केवुं छे तो जेम मध होय अथवा गोळ साकर खांड तेनुं घाडुं पाणी होय ते सरखुं छे ते मधमां के गोळ साकर खांडना पाणीमां मांखी कीडी मकोडो जे आवे ते चोटी रहे अने मनुष्य जो हाथ अडाडे तो माणसनी आंगळीएपण चोटी जाय, तेम चित्तनो स्वभाव एवो छे जे—जेजे पदार्थ

सांभळे तेते पदार्थमां चोटी जायछे ते जो पथरो तथा कचरो तथा कुतरानो मळ ए आदिक जे नकारी वस्तु होय तेमांतो लेशमात्र सुख नथी तोपण ए नकारी वस्तुमांपण चित्त वळगेछे अने ते सांभरी आव्युं होय तो तेनुंपण चिंतवन करेछे एवो एनो वळगवानो स्वभाव छे जेम मोटुं काचनुं दर्पण होय तेमां मोटा साधु आवे तो तेनुंपण प्रतिबिंब देखाय तथा कुतरां गधेडां चांडाळादिक जेजे आव्या होय तो तेनुंपण प्रतिबिंब तेमज देखाय, तेम चित्तनेविषे अति निर्मळपणुं छे ते जे पदार्थ सांभरे ते देखाइ आवेछे एमां सारा नरसानो कांइ मेळ नथी, माटे जे मुमुक्षु होय तेने एम न विचारवुं जे 'मारे वैराग्य नथी ते माटे स्त्रीयादिक पदार्थ मारा चित्तमां स्फुरेछे' एतो जे वैराग्यवान् होय तेना चित्तमांपण जे समे जे पदार्थ आव्युं ते सहजे स्फुरी आवेछे माटे वैराग्य अवैराग्यनुं कांइ कारण नथी एतो चित्तनो स्वभावज एवो छे जे 'भलुं अथवा भुंडुं सांभळ्युं तेने चिंतवे' अने ज्यारे जे पदार्थनुं चिंतवन करे त्यारे ते पदार्थ जेम दर्पणमां देखाइ आवे तेम देखाइ आवे ते माटे एम जाणवुं जे 'हुंतो ए चित्तथकी जुदो छुं अने हुंतो एनो जोनारो आत्मा छुं' एम जाणीने चित्तना सारा भुंडा घाटे करीने ग्लानि पामवी नहि पोताने चित्त थकी जुदो जाणीने भगवाननुं भजन करवुं अने सदा आनंदमां रहेवुं। इति वचनामृतम् ॥ ६ ॥ १२९ ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि ११ एकादशीने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननो भक्त होय तेना मनमांतो एम होय जे भगवानना भजनमां अंतराय करे एवो एके स्वभाव राखवो नथी तोयपण अयोग्य स्वभाव रही जाय तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने वैराग्यनी दुर्बळता होय तेने टाळ्यानी श्रद्धा होय तोय स्वभाव टळे नहि, जेम दरिद्री होय ते घणां सारां सारां भोजन ने सारां सारां वस्त्रने इच्छे पण ते क्यांथी मळे ? तेम वैराग्यहीन होय तेना हृदयमां इच्छातो होय पण साधुताना गुण आववा घणा दुर्लभ छे.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जेने वैराग्य न होय ते शो उपाय करे त्यारे विकार टळे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वैराग्यहीन होय तेतो कोइ मोटा संत होय तेनी अतिशय सेवा करे अने परमेश्वरनी आज्ञामां जेम कहे तेम मंड्यो रहे पछी परमेश्वर तेने कृपादृष्टिए करीने जुवे जे 'आ बिचारो वैराग्यरहित छे तेने काम क्रोधादिक बहु पीडेछे माटे एना ए सर्वे विकार टळो' तो तत्काळ टळी जाय अने साधने करीनेतो बहुकाळ महेनत करतां करतां आ जन्मे टळे अथवा बीजे जन्मे टळे. अने तरत जे विकारमात्र टळे तेतो परमेश्वरनी कृपाए करीने टळे। इति वचनामृतम् ॥ ७ ॥ १४० ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि १२ द्वादशीने दिवस प्रातःकाळने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ चाकळा उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने परमहंस ताल मृदंग लइने कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजिमहाराज संत प्रत्ये बोल्या जे एकादशीनुं व्रत करवुं तेनीतो एम विगती छे जे, पूर्वे भगवान् दश इंद्रियो अने अगीयारमुं मन तेने अंतर सन्मुख करीने पोढ्या हता ते समयमां नाडीजंघनो दीकरो जे मुरदानव ते युद्ध करवा आव्यो, पछी भगवानना एकादश इंद्रियोना तेजमांथी एक कन्या उत्पन्न थइ त्यारे मुरदानव कन्या प्रत्ये बोल्यो जे 'तुं मने वर्य' पछी कन्या बोल्यां जे मारे तो एवी प्रतिज्ञा छे जे 'जे मने युद्धमां जीते तेने हुं वरुं' पछी मुरदानवने अने कन्याने युद्ध थयुं त्यारे कन्याए मुरदानवनुं मस्तक खड्गे करीने कापी नाख्युं, पछी भगवाने प्रसन्न थइने ते कन्याने कह्युं जे 'तुं वर माग्य' त्यारे ते कन्याए वर माग्यो जे 'मारा व्रतने दिवस कोइ अन्न न खाय अने हुं तमारा एकादश इंद्रियोना तेजमांथी प्रकट थइ माटे मारुं नाम एकादशी छे अने हुं तपस्विनी छुं माटे मारा व्रतने दिवस मन आदिक जे अगीयार इंद्रियो तेनो जे आहार ते कोइ करे नहि' एवुं एकादशीनुं वचन सांभळीने भगवाने ते वर आप्यो, एवी रीते पुराणनी कथा छे. अने वळी धर्मशास्त्रमांपण एम कह्युंछे जे 'एकादशीनुं व्रत करवुं ते दिवस काम क्रोध लोभादिक संबन्धी भुंडा घाट मनमां थवा देवा नहि अने देहे करीने कांइ भूंडुं आचरण करवुं नहि' एम शास्त्रमां वचन छे. अने ते शास्त्रप्रमाणेज अमेपण कहीए छीए जे 'एकादशीने दिवस ढोर[1] लांघण करवी नहि अने एकादश इंद्रियोना आहारनो त्याग करे त्यारे ते एकादशी साची ने ते विनातो ढोर लांघण कहेवाय' अने जेम प्राणने अन्ननो आहार छे तेमज श्रोत्रने शब्दनो आहार छे अने त्वचाने स्पर्शनो आहार छे ने नेत्रने रूपनो आहार छे ने जिह्वाने रसनो

१ अन्य नियमोने नहि पाळीने केवळ उपवासमात्र करवो ते ।

आहार छे ने नासिकाने गंधनो आहार छे ने मनने संकल्प विकल्प-नो आहार छे एवी रीते अगियारे इंद्रियोना जुदाजुदा आहार छे ते सर्वे आहारनो त्याग करे तेनुं नाम एकादशी व्रत कहेवाय पण अ-गियारे इंद्रियो कुमार्गे दोडे अने पोतपोताना अन्नने खाय ते एका-दशीनुं व्रत शास्त्रप्रमाणे न कहेवाय, माटे एकादशीनुं व्रत करवुं त्यारेतो अगियारे इंद्रियोने आहार करवा देवा नहि, एवुं व्रत पन्नर दिवसमां एकवार आवे ते खबडदार थइने करवुं तो तेने उपर भग-वान् प्रसन्न थायछे पण ते विना जे ढोर लांघण तेणे करीने भग-वान् प्रसन्न थता नथी. अने श्वेतद्वीपमां जे निरन्नमुक्त कहेवायछे तेतो सदाय ए व्रत राखेछे क्यारेकपण ए व्रतनो भंग थवा देता नथी माटे निरन्न कहेवायछे. अने आपणेपण इच्छातो एम राखवी जे 'जेवा श्वेतद्वीपमां निरन्न मुक्त छे तेवुंज थवुंछे' पण ए वातमां हिम्मत हारवी नहि एवी रीते जे हिम्मत राखीने जेवुं मोरे कह्युं तेवुं एकादशीनुं व्रत करे अने भगवाननी कथा कीर्तनादिकने करे ने सांभळे ने रात्रिए जागरण करे तो ते व्रत साचुं छे अने शास्त्र-मां एनुंज नाम एकादशी कहीछे, एटली वात करीने श्रीजिमहा-राज मौन रह्या ने संते कीर्तन गाववा मांड्यां.

पछी वळी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यारे ब्रह्माए प्रथम सृष्टि क-री त्यारे सर्वे प्रजाने कह्युं जे 'तमो सर्वे यज्ञ करज्यो ने ते यज्ञे करीने तमारे सर्व पुरुषार्थनी सिद्धि थशे अने सृष्टिनीपण वृद्धि थशे माटे यज्ञतो जरुर करज्यो' पछी वेदमां बहु प्रकारना जे यज्ञ हता ते सर्वे ब्रह्माए विधिसहित बताव्या, तेमां जे प्रवृत्तिमार्गवाळा हता तेनेतो राजसी तामसी एवा प्रवृत्तिमार्गना यज्ञ बताव्या अने जे निवृ-त्तिमार्गवाळा हता तेनेतो सात्त्विक यज्ञ बताव्या ते यज्ञ श्रीकृष्णभ-

गवाने भगवद्गीतानेविषेपण कह्या छे, माटे आपणे तो निवृत्तिमार्गवाळा छीए ते आपणेतो सात्त्विक यज्ञ करवा पण जेमां पशु मरतां होय एवा जे राजसी तामसी यज्ञ ते आपणे करवा नहि, ते सात्त्विक यज्ञनी रीत जे 'दश इंद्रियो ने अगियारमुं मन ए सर्वे जेजे विषयमां चोटे त्यांथी पाछां खेंचीने ब्रह्म अग्निनेविषे होमवां' एनुं नाम योगयज्ञ कहेवाय. अने एवी रीते होमतां होमतां जेम यज्ञ करनाराने भगवान् दर्शन आपेछे तेमज ए योगयज्ञना करनाराना अंतरनेविषे पोतानुं स्वरूप जे ब्रह्म तेनेविषे परब्रह्म जे श्रीपुरुषोत्तम ते प्रकट थइ आवेछे ए योगयज्ञनुं फळ छे. अने अंतर्दृष्टिए करीने जे भगवानना भक्तने वर्तवुं ते ज्ञानयज्ञ कहेवायछे. हवे कोइ एम पुछे जे 'अंतर्दृष्टि ते शुं?' तो तेनो उत्तर ए छे जे 'बाहेर अथवा मांहीली कोरे भगवाननी मूर्ति सामी जे वृत्ति करवी' एज अंतर्दृष्टि छे. अने ते विनातो अंतर्दृष्टि करीने बेठो छे पण बाह्यदृष्टिज छे माटे बाहेर भगवाननुं दर्शन तथा पूजन तथा भगवाननां कथा कीर्तन ए आदिक जेजे भगवान् संबन्धी क्रियाओ होय ते सर्वे अंतर्दृष्टि छे अने ए सर्वे ज्ञानयज्ञ थायछे अने तेज भगवाननी मूर्तिने अंतरमां धारीने तेनुं पूजन वंदनादिक जे करवुं तेपण अंतर्दृष्टि छे ने ज्ञानयज्ञ छे माटे सत्संगीमात्रनेतो एवो अखंड ज्ञानयज्ञ थायछे. अने समाधितो कोइकने थायछे ने कोइकने नथी थती तेतो परमेश्वरनी इच्छाए करीने एम रह्युंछे. अथवा कोइक ठेकाणे भक्तनी कचाइ वर्ते करीने एम रह्युंछे. अने कोइक मूर्ख लोक छे ते एम कहेछे जे 'गोपिकाना अंगनां

१ योगयज्ञनी अपेक्षाए ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ छे "यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि" एम गीतामां कह्युं छे। तथा "एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः। यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा" एम विष्णुसहस्रनामस्तोत्रमां कह्युं छे ।

कीर्तन होय ते रहेवा द्यो अने निर्गुण कीर्तन होय ते गावो' तथा जे उघाडा थइने फरता होय तेने मूर्ख होय ते निर्गुणपुरुष कहेछे पण जो उघाडा चाल्ये निर्गुण थवातुं होय तो कुतरां गधेडां इत्यादिक सर्वे निर्गुण कहेवाय माटे एतो मूर्खनी समझण छे अने ज्ञानी भक्त होय तेतो एम जाणे जे 'भगवाननुं स्वरूप छे तेज निर्गुण छे अने जेने जेने ते भगवाननो संवन्ध थयो ते सर्वे निर्गुणमार्गवाळा छे अने जेजे कथा कीर्तनने विषे भगवानना स्वरूपनो संबन्ध छे ते सर्वे निर्गुण कहेवाय अने जे कथा कीर्तनने विषे भगवाननो संवन्ध न होय ते मायिक गुणे युक्त छे माटे सगुण कहेवाय अने जो भगवाननी प्राप्ति न थइ होय ने ते उघाडा फरे तो निर्गुण न कहेवाय अने जेने भगवाननी प्राप्ति थइ छे अने गृहस्थाश्रमी छे तोपण ते निर्गुण कहेवाय अने त्यागी होय तेपण निर्गुण कहेवाय' माटे भगवानने पाम्यानो जे मार्ग तेज निर्गुणमार्ग छे अने ते जेजे भगवान् संवन्धी क्रिया करे ते सर्वे निर्गुण छे. अने जेने भगवाननो संवन्ध थयोछे तेना भाग्यनो पार आवे नहि अने ते भगवाननो संवन्ध एक जन्मने पुन्ये करीने थतो नथी एतो श्रीकृष्णभगवाने गीतामां कह्युं छे जे-"अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्" ए श्लोकनो ए अर्थ छे जे 'अनेकजन्मनुं सुकृत भेळुं थायछे तेणेकरीने जे संसिद्ध थयो ते परमपदने पामेछे' ते परमपद ते शुं ? जे प्रत्यक्ष भगवाननी प्राप्ति तेज परमपद छे. अने वळी श्रीकृष्णभगवाने एमपण कह्युं छे जे "ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः। मनःषष्ठानींद्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥" ए श्लोकनो अर्थ ए छे जे 'आ संसारनेविषे भगवानना अंश जे जीव छे तेतो मने सहित जे पंच ज्ञानइंद्रियो तेने पंच विषयथकी खेंचीने

पोताने वश राखेछे अने जे भगवानना अंश नथी तेनेतो इंद्रियो खेंचिने ज्यां पोतानी इच्छा होय त्यां लइ जायछे' माटे आपण सर्वे इंद्रियोना दोर्या दोराता नथी तो जो भगवानना अंश छीए एवुं जाणीने अतिशय आनंदमां रहीने भगवाननुं भजन करवुं अने सर्वे इंद्रियोनी वृत्तियोने भगवानना स्वरूपमां होमवी अने सदा ज्ञानयज्ञ कर्या करवो. अने यज्ञरहितनुं कोइ रीते कल्याण थतुं नथी अने चार वेद, सांख्यशास्त्र, योगशास्त्र, धर्मशास्त्र, अढार पुराण, भारत, रामायण अने नारदपंचरात्र ए आदिक सर्वे शास्त्रनुं एज सिद्धांत छे जे 'यज्ञरहितनुं कल्याण थतुं नथी' माटे अमारीपण एज आज्ञा छे जे 'सर्वे परमहंस तथा सर्वे सत्संगी ज्ञानयज्ञ करता रहेज्यो' अने एमने एम ज्ञानयज्ञ करतां करतां ज्यारे पोतानुं स्वरूप जे ब्रह्म तेनेविषे परब्रह्म भगवान् साक्षात्कार देखाय एज ज्ञानयज्ञनुं फळ छे, एवी रीते ज्ञानयज्ञ करतां करतां ज्यारे श्वेतद्वीपमां निरन्नमुक्त छे एवुं थवाय त्यारे ज्ञानयज्ञना विधिनो अवधि आवी रह्यो अने ज्यांसुधी एवुं न थवाय त्यांसुधी एटलुं अधुरुं जाणवुं अने निरन्नमुक्त जेवा थवानी अतिशय इच्छा राखवी पण श्रद्धारहित थवुं नहि अने पोतानेविषे अपूर्णपणुं मानवुं नहि ने भगवाननी प्राप्ति थइछे तेणे करीने पोताने कृतार्थ मानीने ने सावधान थइने ज्ञानयज्ञ कर्या करवो॥इति वचनामृ०॥८॥१४१॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि १४ चौदशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ मशरुना चाकळा उपर विराजमान हता ने ते समे आनंदानंदस्वामीए पूजा करी हती ते राता किनखापनो सुरवाळ पहेर्यो हतो तथा राता किनखापनी डगली पहेरी हती तथा

मस्तक उपर सोनेरी फरता छेडानो कसुंबी रेटो बांध्यो हतो तथा कमरे जरकसि शेलुं बांध्युं हतुं तथा गुढा असमानी रंगनो रेटो खभा उपर नांख्यो हतो अने हाथे राखडियो बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे कीर्त्तन बोलीए, पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे ल्यो परमेश्वरनी वार्ता करीए, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्ञानमार्गतो एवो समझवो जे 'कोइ रीते भगवानना स्वरूपनो द्रोह थाय नहि' अने कोइक काळे भगवानना वचननो लोप थतो होय तो तेनी चिंता नहि पण भगवानना स्वरूपनो द्रोह थवा देवो नहि अने जो भगवाननुं वचन कांइक लोपायुं होय तो ते भगवाननी प्रार्थना करीनेपण छुटको थाय पण भगवानना स्वरूपनो द्रोह कर्यो होय तो तेनो कोइ रीते छुटको थाय नहि, माटे जे समझु होय तेने भगवानना वचनमांतो जेटलुं पोतानी सामर्थि प्रमाणे रहेवाय तेटलुं अवश्य रहेवुं पण भगवाननी मूर्तिनुं बळ अतिशय राखवुं जे 'सर्वोपरी ने सदा दिव्य साकारमूर्ति अने सर्व अवतारनुं अवतारी एवुं जे भगवाननुं स्वरूप छे तेज मने प्राप्त थयुंछे' अने जे एम जाणतो होय ने तेथी जो कदाचित् सत्संगथी बाहेर निसरी जवाणुं तोयपण तेने भगवाननी मूर्तिमांथी हेत टळतुं नथी अने ते हमणांतो सत्संगथी बाहेर छे पण देह मुकीनेतो अंते भगवाननुं जे अक्षरधाम तेनेविषे भगवानने समीपे जशे अने हमणे सत्संगमां रहेतो हशे अने शास्त्रनां वचनमांपण रहेतो हशे अने तेने जो भगवत्स्वरूपनी निष्ठा पाकी नहि होय तो ते ज्यारे देह मुकशे त्यारे कांतो ब्रह्माना लोकमां जशे ने कांतो कोइक बिजा देवताना लोकमां जशे पण ते पुरुषोत्तमभगवानना धामनेविषे नहि जाय तेमाटे पोताने साक्षात् म-

व्युं जे भगवाननुं स्वरूप तेने सदा दिव्य साकारमूर्ति ने सर्व अवतारनुं कारण अवतारी एवुं जाणवुं अने जो एम न जाणे ने निराकार जाणे ने बीज़ा अवतार जेवा जाणे तो एनो द्रोह कर्यो कहेवाय. अने जेम अर्जुन हता तेनेतो भगवत्स्वरूपनुं बळ हतुं अने युधिष्ठिर राजानेतो शास्त्रना वचननुं बळ हतुं पछी ज्यारे भारती लडाइ थइ त्यारे श्रीकृष्णभगवाने अर्जुनने कह्युं जे-"सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥" ए श्लोकनो ए अर्थ छे जे 'हे अर्जुन! सर्वधर्मने तजीने तुं एक माराज शरणने पाम्य तो हुं तने सर्व पापथकी मुकावीश तुं कांइ शोक करीश मां' ए वचनने मानीने अर्जुन जेते लडाइनेविषे अनंत दोष थया तोपण लेशमात्र मनमां झांखा थया नहि अने भगवानना आश्रयनुं वळ राखी रह्या अने युधिष्ठिरे कांइ पाप कर्युं नहि तोपण शास्त्रना वचननो विश्वास हतो तेणेकरीने एम जाण्युं जे 'मारुं कोइ काळे कल्याण नहि थाय' पछी सर्वे ऋषिए समझाव्या तथा व्यासजिए समझाव्या तथा श्रीकृष्णभगवाने पोते समझाव्या तोयपण शोक मुक्यो नहि, पछी श्रीकृष्णभगवाने भीष्मपासे लइ जइने शास्त्रसंबन्धी कथा संभळावी त्यारे कांइक विश्वास आव्यो तोयपण अर्जुन जेवा निःसंशय थया नहि, माटे बुद्धिमानने तो भगवत्स्वरूपनुं बळ अतिशय राख्युं जोइए ए बळ जो लेशमात्रपण होय तो मोटा भयथी रक्षा करे. तेपण श्रीकृष्णभगवाने कह्युं छे जे—"स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्" ए श्लोकनो ए अर्थ छे जे 'भगवत्स्वरूपना बळनो लेशमात्र होय तेपण मोटा भयथकी रक्षाने करेछे' जेम अर्जुने भारती लडाइ करी त्यारे तेनेविषे केटलीक जातना अधर्मरूपी मोटा

मोटा भय आव्या पण ते भयथकी जे अर्जुननी रक्षा थइ ते भगवत्स्वरूपना बळने प्रतापे थइ, माटे जेने सर्वथी भगवत्स्वरूपनुं बळ अधिक होय एज एकांतिक भक्त कहेवाय अने तेज पाको सत्संगी कहेवाय. अने श्रीमद्भागवतमांपण एज वात प्रधान छे जे 'श्रुति स्मृतिना धर्मने कांइक तजाय तो तेनी चिंता नहि पण भगवाननो आश्रय तजवो नहि' अने कोइक एम जाणे जे 'आवी वात करीए तो धर्म खोटा थइ जाय' पण आ वार्ता कांइ धर्मने खोटा कर्या सारु नथी आतो एटला सारु छे जे देश, काळ, क्रिया, संग, मंत्र, शास्त्र, उपदेश अने देवता एटलां वानां शुभ ने अशुभ ए बे प्रकारनां छे तेमांथी जो अशुभनो योग थाय ने एने कांइक विघ्न पडे तोपण जो भगवानना स्वरूपमां निष्ठा पाकी होय तो ते कल्याणना मार्गमांथी कोइ काळे पडे नहि अने जो भगवत्स्वरूपनी निष्ठामां काच्यप होय तो जे दिवस धर्ममांथी चळि जवाय ते दिवस ते एम जाणे जे 'हुं नरकमां पडी चुक्यो' माटे जेने भगवत्स्वरूपनुं बळ तेज पाको सत्संगी छे अने ए विना बीजातो गुणबुद्धिवाळा कहेवाय अने जेने भगवत्स्वरूपनी निष्ठा पाकी होय तेनेज शास्त्रमांपण एकांतिक भक्त कह्या छे. अने आ समयमां जेवी सत्संगमां वार्ता थायछे तेने जो नारद सनकादिक ने ब्रह्मादिक देवता सांभळे तो सांभळीने एम कहे जे 'आवी वार्ता कोइ काळे सांभळीपण नथी अने सांभळशुंपण नहि आ वार्तातो 'न भूतो न भविष्यति' एवी छे अने अतिशय झीणी वार्ता थायछे तोपण अतिशय स्थूळबुद्धिवाळा होय तेनेपण समजायछे एवी मूर्तिमान् वार्ता थायछे माटे 'आ समे जेने सत्संगमां प्रतीति आवी छे तेना पुन्यनो पार आवे एम नथी' एवुं जाणीने सत्संगी होय तेने पोतानेविषे कृतार्थपणुं मान्युं जोइए. अने जेने भगवानने विषे

अतिशय प्रीति होय तेनेतो आ वार्ता समझाय अथवा न समझाय तोपण तेनेतो कांइ करवुं रह्युं नथी पण जेने परमेश्वरनेविषे अतिशय प्रीतितो न होय तेनेतो जरुर भगवानना स्वरूपनो महिमा समज्यो जोइए माटे जे डाह्यो होय तेनेतो आ वार्ता समझी विचारीने अतिदृढ भगवाननो आशरो करवो एज मत अति सारमां सार छे। इति वचनामृतम् ॥९॥१४२॥

संवत् १८७८ ना श्रावण वदी ३ तृतीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए असवार थइने श्रीलक्ष्मीवाडीए पधार्या हता पछी ते फुलवाडीने मध्ये आंबाना वृक्षनी हेठे वेदि छे ते उपर उत्तरादुं मुखारविंद करीने विराजमान् हता ने श्रीजिमहाराजे सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां तथा पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,[२] श्रीमद्भागवतमां साकार ब्रह्मनुं प्रतिपादन छे पण जे वांचनारा होय तेने जो परमेश्वरनी भक्ति न होय तो भगवाननुं स्वरूप श्रीमद्भागवतमांथी पण निराकार समझायछे अने द्वितीयस्कंधमां ज्यां आश्रयनुं रूप कर्युं छे त्यांपण भगवाननुं स्वरूप भक्तिहीन होय तेने निराकार समझायछे पण भगवाननुं स्वरूप निराकार नथी, कांजे भगवानथकीज सर्व स्थावर जंगम सृष्टि थायछे, ते जो भगवान् निराकार होय तो तेथकी साकार सृष्टि केम थाय? जेम आकाश निराकार छे तो तेथकी जेवा पृथ्वीथकी घटादिक आकार थायछे तेवा थता नथी, तेम ब्रह्मादिक जे सृष्टि ते साकार छे तो तेना करनारा जे परमेश्वर तेपण साकारज छे. अने भागवतमां 'अध्यात्म, अ-

१ माणकी। २ भरतखंडमां आ समयमां श्रीमद्भागवतपुराण सर्वोपरि वर्तेछे ते।

धिभूत अने अधिदेव ए त्रणनो जे आधार छे ते भगवाननुं स्वरूप छे, एम कह्युंछे तेनी वात करीए ते सांभळो, अध्यात्म जे विराट्पुरुषनां इंद्रियो अने अधिभूत जे तेनां पंच महाभूत अने अधिदेव जे विराट्नां इंद्रियोना देवता ए सर्वे विराट्नेविषे आव्या तोपण विराट् उभो न थयो पछी वासुदेवभगवाने पुरुषरूपे थइने ज्यारे विराट्पुरुषनेविषे प्रवेश कर्यो त्यारे विराट्पुरुष उभो थया, ते भगवान् विराट्पुरुषनां जे अध्यात्म, अधिभूत अने अधिदेव तेनेविषे तदात्मकपणे करीने वर्ते-छे अने स्वरूपेतो विराट्थकी न्यारा छे अने तेनेज आश्रय करवा योग्य स्वरूप कह्युंछे. अने जेम अग्नि छे ते प्रकाशस्वरूपेतो अरूप छे ने अग्नि पोतेतो मूर्तिमान् छे ते ज्यारे अग्निने अजीर्ण थयुं हतुं त्यारे मूर्तिमान् अग्नि श्रीकृष्णभगवान ने अर्जुन पासे आव्यो हतो पछी ज्यारे इंद्रनुं खांडव वन बाळवा गयो त्यारे तेज अग्नि ज्वालारूप थइने समग्र वनमां व्याप्यो, तेमज पुरुषोत्तमभगवान् छे ते ब्रह्मरूप जे पोतानी अंतर्यामी शक्ति तेणेकरीने सर्वेनेविषे व्यापक छे ने मूर्तिमान्थका सर्वथी जुदा छे. अने ब्रह्म छे तेतो पुरुषोत्तमभगवाननी किरण छे अने पोते भगवा-नतो सदा साकारमूर्तिज छे, माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेनेतो भग-वानने मूर्तिमान् समझीने तेनो आश्रय दृढ राखवो अने वातपण एवी करवी जे 'कोइने भगवाननो आश्रय होय ते टळे नहि' अने जेम स्त्रीना उदरमां गर्भ होय पछी तेमांथी पुत्ररूप फळ उदय थायछे, तेम जेने भगवानना स्वरूपनो निश्चयरूप गर्भ होय तेने भगवाननुं जे अक्षरधाम तेरूप फळनी प्राप्ति थायछे माटे एवो उपाय करवो 'जेणे करीने ए गर्भने विघ्न न थाय' अने बीजानेपण एवी वात करवी 'जेणे करीने भगवानना निश्चयरूप गर्भनो पात न थाय.'

१ पोतानी प्रवृत्ति करवामां समर्थ थया । २ तेना अन्तर्यामिपणे । ३ दिव्यमूर्तिथीतो ।

पछी श्रीजिमहाराज वाडीथकी दादाखाचरना दरबारमां पधार्या अने उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान थया अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे नाना नाना परमहंसने बोलावीने परस्पर चर्चा करावी, पछी अचिंत्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्युं जे 'ज्ञान वैराग्य अने भक्ति ए त्रणनेविषे भगवानना स्वरूपमां प्रीति थयानुं विशेष कारण कोण छे?' पछी ए प्रश्ननो उत्तरतो कोइथी थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए अने ज्ञान वैराग्य ने भक्ति तेनुं रूप जुदुंजुदुं कहीए जे, जीवमात्रनो एवो स्वभाव छे जे 'सारुं पदार्थ देखे त्यारे तेथी उतरतुं जे पदार्थ होय तेमांथी सहजेज प्रीति टळी जायछे' माटे भगवाननुं जे अक्षरधाम छे ने तेनेविषे जे सुख छे तेनी आगळ जे आ मायिक सुख छे तेतो नकल जेवुं छे अने अचळ सुखतो भगवानना धामनेविषेज छे माटे परमेश्वरनी वात सांभळतां सांभळतां जो भगवान संबन्धी सुख ओळखाय तो जेटलुं मायाथकी उत्पन्न थयुंछे ते सर्वे तुच्छ जणाय, जेम त्रांबानो पैसो कोइक पुरुषना हाथमां होय तेने ज्यारे ते पैसामाटे सोनामहोर कोइ आपे त्यारे त्रांबाना पैसामांथी हेत उतरी जायछे, एवी रीते ज्यारे भगवान् संबन्धी सुखमां दृष्टि पहोचे त्यारे जेटलुं मायिक सुख छे ते सर्वथकी वैराग्य पामेछे अने एक भगवाननी मूर्तिमांज हेत थायछे ए वैराग्यनुं स्वरूप कह्युंछे। हवे ज्ञाननुं स्वरूप कहीए छीए जे, ज्ञाननिरूपणने विषे बे शास्त्र छे—एक सांख्यशास्त्र ने बीजुं योगशास्त्र, तेमां सांख्यशास्त्रनो मत ए छे जे, जेम आकाश जेते

पृथ्वी, जळ, तेज, वायु तेमां व्यापक छे अने आकाश विना एक अणुपण क्यांइ खाली नथी तोपण पृथ्वी आदिकना जे विकार ते आकाशने अडताज नथी, तेम पुरुषोत्तमभगवान् छे तेने आकाशनी पेठे मायिक विकार कोइ अडतोज नथी. ए वार्ता कृष्णतापनी उपनिषद्मां कहीछे जे "ज्यारे दुर्वासा ऋषि वृंदावननेविषे आव्या त्यारे श्रीकृष्णभगवाने गोपीयोने कह्युं जे 'दुर्वासा भुख्या छे माटे सर्वे थाळ लइने जाओ' पछी गोपीयोए पुछ्युं जे 'आडां यमुनांजी छे ते केम उतराशे' त्यारे श्रीकृष्णभगवाने कह्युं जे यमुनांजीने तमे एम कहेजो जे 'श्रीकृष्ण सदा ब्रह्मचारी होय तो मार्ग देज्यो' पछी गोपीयो हसती हसती यमुनांजीने कांठे जइने एम कह्युं त्यारे यमुनाजीए तत्काळ मार्ग दीधो पछी गोपीयोए ऋषिने जमाडतां ते ऋषि सर्वेना थाळ जमी रह्या, पछी गोपीयोए कह्युं जे 'अमे घेर केम करीने जइए आडां यमुनांजी छे' त्यारे ते ऋषिए पुछ्युं जे 'आव्यां त्यारे केम करीने आव्यां हतां' पछी गोपीयोए कह्युं जे श्रीकृष्णे एम कह्युं हतुं जे 'अमे सदा बाळब्रह्मचारी होइए तो यमुनाजीने कहेजो जे मार्ग देज्यो' पछी यमुनाजीए मार्ग दीधो ते तमारी पासे आव्यां छीए, ते वात सांभळीने ऋषि बोल्या जे हवे यमुनाजीने एम कहेज्यो जे 'दुर्वासा सदा उपवासी होय तो मार्ग देज्यो' पछी गोपीयो हसती हसती जइने एम कह्युं त्यारे यमुनाजीए तत्काळ मार्ग दीधो, त्यारे गोपीयो सर्वे एवे वात जोइने अतिशय आश्चर्य पामी" माटे भगवाननुं स्वरूपतो एवुं आकाशनी पेठे निर्लेपछे अने सर्वे क्रियायोने कर्ताथका भगवान् अकर्ता छे अने सर्वना संगिथकापण अत्यंत असंगी छे एवी रीते सांख्यशास्त्र भगवानना स्वरूपने निर्लेपपणे करीने कहे छे एवुं समझवुं

ए सांख्यने मते ज्ञान छे. हवे योगशास्त्रनो मत कहीए ते सांभळो, योगनो मत एम छे जे, जेने भगवाननुं ध्यान करवुं होय तेने प्रथम दृष्टि स्थिर करवी ते दृष्टि स्थिर करवा सारु भगवाननी प्रतिमा अथवा बीजुं कांइ पदार्थ होय तेमां प्रथम दृष्टिने ठरावची पछी एकने एक आकार जोतां थकां दृष्टि स्थिर थइ जाय त्यारे ते भेळुं अंतःकरणपण स्थिर थायछे अने ज्यारे अंतःकरण स्थिर थाय त्यारे भगवाननी मूर्ति हृदयमां धारवी, तेमां धारण करनारा योगीने प्रयास न पडे सुखे धरायछे अने जो प्रथमथी अभ्यास करीने अंतःकरण स्थिर न करे तो ज्यारे भगवाननुं ध्यान करे त्यारे बीजांपण केटलांक टिसळ आडां आवीने उभां रहे माटे योगशास्त्रनुं ए सिद्धांत छे जे 'प्रथम अभ्यास करीने वृत्ति स्थिर करवी ने पछी भगवान् संघाथे जोडवी' एम जाणवुं ए योगशास्त्र संबन्धी ज्ञान छे, एवी रीते ए बे शास्त्रने मते करीने जे समझण दृढ करवी तेनुं नाम ज्ञान छे। हवे भक्तिनी रीततो एम छे जे ज्यारे समुद्र मंथन कर्युं त्यारे समुद्रमांथी लक्ष्मीजी निसर्यां पछी लक्ष्मीजीए हाथमां वरमाळा लइने विचार कर्यो जे 'वरवा योग्य कोण छे तेने हुं वरुं' पछी ज्यां तपासीने जोयुं त्यांतो जेमां रूप तेमां रुडा गुण नहि ने जेमां कांइक गुण तेमां रूप नहि एवी रीते घणाकने विषे मोटां मोटां कलंक दीठां, पछी देवतामात्र तथा दैत्यमात्र तेने कलंकना भर्या देखीने सर्व गुणे करीने संपूर्ण अने सर्व दोषे रहित ने सर्व सुखना निधान एवा एक भगवाननेज दीठा त्यारे लक्ष्मीजीने भगवाननेविषे दृढ भक्ति थइ पछी अतिप्रेमे करीने भगवानने वरमाळा पहेरावी ने भगवानने वर्यां, माटे एवा कल्याणकारी गुणने जे जाणवा ने परमेश्वरनो दृढ आश्रय करवो तेनुंज नाम भक्ति छे.

ए वार्ता सांभळीने मुक्तानंदस्वामीए श्रीजिमहाराजने पुछ्युं जे

"हे महाराज! ज्ञान वैराग्य अने भक्ति एनेविषे परमेश्वरनेविषे प्रीति थवानुं केनेविषे अधिक दैवत आव्युं ते समजाणुं नहि?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भक्तिनेविषे दैवत घणुं छे अने ज्ञान वैराग्यमां दैवततो छे पण भक्ति जेटलुं नथी. अने भक्तितो अतिदुर्लभ छे, ते भक्तिवाळानां लक्षण आवां होयछे जे ज्यारे जीवोना कल्याण अर्थे भगवान् मनुष्य जेवी मूर्ति धरीने पृथ्वीनेविषे विचरेछे त्यारे भगवाननां केटलांक चरित्रतो दिव्य होय ने केटलांक चरित्रतो मायिक जेवां होय, ते ज्यारे भगवाने कृष्णावतार धार्यो त्यारे देवकी वसुदेवने चतुर्भुज दर्शन दीधुं तथा गोवर्धन तोळ्यो तथा काळीयनागने काढीने यमुनाजीनुं जळ निर्विष कर्युं तथा ब्रह्मानो मोह निवारण कर्यो तथा अक्रूरजीने यमुनाना जळनेविषे दर्शन दीधुं तथा मल्ल, हस्ति, कंसादिक दुष्टने मारीने सर्व यादवनुं कष्ट निवारण कर्युं. तेमज रामावतारने विषे धनुष भांग्युं तथा रावणादिक दुष्टने मारीने सर्व देवतानुं कष्ट निवारण कर्युं इत्यादिक जे पराक्रम ते भगवाननां दिव्य चरित्र कहेवाय. अने सीताहरण थयुं त्यारे रघुनाथजी रोतारोता घेला जेवा थइ गया तथा कृष्णावतारमां काळयवननी आगळ भाग्या तथा जरासंधनी आगळ हार्या ने पोतानी राजधानी जे मथुरा तेने तजीने समुद्रना बेटमां जइ वस्या इत्यादिक जे भगवाननां चरित्र ते प्राकृत जेवां जणायछे. माटे दिव्य चरित्र होय तेमांतो पापी होय तेनेपण दिव्यपणुं जणाय पण ज्यारे भगवान् प्राकृत चरित्र करे ने तेनेविषे पण जेने दिव्यपणुं जणाय त्यारे ते परमेश्वरनो भक्त साचो. अने भगवाने गीतामां कह्युंछे जे—"जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः। त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन!॥" ए श्लोकनो एम

अर्थ छे जे 'हे अर्जुन! मारां जन्म ने कर्म ते दिव्य छे तेने जे दिव्य जाणे ते देहने मुकीने फरी जन्मने नथी पामतो मनेज पामेछे' माटे जे भगवान् दिव्य चरित्र करे तेतो भक्त ने अभक्त बेयने दिव्य जणाय पण ज्यारे भगवान् मनुष्यना जेवां प्राकृत चरित्र करे तोपण तेनेविषे जेने दिव्यपणुंज जणाय पण कोइ रीते भगवाननां ते चरित्रमां अभाव आवे नहि एवी जेनी बुद्धि होय तेने परमेश्वरनी भक्ति कहेवाय अने एवी भक्ति करे तेज भक्त कहेवाय अने ए श्लोकमां कह्युं जे फळ ते आवा भक्तनेज थायछे. अने जेम गोपियो भगवाननां भक्त हतां ते कोइ रीते भगवाननो अवगुण लीधोज नहि अने राजा परीक्षिते तो गोपियोनी वात सांभळी एटलामांज भगवाननो अवगुण लीधो पछी शुकजिए भगवाननुं समर्थपणुं देखाडीने ते अवगुणने खोटो करी नाख्यो माटे जेजे भगवान् चरित्र करे ते सर्वेने गोपियोनी पेठे दिव्य जाणे पण कोइ रीते प्राकृत जाणीने अभावतो आवेज नहि एवी जे भक्ति तेतो महा दुर्लभ छे अने एक बे जन्मने सुकृते करीने एवी भक्ति न आवे एतो अनेक जन्मना ज्यारे शुभ संस्कार भेळा थायछे त्यारे तेने गोपियोना सरखी भक्ति उदय थायछे अने एवी भक्ति छे तेज परमपद छे माटे आवी रीतनी जे भक्ति ते ज्ञान वैराग्यथकी अधिक छे अने जेना हृदयनेविषे आवी रीतनी भक्ति होय तेने भगवाननेविषे प्रीतिमां शुं बाकी छे? कांइ बाकी नथी। इति वचनामृतम् ॥ १० ॥ १४२ ॥

संवत् १८७८ना श्रावण वदी ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेटला ग्रंथ छे ते सर्वे ग्रंथोने सांभळीने केटलाक जे जीव छे ते ए ग्रंथोने धर्म अर्थ ने कामपर जाणेछे पछी एम जाणीने पोतेपण धर्म अर्थ ने काम तेनेज अर्थे यज्ञ व्रतादिक शुभ कर्म करेछे पछी ते कर्मनुं फळ देवलोक अथवा ब्रह्मलोक अथवा मृत्युलोक तेनेविषे भोगवीने पछी त्यांथी पडेछे ने नरक चोराशीमां जायछे माटे जे जीव धर्म अर्थने कामनेविषे प्रीति राखीने जेजे सुकृत करेछे ते सर्वे सात्त्विकी राजसी ने तामसी थायछे ने ते कर्मनुं फळ स्वर्ग मृत्यु ने पाताळ ए त्रण लोकमां रहीने भोगवायछे पण गुणातीत जे भगवाननुं धाम तेने पामे नहि अने ज्यारे मोक्ष न थाय त्यारे जन्म मरण अने नरकनुं दुःख ते माटे नहि अने जो धर्म अर्थ ने काम संबन्धी जे फळनी इच्छा तेनो त्याग करीने तेनां ते शुभकर्म जो भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे करे तो एज शुभकर्म छे ते भक्तिरूप थइने केवळ मोक्षने अर्थे थायछे, त्यां श्लोक छे जे "आमयो येन भूतानां जायते यश्च सुव्रत ॥ तदेव ह्यामयं द्रव्यं न पुनाति चिकित्सितम् ॥एवं नृणां क्रियायोगाः सर्वे संसृतिहेतवः । त एवात्मविनाशाय कल्पन्ते कल्पिताः परे ॥" ए श्लोकनो पूर्वे वात करी एज भाव छे माटे ए वार्ता छे ते सुधी अटपटी छे ते जो पुरी समझाणी न होय तो भग-

---

१ अर्थः—हे सुव्रत ! जेम जे घृतादि वस्तु अति भक्षण करवाथी मनुष्योने जे रोग थायछे ते पदार्थ ते रोगने निवृत्त करतुं नथी उलटुं रोगने वृद्धि पमाडेछे, तेना ते घृतादि द्रव्यमा ताम्र भस्मादि मिश्रित करेलुं होय तो ते रोगने समग्रपणे निवृत्त करनारुं थायछे । तेम मनुष्योनी सर्वे क्रियाओ (व्रत यज्ञ दानादिक) तेना फळभोगने अंते संसृतिना कारण छे परन्तु तेना ते क्रियायोगो परमेश्वरमां भक्तिरूपे कल्प्या होय तो अनादि अज्ञाननी निवृत्ति पूर्वक मोक्षनेमाटे कल्पायछे ।

वानना भक्त होय तेनोपण सर्व अज्ञानी जीवना सरखो-देहनो व्यवहार-जोइने ते भगवानना भक्तनो अवगुण ले तेणे करीने अवगुणनो लेनारो नारकी थायछे. अने भगवानना भक्तनी ने विमुख जीवनी क्रियामांतो घणो फेर छे केमजे विमुख जेजे क्रिया करेछे ते पोतानां इंद्रियोने लाड लडाववाने अर्थे करेछे ने भगवाननो भक्त जेजे क्रिया करेछे तेतो केवळ भगवान ने भगवानना भक्त तेनी सेवाने अर्थे करेछे माटे हरिजननी जे सर्वे क्रिया तेतो भक्तिरूप छे अने जे भक्ति छे तेतो नैष्कर्म्य जे ज्ञान तेरूप छे माटे हरिजननी क्रिया छे तेतो सर्वे नैष्कर्म्यरूप छे, त्यां श्लोक भगवद्गीतानो छे 'कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः । स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥' ए श्लोकनो अर्थ छे जे 'भगवाननो भक्त होय ते भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे जेजे कर्म करेछे ते कर्मनेविषे अकर्म जे ज्ञान तेने जे देखेछे अने विमुख होय ते निवृत्तिमार्ग पकडीने अकर्मपणे रहेतो होय तोपण तेने कर्ममां बुड्यो छे एम जे देखेछे ते देखनारो सर्वे मनुष्यनेविषे बुद्धिमान् छे ने ते ज्ञानी छे तथा ते युक्त छे कहेतां मोक्षने योग्य छे अने "कृत्स्नकर्मकृत्" कहेतां सर्वे कर्मनो करनारो छे' माटे भगवाननी आज्ञाए करीने भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे भगवानना भक्त जेजे कर्म करेछे तेनो कोइ रीते अवगुण जो ले तो तेना हृदयनेविषे कुटुंबे सहित अधर्म आवीने निवास करेछे । इति वचनामृतम् ॥ ११ ॥ १४४ ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण वदी ६ छठ्यने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बारणे ओरडानी ओसरीए श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ

१ अबंधक ।

विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एक वात करीए छीए ते सर्वे सांभळो अने आ जे वार्ता कहीशुं तेमां एकज साधन कल्याणने अर्थे कहीशुं ते एकनेविषे सर्वे साधन आवी जाय एवुं एक बळवान् कल्याणनुं साधन छे ते कहिए छीए जे, देहनेविषे जे जीव छे ते एम जाणे छे जे 'काम क्रोधादिक भुंडी प्रकृतियो छे ते मारा जीव साथे जडाणी छे' एवी रीते कामादिक जेजे प्रकृति जेनेविषे मुख्य होय ते प्रकृतिने योगे करीने पोताना जीवने कामी, क्रोधी, लोभी इत्यादिक कुलक्षणे युक्त मानेछे पण जीवनेविषे तो ए एके कुलक्षण छे नहि एतो जीवे मूर्खाइए करीने पोतानेविषे मानी लीधां छे माटे जेने परमपद पामवा इच्छवुं तेने कांइक पोतानेविषे पुरुषातन राखवुं पण छेक नादार थइने वेसवुं नहि. अने एम विचार करवो जे 'जेम आ देहमां च्यार अंतःकरण छे दश इंद्रियो छे पंच प्राण छे तेम हुं जीवात्मा छुं तेपण आ देहनेविषे छुं ते सर्वथकी अधिक छुं ने ए सर्वेनो नियंता छुं' पण एम न मानवुं जे 'हुंतो तुच्छ छुं ने अंतःकरण इंद्रियोतो बळवान् छे' जेम कोइक राजा होय ने ते बुद्धिहीन होय पछी एना घरनां मनुष्य होय तेपण तेनुं वचन माने नहि पछी ए वार्तानी ज्यारे गामना मनुष्यने खबर पडे त्यारे गाममांपण कोइ हुकम माने नहि पछी देशनां मनुष्य ए वात सांभळे त्यारे देशनां मनुष्यपण कोइ एनो हुकम माने नहि पछी ते राजा ग्लानि पामीने असमर्थ थइने वेसी रहे अने कोइ उपर हुकम चलावे नहि, तेम राजाने ठेकाणे जीव छे अने घरनां

मनुष्यने ठेकाणे अंतःकरण छे ने गामनां ने देशनां मनुष्यने ठेकाणे इंद्रियो छे ते ज्यारे ए जीव नादार थइने वेसे ने पछी अंतःकरण उपर हुकम करीने परमेश्वर सन्मुख राखवाने इच्छे त्यारे अंतःकरण एवुं कह्युं करे नहि अने इंद्रियोने वश राखवा इच्छे तो इंद्रियोपण एने वश रहे नहि. पछी ए जीव कायानगरनेविषे राजा छे तोपण रांकनी पेठे ओशियाळो थइ रहेछे अने ज्यारे राजा नादार थाय त्यारे तेना नगरनेविषे मनुष्य होय ते सांढ थइने वेसेछे ने राजानुं लेशमात्र चालवा दे नहि, तेम आ जीवना कायानगरनेविषे पण जे कामादिक राजा नथी ते राजा थइने वेसेछे अने ए जीवनुं लेशमात्र चालवा देता नथी माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने एवुं नादारपणुं राखवुं नहि ने जे प्रकारे पोतानां इंद्रियो ने अंतःकरण ते सर्वे पोताना हुकममां वर्ते एवो उपाय करवो, जेम राजा होय ते राजनीतिना ग्रंथ भणीने पोताना राज्यमां पोतानो हुकम चलावे पण रैयतनो दवाव्यो दवाय नहि. अने जो राजनीति न जाणतो होय तो ते वस्ति हुकम न माने तेने मारवाज मांडे पछी पोतानो देश होय ते उजड थइ जाय अने कांतो कोइ हुकमज माने नहि तेणेकरीने पोते दुःखीयो थको वर्ते एवी रीते राजनीति जाण्या विना वेवाते वगाड थायछे, तेम जीवपण जो राजनीतिने जाण्या विना कायानगरमां हुकम करवा जाय तो एमांथी सुख थाय नहि.

पछी मुक्तानंदस्वामीए श्रीजिमहाराजने पुछ्युं जे "कल्याणने इच्छे तेने केम राजनीति भणवी?" त्यारे श्रीजिमहाराज वोल्या जे राजनीति एम भणवी जे, प्रथमतो भगवाननुं माहात्म्य सारी पेठे जाणवुं पछी भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करीने मनने वश करवुं ने भगवाननी कथा सांभळीने श्रोत्रने वश करवा पण ग्राम्यवार्ता होय ते सांभळवा

देवी नहि तेमज त्वचा ते भगवान् ने भगवानना जन तेनोज स्पर्श करे अने नेत्र ते परमेश्वर ने तेना दास तेनुंज दर्शन करे अने रसना ते अखंड भगवद्गुणनेज गाय ने भगवाननो प्रसाद होय तेनोज स्वाद ले अने नासिका ते भगवानना प्रसादि जे पुष्पादिक तेनोज सुगंध ले पण कुमार्गे कोइ इंद्रियने चालवा दे नहि एवी रीते जे वर्ते तेनो देहरूपी नगरनेविषे हुकम कोइ फेरवे नहि अने एवी रीते पुरुषप्रयत्ने युक्त जे वर्ते ने नादारपणानो सारी पेठे त्याग करे एज कल्याणने मार्गे चाल्यो तेने स्वभाव जीत्यानो अतिशय मोटो उपाय छे अने ए पुरुषप्रयत्नरूप जे उपाय छे तेने सावधान थइने करे तो जेटलां कल्याणने अर्थे साधन छे ते सर्वे पुरुषप्रयत्नरूपी साधननेविषे आवेछे माटे पुरुषप्रयत्न छे तेज कल्याणने अर्थे सर्व साधनथकी मोटुं साधन छे। इति वचनामृतम् ॥ १२ ॥ १४५ ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण वदी अमावास्याने दिवस स्वामि श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी ओसरीए चाकळा उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी चादर ओढी हती ने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे पोताना बे भुज उंचा उपाडिने सर्वेने छाना राख्या ने पछी पोताना मुखारविंदनी आगळ स्तुति करीने बेठा एवा जे संत ते प्रत्ये श्रीजिमहाराज एम बोलता हवा जे, हे संतो! जे मोटेरा मोटेरा हो ने वातमां समझता हो ते आगळ बेसो ने आ एक वात करुंछुं ते सर्वे चित्त दइने सांभळज्यो. अने आ जे मारे वात

करवी छे ते कांइ दंभे करीने नथी करवी तथा माने करीने नथी करवी तथा पोतानी मोट्यप चधारवा सारु नथी करवी एतो एम जाणीए छीए जे 'आ सर्वे संत तथा हरिभक्त छे तेमांथी ए वात कोइने समझाइ जाय तो तेना जीवनुं अतिरुडुं थाय' ते सारु करीए छीए. अने आ जे वात छे ते मारी दीठेल छे ने मारा अनुभवे करीने पण में सिद्ध करीछे अने सर्व शास्त्रमांपण मळती आवेछे अने ते ए वात सभामां कर्या जेवी नथी तोपण सभामां करीए छीए जे मारे सहज स्वभावे एम वर्तेछे जे, आ संसारनेविषे जे अतिरुडो शब्द तथा अतिरुडो स्पर्श तथा अतिरुडो गंध तथा अतिरुडो रस तथा अतिरुडुं रूप ए जे पंच विषय तेमां हुं मारा मनने बांधवाने इच्छुं तोपण नथी बंधातुं ने एमां अतिशय उदास रहेछे अने ए जे सारा पंचविषय तथा नरसा पंचविषय ते बेय सम वर्तेछे अने राजा तथा रंक तेपण समवर्तेछे अने त्रिलोकीनुं राज्य करवुं तथा ठीकरुं लइने मागी खावुं तेपण सम वर्तेछे अने हाथीने होदे बेसवुं तथा पगपाळा चालवुं तेपण सम वर्तेछे अने कोइक चंदन तथा पुष्प तथा सारां वस्त्र तथा घरेणां चडावे तथा धूळ नाखे ते बेय सम वर्तेछे अने कोइक मान आपे तथा कोइक अपमान करे ते बेय पण सम वर्तेछे तथा सोनुं रुपुं हीरो तथा कचरो ते बेय सम वर्तेछे अने आ हरिभक्त बहु मोटो छे ने आ हरिभक्त नानो छे एमपण नथी जणातुं ब्रधाय हरिभक्त सरखा जणायछे अने मारा अंतःकरणनेविषे अतितीव्र वैराग्य वर्तेछे तेनो पण भार नथी जणातो जेम कोइके माथे पाणो उपाड्यो होय तथा रुपीया ने सोनामहोरनी वांसळी केड्ये बांधी होय तेनो भार जणायछे तेम भार नथी जणातो अने मारेविषे सद्धर्म छे तेनोपण भार नथी जणातो तथा मारेविषे ज्ञान छे जे 'हुं ब्रह्म छुं' तेनोपण भार

नथी जणातो. अने आ जे हुं उपरथकी कोइक पदार्थने वखाणुंछुं ने कोइक पदार्थने कुवखाणुं छुं तेतो जाणीजाणीने करुंछुं अने जेजे पदार्थनेविषे इंद्रियोनी वृत्तिने बळात्कारे जोडुंछुं ते मांड मांड ते पदार्थ सन्मुख रहेछे अने ज्यारे ढीली मेलुंछुं त्यारे तरत पाछी वळी आवेछे, जेम आकाशनेविषे पथरो फगावीए ते ज्यांसुधी हाथने जोरे करीने ठेलाय त्यांसुधीज आकाशनेविषे रहे ने पछी पाछो पृथ्वीनेविषे आवीने पडेछे अने जेम पुंछलेल ढोर होय तेने माणस बळात्कारे करीने ज्यांसुधी उंचुं झाली राखे त्यांसुधी रहे ने ज्यारे मुकीदे त्यारे धब लइने पडी जाय अने जेम कोइक पुरुष मुझे एटलो बळीयो होय ने दांते आखी सोपारी भागी नाखतो होय अने ते पुरुषने दशविश कागदी लींबु चुमाव्यां होय पछी ते शेकेला चणापण मांडमांड चावे, तेम विषय सन्मुख बळात्कारे वृत्तिने जोडीए छीए तो मांडमांड जोडायछे. ते आ जे एम मने वर्तेछे तेनुं शुं कारण छे तो मारी इंद्रियोनी जे वृत्ति छे ते पाछी वळीने सदा हृदयनेविषे जे आकाश छे तेनेविषे वर्तेछे अने ते हृदयाकाशनेविषे अतिशय तेज देखायछे जेम चोमासानेविषे आकाशमां वादळां छाइ रह्यां होय तेम मारा हृदयनेविषे एकलुं तेज व्यापी रह्युं छे अने ते तेजनेविषे एक भगवाननी मूर्ति देखायछे ते अतिप्रकाशमय छे अने ते मूर्ति घनश्याम छे तोपण अतिशय तेजे करीने श्याम नथी जणाती अतिशय श्वेत जणायछे अने ते मूर्ति द्विभुज छे अने ते मूर्तिने बे चरण छे अने अतिशय मनोहर छे पण चार भुज के अष्ट भुज के सहस्र भुज ते ए मूर्तिने नथी ए मूर्तितो अतिसौम्य छे अने मनुष्यना जेवी आकृति छे ने किशोर छे, ते ए मूर्ति क्यारेक तो ए तेजमां उभी देखायछे ने क्यारेक बेठी जणायछे ने क्यारेक हरतांफरती देखायछे अने ए मूर्तिने चारे कोरे मुक्तनां

मंडळ भराइने बेठां छे ते सर्वे मुक्त छे ते एक नजरे ते भगवाननी मूर्ति सामुं जोइ रह्या छे ते मूर्तिने अमे प्रकट प्रमाण हमणां पण देखीए छीए अने सत्संगमां नहोता आव्या त्यारेपण देखता अने माताना गर्भमां हता ते दिवसपण देखता अने गर्भमां आव्या मोरेपण देखता अने अमे बोलीए छीए तेपण त्यांज बेठाथका बोलीए छीए अने तमेपण सर्वे त्यांज वेठा छो एम हुं देखुंछुं पण आ गढडुं शहेर के आ ओसरी ए कांइ देखातुं नथी. अने ज्यारे ए स्वरूप जेने जाण्यामां आवे तेने जेम अमने कोइ विषय संबन्धी सुखमां आसक्ति नथी तेम ते पुरुषने पण क्यांइ आसक्ति रहेज नहि अने ते स्वरूपने तो तमे पण देखोछो पण तमारा समझ्यामां परिपूर्ण आवतुं नथी अने ज्यारे ए वार्ता समझ्यामां आवशे त्यारे पंच विषय के काम क्रोधादिक स्वभाव ते जीत्यामां प्रयास थशे नहि सहजे जीताइ जशे. अने ए जे एकरस तेज छे तेने आत्मा कहिए तथा ब्रह्म कहीए ने अक्षरधाम कहीए अने ए प्रकाशनेविषे जे भगवाननी मूर्ति छे तेने आत्मानुं तत्त्व कहीए तथा परब्रह्म कहीए तथा पुरुषोत्तम कहीए तेज भगवान् रामकृष्णादिकरूपे करीने पोतानी इच्छाए जीवोना कल्याणने अर्थे युगयुगनेविषे प्रकट थायछे ते भगवान् आ लोकनेविषे मनुष्य जेवा जणायछे तोपण मनुष्य जेवा नथी ने अक्षरधामना पति छे, ते श्रीकृष्णभगवाने गीतामां कह्युंछे जे "न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम॥" माटे श्रीकृष्णभगवान् मनुष्य जेवा जणाता हता तोपण अक्षरातीत कैवल्य मूर्तिज छे. अने भगवान् जे मनुष्य देह धरेछे

१ अर्थ —जे धामने पामीने पुनरावृत्तिने पामता नथी जे धामने सूर्य, चन्द्र अने अग्नि प्रकाश करी शकता नथी, ते मारुं परम धाम छे।

ते भगवाननी मूर्तिनुं जे ध्यान करे त्यारे ए ध्यानना करनाराने ए मूर्ति तेजोमय एवी अक्षरधामनेविषे कैवल्यस्वरूपे भासेछे अने ध्याननना करनारानो जे जीव ते मायाने तरेछे अने परमपदने पामेछे माटे भगवानतो मनुष्यदेह धारण करेछे तोपण कैवल्यरूपेज छे अने ते भगवान् जे जग्यामां विराजता होय ते जग्यापण निर्गुण छे अने ते भगवानना वस्त्र अलंकार तथा वाहन तथा परिचर्याना करनारा सेवक तथा खानपानादिक जे जे पदार्थ भगवानना संबन्धने पामेछे ते सर्वे निर्गुण छे एवी रीते जेणे भगवाननुं स्वरूप जाण्युं तेने अमारी पेठेज पंच विषयमां क्यांइ प्रीति रहेती नथी ने ते स्वतंत्र थायछे. अने ए अक्षरातीत जे पुरुषोत्तम भगवान् छे तेज सर्वे अवतारनुं कारण छे अने सर्वे अवतार पुरुषोत्तममांथी प्रकट थायछे अने पाछा पुरुषोत्तमनेविषे लीन थायछे. ते ज्यारे भगवान् मूर्ति धरीने पाछा अंतर्ध्यान थायछे त्यारे ते जे भगवाननी मूर्ति ते क्यारेकतो मनुष्यनी पेठे आ पृथ्वीनेविषे पडि रहेछे, ते जेम श्रीकृष्णनी मूर्तिने खोळामां लइने रुक्मिणीजी बळी मुवां तथा ऋषभदेवनो देह हतो ते दावानळनेविषे बळी गयो एमपण थाय अने क्यारेकतो हाड मांस सहित दिव्यभाव पामीने कांइ रहे नहि अंतर्ध्यान थइ जाय अने ज्यारे प्रकट थाय त्यारेपण क्यारेकतो स्त्रीथकी जन्म धरे ने क्यारेकतो पोतानी इच्छामां आवे त्यांथकी प्रकट थइ आवेछे एम ए भगवानना जन्म ने देह मुकयानी रीततो अलौकिक छे. अने ज्यारे एवुं भगवाननुं स्वरूप छे तेने दृढ करीने समझशो त्यारे तमने कोइ प्रकारनुं विघ्न कल्याणना मार्गनेविषे नहि थाय ने ए भगवानना स्वरूपनी दृढता विनातो गमे तेटलो त्याग राखो ने गमे तेटला उपवास करो .पण कोइ रीते खामी भागशे नहि. अने तमे एम कहेशो जे 'अमनेतो ए

स्वरूपनी तमे जेम कहोछो तेम दृढता छे तोपण प्राण इंद्रियो केम लीन नथी थतां' तो एतो परमेश्वरनी इच्छाए एम कह्युं छे एम समझवुं पण तेने कांइ करवुं रह्युं नथी एतो कृतार्थ छे अने एतो सर्व साधनना अंतने पाम्योछे. अने जो भगवानना स्वरूपनी आवी रीते दृढता होय ने कदाचित् जो निर्मान, निर्लोभ, निष्काम, निःस्वाद अने निःस्नेह एमां कांइक थोडी घणी काच्यप रही जाय तो तेनी कांइ चिंता नथी पण भगवानना स्वरूपमां जो कोइ रीतनी समझ्यामां कसर रही तो कोइ रीते वांधो भागशे नहि माटे देहछते जे प्रकारे आवुं रहस्य समझाय तेवो उपाय करवो. अने आ वार्ता यथार्थ समझाणी होय ने कोइक प्रारब्ध कर्मने वश थइने जो कोइक नीच उच देहनी प्राप्ति थाय तोपण वृत्रासुरनी पेठे ज्ञान जाय नहि तथा जेम भरतजीने मृगनो देह आव्यो तोपण पूर्व जन्मनुं ज्ञान टळ्युं नहि एवुं आ ज्ञाननुं अतिशय माहात्म्य छे. अने नारदसनकादिक ने ब्रह्मादिक देव तेमनी सभामांपण निरंतर आज वार्ता थायछे. अने आवी भगवत्स्वरूप संबन्धी जे वार्ता तेतो शास्त्रमांथीपण पोतानी मेळे समझाय नहि अने सद्ग्रंथोमां आवी वार्ता तो होय पण ज्यारे सत्पुरुष प्रगट थायछे त्यारे तेमना मुखथकीज वात समझ्यामां आवेछे पण पोताना बुद्धिबळे करीने सद्ग्रंथोमांथीपण समझाती नथी. अने जेने आवी रीते यथार्थ भगवाननुं स्वरूप समझ्यामां आव्युंछे तेने जो भूत भविष्य ने वर्तमान, ए त्रण काळनेविषे दृष्टि पहोंचती होय तोपण तेने ए वातनो कांइ गर्व होय

१ आ कथा भागवत-षष्ठस्कंध अ. ११ मा छे। २ ते पंचमस्कंध अ १२ मां जडभरते रहूगणराजा प्रत्ये कह्युंछे जे, "सा मां स्मृतिर्मृगदेहेऽपि वीर! कृष्णार्चनप्रभवा नो जहाति" हे वीर! श्रीकृष्णनुं अर्चन-पूजन करवाथी मने प्रकट थएलुं जे ज्ञान, तेणे मृगना देहमा पण मने त्याग कर्यो न हतो अर्थात् पशुजन्ममा पण ते ज्ञान मने नाश पाम्युं न हतुं.

नहि अने कोइने वर के शाप दे नहि अने कोइ ठेकाणे वर के शाप दे पण खरा अने कोइ ठेकाणे निर्भय रहे ने कोइ ठेकाणे बीवेपण खरा पण तेणे करीने पोते कांइ हर्ष शोक मनमां लावे नहि अने जेने भगवाननो आ कह्यो एवी रीते दृढ आश्रय होय ते जाणीने तो भुंडुं कर्म करेज नहि पण कदाचित् भुंडा देशकालादिकने योगे करीने जो कांइक अवळुं कर्म थइ जाय तोपण ते दृढ आश्रयवाळो कल्याणना मार्गथकी पडी जाय नहि माटे ए जे भगवाननो दृढ आश्रय छे एवो निर्विघ्न मार्ग कोइ नथी. अने ए वात जेने समझाणी होय तेनोतो अतिमोटो आशय होय, जुवोने अमारे परमहंस तथा सत्संगी समस्त पासेथी कोइ स्वार्थ साधवो नथी तोपण कोइने बोलावीए छीए कोइकने वढीए छीए कोइने काढी मुकीए छीए तेनुं एज प्रयोजन छे जे 'कोइ रीते आ वात समझाय तो बहु सारुं थाय' माटे आ वार्ता छे ते सर्वे दृढ करीने राखज्यो अने 'जे तेजनेविषे मूर्ति छे तेज आ प्रत्यक्ष महाराज छे' एम जाणज्यो अने जो एम न जणायतो एटलुंतो जरूर जाणज्यो जे 'अक्षररूप जे तेज तेनेविषे जे मूर्ति छे तेने महाराज देखेछे' एम जाणशो तोपण तमारे मारेविषे हेत रहेशे तेणे करीने तमारुं परम कल्याण थशे अने आ वातने नित्ये नवीने नवी राखज्यो पण गाफलपणे करीने वीसारी देशो मां आज छे तेवीज काल नवी राखज्यो अने तेवीज देहनो अंत थाय त्यांसुधी पण दिन दिन प्रत्ये नवीने नवी राखज्यो अने जेजे भगवाननी वात करो तेते वातनेविषे आ वातनुं बीज लावज्यो एम अमारी आज्ञा छे. अने आ वार्ता तो एवी जीवनदार छे जे देह रहे त्यांसुधी पण नित्य प्रत्ये करवी अने देह मुकीने भागवती तनुए करीनेपण आज वार्ता करवी छे अने आ जे

अमे तमने वात कही ते सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत छे ने अनुभवमांपण एमज दृढ छे अने अमे प्रत्यक्ष नजरे जोइने तमने आ वात कहीछे अने जो प्रत्यक्ष जोइने न कही होय तो अमने सर्वे परमहंसना सम छे एवी रीते श्रीजिमहाराजे पोताना भक्तजननी शिक्षाने अर्थे परोक्षपणे पोताना पुरुषोत्तमपणानी वार्ता करी तेने सांभळीने सर्वे साधु तथा हरिभक्त ते एमज मानता हवा जे 'जे तेजनेविषे मूर्ति कही तेज आ श्रीजिमहाराज प्रत्यक्ष प्रमाण छे' । इति वचनामृतम् ॥ १३ ॥ १४६ ॥

संवत् १८७८ ना भादरवा शुदि १ प्रतिपदाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर पासे उत्तरादे चारणे ओरडानी ओसरी उपर विराजमान हता ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती ने मस्तक उपर श्वेत फेंटो बांध्यो हतो ने ते फेंटा उपर राता कर्णिकारना पुष्पनुं छोगुं विराजमान हतुं अने सुंदर कुंकुमनो चांदलो भालने विषे विराजमान हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भगवानना स्वरूपनेविषे जे संत तदात्मकपणाने पामेछे ते समाधिए करीने पामेछे के एनो कोइ बीजो पण उपाय छे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेणे भगवाननुं स्वरूप जेवुं काले अमे कह्युं तेवुं यथार्थ जाण्युं होय ने तेमां कोइ जातनुं उत्थान रह्युं न होय, जेम आ लींबडानुं वृक्ष छे ते एकवार जाणी लीधुंछे पछी कोइ रीते मनमां संकल्प थतो नथी जे 'लींबडो हशे के नहि होय ?' एवी रीते गमे तेनो संग थाय अने गमे तेवां शास्त्र सांभळे पण कोइ रीते करीने भगवानना स्वरूपनो जे निश्चय कर्यो होय तेमांथी

मन डगमगे नहि एवो जे निरुत्थानपणे भगवानना निश्चय एने अमे तदात्मकपणुं कहिए छीए अने एवुं जे ए तदात्मकपणुं ते भगवानना एकांतिक भक्तना प्रसंगे करीने थायछे पण केवळ समाधिए करीने नथी थतुं अने एवुं जे ए तदात्मकपणुं तेनेज निर्विकल्प समाधि कहीए छीए ने एवी जातनी जेने निर्विकल्प समाधि थइ होय ते संतनुं स्वरूपपण निर्गुण ब्रह्मज छे अने एवा अडग निश्चयवाळा जे संत ते निवृत्तिमार्गने विषे वर्ते अथवा प्रवृत्तिमार्गने विषे वर्ते तोपण एनुं निर्गुणज स्वरूप छे जेम नारद ने सनकादिक ए सर्वे निवृत्तिमार्गने विषे प्रवर्त्या अने सप्तऋषि तथा जनकादिक राजा ए सर्वे प्रवृत्तिमार्गने विषे प्रवर्त्या पण ए सर्वेने भगवानना निश्चये करीने निर्गुण जाणवा अने जे निवृत्तिमार्गने विषे प्रवर्त्या होय ने जो भगवाननो निश्चय न होय तो तेने मायिक गुणे करीने सगुण जाणवा अने एम जाणवुं जे 'आ अतिशय त्यागी जणायछे पण एने भगवाननो निश्चय नथी माटे ए अज्ञानी छे ते जरुर नरकमां जशे' अने जेने भगवानना स्वरूपनो एवो निश्चय छे ने जो तेमां कांइक थोडी घणी खोट रही गइ हशे तोपण ते भुंडी गतिने नहि पामे तेतो अंते जातो निर्गुणपणानेज पामशे अने जेने भगवानना स्वरूपनोतो एवो निश्चय नथी ने ते सुधोत्यागी रहेतो होय ने काम क्रोध लोभादिने टाळ्यामां सावधान वर्ततो होय तोपण एना टाळ्या कामादिक नहि टळे अने ते अंते खराब थइने नरकेमांज जशे अने आवुं जे भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान ते जेने थयुं होय ने तेने थोडी बुद्धि होय तोपण एने मोटी बुद्धिवाळो जाणवो अने आवुं भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान जेने न होय ने तेने जो झाझी बुद्धि होय तो पण तेने बुद्धिहीन जणावो। इति वचनामृतम्॥ १४ ॥१४७॥

१ 'ते संत निर्गुण ब्रह्मस्वरूप छे' आवो वाक्यार्थ समजवो।

संवत् १८७८ ना भादरवा शुदि २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी ओसरीए चाकळो नंखावीने विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे सर्वे परमहंसने प्रश्न पुछ्यो जे "गमे तेवो कठण स्वभाव होय ने जो एक विचार करीए तो ते स्वभावनो नाश थइ जाय अने ए विचारने मुकीने बीजा हजारो विचार करे तोयपण ते भुंडा स्वभाव होय ते टळे नहि एवो ते कयो विचार छे ते जेने जेम समझातुं होय ते तेम कहो?" पछी परमहंसमां जेम जेने समझातुं हतुं तेम तेणे कह्युं पण यथार्थ कोइथी कहेवायुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे कहीए जे, जेम बाहेर कोइक पोतानो शत्रु होय ते आपणुं कांइक काम थतुं होय तेने बगाडी दे अथवा पोतानी मा बेन सामी गाळो दे तेनो जेम अतिशय अभाव आवेछे अने जे उपाये करीने तेनुं भुंडुं थाय ते उपाय करायछे अथवा कोइक बिजो ते शत्रुनुं भुंडुं करे तोपण अतिशय राजी थवायछे, तेम जे मोक्षने अर्थे यत्न करता होय ने तेमां जे काम क्रोधादिक मांहेला शत्रु विघ्न करे तो तेनी उपर-पण तेवीज वैर बुद्धि थाय अने तेनो खटको क्यारेयपण टळे नहि एवो विचार जेने हाथ आवे ते ए विचारे करीने शत्रुमात्रने टाळे अने ज्यारे कोइक संत ए कामादिक शत्रुनी निंदा करे तथा ते शत्रुने खोदे तेमां जेने मोरे कह्यो एवो विचार होय तेने ते साधुनो अभाव आवे नहि सामो ते साधुनो अतिशय गुण ले अने एम जाणे जे 'आ साधु मारा शत्रुने मार्यानो उपाय करेछे माटे मारा

परम हेतु छे' आवी जातनो विचार जेना हृदयनेविषे प्राप्त थयो होय ते शत्रुमात्रनो नाश करी नाखे अने कोइ भुंडो स्वभाव तेना हृदयनेविषे रही शके नहि अने ए विना बीजा गमे तेटली जातना विचार करे पण कामादिक स्वभावरूपी शत्रु नाश पामे नहि माटे ए स्वभाव उपर जे शत्रुपणुं राखवुं एज सर्व विचारमां श्रेष्ठ विचार छे.

पछी श्रीजिमहाराजे वळी प्रश्न कर्यो जे "धर्म, वैराग्य, आत्मज्ञान अने माहात्म्ये सहित परमेश्वरनी भक्ति ए चार वानामांथी कोइ काळे पडे नहि एवो जे होय तेने शे लक्षणे करीने ओळखवो ?" पछी सर्वे संते जेने जेवुं समझाणुं तेणे तेवुं कह्युं पण ते कोइथी यथार्थ कहेवायुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेनो बाळकपणाथीज एवो स्वभाव होय जे कोइनी छायामां तो दबायज नहि अने ए ज्यां बेठो होय त्यां कोइए हांसी मश्करी थाय नहि अने तेने कोइए हळवुं वेणपण कहेवाय नहि एवां जेनां लक्षण होय ते कोइ दिवस धर्म, वैराग्य, ज्ञान अने भगवाननी भक्ति तेमांथी पडेज नहि अने तेनो मानीना जेवो स्वभाव होय तोपण तेने कल्याणनो खप होय माटे ते सत्संगमांथी कोइ प्रकारे जाय नहि । इति वचनामृतम् ॥ १५ ॥ १४८ ॥

संवत् १८७८ ना भादरवा शुदि १० दशमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर पासे पाट उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "एकतो अर्जुननी पेठे जे स्वरूपनिष्ठा अने बीजी युधिष्ठिर राजानी पेठे जे धर्मनिष्ठा ए बे निष्ठा

छे तेमांथी जे स्वरूपनिष्ठानुं बळ राखे तेने धर्मनिष्ठा मोळी पडी जायछे अने जे धर्मनिष्ठानुं बळ राखे तेने स्वरूपनिष्ठा मोळी पडी जायछे[1] माटे एवो शो उपाय छे जे जेणे करीने ए बेमांथी एके निष्ठा मोळी न पडे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,[2] पृथ्वीनो ने धर्मनो श्रीमद्भागवतना प्रथमस्कंधनेविषे संवाद छे तेमां एम कह्युं छे जे 'सत्यशौचादिक जे कल्याणकारी एवा ओगणचाळीश गुण तेणे युक्त भगवाननुं स्वरूप छे' माटे सर्वे धर्म भगवाननी मूर्तिने आधारे रहेछे ते सारु भगवानने धर्मधुरंधर कह्या छे अने वळी श्रीमद्भागवतना प्रथमस्कंधनेविषे शौनकादिक ऋषिए सूतपुराणीने पुछ्युं छे जे 'धर्मना वखतररूप[3] एवा जे श्रीकृष्णभगवान् ते अंतर्ध्यान थया पछी धर्म केने शरणे रह्यो' माटे धर्म ते भगवाननी मूर्तिनेज आशरे रहेछे ते सारु जे भगवाननी मूर्तिनेविषे निष्ठा राखे तेने भगवाननुं स्वरूप हृदयमां रहे एटले तेना हृदयमां धर्मपण रहे माटे जे स्वरूपनिष्ठा राखे तेने धर्मनिष्ठा सहजेज रहे अने एकली धर्मनिष्ठा राखे तो स्वरूपनिष्ठा मोळी पडी जायछे ते कारणपणा माटे बुद्धिवान् होय तेने स्वरूपनिष्ठाज दृढ करीने राखवी तो ते भेळी धर्मनिष्ठा पण दृढपणे रहेशे.[4]

---

१ 'स्वरूपनिष्ठा बळवान् छे माटे तेज एक राखवी, धर्मनिष्ठानुं शुं प्रयोजन छे?' एमपण कही शकाय नहि, केमके बहुधातो तमोए धर्मनिष्ठाए सहित एवी स्वरूपनिष्ठानुं श्रेष्ठपणुं कह्युंछे माटे बन्नेनी अपेक्षापण छे। २ स्वरूपनिष्ठा दृढ राखवाथी धर्मनिष्ठापण दृढ थायछे, केमके। ३ "ब्रह्मण्ये धर्मवर्मणि" एम कह्युं छे, तथा "धर्मस्य प्रभुरच्युतः" एवी स्मृतिपण छे। ४ एमा संशय नथी, श्रीभागवतादिक सच्छास्त्रमा धर्मनिष्ठानुं स्वर्गादिलोकनी प्राप्तिरूप फळ कह्युं छे अने स्वरूपनिष्ठानुं मोक्षरूप फळ कह्युं छे हवे जो केवळ धर्मनिष्ठानुं पोताना हृदयमा-गौरव आवी जाय तो तेमाज कल्याणमति थइ जाय पण भगवत्स्वरूपनिष्ठामा न थाय एवो बाध आवे, माटे स्वरूपनिष्ठाज दृढ करीने राखवी आवो अभिप्राय छे।

पछी मुक्तानंदस्वामीए बीजो प्रश्न पुछ्यो जे "पंच विषय जीताय ते वैराग्येकरीने जीतायछे के कोइ बीजो उपाय छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वैराग्य होय अथवा न होय पण जो परमेश्वरे कह्या एवा जे नियम तेनेविषे खबडदार रहे तो पंच विषय जीतायछे अने जो शब्दथकी वैराग्ये करीने वृत्ति पाछी वाळे तो घणो प्रयास करे तोपण शब्द संभळाय खरो अने कानने बीडी ले तो सहजे शब्द संभळाय नहि. तेमज अयोग्य पदार्थने त्वचाए करीने अडे नहि तो सहजे स्पर्श जीताय. तेमज अयोग्य वस्तु होय तेने नेत्रे करीने जुवे नहि तो सहजे रूप जीताय. तेमज जेजे स्वादु भोजन होय तेने मेळावी पाणी नांखीने जमे तथा युक्त आहार करे एटले सहजेज रसना जीताय. तेमज अयोग्य गंध होय त्यां नाकने बीडी ले तो सहजे गंध जीताय, एवी रीते नियमे करीने पंचविषय जीतायछे अने जो नियममां न रहे तो गमेतेवो वैराग्यवान् होय तथा ज्ञानी होय पण तेनो ठा रहे नहि माटे विषय जीत्यानुं कारणतो परमेश्वरना बांधेला जे नियम तेज छे तेमां पण मंदवैराग्यवाळाने तो नियममां रहेवुं एज उगर्यानो उपाय छे जेम मांदो होय ते करी पाळीने औषध खाय तोज निरोगी थाय.

पछी अखंडानंदस्वामीए पुछ्युं जे "मांदानेतो करीनो नियम होय जे आटला दिवसज करी राखवी तेम कल्याणना साधननोपण कोइ नियम छे के नथी?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने श्रद्धा मंद होय तेनेतो घणेक जन्मेकरीने साधननी समाप्ति थायछे, ते भगवद्गीतामां कह्युं छे जे "अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्" ए श्लोकमां एम कह्युंछे जे 'अनेक जन्मे करीने संसिद्ध थयो जे योगी ते जेते परमपदने पामेछे' ए मंद श्रद्धावाळानो पक्ष छे अने जेने बळ-

वान् श्रद्धा होय तेतो तत्काळ सिद्ध थायछे, तेपण गीतामां कह्युंछे- "श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः। ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥" ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे 'नियममां छे इंद्रियो जेनां ने श्रद्धावान् एवो जे पुरुष ते ज्ञानने पामेछे ने ज्ञानने पामीने तत्काळ परमपदने पामेछे' माटे जे अतिशय श्रद्धावान् होय तेने वहेली साधननी समाप्ति थायछे अने जेने मंद श्रद्धा होय तेनेतो अनेक जन्मे करीने साधननी समाप्ति थायछे, जेम कोइ पुरुष काशीए जतो होय ने ते आखा दिवसमां वे डगलां चालतो होय तेने तो काशीए जतां बहु दिवस लागे अने जे वीश वीश गाउ चालवा मांडे तेतो आंहीथी काशीए थोडाक दिवसमां पहोंचे, तेम जेने श्रद्धा बळवान् छे तेतो हमणां तरत सत्संगी थयो होय तोपण अतिशय सरस थइ जायछे अने जेने श्रद्धा मंद होय तेतो घणा काळ थया सत्संगी थयो होय तोयपण लोचो पोचो रहेछे.

पछी श्रीगुरुचरणरतानंदस्वामीए पुछ्युं जे "ज्यारे मंद श्रद्धावाळानुं अनेक जन्मे कल्याण थाय त्यारे त्यांसुधी ते क्यां रहेतो हशे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सुंदर देवलोक होय त्यां जइने ते रहेछे अने ज्यारे ए भगवाननुं ध्यान करतो त्यारे ए भक्त भगवान् सामुं जोतो त्यारे भगवानपण ते भक्त सामुं जोता पछी भगवाननुं ध्यान करतां थका जेजे विषयनुं एणे चिंतवन कर्युं हतुं अने जेजे विषयमां ए भक्तने हेत हतुं ते भगवान् सर्वे नजरे जोइने अने ए देह मुके त्यारे एने जेवा भोग वहाला छे तेवा भोग जे लोकमां छे ते लोकमां ए भक्तने पहोंचाडेछे अने काळने एम आज्ञा करेछे जे 'ए भक्तना भोगने तुं खंडन करीश मां' माटे ते निरंतर देवलोकमां रह्यो थको भोगने भोगवेछे पछी मृत्युलोकमां आवीने अनेक जन्मे करीने मोक्षने पामेछे.

पछी अखंडानंदस्वामीए बीजो प्रश्न पुछ्यो जे "तीव्र श्रद्धावान् पुरुषनां शां लक्षण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने तीव्र श्रद्धा होय तेने ज्यारे भगवानने दर्शने आववुं होय अथवा भगवत्कथावार्ता सांभळवी होय तथा भगवाननी मानसी पूजा करवी होय इत्यादिक जेजे भगवान् संबन्धी क्रिया तेने कर्या सारु स्नानादिक जे पोतानी देहक्रिया तेने अतिशय उतावळो थइने करे अने कागळ लखीने अमे कोइक वर्तमान फेरव्युं होय तो तेने करवाने अर्थेपण आकळो थइ जाय अने मोटो माणस होय तोपण भगवाननां दर्शन सारु बाळकनी पेठ्ये आकळाइ करवा मांडे एवां जेनां लक्षण होय तेने तीव्र श्रद्धावान् जाणवो अने जे एवी श्रद्धावाळो होय ते सर्वे इंद्रियोनेपण तत्काळ वश करेछे अने जेने भगवानना मार्गमां मंद श्रद्धा होय तेनां इंद्रियो विषयसन्मुख अति तीक्ष्णपणे युक्त होय ते गमे तेटलो संताडवा जाय पण सौने जणाइ जाय जे 'आनी इंद्रियोना विषयसन्मुख तीक्ष्ण वेग छे' अने इंद्रियोनुं रूप तो वायुना वेग जेवुं छे, जेम वायु देखाय नहि पण वृक्षने हलावे तेणे करीने जणायछे जे वायु वायछे, तेम इंद्रियोनी वृत्तियो देखाती नथी पण विषयसन्मुख दोडे ते सौने जणायछे अने जो कपटे करीने ढांकवा जाय तो कपटी जाणीने तेनो सौने अतिशय अवगुण आवेछे माटे जेनां इंद्रियोमां विषय भोगव्यानी तीक्ष्णता होय ते कोइ प्रकारे छानी रहे नहि.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "विषयसन्मुख इंद्रियोनी जे तीक्ष्णता तेने टाळ्यानो शो उपाय छे?"पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, इंद्रियोनी तीक्ष्णताने टाळ्यानो एज उपाय छे जे परमेश्वरे त्यागीना ने गृहस्थना जे नियम बांध्या छे तेमां सर्वे इंद्रियोने मरडीने राखे तो सहजेज इंद्रियोनी तीक्ष्णता मटी जाय अने श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना अने

घ्राण ए पांचे इंद्रियोने ज्यारे कुमार्गमां न जवादे त्यारे इंद्रियोना आहार शुद्ध थायछे ते केडे अंतःकरणपण शुद्ध थायछे माटे वैराग्यनुं बळ होय अथवा न होय तोपण जो इंद्रियोने वश करीने परमेश्वरना नियममां राखे तो जेम तीव्र वैराग्येकरीने विषय जीतायछे तेथकी पण ते नियमवाळाने विशेषे विषय जीतायछे माटे परमेश्वरना बांधेल जे नियम छे तेनेज अति दृढ करीने राखवा.

पछी वळी अखंडानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जेने मंद श्रद्धा होय तेने श्रद्धा वृद्धि केम पामे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जो भगवाननुं माहात्म्य जणाय तो मंद श्रद्धा होय तेपण वृद्धिने पामे, जेम पाणी पीवानुं वासण मृत्तिकानुं होय तेमां सहजेज प्रीति थाय नहि अने ते पात्र जो सुवर्णनुं होय तो तेमां सहजेज प्रीति थाय, तेम भगवाननुं तथा भगवाननी कथा कीर्तनादिकनुं माहात्म्य जणाय तो सहज स्वभावेज भगवानमां तथा कथा कीर्तनादिकमां श्रद्धा वृद्धि पामेछे माटे जे प्रकारे भगवाननुं माहात्म्य समझाय ते उपाय करवो ने जो ए उपाय करे तो श्रद्धा न होय तोपण श्रद्धा थायछे अने जो मंद श्रद्धा होय तो ते वृद्धिने पामेछे। इति वचनामृतम् ॥ १६ ॥ १४९ ॥

संवत् १८७८ ना आसो वदी ११ एकादशीने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरने समीपे ओरडानी ओसरीए सिंहासन उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोतानी आगळ मशाल बे बळती हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने कीर्तन गवातां हतां.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कीर्तन गाववां रहेवाद्यो प्रश्न उत्तर करीए, पछी सर्वे मुनि बोल्या जे घणुं सारुं महाराज, पछी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननुं स्वरूप छे तेने कोइक भक्ततो मायानां चोविश तत्त्वे सहित समझेछे अने कोइक भक्ततो मायाना तत्त्वे रहित केवळ चैतन्यमय भगवाननुं स्वरूप समझेछे ए वे प्रकारना भक्त छे तेमां केनी समझण ठीक छे ने केनी समझण ठीक नथी?" पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, जे भगवानने विषे मायिक चोविश तत्त्व समझे एनी समझण ठीक नथी अने भगवाननुं स्वरूप मायाना तत्त्वे करीने रहित केवळ चैतन्यमय समझे तेनी समझण ठीक छे.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, सांख्यवाळे चोविश तत्त्व कह्यां छे ते सांख्यने मते त्रेविश तत्त्व ने चोविशमो क्षेत्रज्ञ जे जीव ईश्वररूप चैतन्य छे ते ए रीते चोविश तत्त्व कह्यांछे केमजे क्षेत्र क्षेत्रज्ञनेतो अन्योन्य आश्रयपणुं छे ते क्षेत्रज्ञ विना क्षेत्र कहेवाय नहि ने क्षेत्र विना क्षेत्रज्ञ कहेवाय नहि तेमाटे तत्त्वभेळाज जीव ईश्वरने कह्याछे अने भगवान् छे तेतो क्षेत्र ने क्षेत्रज्ञ ए वेयना आश्रय छे माटे भगवानथकी मायिक तत्त्व जुदां केम कहेवाय? अने जेम आकाश छे तेनेविषे चार तत्त्व रह्यांछे तोपण आकाशने कोइनो दोष अडतो नथी तेम परमेश्वरना स्वरूपनेपण मायिक तत्त्वनो एकेय दोष अडतो नथी एवुंज भगवाननुं स्वरूप छे तेमां चोविश तत्त्व कहीए तेमां शो बाध छे? अने तत्त्वे रहित कहेवुं तेमां शुं निर्बाधपणुं आवी गयुं? अमने तो एम जणायछे.

पछी दीनानाथभट्टे पुछ्युं जे 'जेने भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं होय तेने भगवाननुं स्वरूप तत्त्वे सहित समझवुं के तत्त्वे रहित समझवुं?' पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवानना स्वरूपने जे तत्वे सहित स-

समझेछे ते पण पापी छे अने जे तत्वे रहित भगवानना स्वरूपने समझेछे ते पण पापी छे भगवानना स्वरूपमांतो भगवानना भक्त होय तेने तत्व छे के नथी एवुं चुंथणुं करवुं गमेज नहि. भक्त होय तेतो एम जाणे जे 'भगवान् ते भगवान् एनविषे भाग त्याग कर्यानो भाग नथी ए भगवानतो अनंत ब्रह्मांडना आत्मा छे' अने जेने भगवानना स्वरूपमां कोइ रीतनुं उत्थान नथी तेने निर्विकल्प स्थितिवाळो जाणवो अने जेने एवी एक मति होय तेने स्थितप्रज्ञ जाणवो अने जे पुरुषने भगवानने विषे एवी दृढ मति छे तेने भगवान् सर्व पापथकी मुकावेछे, ते भगवाने भगवद्गीतामां अर्जुनप्रत्ये कह्युंछे जे "सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥" अने आ संसारमांपण एवी रीत छे जे जेथकी पोतानो मोटो स्वार्थ सरतो होय तेनो बुद्धिमान् होय ते दोष ग्रहण करे नहि, जेम स्त्री होय ते पोताना स्वार्थ सारु पतिनो दोष ग्रहण करती नथी तथा बिजापण गृहस्थो होय ते पोताना भाइ भत्रीजा दीकरा इत्यादिक जे संबन्धी तेनेविषे जो पोतानो अतिशय स्वार्थ होय तो दोषनुं ग्रहण नथी करता, तेम भगवानथकी जेणे मोटो स्वार्थ जाण्यो होय जे 'भगवानतो पापथकी ने अज्ञानथकी मुकावीने पोताना भक्तने अभयपद आपेछे' एवो मोटो स्वार्थ जाण्यो होय तो कोइ रीते भगवाननो अवगुण आवेज नहि, जेम शुकजीए रासपंचाध्यायीनुं वर्णन कर्युं त्यारे राजा परीक्षितने संशय थयो जे 'भगवाने परस्त्रीनो संग केम कर्यो' पण शुकजीने लेशमात्र संशय थयो नहि अने जे गोपीयो संगे भगवाने विहार कर्यो ते गोपीयोनेपण संशय न थयो जे 'भगवान् होय तो आम केम करे' एवो कोइ रीते संशय थयो नहि अने ज्यारे भगवान् कुब्जाने घेर गया त्यारे

उद्धवजीने भेळा तेडी गया हता तोपण उद्धवजीने कोइ रीते संशय थयो नहि अने ज्यारे उद्धवजीने व्रजमां मोकल्या त्यारे गोपियोनी वाणी सांभळीनेपण कोइ रीते संशय न थयो अने सामुं गोपियोनुं माहात्म्य अतिशय समज्या माटे जेने भगवाननो अचळ आश्रय थयो होय ने ते अतिशय शास्त्रवेत्ता होय अथवा भोळोज होय पण तेनी मति भ्रमे नहि अने भगवानना जे दृढ भक्त होय तेनुं जे माहात्म्य तेपण भगवाननो भक्त होय तेज जाणे पछी शास्त्रवेत्ता होय अथवा भोळो होय पण जेनी भगवाननेविषे दृढ मति होय तेज भगवानना भक्तनुं माहात्म्य जाणे अने दृढ मतिवाळा भक्त होय तेने ओळखे पण खरा अने ते विना जे जगतना विमुख जीव होय तेतो पंडित होय अथवा मूर्ख होय पण भगवाननेविषे दृढ मति पण करी शके नहि अने जे दृढ मतिवाळा भक्त होय तेनेपण ओळखे नहि अने हरिजननुं माहात्म्यपण जाणे नहि माटे भगवाननो भक्त होय तेज भगवानना भक्तने ओळखे अने माहात्म्यपण तेज जाणे, जेम उद्धवजीए गोपीयोनुं अतिशय माहात्म्य जाण्युं, तेम गोपीए पण उद्धवजीनुं माहात्म्यपण जाण्युं. अने पुरुषोत्तम भगवान् छे ते सर्व क्षेत्रज्ञना क्षेत्रज्ञ छे तोपण निर्विकार छे अने माया आदिक जे विकारवान् पदार्थ तेनो विकार पुरुषोत्तम भगवानने अडतो नथी. अने जे आत्मनिष्ठ पुरुष छे तेनेपण स्थूळ सूक्ष्म अने कारणना विकार नथी अडता तो पुरुषोत्तमभगवानने न अडे एमां शुं कहेवुं ? भगवानतो निर्विकारी ने निर्लेपज छे एवी रीते जे भगवानना स्वरूपने समजे ते भगवाननो भक्त स्थितप्रज्ञ जाणवो, जेम पोताना आत्माने विषे जेने स्थिति होय तेपण स्थितप्रज्ञ कहेवायछे, तेम जेने भगवानना स्वरूपनेविषे कोइ जातनो घाट न होय अने जेम भगवाननुं सम-

र्थपणुं होय ने तेनुं गान करे तेमज असमर्थपणुं होय तेनुंपण गान करे अने जेम भगवाननुं योग्य चरित्र होय तेनुं गान करे तेमज जे अयोग्य जेवुं चरित्र जणातुं होय तेनुंपण गान करे पण भगवानना चरित्रनेविषे योग्य अयोग्य एवो घाट घडे नहि एवो जे भगवाननो भक्त होय तेने पुरुषोत्तमना स्वरूपनेविषे स्थितप्रज्ञ जाणवो. अने जेने एवी पुरुषोत्तमना स्वरूपनेविषे दृढ निष्ठा थइ तेने एथी उपरांत बीजुं कांइ समझवानुं रह्युं नथी । इति वचनामृतम् ॥ १७ ॥ १५० ॥

संवत् १८७८ ना मागशर वदी ६ छठ्यने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानेविषे गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता अने धोळो खेम पहेर्यो हतो अने धोळी चादर ओढीने ते उपर बुट्टादार रजाइ ओढी हती अने मस्तक उपर धोळो फेंटो विराजमान हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने पोतानी आगळ प्रागजी दवे कथा करता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, अमे तो सर्व प्रकारे विचारीने जोयुं जे आ संसारमां जेटला कुसंग कहेवायछे ते सर्व कुसंगथी अधिक कुसंग ते कयो छे तो 'जेने परमेश्वरनी भक्ति नहि अने भगवान् सर्वना स्वामी छे भक्तवत्सळ छे पतितपावन छे अधम उद्धारण छे एवोपण भगवाननी कोरनो जेना हृदयामां विश्वास नहि' ते एवा तो आ संसारमां बे मत छे–एकतो नास्तिकनो ने बीजो शुष्क[1] वेदांतिनो,[2] ए बे अति कुसंग छे. अने पंच महापापे युक्त होय ने तेने जो भगवाननो विश्वास होय तो तेनो कोइ काळे छुटको थाय तथा बाळहत्या,

१ भगवाननी भक्ति रहित माटे शुष्क । २ नाममात्रमी वेदान्ती ।

गौहत्या, स्त्रीहत्या इत्यादिक जे मोटां पाप तेना करनारानोपण कोइ काळे छुटको थाय खरो पण ए बे मतनी जेने प्रतीति आवी तेनो कोइ काळे छुटको थाय नहि; आमाटे जे एनी समझण वेद शास्त्र अने पुराण तेथकी उंधी छे. तेमां नास्तिकतो एम समझेछे जे 'रामचंद्रजी ने श्रीकृष्णभगवान् एतो राजा हता अने श्रीकृष्णे दैत्य मार्या तथा परस्त्रीना संग कीधा माटे त्रिजा नरकमां पड्या छे' एवी रीते अधमउद्धारण ने पतितपावन एवा जे श्रीकृष्णभगवान् तेनेविषे परमेश्वरनी बुद्धिज नथी. अने कर्मे करीने पोतानुं कल्याण मान्युं छे ते ज्यारे कर्म करतां करतां केवळ ज्ञान प्रकटे त्यारे ते भगवान् थाय एवी रीते अनंत भगवान् मान्याछे पण अनादि परमेश्वर नास्तिकने मते कोइ नथी जेने भजने करीने जीव भवना बंधनथकी छुटे, माटे ए मत छे ते वेदथी विरुद्ध छे, अने शुष्क वेदांति छे तेतो एम समझेछे जे 'ब्रह्म छे तेज जीवरूप थया छे अने जेम सूर्यनुं प्रतिबिंब छे तेम ब्रह्म ते जीवरूप छे' माटे ज्यारे एम समझाय जे 'हुं ब्रह्म छुं' त्यारे एने कांइ साधन करवुं रह्युं नहि अने ज्यारे पोते परमेश्वर थया त्यारे हवे भजनपण कोइनुं करवुं रह्युं नहि एम मानीने पछी पाप करतांपण बीवे नहि अने मनमां एम समझे जे 'आपणे निर्गुण मार्गने पाम्या छीए माटे आपणे फरीने जन्म नहि धरवो पडे' पण ए शुष्क वेदांती एटलो तपास करता नथी जे मायापर जे निर्गुण ब्रह्म तेनेपण एनी समझणे करीने जन्म मरण ठेराणुं केमजे ए एम कहेछे जे 'ब्रह्म छे तेज स्थावर जंगमरूप थया छे' त्यारे जे जीव होय तेने माथेतो जन्म मरण होय ते जन्म मरण ब्रह्मने माथे आव्युं अने एतो एम जाणेछे जे 'अमे जन्म मरणथी छुटीशुं' पण एम विचारता नथी जे आपणे मते

करीने ब्रह्मने माथे जन्म मरण साचुं थयुं, त्यारे आपण पण घणुं समझीशुं तो पोताने ब्रह्मस्वरूप मानीशुं तोपण जन्ममरण नहि टळे माटे एनेज मते करीने एणे जे मोक्ष मान्यो छे ते खोटो थइ जाय-छे तोपण कोइ तपासीने जोता नथी अने जीभेतो एम बकेछे जे 'आपणेतो ब्रह्मस्वरूप छीए ते केनुं भजन करीए? अने कोने नमस्कार करीए?' एम मानीने अतिशय अहंकारी थइ जायछे अने समझ्यामां तो कांइ आव्युं नहि तोपण ज्ञानीनुं मान लइने बेठा छे पण एम विचारता नथी जे 'पोताने मते करीनेज पोतानो मोक्ष खोटो थइ गयो' अने जे एनो संग करे तेनेपण एवाने एवा मूर्ख करीने मुके-छे. अने साचा ज्ञानी जे नारद सनकादिक शुकजी तेतो निरंतर भगवाननुं ध्यान, नामरटन अने कीर्तन तेने करेछे अने श्वेतद्वीप-नेविषे जे निरन्न मुक्त छे तेतो ब्रह्मस्वरूप छे अने काळनापण काळ छे तेपण परमेश्वरनुं ध्यान, नामरटन, कीर्तन, पूजन, अर्चन, वंदन तेने करता रहेछे अने पोते अक्षरस्वरूप छे तोपण अक्षरातीत जे पुरुषोत्तम भगवान् तेना दास थइने वर्तेछे अने बदरिकाश्रमनेविषे जे उद्धव ने तनुऋषि आदिक मुनि रह्या छे तेपण तप करेछे ने निरंतर भगवाननी भक्ति कर्या करेछे. अने ए शुष्क वेदांतितो केवळ देहाभिमानी जीव छे तोपण भगवाननुं ध्यान स्मरण के वंदन करता नथी अने नारद सनकादिक ने शुकजी तेमनी जेवी सामर्थि छे ने जेवुं ज्ञान छे तथा श्वेतद्वीपवासी जे निरन्नमुक्त तेनेविषे जेवी सामर्थि छे ने जेवुं ज्ञान छे तथा बदरिकाश्रमवासी जे ऋषि तेमां जेवी सामर्थि छे ने जेवुं ज्ञान छे तेना कोटिमा भागनीपण ए शुष्कवेदांतिनेविषे सामर्थिपण नथी ने ज्ञानपण नथी तोपण परमेश्वरना सामावाडिया थइने बेठा छे माटे ए पाका अज्ञानी छे अने जेटला

अज्ञानी कहेवाय तेना राजा छे अने एतो कोटि कोटि कल्पसुधी नरकना कुंडमां पडशे ने यमनो मार खाशे तोपण एनो छुटको नहि थाय. अने एवानो जे संग तेनुंज नाम कुसंग छे अने जेम सत्पुरुषनो जे संग तेथी कोइ मोटुं पुन्य नथी तेम अज्ञानी एवा जे शुष्कवेदांती तेना संगथी कोइ मोटुं पाप नथी माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने नास्तिक तथा शुष्कवेदांतिनो संग करवोज नहि। इति वचनामृतम् ॥ १८ ॥ १५१ ॥

संवत् १८७८ ना मागशर वदी १४ चौदशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां परमहंसने उतारे दिवस उग्या समे पधार्या हता पछी त्यां आवीने गादि तकिया उपर उदास थइने बेठा ते कोइने बोलावे पण नहि अने कोइ सामुं जुवे पण नहि अने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो ते छुटीने शिथिल थइ गयो तेनेपण संभारे नहि एवी रीते एक घडीसुधी अतिशय उदास थइने बेसी रह्या अने नेत्रमांथी जळ पडवा लाग्यां.

पछी श्रीजिमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे, अमे शुष्कज्ञानीनो मत जाणवा सारु तेना शास्त्रनुं श्रवण कर्युं, ते श्रवणमात्रे करीनेज अमारा अंतरमां आवो उद्वेग थइ आव्यो, केमजे जे शुष्कवेदांतशास्त्रने श्रवणे करीने जीवनी बुद्धिमांथी भगवाननी उपासनानुं खंडन थइ जायछे अने हृदयामां समभाव आवी जायछे एटले अन्यदेवनीपण उपासना थइ जायछे अने ते शुष्कवेदांतिना वचनन जे सांभळे तेनी बुद्धि अतिशय भ्रष्ट थइ जायछे अने अमेतो कांइक प्रयोजन सारु शुष्कवेदांतनी वात सांभळी हशे तेणे करीनेपण हवे अमारे शोक घणो थायछे, एम कहीने श्रीजिमहाराज सुधा उदास थइ गया पछी घणी वार सुधी दलगीर-

१ माटे शुष्कज्ञानिना वचन न साभळवा। २ खंडन करवाना।

थइने पछी पोताने हाथे नेत्रमांथी जळ लोइने एम बोल्या जे, भगवद्गीता उपर जे रामानुजभाष्य छे तेनी कथा सांभळीने अमे आज रात्रिए सुता हता पछी अमने स्वप्न थयुं जे अमे गोलोकमां गया त्यां भगवानना अनंत पार्षद दीठा तेमां केटलाकतो भगवाननी सेवामां रह्या छे तेतो स्थिर सरखा जणाया अने केटलाकतो परमेश्वरनां कीर्तन गायछे ते कीर्तनपण मुक्तानंदस्वामी ने ब्रह्मानंदस्वामीनां गायछे अने ते कीर्तन गाता जाय अने डोलता जाय जेम केफे करीने गांडा थया होय ने ते डोले ने गाय तेम कीर्तन गाय ने डोले पछी अमेपण ए गावता हता ते भेळा जइने मळ्या ने कीर्तन गाववा लाग्या ते गावतां गावतां एवो विचार थयो जे 'आवी जे परमेश्वरनी प्रेमभक्ति अने आवी जे परमेश्वरनी उपासना तेनो त्याग करीने जे मिथ्याज्ञानी थायछे अने एम जाणेछे जे 'अमेज भगवान् छीए' ते महादुष्ट छे.' एम कहीने पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे प्रकारे धर्मथकी तथा भगवाननी भक्तिथकी कोइ रीते पाछो न पडे अने पोताना इष्टदेव जे श्रीकृष्णनारायण तेमांथी कोइ रीते बुद्धि डगे नहि एवो लावो एक कागळ लखीने देशदेशना सत्संगी प्रत्ये मोकलीए.

लिखावितं स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराजना सर्व परमहंस तथा सर्व सत्संगी बाई भाइ नारायण वांचज्यो. बीजुं अमारी आज्ञा एम छे जे, श्रीकृष्णनारायण एवा जे पुरुषोत्तम भगवान् तेना जे अवतार ते धर्मना स्थापनने अर्थे तथा ब्रह्मचर्य अहिंसादिक धर्म, आत्मनिष्ठा, वैराग्य अने माहात्म्ये सहित भक्ति ए चार गुणे संपन्न एवा जे पोताना एकांतिक भक्त तेने दर्शन देवाने अर्थे ने तेमनी रक्षा करवाने अर्थे तथा अधर्मनो उच्छेद करवाने अर्थे देवमनुष्यादिकनेविषे

थायछे. ते अवतारनेविषे पतिव्रताना जेवी अनन्यपणे निष्ठा राखवी. जेम सीताजीने श्रीरामचंद्रनेविषे निर्दोषपणे निष्ठा हती तेम निष्ठा राखवी अने एवा जे भगवान् तेनी हेतेकरीने मानसी पूजा करवी तथा देहेकरीने नव प्रकारे भक्ति करवी. अने जो ए श्रीकृष्णनारायणना अवतार पृथ्वीनेविषे प्रकट न होय तो तेनी जे प्रतिमा तेनी पूजा मने करीने तथा देहे करीने चंदन, पुष्प, तुळसी आदिक सामग्रीवते करवी पण भगवान् विना बीजा देवनी उपासना न करवी अने जो बीजा देवनी उपासना करीए तो तेमां मोटो दोष लागेछे ने पतिव्रतापणुं जायछे ने वेश्याना जेवी भक्ति थायछे माटे भगवाननेविषे सीता ने रुक्मिणीना जेवी भक्ति करवी. अने ते भगवाननुंज ध्यान करवुं अने ते विना बीजा कोइ देवनुं ध्यान न करवुं बीजुं जे साधु सिद्धगतिने पाम्या होय ने समाधिनिष्ठ होय तेनुंपण ध्यान न करवुं. [1] अने सर्वेने पोतपोताना वर्णाश्रम धर्मनेविषे दृढपणे वर्तवुं. बीजुं आ जे अमारी आज्ञा छे तेने जे पुरुष दृढपणे पाळशे तेने श्रीकृष्णनारायणनेविषे नारदना जेवी दृढ भक्ति थशे अने आ अमारी आज्ञाने जे स्त्री मानशे तेने श्रीकृष्णनारायणनेविषे लक्ष्मीजी तथा राधिकाजी आदिक जे गोपीयो तेना जेवी भक्ति थशे अने आ अमारा वचनने जे नहि माने तेनी भक्ति वेश्याना जेवी थशे संवत् १८७८ ना मागशर वदी १४ ने दिवस लख्योछे, एवी रीते कागळ लखीने देशदेशना सत्संगी प्रत्ये मोकलाव्यो । इति वचनामृतम् ॥ १९ ॥ १५२ ॥

संवत् १८७८ ना पोष वदी १४ चौदशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदे-

१ अने शुष्कवेदान्ती तथा तेमना ग्रन्थोनो प्रसंग सर्वप्रकारे न करवो ।

वनारायणना मंदिरनी आगळ विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळो चोफाळ ओढीने ते उपर छिंटनी रजाइ ओढी हती ने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने परमहंस ताल मृदंग वजाडीने कीर्तन बोलता हता.

पछी श्रीजिमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे, आजतो अमारा उतारामां अमारी पासे रहेनारा जे सोमलोखाचर आदिक हरिभक्त तेमने अमे एक प्रश्न पुछ्यो छे तेनो सर्वे परमहंस मळीने उत्तर करो, पछी परमहंसे कह्युं जे हे महाराज! ए प्रश्न अमने संभळावो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "समाधिनिष्ठ पुरुष थायछे तेनेतो मायाथकी परस्थिति थायछे अने भगवानना स्वरूपनोपण दृढ संबन्ध रहेछे माटे ए समाधिनिष्ठनेतो ज्ञानशक्ति तथा देह इंद्रियोनी शक्ति ते वृद्धि पामी जोइए; शामाटे जे मायाथकी जे चोवीश तत्त्व थयांछे ते जडचैतन्यरूप[1] छे पण एकलां जड न कहेवाय तेम एकलां चैतन्यपण न कहेवाय अने ते तत्त्वमां शक्तिपण सरखी न कहेवाय इंद्रियोथकी अंतःकरणमां जाणपणुं विशेष छे अने अंतःकरणथकी इंद्रियो अंतःकरणनो द्रष्टा जे जीव तेमां ज्ञान विशेष छे ते जीवने ज्यारे समाधि थायछे त्यारे इंद्रियो अंतःकरणना द्रष्टापणानो त्याग करीने मायापर जे ब्रह्म ते सरखो ए जीव चैतन्य थायछे अने भगवानना स्वरूपनो संबन्ध रहेछे ते समाधिवाळाने केटलाक एम समझेछे जे 'जेने समाधि थायछे तेनेतो मोरे समझण हती तेटलीपण रहेती नथी' माटे ए समाधिवाळाने ज्ञान तथा देह इंद्रियोनी शक्ति वृद्धि पामेछे के नथी पामती?" ए प्रश्न छे, पछी

१ त्रण देहरूप।

परमहंसे जेवी जेनी बुद्धि पुगी तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजिमहाराजना ए प्रश्ननो उत्तर थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीए. ए प्रश्ननो तो एम उत्तर छे जे, साक्षी जे ब्रह्म तेतो मायामांथी उत्पन्न थयुं एवुं जे चोविश तत्त्वात्मक ब्रह्मांड तेनेविषे प्रवेश करीने तेने चैतन्यमय करेछे अने तेने सर्व क्रिया करवानी सामर्थि आपेछे अने ते ब्रह्मनो एवो स्वभाव छे जे काष्ठ तथा पाषाणजेवुं जड होय तेनेविषे प्रवेश करे त्यारे ते चाले हाले एवुं थइ जायछे ते ब्रह्म संघाथे समाधिए करीने तुल्यभावने पामे त्यारे ए जीवपण ब्रह्मरूप कहेवायछे अने तेने ज्ञाननी वृद्धि थायछे.[1] अने इंद्रियोनी शक्तितो ज्यारे तप ने निवृत्तिधर्म ने वैराग्य तेणे युक्त योगाभ्यास होय तेने शुकजीना जेवी सिद्धदशा प्राप्त थायछे अने जेने तप तथा निवृत्तिधर्म तथा वैराग्य तेनुं सामान्यपणुं होय अने धर्म अर्थ ने कामरूप जे प्रवृत्तिमार्ग तेनेविषे रह्यो होय तेनेतो समाधि थाय तोयपण एकलुं ज्ञानज वृद्धि पामे पण इंद्रियोनी शक्ति वृद्धि पामीने सिद्धदशा न आवे. अने जेम जनकराजा ज्ञानी हता तेवो ज्ञानी थाय पण प्रवृत्तिमार्गवाळाने नारद, सनकादिक, शुकजीना जेवी सिद्धदशा न पमाय अने जे सिद्ध होय तेतो श्वेतद्वीप आदिक जे भगवाननां धाम तेनेविषे एनेएज शरीरे करीने जाय अने लोक अलोक सर्व ठेकाणे एनी गति होय अने प्रवृत्तिमार्गवाळानेतो जनकनी पेठे केवळ ज्ञाननीज वृद्धि थायछे पण ज्ञान घटतुं नथी. अने जेम श्रीकृष्णभगवाने गीतामां कह्युं तेमतो थायछे, त्यां श्लोक छे—"**या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।**

१ इन्द्रियोनी शक्ति (आ देहथीज अन्यलोकमां गमन, दूर श्रवण दर्शन विगेरे) नुं अधिकपणुं ते समाधिनुं फळ मान्युं नथी।

यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥" ए श्लोकनो ए अर्थ छे जे 'जेनेविषे भूतप्राणिमात्र सुता छे तेनेविषे संयमी पुरुष जाग्याछे अने जेनेविषे भूतप्राणिमात्र जाग्याछे तेनी कोरे संयमी पुरुष सुता छे' माटे जे पुरुषनी अंतरात्मा सन्मुख द्दष्टि वर्तती होय तेने देह इंद्रियो अंतःकरणनी कोरे शून्यभाव वर्तेछे तेने देखीने अणसमझु होय ते एम जाणे जे 'समाधिवाळाने ज्ञान ओछुं थइ जायछे' पछी रजोगुण तमोगुणमां तथा मलिन सत्त्वगुणमां रहीने आ प्रश्ननो उत्तर करवा जाय तेने एमज सुझे जे 'समाधिवाळाने ज्ञान ओछुं थइ जायछे' पण एम नथी जाणतो जे 'हुं देहाभिमानी छुं ते मूर्खाइमांथी कहुंछुं माटे समाधिवाळो तो देह इंद्रियो अंतःकरणथी जुदो पडीने वर्तेछे तोपण ज्ञाननी वृद्धि थायछे अने पाछो इंद्रियो अंतःकरणमां आवीने वर्ते तोपण पोताने समाधिनेविषे जे ज्ञान थयुंछे तेनो नाश थाय नहि अने तप निवृत्तिधर्म अने वैराग्य तेने ग्रहण करीने प्रवृत्तिमार्गनो त्याग करे तो जेम ज्ञान वृद्धि पाम्युंछे तेम इंद्रियो अंतःकरणनी शक्तियोपण वृद्धि पामे अने नारद सनकादिक शुकजीना जेवी सिद्धगतिनेपण पामे । इति वचनामृतम् ॥ २० ॥ १५२ ॥

संवत् १८७८ ना फागण शुदि १५ पुन्यमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ विराजमान हता अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती तथा श्वेत पाघ मस्तक उपर बांधी हती अने श्रीजिमहाराजना मुखारविंदनी आगळ प्रेमानंदस्वामी आदिक सर्वे परमहंस विष्णुपद बोलता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कीर्तन रहेवाद्यो ने सर्वे सुरत द-

इने सांभळो एक वार्ता करीए छीए जे, जेटला कल्याणने अर्थे व्यासजीए ग्रंथ कर्याछे ते सर्वे सुरत राखीने अमे सांभळ्या ते सर्वे शास्त्रमां एज सिद्धांत छे अने जीवना कल्याणने अर्थेपण एटलीज वात छे जे, आ सर्व जगत् छे तेना कर्ता हर्ता एक भगवान् छे अने ए सर्वे शास्त्रनेविषे भगवाननां चरित्र छे कां भगवानना संतनां चरित्र छे अने वर्णाश्रमना धर्मनी जे वार्ता छे अने तेनुं फळ जे धर्म अर्थ अने काम छे तेणे करीने कांइ कल्याण थतुं नथी अने केवळ वर्णाश्रमना धर्मवतेतो संसारमां कीर्ति थाय ने देहे करीने सुखीयो रहे एटलुंज फळ छे अने कल्याणने अर्थेतो भगवानने सर्व कर्ता हर्ता जाणवा एज छे. अने जेवुं परोक्ष भगवानना राम कृष्णादिक अवतारनुं माहात्म्य जाणेछे तथा नारद, सनकादिक, शुकजी, जडभरत, हनुमान्, उद्धव इत्यादिक जे परोक्ष साधु तेनुं जेवुं माहात्म्य जाणेछे तेवुंज प्रत्यक्ष एवा जे भगवान् तथा ते भगवानना भक्त साधु तेनुं माहात्म्य समझे तेने कल्याणना मार्गमां कांइए समझवुं बाकी रह्युं नहि ते आ वार्ता एकवार कहे समझो अथवा लाखवार कहे समझो आज समझो अथवा लाखवर्षे केडे समझो पण ए वात समझेज छुटको छे. अने नारद, सनकादिक, शुकजी, ब्रह्मा, शिव एमने पुछो तोपण डाह्या छे ते अनेक वातनी युक्ति लावीने प्रत्यक्ष भगवान् ने प्रत्यक्ष संत तेनेज कल्याणना दाता बतावे अने जेवुं परोक्ष भगवान ने परोक्ष संतनुं माहात्म्य छे तेवुंज प्रत्यक्ष भगवान् ने प्रत्यक्ष संतनुं माहात्म्य बतावे. अने एटलो जेने दृढ निश्चय थयो होय तेने सर्वे मुद्दो हाथ आव्यो अने कोइ काळे ते कल्याणना मार्गथकी पडे नहि, जेम ब्रह्मा, शिव, बृहस्पति अने पराशरादिक ते कामादिके करीने धर्मथकी पड्या तोपण प्रत्यक्ष भगवान् ने प्रत्यक्ष संत तेनो परोक्षना

जेनो जो माहात्म्ये युक्त निश्चय हतो तो कल्याणना मार्गमांथी पड्या नहि माटे सर्व शास्त्रनुं रहस्य आ वार्ता छे.

अने तेज दिवस सांझने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए चडीने श्रीलक्ष्मीवाडीए पधार्या हता ने त्यां आंबाना वृक्ष हेठे ओटा उपर ढोलिए विराजमान हता अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती ने श्वेत पाघ माथे बांधी हती अने ते पाघनेविषे पिळा पुष्पनो तोरो विराजमान हतो अने कान उपर मोगराना पुष्पना गुच्छ विराजमान हता अने कंठनेविषे मोगराना पुष्पनो हार विराजमान हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे सांभळो तमने एक प्रश्न पुछीए जे "जीवने स्वप्न अवस्थानेविषे जेजे स्वप्नमां सृष्टि देखायछे अने ते स्वप्ननी सृष्टिना जे भोग तेने जीव भोगवेछे ते ए सृष्टिरूपे ते जीव पोते थायछे? के ए जीव पोताना संकल्पे करीने स्वप्ननेविषे ए सृष्टिने सजेछे? अने जेम जीवने छे तेमज सर्व ब्रह्मादिक ईश्वर छे तेनेपण स्वप्नसृष्टि छे ते पोते ए सृष्टिरूपे थायछे? के पोते संकल्पे करीने सजेछे? के ए जीव ईश्वरथकी पर जे परमेश्वर तेज स्वप्ननी सृष्टिने सजी आपेछे?" ए प्रश्ननो उत्तर करो, पछी जेवी जेनी बुद्धि तेवुं तेणे कह्युं पण कोइए यथार्थ उत्तर थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जीव तथा ईश्वर एमांथी कोइ स्वप्नसृष्टिने सजता नथी अने पोतेपण स्वप्नसृष्टिरूपे थता नथी एतो ए जीव ईश्वरथकी पर जे परमेश्वर कर्मफळप्रदाता छे ते ए जीव ईश्वरना कर्मने अनुसारे करीने ए स्वप्नसृष्टिने सजेछे.' ए

१ वे श्रुतिमां कह्युं छे के "न तत्र रथा न रथयोगा न पन्थानो भवन्त्यथ

स्वप्नसृष्टिनेविषे जे अस्थिरपणुं छे ने भ्रांतपणुं छे तेतो देशने योगे करीने प्रवर्तेछे केमजे कंठ देश छे ते एवोज छे जे ए स्थळमां अनंत भात्यनी एवी सृष्टि देखाइ आवे, जेम काचनुं मंदिर होय तेमां एक दिशे दिवो कर्यो होय तो अनेक दिवा देखाइ आवे, तेम कंठ देशने योगे करीने एक संकल्प होय ते अनंत रीत्ये देखायछे.[1] अने जे ज्ञानी होय तेतो ज्यां देशनुं प्रधानपणुं होय त्यां देशनुंज समझे अने काळनुं प्रधानपणुं होय त्यां काळनुंज समझे अने कर्मनुं प्रधानपणुं होय त्यां कर्मनुंज समझे अने परमेश्वरनुं प्रधानपणुं होय त्यां परमेश्वरनुंज समझे. अने मूर्ख होय तेतो जे कोइक एक वात समझाइ गइ तेनेज मुख्य जाणे जो काळनी वात समझाणी होय तो काळने मुख्य जाणे अने कर्मनी वात समझाणी होय तो कर्मने मुख्य जाणे अने मायानी वात समझाणी होय तो मायाने मुख्य जाणे पण ज्यां जेनुं प्रधानपणुं तेने त्यां जुदुं जुदुं मूर्खने समझतां न आवडे. अने ज्ञानी होय तेतो जे ठेकाणे जेनुं प्रधानपणुं होय ते ठेकाणे तेनुंज प्रधानपणुं ले अने परमेश्वर छे तेतो देश, काळ, कर्म, माया ए सर्वना प्रेरक छे अने पोतानी इच्छाए करीने देशकाळादिकनुं प्रधानपणुं रहेवा देछे पण सर्वे परमेश्वरनेआधारे छे. जेम शिशुमारचक्र छे ते ध्रुवमंडळने आधारे छे अने जेम प्रजा सर्वे राजाने आधारे छे तेमां दिवान होय तथा वजिर होय तेनुं राजा चालवा दे तेटलुं चाले पण न चालवा दे त्यारे एक अणुमात्रपण न चाले, तेम देश, काळ, कर्म, माया तेनुं परमेश्वर चालवा दे तेटलुं चाले पण

रथान् रथयोगान् पथः सृजते" (स्वप्नमा रथो नथी, रथमा जोडवाना अश्वो नथी, जवाना मार्गो नथी, परंतु सर्वशक्ति परमात्मा रथ रथना अश्व अने मार्गने सृजेछे) इत्यादि।

[1] देशना प्रसंगथी बीजाओनुं ते ते क्रियामां प्रधानपणुं कहेछे।

परमेश्वरना गमताचहार अणुमात्रपण न चाले माटे सर्वकर्ता ते परमेश्वरज छे, एटली वार्ता करीने श्रीजिमहाराज पाछा दरबारमां पधारता हवा । इति वचनामृतम् ॥ २१ ॥ १५४ ॥

संवत् १८७८ ना फागण वदी १० दशमीने दिवस श्रीजिमहाराज अधरात्रिने समे जाग्या ने श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ दक्षिणादे मुखारविंदे ढोलिया उपर विराजमान थया हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने ते समे सर्वे साधु तथा हरिभक्तने तेडाव्या पछी पोताना मुखारविंदनी आगळ ते सर्वेनी सभा भराइने बेठी.

त्यारे श्रीजिमहाराज साधु प्रत्ये बोल्या जे एक वार्ता करीए ते सांभळो जे, जेम बे सेना होय ने ते परस्पर लडवाने तैयार थइ होय ने बेयनां निशान सामसामां रोप्यां होय पछी बेयना मनमां एम होय जे 'आपणुं निशान छे ते एना निशानने ठेकाणे मांडिये ने एनुं निशान लइ लइए' पण एवो विचार नथी थतो जे 'एना निशानलगी जइशुं तेमांतो केटलाकनां माथां पडशे ने लोहीनी नदी चालशे' तेनो तो एने भय नथी कांजे शूरवीर होय तेने मरवानी बीक होय नहि अने जे कायर छे तेतो भाग्याना हजारो विचार करेछे अने एमपण विचार करेछे जे 'आपणी फोज जितशे तो कोइकनुं धन हथियार हशे ते लुंटि लइशुं' अने ते बेय राजाना जे शूरवीर छे तेनेतो मरवानोपण भय नथी ने लुंटवानो पण लोभ नथी पण तेनुं निशान लेवुं ने पोतानी जित करवी एवोज एक संकल्प छे, एतो दृष्टांत छे एनुं सिद्धांत तो ए छे जे, निशानने ठेकाणेतो भगवाननुं धाम छे अने राजाना शूरवीरने ठेकाणेतो भगवानना दृढ भक्त छे तेनेतो आ संसारनेविषे मान

थाओ अथवा अपमान थाओ देहने सुख थाओ अथवा दुःख थाओ शरीर रोगी रहो अथवा निरोगी रहो देह जीवो अथवा मरो पण एने कोइ जातनो हैयामां घाट नथी जे 'आपणे आटलुं दुःख थशे के आपणे आटलुं सुख थशे' ए बेमांथी कोइ जातनो हैयामां घाट नथी, ए भक्तजनना हैयामांतो एज दृढ निश्चय छे जे 'आ देहे करीने भगवानना धाममां निवास करवोछे पण वचमां क्यांइ लोभावुं नथी' अने कायरने ठेकाणे जे देहाभिमानी एवा भगवानना भक्त छे तेनेतो प्रश्न भज्यामां हजार जातना घाट थायछे जे 'जो करडां वर्तमान थशे तो नहि नभाय ने सुगम वर्तमान हशे तो नभाशे' अने वळी एवोपण विचार करे जे 'आवो उपाय करीए तो संसारमांपण सुखीया थइए अने नभाशे तो हळवाहळवा सत्संगमां नभीशुं' एवो भक्त होय ते कायरने ठेकाणे जाणवो. अने शूरवीर जे भगवानना दृढ भक्त होय तेने तो पिंड ब्रह्मांड संबन्धि कोइ जातनो घाट न थाय.

पछी श्रीजिमहाराजे पोताना वृत्तांतनी [1]वार्ता करवा मांडी जे, अमे अमदावादमां श्रीनरनारायणदेवनी प्रतिष्ठा करवा गया हता त्यारे हजारो माणसनो मेळो भरायो हतो पछी ज्यारे श्रीनरनारायणदेवनी प्रतिष्ठा थइ रही अने अमदावादना ब्राह्मणो चोराशी जमी रह्या पछी अमे सावदा थइने चाली नीसर्या ते जेतलपुरमां जइने रात रह्या पछी त्यां जइने एवो विचार करवा मांड्यो जे 'जेटलां माणस देख्यांछे ने जेटली प्रवृत्ति देखीछे तेने टाळी नाखवी' पछी तेने विसार्याने अर्थे हृदयामां अतिशय दुःख थयुं तेणे करीने शरीरेपण मांदा थइ गया पछी त्यांथकी धोळके जइने रात रह्या अने धोळकाना चाल्या एने ए विचारमां गाम

१ उदाहरण माटे ।

कोठ्यने पासे गणेश धोळकानी राण्योमां जइने रात रह्या ते विचार एवो करवा मांड्यो जे देहनी स्मृति न रही; पछी विचारतां विचारतां सर्वे प्रवृतिने विसारी मेली ने जेवा अमे कांकरीए तळाव उतर्या नहोता ने मेळोपण भरायो नहोतो ने त्यारे कोइ जातनो घाट नहोतो तेवी रीते सर्व घाट टाळी नाख्या. अने ज्यारे लौकिक घाट मटी गया त्यारे अंतर्दृष्टि रहेवा मांडी पछी अलौकिक आश्चर्य देखावा मांड्यां अने देवता संबन्धि जे भोग छे ते देखावा मांड्या ने अनंत प्रकारनां विमान ने अनंत प्रकारनी अपछरा ने अनंतप्रकारनां वस्त्र अनंत प्रकारना अलंकार ते जेम आंइ मृत्युलोकनेविषे छे तेमज त्यां देखावा लाग्यां पण अमारा अंतरमांतो एक भगवान् विना बीजुं कांइ गम्युं नहि ने जेम आंइना पंच विषय ते अमने तुच्छ भाशा ने तेमां अमारुं मन लोभायुं नहि तेमज देवलोक ब्रह्मलोक पर्यंत अमारुं मन क्यांइ लोभायुं नहि, तेने देखीने देवता सर्वे अमारां वखाण करवा मांड्यां जे 'तमे भगवानना एकांतिक भक्त खरा केमजे तमारुं मन भगवानने मुकीने क्यांइ लोभातुं नथी' पछी तेमनां वचन सांभळीने अमारे हइयानेविषे सुधी हिम्मत आवी, पछी अमे मनने कह्युं जे तारुं जेवुं रूप छे तेवुं हुं जाणुंछुं जो भगवान् विना बीजा पदार्थनो घाट घड्यो तो तारा भुका करी नांखीश तेमज बुद्धिने कह्युं जे भगवान् विना बीजो निश्चय कर्योतो तारी वात छे? तेमज चित्तने कह्युं जे भगवान् विना बीजुं चिंतवन कर्युं तो तारापण भुका करी नांखीश तेमज अहंकारने कह्युं जे भगवानना दासत्वपणा विना बीजुं अभिमान धर्युं तो तारो नाश करी नाखीश, पछीतो अमारे जेम आ लोकना पदार्थनी अत्यंत विस्मृति थइ हती तेमज देवलोक ब्रह्मलोकना पदार्थनीपण अत्यंत विस्मृति थइ गइ अने ज्यारे ए सर्वे संकल्प टळी गया त्यारे

संकल्पनो मंदवाड हतो तेपण टळी गयो. एवीरीते भगवाननो भक्त होय तेने वर्तवुं, एम श्रीजिमहाराजे पोतानुं वृत्तांत भक्तजनना कल्याणने अर्थे कह्युं ने पोतेतो साक्षात् श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम नारायण छे.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वासुदेवमाहात्म्यनेविषे एकांतिक भक्तना धर्म कह्याछे जे 'एकांतिक भक्त होय ते पोतानुं रूप देह माने नहि ने पोताने चैतन्यरूप माने अने स्वधर्म, ज्ञान ने वैराग्य तेणे सहित भगवाननी भक्ति करे ने एक भगवान् विना बीजा कोइ पदार्थनी वासना राखे नहि' अने ए ज्यारे ए भगवानने भजीने आवी रीतनो साधु थयो त्यारे साधुथकी कोइ बीजी मोटी-पदवी नथी, जेम राजा होय ने तेनी राणी होय ते जेटलामां राजानुं राज्य छे तेटलामां राणीनुं राज्यपण कहेवाय अने जेवो राजानो हुकम चाले तेवोज राणीनोपण हुकम चाले, तेम भगवाननो जेवो प्रताप छे तेवोज ए साधुनोपण प्रताप छे माटे तुच्छ एवां जे संसारनां सुख ते साधुने इच्छवां नहि, कांजे ए साधु ज्यारे भगवानना धामने पामेछे त्यारे अनंत कोटि ब्रह्मांडना पति जे ब्रह्मादिक ईश्वर ते भगवानने अर्थे जेम अनंत प्रकारनी भेट्य सामग्रीयो लावेछे तेम साधुने अर्थेपण लावेछे ने भगवानने प्रतापे करीने ए साधु अलौकिक ऐश्वर्य सामर्थिने पामेछे एवो मोटो विचार हइयामां राखीने एक भगवान् विना बीजुं कांइपण मनमां इच्छवुं नहि. अने जेम हाथमां चिंतामणि आवी त्यारे ते चिंतामणिने जतन करीने राखवी केमजे जो हाथमां चिंतामणि छे तो जे पदार्थने इच्छशे ते पदार्थने आपशे, तेम भगवानना भक्तने भगवाननी, मूर्तिरूपी चिंतामणीने झाली राखवी पण तेने मुकवीज नहि तो एने सर्वे वातनी सिद्धि थशे । इति वचनामृतम् ॥ २२ ॥ १५५ ॥

संवत् १८७८ ना ज्येष्ठ शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ विराजमान हता ने मस्तक उपर धोळी पाघ बांधी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज एम बोल्या जे, आजतो अमे मननुं रूप विचारी जोयुं ते मन जीवथकी जुदुं न देखायुं मनतो जीवनीज कोइक किरण छे पण जीवथकी जुदुं नथी. अने मननुं रूपतो एवुं देखायुं जे जेम उनाळामां लुक होय तथा जेम शियाळामां हिम होय तेवुं मननुं रूप देखायुं अने जेम माणसना देहमां लुक पेसे तथा हिम पेसे त्यारे ते माणस मरी जायछे तेम ए मन इंद्रियोद्वारे थइने ज्यारे विषय सन्मुख जायछे त्यारे ते विषय जो दुःखदायी होय तो मन तपीने उनाळानी लुक जेवुं थायछे अने ते विषय जो सुखदायक होय तो तेनेविषे मन शियाळाना हिम जेवुं थायछे ते ज्यारे दुःखदायी विषयने भोगवीने लुक सरखुं उनुं थइने जीवना हृदयमां पेसेछे त्यारे जीवने अतिशय दुःखियो करीने कल्याणना मार्गमांथी पाडी नाखेछे ए ते लुक लागीने मरे तेम जाणवुं. अने ज्यारे ए मन सुखदायी विषयमां सुखने भोगवे त्यारे टाढुं हिम सरखुं थइने जीवना हृदयमां पेसेछे अने जीवने सुखीयो करीने कल्याणना मार्गथी पाडी नाखेछे ए ते हिमाळानो वा आवे ने मरे तेम जाणवुं. माटे जेनुं मन भुंडा विषयने देखीने तपेपण नहि अने सारा विषयने देखीने टाढुंपण थाय नहि एवी रीते जेनुं मन अविकारी रहेतुं होय तेने

१ ज्ञातृताविशिष्टवृत्ति ।

परमभागवत संत जाणवा. अने एवुं मन थवुं ए कांइ थोडी वात नथी अने मननोतो केवो स्वभाव छे तो जेम बाळक होय ते सर्पने अग्निने तथा उघाडी तरवारने झालवा जाय ते जो झालवा न दइए तोपण दुःखी थाय अने जो झालवा दइए तोपण दुःखी थाय, तेम जो मननें विषय भोगववा न दइए तोपण दुःखी थाय ने जो भोगववा दइए तोपण विमुख थइने अतिशय दुःखी थाय माटे जेनुं मन भगवानने विषे आसक्त थयुंछे ने विषयने योगे करीने टाढुं उनुं थतुं नथी तेनेज साधु जाणवा । इति वचनामृतम् ॥ २३ ॥ १५६ ॥

संवत् १८७९ ना श्रावण शुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए चढीने श्रीलक्ष्मीवाडीए पधार्या हता ने त्यां चोतरा उपर उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हता ने कंठनेविषे मोगराना पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पाघनेविषे मोगराना पुष्पनो तोरो धारण कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज भगवानने विषे अचळ निष्ठावाळा जे भक्त होय तेने कोइ जातनो विक्षेप आडो आवे के न आवे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एकतो योगनिष्ठा छे ने बीजी सांख्यनिष्ठा छे तेमां योगनिष्ठावाळो जे भगवाननो भक्त ते भगवानना स्वरूपमां पोतानी अखंड वृत्ति राखे अने सांख्यनिष्ठावाळो जे भगवाननो भक्त तेतो मनुष्यनां सुख तथा सिद्ध, चारण, विद्याधर, गंधर्व, देवता ए सर्वेनां जे सुख तेने समजी राखे तथा चौद लोकनी मांहिलीकोरे जे सुख छे ते सर्वेनुं परिमाण करी राखे जे 'आ सुख ते

आटलुंज छे' अने ए सुखनी केड्ये जे दुःख रह्युंछे तेनुंपण परिमाण करी राखे पछी दुःखे सहित एवां जे ए सुख तेथकी वैराग्यने पामीने परमेश्वरनेविषेज दृढ प्रीति राखे एवी रीते सांख्यनिष्ठावाळाने तो समझणनुं बळ होय. अने योगनिष्ठावाळाने तो भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति राखवी तेनुंज बळ होय पण कोइक विषम देशकाळादिकने योगे करीने कोइक विक्षेप आवे तो भगवानना स्वरूपमां वृत्ति रहेती होय ते कांइक बीजेपण चोटी जाय केमजे योगनिष्ठावाळाने समझणनुं बळ थोडुं होय माटे कांइक विघ्न थइ जाय खरुं. अने सांख्यनिष्ठा ने योगनिष्ठा ए बे जो एकनेविषे होय तो पछी कांइ बांधोज न रहे. अने एवो जे भगवाननो भक्त होय तेतो भगवाननी मूर्ति विना बीजा कोइ पदार्थमां लोभायज नहि अने एम समझे जे 'भगवाननुं जे अक्षरधाम ने ते धामनेविषे रही एवी जे भगवाननी मूर्ति ने ते धामनेविषे रह्या एवा जे भगवानना भक्त ते विना जेजे लोक छे ने ते लोकनेविषे रह्या एवा जे देव छे ने ते देवना जे वैभव छे ते सर्वे नाशवंत छे' एम जाणीने एक भगवाननेविषेज दृढ प्रीति राखेछे माटे एवा भक्तने तो कोइ जातनो विक्षेप आवतो नथी। इति वचनामृतम् ॥ २४ ॥ १५७ ॥

संवत् १८७९ ना श्रावण वदी ६ छठ्यने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां दक्षिणादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे सर्वे परमहंसने कह्युं जे सांभळो अमे एक प्रश्न पुछीए छीए जे "एकतो भगवाननो भक्त त्यागी छे ने देहे करीनेतो सर्व वर्तमान दृढ राखेछे ने अंतरमांतो विषय भोगववानी वा-

सना अतिशय तीखी छे तोपण देहे करीनेतो भ्रष्ट थतो नथी एवो तो त्यागी छे अने बीजो भक्त छे तेतो गृहस्थाश्रमी छे ने तेनेतो देहे करीने धन स्त्रीनो प्रसंग छे ने अंतरमांतो सर्वे प्रकारे निर्वासनिक छे ए बेय जणा ज्यारे देह मुकशे त्यारे ए बेय शी गतिने पामशे? ए बेय तेसरखी गतिने पामशे? के अधिक न्यून थशे?" ए बेयनो विक्तिए करीने जुदोजुदो उत्तर आपो, पछी गोपाळानंदस्वामी बोल्या जे, 'ए त्यागी ज्यारे देह मुकशे त्यारे एने विषय भोगववानी अंतरमां तीखी वासना छे माटे एने तो भगवान् मृत्युलोकनेविषे अथवा देवलोकनेविषे मोटो गृहस्थ करशे अने अतिशय विषयभोग प्राप्त थशे ते जेवा भगवद्गीतामां योगभ्रष्टने भोग कह्याछे तेवा भोगने देवलोकमां भोगवशे[1] अने ए गृहस्थ हरिभक्त छे ते तो देह मुकशे त्यारे निर्वासनिक छे माटे भगवाननुं जे ब्रह्मपुर धाम तेने पामशे ने भगवानना चरणारविंदमां निवास करीने रहेशे अने प्रथम कह्यो जे त्यागी तेतो विषय भोगवीने ज्यारे तृप्त थशे त्यारे ते विषयथकी वैराग्यने पामीने ने मनमां पश्चात्ताप करीने भगवाननुं भजन करशे पछी निर्वासनिक थइने भगवानना धाममां जशे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ठीक कह्युं एनो उत्तर एज छे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "एवी दृढ वासना होय ने तेनी जेने टाळवानी इच्छा होय तो ते शो उपाय करे त्यारे टळे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेवुं उकाखाचरने संतनी सेवा कर्यानुं व्यसन पड्युं छे तेवी रीते भगवान् तथा भगवानना संत तेनी सेवा कर्यानुं जेने व्यसन पडे ने ते विना एक क्षणमात्रपण रहेवाय नहि तो एना अंतःकरणनी जे मलिन वासना ते सर्वे नाश पामी जायछे.

१ बन्नेनी गति भिन्न भिन्न थशे । २ पण अक्षधामने नहि पामे ।

पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! जेणे करीने भगवान् अतिशय राजी थाय एवुं कयुं साधन छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यारे घरमां एक मण अन्न मळतुं होय ने त्यारे जेवी संतनी उपर प्रीति होय ने जेवुं दीनपणुं होय अने पछी तेने एक गामनुं राज्य आवे अथवा पांच गामनुं राज्य आवे अथवा पचास गामनुं राज्य आवे अथवा सो गामनुं राज्य आवे अथवा सर्वे पृथ्वीनुं राज्य आवे तोपण संतनी आगळ जेवो कंगाल हतो ने दीन आधीन रहेतो तेवोने तेवोज प्रीतिए युक्तथको दीन आधीन रहे तेमज इंद्रलोक तथा ब्रह्मलोकनुं राज्य पामे तोपण संतनी आगळ तेवोने तेवोज दीन आधीन रहे. अने त्यागी होय ने ते जेवो प्रथम गरीब होय अने जेम सौ संतनी टेलचाकरी करतो होय तेवीने तेवीज पोतामां भगवानना जेवां ऐश्वर्य आवे तोपण करतो रहे पण साधु साथे पितराइदावो बांधे नहि ने बरोबरीयापणुं करे नहि एवां जेनां लक्षण होय तेनी उपर भगवान् अति प्रसन्न थायछे। इति वचनामृतम् ॥ २५ ॥ १५८ ॥

संवत् १८७९ ना भादरवा शुदि ११ एकादशीने दिवस रात्रिने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे भगवानना भक्त होय तेने तो भगवानने तथा भगवानना भक्तने जे न गमतुं होय ते नज करवुं अने परमेश्वरने भज्यामां अंतराय करता होय ने ते पोतानां सगां वहालां होय तेनोपण त्याग करवो अने भगवानने न गमे एवो कोइक पोतानां स्व-

भाव होय तो तेनोपण शत्रुनी पेठे त्याग करवो पण भगवानथी जे विमुख होय तेनो पक्ष लेवो नहि, जेम भरतजीए पोतानी मातानो[1] पक्ष न लीधो. अने भगवानो भक्त होय तेनेतो सौथी विशेषे पोतामांज अवगुण भासे अने जे बीजामां अवगुण जुवे अने पोतामां गुण परठे तेतो सत्संगी छे तोपण अर्धो विमुख छे अने भगवानना भक्तनेतो भगवाननी भक्ति करतां आत्मज्ञान तथा वैराग्य तथा धर्म ते जो अंतराय करता होय तो तेनेपण पाछा पाडीने भगवाननी भक्तिनुंज मुख्यपणुं राखवुं अने जो भक्तिनेविषे सहायरूप थता होय तोतो ए ठीक छे एम समझे तेज भगवाननो पुरो भक्त कहेवाय अने जेने बीजानो अवगुण आवे ने पोतामां गुण परठे तेतो गमे तेवो मोटो होय तोपण तेने कल्याणना मार्गमां विघ्न थायछे, जेम राधिकाजी घणां मोटां हतां अने भगवानने विषे प्रेमपण अतिशय हतो पण ज्यारे पोतामां गुण मान्यो अने श्रीकृष्णभगवाननेविषे अवगुण मान्यो त्यारे पोताना प्रेममां तमोगुणनो भाग आव्यो पछी श्रीकृष्णभगवान् तथा श्रीदामा साथे वढवेड करी पछी श्रीदामानो शाप थयो तेणे करीने गोलोकमांथी पडीने गुजरने घेर अवतार लीधो अने भगवान् विना अन्य पुरुष हतो तेने धणी कर्यो एवा महा मोटा लांछनने पाम्यां अने श्रीदामा हतो तेणेपण पोतामां गुण मान्यो अने राधिकामां अवगुण परठ्यो तो राधिकानो शाप पामीने दैत्य थवुं पड्युं अने ए धाममांथी तो पडवानी रीत नथी ने जे पड्या तेतो भगवाननी इच्छा एवी हती तोपण भगवाने एम जणाव्युं जे 'राधिकाजी जेवो मोटो होय ने ते पोतामां गुण मानीने भगवानना भक्तनो अवगुण ले तो तेपण पडी जाय तो बीजानी शी गणती?' माटे भगवानो

१ कैकेयी ।

भक्त होय तेनेतो सर्वे सत्संगीनो गुणज लेवो ने पोतानोतो अवगुणज लेवो एवी रीतें समझतो होय ने थोडी बुद्धि होय तोपण तेनो सत्संग दिवसे दिवसे वृद्धि पामतो जाय अने ते विनातो झाझी बुद्धि होय तोपण दिवस दिवस प्रत्ये सत्संगमांथी पाछो हठतो जाय अने अंते जातां निश्चय विमुख थाय. अने वळी ए रीत तो सर्व ठेकाणे छे जे, जे चाकर होय अथवा शिष्य होय तेने राजा होय अथवा गुरु होय ते जेम चढीने कहेवा मांडे तेमां जे सवळुं लेतो जाय तो ते उपर राजा तथा गुरुने अतिशय हेत थायछे अने जेने शिखामणनी वात कहे ने अवळुं ले तो ते उपर हेत थतुं नथी, तेमज भगवाननीपण रीत छे जे जेने शिखामणनी वात कहे ने सवळुं ले तो ते उपर हेत थायछे पण जे अवळुं ले ते उपर थतुं नथी । इति वचनामृतम् ॥२६॥१५९॥

संवत् १८७९ ना कार्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां दक्षिणादे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठनेविषे गुलदावदिना धोळा ने पीळा पुष्पना हार विराजमान हता अने पाघमां बे कोरे तोरा लटकता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे मुक्तानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे "तमारे क्रोध थायछे त्यारे शे निमित्ते थायछे ? अने केटलुं निमित्त होय त्यारे क्रोध थायछे ? अने अमारेतो एकथी लाख रुपीयासुधी बगाड करे तो-पण पोता सारुतो क्रोध आवे नहि अने ज्यारे धर्मलोप करे अथवा ब-ळीयो होय ते गरीबने पीडे अथवा अन्यायनो पक्ष ले त्यारे तेनी उपर

अमारे कोइकने अर्थे लगारेक क्रोधनी चटकी आवेछे पण पोता-सारुतो लेशमात्र क्रोध आवतो नथी. अने कोइक सारु आवेछे ते-पण क्षणमात्रपण नथी रहेतो ने आंटिपण बंधाती नथी, तेम तमारे केवी रीते आवेछे ने केवी रीते टळेछे?" पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, कोइक पदार्थने योगे तथा कोइकनी अवळाइ देखाय तेने योगे ते उपर क्रोध थाय पण तत्काळ शमी जायछे.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "एवुं तमारे विचारनुं बळ रहेछे ते शाने योगे रहेछे?" त्यारे मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, एकतो भगवाननुं माहात्म्य विचारीने एम समझायछे जे 'जे रीते भगवानना कुराजिपो थाय ते स्वभाव राखवो नथी' अने बीजो शुकजी ने जड-भरत जेवा संतनो मार्ग जोइने एम विचार रहेछे जे 'साधुमां एवो अयोग्य स्वभाव न जोइए' पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, काम-क्रोधादिकना जोरने हठावे एवो जे विचार तेतो गुणथकी पर छे ते ए तमारा जीवमां रह्योछे अने एवी रीते काम क्रोधादिक गुणने हठावे एवुं जे जोर छे ते पूर्वजन्मनो संस्कार छे. अने तमारुं एट-लुंतो अमने जणायछे जे 'तमारे जेजे मायिक पदार्थनो योग थाय तेनी आंटीमां प्रथमतो आवी जवाय पण अंते जतां एना बंधनमां रहे-वाय नहि बंधन त्रोडीने निकळाय खरुं.'

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "प्रथम आवरण थइ जाय एवी काच्यप रहेछे ते शाने योगे रहेछे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, देशकाळादिक जे आठ छे तेमां जेवुं पूर्वसंस्कारमां जोर छे तेवुंज एकएकमां छे माटे ज्यारे एनो योग थाय त्यारे जरुर बंधन थायछे अने पूर्वना संस्कारनुं जोर रहेवा देता नथी. अने जो संस्कारमां लख्युं एटलुंज सुकृत दुष्कृत थाय तो वेद शास्त्र ने पुराण तेनेविषे

विधिनिषेधना भेद कह्याछे जे 'आ करवुं ने आ न करवुं' ते सर्व खोटुं थइ जाय; ते ए मोटानां करेलां शास्त्रतो खोटां थायज नहि. अने जय विजय हता तेणे जो अयोग्य क्रिया करी तो जे ठेकाणे काळ कर्म ने माया नथी एवुं जे भगवाननुं धाम त्यांथी पडी गया अने जो नारदजीने राजी कर्या तो प्रह्लादने देशकाळादिक अशुभ हता तोपण नडि शक्या नहि अने जो सनकादिकने कोपायमान कर्या तो देश काळादिक शुभ हता तोपण जय विजय पडी गया माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने तो जेम मोटा पुरुष राजी थाय तेम करवुं. अने ते मोटा पुरुषपण त्यारे राजी थाय ज्यारे कोइ प्रकारे अंतरमां मलिन वासना न रहे अने जेने गरीब उपर क्रोधादिकनो संकल्प थतो होय तो तेने मोटा उपरपण थाय अने पोताना इष्टदेव उपरपण क्रोधादिकनो मलिन घाट थाय माटे जेने कल्याण इच्छवुं तेने कोइ उपर मलिन घाट करवो नहि अने जो कोइ उपर मलिन घाट करे तो तेने भगवानना भक्त तथा भगवान् उपरपण मलिन घाट थइ जाय. अने अमाराथितो एक गरीबपण दुःखायो होय तो अमारा अंतरमां एवो विचार आवेछे जे 'भगवान सर्वान्तर्यामी छे ते एक ठेकाणे रहीने सर्वेना अंतरने जाणेछे माटे जेने अमे दुःखव्यो तेनाज अंतरमां विराजमान हशे त्यारे अमे भगवाननो अपराध कर्यो' एम जाणीने तेने पगे लागीने तेने कांइक जोइतुं होय ते आपीए पण जे प्रकारे ते राजी थाय तेम करीए छीए. अने वळी अमे विचारीने जोयुं जे, जे अतिशय त्याग राखे अथवा दया राखे तेथी भगवाननी भक्ति थाय नहि त्यारे उपासनानो भंग थायछे अने पूर्वे जेजे अतिशय त्यागी थयाछे तेना मार्गमां उपासनानो नाश थइ गयोछे माटे अमे एम विचारीने परमेश्वरनी

उपासना रहेवा सारु त्यागनो पक्ष मोळो करीने भगवानना मंदिर कराव्यांछे तेमां जो थोडो त्याग रहेशे तोपण उपासना रहेशे तो तेणेकरीने घणाक जीवनां कल्याण थशे अने जेने भगवाननी भक्ति करवी तेनेतो ढुंढियानी पेठे दया राखवे पण केम ठीक पडे? एनेतो परमेश्वरने वास्ते पुष्प लाव्यां जोइए तुळसी लाव्यां जोइए भाजी तरकारी लावी जोइए ठाकोरजीने वास्ते बाग बगीचा कराव्या जोइए मंदिर कराव्यां जोइए माटे जे अतिशय त्याग राखीने ने अतिशय दया राखीने मुठी वाळीने बेसी रहे तेणे भगवाननी भक्ति थती नथी अने ज्यारे भक्तिए रहित थाय त्यारे भगवाननी उपासनानो नाश थइ जाय एटले पछवाडेथी अंधपरंपरा चाले तेसारु अमे मंदिर कराव्यां छे ते अखंड भगवाननी उपासना राखवा सारु कराव्यां छे अने जे उपासक होय ते पोताना धर्ममांथी भ्रष्ट थायज नहि माटे पोतपोताना धर्ममां रहीने भगवाननी भक्ति उपासना करवी ए अमारो सिद्धांत छे। इति वचनामृतम् ॥ २७ ॥ १६० ॥

संवत् १८७९ ना फागण शुदि २ द्वितीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे वेदी उपर आथमणे मुखारविंदे विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो अने धोळी चादर ओढी हती अने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी दवे प्रागजीए कह्युं जे, श्रीमद्भागवत जेवो कोइ ग्रंथ नथी, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे श्रीमद्भागवततो सारुंज छे पण स्कंदपुराणनेविषे श्रीवासुदेवमाहात्म्य छे ते जेवो कोइ ग्रंथज नथी, कांजे ए

ग्रंथनेविषे धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने भक्ति तथा अहिंसापणुं एमनुं अतिशय प्रतिपादन कर्युंछे. एम कहिने पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वाल्मीकिरामायणनेविषे अने हरीवंशनेविषे अतिशय हिंसानुं प्रतिपादन कर्युंछे अने रघुनाथजीपण क्षत्रियनी प्रकृतिए वर्त्याछे अने रघुनाथजीनेविषे शरणागतवत्सलपणुं तो खरुं पण जे शरणागत होय ने ते जो जराय वांकमां आव्यो होय तो तेनो तत्काळ त्याग करी दे, जो सीताजीने माथे लगारेक लोकापवाद आव्यो तो अति वहालां हतां पण तत्काळ त्याग करी दीधो, पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे 'एवीतो रामानंदस्वामिनी प्रकृति हती' पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे अमारी प्रकृतितो एवी नथी अमारेतो परमेश्वरना भक्त उपर अतिशय दया वर्तेछे अने पांडवोनेविषे पण अर्जुननी प्रकृति बहु दयाळु हती अने पुरुषमात्रनेविषे तो रामचंद्रजी तथा अर्जुन एवो कोइ पुरुष नथी अने सीताजी ने द्रौपदी एवी कोइ स्त्रीमात्रमां स्त्रीयो नथी. हवे अमे अमारी जे प्रकृति छे ते कहीए छीए जे, अमारो दयाळु स्वभाव छे तोपण जे हरिभक्तनो द्रोही होय तेनोतो अमारे अभाव आवेछे अने हरीभक्तनुं घसातुं जो कोइ बोल्यो होय अने एने जो हुं सांभळुं तो ते साथे हुं बोलवाने घणो इच्छुं पण बोलवानुं मनज थाय नहि अने जे भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी करे ते उपरतो अमारे अतिशय राजीपो थइ जायछे. अने अमारी प्रकृति एम छे जे 'थोडीक वातमां कुराजीपण न थउं अने थोडीक वातमां राजीपण न थउं' अने ज्यारे जेमां राजी थयानो के कुराजी थयानो स्वभाव बहु दिवस सुधी जोउंछुं त्यारे राजीपो ने कुराजीपो थायछे पण कोइना कह्या सांभळ्या थकी कोइनी उपर राजीपो के कुराजीपो थतो नथी अने जेनो जेटलो गुण मारा मनमां जणाइ जायछे तेटलो

तेनो गुण आवेछे अने मारेतो एज अंग छे जे 'जो भगवाननो खरेखरो भक्त होय तो हुंतो ते भगवानना भक्तनोपण भक्त छुं अने हुं भगवानना भक्तनी भक्ति करुंछुं' एज मारेविषे मोटो गुण छे अने एटलो गुण जेमां न होय तो तेमां कोइ जातनी मोटयप शोभे नही. अने भगवानना भक्तनो जेनेजेने अभाव आव्योछे ते अतिशय मोटा हता तोपण पोतानी पदवीथकी पडी गयाछे अने जेनुं रुडुं थायछे तेपण भगवानना भक्तनी सेवामांथीज थायछे अने जेनुं भुंडुं थायछे तेपण भगवानना भक्तना द्रोहमांथीज थायछे अने वळी जीवने भगवानने राजी कर्यानो उपायतो मन कर्म वचने भगवानना भक्तनी सेवा करवी एज छे अने भगवानना भक्तनो द्रोह करवो एज भगवानने कुराजी करवानो उपाय छे माटे अमारोतो एज सिद्धांत छे जे 'भगवाननो राजीपो होय ने भगवानना भक्तनो संग होय तो भगवानथी अनंत वर्ष सुधी छेटे रहीए तोपण कांइ मनमां शोक न थाय अने भगवाननी पासे रहेता होइए ने जो भगवाननो राजीपो न होय तो तेने हुं सारुं नथी जाणतो' अने सर्व शास्त्रनुं पण एज सार छे जे 'भगवाननो जेम राजीपो होय तेमज करवुं' अने जेम भगवाननो राजीपो होय तेम जे न करे तेने भगवानना मार्गथकी पड्यो जाणवो अने जेने भगवान ने भगवानना भक्तनो संग छे ने भगवाननो राजीपो छे ने ते जो मृत्युलोकमां छे तोपण भगवानना धाममांज छे केमजे जे संतनी सेवा करेछे ने भगवानना गमतामां छे ते भगवानने समीपे जइनेज निवास करशे अने जो भगवानना धाममां छे ने भगवाननो राजीपो नथी ने भगवानना भक्त उपर ईर्ष्या छे तो ते भक्त भगवानना धामांथी पण जरुर हेठो पडशे माटे अमारेतो भगवाननो राजीपो थया सारु जन्मोजन्म भग-

वानना भक्तनीज सेवा करवी छे अने जेम अमारो निश्चय छे तेमज तमारेपण निश्चय करवो. पछी मुक्तानंदस्वामी आदिक जे सर्वे हरिभक्त हता तेमणे हाथ जोडीने कह्युं जे हे महाराज! अमारेपण एज निश्चय राखवो छे, एम कहीने सर्वे हरिभक्त विनतिए सहित श्रीजिमहाराजने पगे लाग्या, पछी वळी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ वार्ता जे अमे करी छे ते केवी छे तो वेद शास्त्र पुराण आदिक जेजे कल्याणने अर्थे पृथ्वीने विषे शब्दमात्र छे ते सर्वेनुं अमे श्रवण करीने तेनुं सार काढीने आ वार्ता करी छे ते परम रहस्य छे ने सारनुंपण सार छे अने पूर्वे जेजे मोक्षने पामी गयाछे ने हवे जेजे पामशे ने हमणां जेजे मोक्षने मार्गे चाल्या छे ते सर्वेने आ वार्ता छे ते जीवनदोरीरूप छे। इति वचनामृतम् ॥ २८ ॥ १६१ ॥

संवत् १८७९ ना फागण शुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीये ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, श्रीकृष्णभगवानना स्वरूपनेविषे जे भक्तनुं चित्त अति आसक्त थयुं होय तेनां आवां लक्षण होय जे 'पोते मार्गे चालीने अतिशय थाकी रह्यो होय ने बेठुं थवानीपण शरीरमां शक्ति न रही होय अने तेवा समामां कांइक भगवाननी वार्तानो प्रसंग निसरे तो जाणीए एके गाउ पण चाल्यो नथी एवो सावधान थइने ते वार्ताने करवा सांभळवामां अतिशय तत्पर थइ जाय अथवा गमे तेवा रोगादिके करीने पीडाने पाम्यो होय अथवा गमे तेवुं अपमान

थयुं होय ने तेचामां जो ए भगवाननी वार्ता सांभळे तो तत्काळ सर्व दुःखथकी रहित थइ जाय अने वळी गमेतेवी राज्य समृद्धिने पामिने अवराइ गयो एवो जणातो होय अने जे घडीए ए भगवाननी वार्ता सांभळे तो ते घडीए जाणीए एने कोइनो संगज नथी थयो एवो थको ते भगवाननी वार्ता सांभळवामां सावधान थइ जाय' एवी जातनां जेनेविषे लक्षण होय तेने ए भगवाननेविषे दृढ आसक्ति थइ जाणवी.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "ए भगवाननेविषे दृढ आसक्ति शा थकी थायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कांतो पूर्व जन्मनो एवो अति बळीयो संस्कार होय अथवा जे संतने भगवानने विषे एवी दृढ आसक्ति होय तेने सेवाए करीने राजी करे ए वेये करीनेज भगवाननेविषे एवी दृढ आसक्ति थायछे पण ए विना बीजो उपाय नथी।

इति वचनामृतम् ॥ २९ ॥ १६२ ॥

संवत् १८७९ ना द्वितीय चैत्र शुदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराजश्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी ओसरीये गादी तकीया उपर विराजमान हता ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती ने काळा छेडानी धोतली मस्तके बांधी हती ने धोळा पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने धोळा पुष्पनो तोरो पाघमां लटकतो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे श्रीमद्भागवत आदिक जे सच्छास्त्र ते सत्य छे अने ए शास्त्रमां जे कह्युं होय ते तेवीज रीते थायछे पण बीजी रीते थतुं नथी जुओने श्रीमद्भागवतमां सुवर्णनेविषे कळीनो निवास कह्योछे तो ते सुवर्ण अमने दीठुंपण गमतुं नथी अने जेवुं वं-

धनकारी सुवर्ण छे तेवुंज बंधनकारी रूपपण छे केमजे ज्यारे रूपवान् स्त्री होय ने ते सभामां आवे त्यारे गमेतेवो धीरजवान् होय तेनीपण दृष्टी तेना रूपनेविषे तणाया विना रहे नहि माटे सोनुं ने स्त्री ए बे अति बंधनकारी छे. अने ए बे पदार्थनुं बंधनतो त्यारे न थाय ज्यारे प्रकृति पुरुष थकी पर एवुं जे शुद्ध चैतन्य ब्रह्म तेनेज एक सत्य जाणे ने ते ब्रह्मनेज पोतानुं स्वरूप माने ने ते ब्रह्मरूप थइने परब्रह्म एवा जे श्रीकृष्णभगवान् तेनुं भजन करे अने ए ब्रह्म थकी ओरुं जे प्रकृति ने प्रकृतिनुं कार्यमात्र तेने असत्य जाणे ने नाशवंत जाणे ने तुच्छ समझे ने मायिक जे नाम रूप तेनेविषे अतिशय दोषदृष्टी राखे ने ते सर्व नाम रूपने विषे अतिशय वैराग्य पामे तेने सोनुं ने स्त्री बंधन न करे अने बीजानेतो जरूर बंधनकरे। इति वचनामृतम् ॥ ३० ॥ १६२ ॥

संवत् १८८० ना श्रावण शुदि ४ चोथने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे वेदिका उपर गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने काळा छेडानी धोतली मस्तके बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने प्रागजी दवे पासे श्रीमद्भागवतमां कपिलगीतानी कथा वंचावता हता पछी कथानी समाप्ति थइ त्यारे श्रीजिमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे, सर्व कारणनापण कारण ने अक्षरातीत ने पुरुषोत्तम एवा जे वासुदेवभगवान् ते महापुरुषरूपे करीने महामायानेविषे वीर्यने धरेछे ते पुरुष अक्षरात्मक छे मुक्त छे अने एने ब्रह्म कहेछे अने ए पुरुषे मायामां वीर्य धर्युं त्यारे ते मायाथकी प्रधानपुरुषद्वाराए वैराजपुरुष

थयुं होय ने तेवामां जो ए भगवाननी वार्ता सांभळे तो तत्काळ सर्व दुःखथकी रहित थइ जाय अने वळी गमेतेवी राज्य समृद्धिने पामिने अवराइ गयो एवो जणातो होय अने जे घडीए ए भगवाननी वार्ता सांभळे तो ते घडीए जाणीए एने कोइनो संगज नथी थयो एवो थको ते भगवाननी वार्ता सांभळवामां सावधान थइ जाय' एवी जातनां जेनेविषे लक्षण होय तेने ए भगवाननेविषे दृढ आसक्ति थइ जाणवी.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "ए भगवाननेविषे दृढ आसक्ति शा थकी थायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कांतो पूर्व जन्मनो एवो अति बळीयो संस्कार होय अथवा जे संतने भगवानने विषे एवी दृढ आसक्ति होय तेने सेवाए करीने राजी करे ए बेये करीनेज भगवानेविषे एवी दृढ आसक्ति थायछे पण ए विना बीजो उपाय नथी।

इति वचनामृतम् ॥ २९ ॥ १६२ ॥

संवत् १८७९ ना द्वितीय चैत्र शुदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी ओसरीये गादी तकीया उपर विराजमान हता ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती ने काळा छेडानी धोतली मस्तके बांधी हती ने धोळा पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने धोळा पुष्पनो तोरो पाघमां लटकतो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे श्रीमद्भागवत आदिक जे सच्छास्त्र ते सत्य छे अने ए शास्त्रमां जे कह्युं होय ते तेवीज रीते थायछे पण बीजी रीते थतुं नथी जुओने श्रीमद्भागवतमां सुवर्णनेविषे कळीनो निवास कह्योछे तो ते सुवर्ण अमने दीठुंपण गमतुं नथी अने जेवुं बं-

धनकारी सुवर्ण छे तेवुंज बंधनकारी रूपपण छे केमजे ज्यारे रूपवान् स्त्री होय ने ते सभामां आवे त्यारे गमेतेवो धीरजवान् होय तेनीपण दृष्टी तेना रूपनेविषे तणाया विना रहे नहि माटे सोनुं ने स्त्री ए बे अति बंधनकारी छे. अने ए बे पदार्थनुं बंधनतो त्यारे न थाय ज्यारे प्रकृति पुरुष थकी पर एवुं जे शुद्ध चैतन्य ब्रह्म तेनेज एक सत्य जाणे ने ते ब्रह्मनेज पोतानुं स्वरूप माने ने ते ब्रह्मरूप थइने परब्रह्म एवा जे श्रीकृष्णभगवान् तेनुं भजन करे अने ए ब्रह्म थकी ओरुं जे प्रकृति ने प्रकृतिनुं कार्यमात्र तेने असत्य जाणे ने नाशवंत जाणे ने तुच्छ समझे ने मायिक जे नाम रूप तेनेविषे अतिशय दोषदृष्टी राखे ने ते सर्व नाम रूपने विषे अतिशय वैराग्य पामे तेने सोनुं ने स्त्री बंधन न करे अने बीजानेतो जरूर बंधनकरे। इति वचनामृतम् ॥ ३० ॥ १६२ ॥

संवत् १८८० ना श्रावण शुदि ४ चोथने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे वेदिका उपर गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने काळा छेडानी धोतली मस्तके बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने प्रागजी दवे पासे श्रीमद्भागवतमां कपिलगीतानी कथा वंचावता हता पछी कथानी समाप्ति थइ त्यारे श्रीजिमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे, सर्व कारणनापण कारण ने अक्षरातीत ने पुरुषोत्तम एवा जे वासुदेवभगवान् ते महापुरुषरूपे करीने महामायानेविषे वीर्यने धरेछे ते पुरुष अक्षरात्मक छे मुक्त छे अने एने ब्रह्म कहेछे अने ए पुरुषे मायामां वीर्य धर्युं त्यारे ते मायाथकी प्रधानपुरुषद्वाराए वैराजपुरुष

उत्पन्न थया त्यारे ए वैराजपुरुष ते ते पुरुषना पुत्र कहेवाय, जेम आ जगतमां कोइक ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यादिक जे प्राकृत माणस होय ने तेनी स्त्रीमांथी तेनो दीकरो थाय तेम ए वैराजपुरुष थायछे एवा जे वैराजपुरुष ते आ जीव जेवाज छे अने एनी क्रियापण आ जीवना जेवीज छे ने ते वैराजपुरुषनी द्विपरार्धकाळनी आवरदा छे अने आ जगतनी उत्पत्ति स्थिति प्रलयरूप एनी त्रण अवस्था छे जेम जीवनी जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति ए त्रण अवस्था छे तेम, अने ए वैराजपुरुषनां विराट् सूत्रात्मा अव्याकृत ए त्रण देह छे ने ते देह अष्टावरणे युक्त छे ने ते देह महत्तत्त्वादिक जे चोविश तत्त्व तेद्वारे थयाछे ते ए विराटनेविषे इंद्रियो अंतःकरण ने देवताये प्रवेश कर्यो ने एने उठाडवा मांड्यं ने विराटनो जीवपण मांही हतो तोपण ए विराट उठ्युं नही अने ज्यारे क्षेत्रज्ञ एवा जे वासुदेव भगवान् ते पुरुषरूपे करीने एमां आव्या त्यारे ए विराट देह उठ्युं ने ए वैराजपुरुष पोतानी क्रियाने विषे समर्थ थया. अने एज जे भगवान् ते आ जीवने प्रकाश्याने अर्थे सुषुप्तिरूप माया थकी पर रह्या थका ए जीवनेविषे साक्षीरूपे रह्या छे तोपण जीवने देह इंद्रियो ने विषय तेनो संग घणो थयोछे माटे संग दोषे करीने ए जीव देहादिकरूप थइ गयो छे ते एना संगने मुकीने ए जीव एम समझे जे 'मारुं स्वरूपतो मायाथकी मुक्त ने पर एवुं जे ब्रह्म ते छे' एवी रीते निरंतर मनन करतोसतो ब्रह्मनो संग करे तो ए ब्रह्मनो गुण ए जीवनेविषे आवे पण एने आ वार्ता सांभळी होय तोपण निरंतर स्मृति रहेती नथी ए मोटो दोष छे एवी रीते ईश्वर जे वैराजपुरुष ने आ जीव ए सर्वेना प्रकाशकतो पुरुषरूपे करीने पुरुषोत्तम एवा वासुदेव छे अने ए वैराजपुरुष पण जीवनी पेठे बद्ध छे ते द्विपरार्ध सुधी पो-

तानी आवरदा भोगवेछे त्यांसुधी बद्ध वर्तेछे अने एनो प्रलय थाय त्यारे एने ए पुरुषनो संबन्ध साक्षात् थायछे केमजे एनो बाप जे पुरुष ते समर्थ छे ते एने एटलो जाळवेछे अने वैराजपुरुषने मायानो संबन्ध रह्योछे माटे प्रलयने अंते पाछो मायामांथी उपजेछे अने आ जीव छे ते जेवो पोते बद्ध छे ने असमर्थ छे तेवी रीतेज एनो जे बाप होय तेपण बद्ध ने असमर्थ होय माटे ए बाप ते दिकरानो शो सहाय करे माटे एने सुषुप्तिरूप मायानो संबन्ध निरंतर रहेछे टळतो नथी एतो ज्यारे पूर्वे कह्यो तेवी रीते निरंतर पोताना प्रकाशक जे ब्रह्म तेनो मननद्वारा संग करे त्यारे टळे. अने वळी ए विराट्पुरुषपण संकर्षण अनिरुद्ध प्रद्युम्ननी उपासना करेछे तेमां प्रलयरूप अवस्थाने विषे संकर्षणनी उपासना करेछे ने स्थितिरूप अवस्थाने विषे प्रद्युम्ननी उपासना करेछे ने उत्पत्तिरूप अवस्थाने विषे अनिरुद्धनी उपासना करेछे अने ते संकर्षणादिक त्रण जेते वासुदेवभगवाननां सगुण रूप छे ने तेनी उपासनाने बळेकरीने ए वैराजपुरुष जेते उत्पत्ति स्थिति ने प्रलयरूप क्रियाने विषे सामर्थ्यने पामेछे अने ज्यांसुधी ए त्रणनी उपासना करेछे त्यांसुधी एने उत्पत्ति स्थिति प्रलयरूप जे मायानो संबन्ध ते टळतो नथी अने ज्यारे ए निर्गुण एवा जे वासुदेव भगवान् तेनी उपासना करेछे त्यारे ए वैराजपुरुष मायानो त्याग करीने ब्रह्मरूप थायछे, जेम आ जीव छे ते ब्रह्मादिक देवरूपे भगवाननी उपासना करेछे त्यारे धर्म अर्थ कामरूप फळने पामेछे अने ज्यारे भगवानना अवतार जे राम कृष्णादिक तेनी उपासना करे त्यारे ब्रह्मरूप थाय ने एनी मुक्ति थाय तेम ए विराट्पुरुषने पण छे. अने ए वैराजपुरुषद्वाराए अवतार थायछे एम शास्त्रमां कह्युंछे तेतो एम समजवुं जे 'ए जे

वासुदेवनारायण ते पुरुषरूपे करीने वैराजपुरुषने विषे आवीने विराजमान होय त्यारे अवतार कहाछे' माटे ते अवतारतो सर्वे वासुदेव भगवाननाज छे अने ए वासुदेव भगवान ज्यारे प्रतिलोमपणे ए वैराजपुरुष थकी नोखा पडी जाय त्यारे ए केवळ वैराजपुरुषथकी अवतार संभवेज नहि माटे ए थकी अवतारतो एनेविषे वासुदेव आव्या छे ते सारु कह्याछे अने एनेविषे वासुदेव जे क्षेत्रज्ञ तेणे प्रवेश कर्यो नहोतो त्यारे ए वैराजपुरुष पोतानी क्रिया करवी तेनेविषे पण समर्थ नहोता थया. अने पूर्वे जे पुरुष कह्या ते मायामां गर्भ धरे त्यारे प्रधान पुरुषद्वाराए एक एवो जे वैराज पुरुषरूप दीकरो ते थाय अने एज मायामांथी अनेक प्रधान पुरुषद्वाराए बीजांपण घणांक एवां वैराजपुरुषरूप ब्रह्मांड थायछे. अने ते पुरुषतो निरन्न छे ने मुक्त छे ने ब्रह्म छे ने मायाना कारण छे ते मायाने विषे लोमपणे वर्तेछे तोपण एने मायानो बाध थतो नथी ने मायाने विषे एने भोगनी इच्छा नथी एतो पोते ब्रह्म सुखे सुखीया छे ने पूर्णकाम छे. अने जे वैराजपुरुष ईश्वर छे ते मायाना भोगने भोगवीने प्रलयकाळने विषे मायानो त्याग करेछे अने जे जीव छे तेतो मायाना भोगने भोगवीने दुःखीयो थको मायामांज लीन थायछे.

त्यारे शुकमुनिए पुछ्युं जे "पुरुषोत्तम वासुदेव छे ते पुरुषरूपे करीने अनेक ब्रह्मांडनी उत्पत्ति स्थिति प्रलयना कर्ता छे माटे पुरुषरूपे करीनेज बहुधा शास्त्रमां पुरुषोत्तमने कह्या छे त्यारे पुरुषमां ने वासुदेवमां केटलो भेद छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम आ जीवनेविषे ने वैराजपुरुष–ईश्वरनेविषे भेद छे अने वळी जेम ईश्वरनेविषे ने पुरुषनेविषे भेद छे तेम पुरुष ने पुरुषोत्तम एवा जे वासुदेवभगवान्

तेनेविषे एवो घणो भेद छे ने पुरुषोत्तमवासुदेवतो सर्वना स्वामी छे अने एवा अक्षरात्मक पुरुष ब्रह्मरूप घणाक छे ते जेते वासुदेवना चरणारविंदनी उपासना करेछे ने स्तुति करेछे, एवी रीते पुरुषोत्तम, पुरुष, ईश्वर, जीव अने माया ए पांच भेद अनादि छे ते एवी रीते वार्ता अमे घणीकवार करीछे पण एनुं मनन करीने सारी पेठे पोताना अंतरमां घेव्य वेसारता नथी एटले शास्त्रना शब्दने सांभळीने समझणमां ठा रहेतो नथी ने ठाधकी घेव्य वेसारी होयतो एनि समझण कोइ दिवस ते शब्दने सांभळवे करीने फरे नहि माटे आ वार्ताने सारी पेठे विचारज्यो ने लखज्यो, एवी रीते आ वार्ता श्रीजिमहाराजे करीछे ते लखीछे। इति वचनामृतम् ॥ ३१ ॥ १६४ ॥

संवत् १८८० ना श्रावण शुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे विराजमान हता अने श्रीजिमहाराजे अंगनेविषे सर्व श्वेत वस्त्र पहेर्यां हतां अने मस्तकने उपर काळा छेडानी धोतली बांधी हती ने कंठनेविषे पुष्पना हार विराजमान हता तथा कर्णने उपर पुष्पना गुच्छ विराजमान हता तथा मस्तक उपर पुष्पना तोरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज सर्वे हरिभक्त प्रत्ये बोलता हवा जे, आ संसारनेविषे पोताना कुटुंबीनो संबन्ध छे तेतो जेम थोरनुं झाड होय अथवा वडनुं के पिंपरनुं डाळ होय ते एक ठेकाणेथी कापीने बीजे ठेकाणे रोपीए तो उगीने झाड थाय अने आंबो तथा लिंबडो होय ने तेने एकवार काप्यो एटले फरीने चोटे नहि, तेम कुटुंबी विना बीजानो जे संब-

न्ध छे तेतो आंबाना झाडना जेवो छे ते एकवार काप्यो एटले फरीने चोटे नहि अने कुटुंबीनो संबन्ध छे तेतो थोरना ने वडना झाड जेवो छे ते कापी नाख्यो होय तोपण धरतिमां पड्यो पड्योपण पालव्या विना रहे नहि माटे ए कुटुंबीनो संबन्धतो तो टळे जो स्थूळ सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देहथकी नोखो एवो जे आ देहनेविषे जीवात्मा तेने पोतानुं रूप जाणीने तेनेविषे भगवाननी मूर्तिने धारीने ने जाति–वर्ण आश्रम तेना मानने मुकीने केवळ भगवानना सरणनेविषे तत्पर थाय तो कुटुंबीना संबन्ध चोखो टळे ते विना बीजो उपाय कोइ नथी. अने वळी जीवनुं जे कल्याण थाय अने जीव मायाने तरीने ब्रह्मस्वरूप थाय तेनुं कारणतो पुरुषोत्तम एवा जे वासुदेवभगवान तेना प्रत्यक्ष स्वरूपनुं ज्ञान, ध्यान, कीर्तन अने कथादिक एज छे ने एणे करीनेज ए जीव छे ते मायाने तरेछे अने अति मोटाइने पामेछे अने भगवाननुं जे अक्षरधाम तेने पामेछे अने आत्मनिष्ठा वैराग्य ने धर्म तेतो भगवाननी भक्तिनां सहायरूप उपकरण छे पण भगवाननी भक्ति विना एकलो वैराग्य तथा आत्मनिष्ठा तथा धर्म ते जीवने माया तर्यानुं साधन नथी। अने जो अतिशय धर्म आत्मनिष्ठा ने वैराग्य न होय ने एकली भगवाननी भक्ति होय तोपण ए जीवनुं कल्याण थाय ने मायाने तरे एटलो धर्मादिक थकी भक्तिनेविषे विशेष छे तोपण धर्मादिक अंगनुं सहायपणुं होय तो ए भक्तिनेविषे कोइ विघ्न थतुं नथी अने जो धर्मादिक अंगनुं सहायपणुं न होय तो विषम देशकाळादिके करीने भक्तिनेविषे विघ्न जरुर थायछे ते माटे धर्मादिक अंगे सहित भक्ति करवी. अने एवी रीते भक्तिने करतो जे भक्त तेनेपण जो भुंडा देश काळ क्रिया ने संग छे तेनेविषे प्रवर्ताय तो भगवाननो भक्त होय तेनुंपण अंतर

डोळाइ जाय ने तेना स्वभावनो ठा न रहे माटे भुंडो देश, भुंडो काळ, भुंडी क्रिया अने भुंडो संग तेनो त्याग करीने रुडो देश, रुडो काळ, रुडो संग, रुडी क्रिया तेनेविषे सदा प्रवर्तवुं पण भुंडा देशादिकनो संग करवोज नही। इति वचनामृतम् ॥ ३२ ॥ १६५ ॥

संवत् १८८० ना श्रावण वदी १३ तेरशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे ढोलीया उपर गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज सर्वे संत तथा सर्वे हरिभक्त प्रत्ये एम बोलता हवा जे, प्रथम अमे अमारा अंगनी वात कहीए. पछी तमे सर्वे पोतपोतानो जे रीते मोक्ष मान्यो होय तथा अमे आवी रीते वर्तशुं तो आ लोकमां ने परलोकमां भगवान् अमारी उपर राजी रहेशे एम जे मान्युं होय ते कहेज्यो, एम सर्वेने कहीने पछी श्रीजिमहाराजे पोताना अंगनी वात कहेवा मांडी जे, अमनेतो जे पदार्थमां हेत जणाय तो तेनो त्याग करीए त्यारे सुख थाय अने भगवानना भक्त विना जे मनुष्यमात्र अथवा पदार्थमात्र तेनी जो मनमां स्मृति थइ होय तो तेथी अतिशय छेटुं करीए त्यारे सुख थाय अने जो भगवानना भक्त होय तो तेनो कोइ रीते करीने हइयामां अभाव आवेज नही अने अमारे वगर इच्छेपण पंच विषय छे ते जोरावरीए आवीने प्राप्त थायछे तोपण तेने अमे इच्छता नथी अने पगे करीने ठेली नाखीये छीए अने जे दिवस थकी अमे जन्म्या छीए ते दिवसथी करीने आज दिवस पर्यंत कोइ दिवस जाग्रतमां अथवा स्वप्नमां द्रव्यनो के स्त्रीनो भुंडो घाट थयो होय तो आ समग्र परम-

हंसना सम छे. अने एवी रीते अमे सदाय निर्दोषपणे छीए ने जे अमारे विषे दोषबुद्धि करशे तो तेने जाग्रतमां तथा स्वप्नमां भुंडा घाट थशे ने तेने देह मुक्या समे बहु कष्ट थशे अने अमारा अंतरमांतो एक भगवानना स्वरूपनुंज चिंतवन रहेछे अने उपरथीतो भगवानना भक्त होय तेना जीवनुं सारुं थाय ते सारु हळीमळीने रहीए छीए अने जे दिवस अमारा हैयामां भगवान् ने भगवानना भक्त विना बीजे क्यांइ हेत जणाशे तो अमे एम मानीशुं जे 'अमे अमारी स्थितिमांथी डग्या' पण अमने एवो निश्चय छे जे 'अमे ए स्थितिमांथी डगीयेज नहि' ए अमे अमारुं अंग हतुं ते कह्युं, हवे तमे सौ पोतपोतानुं अंग होय ते कहो, पछी सर्वे संते तथा सर्वे हरिभक्ते जेवां जेनां अंग हतां तेवां कह्यां जे आ लोकने विषे ने परलोकने विषे आवी रीतना अंगमां अमे रहीए तो अमारा उपर भगवान् राजी रहे एवी रीते कह्युं, ते सर्वे हरीभक्तना अंगनी विक्ति जे कोणेकतो भगवान् विना बीजे ठेकाणे वैराग्यनुं कह्युं अने कोणेक आत्मनिष्ठानुं कह्युं ने कोणेक भगवानने विषे प्रीतिनुं कह्युं ने कोणेक धर्ममां रहेवानुं कह्युं, एवी रीते बहु प्रकारे कह्युं पण श्रीजिमहाराजे मनमां जे धारी राख्युं हतुं ते कोइए न कह्युं, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एक निष्कामी वर्तमान दृढ होय तो तेने आ लोकमां तथा परलोकमां कोइ ठेकाणे भगवान्थी छेटुं रहे नही अने अमारेपण ते उपरथी कोइ दिवस हेत ओछुं थाय नही अने अमे अहियां टक्या छीए तेपण अहियांना हरीभक्तने अति निष्कामी वर्तमाननो दृढाव देखीने टक्या छीए अने जेने निष्कामी वर्तमान दृढ होय तो ते थकी अमे हजार गाउ छेटे जइए तोपण तेनी पासेज छीए अने जेने ते निष्कामी वर्तमानमां काच्यप छे ने ते जो अमारी पासे रहेछे तो-

यपण ते लाख गाउ छेटे छे अने अमने निष्कामी भक्त होय तेनाज हाथनी करी सेवा गमेछे माटे आ मूळजी ब्रह्मचारी छे ते अतिशय दृढ निष्कामी छे तो अमने एनी करेली सेवा अतिशय गमेछे अने बीजो कोइ सेवा चाकरी करे तो ते एवी गमती नथी अने अमे जेजे वार्ता करीएछीए तेनेविषे पण निष्कामी वर्तमाननुंज अतिशय प्रतिपादन थायछे अने अमे जे दिवसथकी प्रकट थया छीए ते दिवसथकी निष्कामी वर्तमाननेज अतिशय दृढ करता आवीए छीए. अने सभा बेठी होय त्यां कोइक स्त्री अथवा पुरुष तेने जोयामां फेर पडे त्यारे ए गमे तेटली युक्ति करीने संताडे तोपण अमने जणाया विना रहेज नहि त्यारे अमारो ते मनुष्य उपर अतिशय कुराजीपो थइ जायछे अने अमारुं मुखपण श्यामळुं थइ जायछे अने तेनुं दुःखतो अतिशय लागेछे पण मोहोबत जाणीने झाझुं कहेवाय नहि अने वळी साधुदावो छे माटे हइयामां समझी रहीए छीए पण जो राजाना जेवी रीत होय तो तेने माथे झाझो दंड थाय माटे सर्व मोटा परमहंस तथा मोटी मोटी बाइयो तेने अमे मोरथीज कही राख्युं छेजे 'सत्संगमां कोइ पुरुषने तथा कोइ स्त्रीने कदाचित् जो निष्कामी वर्तमानमां फेर पडेतो अमने संभळावशो मां' शामाटे जे ज्यारे अमे एवी वार्ता सांभळीए त्यारे जेम वांझियाने घेर दिकरो आव्यो होय ने ते मरी जाय ने तेने जेवो शोक थाय तेवो अमारेपण शोक थायछे तथा मनमां एम विचार थइ जायछे जे 'बधा सत्संगने मुकीने जता रहीए' माटे जे निष्कामी वर्तमान राखे तेज अमने वहालो छे अने तेने ने अमारे आ लोक परलोकमां दृढ मेळाप रहेछे.

पछी हरजी ठकरे प्रश्न पुछ्यो जे "ए निष्कामी वर्तमान शे उपाये

करीने अतिशय दृढ थाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एनो एक प्रकारनो उपाय नथी एना तो त्रण प्रकारना उपाय छे, जेम हांकनारो बळधिया पइडां धुंसरी उध्य मांचडो एवा घणाक सामाने करीने एक गाडुं कहेवाय छे तेम निष्कामी व्रत दृढ राखवानी पण घणीक सामग्री जोइए छीए तेमांपण त्रण उपाय छे तेतो अतिशय मुख्य छे तेमां एकतो मनने वश करवुं जे मननेविषे अखंड एवुं मनन करवुं जे 'हुं आत्मा छुं देह नथी' ने भगवाननी कथा श्रवणादिक जे नवधा भक्ति तेनेविषे मनने अखंड जोडी मेलवुं पण क्षणमात्र मनने नवरुं रहेवा देवुं नहि, जेम कोइक पुरुषने भूत वश्य थयो हतो ते ज्यारे काम न बतावे त्यारे तेने खावा तैयार थाय तेम आ मन छे तेपण भूत जेवुं छे ते ज्यारे भगवद्भक्तिमां न राखे त्यारे अधर्मना घाट घडे त्यारे ए भूतनी पेठे जीवने खावा तैयार थयुं कहेवाय माटे मनने अखंड भगवाननी कथा कीर्तनादिकमां जोडी राखवुं एटले ए मन वश थयुं कहेवाय. अने बीजो उपाय ए छे जे, प्राणने नियममां राखवो ते जेम भगवाने गीतामां कह्युंछे जे 'आहार विहार युक्त राखवो पण अतिशय खावानी लोलुपता न राखवी' एवी रीते वर्ते त्यारे प्राण नियममां थयो कहेवाय अने प्राण नियममां न कर्यो होय तो खावानी बहु मनमां तृष्णा रहे पछी अनंत प्रकारना जे रस तेनेविषे रसना इंद्रिय छे ते दोडती फरे त्यारे बीजा इंद्रियो वश कर्यां होय तेपण सर्वे मोकळां थइ जाय माटे आहारने नियममां राखीने प्राणने नियममां करवो. अने त्रीजो उपाय ए छे जे, आ सत्संगनेविषे जेने जेने जेजे नियम कह्याछे तेमां देहने राखीने देहने नियममां करवो. एवी रीते ए त्रण उपायने जे दृढ राखे तेने निष्कामी वर्तमान अतिशय दृढ थायछे. अने एनेविषे एम न जाणवुं जे 'एवी रीते राखवुं घणुं क-

ठण छे' केमजे जे साधुज होय तेनेतो एम राखवुं कांइ कठण छे नही अने साधु होय तेतो काम, क्रोध, लोभादिक शत्रुनुं बळ होय तोपण भगवानने राजि कर्या सारु तेनो त्याग करे त्यारेज ए पाको साधु कहेवाय अने मनुष्य देहे करीने न थाय एवुं शुं छे? जे नित्ये अभ्यास राखीने करे ते थायछे, जेम कुवाना कांठा उपर महा कठण पथरो होय छे तेनेविषे नित्ये पाणीने शिंचवुं तेणे करीने नरम दोरडी छे तेपण कापा पाडेछे, तेम जे साधुज छे ने ते जे स्वभावने टाळवानो नित्य अभ्यास राखशे तो ते स्वभाव क्यां लगी रहेशे? एतो निश्चय नाश पामशे माटे जेने निष्काम व्रत राखवुं होय तेने कह्या एवा जे त्रण उपाय ते दृढ करीने राखवा। इति वचनामृतम् ॥ ३३ ॥ १६६ ॥

संवत् १८८० ना भादरवा शुदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचारना दरबारमां उगमणे-द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने धोळुं धोतियुं पहेर्युं हतुं ने धोळी चादर ओढी हती ने काळा छेडानी धोतली मस्तके बांधी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने परमहंस दुकड सरोदा लइने गावता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कीर्तन राखो प्रश्न उत्तर करीए तो आळस मटे, एम कहीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रथम हुं एक प्रश्न पुछुंछुं जे "आ जीवने विषे मायानां कार्य एवां जे इंद्रियो अंतःकरण आदिक चोवीश तत्त्व ते रह्याछे ते ए तत्त्व जड छे के चैतन्यछे?" पछी परमहंसे कह्युं जे ए तत्त्व चैतन्य तो खरां, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ज्यारे ए तत्त्व चैतन्य छे त्यारे आ शरीरनेविषे जीव छे ते भेळा चोवीश तत्त्वना पण चोवीश जीव थया त्यारे आ जीवनुं जे

कल्याण थशे तेपण सर्वेने वहेचातुं भागे आवशे ने जे पाप करशे तेपण सर्वेने वहेचातुं भागे आवशे त्यारे सुखदुःखनुं जे भोक्तापणुं ते एक जीवनेविषेज नही कहेवाय अने संचित प्रारब्ध ने क्रियमाण ए त्रण प्रकारनां जे कर्म तेपण एक जीवनेज नही कहेवाय अने नारदादिक जे पूर्वे मुक्त थयाछे तेमनो एक पोतपोतानो जीवज मुक्त थयोछे पण ते भेळा चोवीश तत्त्वना जीवतो मुक्त थया कह्या नथी एवी रीते आशंका करीने तत्त्वने निर्जिव करी देखाड्यां पछी तेमां जेजे रीते परमहंसे उत्तर कर्या तेने तेने आशंका करीने खोटा करी नाख्या ते कोइ रीते परमहंसथी उत्तर थयो नही पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो एनो उत्तर अमे करीए जे, ए तत्त्व जेते कार्यकारण भेद करीने बे प्रकारनां छे तेमां कारणरूप जे तत्त्व छे ते चैतन्य छे ने कार्यरूप जे तत्त्व छे ते जड छे. अने आ जीव छे ते पोते विशेपसत्ताए करीने हृदयनेविषे रह्योछे ने पोतानी सामान्यसत्ताए करीने देह इंद्रियो अंतःकरणमां तदात्मकपणे मळ्योछे तेणे करीने ए देहादिक चैतन्य जेवां जणायछे पण एतो जडज छे. अने ज्यारे ए जीव भगवाननो भक्त थइने भगवानना धाममां जायछे त्यारे जड एवां जे तत्त्व ते पड्यां रहेछे अने ए चोवीश तत्त्व छे ते मायामांथी थयांछे माटे मायारूप छे ने जड छे अने देह इंद्रियो ने अंतःकरणरूपे जुदांजुदां जणायछे तेतो जेम एक पृथ्वी छे तेज त्वचा, मांस मज्जा, अस्थि ने स्नायु ए पांचरूपे थइछे ने काचरूपेपण करनारानी कीमते थइछे तेम ए माया छे ते परमेश्वरनी इच्छाए करीने ए देहादिकरूप जुदेजुदे प्रकारे जणायछे। इति वचनामृतम् ॥ ३४ ॥ १६७ ॥

१ कार्यरूप जडतत्त्वोना अभिमानी जे देवताओ ते कारणरूप तत्त्व कहेवायछे।

संवत् १८८० ना भादरवा शुदि ११ एकादशीने दिवस रात्रि पाछली छो घडी रही त्यारे श्रीजिमहाराज सुता उठीने श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां जारनी खाण उपर ढोलियो ढळावीने विराजमान थया हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी पछेडी ओढी हती ने श्याम छेडानी धोतली मस्तके बांधी हती.

पछी परमहंस तथा हरिभक्तने तेडावीने ते प्रत्ये बोल्या जे आज तो अमने निद्रा बहु आवी ते घणुं उठवानुं कर्युं पण उठाय नहि ने ते निद्रामां अमे विचार घणो कर्योछे ने ते विचार करीने जे निर्धार कर्योछे ते कहुंछुं जे, [1] हुं रामानंदस्वामी पासे आव्यामोर पण आत्माने साक्षात् देखतो ने हमणेपण देखुंछुं ते आत्मा सूर्यना जेवा प्रकाशे युक्त छे ने आ मारी सर्वे इंद्रियोनी क्रियाने विषे मने आत्मानुं क्षणमात्रपण विसरण थतुं नथी पण ए आत्मदर्शन थवुं बहु कठण छे एवुं आत्मदर्शनतो पूर्वना घणाक जन्मना सत्संस्कारवाळो कोइक विरलो होय तेने थायछे अने बीजो तो ए आत्मानो विचार सो वर्ष पर्यंत करे तोपण आत्मानुं दर्शन थाय नहि. एतो क्यारे थाय तो ज्यारे श्रीकृष्णभगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करे त्यारे ए आत्माने देखवो ए कांइ कठण नथी अने भगवानना ध्यान विना केवळ आत्माने विचारे करीने आत्मा जणायछे के देखायछे एवीतो आशा कोइने राखवी नहि. अने भगवाननी उपासना करवी ने भगवानना चरित्र गाववां सांभळवां ने भगवाननुं नामस्मरण करवुं ने पोतपोताना धर्ममां रहेवुं एवी रीते पोताना जीवनुं कल्याण थवुं ते कांइ कठण नथी एतो जेम वा-

१ तत्त्वदर्शी ऋषियोए मनुष्योनु श्रेय आत्मदर्शनथी अने भक्तिथी एम बे प्रकारे निश्चय करेलुं छे तेमां आत्मदर्शनथी श्रेयतो अतिदुष्कर छे ।

णमां बेसीने समुद्रने तरवो एवो सुगम मार्ग छे अने आत्मदर्शने करीने कल्याण करवुं तेतो जेम तुंबडां बांधीने समुद्र तरवो एवो कठण मार्ग छे. अने अमे जे आत्मज्ञाननी वार्ता करीए छीए तेमांतो एटलुंज प्रयोजन छे जे 'जो पोताना आत्माने देहथी जुदो माने तो देहने विषे प्रीति न रहे तथा देहना संबन्धीने विषे हेत न रहे तथा भगवाननी भक्तिने विषे कोइ विघ्न न थाय' एटलुंज प्रयोजन छे पण केवळ एणे करीनेज कल्याण थाय एमतो मानवुं नहि, अने वळी जगतमां एम वार्ता छे जे 'मन होय चंगा तो कथरोठमां गंगा' ए वार्ता खोटी छे एतो गमेतेवो समाधिनिष्ठ होय अथवा विचारवान् होय ने तेपण जो स्त्रीयोना प्रसंगमां रहेवा मांडे तो एनो धर्म कोइ रीते रहेज नहि अने गमे तेवी धर्मवाळी स्त्री होय ने तेने जो पुरुषनो सहवास थाय तो एनोपण धर्म रहेज नहि अने एवी रीते स्त्री पुरुषने परस्पर सहवास थाय ने एनो धर्म रहे एवीतो आशा राखवी नहि ते आ वार्ता ते एमज छे पण एमां कांइ संशय राखवो नहि, ते माटे धर्ममां तो क्यारे रहेवाय तो परमहंस होय तथा ब्रह्मचारी होय ने ते जो पोताना ब्रह्मचर्यादिक नियम कह्या छे तेमां रहे तो एणे धर्ममां रहेवाय अने स्त्री होय ने तेपण जो पोतपोताना नियम कह्या छे तेमां वर्ते तो तेणे धर्ममां रहेवाय अने बीजा जे सत्संगी गृहस्थ होय तेपण जो पोतपोताना नियम कह्या छे तेमां रहे ने युवा अवस्थावाळी जे पोतानी मा बोंन. ने दीकरी ते भेळेपण एकांतमां न बेसे ने तेनी सामुं पण दृष्टि मांडीने न जुवे तो एणे धर्ममां रहेवाय एवी रीते धर्ममां रहेवुं तथा भगवानना स्वरूपनी उपासना करवी तथा भगवानना अवतार चरित्रनुं श्रवण कीर्तन करवुं तथा भगवाननुं नामस्मरण करवुं ए चार वानांज जीवना अतिशय कल्याणने

अर्थे छे. अने आ तमे सर्वे छो ते मने भगवान् जाणोछो ते अमे ज्यां-ज्यां उत्सव समैया कर्या होय ने जे ठेकाणे परमहंस ब्रह्मचारी तथा हरिभक्त सत्संगी बाई भाई सर्वे भेगा थया होय ने अमे कीर्तन गवरा-व्यां होय ने वार्ता करी होय ने अमारी पूजा थइ होय ए आदिक जे अमारां चरित्र लीळा तेने कहेवां ने सांभाळवां ने तेनुं मनमां चिंतवन करवुं. अने जेने एवुं चिंतवन अंतकाळे जो थइ आव्युं होय तो तेनो जीव भगवानना धामने जरूर पामे माटे एवां जे अमारां ए सर्वे चरित्र क्रिया तथा नामसरण ते कल्याणकारी छे अने आवी रीते अमे स्वरूपानंदस्वामीने वार्ता करी हती ते वार्ताने धारी त्यारे देहमां जे मंदवाडनुं घणुं दुःख हतुं ते सर्वे निवृत्ति पामी गयुं ने परमशांति थइ पण ए घणाय आत्माने देखता हता तोयपण तेणे करीने कांइ सिद्धि थइ नहि. अने वळी परोक्ष जे श्रीकृष्ण रामचंद्रादिक भगवानना अवतार तेमनां जे चरित्र ते ज्यांज्यां कह्यां होय तेनेपण सांभळवां ने गाववां. अने ए चार वानांनी दृढता थाय तेने अर्थे अमे श्रीमद्भागवत आदिक आठ ग्रंथनुं अतिशय प्रतिपादन कर्युं छे माटे ए ग्रंथने सांभळवा ने भणवा ने ए चार वानांनीज वार्ता करवी. अमे वळी भगवाननी मूर्तिनी उपासना ने भगवानना चरित्र ने भगवाननुं नामसरण ए त्रण वानां विना केवळ धर्मे करीने कल्याण थवुं तेतो तुंबडां बांधीने समुद्र तरवो तेवुं कठण छे अने भगवाननी मूर्तिनो आश्रय होय ने भगवाननना चरित्रने गातो सांभळतो होय ने भगवाननुं नामसरण करतो होय ने जो तेमां धर्म न होय तो ते माथे पाणो लइने समुद्रने तरवाने इच्छे एवो जाणवो ने तेने चंडाळ जेवो जाणवो, माटे ए चार वानांए करीनेज जीवनुं कल्याण जरुर थायछे पण ए विना बीजुं कोइ एवुं साधन

नथी जे जेणे करीने कल्याण थाय अने मुक्तानंदस्वामी आदिक साधुनां जे काव्य कीर्तन ते गाववां ने सांभळवां तथा भगवानना अवतार चरित्रे युक्त एवां काव्य कीर्तन बीजा कविनां होय तो तेनेपण गाववां ने सांभळवां पण कबीर ने अखानां जे काव्य कीर्तन होय तथा ए जेवां जेनां जेनां काव्य कीर्तन होय तेने गाववां नहि ने सांभळवां पण नहि. अने तमारे सर्वेने मारेविषे विश्वास छे ने हुं तमने जेवी तेवी अवळी वाते चडावी दउं तो जेम सर्वेने कुवामां नाखीने उपरथी पाणानी शिला ढांके त्यारे तेने निकळवानी आशाज नहि तेम तमेपण मारा वचनने विश्वासे करीने अवळे मार्गे चढी जाओ तो एमां मारुं शुं सारुं थाय? माटे आ वार्ता तमारा कल्याणनी छे ते में तमने हेते करीने कहीछे ते सारु तमो सर्वे हवे आवीज रीते समझीने दृढपणे वर्तज्यो, एम कहीने पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे जो तमे सर्वे आ अमे वार्ता करी एवी रीते वर्तवानो निश्चय कर्यो होय तो एक एक आवीने मारे पगे अडीने सम खाओ ने एवी प्रतिज्ञा करो जे 'अमारे दृढपणे एमज वर्तवुं छे' पछी सर्वे परमहंस तथा सत्संगी राजी थका उठीने श्रीजिमहाराजना चरणकमळनो स्पर्श करीने नमस्कार करीने पाछा बेठा पछी सर्वे बाइयोने पण एवी रीते कह्युं त्यारे बाइयोए पण छेटे उभी रहीने एम वर्तवानो निश्चय करीने सम खाधा पछी श्रीजिमहाराज प्रसन्न थका पोताने उतारे पधार्या। इति वचनामृतम्॥ ३५ ॥ १६८ ॥

संवत् १८८० ना भादरवा शुदि १५ पुन्यमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो, त्यारे मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति रहे तेनो शो उपाय छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एनो उपाय तो चार प्रकारनो छे तेमां एकतो जेना चित्तनो चोटवानो स्वभाव होय ते ज्यां चोटाडे त्यां चोटी जाय ते जेम पुत्र कळत्रादिकमां चोटेछे तेम परमेश्वरमां पण चोटे माटे एकतो ए उपाय छे. अने बीजो उपाय ए छे जे अतिशय शूरवीरपणुं, ते शूरवीरपणुं जेना हइयामां होय ने तेने जो भगवान् विना बीजो घाट थाय तो पोते शूरवीर भक्त छे माटे तेना हृदयमां अतिशय विचार उपजे ते विचारे करीने घाटमात्रने टाळीने अखंड भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखेछे. अने त्रीजो उपाय ते भय छे ते जेना हृदयनेविषे जन्म मृत्यु ने नरक चोराशी तेनी बीक अतिशय रहेती होय ते बीके करीने भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति राखेछे. अने चोथो उपाय ते वैराग्य छे ते जे पुरुष वैराग्यवान् होय ते सांख्यशास्त्रनें ज्ञाने करीने देहथकी पोताना आत्माने जुदो समझीने ते आत्मा विना बीजां सर्व मायिक पदार्थने असत्य जाणीने पछी ते आत्मानेविषे परमात्माने धारीने तेनुं अखंड चिंतवन करे. अने ए चार उपाय विना तो जेना उपर भगवान् कृपा करे तेनीतो वात न कहेवाय पण ते विना बीजातो अनंत उपाय करे तोपण भगवानने विषे अखंड वृत्ति रहे नहि अने भगवानने विषे अखंड वृत्ति रहेवी तेतो घणुं भारे काम छे ते जेने अनेक जन्मनां सुकृत उदय थयां होय तेने भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति रहेछे ने बीजाने तो अखंड वृत्ति राखवी महा दुर्लभ छे, एवी रीते भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति राखवानी वात करीने पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ संसारनेविषे माया माया कहेछे ते मायानुं रूप अमे जोइ लीधुं छे जे 'भगवान् विना

बीजे ठेकाणे जे हेत रहेछे तेज माया छे' अने आ जीवने पोतानो जे देह ने देहनां सगां संबन्धी ने देहनुं भरणपोषण करनारो एटलांने विषे तो जेवुं पंच विषयमां जीवने अतिशय हेत छे तेथकी पण विशेष हेत छे माटे जेने देह ने देहनां सगां संबन्धी ने देहनां भरणपोषण करनारां एमांथी स्नेह तुट्यो ते पुरुष भगवाननी मायाने तरी रह्यो छे अने जे पुरुषने भगवान् विना बीजामांथी हेत तुटेछे तेने भगवाननेविषे हेत थायछे' अने ज्यारे भगवाननेविषे हेत थयुं त्यारे तेनी भगवानमां अखंड वृत्ति रहेछे अने ज्यारे भगवानमां अखंड वृत्ति रही त्यारे तेने बीजुं कांइ करवुं रह्युं नथी तेतो कृतार्थ थयोछे। इति वचनामृतम् ॥ ३६ ॥ १६९ ॥

संवत् १८८० ना भादरवा वदी १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "गीतामां कह्युं छे जे ज्ञानी होय तेपण पोतानी प्रकृति सरखुं आचरण करे अने शास्त्रे कह्यो एवो जे निग्रह तेनुं जोर चाले नहि, माटे ए स्वाभाविक प्रकृति छे ते शे उपाये करीने टळे?" पछी सर्व जे मुनिमंडळ तेणे विचारी जोयुं पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननो उत्तर थाय एम जणायुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर एम छे जे, ए स्वभाव मुकाव्या सारु जे सत्पु-

१ आ अर्थ "परमात्मनि यो रक्तो विरक्तोऽपरमात्मनि" आ स्मृतिमां कह्यो छे। २ "सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि। प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥" आ गीता वचननो अर्थ छे।

रुप उपदेश करता होय तेना वचननेविषे अतिशय विश्वास होय अने उपदेशना करनारानी उपर सांभळनाराने अतिशय प्रीति होय अने उपदेशनो करनारो होय ते गमे तेटलां दुःखविने कठण वचन कहे तोपण तेने हितकारीज मानतो जाय तो स्वाभाविक जे प्रकृति छे तेपण नाश थइ जाय पण ए विना बीजो कोइ उपाय नथी, माटे जेने पोतानी प्रकृति टाळ्यानी इच्छा होय तेने परमेश्वर तथा सत्पुरुप ते स्वभाव टाळ्या सारु गमे तेटला तिरस्कार करे ने गमे तेवां कठण वचन कहे तोपण कोइ रीते दुःखावुं नहि ने कहेनारानो गुणज लेवो एवी रीते वर्ते तो कोइ रीते न टळे एवी प्रकृति होय तोयपण ते टळी जायछे । इति वचनामृतम् ॥ ३७ ॥ १७० ॥

संवत् १८८० ना भादरवा वदी ६ छठ्यने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे[1] संसारी जीव छे तेनेतो कोइक धन देनारो मळे के दिकरो देनारो मळे तो त्यां तरत प्रतीति आवे अने भगवानना भक्त होय तेनेतो जंत्र मंत्र नाटक चेटकमां क्यांइ प्रतीति आवेज नहि. अने जे हरिभक्त होय ने जंत्र मंत्रमां प्रतीति करे ते सत्संगी होय तेपण अर्धो विमुख जाणवो अने जे साचा भगवानना भक्त होय ते घणा होय नहि यथार्थ भगवानना भक्ततो कारियाणी गाममां मांचो

---

१ था. लोकमां बे प्रकारना मनुष्यो छे तेमां केटलाक भगवानना भक्त छे अने केटलाक अभक्त छे तेमां.

भक्त हता ते सत्संग थया मोर मार्गीना पंथमां हता तोपण निष्कामी वर्तमानमां फेर पड्यो नहि अने पोते बाळब्रह्मचारी रह्या अने कोइक किमियावाळो पोताने घेर आवीने उतर्यो हतो तेणे त्रांबामांथी रुपुं करी देखाड्युं ने पछी ए भक्तने कह्युं जे 'तमे सदाव्रति छो माटे तमने आ बुटी बतावीने रुपुं करवा शीखवुं' पछी ए भक्ते लाकडी लइने तेने गाम बहार काढी मुक्यो अने तेनेएम कह्युं जे 'अमारेतो भगवान्विना बीजा पदार्थनी इच्छा नथी' पछी ए भक्तने सत्संग थयो त्यारे भगवानना एकांतिक भक्त थया, माटे जे एकांतिक भक्त होय तेने एकतो आत्मनिष्ठा होय ने बीजो वैराग्य होय ने त्रीजो पोतानो धर्म दृढपणे होय ने चोथी श्रीकृष्णभगवानने विषे अत्यंत भक्ति होय. अने ते एकांतिक भक्त ज्यारे देह मुके त्यारे तेनो श्रीकृष्णभगवानने विषे प्रवेश थायछे अने जे एकांतिक न होय तेनोतो ब्रह्मादिकमां प्रवेश थायछे अथवा संकर्पणादिकनेविषे प्रवेश थायछे पण एकांतिक थया विना श्रीकृष्णवासुदेवमां प्रवेश थतो नथी. ते प्रवेश ते एम समझवो जे जेम अतिशय लोभी होय तेनो धनमां प्रवेश थायछे ने जेम अति कामी होय तेनो मनगमती स्त्रीमां प्रवेश थायछे ने जेम घणीक दोलतवाळो होय ने ते वांझियो होय ने तेने दिकरो आवेतो तेनो दिकरामां प्रवेश थायछे तेम एवी रीते जेनो जीव जे संघाथे बंधायो होय तेनेविषे तेनो प्रवेश जाणवो पण जेम जळमां जळ मळी जायछे अने अग्निमां अग्नि मळी जायछे तेम प्रवेश नथी थतो एतो जेनो जेनेविषे प्रवेश होय तेने पोताना इष्टदेव विना बीजा कोइ पदार्थने विषे हेत उपजे नहि ने एक तेनीज रटना लागी रहे ने ते विना जीवे ते महा दुःखना दिवस भोगवीने जीवे पण सुख न थाय । इति वचनामृतम् ॥ ३८ ॥ १७१ ॥

संवत् १८८० ना भादरवा वदी १० दशमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए चढीने श्रीलक्ष्मीवाडीए पधार्या हता पछी त्यां ओटाउपर ढोलीयो ढळावीने ते उपर विराजमान थया हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "देश काळ क्रिया संगादिके करीनेपण जे पोतामां एवो गुण होय ते जायज नहि एवो जेने जे स्वाभाविक गुण होय ते कहो?" एम कहीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे अमारामां एवा स्वाभाविक गुण रह्या छे ते कहीए जे, एक तो अमारे एम वर्तेछे जे पंच प्रकारना विषय संबन्धी जेजे पदार्थ छे तेनो देहे करीने सुधे एटलो योग थाय तोपण तेनो मनमां घाट न थाय तथा स्वप्नमांपण न आवे. अने बीजो एम जे बहारथी सुधे एटली प्रवृत्तिमां रह्या होइए पण ज्यारे अंतर्दृष्टि करीने पोताना आत्मा सामुं जोइए तो काचबाना अंगनी पेठे सर्वे वृत्ति संकोचाइने आत्मस्वरूपने पामी जाय ने परमसुखरूपे वर्ताय. अने त्रीजो एम जे चैतन्यरूप ने तेजोमय एवुं जे भगवाननुं अक्षरधाम छे तेमां सदा साकारमूर्ति एवा श्रीकृष्ण वासुदेव विराजमान छे ने ते साकार थकाज सर्वना कर्ता छे पण निराकार थकीतो कांइ थतुं नथी एवी रीते साकारनी दृढ प्रतीति छे ते केटलाक वेदांतिना[1] ग्रंथ वंचाव्या ने सांभळ्या तोपण ए प्रतीति टळी नहि. अने चोथो एम जे जे कोइ बाई भाइ होय ने तेनी कोरनुं एम मारे जाण्यामां आवे जे 'आतो उपरथी दंभे करीने भगवाननी भक्ति करेछे पण ए साचो भगवाननो भक्त नथी' तो तेने देखीने

१ शुष्क अद्वैतवेदान्तना।

मन राजी न थाय ने तेनी साथे सुवाण्य पण न थाय ने जे खरेखरो भगवाननो भक्त होय तेने देखीनेज मन राजी थाय ने तेनी साथेज सुवाण्य थाय. ए चार गुण अमारे विषे स्वाभाविकपणे रह्या छे ते कह्या अने हवे तमे सर्वे कहो, पछी जे मोटेरा परमहंस तथा मोटेरा हरिभक्त हता तेमणे जेमां जे गुण एवो हतो ते कही देखाड्यो.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे मोटेरो होय तेनेविषे निष्कामरूप धर्म छे ते अवश्य जोइए ने बीजी वातमां तो कांइक काच्यप होय तो चाले पण एनीतो दृढता अतिशय जोइए केमजे ए मोटेरो छे तेनी सारप्ये सर्वनी सारप्य कहेवाय.

एवी रीते वार्ता करीने पाछा दादाखाचरना दरबारमां पधारीने संध्या आरती नारायणधुन्य स्तुति करीने पछी सर्वे साधु तथा हरिभक्तनी सभा थइ, पछी श्रीजिमहाराजे मोटेरा मोटेरा परमहंसने पुछ्युं जे "अमे पंचमस्कंध तथा दशमस्कंधनुं अतिशय प्रतिपादन कर्युंछे माटे ए बे ग्रंथनुं जे रहस्य ते जेम तमने समझ्यामां आव्युं होय ते कहो?" त्यारे मोटेरा सर्वे परमहंसे पोतपोतानी समझण प्रमाणे जेम जणायुं तेम कही देखाड्युं, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो हवे अमे ए बे ग्रंथनुं रहस्य कहीए जे, रहस्य ते शुं तो गमे एवो शास्त्री होय पुराणी होय अतिशय बुद्धिवाळो होय तेपण सांभळीने ते वार्ताने निश्चय सत्य माने ने हा पाडे पण तेने कोइ रीते संशय न रहे जे 'ए वार्ता एम नहि होय' एवी रीते जे कही देखाडवुं तेनुं नाम रहस्य कहेवाय. अने ए बे ग्रंथमां दशमस्कंधनुं तो ए रहस्य छे जे, उपनिषद्—वेदांत ने श्रुति स्मृति तेमां जेने ब्रह्म कह्या छे ज्योतिःस्वरूप कह्या छे ज्ञानरूप कह्या छे तत्त्व कह्या छे सूक्ष्म कह्या छे अने निरंजन, क्षेत्रज्ञ, सर्वकारण, परब्रह्म, पुरु-

पोत्तम, वासुदेव, विष्णु, नारायण, निर्गुण एवे एवे नामे करीने जेने परोक्षपणे कह्याछे तेते आ प्रत्यक्ष वसुदेवना पुत्र श्रीकृष्णवासुदेव छे एवी रीते ज्यांज्यां स्तुतिभाग छे त्यांत्यां एवा एवा स्तुतिना शब्दने लइने प्रत्यक्ष श्रीकृष्णभगवाननेज कह्याछे पण श्रीकृष्णभगवानथी अधिक कांइ नथी कह्युं तथा सर्व जगतनी उत्पत्ति स्थिति प्रलयना कर्ता तेपण श्रीकृष्णभगवानज छे एम कह्युंछे. अने पंचमस्कंधनेविषे तो ए श्रीकृष्णभगवाननुं माहात्म्य कह्युं छे तथा ए श्रीकृष्णभगवान् जेते आ जगतनी स्थितिने अर्थे ने पोताना भक्तजनने सुख आपवाने अर्थे अनेक प्रकारनी मूर्तियोने धारीने खंडखंड प्रत्ये रह्याछे एम कह्युं छे अने पोते बांधी एवी जे मर्यादाओ तेनेविषे जे रहे ते अतिशय मोट्यपने पामे ने जे न रहे ते मोटो होय तोपण पोतानी स्थितिथकी पडी जाय अने जे साधारण जीव होय ने ते मर्यादाने लोपे तो तेने अधोगति थायछे एम कह्युं छे. अने एज जे श्रीकृष्णवासुदेव तेणे वसुदेव देवकीने प्रत्यक्ष चतुर्भुजरूपे अद्भुत बाळकथका दर्शन दीधुं ए अनादि वासुदेवरूप छे अने ए श्रीकृष्णभगवान् धर्म अर्थ कामने विषे वर्त्या छे; ते धर्म अर्थ काम सारु जेजे भगवाने चरित्र कर्यां तेनुं जे गान करे अथवा श्रवण करे ते सर्वे जीव सर्वे पापथकी मुकाइने परमपदने पामेछे. अने ए वासुदेव भगवानना जन्म कर्म ने मूर्ति ए सर्वे दिव्यस्वरूप छे अने ए जे वासुदेव श्रीकृष्ण तेज सर्वोपरी छे एवी रीते ए वे ग्रंथनुं रहस छे. अने जे शुकजी जेवा ब्रह्मस्थितिने पाम्या होय तेनेपण ए श्रीकृष्ण परब्रह्मनी उपासना भक्ति करवी ने दशममां कह्यां जे श्रीकृष्णभगवानना चरित्र ते शुकजी जेवानेपण गाववां ने सांभळवां, ते शुकजीएज कह्युं छे जे "परिनिष्ठितोऽपि नैर्गुण्ये उत्तमश्लोकलीलया। गृहीतचेता

राजर्षे आख्यानं यद्धीत्तवान् ॥" अने एवा जे वासुदेवभगवान् तेना आकारने विषे दृढ प्रतीति राखवी अने जो भगवानना आकारने विषे दृढ प्रतीति हशे ने कदाचित् ए जीव कांइक पाप करशे तोपण एनो उद्धार थशे, केमजे पाप करे तेनुंतो प्रायश्चित्त कह्युंछे पण भगवानने जे निराकार समझे एतो पंच महापाप करतां पण अति मोटुं पाप छे ए पापनुं कोइ प्रायश्चित्त नथी अने भगवानने साकार जाणीने निष्ठा राखी होय ने कदाचित् तेथी कांइक पाप थइ गयुं होय तो एनो शो भार छे? ए पापतो भगवानने प्रतापे करीने सर्वे बळी जशे ने एनो जीव भगवानने पामशे माटे भगवानना आकारनेविषे दृढ प्रतीति राखीने एनी दृढ उपासना करवी एम अमे तमने सर्वेने कहीए छीए ते आ वार्ताने सर्वे दृढ करीने राखज्यो, एवी रीते श्रीजिमहाराज सर्वेने शिक्षानां वचन कहीने भोजन करवा सारु पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ ३९ ॥ १७२ ॥

संवत् १८८० ना आसो वदी ३ त्रीजने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानेविषे विराजमान हता पछी स्नान करीने ने श्वेत वस्त्रनुं धारण करीने पोताना आसन उपर विराजमान थया अने पोतानुं देवार्चनादिक जे नित्यकर्म तेने करीने उत्तरादे मुखे श्रीकृष्णभगवानने साष्टांग दंडवत्प्रणाम करता हवा ते प्रतिदिन जेटला दंडवत्प्रणाम करता तेथी ते दिवसेतो पोते एक दंडवत्प्रणाम अधिक कर्या तेने जोइने शुकमुनिए पुछ्युं जे "हे महाराज! आज तमे एक प्रणाम अधिक केम कर्यो?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, नित्य प्रत्येतो अमे श्रीकृष्णभगवानने नमस्कार करीने एम कहेता जे 'हे महाराज! आ देहादिकनेविषे अहंममत्व होय तेने तमे टाळज्यो' अने आजतो अमने एवो विचार थयो जे 'भगवानना भक्तनो

मने वचने अने देहे करीने जे कांइक जाणे अजाणे द्रोह थइ आवे ने तेणे करीने जेवुं आ जीवने दुःख थायछे तेवुं बीजे कोइ पापे करीने थतुं नथी' माटे जाणे अजाणे मने वचने देहे करीने जे कांइ भगवानना भक्तनो द्रोह बनी आव्यो होय तेनो दोष निवारण कराव्या सारु एक प्रणाम अधिक कर्यो अने अमेतो एम जाण्युंछे जे 'भगवानना भक्तना द्रोहे करीने जेवुं आ जीवनुं भूंडुं थायछे ने ए जीवने कष्ट थायछे तेवुं कोइ पापे करीने नथी थतुं अने भगवानना भक्तनी मने वचने देहे करीने जे सेवा बनी आवे ने तेणे करीने जेवुं आ जीवनुं रुडुं थायछे ने ए जीवने सुख थायछे तेवुं बीजे कोइ साधने करीने नथी थतुं' अने ए भगवानना भक्तनो जे द्रोह थायछे ते लोभ, मान, ईर्ष्या अने क्रोध ए चारे करीने थायछे अने भगवानना भक्तनुं जे सन्मान थायछे ते जेमां ए चार बानां न होय तेथी थायछे माटे जेने आ देहे करीने परम सुखीया थवुं होय ने देह मुक्या केडेपण परम सुखीया थवुं होय तेने भगवानना भक्तनो मने वचने देहे करीने द्रोह न करवो अने जो भगवानना भक्तनो कांइक द्रोह थइ जाय तो तेनी वचने करीने प्रार्थना करवी ने मने करीने ने देहे करीने तेने दंडवत्प्रणाम करवा ने फरीने द्रोह न थाय एवी रीते यत्नानो आदर करवो पण एक वार द्रोह करीने दंडवत्प्रणाम कर्या ने वळी फरी द्रोह करीने दंडवत्प्रणाम करवा एवी रीते वर्तवुं नहि अने आ वार्ता दाडी सांभरती रहे ते सारु आजथी सर्वे संत तथा सर्वे हरिभक्तमात्र एवो नियम राखज्यो जे 'भगवाननी पूजा करीने पोताना नित्य नियम जे दंडवत्प्रणाम होय ते करवा ने ते पछी बधा दिवसमां जे कांइ जाणे अजाणे मने वचने देहे करीने भगवानना भक्तनो द्रोह थयो होय तेनुं निवारण करावबा सारु एक दंडवत्प्रणाम

नित्ये करवो' एम अमारी आज्ञा छे तेने सर्वे पाळ्यो । इति वचनामृतम् ॥ ४० ॥ १७३ ॥

संवत् १८८० ना कार्तिक वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे पीळा पुष्पना हार पहेर्या हता ने पाघने विषे पीळा पुष्पना तोरा खोश्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज कृपा करीने पोताना भक्तजनने उपदेश करता थका बोल्या जे, जेने परमेश्वर भजवा होय तेने भगवाननी अथवा भगवानना भक्तनी सेवा-चाकरी मळे त्यारे पोतानुं मोटुं भाग्य मानीने सेवा करवी, तेपण भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे ने पोताना कल्याणने अर्थे भक्तिए करीनेज करवी पण कोइक वखाणे ते सारु न करवी अने जीवनोतो एवो स्वभाव छे जे'जेमां पोताने मान जडे तेज करवुं सारुं लागे' पण मान विना एकली तो भगवाननी भक्ति करवी पण सारी लागे नहि अने जेम श्वान होय ते सुका हाडकाने एकांते लइ जइने करडे पछी तेणे करीने पोतानुं मोढुं छोलाय ने ते हाडकुं लोहिवाळुं थाय तेने चाटीने राजी थायछे पण मूर्ख एम नथी जाणतो जे'माराज मोढानुं लोही छे तेमा हुं स्वाद मानुं छुं' तेम भगवाननो भक्त होय तोपण मानरूपी हाडकाने मुकी शकतो नथी अने जेजे साधन करेछे ते मानने वश थइने करेछे पण केवळ भगवाननी भक्ति जाणीने भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे करतो नथी अने भगवाननी भक्ति करेछे तेमांपण माननो स्वाद आवेछे त्यारे करेछे पण केवळ भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे नथी

करतो. अने मान विना केवळ भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे भगवाननी भक्ति तो रतनजी तथा मीयांजी जेवा कोइकज करता हशे पण सर्वेथी तो माननो स्वाद मुकी शकातो नथी. पछी ते उपर मुक्तानंदस्वामीए तुलसीदासनी साखी कही जे "कनक तज्यो कामनी तज्यो तज्यो धातुको संग। तुलसी लघु भोजन करी जीवे मानके रंग ॥" ए साखीने सांभळीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेवो जीवने मानमांथी स्वाद आवेछे तेवोतो कोइ पदार्थमांथी आवतो नथी माटे मानने तजीने जे भगवानने भजे तेनेतो सर्वे हरिभक्तमां अतिशय मोटो जाणवो। इति वचनामृतम् ॥ ४१ ॥ १७४ ॥

संवत् १८८० ना मागशर वदी १२ द्वादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी भगवदानंदस्वामीए श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! भगवानना एक एक रोमनेविषे अनंत कोटि ब्रह्मांड रह्यां छे ते केवी रीते रह्यां छे अने ब्रह्मांडमां कये कये ठेकाणे भगवानना अवतार थायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, पुरुषोत्तमभगवाननुं जे अक्षरधाम तेना बे भेद छे—एक सगुणपणुं ने बीजुं निर्गुणपणुं अने पुरुषोत्तमनारायण छे तेनेतो सगुण न कहेवाय ने निर्गुण पण न कहेवाय अने सगुण निर्गुण भेदतो अक्षरनेविषे छे, ते अक्षर निर्गुणपणेतो अणुंथकी पण अतिसूक्ष्म स्वरूपे छे अने सगुणस्वरूपेतो जेटलुं मोटुं पदार्थ कहेवाय तेथकी पण अतिशय मोटुं छे ते अक्षरना एक एक रोम-

नेविपे अणुनी पेठे अनंतकोटि ब्रह्मांड रह्यां छे ते कांइ ब्रह्मांड अक्षरनेविपे नानां थइ जतां नथी एतो अष्टावरणे सहवर्तमान होय पण अक्षरनी अतिशय मोट्यप छे ते आगळ ब्रह्मांड अतिशय नानां देखायछे, जेम गिरनार पर्वत छे ते मेरु आगळ अतिशय नानो देखाय अने लोकालोक पर्वतनी आगळ मेरु पर्वत अतिशय नानो देखाय, तेम ब्रह्मांड तो आवडां ने आवडां होय पण अक्षरनी अतिशय मोट्यप छे तेनी आगळ अति नानां देखायछे माटे अणु सरखां कहेवायछे अने अक्षरब्रह्मतो जेम सूर्यनुं मंडळ छे तेम छे ते सूर्य ज्यारे माथे आवे त्यारे सूर्यने योगे करीने दशे दिशाओ कल्पायछे तेम अक्षरधाम छे अने ते अक्षरने उपर हेठे ने चारे पडखे सर्व दिशामां ब्रह्मांडनी क्रोटियो छे अने भगवान् जे पुरुषोत्तम तेतो अक्षरधामनेविपे सदाय विराजमान रहेछे ने ते सत्यसंकल्प छे अने अक्षरधामनेविपे रह्या थकाज जे ब्रह्मांडमां जेजे रूप प्रकाश्यां जोइए तेवा तेवा रूपने प्रकाश करेछे, जेम श्रीकृष्णभगवाने रास क्रीडा करी त्यारे पोते एक हता ते जेटली गोपांगनाओ हती तेटला रूपे थया, तेम पुरुषोत्तम भगवान् ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये ज्यां जेवुं रूप प्रकाश्युं जोइए त्यां तेवा रूपने अक्षरधाममां रह्या थका प्रकाशेछे अने पोतेतो सदाय अक्षरधाममां रहेछे अने ज्यां ए पुरुषोत्तमनी मूर्ति छे त्यांज अक्षरधामनुं मध्य छे ॥ इति वचनामृतम् ॥ ४२ ॥ १७५ ॥

संवत् १८८० ना पोष शुदि ४ चोथने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां अयोध्यावासीने घेर गादीतकिया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने प्रेमानंदस्वामी सरोदा लइने कीर्तन गावता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो प्रश्न उत्तर करीए, एम कहीने श्रीजिमहाराजे पुछ्युं जे "जे भगवाननो भक्त गुणातीत होय ने केवळ सत्तारूपे वर्ततो होय अने तेनेविषे वैराग्यरूप जे सत्त्वगुण अने विषयमां प्रीतिरूप जे रजोगुण अने मूढपणारूप जे तमोगुण ए त्रणे गुणना भावतो न होय अने तेतो केवळ उत्थाने रहित शून्यसमता धरी रहे ने सुषुप्ति जेवी अवस्था वर्ते एवी रीते सत्तारूपे रह्यो जे निर्गुण भक्त तेने भगवाननेविषे प्रीति होय के न होय¹ ? ए प्रश्न छे, पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, जे सत्तारूपे वर्ते तेने भगवाननेविषे प्रीति तो होय,² त्यारे श्रीजिमहाराजे पुछ्युं जे "सत्तारूपे रह्यो एवो जे ए भक्त तेने भगवाननेविषे प्रीति छे ते आत्माने सजाति³ छे के विजाति⁴ छे ?" पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे ए प्रीतितो आत्माने सजाति⁵ छे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मध्वाचार्य निंबार्क ने वल्लभाचार्य एमणे आत्मारूपे रहीने जे भगवाननेविषे प्रीति करवी ए प्रीतिने ब्रह्मस्वरूप⁶ कही छे माटे गुणातीत थइने जे भगवाननेविषे प्रीति करेछे एज ब्रह्मस्वरूप छे एम मोटा मोटा आचार्यनो सिद्धांत छे । इति वचनामृतम् ॥४३॥ १७६॥

संवत् १८८० ना पोष शुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार

१ राग पर्याय जेनो छे एवी प्रीति रजोगुणनुं कार्य होवाथी गुणातीत भक्तमां ते संभवे नहि एम जाणीने आ संशय कर्यो छे । २ पण आ निर्गुण भक्तनी जे प्रीति ते भगवानना माहात्म्यज्ञानमूलक छे माटे निर्गुण छे । ३ आत्मानी साथे एकीभूत; एटले पृथक् नहि रहेनारी । ४ आत्माथी पृथक्पणे रहेनारी । ५ निर्गुण भक्तनी प्रीति भगवानना महिमामूळक छे. जे महिमा छे तेनो आधार आत्मा छे माटे ते प्रीति आत्मानी साथे एकीभूत छे पृथक् नथी । ६ ब्रह्मरूप पोताना आत्माथी अपृथक्सिद्ध छे माटे ब्रह्मस्वरूप कही छे ।

ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे मुक्तानंदस्वामीने पुछ्युं "जे ज्यारे कोइक हरिभक्तनो अवगुण आवे त्यारे मोरे जेटला तेमां दोष सुझता होय एटलाने एटलाज सुझे के कांइ वधु सुझे ?" पछी मुक्तानंदस्वामी बोल्या जे अटकळेतो एम जणायछे जे मोरे सुझता एटलाने एटला सुझेछे पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ए वातमां तमारी नजर पडी नहि एटलाने एटला अवगुण सुझता होयतो अवगुण आव्यो एम केम कहेवाय? माटे एतो भुंडा देश, काळ, क्रिया, संग आदिकने योगे करीने बुद्धि पलटाइने बीजी रीतनीज थइ जायछे तेणे करीने अवगुण वधु सुझेछे त्यारे एम जाणवुं जे 'बुद्धिनेविषे भुंडा देशकाळादिकनुं दूषण लाग्युंछे' अने अमेतो एम जाणीए छीए जे 'जेने पूर्वे मोटा पुरुषनो संग हशे अथवा भगवाननुं दर्शन थयुं हशे तेनेतो पोतानाज अवगुण भासे पण बीजा हरिभक्तना अवगुण भासेज नहि' अने एवां जेनां लक्षण होय तेने दैवी जीव जाणवो अने जे आसुरी जीव होय तेनेतो पोतामां एके अवगुण भासे नहि अने बीजा जे हरिभक्त होय तेनेविषेज केवळ अवगुण भासे एवी जेनी बुद्धि होय तेने आसुरी जीव जाणवो अने ते आसुरी जीव सत्संगमां रह्यो होय अथवा संतना मंडळमां रह्यो होय पण जेवा काळनेमि रावण ने राहु हता ते सरखो रहे पण एने संतनो संग लागे नहि माटे पाका हरिभक्त होय तेने पोतानाज अवगुण सुझे पण बीजा हरिभक्तना दोषनेतो देखेज नहि । इति वचनामृतम् ॥ ४४ ॥ १७७ ॥

संवत् १८८० ना पोष वदी १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजा-

नंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, तमे सर्वे मुनिमंडळ तथा ब्रह्मचारी तथा गृहस्थ सत्संगी तथा पाळा तथा अयोध्यावासी ए तमे सर्वे मारा कहेवाओछो[1] ते जो हुं खटको राखीने तमने वर्ताचुं नहि अने तमे कांइक गाफलपणे वर्तो ते अमाराथकी देखाय नहि माटे जेजे मारा कहेवाया छो तेमां मारे एक तलमात्र कसर रहेवा देवी नथी माटे तमेपण सुधा सावधान रहेज्यो, जो जराय गाफलाइ राखशो तो तमारो पग टकशे नहि अने मारेतो जे तमे भगवानना भक्त छो तेना हृदयमां कोइ जातनी वासना तथा कोइ जातनो अयोग्य स्वभाव ते रहेवा देवो नथी अने मायाना त्रण गुण, दश इंद्रियो, दश प्राण, चार अंतःकरण, पंच भूत, पंच विषय अने चौद इंद्रियोना देवता एमांथी कोइनो संग रहेवा देवो नथी ने ए सर्वे मायिक उपाधि थकी रहित सत्तामात्र एवो जे आत्मा तेरूपे थइने भगवाननी भक्ति करो एवा सर्वेने करवा छे पण कोइ जातनो मायानो गुण रहेवा देवो नथी अने आ जन्ममां सर्व कसर न टळी तो बदरिकाश्रममां जइने तप करीने समग्र वासना बाळीने भस्म करवी छे तथा श्वेतद्वीपमां जइने निरन्न मुक्त भेळा तप करीने समग्र वासना बाळीने भस्म करी नाखवी छे

---

१ अने हुं तमारो सर्वेनो गुरु छुं, गुरुनी क्रिया शिष्यने शिक्षा करवी ते छे शिष्योनी क्रिया गुरुनी आज्ञा पाळवी ते छे, आवो गुरुशिष्यनो धर्म शास्त्रमां व्यवस्था कर्यो छे ।

पण भगवान् विना बीजा कोइ पदार्थमां प्रीति रहे एवुं रहेवा देवुं नथी माटे सर्वे हरिभक्त तथा सर्वे मुनिमंडळ सावधान रहेज्यो, एटली वार्ता करीने श्रीजिमहाराज पोताना उतारामां पधार्या.

पछी तेज दिवस सायंकाळे वळी सभा करीने विराजमान थया पछी आरती थइ रही त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे[1], सात्त्विक कर्म करीने देवलोकमां जायछे अने राजस कर्म करीने मध्यलोकनी प्राप्ति थायछे ने तामस कर्म करीने अधोगतिने पामेछे, तेमां कोइ एम आशंका करे जे'राजस कर्म करीने मनुष्यलोकनी प्राप्ति थायछे त्यारे तो सर्व मनुष्यने सुख दुःख सरखुं जोइए' तो एनो उत्तर एम छे जे, एक रजोगुण छे तेना देशकाळादिकने योगे करीने अनंत प्रकारना भेद थायछे माटे राजस कर्मनो एक सरखो निर्धार रहेतो नथी एतो जेवा देश, काळ, संग अने क्रियानो योग आवे तेवुं कर्म थायछे. [3]तेमां पण भगवानना भक्त संत अने भगवानना अवतार ते कुराजी थाय एवुं कांइक कर्म थइ जाय तो आ ने आ देहे मृत्युलोकमां यमपुरीना जेवुं दुःख भोगवे अने भगवान् ने भगवानना भक्त राजी थाय एवुं कर्म करे तो आ ने आ देहे परमपद पाम्या जेवुं सुख भोगवे अने भगवान् ने भगवानना संतने कुराजी करे ने तेणे जो स्वर्गमां गया जेवुं कर्म कर्युं होय तोपण तेनो नाश थइ जाय ने नरकमां पडवुं पडे अने भगवान् ने भगवानना संत राजी थाय एवुं कर्म कर्युं होय ने तेने जो नरकमां जवानुं प्रारब्ध होय तोपण ते भुंडा कर्मनो नाश थइ जाय

१ आ भुवनमां रहेला लोको गुणात्मक छे तेमना कर्मपण गुणात्मक छे, तेथा। २ ते केम नथी? । ३ माटे सुख दुःखमां भेद छे। आ देहथी भोग्य जे कर्म छे ते प्रारब्ध कह्युं छे, जे कर्म जन्मांतरथी भोग्य छे ते क्रियमाण कह्युं छे ते क्रियमाण कर्मना जे विशेष छे तेने कहेछे।

ने परमपदने पामे, माटे जे समझुं होय तेनेतो भगवान् ने भगवानना भक्त राजी थाय तेमज वर्तवुं अने पोताना संबन्धि जे माणस होय तेनेपण एम उपदेश करवो जे 'भगवान् ने भगवानना संत जेजे प्रकारे आपणी उपर राजी थाय ने कृपा करे तेमज आपणे वर्तवुं' अने भगवान् ने भगवानना संतने अग्निए ज्यारे राजी कर्या हशे त्यारे अग्निने एवो प्रकाश प्राप्त थयोछे अने सूर्य चंद्रादिक जे प्रकाशमान छे तेणेपण भगवान् ने भगवानना संतने शुभ कर्मे करीने राजी कर्या हशे त्यारे एवा प्रकाशने पाम्याछे अने देवलोक मृत्युलोकनेविषे जेजे सुखीया छे ते सर्वे भगवान् ने भगवानना संतने राजी कर्या हशे ते प्रतापे करीने सुखीया छे माटे जे पोताना आत्मानुं रुडुं थवाने इच्छे तेनेतो सद्ग्रंथनेविषे कह्या जे स्वधर्म तेनेविषे रहीने भगवान् ने भगवानना संत राजी थाय एज उपाय करवो । इति वचनामृतम् ॥ ४५ ॥ १७८ ॥

संवत् १८८० ना पोष वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पीळी छींटनी रजाइ ओढी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने झांझ मृदंग लइने संत कीर्तन गावता हता.

पछी कीर्तन गाइ रह्या त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ संसारनेविषे जे सत्पुरुष होय[1] तेनेतो कोईक जीवने लौकिक पदार्थनी हाण

---

१ तेतो पोताना एकांतिक धर्मनेज प्रयत्नथी रक्षण करेछे अने देहना मरणने मरण मानता नथी परंतु पोताना एकांतिक धर्ममांथी भ्रष्ट थवानेज मरण मानेछे अने वळी ।

वृद्धि थती देखीने तेनीकोरनो हर्ष शोक थाय नहि अने ज्यारे कोइ-
कनुं मन भगवानना मार्गमांथी पाछुं पडे त्यारे खरखरो थायछे
कांजे थोडाक काळ जीववुं ने एनो परलोक वगडशे माटे एने मोटी
हाण थायछे. अने भगवानना जे अवतार पृथ्वीनेविषे थायछे ते
धर्मना स्थापनने अर्थे थायछे ते केवळ वर्णाश्रमना धर्म स्थापन क-
रवाने अर्थेज नथी थता, केमजे वर्णाश्रमना धर्मतो सप्तर्षि आदिक जे
प्रवृत्तिधर्मना आचार्य छे तेपण स्थापन करेछे माटे एटला सारुज भ-
गवानना अवतार नथी थता, भगवानना अवतारतो पोताना एकां-
तिक भक्तना जे धर्म तेने प्रवर्तावयाने अर्थे थायछे. अने वळी जे
एकांतिक भक्त छे तेने देहे करीने मरवुं ए मरण नथी एनेतो एकां-
तिकना धर्ममांथी पडी जवाय एज मरण छे ते ज्यारे भगवान् के
भगवानना संत तेनो हइयामां अभाव आव्यो त्यारे ए भक्त एकां-
तिकना धर्ममांथी पड्यो जाणवो अने ते जो क्रोधे करीने पड्यो होय
तो तेने सर्पनो देह आव्यो जाणवो अने कामे करीने पड्यो होय तो
यक्ष राक्षसनो अवतार आव्यो जाणवो माटे जे एकांतिकना धर्ममांथी
पडीने एवा देहने पाम्या छे ने जो ते धर्मवाळा होय अथवा तपस्वी
होय तोपण ते धर्मे करीने तथा तपे करीने देवलोकमां जाय पण
जेणे भगवाननो ने भगवानना संतनो अभाव लीधो तेतो भगवानना
धामनेतो नज पामे. अने वळी जे पंच महापापे युक्त होय अने तेने
जो भगवान् ने भगवानना संतनेविषे अवगुण न आव्यो होय तो
तो एनां पाप नाश थइ जाय ने एनो भगवानना धाममां निवास
थाय माटे पंच महापापथकी पण भगवान् ने भगवानना भक्तनो अव-
गुण लेवो ए मोटुं पाप छे। इति वचनामृतम् ॥ ४६ ॥ १७९ ॥

संवत् १८८० ना महा वदी १० दशमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पीळी छींटनी रजाई ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे जे संतनी पासे चार साधु रहेता होय तेने जो मन दइने माणसाइए राखतां आवडतुं होय तो तेनी पासे साधु राजीपे रहे अने जेने साधुने राखतां आवडे नहि तेनी पासे साधु रहे पण नहि. अने जे साधुने मोक्षनो खप होय तेनेतो जेम दुःखवीए ने विषयनुं खंडन करीए तेम अति राजी थाय, जेम आ मुक्तानंदस्वामीने क्षय रोग थयोछे ते दही दुध गळ्युं चिकणुं कांइ खावा देतो नथी, तेम जे समझुं होय तेने एम जणाय जे 'आ रोगे सारुं सारुं खावा पीवानुं सर्वे खंडन करी नाख्युं माटे आतो क्षयरोगरूपे जाणीए कोइक मोटा संतनो समागम थयो होयने शुं ?' एम भासेछे, श माटे जे शिश्न ने उदर ए बेनेविषे जे जीवने आसक्ति छे एज असत्पुरुषपणुं छे, ते क्षयरोग ए बेय प्रकारनी खोट्यने काढे एवो छे, तेम ए रोगनी पेठे जे सत्पुरुष होय ते विषयनुं खंडन करता होय त्यारे मुमुक्षु होय तेने तेमां दुःखाइ जवुं नहि.अने जे खाधा पीधानी लालच्ये के लुगडांनी लालच्ये अथवा पोताने मन गमता पदार्थनी लालच्ये कोइ मोटेरा संत भेगो रहेतो होय तेनेतो साधुज न जाणवो तेनेतो लबाड जाणवो ने कुतरा जेवो जाणवो अने एवो मलिन आशयवाळो होय ते अंते जतां विमुख थाय. अने वळी संतने कोइ सारुं पदार्थ आपे तेमां जे ईर्ष्या करे तथा जे पंच विषयनो लालची होय ए बेतो पंच महापापीथी पण

अतिभुंडा छे माटे जे समजुं होय तेने संतना समागममां रहीने आवो मलिन आशय अंतरमां राख्यो न जोइए, केमजे आ सभातो जेवी बद-रिकाश्रममां तथा श्वेतद्वीपमां होय तेवी छे तेमां बेसीने ज्यारे मलिन वासना न टळी त्यारे बीजुं टाळ्यानुं ठेकाणुं क्यां मळशे? अने पंच विषय छे तेतो पूर्वे देव मनुष्यादिकने विषे अनंत देह करीने आपणे जीवे भोगव्याछे तोपण हजीलगण ए विषयनी तृप्ति थइ नथी तो हवे भगवानना भक्त थइने वर्ष के बे वर्ष के पांच वर्ष विषय भोगवीने पूर्ण थवाशे नहि, जेम पाताळ सुधी पृथ्वी फाटी होय तेने पाणीए करीने भरवा मांडीए ते क्यारेय भराय नहि, तेम इंद्रियो छे तेने क्यारेय विष-यथकी तृप्ति थइ नथी ने थशेपण नहि माटे हवे तो विषयनी आसक्तिने त्याग करीने अने साधु जेम चढीने कहे तेम गुण लेवो पण अवगुण लेवो नहि, ते मुक्तानंदस्वामीना कीर्तनमां कह्युंछे जे "सुळी उपर शयन करावे तोय साधुने संगे रहीयेरे" माटे आवो अवसर पामीने तो अशुभ वासना टाळीनेज मरवुं पण अशुभ वासना सोतां मरवुं नहि अने 'आ देहमांथी नीसरीने नारद सनकादिक शुकजी जेवा ब्रह्म-रूप थइने भगवाननी भक्ति करवीछे' एवी वासना राखवी अने एम कर-तां थकां जो ब्रह्मलोकमां के इंद्रलोकमां निवास थइजशे तोपण कांइ चिंता नथी, जेम झाडेफरवा गयाने पायखानामां माथाभर पडी गया तो नाहि धोइने पवित्र थवुं पण एमां पडी न रहेवुं, तेम शुभ वासना राखतां राखतां ब्रह्मलोकमां केइंद्रलोकमां जवायुं तो एम जाणवुं जे 'माथाभर नरकना खाडामां पड्या छीए' एम जाणीने शुभ वासनाने बळे करीने ब्रह्मलोक इंद्रलोकना भोगने त्याग करीने भगवानना धाममां पुगवुं पण वचमां क्यांइ न रहेवुं एम निश्चय राखवो. अने वळी जेम पोतानी

सेवा गृहस्थ करेछे अथवा त्यागी सेवा करेछे तेम आपणेपण हरिभक्तनुं माहात्म्य जाण्युं जोइए, जेम अमारी चाकरी मूळजी ब्रह्मचारी माहात्म्य जाणीने करेछे तेम अमे पण ब्रह्मचारीनुं माहात्म्य जाणीए छीए तेम आपणी गृहस्थ अन्नवस्त्रे करीने चाकरी करेछे तेम आपणे पण एमनुं माहात्म्य समझीने एमनी वातचिते करीने चाकरी करवी एम अरसपरस माहात्म्य समझीने हरिभक्तनी सोबत्य राखवी।

इति वचनामृतम् ॥ ४७ ॥ १८० ॥

संवत् १८८० ना महा वदी १४ चौदशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने तुलसीनी नवीन श्वेत कंठीयो कंठनेविषे धारण करी हती ने पाघनेविषे पीळा पुष्पनो तोरो विराजमान हतो ने कंठनेविषे पुष्पना हार धारण कर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने साधु प्रेमानंदस्वामी भगवानना ध्यानना अंगनी गरबीयो जे "वन्दु सहजानंद रसरूप अनुपम सारनेरे लोल" ए गावता हता. पछी ज्यारे गाइ रह्या त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे बहु सारां कीर्तन गायां आ कीर्तनने सांभळीनेतो अमारा मनमां एम विचार थयो जे 'आवी रीते एने भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन छे माटे ए साधुनेतो उठीने साष्टांग दंडवत्प्रणाम करीए' अने जेने आवी रीते अंतःकरणमां भगवाननुं चिंतवन थतुं होय ने एवी वासनाए युक्त जो देह मुके तो तेने फरीने गर्भवासमां जवुं पडेज नहि अने एवी रीते भगवाननुं चिंतवन करतां जीवतो होय तोपण ए परमपदने पाम्योज छे अने जेवा श्वेतद्वीपमां निरन्नमुक्त छे तेवोज

एपण निरन्नमुक्त थइ रह्यो छे अने देह क्रियातो योग्य होय एटली सहजेज थायछे अने जेने भगवानना स्वरूपनुं एवी रीते चिंतवन थायछे तेतो कृतार्थ थयोछे ने तेने कांइ करवुं बाकी रह्युं नथी अने जेने भगवान् विना बीजा पदार्थनुं चिंतवन करते थके देह पडशे तेने कोटि कल्पे दुःखनो अंत आवतो नथी माटे आवो अवसर आव्योछे तेने पामीने भगवान् विना बीजा पदार्थनुं चिंतवन मुकीने एक भगवानना स्वरूपनुंज चिंतवन करवुं. अने जो भगवानना स्वरूपनुं चिंतवन थइ न शके तोपण धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने भक्ति तेणे युक्त एवा जे आ साधु तेनेमध्ये पडी रहेवुं अने अमारेपण एज अंतरमां वासना छे जे आ देहने मुकशुं पछी कोइ रीतनो जन्म थवानुं निमित्ततो नथी तोपण अंतरमां एम विचारीए छीए जे जन्म धर्यानुं कोइक कारण उत्पन्न करीने पण संतना मध्यमां जन्म धरवो' एमज इच्छिए छीए अने जेने ए कीर्तनमां कह्युं एवी रीतनुं चिंतवन थतुं होय तेतो काळ कर्म ने मायाना पाशथकी मुकायोछे. अने जेने घेर एवा पुरुषे जन्म-धर्यो तेनां माबाप पण कृतार्थ थयां जाणवां. अने भगवान विना बीजा विषयनुं जे चिंतवन करेछे तेतो अतिशय भूल्यो जाणवो अने स्त्री पुत्र ने धनादिक पदार्थ तेतो जेजे योनिमां जायछे ते सर्वेमां मळेछे पण आवा ब्रह्मवेत्ता संतनो संग ने श्रीवासुदेव भगवाननुं साक्षात्कार दर्शन ने चिंतवन तेतो अतिशय दुर्लभ छे माटे जेम विषयी जनने पंच विषयनुं चिंतवन *अंतःकरणमां थया करेछे तेम जेना अंतरमां अखंड भगवाननुं* चिंतवन थया करे एवी उपरांत मनुष्यदेहनो बीजो लाभ नथी अने एतो सर्वे हरिभक्तमां मुखीयो छे. अने ए भक्तने शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पंच विषय होय तोपण भगवान्

संबन्धिज होय अने तेना श्रवण ते अखंड भगवाननी कथा सांभळवाने इच्छे अने त्वचा ते भगवाननो स्पर्श करवा इच्छे अने नेत्र ते भगवान ने भगवानना संतनां दर्शन करवा इच्छे अने रसना ते भगवानना महाप्रसादना स्वादने इच्छे अने नासिका ते भगवानने चड्यां जे पुष्प तुळसी तेना सुगंधने इच्छे पण परमेश्वर विना अन्य वस्तुने सुखदायि जाणेज नहि एवी रीते जे वर्ते ते भगवाननो एकांतिक भक्त कहेवाय। इति वचनामृतम् ॥ ४८ ॥ १८१ ॥

संवत् १८८० ना फागण शुदि २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे द्वार मेडीनी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकीया बिछवावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पाघमां धोळा पुष्पनो हार लटकतो मुक्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, प्रत्यक्ष भगवाननी जे मूर्ति ने बीजा जे मायिक आकार ए बेयनेविषे तो घणो फेर छे पण जे अज्ञानी छे ने अतिशय मूर्ख छे तेतो भगवान् अने मायिक आकारने सरखा जाणेछे केमजे मायिक आकारना जे जोनारा छे ने मायिक आकारना जे चिंतवन करनारा छे तेतो अनंत कोटि कल्प सुधी नरक चोराशीने विषे भमेछे अने जे भगवानना स्वरूपनां दर्शन करनारा छे ने भगवानना स्वरूपना चिंतवन करनारा छे तेतो काळ कर्म ने माया ए सर्वेना बंधन थकी छुटीने अभयपदने पामेछे ने भगवानना पार्षद थायछे माटे अमारेतो भगवाननी कथा कीर्तन

के वार्ता के भगवाननुं ध्यान एमांथी कोइ काळे मननी तृप्ति थतीज नथी ने तमारेपण सर्वेने एवीज रीते करवुं। इति वचनामृतम्॥४९॥१८२॥

संवत् १८८० ना चैत्र वदी २ द्वितीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे द्वार मेडीनी ओसरी उपर रात्रिने विषे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आजतो अमारुं जे रहस्य छे ते तमने सर्वेने अमारा जाणीने कहीए छीए जे, जेम नदीयो समुद्रनेविषे लीन थायछे अने जेम सती ने पतंग ते अग्निनेविषे बळी जायछे अने जेम शूरो रणनेविषे डुक डुक थइ जायछे तेम एकरस परिपूर्ण एवुं जे ब्रह्मस्वरूप तेनेविषे अमे अमारा आत्माने लीन करी राख्यो छे अने ते तेजोमय एवुं जे अक्षरब्रह्म तेनेविषे मूर्तिमान् एवा ते पुरुषोत्तम भगवान् ने ते भगवानना जे भक्त ते संघाथे अखंड प्रीति जोडी राखी छे अने ते विना कोइ पदार्थमां प्रीति नथी एवुं अमारे अंखड वर्तेछे अने उपरथीतो अमे अतिशय त्यागनो फुंफवाडो जणावता नथी पण ज्यारे अमे अमारा अंतर साम्मुं जोइने बीजा हरिभक्तना अंतर साम्मुं जोइए छीए त्यारे मोटा मोटा परमहंस तथा मोटी मोटी सांख्ययोगी बाइयो ए सर्वेने कांइके जगतनी कोरनो लोचो जणाय पण अमारा अंतरनेविषेतो क्यारेय स्वप्नमांपण जगतनी कोरनो घाट थतो नथी अने भगवान् ने भगवानना भक्तनी भक्तिमांथी अमने पाडवाने अर्थे कोइ समर्थ नथी एम जणायछे अने जे दिवस भगवाननी प्राप्ति नहोति थइ ते दिवसपण

भगवाननी शक्ति जे काळ तेपण आ जीवनो नाश करी शक्यो नथी अने कर्मपण नाश करी शक्यां नथी अने मायापण पोतानेविषे लीन करी शकी नथी अने हवेतो भगवान् मळ्या छे माटे काळ कर्म मायानो शो भार छे? एम जाणीने एवी हिमत बांधीछे जे 'हवे तो भगवान् ने भगवानना भक्त विना कोइनेविषे प्रीति राखवी नथी' अने जे अमारी सोबत राखशे तेना हृदयमांपण कोइ जातनो लोचो रहेवा देवो नथी शामाटे जे जेने मारा जेवो अंतरनो दृढाव होय ते साथेज अमारे बनेछे अने जेना हृदयमां जगतना सुखनी वासना होय ते संघाथेतो अमे हेत करीए तोपण थाय नहि माटे जे निर्वासनिक भगवानना भक्त होय तेज अमने वहालाछे ए अमारा अंतरनुं रहस्य छे ते कह्युं. एवी रीते श्रीजिमहाराजे पोताना भक्तजननी शिक्षाने अर्थे वार्ता करी। इति वचनामृतम् ॥ ५० ॥ १८३ ॥

संवत् १८८० ना चैत्र वदी ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां दक्षिणादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.,

पछी श्रीजिमहाराजे परमहंसने प्रश्न पुछ्यो जे "कोइक समामांतो जीव सुषुप्तिमां जायछे त्यारे अतिशय सुख थायछे अने कोइक समामांतो सुषुप्तिमां जायछे तोपण उद्वेग मटतो नथी तेनुं शुं कारण छे?" ए प्रश्न छे. पछी मोटा मोटा संत हता तेमणे ए प्रश्ननुं समाधान करवा मांड्युं पण यथार्थ समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एतो रजोगुणनुं बळ वृद्धि पामी जायछे ते सुषुप्तिमांपण तमोगुण भेळो रजोगुणनो विक्षेप रहेछे माटे सुषुप्तिमांपण असुख

रहेछे माटे गुणनो संग ज्यांसुधी रहे त्यांसुधी कोइ जीव सुखीयो रहे नहि अने ज्यारे आत्मसत्तारूपे रहे त्यारेज सुखी रहेछे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "आत्मसत्तारूपे रहे तेनां शां लक्षण छे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, शिव ब्रह्मा जेवा कोइ समर्थ कहेवाय नहि एतो नारद जेवाना पण गुरु छे अने ए जेवा ब्रह्मस्वरूपे वर्तेछे तेवुंतो बीजाने वर्तवुं कठण छे तोपण देश, काळ, क्रिया, संग, मंत्र, शास्त्र, दीक्षा अने ध्यान ए आठ जो भुंडा थया तो तेने योगे करीने ए शिव, ब्रह्मा जेवानेपण अंतरमां अतिशय दुःख थयुं माटे गमे तेवो निर्गुण होय ने आत्मसत्तारूपे रहेतो होय ने जो तेने भुंडा देश काळादिकनो योग थाय तो तेने जरुर अंतरमां दुःख थाय माटे मोटा पुरुषनी बांधेल जे मर्यादा तेने लोपीने कोइ सुखी थतो नथी माटे जेटला त्यागी छे तेनेतो त्यागीना धर्म प्रमाणे वर्तवुं अने जेटला गृहस्थ हरिभक्त छे तेमने गृहस्थना धर्म प्रमाणे वर्तवुं अने जेटली बाइयो हरिभक्त छे तेने बाइयोना धर्म प्रमाणे वर्तवुं अने जो तेथकी ओछुं वर्ते तोपण सुख न थाय अने जो तेथकी अधिक वर्ते तोपण सुख न थाय; शामाटे जे परमेश्वरना कहेल जे धर्म ते प्रमाणेज ग्रंथमां लख्युं होय तेमां कोइ रीते बाध आवे एवुं न होय ने सुखे पळे एवुं होय ने तेथी ओछुं अधिकुं करवा जाय ते करनारो जरुर दुःखी थाय माटे सत्पुरुषनी आज्ञा प्रमाणे जे रहेछे तेज रुडा देश काळादिकनेविषे रह्यो छे अने जे सत्पुरुषनी आज्ञाथी बहार पड्यो तेज एने भुंडा देश काळादिकनो योग थयोछे माटे सत्पुरुषनी आज्ञानेविषे वर्तेछे तेज आत्मसत्तारूपे वर्तेछे । इति वचनामृतम् ॥ ५१ ॥ १८४ ॥

संवत् १८८० ना चैत्र वदी ११ एकादशीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए असवार थइने श्रीलक्ष्मीवाडीए पधार्या हता ने त्यां वेदिका उपर विराजमान थया हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठनेविषे पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पाघनेविषे फुलनो तोरो विराजमान हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने पोतानी आगळ मुनिमंडळ झांझ, मृदंग लइने कीर्तन गावता हता, ते ज्यारे कीर्तन गाइ रह्या त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो हवे वार्ता करीए ते सांभळो जे, आ संसारनेविषे गृहस्थाश्रमी ने त्यागी ए बेना मार्ग जुदा जुदा छे, ते जे गृहस्थने शोभा होय ते त्यागीने दूषणरूप होय अने जे त्यागीने शोभा होय ते गृहस्थने दूषणरूप होय, तेने बुद्धिमान् होय ते जाणे पण बीजो जाणी शके नहि, माटे तेनी विक्ति कहीए छीए जे, जे गृहस्थाश्रमी छे तेने धन, दोलत, हाथी, घोडा, गाय, भेंस, मेडी, हवेली, स्त्री, छोकरां, भारे भारे वस्त्र, आभूषण ए सर्वे पदार्थ शोभारूप छे अने एज जे सर्वे पदार्थ ते जे त्यागी होय तेने दोषरूप छे अने त्यागी छे तेने वनमां रहेवुं, वस्त्र विना उघाडुं एक कौपीनभर रहेवुं, माथामां टोपी घालवी, डाढी मुंछ मुंडावी नंखाववी, भगवां वस्त्र राखवां अने कोइ गाळो दे ने कोइ धुळ नांखे ते अपमानने सहन करवुं एज त्यागीने परम शोभारूप छे अने ए त्यागीनी जे शोभा तेज गृहस्थने परम दोषरूप छे, माटे आ संसारमांथी जे निसर्यो ने त्यागी थयो तेनेतो एम विचारवुं जे 'हुं कया आश्रममां रह्योछुं' एम बुद्धिमान् होय तेने विचार करवो पण मूर्खनी पेठे विचार्या विना कोइ

चाले चडी जवुं नहि. अने जे समजु होय तेने कोइक वढीने कहे त्यारे सामो गुण ले अने जे मूर्ख होय तेने कोइक हितनी वात कहे त्यारे ते मुंझाइ जाय अने मुकुंद ब्रह्मचारी तथा रतनजी ए बे मुंझाता नथी तो एमनी साथे अमारे घणुं बनेछे. अने वळी जे श्रद्धाए सहित सेवा चाकरी करे ते अमने गमे अने श्रद्धा विनातो कोइ जम्यानुं लावे तो ते जम्यानुं गमे नहि. अने वस्त्र लावे तो ते वस्त्र ओढवुं गमे नहि अने पूजा लावे तो पूजा गमे नहि. अने श्रद्धाए करीने करे ते अतिशय गमे. अने श्रद्धाए करीने भक्ति करतो होय ने बीजो कोइक तेमां भक्ति करवा आवे ने तेनी उपर ईर्ष्या करे तोते अमने न गमे माटे श्रद्धाए सहित ने ईर्ष्याए रहित जे भक्ति करे ते अमने अतिशय गमेछे । इति वचनामृतम् ॥ ५२ ॥ १८५ ॥

संवत् १८८० ना वैशाख शुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे गादी तकिया बिछावीने विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, शास्त्रने विषे जे मोह कह्योछे ते मोहनुं ए रूप छे जे 'ज्यारे हृदयनेविषे मोह व्यापे त्यारे ए जीवने पोतानो अवगुणतो सुझेज नहि' माटे पोतानो अवगुण न सुझे एज मोहनुं रूप छे. अने वळी जीवमात्रने पोताना डहापणनुं अतिशय मान होय पण एम विचारे नहि जे 'मने मारा जीवनी खबर नथी जे आ शरीरमां जीव रह्योछे ते काळो छे के गोरो छे ? के लांबो छे के टुंकोछे ? एनी कांइ खबर नथी तोपण मोटा पुरुष होय अथवा भगवान् होय तेनेविषे पण

खोव्य काढे अने एम समझे जे 'आ मोटा पुरुष छे अथवा भगवान् छे पण आटलुं ठीक करता नथी' एम खोव्य काढेछे पण ए मूर्खो एम नथी जाणतो जे 'ए भगवानतो अनंतकोटि ब्रह्मांडनेविषे रह्या एवा जे जीव ने ईश्वर तेने जेम हथेळीमां जळनुं टीपुं होय ने तेने देखे तेम देखे छे अने अनंतकोटि ब्रह्मांडना आधार छे ने लक्ष्मीना पति छे अने अनंतकोटि ब्रह्मांडना कर्ता हर्ता छे अने शेष शारदा ने ब्रह्मादिक देव तेपण जेना महिमाना पारने पामता नथी अने निगमपण जेना महिमाने 'नेति नेति' कहेछे माटे एवा जे परमेश्वर तेनां चरित्र नेविषे ने ते भगवाननी जे समझण तेनेविषे जे दोष देखेछे तेने विमुख ने अधर्मी जाणवो अने सर्वे मूर्खनो राजा जाणवो अने भगवान् ने भगवानना भक्त तेनीतो अलौकिक समझण होय तेने देहाभिमानी जीव क्यांथी समझी शके? माटे पोतानी मूर्खाइए करीने भगवान् ने भगवानना जे भक्त तेनो अवगुण लइने विमुख थइ जायछे अने ए भगवानना खरेखरा भक्त जे सत्पुरुष होय तेतो अलौकिक दृष्टिए युक्त वर्त्या करेछे। इति वचनामृतम् ॥ ५२ ॥ १८६ ॥

संवत् १८८० ना ज्येष्ठ शुदि ७ सप्तमीने दिवस त्रीजा पहोरने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए असवार थइने श्रीलक्ष्मीवाडीए पधार्या हता त्यां घणीवार सुधीतो घोडी फेरवी पछी ते वाडीमध्ये वेदी उपर विराजमान थया हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र पहेर्यां हतां अने मस्तक उपर काळा छेडानी धोतली बांधी हती ने कंठनेविषे मोगराना पुष्पनो हार विराजमान हतो ने पाघनेविषे तोरो विराजमान हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे मुनि प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "एकादशस्कंधना वारमा अध्यायमां श्रीकृष्णभगवाने उद्धव प्रत्ये कह्युं छे जे 'अष्टांगयोग, सांख्य, तप, त्याग, तीर्थ, व्रत, यज्ञ अने दानादिक एणे करीने हुं तेवो वश थतो नथी जेवो सत्संगे करीने वश थउंछुं' एम भगवाने कह्युंछे माटे सर्व साधन करतां सत्संग अधिक थयो ते जेने सर्वे साधनथकी सत्संग अधिक जणातो होय ते पुरुषनां केवां लक्षण होय ?" पछी जेने जेवुं समझायुं तेवुं तेणे कह्युं पण यथार्थ उत्तर थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने भगवानना संतनेविषेज आत्मबुद्धि छे, जेम कोइक राजा होय ने ते वांझियो होय ने पछी तेने घरडपणमां दिकरो आवे पछी ते छोकरो तेने गाळो जे मुंछो ताणे तोपण अभाव आवे नहि अने कोइकना छोकराने मारे तथा गाममां अनीति करी आवे तोपण कोइ रीते तेनो अवगुण आवेज नहि शामाटे जे ए राजाने पोताना दिकरानेविषे आत्मबुद्धि थइ गइछे, एवी जेने भगवानना भक्तनेविषे आत्मबुद्धि थायछे तेणेज सर्वसाधनथकी अधिक कल्याणकारी सत्संगने जाण्योछे, ए वार्ता भागवतमां कहीछे जे "यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः।

---

१ "न रोधयति मां योगो न साङ्ख्यं धर्म एव च। न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तं न दक्षिणा॥ व्रतानि यज्ञश्छन्दांसि तीर्थानि नियमा यमाः। यथावरुन्धे सत्सङ्गः सर्वसङ्गापहो हि माम्॥" आ श्लोकनो अर्थ छे।

२ अर्थः—जे पुरुषने वात पित्त अने श्लेष्मरूप त्रण धातुमय शरीरमां आत्मबुद्धि छे अने स्त्री पुत्रादिकमां आत्मीयबुद्धि छे अने भूमिना विकारभूत प्रतिमादिकमां पूजनीय देवताबुद्धि छे अने जळमां तीर्थबुद्धि छे ते पुरुषने जो आत्मबुद्ध्यादिक बुद्धियो भगवानना एकांतिक ज्ञानी भक्तमां न होय तो तेने पशुओमांपण कनिष्ठ खर जाणवो।

यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः ॥" ए श्लोकनेविषे ए वार्ता यथार्थ कहीछे। इति वचनामृतम् ॥ ५४ ॥ १८७ ॥

संवत् १८८० ना ज्येष्ठ शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर नवानगरनुं सोनेरी कोरे युक्त श्वेत मोळीयुं बांध्युं हतुं अने श्वेत पछेडी ओढी हती अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने श्रीजिमहाराजना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने ते सभानेविषे मुनि झांझ मृदंग लइने कीर्तन गावता हता.

पछी ते मुनि कीर्तनभक्ति करी रह्या त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेनुं आज जेवुं अंग होय तेवुं सत्संग थया मोरेपण कांइक होय खरुं; ते माटे आजतो सर्वे जेनुं जेवुं अंग होय ते तेवुं कहो ? तेमां प्रथमतो अमे अमारुं जेवुं अंग छे तेवी वार्ता कहीए छीए ते सांभळो जे, ज्यारे अमारे बाळ अवस्था हती त्यारेपण देवमंदिर होय त्यां दर्शने जवुं, कथा वार्ता सांभळवी, साधुनो समागम करवो, तीर्थ करवा जवुं एवी वार्ता गमती अने ज्यारे घर मुकीने निसर्या त्यारेतो वस्त्र राखवुंपण गमतुं नहि अने वनमांज रहेवुं गमतुं अने बीकतो लेशमात्र लागतीज नहि अने वननेविषे मोटा मोटा सर्प सिंह हाथी इत्यादिक अनंत जनावर दीठामां आव्यां पण कोइ प्रकारे हैयामां मरवानीतो बीकज लागती नहि एवी रीते महावननेविषे सदा निर्भय रहेता. पछी तीर्थनेविषे फरता फरता श्रीरामानंदस्वामी पासे आव्या अने पछी श्रीरामानंदस्वामी ज्यारे अंतर्ध्यान थया ते केडे सत्संगनुं रुडुं थवाने अर्थे कांइक बीक राखवा मांडी पण अंतरमां अखंड विचार एवो रहेछे, जेम मनु-

प्यने मुवा टाणे पथारी उपर सुवार्यो होय त्यारे ते मनुष्यमांथी सहुने पोताना स्वार्थनी वासना टळी जायछे अने ते मरनारानेपण संसारथकी मन उदास थइ जायछे तेमनुं तेम अमारे पोतानी कोरनुं अने बीजानी कोरनुं अंत अवस्था जेवुं सदा वर्ते छे अने जेटलुं मायिक पदार्थमात्र छे ते सर्वे नाशवंत ने तुच्छ सरखुं जणाया करेछे पण एम व्यक्ति नथी जणाती जे 'आ सारुं पदार्थ छे ने आ भुंडुं पदार्थ छे' जेटलां मायिक पदार्थमात्र छे तेतो सर्वे एक सरखां जणायछे जेम काखना मुवाळा छे तेमां सारो कयो ने नरसो कयो ? तेतो सारो नरसो सहु एक पाडमां छे तेम मायिक पदार्थपण सर्वे सरखां छे. अने कांइक सारुं नरसुं जे कहीए छीए तेतो भगवानना भक्तने सारुं लगाडवाने अर्थे कहीए छीए जे आ सारुं भोजन छे, आ सारुं वस्त्र छे, आ सारुं घरेणुं छे, आ सारुं घर छे, आ सारुं घोडुं छे, आ सारां पुष्प छे, ते भक्तने सारुं लागे ते सारुं कहीए छीए. अने अमारी सर्वे क्रिया छे ते भगवानना भक्तने अर्थे छे पण पोताना सुखने अर्थे एकेय क्रिया नथी. अने भगवानना जे एकांतिक भक्त होय तेनुं जे मन ते भगवानना स्वरूपनुंज चिंतवन करे अने वाणी ते भगवानना यशनेज गाय अने हाथ ते भगवान् के भगवानना भक्तनी सेवा-परिचर्यानेज करे अने कान ते अखंड भगवानना यशनेज सांभळे एम भगवाननी भक्ति जाणीने जे जे क्रिया करीए छीए ते थायछे पण ए भगवाननी भक्ति विनातो अमे सर्व पदार्थमांथी उदासी छीए, जेम कोइक मोटो राजा होय ने तेने एकज दिकरो होय अने ते राजा साठ्य सित्तेर वर्षनो थाय ने पछी तेनो दिकरो मरी जाय त्यारे ते राजानुं मन सर्व पदार्थमांथी उदास थइ जाय, तेम अमारेपण खातां पीतां घोडे चढतां राजी कुराजीपणामां सर्वे काळे मन उदासीज रहेछे अने अं-

तरमां एम विचार रहेछे जे 'आपणतो देहथकी पृथक् आत्मा छीए पण देह जेवा नथी' अने वळी अंतरमां एम विचार रह्या करेछे जे आत्माने-विषे रखे रजोगुण तमोगुण आदिक कोइक मायानो भाग भळी जाय नहि तेने घडीए घडीए तपासता रहीए छीए, जेम साडासोळवलुं कंचन होय ने तेने सोनीनी पेढीए लइ जाय अने जो धणीनी लगारेक नजर चुके तो सोनी सोनुं काढी लइने तेमां रुपुं मेळवी दे, तेम आ हृदयरूपीतो सोनीनी पेढी छे अने तेमां मायारूपी सोनी छे ते पोते बेठो थको संकल्परूपी जे हथोडो तेना अखंड टचटच टचका मारतो रहेछे अने जेम सोनीनां छोकरां स्त्री होय ते पारसी करीने तेने हाथ आवे तो कांइक सोनुं चोरी जाय तेम इंद्रियो अंतःकरण ए सर्वे मायारूपेज सोनी तेनां छोकरां स्त्री छे ते कंचनरूप जे चैतन्य तेनेविषे त्रण गुण तथा पंच विषयमां आसक्ति तथा देहाभिमान तथा काम क्रोध लोभा-दिक ए रूप जे रुपुं तेने भेळवीने ज्ञान वैराग्यादिक गुणरूप जे सोनुं तेने काढी लेछे. अने जे सोनामांथी सोनुं काढीने रुपुं भेळवे तो ते सोनुं बारवलुं थइ जायछे अने पछी ते सोनाने तावी तावीने पाछुं सोळवलुं करेतो थायछे, तेम आ जीवनेविषे रज तम आदिक जे रुपुं भळ्युंछे तेने गाळीने काढी नाखवुं ने पछी कंचनरूप जे एक आत्मा तेज रहे पण बीजो मायिक भेग कांइ रहे नहि' एवी रीतना विचारमां अमे रात दिवस मंड्या छीए ए अमे अमारुं अंग छे ते कह्युं, हवे एवी रीते जेने जे अंग होय ते कहो ? पछी संतमंडळे एम कह्युं जे 'हे महाराज ! तमारे-विषे तो मायिक गुणनो भेग होयज नहि तमेतो कैवल्य मूर्ति छो पण एजे सर्वे तमे वात करी तेतो अमारा अंगनीज छे अने तमे कह्यो जे विचार ते अमारे सर्वेने राख्यो जोइए' पछी श्रीजिमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने पोताना उतारानेविषे पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ ५५ ॥१८८॥

संवत् १८८१ ना आषाढ शुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकीया बीछवावीने विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने साधु दुकड सरोदा लइने कीर्तन बोलता हता ते कीर्तनभक्ति थइ रह्या पछी श्रीजिमहाराज एम बोल्या जे, आ कीर्तन सांभळ्यामांथीतो अमारो आत्मा विचारमां जतो रह्यो पछी तेमां एम जणायुं जे 'भगवाननेविषे जे अतिशय प्रीति ए घणी मोटी वात छे' पछीतो गोपाळानंदस्वामी आदिक जे भगवाननेविषे प्रीतिवाळा हरिभक्त ते सर्वे सांभरी आव्या अने ए सर्वेना अंतःकरण ने ए सर्वेना जीव ने एमनी जे भगवाननेविषे प्रीति ते सर्वे जोयामां आव्यां, पछी अमे अमारा आत्माने पण तपासी जोयो त्यारे अमारे जेवी भगवाननेविषे प्रीति जणाणी तेवी बीजानी प्रीति जणाणी नहि; शामाटे जे कांइक भुंडा देश काळादिकनो ज्यारे योग थायछे त्यारे ए सर्वे मोटा छे तोपण कांइक एमनी बुद्धिनेविषे फेर पडी जायछे त्यारे एम जणाय जे 'अंते पायो काचो देखायछे' ते सारी पेठे जो कोइक भुंडा देश काळादिकनो योग थाय तो भगवानमां प्रीति छे तेनुं कांइ ठेकाणुं रहे नहि माटे ए सर्वेने जोतां अमने अमारी कोरनुं ठीक भासेछे जे 'गमे तेवा भुंडा देश काळादिकनो योग थाय पण कोइ रीते अमारुं अंतःकरण फरे नहि' अने भगवाननेविषे प्रीतितो तेनीज साची जे 'जेने भगवान् विना बीजा कोइ पदार्थनेविषे प्रीतिज न थाय' अने सर्वे सद्ग्रंथनुं पण एज रहस्य छे

जे [1]भगवान् छे एज परमसुखदायक छे ने परमसार वस्तु छे अने ते प्रभु विना जेजे बीजा पदार्थ छे ते अतिशय तुच्छ छे ने अति असार छे अने जेने भगवान् जेवी बीजा पदार्थमांपण प्रीति होय तेनोतो घणोज पायो काचो छे, जेम कसुंबल वस्त्र होय ते घणुं सारुं जणातुं होय पण ज्यारे ते उपर पाणी पडे ने पछी तेने तडकामां सुकावीए त्यारे सुधुं नकारुं थइ जाय ने धोळा वस्त्र जेवुंपण न रहे, तेम जेने पंच विषयमां प्रीति होय-तेने ज्यारे कुसंगनो योग थाय त्यारे कांइ ठेकाणुं रहे नहि माटे जे भगवाननो भक्त होय तेनेतो भगवानने राजी कर्यासारु पंच विषयनो अतिशय त्याग कर्यो जोइये पण भगवाननेविषे जे प्रीति तेमां विघ्न करे एवुं कोइ पदार्थ वहालु राखवुं नहि । इति वचनामृतम् ॥ ५६ ॥ १८९ ॥

संवत् १८८१ ना आषाढ शुदि ६ छठ्यने दिवस संध्या आरतीने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर श्वेत पाघ पुष्पने तोरे युक्त विराजमान हती अने श्वेत चादर ओढी हती ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने श्रीजिमहाराजना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने मशालनो प्रकाश थइ रह्यो हतो अने मुनिमंडळ दुकड ने सरोदा लइने भगवानना कीर्तननुं गान करता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे सांभळो एक वार्ता करीए जे ज्यारे तमे कीर्तन गाता हता त्यारे अमे कीर्तन सांभळतां जेम विचार कर्योछे ते विचार कहीए छीए जे, भगवानमां प्रीति करवी ते एक

१ 'भगवानमाज सर्वथी अधिक प्रीति सर्व प्रकारे करवी' केमजे ।

सत्तारूपे रहीनेज करवी ने ते सत्तारूप आत्मा केवो छे तो जेनेविषे माया ने मायानां कार्य जे त्रण गुण ने देह इंद्रियो अंतःकरण तेनुं कोइ आवरण नथी अने कांइक जे आत्मानेविषे आवरण जेवुं जणायछे ते अज्ञाने करीने जणायछे पण जेणे ज्ञान वैराग्ये करीने एनो सर्व प्रकारे निषेध करी नाख्यो छे तेनेतो ए आत्मानेविषे कोइ जातनुं आवरण नथी. अने ए आत्मारूपे जे वर्तवुं ते केवळ ब्रह्म थइने मस्त थवुं तेने अर्थे नथी एतो पोताने आत्मारूपे रहेवुं तेनुं ए प्रयोजन छे जे 'हुं आत्मा छुं ते मारेविषे कोइ जातनुं मायानुं आवरण नथी तो आत्माथकी पर जे परमात्मा नारायण वासुदेव तेनेविषेतो मायानो लेशपण केम होय ?' एवी रीते भगवानमां कोइ रीतनो दोष न आवे तेसारु आत्मनिष्ठा दृढ करीने राखवी. अने ए आत्माना प्रकाशनेविषे विचारने राखीने सत्तारूपमां जे पेसवा आवे तेनो नाश करी नाखवो, जेम दिवाना प्रकाशमां गरोळी आवीने जेजे जंतु आवे तेने नाश करेछे तेम आत्मानो जे प्रकाश तेमां रह्यो जे विचार ते आत्मा विना बीजा पदार्थनो नाश करी नाखेछे. अने वळी जेने परमेश्वरनेविषे प्रीति होय तेनेतो परमेश्वर विना बीजा कोइ पदार्थमां प्रीति न होय अने परमेश्वर विना बीजुं जेजे पदार्थ अधिक जणाय तेनो जे अतिशय त्याग करे ते त्याग खरो छे अने ते पदार्थ नानुं होय अथवा मोटुं होय पण तेनो जे त्याग करवो तेनुंज नाम त्याग कहेवाय अने जे पदार्थ भगवानना भजनमां आडुं आवतुं होय तेनेतो न तजी शके ने बीजो उपरथीतो घणो त्याग करे पण तेनो ते त्याग वृथा छे अने एम कांइ जाणवुं नहि जे 'सारुं पदार्थ होय ने तेज भगवानना भजनमां आड्य करे ने नरसुं पदार्थ होय ते न करे' एतो जीवनो एवो स्वभाव छे जे जेम कोइकने गळ्युं भावे कोइ-

कने खारुं भावे कोइकने खाटुं भावे कोइकने कडवुं भावे तेम जीव-
नीतो एवी तुच्छ बुद्धि छे ते अल्प पदार्थ होय तेनेपण भगवान् करतां
अधिक वहालुं करी राखेछे. अने ज्यारे भगवाननी मोट्यप सारुं जोइए
त्यारेतो एवुं कोइ पदार्थ छे नहि जे 'तेनी कोटीमा भागना पासंगमां
पण आवे' एवा भगवानने यथार्थ जाणीने जो हेत कर्युं होय तो मायिक
पदार्थ जे पिंड ब्रह्मांडादिक तेमां क्यांइपण प्रीति रहे नहि मायिक पदार्थ
सर्वे तुच्छ थइ जाय. अने ए भगवाननो ज्यारे यथार्थ महिमा जणायो
त्यारे चित्रकेतु राजाए करोड स्त्रीयोनो त्याग कर्यो अने सर्वे पृथ्वीनुं
चक्रवर्ति राज्य हतुं ते राज्यनोपण त्याग कर्यो ने ते एम समझ्या जे
'ए भगवानना सुख आगळ ए सो लाख स्त्रीयोनुं सुख ते शी गण-
तीमां? अने चक्रवर्ति राज्यनुं सुखपण शी गणतीमां? अने तेथी इंद्रना
लोकनुं ने ब्रह्माना लोकनुं सुखपण शी गणतीमां?' अने एवा जे भग-
वान् ते विना जे बीजा पदार्थनेविषे प्रीति करेछे तेतो अतिशय तुच्छ-
बुद्धिवाळो छे, जेम कुतरुं होय ते सुका हाडकाने एकांते लइ जइने
करडे ने तेमां सुख मानेछे तेम मूर्ख जीव छे ते दुःखनेविषे सुखने
मानीने तुच्छ पदार्थनेविषे प्रीतिने करेछे. अने जे भगवाननो भक्त
कहेवातो होय ने तेने भगवानथकी बीजा पदार्थमां तो हेत वधु होय
तेतो केवळ मीनडीयो भक्त छे अने जे यथार्थ भगवाननो भक्त होय
तेनेतो भगवानथी बीजुं कोइ पदार्थ अधिक होयज नहि अने ज्ञान,
वैराग्य, भक्ति अने धर्म तेणे युक्त एवो जेते भगवाननो भक्त तेतो एम
जाणे जे 'शूरवीर होय ते लडवा समे शत्रु सन्मुख चाले पण बीवे नहि
ते शूरवीर साचो अने शूरवीर होय ने लडाइमां काम न आव्यो अने
गांठे धन होय ने ते खरच्या वावर्यामां काम न आव्युं ते वृथा छे तेम

मने भगवान् मळ्या छे ते जे जीव मारो संग करे तेने आगळ हुं कल्याणनी वात न करुं त्यारे मारुं ज्ञान ते शा काममां आव्युं ?' एम विचारीने उपदेश कर्या निमित्त कांइक थोडी घणी उपाधि रहे तोपण परमेश्वरनी वात कर्यामां कायरपणुं राखे नहि. एम कहीने श्रीजिमहाराजे तुलसीदासजिनां त्रण पद गवराव्यां, ते त्रण पदनां नाम—एकतो 'ज्याकि लगन रामसों नाहिं' तथा बीजुं 'एही कह्यो सुनु वेद चहुं' तथा त्रीजुं 'ज्याकुं प्रिय न राम वैदेही' ए त्रण पद गवरावीने पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे जेवी रीते आ पदमां कह्युंछे तेवी रीते आपणे रहेवुंछे ते करतां करतां जो कांइक अधुरुं रह्युं अने एटलामां जो देह पड्यो तोपण मरीने नरकचोराशीमां जवुं नथी के कोइ भूत प्रेत थवुं नथी सुधो भुंडामां भुंडो देह आवशे तोपण इंद्रना जेवो के ब्रह्माना जेवोतो आवशे पण एथी उतरतो नहि आवे माटे निर्भय रहीने भगवाननुं भजन करवुं, एम कहीने श्रीजिमहाराजने मुकुंदब्रह्मचारी तेडवा आव्या ते भेळे जमवा पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ ५७ ॥ १९० ॥

संवत् १८८१ ना श्रावण शुदि ४ चोथने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर गादी तकीया बिछवावीने विराजमान हता अने श्रीजिमहाराजे सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "जेजे आचार्य थया छे तेना संप्रदायनी पुष्टि घणाक काळसुधी शे उपाये करीने रहेछे?" पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, एकतो संप्रदाय संबन्धी ग्रंथ होय अने बीजो

शास्त्रे कह्यो एवो वर्णाश्रमनो धर्म होय अने श्रीजी पोताना इष्टदेवने-
विषे अतिशय दृढता होय ए त्रणने योगे करीने पोताना संप्रदायनी
पुष्टि रहेछे, पछी श्रीजिमहाराजे ब्रह्मानंदस्वामी तथा नित्यानंदस्वा-
मीनेपण पुछ्युं त्यारे एमणेपण एवीज रीते कह्युं, पछी श्रीजिमहाराज
बोल्या जे ल्यो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए जे संप्रदायनी पुष्टितो
एम थायछे जे, जे संप्रदायना इष्टदेव होय तेनो जे हेतुमाटे पृथ्वी-
नेविषे जन्म थयो होय अने जन्म धरीने तेणे जेजे चरित्र कर्यां होय
अने जेजे आचरण कर्यां होय ते आचरणनेविषे धर्मपण सहजे आवी
जाय अने ते इष्टदेवनो महिमापण आवी जाय माटे पोताना इष्टदेवनां
जे जन्मथी करीने देह मुकवापर्यंत चरित्र तेनुं जे शास्त्र तेणे करीने
संप्रदायनी पुष्टि थायछे, ते शास्त्र संस्कृत होय अथवा भाषा होय
पण तेज ग्रंथ संप्रदायनी पुष्टि करे पण ते विना बीजो ग्रंथ पोताना
संप्रदायनी पुष्टि न करे, जेम रामचंद्रना उपासक होय तेने वाल्मी-
किरामायणे करीनेज पोताना संप्रदायनी पुष्टि थाय अने श्रीकृष्ण-
भगवानना जे उपासक होय तेने दशमस्कंध अने एकादशस्कंध ए बे
जे भागवतना स्कंध तेणे करीनेज पोताना संप्रदायनी पुष्टि थाय पण
रामचंद्रना उपासक तथा श्रीकृष्णना उपासक तेने वेदे करीने पोताना
संप्रदायनी पुष्टि न थाय माटे पोताना संप्रदायनी रीतनुं जे शास्त्र
होय तेज पाछले दहाडे पोताना संप्रदायने पुष्ट करेछे, एम कहीने
श्रीजिमहाराजे मुक्तानंदस्वामीने कह्युं जे, तमेपण पोताना संप्रदाय
संबन्धी ने पोताना इष्टदेव संबन्धी जे वाणी तथा शास्त्र तेज देहप-
र्यंत कर्या करज्यो ने तमारो देह रहे त्यांसुधी तमने एज आज्ञा छे,
पछी ए जे श्रीजिमहाराजनुं वचन तेने मुक्तानंदस्वामीए अति आदर

करीने माथे चडाव्युं अने श्रीजिमहाराजने बे हाथ जोडीने नमस्कार कर्या । इति वचनामृतम् ॥ ५८ ॥ १९१ ॥

संवत् १८८१ ना श्रावण शुदि १२ द्वादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी ओसरीए ढोलिया उपर उगमणे मुखारविंदे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, चार वेद, पुराण, इतिहास ए सर्वेमां एज वार्ता छे जे 'भगवान् ने भगवानना संत एज कल्याणकारी छे' अने भगवानना जे साधु छे तेतो भव ब्रह्मादिक देवथकी पण अधिक छे ते भगवान् के भगवानना संतनी ज्यारे प्राप्ति थइ त्यारे ए जीवने एथी उपरांत बीजुं कोइ कल्याण नथी एज परम कल्याण छे अने भगवानना संतनी सेवातो बहु मोटा पुण्यवाळाने मळेछे पण थोडा पुण्यवाळाने मळती नथी, माटे भगवानना संत साथेतो एवुं हेत राखवुं जेवुं हेत स्त्री उपर छे के पुत्र उपर छे के मावाप ने भाइ उपर छे तेवुं हेत राखवुं तो ए हेते करीने जीव कृतार्थ थइ जायछे. अने पोतानां जे स्त्री पुत्रादिक होय तेतो कुपात्र होय ने कुलक्षणवाळां होय तोपण कोइ रीते तेनो अवगुण ए जीवने आवतो नथी अने जे भगवानना भक्त होय तेतो सर्वे रुडे गुणे करीने युक्त होय पण जो तेणे लगारेक कठण वचन कह्युं होय तो तेनी आंटी जीवे त्यांसुधी मुके नहि एवी जेनी वृत्ति छे तेनेतो जेवुं पोताना संबन्धी उपर हेत छे तेवुं ते भगवानना भक्त उपर कहेवायज नहि त्यारे एनुं कल्याण पण थाय नहि. अने संतनो महिमातो

प्रथम कह्यो एवो मोटो छे ते- संतनी ने भगवाननी प्राप्ति थइछे तोपण कोइकने एम डगमगाट रहेछे जे 'मारुं कल्याण थशे के नहि थाय?' तेनुं शुं कारण छे? तो ए जीवने पूर्व जन्मनेविषे भगवान् के भगवानना संतनी प्राप्ति थइ नथी ने तेमनी सेवापण तेणे करी नथी एनेतो आ जन्ममांज नवो आदर छे ते आगल्या जन्ममां फळशे अने जेने पूर्व जन्ममां भगवाननी के भगवानना भक्तनी प्राप्ति थइ हशे तथा तेमनी सेवा करी हशे तेनेतो आ जन्ममां भगवान् के भगवानना भक्तमांथी हेत मटेज नहिं अने निश्चयमांपण डगमगाट थाय नहि अने काम क्रोध लोभ संबन्धी घाटतो कदाचित् रहे पण भगवाननो निश्चयतो कोइ रीते मटे नहि, ते कोइकने वचने करीने न मटे एमां शुं कहेवुं? एनेतो जो पोतानुं मन डगमगाट करावे,तोपण डगमगाट थाय नहि. अने तेनी दृढतातो जेवी नाथभक्तनी[1] छे के जेवी विष्णुदासनी[2] हती के जेवी हिमराजशाहनी[3] हती के जेवी काशीदासने[4] छे के जेवी भालचंद्र शेठने[5] हती के जेवी दामोदरने[6] छे एवी दृढता होय त्यारे जाणवुं जे आ पूर्व जन्मनो भगवाननो भक्त छे। इति वचनामृतम् ॥ ५९ ॥ १९२ ॥

संवत् १८८१ ना,श्रावण वदी ४ चोथने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी,उगमणी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने श्वेत पाघ मस्तक उपर बांधी हती अने श्वेत पछेडी ओढी हती अने श्वेत-खेस पहेर्यो,हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ वणभागामना वैश्य भक्त। २ डभाणना वैश्य भक्त। ३ सुंदरीयाणाना वणिक् भक्त। ४ बोचासणना वैश्य भक्त। ५ सुरतना वणिक् भक्त। ६ अमदावादना वैश्य भक्त।

पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे प्रश्न उत्तर करो, त्यारे मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे "हे महाराज ! आ संसारनेविषे तो केटलीक जातना विक्षेप आवेछे तेमां केवी रीते भगवाननो भक्त समझे तो अंतरे सुख रहे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तरतो जेम अमने वर्तायछे तेम कहीए जे, पोताना देहथी नांखो जे पोतानो आत्मा तेनुं जे निरंतर अनुसंधान तथा मायिक एवां जे पदार्थमात्र तेना नाशवंतपणानुं जे अनुसंधान तथा भगवानना माहात्म्यज्ञाननुं जे अनुसंधान ए त्रणे करीने कोइ विक्षेप आडो आवतो नथी अने ज्यारे कोइक जातना विक्षेपनो योग आवे त्यारे उपरथीतो चित्तनो धर्म छे ते विक्षेप जेवुं जणाय पण ते विक्षेपनो पोताना चैतन्यमांतो डंस बेसतो नथी, ते केम जणाय जे ज्यारे सुइए छीए त्यारे वहारल्यो जे विक्षेप ते कोइ दिवस स्वप्नमां देखातोज नथी. अने जे चैतन्यमां विक्षेप पेठो होय तेतो त्रणे अवस्थामां जणायछे माटे स्वप्नमां कोइ रीते विक्षेप जणातो नथी, तेथकी एम जाणीए छीए जे 'चैतन्यमां विक्षेप कोइ रीते वळगतो नथी' अने जे भगवाननो भक्त होय ने तेने कोइक प्रकारना दुःखनो विक्षेप थयो होय एतो सारी पेठे अंतरमां जणायछे पण न जणाय एम नथी अने एतो रघुनाथदास सरखो विमुख होय तेनेतो न जणाय; ते ज्यारे रामानंदस्वामीए देह मुक्यो ने सर्वे सत्संगी रोवा लाग्या त्यारेपण रघुनाथदासनेतो जराय शोक थयो नहि अने हसतो जाय ने बीजाने आगळ वात करतो जाय माटे भगवानना भक्तने दुःख आवी पडे त्यारेतो जे चांडाळ ने विमुख होय तेने दुःख न थाय पण जे भगवाननो भक्त होय तेतो हरिभक्तने दुःखे करीने जरुर दुःखियो थाय. अने जे भगवाननो भक्त होय ने तेने कोइक मारी नांखतो होय अथवा तेने कोइक

दुःख देतो होय ने ते भगवानना भक्त आडो जइने जो मरे के घायल थाय तो शास्त्रमां एम कह्युंछे जे 'तेनां ब्रह्महत्यादिक जे पंच महापाप ते सर्वे मटी जायछे' एवो भगवानना भक्तनो पक्ष राख्यानो प्रताप छे अने जेने भगवानना भक्तनुं वचन बाणनी पेटे हइयामां वसमुं लागे अने तेनी वैरभावे आंटी पडी जाय ते जीवे त्यांसुधी टळे नहि एवो जे चांडाळ जेवो जीव होय ते धर्मे युक्त होय त्यागे युक्त होय तपे युक्त होय ते सर्वे वृथा छे अने बीजांपण कोटिक साधन करे पण तेना जीवनुं कोइ काळे कल्याण थाय नहि. अने आ संसारनेविषे जेम कोइक स्त्री होय ते पोताना पति उपर ने बीजा पुरुष उपर सरखुं हेत राखे ते वेश्या सरखी भुंडी कहेवाय तेम आ संसारनेविषे जे एवो पुरुष होय जे 'आपणेतो बधाय साधु सरखा छे केने सारो नरसो कहीए' ? तो ते सत्संगी कहेवातो होय तोपण तेने विमुख जाणवो अने जे पुरुष एम जाणे जे 'आपण कांइक अवळुं सवळुं बोलीए तो आपणो माणस अवगुण लेशे' एवी रीते पोतानी सारप्य राख्या सारु भगवाननुं के भगवानना भक्तनुं कोइक घसातुं बोले ने तेने सांभळी रहे तो ते सत्संगी कहेवातो होय तोपण तेने विमुख जाणवो. अने जेवां पोतानां सगां वहालां होय अथवा मावाप होय तेनो पक्ष रहेछे तेवो भगवानना भक्तनो दृढ पक्ष राखवो अने भगवानना भक्त साथे कोइ रीतनो विक्षेप थाय तो जळमां लीटानी पेठे फेर एक थइ जाय पण आंटी राखे नहि तेज भगवाननो यथार्थ भक्त कहेवाय. एटली वार्ता करीने पछी श्रीजिमहाराज एम बोल्या जे, हुंतो दत्तात्रेय, जडभरत, नारद अने शुकजी ते सरखो दयाळो छुं अने पूर्वदेशमां एक समे नागडा वेरागीनी जमात मेळो हतो ते मने सर्वे वेरागीए कह्युं जे 'तांदळजानी लीली भाजी तोडो' त्यारे में कह्युं जे 'एमांतो जीव छे

ते अमे नहि तोडीए' पछी एक जणे तरवार उघाडी करीने डारो कर्यो तोपण अमे लीली भाजी न तोडी एवो अमारो दयाळो स-भाव छे तोपण जो कोइक भगवानना भक्तने क्रूरदृष्टिए करीने जोतो होय ने ते जो पोतानो सगो वहालो होय तोयपण जाणीए 'जे तेनी आंख्य फोडी नाखीए अने हाथे करीने जो भगवानना भक्तने दुःखवे तो ते हाथने कापी नाखीए' एवो तेनो अभाव आवेछे पण त्यां दया नथी रहेती अने एवो जेने भगवाननो ने भगवानना भक्तनो पक्ष होय तेनेज भगवाननो पुरो भक्त कहेवाय । इति वचनामृतम् ॥ ६० ॥ १९२ ॥

संवत् १८८१ ना श्रावण वदी ७ सातमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी उगमणी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर श्वेत शेलुं सोनेरी छेडानुं नांध्युं हतुं अने एक बीजुं श्वेत शेलुं ओढ्यु हतुं अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेमां त्रण वानां होय ते पाको सत्संगी कहेवाय ते त्रण वानां ते कयां तो एकतो पोताने इष्टदेवे जे नियम धराव्यां होय ते पोताना शिरसाटे दृढ करीने पाळे पण ए धर्मनो कोइ दिवस त्याग न करे. अने बीजो भगवानना स्वरूपनो जे निश्चय ते अतिशय दृढपणे होय पण तेमां कोइ संशय नाखे तो संशय पडे नहि ने पोतानुं मन संशय नाखे तोयपण संशय पडे नहि एवो भगवाननो अडग निश्चय होय. अने त्रीजो पोताना इष्टदेवने भजता

होय एवा जे सत्संगी वैष्णव तेनो पक्ष राखवो, ते जेम मावाप दिकरा दिकरी तेनो पक्ष राखेछे अने जेम पुत्र होय ते पोताना पितानो पक्ष राखेछे अने जेम स्त्री होय ते पोताना पतिनो पक्ष राखेछे, तेम भगवानना भक्तनो पक्ष राखवो. ए त्रण वातो जेमां परिपूर्ण होय ते पाको सत्संगी कहेवाय. अने हरिभक्तनी सभामां मोढा आगळ आवीने वेसतो होय त्यारे बीजाने एम जणाय जे 'ए मोटेरो सत्संगी छे' पण मोटेरानीतो एम परीक्षा छे जे गृहस्थ होय तेतो पोतानुं जे सर्वस्व ते भगवान् ने भगवानना भक्तने अर्थे करी राखे अने सत्संगने अर्थे माथुं देवुं होय तो दे अने जे घडीए पोताना इष्टदेव आज्ञा करे जे 'तुं परमहंस था' तो ते तत्काळ परमहंस थाय एवां जेनां लक्षण होय ते हरिभक्तनी सभाने आगळ वेसे अथवा वांसे वेसे पण तेनेज सर्वे हरिभक्तमां मोटेरो जाणवो. अने जे त्यागी होय ते ज्यारे देश परदेशमां जाय ने त्यां कनक कामिनीनो योग थाय तोयपण तेमां फेर पडे नहि अने पोताना जेजे नियम होय ते सर्वे दृढ करीने राखे ते सर्वे त्यागीमां मोटेरो कहेवाय.

अने वळी जे कोइक संसारमां रजोगुणी मोटो मनुष्य कहेवातो होय ने ते ज्यारे सभामां आवे त्यारे तेने आदर करीने सर्व सभाने मोढा आगळ वेसार्यो जोइए अने ए व्यवहार छे ते ज्ञानी होय त्यागी होय तेनेपण राख्यो जोइए अने जो न राखे तो एमांथी भुंडुं थायछे, जेम राजा परीक्षित् ऋषिना आश्रममां गया त्यारे ऋषि समाधिमां हता ते राजानुं सन्मान थयुं नहि पछी ते राजाने रीस चडी ने मरेलु सर्प हतो ते ऋषिना गळामां नाख्यो पछी ते ऋषिना पुत्रे शाप दीधो तेणे करीने ते राजानो सात दिवसमां मृत्यु थयो. अने ज्यारे ब्रह्मानी सभामां दक्ष-

प्रजापति आव्या त्यारे शिवजी उभा न थया अने वचने करीनेपण दक्षनुं सन्मान न थयुं पछी दक्षने रीश चडी ते शिवनो यज्ञमांथी भाग काढी नाख्यो पछी नंदीश्वर ने भृगुऋषि तेने सामसामा शाप थया पछी ते पापमां सती दक्षना यज्ञमां बळी मुवां अने वीरभद्रे दक्षनुं माथुं कापीने अग्निमां होम्युं अने दक्षनुं मुख बकरानुं थयुं, माटे गृहस्थ तथा त्यागी ए सौने ए रीत राखवी जे 'संसार व्यवहारे जे मोटो माणस कहेवातो होय तेनुं सभामां कोइ रीते अपमान करवुं नहि' अने जो अपमान करे तो एमांथी जरुर दुःख थाय अने भजन स्मरणमांपण विक्षेप थाय माटे आ वार्ता सत्संगी गृहस्थ सर्वे तथा त्यागी सर्वे दृढ करीने राखज्यो । इति वचनामृतम् ॥ ६१ ॥ १९४ ॥

संवत् १८८१ ना मागशर शुदि २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने श्वेत पाघ मस्तक उपर बांधी हती तथा श्वेत चोफाळ ओढ्यो हतो तथा श्वेत खेस पहेर्या हतो अने श्रीजिमहाराजना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे पोताना भत्रिजा जे अयोध्याप्रसादजी ने रघुवीरजी तेमने बोलावीने कह्युं जे तमे अमने प्रश्न पुछो? पछी प्रथम अयोध्याप्रसादजीए प्रश्न पुछ्यो जे "आ संसारनेविषे एवो पुरुष होय जे आठो पहोरतो संसारनी विटंबनामां रह्यो होय अने गमे एवुं योग्य अयोग्य कर्मपण थइ जतुं होय अने ते एक घडी के बे घडी भगवाननुं भजन करतो होय त्यारे ते भजने करीने तेणे दिवस बधामां पाप कर्युं ते बळे के न बळे?" ए प्रश्न छे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,

सारो दिवस प्रवृत्तिमार्गमां रहिने गमे तेवी क्रिया करी होय ने भगवाननुं भजन करवा बेसे ते समे ए भजनना करनारानां इंद्रियो अंतःकरण अने जीव ए सर्वे एकाग्र थइने जो भजनमां जोडाय ते एवी रीते एक घडी के अर्धी घडी पण जो भगवानना भजनमां जोडाय तो समग्र पाप बळीने भस्म थइ जायछे अने इंद्रियो अंतःकरण ने जीव ते एकाग्र थइने जो भगवानना भजनमां न जोडाय तो तेना भजनथकीतो घडी के अर्ध घडीमां पाप न बळे अने एनुं जे कल्याण तेतो भगवानने प्रतापे करीने थाय एनो एज उत्तर छे.

पछी रघुवीरजीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! आ जीवनो मोक्ष ते केम करे त्यारे थायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने पोताना कल्याणनी इच्छा होय तेने पोतानुं देह, धन, धाम, कुटुंबपरिवार ए सर्वेने भगवाननी सेवामां जोडी देवां अने भगवाननी सेवामां जे पदार्थ काम न आवे तो तेनो त्याग करी देवो एवी रीते जे भगवानपरायण वर्ते ते गृहस्थाश्रमी होय तोयपण मरे त्यारे भगवानना धाममां नारद सनकादिकनी पंक्तिमां भळे अने परम मोक्षने पामे एनो एज उत्तर छे.

एवी रीते श्रीजिमहाराज वार्ता करीने पछी पोतानी इच्छाए करीने बोलता हवा जे, अमे जे दिवसथी विचारीए छीए ते दिवसथी अमारी नजरमां एम आवेछे जे, जीवना कल्याणने अर्थे त्रण अंग छे ते अति सुखदायिछे तेमां एकतो अतिशय आत्मनिष्ठा जे शुकजीनी पेठे आत्मारूप थइने परमेश्वरनुं भजन करवुं अने बीजुं पतिव्रतानुं अंग जे गोपीयोनी पेठे पतिभावे भगवाननुं भजन करवुं अने त्रीजुं दासपणानुं अंग जे हनुमानजी तथा उद्धवजीनी पेठे दासभावे भगवाननुं भजन करवुं ए त्रण अंग विना कोइ रीते करीने जीवनुं कल्याण थतुं नथी अने अमेतो

ए त्रण अंगने दृढ करी राखीए छीए अने ए त्रण अंगमांथी जेने एकेय अंग दृढपणे होय तो ते कृतार्थ थायछे. अने हवे ए त्रण अंग-वाळानां जे लक्षण ते नोखां नोखां करीने कहीए छीए–तेमां आत्म-निष्ठावाळानुं तो ए लक्षण छे जे एक कोरे तो आत्मा छे अने एक को-रेतो देह, इंद्रियो, अंतःकरण, त्रण गुण, पंच विषय, ए आदिक जे मायानुं टोळुं ते छे अने ए बेना मध्यनेविषे जे विचार रहे ते विचार ज्ञानस्वरूपी छे ते विचार जेम वायुए रहित स्थळनेविषे दीपकनी शीखा अतिशय स्थिर थइने रहेछे तेम स्थिर थइने रहेछे ने ते विचार देह इंद्रियो ने अंतःकरण एमने आत्मा संघाथे एक थवा देतो नथी अने ते विचार पण आत्मा संघाथे एक थतो नथी अने ज्यारे ते विचारने जीव पामेछे त्यारे ते जीवनी वृत्ति काशीसुधी लांबी होय ते वरताल जेटलामां आवेछे अने पछी ते विचार ज्यारे दृढ थाय त्यारे वरतालथकी आ गढडा जेटलामां आवेछे ने पछी आ गढडा जेटले लांबी वृत्ति होय ते संकेलाइने पोताना देह जेटलामां रहेछे अने पछी देहमांथी वृत्ति टुंकी थइने इंद्रियोना गोलकमांज रहेछे ने पछी इंद्रियो-ना गोलकथकी इंद्रियोनी वृत्ति छे ते अंतःकरण सन्मुख थइ जायछे ने पछी इंद्रियोनी ने अंतःकरणनी जे वृत्ति छे ते आत्मानेविषे लीन थइ जायछे त्यारे ए जीवना वासना लिंग देहनो नाश थयो कहेवायछे अने ए विचार छे ते ज्यारे आ जीव संघाथे मळेछे त्यारे ते जीवना हृदयनेविषे प्रकाश थायछे अने पोताना आत्मानुं ब्रह्मरूपे दर्शन था-यछे ने ते ब्रह्मनेविषे परब्रह्म जे नारायण तेनुंपण दर्शन थायछे अने ते दर्शनना करनाराने एम अनुभव थायछे जे 'हुं आत्मा छुं अने मा-रेविषे जे परमात्मा छे ते अखंड रह्या छे' अने एवी रीतनी अखंड

स्थिति रहे ए आत्मनिष्ठानी अति उत्तम दशा छे, अने पतिव्रतानुं जे अंग छे तेतो व्रजनी गोपीयोना जेवुं जोइए, जेम गोपीयोए जे दिवसथकी श्रीकृष्णभगवानना चरणारविंदनो स्पर्श कर्यो ते दिवसथकी जेटलां संसार संबन्धि जे सुख ते सर्वे झेर जेवां थइ गयां, तेम जेने पतिव्रताना अंगनी भक्ति होय ते गमेतो इंद्र जेवो रूपाळो पुरुष होय तथा देवता जेवो होय तथा कोइक राजा होय ने तेने ज्यारे देखे त्यारे जेम सडेल कुतराने देखे अथवा विष्टाने देखे त्यारे अतिशय ग्लानि पामीने दृष्टि पाछी खेंची लेछे तेम दृष्टि पाछी खेंचाइ जाय ते उत्तम पतिव्रतानी रीति छे ते माटे जेनी एक भगवाननेविषेज पतिभावे करीने वृत्ति जोडाणी छे तेनुं बीजा कोइ पुरुषने देखीने मन राजी थायज नहि। अने त्रीजुं जेने दासभावे करीने भक्तिनुं अंग छे तेनेपण पोताना जे इष्टदेव छे तेनुंज दर्शन गमे अने तेनीज वार्ता सांभळवी गमे ने पोताना इष्टदेवनोज स्वभाव गमे अने तेनीज पासे रहेवुं गमे एवो प्रीतिवान् होय तोपण पोताना इष्टदेवनी सेवा सारु ने राजीपा सारु रातदिवस एम इच्छया करे जे 'मने मारा इष्टदेव कांइक आज्ञा करेतो हुं अतिशय हर्षे करीने करुं' पछी पोताना इष्टदेव छे ते आज्ञा करेतो छेटे जइने रहे तोपण राजीथको रहे पण कोइ रीते अंतःकरणमां खेद पामे नहि अने आज्ञानेविषेज परम आनंद माने ए दासत्वभक्तिनी उत्तम दशा छे एवा दासत्वभक्तिवाळा तो आज गोपाळानंदस्वामी छे अने बीजा मुक्तानंदस्वामी छे, 'अने ए त्रणे अंगवाळा जे भगवानना भक्त तेमां उत्तम मध्यम अने कनिष्ठ पक्ष छे अने एथी जे बहार रह्या तेतो केवळ पामर कहेवाय माटे ए त्रणमांथी एक अंग परिपूर्ण थाय ने ते केड्ये देह मुके तेतो ठीक छे अने ए त्रणमांथी एकेय अंग जेने परि-

पक्क न थयुं होय ने तेने जे मरवुं ते ठीक नथी अने तेतो पांच दहाडा वधु जीवे ने पोतानी अणसमझणने टाळीने ने ए त्रण अंगमांथी कोइक एक अंगने दृढ करीने मरे एज ठीक छे. अने वळी आ जीवनोतो एवो स्वभाव देखायछे जे 'ज्यारे गृहस्थाश्रममां होय त्यारे संसारनो त्याग करवो गमे अने ज्यारे त्याग करेछे त्यारे पाछा संसार संबन्धि सुखना घाट थया करे' एवी रीते ए जीवनो अवळो स्वभाव जणायछे माटे जे भगवानना दृढ आश्रित होय तेनेतो एवा अवळा स्वभावनो त्याग करीने ने पोताना मननुं गमतुं सर्वे मुकीने भगवानने भजवा अने भगवान् विना बीजी सर्वे वासनाने टाळीने मरवुं तेज ठीक छे. अने जेने भगवानमां अतिशय प्रीति न होय तेनेतो आत्मनिष्ठाज विचारे करीने दृढ करवी केमजे जे भगवानना भक्त होय तेने कांतो आत्मनिष्ठा दृढ जोइए ने कांतो भगवानने विषे अतिशय दृढ प्रीति जोइए अने ए बे अंगमांथी जेने एके अंगनी अतिशय दृढता न होय तेनेतो जे आ सत्संगना नियम छे तेमां दृढपणे करीने रहेवुं तोज सत्संगी रहेवाय नहितो सत्संग थकी बहार पडी जवाय. अने भगवानने जे भक्त होय तेनेतो जेजे प्रकारनां दुःख आवेछे ते दुःखना देनारा काळ कर्म माया एमांथी कोइ नथी एतो पंडे भगवानज पोताना भक्तनी धीरज जोवाने अर्थे दुःखने प्रेरेछे अने पछी जेम कोइक पुरुष पडदामां रहीने जुवे तेम भक्तनी धीरजने भगवान् भक्तना हृदयमां रहीने जोया करेछे 'पण काळ कर्म मायानो शो भार छे जे भगवानना भक्तने पीडी शके? एतो भगवाननीज इच्छा छे' एम जाणीने भगवाननो भक्त होय तेने मगन रहेवुं.

ए वार्ता सांभळीने मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज!

ए त्रण जे अंग तमे कह्यां ते वात तो अति झीणी छे ने कठण छे ते कोइकनाज समझ्यामां आवे ने कोइकनाज वर्त्यामां आवे पण सर्वेने न आवे अने आ सत्संगमांतो लक्षावधि मनुष्य छे ते सर्वेनेतो आ वार्ता समझवी कठण छे माटे ते केम करे त्यारे तेनुं रुडुं थाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, तेतो ए त्रण अंगवाळा मांहिलो जे हरिभक्त होय तेनो दासानुदास थइने तेनी आज्ञामां रहे तो ते कांइ न समझतो होय तोपण ए छती देहेज भगवाननो पार्षद थइ रह्यो छे ने कृतार्थ थइ रह्यो छे अने आ संसारनेविषे भगवान् ने भगवानना भक्तनोतो महिमा अतिशय मोटो छे ते गमे तेवो पामर ने पतित जीव होय पण भगवान् के भगवानना भक्तने आश्रित थाय तो ते जीव कृतार्थ थइ जायछे एवो भगवान् ने भगवानना भक्तनो महिमा छे माटे जेने भगवानना भक्तनी सेवा प्राप्ति थइ तेनेतो निधडक रहेवुं. अने आ त्रण अंगनी जे अमे वार्ता करीछे ते बहुधातो आ मुक्तानंदस्वामी सारु करीछे अने मुक्तानंदस्वामी उपर अमने घणुं हेत छे ने एमने शरीरे मंदवाड छे ते रखे कोइ वातनी समझणमां खामी रही जाय नहि? एम जाणीने आ वार्ता करीछे, पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे हे महाराज! मेंपण जाण्युं छे जे 'मारा सारुज आ वार्ता करी छे'। इति वचनामृतम् ॥६२॥१९५॥

संवत् १८८१ ना मागशर वदी २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानेविषे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ भजनानंदस्वामी श्रीमद्भागवतनो पाठ करता हता ने परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! द्रष्टा ने दृश्यना मध्यमां जे विचार रहेछे ते द्रष्टाने नें दृश्यने जुदांजुदां राखेछे एमां जीवनुं जाणपणुं कयुं जाणवुं ने इंद्रियो अंतःकरणनुं जाणपणुं कयुं जाणवुं?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे अमनेतो एम जणायछे जे, जेनो जीव अतिशय बळने पाम्यो होय तेनेतो अंतःकरणनी वृत्तियो ते जीवनीज वृत्ति छे अने तेना चार क्रियाए करीने चार विभाग जणायछे अने ते अंतःकरणमां ने इंद्रियोमां जाणपणुं छे ते जीवनुंज छे ते इंद्रियो अंतःकरणने ज्यां घटित होय त्यां चालवा दे ने ज्यां घटित न होय त्यां न चालवा दे अने जेनो जीव अतिशय बळने पाम्यो होय तेनेतो शुंइं समपण आवे नहि अने जेनो जीव निर्बळ होय तेनेतो सांख्यना मतने अनुसरीने एक द्रष्टा एवो जे पोतानो आत्मा ते आत्मापणे रहेवुं पण इंद्रियो अंतःकरण मेळे भळवुं नहि एवी रीते सत्तारूप रहेतां थकां एनो जीव बळने पामेछे. अने एथीपण बळ पामवानो एक अतिशय मोटो उपाय छे जे भगवान् ने भगवानना जे संत तेनेविषे जेने प्रीति होय ने तेनी सेवानेविषे अतिशय श्रद्धा होय ने भगवाननी नवधा भक्तिए युक्त होय तेना जीवनेतो तत्काळ अतिशय बळ आवेछे माटे जीवने बळ पामवाने अर्थे भगवान् ने भगवानना भक्तनी सेवा बरोबर बीजो कोइ उपाय नथी. अने वळी अमे अमारा अंतरनी वार्ता कहीए जे, ज्यारे अमे अगनोतरानी सालमां मांदा थया हता त्यारे कैलास ने वैकुंठ देख्यामां आव्यां ने नंदीश्वरनी असवारी ने गरुडनी असवारीपण अमे करी एम अमारा दीठामां आव्युं पण ते सामर्थिमां अमने कांइ सारुं लाग्युं नहि पछीतो अमे केवळ सत्तारूपे रहेवा मांड्युं त्यारे सर्वे उपाधिनी शांति थइ; पछी तेमांपण अमने एम विचार

थयो जे 'सत्तारूपे रहेवुं तेथीपण भगवान् ने भगवानना भक्त भेळे देह धरीने रहेवुं ए श्रेष्ठ छे' माटे अमने एम बीक लागी जे 'रखे सत्तारूपे रहीए ने पाछो देह न धराय' माटे देह धरीने भगवान् ने भगवानना भक्तनी भेळे रहीए ने तेने अर्थे जे सेवा बनी आवे एज अतिशय श्रेष्ठ साधन छे. अने ज्यारे जीवने अंतसमो आवेछे त्यारे अनंत जातनी आधि ने व्याधि प्रकट थायछे पछी भगवान् के भगवानना संतनुं ज्यारे दर्शन थायछे त्यारे सर्वे दुःखनो नाश थइ जायछे एवो भगवाननो ने भगवानना भक्तनो महिमा मोटो छे. अने भगवानना भक्त छे तेतो केवळ ब्रह्मनीज मूर्तियो छे एनेविषेतो मनुष्यभाव लाववोज नहि अने जेम पोताना देहनां कुटुंबी होयछे ने तेने तेना हेतने अर्थे आपणे वढीने कहीए ने आपणने ते वढीने कहे पण अंतरमां कोइने आंटी पडती नथी तेम भगवानना भक्त संघाथे वर्त्युं जोइए अने जेने भगवान् के भगवानना भक्त संघाथे आंटी पडी जायछे तेतो अमने दीठोपण गमतो नथी ने ते उपरथी रीसपण कोइ दिवस उतरती नथी. अने आ संसारमां पंच महापापना करनारानो कोइ दिवस छुटको थाय पण भगवानना भक्तना द्रोहना करनारानो कोइ दिवस छुटको थतो नथी माटे भगवानना भक्तनी जे सेवा करवी ते बरोबर कोइ पुन्य नथी ने भगवानना भक्तनो द्रोह करवो ते बरोबर कोइ पापपण नथी माटे जेने पोताना जीवने बळवान् करवो होय तेनेतो भगवान् के भगवानना भक्तने मन कर्म वचने शुद्धभावे करीने सेववा। इति वचनामृतम् ॥ ६२ ॥ १९६ ॥

संवत् १८८१ ना पोष शुदि ७ सातमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवा-

सुदेवनारायणना मंदिरनी ओसरीए ढोलीया उपर गादी तकीया नंखावीने उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश-देशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! भगवानना जे अवतार छे ते सर्वे सरखाज छे के तेमां अधिक न्यून भाव छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, अमे व्यासजीना करेला जे सर्वे ग्रंथ ते सांभळ्या ने पछी पूर्वापर विचारीने जोयुं त्यारे तेमांथी अमने एम समझायुं छे जे मत्स्य, कच्छ, वाराह, नृसिंहादिक जे भगवानना अवतार छे ते सर्वे अवतारना अवतारी ते श्रीकृष्णभगवान् छे पण बीजा अवतारनी पेठे श्रीकृष्णभगवान् ते अवतार नथी तेतो अवतारीज छे एवा जे श्रीकृष्णभगवान् ते आपणा इष्टदेव छे. अने ते श्रीकृष्णभगवाननां चरित्र श्रीमद्भागवतपुराणना दशमस्कंधनेविषे संपूर्ण कह्यांछे माटे आपणा उद्धवसंप्रदायनेविषे अमे दशमस्कंधने अतिशय प्रमाण कर्योछे अने बीजा जे सर्वे अवतार तेपण श्रीकृष्णभगवाननाज छे माटे ए अवतार ने ए अवतारना प्रतिपादन करनारा जे ग्रंथ ते सर्वेने आपणे मानवा पण विशेषे करीनेतो श्रीकृष्णभगवान् ने तेना प्रतिपादन करनारा जे ग्रंथ तेनेज मानवा.

पछी पुरुषोत्तमभट्टे प्रश्न पुछ्यो जे "भगवान् जीवना कल्याणने अर्थे आ जगतने सृजेछे ते विश्व न रच्युं होय ने मायाना उदरमां जीव होय तेनुं भगवान् कल्याण करे तो शुं न थाय? जे आटलो विश्व सृजवानो भगवान्दाखडो करेछे?", ए प्रश्न छे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवान् श्रीकृष्णपुरुषोत्तम छे तेतो राजाधिराज छे अने अखंडमूर्ति

छे अने पोतानुं अक्षरधामरूपी जे तखत तेनेविषे सदा विराजमान छे अने ते अक्षरधामने आश्रित अनंतकोटि ब्रह्मांड रह्यां छे, ते जेम कोइक मोटो चक्रवर्ती राजा होय ने तेने असंख्य गामडां होय तेमांथी एक बे गाम उजड थयां होय अथवा वसां होय पण तेतो ते राजानी गणतीमां पण न होय, तेम श्रीकृष्णभगवान् ते अनंतकोटि ब्रह्मांडना पति छे ते ब्रह्मांडोनो कांइ एक सामटो प्रलय थतो नथी अने तेमांथी एकादा ब्रह्मांडनो प्रलय थाय तेतो भगवाननी गणतीमां पण नथी, अने ते श्रीकृष्णभगवाननो देवकीजीथकी जे जन्म तेतो कथनमात्र छे अने ए श्रीकृष्णतो सदा अजन्मा छे अने ते श्रीकृष्णभगवाननुं जे अक्षरधाम छे ते व्यतिरेकपणेतो प्रकृति पुरुष थकी पर छे अने अन्वयपणे करीनेतो सर्वे ठेकाणे छे, जेम आकाश छे ते अन्वयपणे करीनेतो सर्वत्र छे अने व्यतिरेकपणेतो चार भूतथकी पर छे. तेमज श्रीकृष्णभगवाननुं अक्षरधाम छे अने ते धामनेविषे भगवान् अखंड विराजमान रहेछे अने ते धाममां रह्याथका अनंतकोटी जे ब्रह्मांड छे तेनेविषे ज्यां जेने जेम दर्शन देवुं घटे त्यां तेने तेम दर्शन देछे अने जे साथे बोलवुं घटे ते साथे बोलेछे अने जेनो स्पर्श करवो घटे तेनो स्पर्श करेछे, जेम कोइक सिद्धपुरुष होय ते एक ठेकाणे बेठोथको हजारो गाउ देखे ने हजारो गाउनी वार्ताने सांभळे, तेम भगवान् पोताना अक्षरधाममां रह्याथका अनंतकोटी ब्रह्मांडनेविषे ज्यां जेम जणावुं घटे त्यां तेम जणायछे अने पोते तो सदा पोताना अक्षरधाममांज छे. अने एक ठेकाणे रह्याथका जे अनंत ठेकाणे जणायछे तेतो पोतानी योगकळा छे, जेम रासमंडळनेविषे जेटली गोपीयो तेटलाज पोते थया माटे एक ठेकाणे रह्या थका जे अनंत ठेकाणे देखावुं एज भगवाननुं योगकळाए करीने व्यापक-

पणुं छे पण आकाशनी पेठे अरूपपणे करीने व्यापक नथी अने जे भगवाननी योगमायाए करी पचास करोड योजन जे पृथ्वीनुं मंडळ छे ते प्रलयकाळनेविषे परमाणुरूप थइ जायछे अने ते पृथ्वी पाछी सृष्टिकाळनेविषे परमाणुमांथी पचास करोड योजन थायछे अने चोमासुं आवेछे त्यारे गाजविज ने मेघनी घटा थइ आवेछे ए आदिक सर्वे आश्चर्य ते भगवाननी योगमायाए करीने थायछे एवा जे श्रीकृष्णभगवान् ते मुमुक्षुने सर्व प्रकारे भजन करवा योग्य छे शामाटे जे बीजा अवतारनेविषेतो एक के बे कळानो प्रकाश होयछे अने श्रीकृष्णभगवाननेविषेतो सर्वे कळाओ छे माटे ए श्रीकृष्णभगवानतो रसिकपण छे ने त्यागीपण छे ने ज्ञानीपण छे ने राजाधिराजपण छे ने कायरपण छे ने शूरवीरपण छे ने अतिशय कृपाळुपण छे ने योगकळानेविषे प्रवीण छे ने अतिशय बळीयापण छे ने अतिशय छळीयापण छे माटे सर्वे कळाए संपन्न तो एक श्रीकृष्णभगवानज छे अने ते श्रीकृष्णभगवाननुं जे अक्षरधाम तेने आश्रित जे अनंत कोटी ब्रह्मांड तेपण सदाय रहेछे तेमांथी जे ब्रह्मांडनी सो वर्षनी आवरदा पुरी थाय ते ब्रह्मांडनो नाश थाय तेणे करीने कांइ सर्वे ब्रह्मांडनो नाश थतो नथी माटे प्रलयकाळमां शासारु कल्याण कर्युं जोइए सर्वे ब्रह्मांड वसेज छे तो ? एवी रीते ए प्रश्ननुं समाधान छे, एवी रीते परोक्षपणे पोताना पुरुषोत्तमपणानी वार्ता श्रीजिमहाराजे करी तेने सांभळीने सर्वे हरिभक्त एम जाणता हवा जे एज जे श्रीकृष्णपुरुषोत्तम तेज आ भक्ति धर्मना पुत्र श्रीजिमहाराज छे । इति वचनामृतम् ॥ ६४ ॥ १९७ ॥

संवत् १८८१ ना पोष शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासु-

देवनारायणना मंदिरनी समीपे ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे सांभळो भगवाननी वार्ता करीए, त्यारे ताल पखाज लइने संत कीर्तन गावता हता ते छाना रह्या अने सर्वे हाथ जोडीने सांभळवा बेठा, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जीवना कल्याणने अर्थे भगवानना राम कृष्णादिक जे अवतार थायछे तेनेतो मायानुं कार्य एवुं जे आ जगत् तेमां कोइ ठेकाणे मोह थतो नथी अने पोताना अलौकिक प्रतापे करीने निःशंक वर्तेछे अने पोताना भक्तजननी भक्तिने अंगीकार करवाने अर्थे पंच विषयनेपण सारी पेठे भोगवेछे तेने जोइने आ संसारनेविषे जे अखतरडाया मनुष्य छे ते परमेश्वरनेविषे दोष परठेछे अने एम जाणे जे 'आतो परमेश्वर कहेवायछे तोपण एने आपणा करतांपण वधु संसारनेविषे आसक्ति छे' एम जाणीने भगवानने पण पोताजेवा मनुष्य जाणेछे पण भगवाननो जे अलौकिक महिमा तेने जाणता नथी एज भगवाननी माया छे. अने ब्रह्मस्थितिने पाम्या एवा जे आत्मदर्शी साधु तेनेपण आ संसारनेविषे कोइ पदार्थ देखीने मोह थतो नथी तो ब्रह्मथी पर परब्रह्म एवा जे श्रीकृष्णभगवान् तेने माया ने मायाना कार्यथकी निर्लेप रहेवाय एमां ते शुं कहेवुं? एतो रहेवायज. अने आत्मनिष्ठावाळा जे संत तेने आत्मनिष्ठा ने तीव्र वैराग्य ए बेय होय तेणे करीने कोइ रीतनुं बंधनतो न थाय पण जो तेने भगवाननेविषे भक्ति न होय तो जेम बहु प्रकारनां भोजन ने बहु प्रकारनां व्यंजन कर्यां होय ने तेमां जो एक लवण न होय तो ते सर्वे नकारां थइ जायछे तेम भगवाननी भक्ति विना एकलुं जे ब्रह्म-

ज्ञान छे तथा वैराग्य छे तेतो नकारुंज छे ने सदा अकल्याणकारी-ज छे एम जाणीने शुकदेवजी ब्रह्मस्वरूप थया हता तोपण श्रीमद्भागवतने भणता हवा अने श्रीकृष्णभगवाननेविषे दृढ भक्तिने करता हवा, माटे आत्मनिष्ठावाळाने जो भगवाननेविषे भक्ति न होय तो ए एने मोटुं दूषण छे. अने जेने भगवाननेविषे भक्ति होय तेनेपण जो आत्मनिष्ठा ने वैराग्य न होय तो जेवी भगवाननेविषे प्रीति होय तेवी बीजा पदार्थनेविषे पण प्रीति थइ जाय माटे ए भक्तिमार्गवाळाने पण मोटुं दूषण छे अने जे आवो परिपक्व भगवाननो भक्त होय तेणेतो भगवाननो यथार्थ महिमा जाण्योछे माटे तेनेतो परमेश्वर विना बीजुं सर्वे तुच्छ जणाणुं छे वे सारु कोइ पदार्थमां ते मोह पामतो नथी माटे आत्मनिष्ठा वैराग्य ने भगवाननेविषे भक्ति ए त्रणेय भेळां होय त्यारे कोइ जातनी खोट न कहेवाय अने एवो जे होय तेतो भगवाननो ज्ञानी भक्त कहेवाय एकांतिक भक्त कहेवाय अनन्य भक्त कहेवाय । इति वचनामृतम् ॥ ६५ ॥ १९८ ॥

संवत् १८८१ ना पोष वदी १ प्रतिपदाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकिया विछवावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पीळा पुष्पना ने राती गुलदावदिना पुष्पना हार कंठनेविषे विराजमान हता ने पीळा पुष्पनो तोरो पाघनेविषे विराजमान हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने पोतानी आगळ सरोदा ने दुकड लइने संतमंडळ विष्णुपद गावता हता ते कीर्तनभक्ति थइ रह्या पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे

आजतो अमारे मोटा मोटा संतने प्रश्न पुछवा छे, एम कहीने प्रथम आनंदस्वामीने पुछता हवा जे "कोइक एवो पुरुष होय जे तेने बुद्धि थोडी होय तोपण पोतामां जे दोष होय तेने देखे. अने बीजा हरिभक्तमां दोष होय तेने न देखे अने गुण होय तेनेज देखे अने बीजो जे पुरुष छे तेनेतो बुद्धि घणी छे तोपण पोताना अवगुणने देखतोज नथी अने बीजा हरिभक्तनेविषे गुणनो त्याग करीने केवळ दोषज देखेछे एनुं शुं कारण हशे जे थोडी बुद्धिवाळो होय तेपण पोताना दोषने देखेछे अने झाझी बुद्धिवाळो छे तेने पोताना दोष सुझता नथी ?" ए प्रश्न छे, पछी आनंदस्वामीने जेवो सुझ्यो तेवो उत्तर कर्यो पण प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर एम छे जे, आ जन्मे अथवा कोइ जन्मांतरनेविषे एणे कोइक मोटा भगवानना भक्तनो अपराध कर्यो छे ते पापे करीने एनी बुद्धि दोषे युक्त छे माटे एने हरिभक्तना दोष सुझेछे ने पोताना दोष सुझता नथी एज एनो उत्तर छे.

एम कहीने पछी श्रीजिमहाराज नित्यानंदस्वामीने प्रश्न पुछता हवा जे "भगवानने पाम्यानुं एकज साधन छे के घणांक साधने करीने भगवान् पमायछे ?" त्यारे तमे एम कहेशो जे 'ज्ञान वैराग्य भक्ति अने धर्म ए चार साधने करीने पमायछे' ते ज्यारे ए चार साधने करीने भगवाननी प्राप्ति थायछे त्यारे एक भगवानना आश्रये करीनेज कल्याण थाय एवा अनन्य भावनो निर्धार रह्यो नहि, पछी नित्यानंदस्वामीए बहु प्रकारे उत्तर कर्यो पण प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, कल्याणतो एक भगवानना आश्रये करीनेज छे पण भगवान् छे ते अतिसमर्थ छे ने तेनी आज्ञाने ब्रह्मा-

दिक समग्र देव पाळेछे तथा काळ मायादिक जे सर्वे ब्रह्मांडनां कारण तेपण भगवानना भयथकी सावधान थइने भगवाननी आज्ञामां रहेछे माटे भगवाननो भक्त होय तेने ए भगवाननी आज्ञा छे ते दृढ करीने मानवी एज भगवानना भक्तनुं लक्षण छे ते सारु साधन सर्वे अति दृढ करीने राखवां एटले एक भगवानवतेज कल्याण छे अने ए साधन छे तेतो भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे छे एज ए प्रश्ननो उत्तर छे.

पछी श्रीजिमहाराज ब्रह्मानंदस्वामीने पुछता हवा जे "आ देहनेविषे जीव छे ते साकार छे के निराकार छे?" पछी ब्रह्मानंदस्वामीए कह्युं जे जीवतो साकार छे, त्यारे श्रीजिमहाराजे कह्युं जे, जो जीव साकार होय तो ते कर चरणादिके युक्त थयो त्यारे दशमस्कंधनेविषे वेदस्तुतिना अध्यायमां एम कह्युं छे जे 'भगवान् जेते जीवना कल्याणने अर्थे ते जीवनां बुद्धि इंद्रिय मन ने प्राण तेने सृजता हवा' ते जो जीव साकारज होय तो तेने अर्थे बुद्धि इंद्रिय मन प्राण सृज्यानुं शुं काम छे? माटे एवी रीतनां शास्त्रनां वचनने जोतां एमज निर्धार थायछे जे जीव जेते स्वरूप स्वभावे करीने तो सत्तामात्र छे ने चैतन्य वस्तु छे अने अनादि अज्ञानरूप एवुं जे कारण शरीर तेणे युक्त छे अने जेम चमकपाण होय ते लोढाने ताणीने लोढा साथे चोटी रहेछे तेम ए जीवनोपण चोटवानो स्वभाव छे ते मायिक एवां जे स्थूळ ने सूक्ष्म ए बे शरीर ते साथे चोटेछे अने ए जीव अज्ञाने करीने ते शरीरनेविषे पोतापणुं मानेछे पण वस्तुगते तो ए जीव शरीर जेवो नथी.

पछी ब्रह्मानंदस्वामीए कह्युं जे "ज्यारे भगवाननी भक्तिए करीने ए जीवना अज्ञाननी निवृत्ति थायछे त्यारे ए जीवने स्थूळ सूक्ष्म ने कारण ए मायिक त्रण देहनो संबन्ध रहेतो नथी त्यारे ए जीव भग-

वानना धाममां जइने केवी रीतना आकारे युक्तथको रहेछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यारे ए जीवना अज्ञाननी निवृत्ति थायछे त्यारे एने मायिक त्रण देहनो संग छुटी जायछे पछी ए जीव केवळ चैतन्य सत्तामात्र रहेछे पछी ए जीवने भगवाननी भूमि आदिक जे आठ प्रकारनी प्रकृति तेथकी जुदी जे चैतन्यप्रकृति तेनो भगवाननी इच्छाए करीने देह बंधायछे ने तेणे युक्त थको भगवानना अक्षरधामनेविषे रहेछे ए रीते ए प्रश्ननो उत्तर छे.

पछी गोपाळानंदस्वामीने श्रीजिमहाराज पुछता हवा जे "अष्टांगयोग सिद्ध थायछे अथवा आत्मदर्शन थायछे तेतो भगवान् ने भगवानना संतनी कृपाथकी थायछे[2] ते ए योग ने आत्मदर्शन सिद्ध थयानुं कारण जे भगवान् ने भगवानना संत; तेनेविषे वृत्ति गौण थइ जायछे अने अष्टांगयोग ने आत्मदर्शन एनेविषे वधु लग्नि थायछे तेनुं शुं कारण हशे?" पछी गोपाळानंदस्वामीए कह्युं जे, एने योगाभ्यास करते थके योग सिद्ध थायछे तेनुं कांइक मान आवेछे तेणेकरीने भगवाननी कोरे कांइक वृत्ति गौण थइ जायछे.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ज्यारे सिद्धदशाने पामे त्यारे ए योगी छे ते ब्रह्मरूप थायछे ते ब्रह्ममांतो कोइ जातनुं मान होय नहि[3] माटे उत्तर संभवे नहि. पछी गोपाळानंदस्वामी बोल्या जे हे महाराज! एतो कांइ समझातुं नथी माटे तमे कृपा करीने कहो, पछी

---

१ आ लोकमां बहु पुरुषो भगवानने भजेछे तेमां केटलाक भक्तोने ।

२ माटे ते भक्तोने भगवान् अने तेमना संतोने विषेज सर्वदा लग्नि थवी उचित छे तथापि कोइक भक्तने ।

३ देहाभिमानीओमांज मान दोषनो संभव छे ।

श्रीजिमहाराज बोल्या जे एतो समझवुं जे¹, ज्यारे पोतानी खोट्य काढवी होय त्यारे तेने मोटाओना वचननी साख्य लइने काढवी, जेम कोइक व्यवहारिक काम होय ने ते कामने अतिशय सिद्ध करवुं होय त्यारे सारां सारां माणसनी साइदी करवी तेम आंहीपण ए साइदी छे जे शुकदेवजी ब्रह्मस्वरूप थया हता तोपण अति प्रीतिए करीने श्रीमद्भागवत भण्या अने आज दिवस सुधीपण भगवाननी भक्तिनेज करेछे अने शौनकादिक अठ्याशीहजार ऋषि ते ब्रह्मस्वरूप छे तोपण सूतपुराणीना मुखथकी भगवाननी कथाने सांभळेछे एवी जातना वचननी साख्य भक्तिनी दृढताने अर्थे लेवी. अने जे खोट्य पोताना जाण्यामां न आवती होय तेनीकोरनी भगवानने आगळ प्रार्थना करवी जे हे महाराज! मारामां जेजे खोट्य होय ते कृपा करीने नाश करज्यो, जेम कोइक पुरुषने माथे कलंक आव्युं होय ने ते कलंक टाळ्यानो कोइ साइदी न होय त्यारे ते लोढानो गोळो रातो चोळ होय तेने उपाडीने पोतानुं कलंक टाळेछे. तेम जे दोष न ओळखातो होय त्यारे ते दोष टाळवाने अर्थे भगवाननी स्तुति करवी ए ते लोढानो गोळो झाल्या जेवी छे एम करीने पोतानी खोट्यने टाळवी ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे.

पछी श्रीजिमहाराज मुक्तानंदस्वामीने पुछता हवा जे "भगवानने यथार्थ जाण्या होय ने भगवानतो कांइ चमत्कार न देखाडता होय ने

---

१ तेवा भक्त योगसिद्धिवाळा अने आत्मदर्शनवाळाओनो वर्तनप्रकार जाण्यो नथी, पुरातन शुकादि योगीओ ब्रह्मरूप थइने पण तेमां विश्रांति नहि पामतां भगवाननी भक्तिनेज करता हता. आवुं वृतान्त नहि जाणवाथी भगवान् अने तेमना संतोने विषे वृत्ति गौण थायछे अने आत्मदर्शनमां वधु रुचि थायछे, माटे प्रथम पुरातन योगिओनो वर्तनप्रकार अवश्य जाण्यो जोइए. अने आ जे पोतानी खोट्य ते टाळवी अने ।

बीजा जे जंत्र मंत्रवाळा होय तेतो परचो देखाडता होय तेने देखीने भगवाननो भक्त होय तेनुं मन भगवानमांथी कांइ डगे के न डगे?" पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे हे महाराज! जेने भगवाननो यथार्थ निश्चय होय तेनेतो भगवान् विना बीजे क्यांइ प्रतीति आवेज नहि अने जो बीजे ठेकाणे प्रतीति आवी तो तेने भगवाननो निश्चयज नथी एतो गुणबुद्धिवाळो हरिभक्त कहेवाय पण यथार्थ भगवाननो भक्त न कहेवाय, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एज एनो उत्तर छे.

पछी श्रीजिमहाराजे शुकमुनिने पुछ्युं जे "भगवाननो भक्त होय ने ते भगवान् तथा भगवानना संत तेने साक्षात्कार पाम्यो तेने जीवतां शी प्राप्ति थायछे अने मुवा केड्ये शी प्राप्ति थायछे?" पछी शुकमुनि बोल्या जे हे महाराज! एनो उत्तरतो तमे करशो त्यारे थशे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने भगवान् ने भगवानना संतनी प्राप्ति थइछे तेने जीवतेतो भगवाननां कथा कीर्तन करतां थकांज दिवस ने रात्रि वीतेछे अने त्रणे अवस्थाथी पर जे पोतानो जीवात्मा तेनुं ब्रह्मरूपे साक्षात् दर्शन थायछे अने भगवान् विना अन्य पदार्थमात्रनेविषे वैराग्य थायछे अने अधर्मनो त्याग करीने धर्मनेविषे रहेवायछे. अने देह मुके त्यारे एवा भक्तने भगवान् पोता जेवोज करेछे, जेम भगवाने ब्रह्माने कह्युंछे जे 'हे ब्रह्मा! जेवो हुं छुं ने जेवो मारो महिमा छे ने जेवा मारा गुण ने कर्म छे तेवुं मारा अनुग्रहथकी तने विज्ञान थाओ' एवुं जे ब्रह्माने कह्युंछे, तेम जे पोताना अनन्य भक्त होय ते सर्वने भगवान् एवी प्राप्ति करावेछे अने जेम भगवान् काळ कर्म ने मायाथकी रहित छे तेमज भगवानना भक्तपण काळ कर्म ने मायाथकी रहित थायछे ने अखंड भगवाननी सेवानेविषे रहेछे एवी देह मुक्या केड्ये प्राप्ति थायछे एज ए प्रश्ननो उत्तर छे। इति वचनामृतम् ॥ ६६ ॥१९९॥

संवत् १८८१ ना मद्दा वदी ३ तृतीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानेविषे गंगाजळीया कुवापासे ओटा उपर ढोलियो ढळावीने गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने पोतानी आगळ साधु दुकड सरोदा लइने विष्णुपद गावता हता ते कीर्तनभक्ति थइ रह्या पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे अमे सर्वे संत प्रत्ये प्रश्न करीए छीए जे "भगवाननो भक्त होय ते देह मुकीने ब्रह्मरूप थइने भगवानना धाममां जायछे पछी एमां ने भगवानमां शो अंतराय रहेछे जेणे करीने स्वामिसेवकपणानो नातो रहेछे; केमजे ए भगवाननो भक्त छे तेपण जेवा भगवान् स्वतंत्र छे ने काळ कर्म ने माया तेने आवरणे करीने रहित छे तेवोज थायछे माटे एमां शो भेद रहेछे जेणे करीने स्वामिसेवकपणुं रहेछे?" ए प्रश्न छे, पछी परमहंसे जेने जेवुं समझायुं तेणे तेवो उत्तर कह्यो पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी सर्वे संते कह्युं जे हे महाराज! तमारा प्रश्ननो उत्तरतो तमेज करशो त्यारे थशे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर एम छे जे, भगवाननो भक्त होय तेणे जेवा भगवानने जाण्या होय जे भगवान् आटली सामर्थिए युक्त छे अने आटली शोभाए युक्त छे अने आवा सुखस्वरूप छे एवी रीते ए भक्ते जेटलो भगवाननो महिमा जाण्योछे अने जेवा प्रतापे युक्त भगवानने जाण्याछे ते भक्त ज्यारे देह मुकीने भगवानना धाममां जायछे त्यारे रूप तथा सामर्थि ते ए भक्तनीपण तेवीज थायछे तोपण भगवाननी सामर्थि अने भगवाननुं

सुंदरपणुं इत्यादिक जे प्रताप ते ए भक्तने भगवाननेविषे अतिशय जणायछे त्यारे ए भक्त एम जाणेछे जे 'में जेटलो प्रताप जाण्यो हतो ने सुंदरपणुं जाण्युं हतुं तेटलुं ऐश्वर्य ने तेटलुं सुंदरपणुंतो मनेपण भगवाने आप्युंछे तोपण भगवाननुं ऐश्वर्य ने भगवाननुं सुंदरपणुं तेतो अतिशय अपार देखायछे' माटे मारा जेवा अनंत भगवानना साधर्म्यपणाने पाम्याछे तोपण भगवान् जेवो कोइ थवाने समर्थ थतो नथी शामाटे जे भगवाननो महिमा गुण कर्म जन्म ने सामर्थि तथा सुंदरता सुखदायकपणुं ए आदिक जे अनंत कल्याणकारी गुण तेना पारने शेष शारदा ब्रह्मादिक देवता तथा चार वेद ए पामता नथी अने भगवान् पोतेपण पोताना महिमाना पारने पामता नथी माटे भगवानतो सर्वे सामर्थिए करीने अपार छे अने ए भगवानने भजीने अनंत कोटि वैष्णव भगवान् सरखा थयाछे तोपण भगवानमांथी कोइ जातनो प्रताप अणु जेटलो पण न्यून थयो नथी, जेम मीठा जळनो समुद्र भर्यो होय तेमांथी मनुष्य पशु पंखी सर्वे जेटलुं भावे तेटलुं जळ पीवे तथा पात्र भरीले तोपण ओछुं थतुं नथी शामाटे जे ते समुद्रतो अगाध छे, तेमज भगवाननो महिमापण अतिशय अपार छे माटे कोइ रीते करीने वधे घटे एवो नथी ते सारु जेजे भगवानना भक्त ब्रह्मस्वरूप थयाछे तोपण भगवानना दृढ दास थइने भगवाननुं भजन करेछे एवी रीते भगवानना भक्त भगवानना साधर्म्यपणाने पामेछे तोपण स्वामिसेवकपणुं रहेछे एज ए प्रश्ननो उत्तर छे । इति वचनामृतम् ॥ ६७ ॥ २०० ॥

मध्यप्रकरणं समाप्तम् ।

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

श्रीवरताल-वचनामृतम् ।

संवत् १८८२ ना कार्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरथी उत्तरादीकोरे गोमतीजीने कांठे आंबावाडीयामां सिंहासन उपर गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता ने धोळो सुरवाळ ने धोळो अंगरखो पहेर्यो हतो अने शुढा रंगनो रेंटो कमरे बांध्यो हतो ने माथा उपर कसुंबल रेंटो सोनेरी तारना छेडावाळो बांध्यो हतो ने खभे कसुंबल रेंटो जरकसि छेडानो विराजमान हतो ने कंठनेविषे गुलाबना पुष्पना हार विराजमान हता ने माथा उपर गुलाबना पुष्पना तोरा विराजमान हता ने भुजाओने विषे गुलाबना गजरा ने बाजुबंध बांध्या हता एवी शोभाने धरताथका उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी वडोदरावाळा शोभरामशास्त्रीए श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज ! मुमुक्षु होय ते ज्यारे निर्विकल्प समाधिने पामे त्यारे गुणातीत थाय ने भगवाननो एकांतिक भक्त थाय त्यारे जेने निर्विकल्प समाधि न थाय तेनी शी गति थाय ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, प्राणनो निरोध थाय त्यारेज निर्विकल्प समाधि थाय एमं नथी निर्विकल्प समाधिनी रीततो बीजी छे ते कहीए ते सांभळो जे,

१ केवळ । २ प्रकारान्तरथी पण ।

श्रीमद्भागवतमां कह्युंछे जे "अत्र[1] सर्गो विसर्गश्च स्थानं पोषणमूतयः। मन्वन्तरेशानुकथा निरोधो मुक्तिराश्रयः॥" ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे 'विश्वना सर्ग विसर्गादिक जे नव लक्षण तेणेकरीने जाण्यामां आवे एवुं आश्रयरूप जे श्रीकृष्णभगवाननुं स्वरूप तेनेविषे जे मुमुक्षुनी अचळ मति थइ, जेम आ आंबानुं वृक्ष छे ते एकवार दृढ करीने जाण्युं पछी काम व्यापे क्रोध व्यापे लोभ व्यापे तोपण कोइ रीते आंबानेविषे भ्रांति न थाय जे 'आंबानुं वृक्ष हशे के नहि होय' तेम जेने प्रत्यक्ष श्रीकृष्णभगवानना स्वरूपनो दृढ निश्चय थयो ने तेमां कोइ जातनो कुतर्क न थाय तो ते पुरुषनां प्राण लीन न थयां होय तोपण निर्विकल्प समाधि छे ने प्राण लीन थयां होय तोपण निर्विकल्प समाधि छे. अने जेने ए भगवानना स्वरूपमां संकल्प विकल्प रहेता होय जे 'ब्रह्मपुरनेविषे केवुं भगवाननुं स्वरूप हशे अने श्वेतद्वीपने वैकुंठनेविषे केवुं भगवाननुं स्वरूप हशे अने ते स्वरूपनुं क्यारे दर्शन थशे' एवी जातना संकल्प विकल्प कर्या करे पण प्रकट भगवान्

---

१ सर्गः–महदादि पृथिव्यन्त तत्त्वोनी उत्पत्ति, अर्थात् वैराजपुरुषसुधीनी सृष्टि। विसर्गः–ब्रह्माए करेली सृष्टि। स्थानं–भगवाननी सर्वोत्कर्षे शत्रुविजयादिरूप स्थिति। पोषणं–भगवाननो जगतना रक्षणरूप अनुग्रह। ऊतयः–कर्मवासना। मन्वन्तरकथा–सद्धर्म, भगवाने अनुग्रह करेला मन्वन्तराधिपोनो धर्म। ईशानुकथा–भगवानना अवतारचरित्रोनी कथा तथा तेमना एकान्तिक भक्तोना नानाविध आख्यानवाळी सत्कथा। निरोधः–जीवसमुदायनुं पोतपोतानी कर्मशक्तिओनी साथे सूक्ष्मावस्थ प्रकृतिमा रहेवुं ते। मुक्तिः–देवमनुष्यादि रूपनो त्याग करीने स्वरूपथी (पोताना अपहतपाप्मत्वादि गुणाष्टके विशिष्ट एवा रूपथी) रहेवुं ते। आश्रयः–जेनाथी जगतनी उत्पत्ति स्थिति अने प्रलय थायछे, जेने 'परब्रह्म परमात्मा' इत्यादिशब्दथी श्रुतिस्मृतियो कहेछे ते।

मळ्या तेनेज सर्वना कारण जाणीने तेणे करीनेज पोताने कृतार्थ न माने अने एवाने जो दैवइच्छाए करीने समाधि थाय तोपण संकल्प विकल्प मटे नहि अने समाधिमां जे जे देखाय तेथी नवुं नवुं जोवाने इच्छे पण मनना विकल्प मटे नहि एवो होय तेने समाधि छे तोपण सविकल्प छे ने समाधि न होय तोय सविकल्प छे माटे एवो होय ते गुणातीत एकांतिक भक्त न कहेवाय. अने जेने भगवानना स्वरूपनो दृढ निश्चय होय ने तेने समाधि छे अथवा नथी तोयपण तेने सदा निर्विकल्प समाधिज छे.

पछी दीनानाथभट्टे प्रश्न पुछ्यो जे "मनमां संकल्प विकल्प टाळवानो उपाय करे अने जो मनने न जीती शके तो तेनी शी गति थाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, कौरवने ने पांडवने युद्ध करवानो प्रारंभ थयो त्यारे कौरव ने पांडव विचार्या जे 'आपणे एवे ठेकाणे युद्ध करीए जे ते युद्धमां जे कोइ मरे तोपण तेना जीवनुं रुडुं थाय' एवुं विचारीने कुरुक्षेत्रनेविषे युद्ध कर्युं पछी जीत्या तेनुंपण सारुं थयुं ने ए संग्राममां मराया तेनेपण देवलोकनी प्राप्ति थइ ने राज्यथकी पण अधिक सुखने पाम्या, तेम जे मन साथे लडाइ आदरे अने जो मनने जीते तो निर्विकल्प स्थितिने पामे ने भगवाननो एकांतिक भक्त थाय अने जो मन आगळ हारे तोपण योगभ्रष्ट थाय ते पछी एक जन्मे अथवा बे जन्मे अथवा घणे जन्मे पण अंत्ये जातो ए एकांतिक भक्त

१ भगवदिच्छा वा पूर्वना सत्संस्कारना बळे करीने । २ आ अर्थ गीतामां श्रीकृष्णभगवाने "पार्थ! नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते । न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात! गच्छति ॥ प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः । शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥" इत्यादिवचनथी कह्यो छे।

थाय पण एणे दाखडो कर्यो ते छुटी न पडे माटे बुद्धिवान् होय तेनेतो पोताना कल्याणने अर्थे मन साथे जरुर वैर बांधवुं पछी ए मनने जीतशे तोपण सारुं छे ने ए मनथी हारशे तोपण योगभ्रष्ट थशे तेमां अंत्येजातां सारुं छे ते माटे जे कल्याणने इच्छे तेनेतो मन साथे जरुर वैर बांधवुं । इति वचनामृतम् ॥ १ ॥ २०१ ॥

संवत् १८८२ ना कार्तिक शुदि १३ तेरशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरथी उत्तरादि दिशे गोमतीजीने कांठे आंबाना वृक्षनी हेठे ढोलीया उपर विराजमान हता अने पीळा तासतानो सुरवाळ पहेर्यो हतो तथा राता कीनखापनी डगली पहेरी हती तथा मस्तक उपर जरकसी छेडानी कसुंबल पाघ बांधी हती तथा जरकसी छेडानुं कसुंबल शेलुं खभे नाख्युं हतुं अने पाघने उपर चंपाना पुष्पना हार विराजमान हता ने कंठनेविषे धोळा पुष्पना हार विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कांइक प्रश्न उत्तर करो, पछी गाम बुधाना पटेल कानदासजीए हाथ जोडीने पुछ्युं जे "हे महाराज! भगवान् शे प्रकारे राजी थायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जो भगवानना द्रोह न करीए तो भगवान् राजी थाय, त्यारे कहेशो जे द्रोह ते शुं? तो जे आ सर्व जगतना कर्ता हर्ता भगवान् छे तेने कर्ता हर्ता न समझीए ने विश्वना कर्ता हर्ता काळने जाणीए अथवा मायाने जाणीए अथवा कर्मने जाणीए अथवा स्वभावने जाणीए एते भगवानना द्रोह छे केमजे भगवान् सर्वना कर्ता हर्ता छे तेनो त्याग करीने केवळ काळ, कर्म, स्वभाव अने माया तेने जगतना कर्ता हर्ता कहेछे माटे ए भगवा-

नने अतिद्रोह छे. 'त्यां दृष्टांत छे जेम तमे गामना पटेल छो ते जे तमारी गाममां पटलाइ न रहेवादे ते तमारो द्रोही कहेवाय. अने वळी जेम चक्रवर्ती राजा होय तेनो हुकम खोटो करीने जे राजा न होय तेनो हुकम चलावे तो ते पुरुष राजानो द्रोही कहेवाय. अने वळी जेम कोइक एवा कागळ लखी लखीने मेले जे 'अमारो राजा छे ते नाक कान विनानो छे अथवा हाथ पग विनानो छे' एवी रीते राजानुं रूप संपूर्ण होय तेने खंडित करीने वर्णवे ते राजानो द्रोही कहेवाय, तेम भगवान् छे ते कर चरणादिक समग्र अंगे करीने संपूर्ण छे अने लेशमात्र पण कोइ अंगे विकळ नथी अने सदा मूर्तिमानज छे तेने अकर्ता कहेवा तथा अरूप कहेवा ने भगवान् विना बीजा जे काळादिक तेने कर्ता कहेवा एज भगवाननो द्रोह छे एवी जातनो जे भगवाननो द्रोह तेने जे न करे तेणे संपूर्ण भगवाननी पूजा करी अने ते विनातो चंदन पुष्पादिके करीने पूजेछे तो पण भगवाननो द्रोही छे माटे भगवानने जगतना कर्ता हर्ता जाणे अने मूर्तिमान् जाणे ते उपरज भगवान् राजी थायछे.

अने वेदमांतो भगवाननुं स्वरूप बहु रीते वर्णवीने नारायणे पोते

१ अने तेमने शास्त्रनुं लेशमात्र ज्ञान नथी एम जणायछे केमके "ज्ञः कालकालः" इत्यादि श्रुतिस्मृतिमा काळादिकने भगवाननी शक्तिरूपे वर्णव्या छे. जगत्सर्गादिकमा काळादिकनी स्वतंत्रता नथीज केमके तेओ भगवाननी प्रेरणाथीज विश्वसर्गादि तेवे क्रियाओ करेछे, ते भागवतमा कह्युं छे के-"द्रव्यं कर्म च कालश्च स्वभावो जीव एव च । यदनुग्रहतः सन्ति न सन्ति यदुपेक्षया" जेम चक्रवर्ती राजानी आज्ञाथी खंडीया राजाओ प्रजानुं प्रशासन करेछे तेमज भगवाननी आज्ञाथीज काळादिकनुं विश्वसर्गादिकमा कर्तृत्व छे एवी रीते जे जन भगवानने सर्वनियंता अने सर्वकर्ता जाणे तेज भक्त कहेवायछे अने जे एवी रीते न जाणे ते भगवाननो द्रोही कहेवाय छे ।

पोताने मुखे कह्युंछे पण ते कोइना समझ्यामां आव्युं नहि त्यारे सांख्यशास्त्रे करीने चोविश तत्व कह्यां ने पंचविशमुं भगवाननुं स्वरूप कह्युं ते सांख्यना आचार्य जे कपिलमुनि तेणे एम विचार्युं जे 'स्थूळ सूक्ष्म ने कारण तेनेविषे जीव एकपणे करीने वर्तेछे अने एथी न्यारो जीव रही शकतो नथी अने ईश्वर छे तेपण पोतानी उपाधि जे विराट् सूत्रात्मा ने अव्याकृत तेनेविषे एकपणे वर्तेछे पण ते विना रही शकतो नथी माटे सांख्यशास्त्रे जीवने ने ईश्वरने चोविश तत्त्व भेळाज गण्याछे अने पंचविशमा परमात्माने कह्याछे' अने योगशास्त्रना आचार्य जे हिरण्यगर्भ ऋषि तेणे चोविश तत्त्व कहीने पंचविशमो जीवने कह्यो छे तेमज पंचविशमा ईश्वरने कह्या छे अने परमात्माने छविशमा कह्या छे, एवी रीते सांख्यशास्त्र ने योगशास्त्र तेणे भगवाननुं स्वरूप कह्युं तोपण साक्षात्कार भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान न थयुं. अने अनुमान प्रमाणे तो थयुं जे 'सांख्यने मते चोविश तत्त्वथी पर छे ते वस्तु सत्य छे अने योगने मते चोविश तत्त्वथी पर जीव ईश्वर छे ने तेथी पर परमात्मा छे ते सत्य छे' एवी रीते परमात्माना स्वरूपनुं बेय शास्त्रवते अनुमान प्रमाणे करीने ज्ञान थयुं पण ते भगवान् काळा छे के पीळा छे? के लांबा छे के ठुंका छे? के साकार छे के निराकार छे? एवुं कांइ ज्ञान न थयुं, पछी पोते वासुदेवभगवानने पंचरात्र नामे तंत्र कर्युं तेनेविषे एम प्रतिपादन कर्युं जे 'श्रीकृष्णपुरुषोत्तम भगवान् छे ते पोताना अक्षरधामनेविषे सदा दिव्य साकार मूर्तिमान् रह्या छे अने तेज भगवान् जेते श्वेतद्वीपवासी जे अनंत निरन्नमुक्त तेमने पांच वखत पोतानुं दर्शन आपेछे तथा वैकुंठलोकनेविषे

"वासुदेवपरा वेदा वासुदेवपरा मखाः । वासुदेवपरा योगा वासुदेवपराः क्रियाः ॥ वासुदेवपरं ज्ञानं वासुदेवपरं तपः । वासुदेवपरो धर्मो वासुदेवपरा गतिः ॥" एवी रीते ए चार शास्त्रे करीने श्रीकृष्णनारायण वासुदेवना स्वरूपनुंज प्रतिपादन कर्युं छे अने ए चार शास्त्रे करीने जे भगवानना स्वरूपने समझे तेज पुरो ज्ञानी कहेवाय, जेम दुध छे तेने नेत्रे जुवे त्यारे धोळुं देखाय अने नाके सुंघे त्यारे सुगंधवान् जणाय अने आंगळीए करीने अडे त्यारे ताढुं उनुं जणाय अने जिह्वाए करीने चाखे त्यारे स्वादु जणाय पण एक इंद्रिये करीने दुधना स्वरूपनुं संपूर्ण ज्ञान न थाय अने सर्वे इंद्रिये करीने तपासी जुवे त्यारे संपूर्ण ज्ञान थायछे, तेम वेदादिक चार शास्त्रे करीने भगवानना स्वरूपने समझे त्यारे संपूर्ण भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान थायछे अने एम जाणवुं तेने संपूर्ण ज्ञान कहीए. अने भगवान् पण एम समझेज राजी थायछे पण परमेश्वरने राजी कर्यानो बीजो उपाय नथी माटे एवी रीते समझे तेज पुरो ज्ञानी कहेवाय अने भगवानपण ते उपरज अतिशय राजी थायछे । इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ २०२ ॥

१ अर्थ –पूर्वोत्तरभागद्वयात्मक वेदो वासुदेव तेज पर–तात्पर्यभूमि जेनी छे एवा छे। अग्नि आदिक देवतानी पूजारूपं यागादिक वासुदेव तेज पर–प्रधानपणे आराध्य जेने छे एवा छे । इन्द्रादिकना उपासनरूप योगो वासुदेव तेज पर–विषय जेने छे एवा छे, एवी रीते समग्र वेदथी वेद्य एक वासुदेव भगवानज छे । स्मृतिप्रोक्त क्रियाओ वासुदेव तेज पर–प्रधानपणे आराध्य जेने छे एवी छे । प्रकृतिपुरुषना विवेकरूप ज्ञान वासुदेव तेज पर–विषय जेने छे एवुं छे । कृच्छ्रचान्द्रायणादिक तप वासुदेव तेज पर–आराधनपर छे । वर्णाश्रमविहित श्रौतस्मार्त धर्म वासुदेवपर एटले वासुदेवने आधीन स्थिति प्रवृत्तिवाळो छे । धर्मप्राप्य स्वर्गादिप्राप्तिरूप गति वासुदेव पर छे एटले एक वासुदेवेज पमाडवा योग्य छे ।

तेज भगवान् चतुर्भुज मूर्तिथका लक्ष्मीजीए सहित छे ने ते शंख, चक्र, गदा, पद्मने धरी रह्या छे तथा विष्वक्सेनादिक जे पार्षद तेमणे सेव्या छे अने एज भगवान् पूजवा योग्य भजवा योग्य ने पामवा योग्य छे अने तेज भगवान् राम कृष्णादिक अवतार धारण करेछे अने वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध ए चतुर्व्यूहरूपे वर्तेछे' एवी रीते साकार मूर्तिनुं प्रतिपादन कर्युंछे. पछी तेज पंचरात्र तंत्रने नारदजीए फरीने कर्युं त्यारे ते नारद पंचरात्र कहेवायुं तेने- विषे एवी रीते भगवानना स्वरूपनुं प्रतिपादन कर्युं जे 'कोइ रीते संशय रह्यो नहि' ते माटे श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे "नारायणपरा वेदा देवा नारायणाङ्गजाः । नारायणपरा लोका नारायणपरा मखाः ॥ नारायणपरो योगो नारायणपरं तपः । नारायणपरं ज्ञानं नारायणपरा गतिः ॥" तथा

---

१ अने वेदादि शास्त्रोनुं तात्पर्य साकार वासुदेव भगवानमाजछे ।

२ अर्थः–वेदो नारायण तेज पर–प्रतिपाद्य अथवा कारण जेने छे, एवा छे. "सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति" "वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः" "तस्य ह वा एतस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यदृग्वेदः" इत्यादि श्रुतिस्मृति छे। इन्द्रादि देवताओ नारायणना अंगथकी थएला छे एटले तेना शरीरभूत छे, "चन्द्रमा मनसो जातः" "स आत्मा अङ्गान्यन्ये देवताः" इत्यादि श्रुति छे । कर्मप्राप्य स्वर्गादि लोको नारायण तेज पर–स्वामी जेना छे एवा छे । यज्ञो नारायण तेज पर–आराध्य अथवा प्रधान जेने छे एवा छे । विवेकादिजन्य उपासनात्मक योग नारायण तेज पर–ध्येय जेमां छे एवो छे। विद्याना अंगभूत तप नारायण तेज पर–पर्यवसानभूमि जेनी छे एवुं छे। शास्त्रजन्य ज्ञान नारायण तेज पर–ज्ञेय जेने छे एवुं छे। योगना फळरूप अर्चिरादि गति नारायण तेज पर–गन्तव्य (पामवा योग्य) जेने छे एवी छे।

"वासुदेवपरा वेदा वासुदेवपरा मखाः । वासुदेवपरा योगा वासुदेवपराः क्रियाः ॥ वासुदेवपरं ज्ञानं वासुदेवपरं तपः । वासुदेवपरो धर्मो वासुदेवपरा गतिः ॥" एवी रीते ए चार शास्त्रे करीने श्रीकृष्णनारायण वासुदेवना स्वरूपनुंज प्रतिपादन कर्युं छे अने ए चार शास्त्रे करीने जे भगवानना स्वरूपने समझे तेज पुरो ज्ञानी कहेवाय, जेम दुध छे तेने नेत्रे जुवे त्यारे धोळुं देखाय अने नाके सुंघे त्यारे सुगंधवान् जणाय अने आंगळीए करीने अडे त्यारे ताढुं उनुं जणाय अने जिह्वाए करीने चाखे त्यारे स्वादु जणाय पण एक इंद्रिये करीने दुधना स्वरूपनुं संपूर्ण ज्ञान न थाय अने सर्व इंद्रिये करीने तपासी जुवे त्यारे संपूर्ण ज्ञान थायछे, तेम वेदादिक चार शास्त्रे करीने भगवानना स्वरूपने समझे त्यारे संपूर्ण भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान थायछे अने एम जाणवुं तेने संपूर्ण ज्ञान कहीए. अने भगवान् पण एम समझेज राजी थायछे पण परमेश्वरने राजी कर्यानो बीजो उपाय नथी माटे एवी रीते समझे तेज पुरो ज्ञानी कहेवाय अने भगवानपण ते उपरज अतिशय राजी थायछे । इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ २०२ ॥

---

१ अर्थ –पूर्वोत्तरभागद्वयात्मक वेदो वासुदेव तेज पर–तात्पर्यभूमि जेनी छे एवा छे। अग्नि आदिक देवतानी पूजारूपं यागादिक वासुदेव तेज पर–प्रधानपणे आराध्य जेने छे एवा छे। इन्द्रादिकना उपासनरूप योगो वासुदेव तेज पर–विषय जेने छे एवा छे, एवी रीते समग्र वेदथी वेद्य एक वासुदेव भगवानज छे। स्मृतिप्रोक्त क्रियाओ वासुदेव तेज पर–प्रधानपणे आराध्य जेने छे एवी छे। प्रकृतिपुरुषना विवेकरूप ज्ञान वासुदेव तेज पर–विषय जेने छे एवुं छे। कृच्छ्रचान्द्रायणादिक तप वासुदेव तेज पर–आराधनपर छे। वर्णाश्रमविहित श्रौतस्मार्त धर्म वासुदेवपर एटले वासुदेवने आधीन स्थिति प्रवृत्तिवाळो छे। धर्मप्राप्य स्वर्गादिप्राप्तिरूप गति वासुदेव पर छे एटले एक वासुदेवेज पमाडवा योग्य छे।

संवत् १८८२ ना कार्तिक वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरमां सिंहासन उपर विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठनेविषे गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता अने मस्तकने विषे पाघमां तोरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ समस्त तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे "आपणा उद्धव संप्रदायनेविषे ज्ञान, वैराग्य, धर्म अने भगवाननी भक्ति ए चार वानां जेमां होय ते एकांतिक भक्त कहेवाय अने आपणा सत्संगमां मोटो करवा योग्यपण तेज छे अने ए चार संपूर्ण न होय ने एकज मुख्यपणे करीने होय तोपण त्रण जे बाकी रह्यां ते ते एकना पेटामां आवी जाय एवुं एक कयुं ए चारेमां श्रेष्ठ छे" त्यारे गोपाळानंदस्वामीए तथा मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे हे महाराज ! एवो ते एक धर्म छे ते धर्म होय तो त्रणे वानां ते पुरुषमां आवे.

त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, धर्मतो केटलाक विमुख[1] माणस होय तेमांपण होय माटे तेने शुं सत्संगमां मोटो करशुं? पछी ए वात सांभळीने कोइथी उत्तर देवायो नहि पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जो माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति होय ने आत्मनिष्ठा धर्म ने वैराग्य ए सामान्यपणे होय तोपण कोइ दिवस ए धर्ममांथी पडे नहि, केमजे जे भगवाननुं माहात्म्य जाणतो होय तेतो एम विचारे जे 'भगवाननी आज्ञाने विषे ब्रह्मादिक समग्र देव रह्याछे ते

१ कर्ण, जरासंधादिकमां पण धर्म हतो।

भगवाननी आज्ञा माराथी केम लोपाय? एम जाणीने भगवानना नियममां निरंतर रहे.

त्यारे शुकमुनिए पुछ्युं जे "ज्यारे एक माहात्म्ये सहित भक्तिए करीने संपूर्ण थाय त्यारे एक भक्तिज केम न कही ने चार वानां शासारुं कह्यां?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, 'अतिशय माहात्म्य सहित भक्ति भगवानने विषे होय तो एक भक्तिनेविषे त्रणे आवी जाय अने सामान्य भक्ति होय तो एकमां त्रण न आवे माटे 'चार वानांए सहित जे भक्ति ते जेमां होय ते एकांतिक भक्त कहेवाय' एम कह्युंछे. अने एवी असाधारण भक्तितो पृथुराजाने हती ते भगवाने वर देवानुं कह्युं त्यारे भगवाननी कथा सांभळ्या सारु दश हजार कान माग्या[2] पण बीजुं कांइ न माग्युं. अने जे गोपीयोने रासक्रीडामां न जवा दीधी ते देह मुकीने श्रीकृष्ण पासे गइ एवी असाधारण भक्ति होय तो ज्ञानादिक त्रणे एक भक्तिमां आवी जाय[3].

त्यारे *ब्रह्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "एवी असाधारण भक्ति शे उ*-पाये करीने आवे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मोटा पुरुषनी सेवाथकी आवेछे ते मोटा पुरुषपण चार प्रकारना छे–एकतो दीवा जेवा ने बीजा मशाल जेवा ने त्रीजा विजळी जेवा ने चोथा वड-वानळ अग्नि जेवा; तेमां दीवा जेवा होय तेतो विषयरूपी वायुए

१ भक्तितो असाधारण अने साधारण (परा ने अपरा) एवा भेदथी बे प्रकारनी छे तेमां। २ "विधत्स्व कर्णायुतमेप मे वरः" एम भागवतमां कह्युंछे। 'दश हजार काने करीने कथा श्रवण करवाथी जेटलो आनंद थाय तेटलो आनंद बे कानथी कथा श्रवण करवाथी थाय' आवो अभिप्राय समजवो। ३ जे पुरुषने सामान्यपणे भगवानमां भक्ति होय तेणे तो धर्मादिक त्रण अग सिद्ध करवा।

करीने ओलाइ जाय ने मशाल जेवा होय तेपण तेथी अधिक विषयरूपी वायु लागे तो तेणे करीने ओलाइ जाय ने विजळी जेवा जे होय तेतो मायारूपी वर्षादने पाणीए करीनेपण न ओलाय अने वडवानळ अग्नि जेवा होय ते तो जेम वडवानळ समुद्रमां रहेछे पण समुद्रना जळनो ओलाव्यो ओलातो नथी अने समुद्रना जळने पीइने मूळद्वारे काढी नाखेछे ते पाणी मीठुं थायछे तेने मेघ लावीने संसारमां वृष्टि करेछे तेणे करीने नाना प्रकारना रस थायछे, तेम एवा जे मोटा पुरुष छे ते समुद्रना जळ जेवा खारा जीव होय तेनेपण मीठा करी नाखेछे एवी रीते ए चार प्रकारना जे मोटा पुरुष कह्या तेमां जे विजळीना अग्नि जेवा तथा समुद्रना अग्नि जेवा मोटा पुरुष छे तेमनी सेवा जो पोतपोताना धर्ममां रहीने मन कर्म वचने करे तो ते जीवना हृदयमां माहात्म्य सहित भक्ति आवेछे ते विजळीना अग्नि जेवातो साधनदशावाळा भगवानना एकांतिक साधु छे अने वडवानळ अग्नि जेवातो सिद्धदशावाळा भगवानना परम एकांतिक साधु छे एम जाणवुं । इति वचनामृतम् ॥ ३ ॥ २०३ ॥

संवत् १८८२ ना मागशर शुदि १० दशमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरमां विराजमान हता अने अंगनेविषे सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो, त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भक्तिमार्गनेविषे प्रवर्त्यो एवो जे भगवाननो भक्त तेने एवुं एक साधन ते कयुं छे जे एक साधनने कर्याथकी जेटलां

कल्याणने अर्थे साधन छे ते सर्वे ते एक साधननेविषे आवी जाय?"
पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, त्रीश लक्षणे युक्त एवा जे संत तेनो जे संग ते मन कर्म वचने करीने राखे तो जेटलां कल्याणने अर्थे साधन छे तेटलां सर्वे तेना संगमां आवी जायछे.

एम उत्तर करीने पछी श्रीजिमहाराज प्रश्न पुछता हवा जे "भगवाननो एकांतिक भक्त एवो जे योगी होय ते सांख्यशास्त्र ने योगशास्त्र ए वेयनो मत एक वासुदेवनारायणपर छे एम जाणे माटे ते योगी कये प्रकारे भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखे? अने केम पोताना मनने चलावे ने ते मन भेळी केम मूर्तिने राखे? अने ते केवी रीते अंतरमां वृत्ति राखे? ने केवी रीते बारणे वृत्ति राखे? अने निद्रारूपी लय ने संकल्प विकल्परूपी विक्षेप तेथकी केवी योगनी कळाए करीने जुदो पडे'[1]?" एनो उत्तर कह्यो, पछी मुक्तानंदस्वामीए तथा गोपाळानंदस्वामीए जेवुं आवड्युं तेवुं कह्युं पण कोइथकी उत्तर थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,[2] जेम जळनो फुवारो होय तेने योगे करीने घुमरी खाइने जळ उंचुं उछळेछे तेम अंतःकरणरूपी जे फुवारो तेनेविषे जीवनी वृत्ति छे ते घुमरी खाईने पंच इंद्रियद्वारे उछळेछे तेने जे योगी होय ते बे प्रकारे करीने,[3] एक वृत्तिए करीनेतो पोताना हृदयनेविषे साक्षिरूपे रह्या एवा जे श्रीवासुदेवभगवान् तेनुं चिंतवन करे अने बीजी वृत्ति छे तेनेतो दृष्टिद्वारे करीने बहार राखे अने ते वृत्तिए करीने बहार भगवाननुं चिंतवन करे तेपण नखशिखापर्यंत समग्र मूर्तिनुं भेळुंज चिंतवन करे पण एकएक अंगनुं जुदुंजुदुं

१ एवी रीते छ प्रश्नो छे। २ पहेला त्रीजा अने चोथा प्रश्ननो उत्तर आपेछे। ३ एटले।

चिंतवन न करे जेम मोटुं मंदिर होय तेने एक सामटुं भेळुंज जुवे तथा जेम मोटो पर्वत होय तेने एक सामटो भेळोने भेळोज जुवे एवी रीते भगवानना स्वरूपने जुवे पण एक एक अंग न जुवे[1] अने ते मूर्तिने ज्यारे पोतानी दृष्टि आगळ छेटे धारे ने ते मूर्तिने पडखे बीजुं कांइक पदार्थ देखाय तो ते मूर्ति छेटे धारीछे तेने ढुंकडी लावीने पोतानी नासिकाना अग्रनी उपर ए मूर्तिने राखे एम करतांपण आसपास कांइक पदार्थ जणाय तो पोतानी भ्रुकुटिना मध्यनेविषे मूर्तिने धारे एम करतां जो आळस के निद्रा जेवुं जणाय तो वळी मूर्तिने दृष्टि आगळ छेटे धारे पछी जेम छोकरां पतंगने उडाडेछे तेवी रीते मूर्तिरूपी पतंगने पोतानी वृत्तिरूपी जे दोरी तेणेकरीने मूर्तिने उंची चढावे अने वळी पाछी हेठी लावे अने अडखे पडखे डोलावे एवी रीते योगकळाए करीने ज्यारे सचेत थाय त्यारे वळी पाछी मूर्तिने नासिकाने अग्रे धारे ने त्यांथी भ्रुकुटिमां लावीने हृदयनेविषे मूर्तिने उतारे अने अंतरनेविषे साक्षिरूप जे मूर्ति अने बहारनी मूर्ति ए बेयने एक करे पछी अंतःकरणनी बे प्रकारे वृत्ति होय ते एक थइ जायछे[2] एम करतां जो आळस के निद्रा जेवुं जणाय तो वळी बे प्रकारे वृत्तिने करीने मूर्तिने बहार लावे एवी रीते जे श्रोत्र, त्वक्, रसना अने घ्राण तेद्वारे पण योगकळा साधे अने तेमज मन, बुद्धि, चित्त अने अहंकार तेद्वारे पण भगवाननी मूर्तिने धारे अने इंद्रियो ने अंतःकरण ए सर्वेने सांख्य विचारे करीने जुदां करीने एकला चैतन्यने विषेज भगवाननी मूर्तिने धारे[3] अने ते भगवाननी मूर्तिने अंतरमां के बहार धारी होय अने ते समे कोइक व्यव-

१ बीजा प्रश्ननो उत्तर आपेछे । २ पांचमा प्रश्ननो उत्तर आपेछे । ३ छठा प्रश्ननो उत्तर आपे छे ।

हार संबन्धी विक्षेप आडा आवे तो ते विक्षेपतुंपण मूर्तिने धारवापणे करीनेज समाधान करे पण विक्षेपनेविषे पण पोतानी योगकळानो त्याग न करे एवी रीतनी योगकळाए युक्त ए योगी वर्तेछे। इति वचनामृतम् ॥ ४ ॥ २०४ ॥

संवत् १८८२ ना मागशर वदी ४ चतुर्थीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरथी उत्तर दिशे गोमतीजीने कांठे आंबाना वृक्ष हेठे वेदी उपर ढोलियानेविषे उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता ने अति सूक्ष्म एवां श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठनेविषे गुलाबना पुष्पना हार घणाक धारण कर्या हता अने श्रवण उपर मोटा बे बे गुलावना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता अने पाघनेविषे गुलावना पुष्पना तोरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ समग्र तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वांकडा वांकडा प्रश्न करो जे जेणे करीने सौनुं आळस उडी जाय एम कहीने पोते आथमणी कोरे उसीकुं करीने पडखाभर थया, पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥" ए श्लोकमां श्रीकृष्णभगवाने एम कह्युं छे जे 'जे पुरुष मने पामे ते दुःखे करीनेपण न तराय एवी जे मारी गुणमयी माया तेने तरेछे' त्यारे जेने भगवाननी प्राप्ति थइछे तेने भगवाननुं भजन करतां थकां कांइक अंतरमां संकल्प विकल्पनो विक्षेप थइ आवेछे तेने माया विना बीजुं कोण करतुं हशे ?" ए प्रश्न छे, पछी श्रीजिमहाराज पोढ्या हता ते बेठा थइने अति करुणाए भीनाथका बोलता हवा

जे, मायाना जे त्रण गुण छे तेमां तमोगुणनांतो पंच भूत ने पंच मात्रा छे अने रजोगुणनां दश इंद्रियो बुद्धि ने प्राण छे अने सत्त्वगुणनां मन ने इंद्रियो अंतःकरणना देवता छे ते जेजे भक्त थइ गया छे ते सर्वेमां ए त्रण गुणना कार्यरूप जे भूत इंद्रियो अंतःकरण ने देवता ते सर्वे हतां माटे एनो एम उत्तर छे जे, परमेश्वरने यथार्थपणे करीने परमेश्वर जाण्या जे 'ए भगवानना स्वरूपनेविषे कोइ प्रकारे मायिक भाव नथी अने ए भगवानतो माया ने मायानुं कार्य जे त्रण गुण तेथकी पर छे' एवो जेने भगवाननो दृढ निश्चय थयो ते भगवाननी मायाने तरी चुक्यो छे अने पोतामांतो मायाना गुणनुं कार्य जे भूत इंद्रियो अंतःकरण ने देवता ते पोतपोतानी क्रियानेविषे प्रवर्तेछे तो-पण ए मायाने तर्यो कहेवाय केमजे ए मायानुं कार्य पोताने विषेतो होय पण पोताने भजन करवा योग्य एवा जे प्रकट प्रमाण श्रीवासुदेवभगवान् तेनेतो ए मायाना गुणथी पर समझेछे माटे एनेपण मायाथी परज जाणवो. अने ब्रह्मादिक देव ने वसिष्ठ पराशर विश्वामित्रादिक ऋषि ए सर्वेमां गुणनो प्रवेश जणाणोछे ते शास्त्रमां पण लख्युंछे माटे ते शुं मुक्त न कहेवाय? ने मायाने तर्या न कहेवाय? सर्वे मुक्त छे ने सर्वे मायाने तर्या छे. अने एम जो उत्तर न करीए तो ए प्रश्ननुं समाधान थाय नहि माटे एज उत्तर छे.

पछी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! भगवानने आशरे जवुं ते आशरानुं शुं रूप छे?[१]" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवाने गीतामां कह्युं छे जे "सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥" ए

१ शरणागतनुं लक्षण शुं छे? एवो प्रश्नार्थ समझवो।

श्लोकमां एम कह्युं छे जे 'बीजा सर्व धर्मनो परित्याग करीने मारे एक-
नेज शरणे आव्य तो हुं तने सर्व पापथकी मुकावीश तुं शोक मां
कर्य" अने एवो जे भगवाननो दृढ आश्रय ते जेने होय तेने महाप्रलय
जेवुं दुःख आवी पडे तोपण ते दुःखथकी रक्षानो करनारो भगवान्
विना बीजाने न जाणे अने जेजे पोताने सुख जोइतुं होय तेपण भग-
वान् थकीज इच्छे पण प्रभु विना बीजाने सुखदायक न जाणे ने
प्रभुनी जेम मरजी होय ते प्रमाणेज वर्ते एवो जे होय ते प्रभुनो शर-
णागत जीव कहेवाय अने तेज भगवाननो अनन्य भक्त कहेवाय.

पछी नाजे भक्ते पुछ्युं जे "जेने परिपूर्ण भगवाननो आशरो न
होय ने बोल्यामां तो नक्कि हरिभक्त होय तेना जेवुंज निश्चयनुं बळ
देखाडतो होय ते शी रीते करीने कळ्यामां आवे?" पछी श्रीजिम-
हाराज बोल्या जे, भगवानना भक्तनो सरस नरस निश्चय होय तेतो
भेळा रह्याथकी अने भेळो व्यवहार कर्याथकी जेवो होय तेवो कळाइ
आवेछे पछी जेने थोडो निश्चय होय ते कचवाइने सत्संगना भिडा-
मांथी भाग दइने एकांत पकडीने जेवुं थाय तेवुं भजन करे पण हरि-
भक्तनी भिसणमां रहेवाय नहि माटे भगवाननो आशरो पण उत्तम
मध्यम ने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारनो छे अने तेणे करीने भक्तपण त्रण
प्रकारना छे.

पछी वळी नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "ए कसर मटीने
कनिष्ठ होय ते आ जन्मनेविषेज उत्तम भक्त थाय के न थाय?" पछी
श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम भगवाननी मानसी पूजा करे तेमज जे
उत्तम हरिभक्त होय तेनीपण भगवाननी प्रसादीए करीने भगवान

१ श्रीकृष्णभगवाने कहेला प्रपन्नभक्तना लक्षणमां जे न्यूनता छे ते पोते पुरेछे।

मेळी मानसी पूजा करे अने जेम भगवानने अर्थे थाळ करे तेमज उत्तम जे भगवानना भक्त तेने अर्थेपण थाळ करीने तेने जमाडे अने जेम भगवानने अर्थे पांच रुपीयानुं खरच करे तेमज ते मोटा संतने अर्थेपण खरच करे एवी रीते भगवान् ने उत्तम लक्षणवाळा जे संत तेनी अतिप्रेमे करीने सरखी सेवा जे करे तो ते कनिष्ठ भक्त होय ने ते बे जन्मे तथा चार जन्मे तथा दश जन्मे के सो जन्मे करीने उत्तम भक्त जेवो थनारो होय ते आने आ जन्मे करीने उत्तम भक्त थायछे एवुं भगवान् ने ते भगवानना भक्त तेनी सरखी सेवा कर्यानुं फळ छे । इति वचनामृतम् ॥ ५ ॥ २०५ ॥

संवत् १८८२ ना मागशर वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिर आगळ मंच उपर विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने कंठनेविषे पुष्पना हार धारण कर्या हता ने पाघनेविषे पुष्पना तोरा लटकता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी चिमनरावजीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! जीव ज्यारे प्रथम प्रलयकाळे कारणशरीरे युक्तथका मायानेविषे लीन हता पछी सृष्टि समयनेविषे ए जीवोने स्थूळ सूक्ष्म देहनी प्राप्ति थइ तथा देव मनुष्य पशु पक्षी आदिक रूप जे विचित्रपणुं थयुं ते कर्मे करीने थयुं? अथवा भगवाननी इच्छाए करीने थयुं? अने जो कर्मे करीने थयुं एम कहीए तो जैन मतनी सत्यता थाय[१] अने जो भगवाननी इच्छाए करीने थयुं एम कहीए तो भगवाननेविषे विषमपणुं ने निर्दयपणुं आवे

१ केमके तेओ केवळ कर्मबीज जगतनी उत्पत्ति कहेछे ।

माटे ए जेवी रीते होय तेवी रीते कृपा करीने कहो !" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए प्रश्न तमने पुछतां आवड्यो नहि केमजे जे कारण शरीर छे तेनेविषे स्थूळ सूक्ष्म ए जे बे देह ते बीजवृक्षन्याये करीने रह्या छे माटे एने कारण शरीर कहेछे अने ए जे कारण शरीर छे ते अविद्यात्मक छे ने अनादि छे ने संचितकर्मे युक्त छे अने जेम बीजने ने फोतराने नित्य संबन्ध छे अने भूमिने ने गंधने जेम नित्य संबन्ध छे तेम जीवने ने कारण शरीरने नित्य संबन्ध छे अने जेम पृथ्वीने विषे बीज रह्यांछे ते वर्षाकाळे जळना योगने पामीने उगी निसरेछे तेम मायानेविषे कारण शरीरे युक्त थका रह्या एवा जे जीव ते उत्पत्तिकाळनेविषे फळप्रदाता एवा जे परमेश्वर तेनी दृष्टिने पामीने पोतपोताना कर्मने अनुसारे नाना प्रकारना देहने पामेछे[1]. अने ना-

१ अभिप्राय एटलो छे के—जेम बीज, पृथ्वी जळादिकना संबन्ध विना अंकुरित थतुं नथी परंतु तेनो संबन्ध थवाथीज अंकुरित थायछे माटे अंकुर थवामां पृथ्वी जळादिक साधारण कारण गणायछे. अंकुरोमां जे विचित्रता लावनी ते पृथ्वी जळादिकमां नथी परंतु पोतपोताना बीजमांज छे माटे विचित्रतामां स्वस्वबीजज विशेष कारण गणायछे एटले आम्रादिक प्रत्येक बीजना अंकुरोमां पृथ्वी जळादिक साधारण छे परंतु जेवुं बीज होय तेवीज अंकुरोमां विचित्रता आवेछे. 'ज्यांसुधी साधारण कारणथी निर्वाह थतो होय त्यांसुधी पृथ्वी जळादिकने विशेष कारण कल्पवानी जरुर नथी' एवो न्याय छे. एवी रीते जगतनी सृष्टि परमात्मानी इच्छा विना थती नथी परंतु तेमनी इच्छाथीज थायछे माटे सृष्टि थवामां परमात्मा कारण छे पण तेमां जे देव-मनुष्यादि अने सुखी दुःखी आदिक विचित्रता थइ तेमां परमात्मा कारण नथी तेमां तो जीवगत जे अनादि कर्मविशेष तेज विशेष कारण छे माटे परमात्मामां पक्षपात के निर्दयतारूप दोष नथी. तेमां व्याससूत्र छे के—"वैषम्यनैर्घृण्ये न सापेक्षत्वात्तथाहि दर्शयति ॥" अर्थः—परमात्मामां कोइने देव तो कोइने मनुष्य तो कोइने पशु तो कोइने स्थावर योनि आपीने उत्कृष्ट मध्यम अने कनिष्ठ भाव करवाथी

स्तिक एवा जे जैन छे तेतो केवळ कर्मनेज कर्ता कहेछे पण परमेश्वरने कर्मफळप्रदाता नथी कहेता ते नास्तिकनो मत खोटो छे[1] माटे एकलुं काळनुंज बळ कोइ कहे तेपण प्रमाण नहि ने एकलुं कर्मनुं बळ कोइ कहे तेपण प्रमाण नहि ने एकलुं परमेश्वरनी इच्छानुं बळ कोइ कहे तेपण प्रमाण नहि एतो जे समे जेनुं प्रधानपणुं होय ते समे शास्त्रमां तेनुंज प्रधानपणुं कह्युं होय पण सर्व ठेकाणे एनुं ए लेवुं नहि,

---

पक्षपात के अतिघोर दुःखयोग करवाथी निर्दयता नथी, केमके तेमां परमात्माने कर्मनी अपेक्षा छे–विषमसृष्टिमां सृज्यमान जे क्षेत्रज्ञो तेमना कर्मनी अपेक्षा छे एटले तेमना तेमना कर्मने अनुसारे तेवी तेवी योनि अने सुख दुःख आपेछे माटे वैषम्य नैर्घृण्य नथी. कर्मनी अपेक्षा नहि राखीने स्वेच्छाथीज विचित्र सृष्टि करे तो वैषम्य नैर्घृण्य आवे, तेम तो करता नथी. विषमतामां कर्मज विशेष कारण छे एम श्रुतिपण बतावेछे—"**साधुकारी साधुर्भवति पापकारी पापो भवति पुण्यः पुण्येन कर्मणा पापः पापेन कर्मणा ॥**" इत्यादि। देवादि विचित्रभावमा प्रधान कारण तो सृज्यमान क्षेत्रज्ञोनी प्राचीन कर्मशक्ति छे, परमात्मा तो निमित्तमात्र छे एम पराशरमुनि पण कहेछे—"**निमित्तमात्रमेवासौ सृज्यानां सर्गकर्मणि। प्रधानकारणीभूता यतो वै सृज्यशक्तयः॥ निमित्तमात्रं मुक्त्वैव नान्यत्किञ्चिदपेक्षते। नीयते तपतां श्रेष्ठ स्वशक्त्या वस्तु वस्तुताम् ॥**" (क्षेत्रज्ञो अने तेमना कर्मप्रवाहो अनादि छे माटे सृष्टिसमयमां कर्मनो विभाग न हतो, एवी शंकानो अवकाश नथी) उक्त हेतुथीज परमात्मा श्रीकृष्णभगवान् पोताने कर्ता थका अकर्ता कहेछे—"**चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥**" जेम राजा प्रजाने निग्रहानुग्रह करेछे तेमां पोते कर्ता छे तथापि तेमना कर्मने अनुसारे करेछे तेथी राजा अकर्ता छे एटले राजामां विषमता अने निर्दयतारूप दोष नथी तेम परमात्मा कर्ता थका अकर्ता छे. एटले वैषम्य नैर्घृण्य नथी।

१ हवे मतभेदथी कहेली काळादिकनी स्वतंत्र कर्तृतानो निषेध करीने तेमनी केवी कर्तृता छे तेनो प्रकार युक्तिथी प्रतिपादन करेछे।

केमजे ज्यारे प्रथम आ विश्व रच्युं त्यारे प्रथमनो जे सत्ययुग तेनेविषे सर्वे मनुष्यना संकल्प सत्य थता अने सर्वे ब्राह्मण हता अने मनमां संकल्प धारे त्यारे संकल्पमात्रे करीनेज पुत्रनी उत्पत्ति थती अने सौने घेर कल्पवृक्ष हतां अने जेटलां मनुष्य हतां ते सर्वे परमेश्वरनुंज भजन करतां अने ज्यारे त्रेतायुग आव्यो त्यारे मनुष्यना संकल्प सत्य रह्या नहि ज्यारे कल्पवृक्ष हेठे जाय त्यारे सत्य संकल्प थाय अने स्त्रीनो स्पर्श करे त्यारे पुत्रनी उत्पत्ति थाय अने ज्यारे द्वापरयुग आव्यो त्यारे स्त्रीनो अंगसंग करे त्यारे पुत्रनी उत्पत्ति थाय अने एवी रीते जे सत्ययुग त्रेतायुगनी रीत ते सर्वे सत्ययुग त्रेतायुगमां न होय एतो प्रथम सत्ययुग ने प्रथम त्रेतायुग हता तेमां हती एवी रीते ज्यारे शुभ काळ बळवानपणे प्रवर्ते त्यारे जीवना अशुभ कर्मना सामर्थ्यने न्यून करी नाखेछे अने ज्यारे अतिशय दुर्भिक्ष वर्ष आवे त्यारे सर्वे प्रजाने दुःख आवे अथवा भारे लडाइ थाय त्यारे लक्षावधि माणस एककाळे मराइ जायछे त्यारे शुं बधायनुं एकभेळे शुभ कर्म खुटी गयुं? एतो अशुभ काळनीज अतिशय सामर्थि छे तेणे जीवना शुभकर्मना बळने हठावी दीधुं माटे ज्यारे बळवान् काळनो वेग प्रवर्ते त्यारे कर्मनो मेळ रहे नहि कर्ममां सुख लख्युं होय ते दुःख थइ जाय ने कर्ममां जीववुं लख्युं होय ते काळे करीने मरी जाय एवी रीते ज्यारे बळवान् काळनो वेग होय त्यारे काळे करीनेज सर्व थायछे एम शास्त्रमां लख्युं होय अने ज्यारे घणाक मनुष्य भगवानना एकांतिक भक्त थायछे त्यारे कळियुगनेविषे पण सत्ययुग थायछे ए ठेकाणे एकांतिक भक्तनां जे भगवाननी भक्ति संबंन्धि शुभकर्म तेनुं जोर शास्त्रमां कह्युं होय पण काळनुं जोर कह्युं न होय ते वार्ताने जाण्या-

विना नास्तिक मतवाळा छे ते केवळ कर्मनेज सर्व कर्ता कहेछे पण एम नथी जाणता जे एतो भगवानना एकांतिक जे भक्त तेना कर्मनुं सामर्थ्य कह्युं छे पण विमुख जीवना कर्मनुं एवुं सामर्थ्य कह्युं नथी. अने ज्यारे भगवान् एवो संकल्प धारीने प्रकट थायछे जे 'आ देहे करीनेतो पात्र कुपात्र जेजे जीवने मारी मूर्तिनो योग थाय ते सर्वेनुं कल्याण करवुं छे' त्यारे काळनुं ने कर्मनुं कांइ सामर्थ्य रहे नहि त्यारेतो एकलुं परमेश्वरनुंज सामर्थ्य रहेछे, ते ज्यारे भगवाने कृष्णावतार धार्यो त्यारे महापापणी जे पूतना तेणे भगवानने झेर पायुं तेने श्रीकृष्णभगवाने पोतानी माता जे यशोदाजी ते बरोबर गति आपी अने बीजापण महापापी दैत्य हता ते भगवानने मारवा आव्या हता तेनेपण श्रीकृष्णभगवान् परमपद आपता हवा ने बीजापण जेजे भावे करीने श्रीकृष्णभगवानना संबन्धने पाम्या ते सर्वेनुं कल्याण कर्युं माटे ए ठेकाणेतो परमेश्वरनुंज बळ अतिशय कह्युं छे पण काळनुं के कर्मनुं कांइ सामर्थ्य नथी कह्युं माटे जे ठेकाणे जेवुं प्रकरण ते ठेकाणे तेवुं जाणवुं । इति वचनामृतम् ॥ ६ ॥ २०६ ॥

संवत् १८८२ ना मागशर वदी १४ चौदशने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरनी आगळ मंच उपर विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने हरिभक्त परस्पर भगवद्वार्ता करता हता तेमां एवो प्रसंग निसर्यो

१ 'जिघांसयाऽपि हरये स्तनं दत्त्वाप सद्गतिम्'. भा. द. अ. ६ मां कथा छे।
२ 'वैरेण यं नृपतयः शिशुपालपौण्ड्रशाल्वादयो...तत्साम्यमापुः' भा. ए. अं. ५ श्लो. ४८ मां कह्युं छे.

जे दैवी ने आसुरी ए बे प्रकारना जीव छे तेमां दैवी जीव होय तेतो भगवानना भक्तज थाय ने आसुरी होय तेतो भगवानथी विमुखज रहे, त्यारे चिमनरावजीए श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज ! आसुरी जीव होय ते कोइ प्रकारे दैवी थाय के न थाय ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, [3] आसुरी जीवतो दैवी नज थाय केमजे एतो जन्मथीज आसुर भावे युक्त छे अने जो कोइक रीते करीने आसुरी जीव सत्संगमां आवी पड्यो तोपण आसुर भावतो टळे नहि पछी सत्संगमां रह्यो थकोज ज्यारे शरीरने मुके त्यारे [4]ब्रह्मनेविषे लीन थाय ने वळी पाछो निकळे[5] एम अनंत वार ब्रह्ममां लीन थाय ने पाछो निसरे त्यारे एनो आसुरभाव छे ते नाश पामे पण ते विनातो[6] आसुरभाव नाश पामे नहि.

पछी शोभाराम शास्त्रीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज ! भगवाननुं[7] अन्वयपणुं केम छे ने व्यतिरेकपणुं केम छे ?" पछी श्रीजिमहाराज

---

१ "**अभयं सत्त्वसंशुद्धिः**"इत्यादि वचनथी श्रीकृष्णभगवाने कहेली दैवी संपदाए युक्त अथवा विष्णुभक्तिपरायण। २ "**दंभो दर्पोऽभिमानश्च**" इत्यादि वचनथी गीतामा कहेली आसुरी संपदाए युक्त अथवा विष्णुभक्तिथी विमुख 'जे विष्णुभक्ति परायण छे ते दैवी अने जे तेथी विपरीत छे ते आसुरी' एम अग्निपुराणमा कह्युं छे–"**द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च। विष्णुभक्तिपरो दैव आसुरस्तद्विपर्ययः॥**" इति। ३ आसुरी जीवो दैवी थवा दुर्लभ छे, तेओ बे प्रकारना छे–एक जन्मथीज आसुरभावे युक्त छे अने बीजा आसुरसंगथी आसुरभावे युक्त छे. तेमा जे बीजा छे तेतो उत्तम सत्पुरुषनी निष्कपट सेवा करवाथी अने सधर्म नवधा भक्ति करवाथी आसुरभाव त्याग करीने दैवी थायछे अने जन्मथी। ४ अक्षरब्रह्मप्रकाशमां। ५ भगवाननी इच्छाथी नीकळीने भक्ति करीने फरीथीपण तेमां लीन थाय। ६ बीजा कोइ उपायथी। ७ माया अने मायाना कार्यमा.

बोल्या जे, अन्वयव्यतिरेकनी वार्ता तो एम छे जे, भगवान् अर्वाक मायानेविषे अन्वय थयाछे ने अर्वाक पोताना धामनेविषे व्यतिरेक रह्या छे एम नथी एतो भगवाननुं स्वरूपज एवुं छे जे मायामां अन्वय थया थकापण व्यतिरेकज छे पण भगवानने एम बीक नथी जे 'रखे हुं मायामां जाउं ने अशुद्ध थइ जाउं' भगवानतो मायानेविषे आवे त्यारे मायापण अक्षरधामरूप थइ जायछे अने चोविश तत्त्वनेविषे आवे तो चोविश तत्त्वपण ब्रह्मरूप थइ जायछे, ते श्रीमद्भागवतमां कह्युंछे जे "धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि" इत्यादिक अनंत वचने करीने भगवानना स्वरूपनुं प्रतिपादन कर्युं छे अने जेम वृक्षनुं बीज होय तेमांपण आकाश छे पछी ए बीजमांथी वृक्ष थयुं त्यारे ते वृक्षनां डाळ, पानडां, फुल, फळ ए सर्वनेविषे आकाश अन्वय थयो पण ज्यारे वृक्षने कापे त्यारे वृक्ष कपाय ते भेळो आकाश कपाय नहि अने वृक्षने बाळे त्यारे आकाश बळे नहि तेम भगवान्‌पण माया ने मायानुं कार्य तेनेविषे अन्वय थया थकापण आकाशनी पेठे व्यतिरेकज छे एम भगवानना स्वरूपनुं अन्वय व्यतिरेकपणुं छे। इति वचनामृतम् ॥ ७ ॥ २०७ ॥

संवत् १८८२ ना पोष शुदि ४ चोथने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरनी आगळ मंच उपर विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ जेम भगवानने अक्षरधाम अबंधक छे तेम मायापण अबंधक छे एवुं तात्पर्य आ स्थळे समजवुं. ब्रह्मरूप शब्दनुंपण तेवुंज तात्पर्य समजवुं।

अने मुनि दुकड सरोदा लइने कीर्तन गावता हता ते समे श्रीजि-महाराजे अंतर्दृष्टि करीने ध्यान मुद्राए युक्त थइने थोडीक वार दर्शन दीधां ने पछी नेत्रकमळने उघाडीने सर्वे सभा सन्मुख जोइने बोल्या जे हवे सर्वे सांभळो वार्त करीए छीए जे, आ नेत्रनी जे वृत्ति ते अरूप[2] छे तोपण ते वृत्तिने आडुं कोइक स्थूळ पदार्थ आवे त्यारे ते वृत्ति रोकायछे माटे ए वृत्तिपण स्थूळ छे ने पृथ्वीतत्त्व प्रधान छे ने ते वृत्तिने ज्यारे परमेश्वरनो भक्त परमेश्वरना स्वरूपमां राखेछे त्यारे ते वृत्ति प्रथमतो पातळी दोरडीनो पेठे पीळी[3] भासेछे. अने जेम करोळीयो होय ते पोतानी लाळने एक स्तंभथी बीजा स्तंभसुधी लांबी करे पछी ए करोळीयो क्यारेकतो आ स्तंभ उपर जाय ने क्यारेक ओ स्तंभ उपर जाय ने क्यारेक बे स्तंभने मध्ये बेसे, तेम करोळीयाने ठेकाणे जीव छे ने एक स्तंभने ठेकाणे भगवाननी मूर्ति छे ने बीजा स्तंभने ठेकाणे पोतानुं अंतःकरण छे ने लाळने ठेकाणे वृत्ति छे ते द्वारे करीने ध्याननो करनारो जे योगी ते क्यारेकतो भगवानना स्वरूप संघाथे संलग्न थइ रहेछे ने क्यारेकतो अंतःकरणनेविषे रहेछे ने क्यारेकतो अंतःकरण ने भगवान् तेना मध्ये रहेछे एम वर्ततां थकां पृथ्वीतत्त्व प्रधान एवी जे पीळी वृत्ति ते ज्यारे जळतत्त्व प्रधान थाय त्यारे श्वेत जणाय ने ज्यारे अग्नितत्त्व प्रधान थाय त्यारे रक्त जणाय ने ज्यारे वायुतत्त्व प्रधान थाय त्यारे लीली जणाय ने ज्यारे आकाशतत्त्व प्रधान थाय त्यारे श्याम जणाय पछी पंच भूतनुं प्रधानपणुं मटीने वृत्ति निर्गुण थाय त्यारे अतिशय प्रकाशे युक्त जणायछे ने भगवानना स्वरूपने आकारे थायछे माटे एवी

१ अध्यात्मवार्ता । २ अरूप जेवी जणायछे,' एवो वाक्यार्थ समजवो । ३ अने लांबी ।

रीते जे भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखतो होय तेने अतिशय पवित्रपणे रहेवुं, जेम देवने पूजवाने तत्पर थाय ते देव सरखो पवित्र थइने जो देवनी पूजा करे त्यारे तेनी पूजाने देव अंगीकार करेछे तेम परमेश्वरनेविषे वृत्ति राखतो होय तेनेपण सांख्यशास्त्रनी रीते करीने स्थूळ सूक्ष्म ने कारण ए त्रण देहथी पोतानुं स्वरूप न्यारुं जाणीने केवळ आत्मारूप थइने परमेश्वरना स्वरूपनेविषे वृत्ति राखवी पछी एम वृत्ति राखतां राखतां ज्यारे ए वृत्ति भगवानना स्वरूपमां लीन थइ जाय एज ध्यान करनारा योगीने निद्रा कहीछे पण सुषुप्तिमां लीन थवुं एवी ए योगीने निद्रा होय नहि। इति वचनामृतम् ॥ ८ ॥ २०८ ॥

संवत् १८८२ ना पोष शुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरनी आगळ मंच उपर गादी तकिया बिछवावीने विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे मुनिमंडळ समस्त प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "राजसी तामसी ने सात्त्विकी ए त्रण प्रकारनुं जे मायिक सुख ते जेम त्रण अवस्थानेविषे[1] जणायछे तेम निर्गुण एवुं जे भगवान् संबन्धि सुख ते केम जणायछे?" पछी ए प्रश्ननो उत्तर मुनिमंडळ समस्त मळीने करवा मांड्यो पण एनुं समाधान थयुं नहि पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, पृथ्वी आदिक चार भूत विना एकलोज आकाश होय अने जेटला आकाशनेविषे तारा छे तेटला चंद्रमा होय ने तेनो जेवो प्रकाश थाय तेवो चिदाकाशनो[2] प्रकाश छे अने ते चिदाकाशने मध्ये सदाय

१ भगवानना भक्तने त्रण अवस्थामां। २ अक्षरधाम।

भगवाननी मूर्ति विराजमान छे ते मूर्तिनेविपे ज्यारे समाधि थाय त्यारे एक क्षणमात्र भगवानना स्वरूपमां स्थिति थइ होय ते भजनना करनाराने एम जणाय जे 'हजारो वर्षपर्यंत में समाधिनेविपे सुख भोगव्युं' एवी रीते भगवानना स्वरूपसंबन्धि जे निर्गुण सुख ते जणायछे अने जे मायिक सुख छे ते बहुकाळ भोगव्युं होय तोपण अंते क्षण जेवुं जणायछे माटे भगवानना स्वरूपसंबन्धि जे निर्गुण सुख छे ते अखंड अविनाशि छे ने जे मायिक सुख छे ते नाशवंत छे । इति वचनामृतम् ॥ ९ ॥ २०९ ॥

संवत् १८८२ ना पोष शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्ष हेठे पाट उपर गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता अने अंगनेविपे सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समयमां गाम भादरणना पाटीदार भगुभाइ आव्या तेणे श्रीजिमहाराज प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! जीवनुं कल्याण केम थाय?" पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे, आ पृथ्वीनेविपे राजारूप ने साधुरूप ए बे प्रकारे भगवानना अवतार थायछे तेमां राजारूपे ज्यारे पृथ्वी उपर प्रकट थाय त्यारेतो ते ओगणचाळीश लक्षणे युक्त होय अने ज्यारे साधुरूपे पृथ्वी उपर प्रकट थाय त्यारेतो त्रीश प्रकारने लक्षणे युक्त होय[1] अने जे राजारूपे भगवान् होय तेतो चोसठ प्रका-

१ ते बन्ने लक्षणो कल्याणने इच्छता पुरुषे प्रथम जाणवा अने आ लोकमा साधुरूप ने राजारूप अवतारोनुं देहक्रियाथी तो साधर्म्य नथी पण आश्रितजनोनुं कल्याण करवामातो साधर्म्य छे ।

रनी कळाए युक्त होय तथा साम दान भेद दंड ए चार प्रकारना जे उपाय तेणे युक्त होय तथा शृंगार आदिक जे नव रस तेणे युक्त होय अने ते भगवान् ज्यारे साधुरूपे होय त्यारे तेमां ए लक्षण होय नहि अने जे राजारूपे भगवान् होय तेने जो आपत्काळ आव्यो होय तो मृगया करीनेपण जीवे अने चोर होय तेने गर्दनपण मारे अने घरमां स्त्रीयोपण राखे अने साधुरूपे भगवान् होय[1] तेतो अतिशय अहिंसापर वर्ते ते लीला तृणनेपण तोडे नहि अने काष्ठनी तथा चित्रामणनी स्त्रीनोपण स्पर्श करे नहि[2] माटे साधुरूप जे भगवाननी मूर्ति ने राजारूप जे भगवाननी मूर्ति ए बेनी रीति एक होय नहि अने श्रीमद्भागवतना प्रथमस्कंधनेविषे पृथ्वी ने धर्मना संवादे करीने राजारूप जे श्रीकृष्णादिक भगवानना अवतार तेनां ओगणचाळीश लक्षण कह्यां छे अने एकादशस्कंधनेविषे श्रीकृष्णभगवान् ने उद्धवना संवादे करीने साधुरूप जे दत्तात्रेय कपिल आदिक भगवानना अवतार तेनां त्रीश लक्षण कह्यांछे माटे जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं तेने तेते लक्षणे करी ते भगवानने ओळखीने ते भगवानने शरणे थवुं अने तेनो दृढ विश्वास राखवो ने तेनी आज्ञामां रहीने तेनी भक्ति करवी एज कल्याणनो उपाय छे. अने भगवान् ज्यारे पृथ्वीनेविषे प्रत्यक्ष न होय त्यारे ते भगवानने मळेला जे साधु तेनो आश्रय करवो तो तेथकीपण जीवनुं कल्याण थायछे. अने ज्यारे एवा साधुपण न होय त्यारे भगवाननी प्रतिमानेविषे दृढ प्रतीति राखवी ने स्वधर्ममां रहीने भक्ति करवी तेथकी पण जीवनुं कल्याण थायछे । इति वचनामृतम् ॥ १० ॥ २१० ॥

१ तेमा सर्वे योगकळाओ होय तथा त्याग ने अष्टांगयोग होय अने रसतो एक शांत नामनोज होय अने । २ अने भगवानमां दृढ भक्ति होय ।

संवत् १८८२ ना पोष शुदि १५ पुन्यमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्ष हेठे पाट उपर गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठनेविषे श्वेत पुष्पना हार पहेर्या हता ने कर्णनी उपर पुष्पना गुच्छ खोश्या हता ने पाघनेविषे पुष्पना तोरा लटकता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ समस्त तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,' अमारोतो एवो स्वभाव छे जे एकतो भगवान् ने बीजा भगवानना भक्त ने त्रीजा ब्राह्मण ने चोथो कोइक गरीब मनुष्य ए चारथीतो अमे अतिशय बीये छीए जे 'रखे एमनो द्रोह थइ जाय नहि' अने एवातो बीजा कोइथी अमे बीता नथी केमजे ए चार विना बीजानो कोइक द्रोह करे तो तेना देहनो नाश थाय पण जीव नाश पामे नहि अने ए चारमांथी एकेनो जो द्रोह करे तो तेनो जीवपण नाश पामी जायछे.

ए वातने सांभळीने मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! जीवतो अविनाशी कह्योछे तेनो नाश ते केम जाणवो?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, पर्वतनुं के बीजुं एवुंज जे कोइक जड देह आवे तेमां कोइ काळे जीवनुं कल्याण थाय नहि एटले एना जीवनो नाश थइ गयो एम जाणवुं माटे जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं तेने ए चारमांथी कोइनो द्रोह न करवो. अने वळी भगवान् के भगवानना भक्त ते आगळ कोइ प्रकारे मान राखवुं नहि केमजे मान छे तेतो क्रोध मत्सर ईर्ष्या ने द्रोह एनो आधार छे अने मानी होय

१ मारा आश्रित जनोए भगवान्, भगवानना भक्त, ब्राह्मण अने रांक जन तेमनो क्यारेयपण द्रोह करवो नहि केमके ।

तेनी भक्तिपण आसुरी कहेवाय. अने भगवानना भक्तने जो विचरावतो होय ने ते प्रभुनो भक्त होय तोपण तेने असुर जाणवो. अने अमारोतो ए स्वभाव छे जे ब्राह्मणनो ने गरीबनो ने भगवानना भक्तनो कोइक द्रोह करे तेतो अमने दीठोज गमे नहि अने आ लोकमां ने परलोकमां तेने ने अमारे सोबत रहेवानी नथी, एटली वार्ता करीने पछी श्रीजिमहाराजे बे पद गवराव्यां जे "मारा हरजिशुं हेत न दीसेरे तेने घेर सीद जइए" एकतो ए. अने बीजुं जे "मारा वहालाजिशुं वहालप दीसेरे तेनो संग केम तजिए" अने पछी ए बे पद शीख्यानी सत्संगीमात्रने आज्ञा करीने एम कह्युं जे 'ए बे पदमां वार्ता छे तेने नित्य गाइने संभारी राखवी.'

एम कहीने श्रीजिमहाराज श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिर आगळ एक मंच हतो ते उपर आवीने विराजमान थया. पछी गोपाळानंदस्वामीए पुछ्युं जे "आ संसारनेविषे जे पंडित छे ते शास्त्र पुराण सर्वे वांचेछे पण तेने भगवाननो ने संतनो जेम छे तेम महिमा केम समझातो नथी?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, शास्त्र पुराण वांचेछे तो खराः पण एने भगवाननो आशरो नथी माटे काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, मत्सर तेणे एना जीवने हरवी नांख्यो छे अने कामादिक जे शत्रु ते एने कोइ काळे माथुं उपाडवा देता नथी पछी ते पंडित पोतानी पेठेज भगवान् ने भगवानना संतने समझे जे 'जेम अमारा कामादिक शत्रु कोइ काळे निवृत्ति पामता नथी तेम एनापण कामादिक शत्रु निवृत्ति नहि पामता होय' एम भगवान् ने भगवानना संतनेविषे दोष समझे माटे शास्त्र पुराण वांचे पण एने भगवान् के भगवानना संतनुं जेम छे तेम यथार्थ माहात्म्य समझातुं नथी.

पछी श्रीजिमहाराजे दीनानाथ भट्ट तथा मुनिमंडळ समस्त प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "ब्रह्मस्वरूप एवा जे सत्पुरुष तेतो त्रण शरीर ने त्रण अवस्था तेथकी पर वर्तता होय अने चौद इंद्रियोनी क्रिया ते पोताने विषे एके मानता न होय तेने अज्ञानी जीव छे ते ओळखी शके नहि. अने ज्यारे एने मोटा पुरुषना सरखी स्थिति थाय त्यारे ए मोटा पुरुष जेम वर्तेछे ते सत्य मनाय अने ज्यांसुधी ए सत्पुरुषनो महिमा एने न जणाय त्यांसुधी ब्रह्मस्वरूपनेविषे स्थितिपण न थाय ने आत्मानेविषे स्थिति थया विना सत्पुरुषनो महिमापण न जणाय माटे परस्पर विरोध आव्यो ते विरोध टळे ते उपाय कहो?" पछी जेनी जेवी नजर पुगी तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण ए प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीए एनो उत्तरतो ए छे जे, पृथ्वीनेविषे जे भगवाननो अवतार तेने मळेला जे संत ते संघाथे ज्यारे एने अतिशय प्रीति थाय त्यारे ए सत्पुरुषनेविषे एने कोइ प्रकारे दोष भासे नहि. अने जेने जे संघाथे दृढ हेत होय तेने तेनो अवगुण कोइ प्रकारे आवेज नहि अने तेनां वचनपण सत्य मनाय एवी रीते लौकिक मार्गमां पण रीति छे अने कल्याणना मार्गमांपण रीति छे माटे सत्पुरुषनेविषे दृढ प्रीति एज आत्मदर्शननुं साधन छे अने सत्पुरुषनो महिमा जाण्यानुं पण एज साधन छे अने परमेश्वरनुं साक्षात् दर्शन थवानुं पण एज साधन छे। इति वचनामृतम् ॥ ११ ॥ २११ ॥

संवत् १८८२ ना पोष वदी २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्ष तळे पाट उपर गादी तकीये युक्त ढोलीयो हवो ते उपर

विराजमान हता अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने मांहिली कोरे श्वेत पछेडीए युक्त गुलाबी रंगनी शाल ओढी हती अने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती अने कंठनेविषे गुलाबना पुष्पनो हार पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने ते समे श्रीजिमहाराज अंतर्दृष्टि करीने बहुवारसुधी विराजमान थया हता पछी नेत्रकमळने उघाडीने सर्वे हरिभक्तनी सभा सामुं करुणाकटाक्षे करी जोइने श्रीजिमहाराज बोल्या जे आजतो सर्वेने निश्चयनी वात करवी छे ते सर्वे सावधान थइने सांभळो जे, अनंत कोटि सूर्य चंद्रमा ने अग्नि ते सरखुं प्रकाशमान एवुं जे अक्षरधाम तेनेविषे श्रीपुरुषोत्तम भगवान् सदा दिव्यमूर्ति थका विराजमान छे अने तेज भगवान् जीवोना कल्याणने अर्थे पृथ्वीनेविषे राम कृष्णादिक अवतारनुं धारण करेछे त्यारे ते भगवानना स्वरूपनो जेने सत्समागमे करीने दृढ निश्चय थायछे तेनो जीव बीजना चंद्रमानी पेठे दिवसे दिवसे वृद्धिने पामतो जायछे अने जेम चंद्रमानेविषे जेमजेम सूर्यनी कळा आवती जाय तेमतेम ते चंद्रमा वृद्धिने पामतो जायछे ते ज्यारे पूर्णमासी आवे त्यारे चंद्रमा संपूर्ण थायछे तेम भगवाननो परिपूर्ण निश्चय थया मोरतो ए जीव अमावास्याना चंद्रनी पेठे कळाए रहित खद्योत जेवो होय पछी जेमजेम परमेश्वरना महिमाए सहित निश्चयने पामेछे तेमतेम वृद्धिने पामीने पूर्णमासीना चंद्र जेवो ए जीवात्मा थायछे पछी एने इंद्रियो अंतःकरण निश्चयमांथी डगाववाने समर्थ नथी थतां अने परमेश्वर गमे तेवां चरित्र करे तोपण तेने कोइ रीते भगवाननेविषे दोष भासतोज नथी एवो जेने महिमाए सहित भगवाननो

निश्चय होय ते भक्त निर्भय थइ चुक्यो अने तेज भक्तने जो क्यारेक असत् देश असत् काळ असत् संग ने असत् शास्त्रादिकने योगे करीने अथवा देहाभिमाने करीने भगवानना चरित्रनेविषे संदेह थाय ने भगवाननो अभाव आवे तो ए जीव पूर्णमासीना चंद्रमा जेवो हतो पण पाछो अमावास्याना चंद्र जेवो थइ जायछे माटे पोतामां जे कांइक थोडी घणी खोट्य होय ते ए जीवने झाझी नडती नथी पण परमेश्वरना चरित्रमां कोइ रीते संदेह थाय अथवा परमेश्वरनो कोइ रीते अभाव आवे त्यारे ए जीव कल्याणना मार्गमांथी तत्काळ पडी जायछे, जेम वृक्षनां मूळ कपाणां त्यारे ते वृक्ष एनी मेळेज सुकाइ जाय तेम जेने भगवाननेविषे कोइ रीते दोषबुद्धि थइ ए जीव कोइ रीते विमुख थया विना रहे नहि. अने जेने निश्चयनुं अंग दुर्बळ होय ने ते सत्संगमां होय तोपण तेने एवा घाट थाय जे 'शुं जाणीए मारुं ते कल्याण थशे के नहि थाय अने हुं ज्यारे मरीश त्यारे देवता थइश के राजा थइश के भूत थइश' जेने भगवानना स्वरूपनो परिपूर्ण निश्चय न होय तेने एवा घाट थाय अने जेने परिपूर्ण निश्चय होय तेतो एम समझे जे 'मनेतो भगवान् मळ्या ते दिवसथीज मारुं कल्याण थइ चुक्युं छे अने जे मारुं दर्शन करशे के मारी वार्ता सांभळशे ते जीवपण सर्व पापथकी मुकाइने परमपदने पामशे' माटे एवी रीते भगवाननो महिमा सहित निश्चय राखीने पोतानेविषे कृतार्थपणुं मानवुं ए वात सर्वे खबडदार थइने राखज्यो. पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे "धन्य वृंदावनवासी वटनी छायारे ज्यां हरि बेसता" ए माहात्म्यनुं कीर्तन[1] गावो, पछी ते कीर्तन गायुं, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे

१ नरसिंह महेतानुं ।

एवी रीते श्रीकृष्णभगवानेपण भागवतमां कह्युं छे जे "अहो अमी देववरामरार्चितं पादांबुजं ते सुमनःफलार्हणम् । नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मनस्तमोपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥" एम परमेश्वरना योगने पामीने वृक्षनो जन्म होय तेपण कृतार्थ थायछे माटे जे वृक्ष तळे भगवान् बेठा होय ते वृक्षनेपण परमपदनुं अधिकारी जाणवुं. अने जेना हृदयमां एवो भगवाननो महिमा सहित दृढ निश्चय न होय तेनेतो नपुंसक जेवो जाणवो ते एने वचनेकरीने कोइ जीवनो उद्धार थवानो नहि, जेम राजा होय ते नपुंसक होय ने तेनुं राज्य जतुं होय ने वंश जतो होय पण एथकी तेनी स्त्रीने पुत्र थाय नहि अने सर्व मुलकमांथी पोता जेवा नपुंसकने तेडावीने ते स्त्रीने संगे राखे तोपण स्त्रीने पुत्र थाय नहि, तेम जेने भगवाननो महिमा सहित निश्चय नथी तो तेने मुखे गीता भागवत जेवा सद्ग्रंथ सांभळे पण तेणेकरीने कोइनुं कल्याण नथी थतुं. अने वळी जेम दुध ने साकर होय ने तेमां सर्पनी लाळ पडी पछी एने जे कोइ पीवे तेना प्राण जाय तेम माहात्म्य सहित जे भगवाननो निश्चय तेणे रहित एवो जे जीव तेना मुखथकी गीता भागवतने सांभळे तेणेकरीने कोइनुं कल्याण थतुं नथी एमांथीतो मूळगुं भुंडुं थायछे । इति वचनामृतम् ॥ १२ ॥ २१२ ॥

संवत् १८८२ ना पोष वदी ७ सप्तमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्षनी तळे पाट्य उपर गादी तकीया नंखावीने विराज-

१ अर्थः—देववर अमरोए पूजेला तमारा चरणारविंदने आ वृक्षो पुष्पफळादिकरूप पूजासाधन लइने जे तमथी (अज्ञानथी) पोताने कनिष्ट वृक्षजन्म प्राप्त थयो छे ते तमना नाशमाटे पोतानी शिखाथी एटले मस्तकने ठेकाणे रहेला अग्रभागथी तमोने प्रणाम करेछे, आ अति आश्चर्यनी वात छे ।

मान हता ने अंगनेविषे सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठनेविषे श्वेत पुष्पना हार पहेर्या हता अने हस्तकमळे करीने एक दाडमनुं फळ उछाळता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने श्रीजिमहाराजने उपर सोनाने इंडाए सहित छत्र विराजमान हतुं एवी शोभाने धरताथका श्रीजिमहाराज विराजमान हता.

ते समयमां गाम भादरणना पाटीदार भगुभाइ श्रीजिमहाराज पासे आव्या हता तेणे पुछ्युं जे "हे महाराज! आ समाधि ते केम थती हशे[१]?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जीवोना कल्याणने अर्थे आ भरतखंडमां भगवान् अवतार धरेछे ते भगवान् ज्यारे राजारूपे होय त्यारेतो ओगणचाळीश लक्षणे युक्त होय अने दत्त कपिल जेवा साधुरूपे होय त्यारेतो त्रिश लक्षणे युक्त होय ते भगवाननी मूर्ति देखवामांतो मनुष्य सरखीज आवती होय पण ए अतिशय अलौकिक मूर्ति छे जेम पृथ्वीनेविषे सर्वे पथरा छे तेम चमकपाण पण पथरो छे पण चमकपाणमां सहजे एवो चमत्कार रह्यो छे जे 'चमकना पर्वतने समीपे वहाण जाय त्यारे तेना खीला चमकना पाणा पासे तणाइ जायछे' तेम भगवाननी जे मूर्ति राजारूपे छे ने साधुरूपे छे ते मूर्तिनुं ज्यारे जे जीव श्रद्धाए करीने दर्शन करेछे तेनां इंद्रियो भगवान् सामां तणाइ जायछे त्यारे समाधि थायछे, जेम श्रीकृष्णभगवाननुं दर्शन करीने गोकुळवासी सर्वेने समाधि थइ हती अने भगवाने ते समाधिमां पोतानुं धाम देखाड्युं हतुं तेवी

१ अष्टांगयोग सिद्ध थया पछी समाधि थवाना नियम छे ते विनापण तमारा दर्शन मात्रथीज केटलाकने समाधि थायछे ते थवामां शो हेतु छे एवो प्रश्नार्थ समजवो।

रीते जेजे समयमां भगवानना अवतार होय तेते समयमां भगवाननी मूर्तिनेविषे एवो चमत्कार जरुर होय ते जे श्रद्धाए युक्त भगवाननां दर्शन करे तेनां इंद्रियो सर्वे भगवान् सामां तणाइ जाय अने तत्काळ समाधि थाय. अने कोइक समयमां भगवानने घणाक जीवने पोताने सन्मुख करवा होय त्यारेतो अभक्त जीव होय अथवा पशु होय तेनेपण भगवानने जोइने समाधि थइ जायछे तो भगवानना भक्तनें थाय एमां शुं आश्चर्य छे?

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "ब्रह्म छे तेतो सर्वत्र व्यापक छे एम सर्वे कहेछे ते जे व्यापक होय तेने मूर्तिमान् केम कहेवाय अने जे मूर्तिमान होय तेने व्यापक केम कहेवाय? ए प्रश्न छे," पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ब्रह्मतो एकदेशी छे पण सर्वदेशी नथी ने ते ब्रह्म ते श्रीकृष्णभगवान् छे ते एकदेशी थका सर्वदेशी छे, जेम कोइक पुरुषे सूर्यनी उपासना करी होय पछी सूर्य तेने पोताना सरखी दृष्टि आपे त्यारे ते पुरुष ज्यांसुधी सूर्यनी दृष्टि पहोचती होय त्यांसुधी देखे अने वळी जेम सिद्धदशावाळो पुरुष होय ते हजारो ने लाखो गाउ उपर कोइक वात करतो होय तेने जेम पासे वार्ता करे ने सांभळे तेम सांभळे तेमज लाखो गाउ उपर कांइक वस्तु पडी होय तेने मनुष्यना जेवडा हाथ होय तेणेकरीने पण उपाडे तेम श्रीकृष्णभगवान् एक ठेकाणे रह्या थका पोतानी इच्छाए करीने ज्यां दर्शन देवां होय त्यां दर्शन आपेछे अने एकरूप थका अनंतरूपे भासेछे अने सिद्ध होय तेमांपण दूरश्रवण दूरदर्शनरूप चमत्कार होय तो परमेश्वरमां होय तेमां शुं आश्चर्य छे? अने भगवानने ग्रंथमां व्यापक कह्या छे तेतो मूर्तिमान् छे तेज पोतानी सामर्थीए करीने एक ठेकाणे रह्या थका सर्वने दर्शन आपेछे एम व्या-

पक कह्याछे पण आकाशनी पेठे अरूप थका व्यापक नथी भगवानतो सदा मूर्तिमानज छे ते मूर्तिमान् भगवान् अक्षरधाममां रह्या थकाज अनंत कोटि ब्रह्मांडमां भासेछे। इति वचनामृतम् ॥ १३ ॥ २१३ ॥

संवत् १८८२ ना पोष वदी ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिर आगळ विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी वडोदराना वाघमोडीया रामचंद्रे श्रीजिमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! जे कुपात्र जीव जणातो होय ने तेनेपण समाधि थइ जायछे तेनुं शुं कारण हशे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, धर्मशास्त्रनेविषे जे वर्णाश्रमना धर्म कह्याछे तेथकी जे बाह्य वर्ततो होय तेने सर्वे लोक एम जाणे जे 'आ कुपात्र माणस छे' अने ते कुपात्रने भगवान् के भगवानना संतनो जो हइयामां गुण आवे तो एने ए मोटुं पुन्य थायछे अने वर्णाश्रमना धर्म लोप्या हता तेनुं जे पाप लाग्युं हतुं ते सर्वे नाश थइ जायछे अने ते जीव अतिशय पवित्र थइ जायछे माटे एने भगवानना स्वरूपमां चित्त चोटेछे त्यारे समाधि थइ जायछे. अने जे पुरुष धर्मशास्त्रे कह्या एवा जे वर्णाश्रमना धर्म तेने पाळतो होय त्यारे तेने सर्वे लोक धर्मवाळो जाणे पण भगवान् ने भगवानना साधु तेनो जो ते द्रोह करतो होय तोते सत्पुरुषना द्रोहनुं एवुं पाप लागेछे जे 'वर्णाश्रमना धर्म पाळ्यानुं जे पुन्य तेने बाळीने भस्म करी नाखेछे' माटे सत्पुरुषना द्रोहनो करनारो तेतो पंच महापापनो करनारो तेथीपण वधु पापी छे शामाटे जे पंच महापाप कर्यां होय तेतो सत्पुरुषने

आशरे जइने छुटायछे पण सत्पुरुषनो द्रोह करे तेनोतो कोइ ठेकाणे छुट्यानो उपाय नथी केमजे अन्य ठेकाणे पाप कर्युं होय तेतो तीर्थमां जइने छुटायछे अने तीर्थमां जइने पाप करे तेतो वज्रलेप थायछे माटे सत्पुरुषनो आशरो करे त्यारे गमे तेवो पापी होय तोपण अति पवित्र थइ जायछे ने तेने समाधि थइ जायछे अने सत्पुरुषनो द्रोही होय ने ते गमेतेवो धर्मवाळो जणातो होय तोपण महापापी छे ने तेने कोइ काळे भगवाननां दर्शन हृदयनेविषे थायज नहि माटे जेने विमुख जीव पापी जाणेछे ते पापी नथी अने जेने विमुख धर्मी जाणेछे ते धर्मी नथी । इति वचनामृतम् ॥ १४ ॥ २१४ ॥

संवत् १८८२ ना पोष वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे मंच उपर गादी तकीया बिछावीने विराजमान हता अने किनखापनो सुरवाळ ने डगली पहेर्यां हतां अने मस्तक उपर मोटा सोनेरी छेडानुं भारे कसुंबल शेलुं बांध्युं हतुं अने मोटा मोटा सोनेरी छेडानुं कसुंबल शेलुं खभा उपर विराजमान हतुं अने मस्तक उपर सोनेरी इंडानुं छत्र विराजमान हतुं अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ समस्त तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते सभामां शोभारामशास्त्रीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! दैवी ने आसुरी ए बे प्रकारना जीव छे ते अनादि काळना छे के कोइक योगे करीने थयाछे[1]?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे दैवी ने आसुरी ए बे प्रकारना जीव छे ते प्रथमतो प्रलयकाळे मायानेविषे लीन थया

१ स्वभावथी छे के निमित्तथी छे एवो भावार्थ समजवो ।

हता पछी ज्यारे जगतनो सर्ग थायछे त्यारे ते बे प्रकारना जीव पोतपोताना भावे युक्त थका उपजेछे. अने केटलाक साधारण जीव छे तेतो दैवी ने आसुरीने संगे करीने दैवी ने आसुरी थायछे. अने केटलाक दैवी ने आसुरी जीव छे तेतो जेवां जेवां कर्म करता जायछे तेवा तेवा भावने पामता जायछे. तेमां आसुरभावनेविषे ने दैविभावनेविषे मुख्य हेतुतो सत्पुरुषनो कोप ने अनुग्रह छे, जेम जय विजय भगवानना पार्षद हता तेणे सत्पुरुष एवा जे सनकादिक तेनो द्रोह कर्यो त्यारे असुरभावने पामी गया अने प्रह्लादजी दैत्य हता तेणे नारदजीनो उपदेश ग्रहण कर्यो तो परमभागवत संत कहेवाया माटे मोटा पुरुषनो जे उपर कोप थाय ते जीव आसुरी थइ जायछे अने जे उपर मोटा पुरुष राजी थाय ते जीव दैवी थइ जायछे पण बीजुं दैवी आसुरी थयानुं कारण नथी, माटे जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने भगवान् ने भगवानना भक्त तेनो कोइ रीते द्रोह करवो नहि अने जे रीते भगवान् ने भगवानना भक्त राजी थाय तेम करवुं । इति वचनामृतम् ॥ १५ ॥ २१५ ॥

संवत् १८८२ ना पोष वदी १३ तेरशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्ष हेठे मंच उपर गादी तकिया बिछावीने विराजमान हता ने श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ समस्त तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठा हती.

ते सभामां वडोदराना शास्त्री बेठा हता तेणे एम कह्युं जे, हे महाराज! तमे जो कोइक मोटा माणसने चमत्कार जणावो तो तेमांथी घणो समास थाय. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मोटा माणस साथे अमारे

ज्ञाथुं बने नहि शामाटे जे एने राज्यनो ने धननो मद होय अने अमारे त्यागनो ने भक्तिनो मद होय माटे कोइ केने नमी दे एवुं काम नथी अने कोइ मोटा माणसने जो समाधि करावीए तो कांइक गाम गरास आपे तेनी अमारा हृदयमां लालच नथी केमजे गाम गरासतो सुखने अर्थे इच्छीए ते अमारेतो नेत्र मिंचीने भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन करीए तेमां जेवुं सुख छे तेवुं चौद लोकना राज्यनेविषे पण नथी अने जो भगवानना भजन जेवुं राज्यनेविषे सुख होयतो स्वायंभुव मनु आदिक जे मोटा मोटा राजा ते सर्वे राज्य मुकीने वनमां तप करवा शासारु जाय ? अने भगवानना भजन जेवुं स्त्रीने विषे सुख होय तो चित्रकेतु राजा करोड स्त्रीयोने शासारु मुके ? अने भगवानना भजनना सुख आगळतो चौदलोकनुं जे सुख ते नरक जेवुं कह्युंछे माटे जे भगवानने सुखे सुखीयो थयो होय तेनेतो ब्रह्मांडनेविषे जे विषयनुं सुख छे ते नरकतुल्य भासेछे अने अमारेपण भगवानना भजननुं सुख तेज सुख जणायछे बीजुं सर्वे दुःखरूप जणायछे माटे परमेश्वरनुं भजन सरण करतां थकां जेने सहजे सत्संग थाय तेने करावीए छीए पण कोइ वातनो अंतरमां आग्रह नथी आग्रहतो केवळ भगवानना भजननो अने भगवानना भक्तनो सत्संग राख्यानो छे ए अमारा अंतरनो रहस्य अभिप्राय हतो ते अमे तमारी आगळ कह्यो । इति वचनामृतम् ॥ १६ ॥ २१६ ॥

संवत् १८८२ ना पोष वदी अमांसने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणने सन्मुख हवेली उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्वे साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "पंच ज्ञान इंद्रियो ने पंच कर्म इंद्रियो छे ते पोतपोताना विषयने यथार्थ जाणेछे ते ज्ञानी तथा अज्ञानीने इंद्रियोद्वारे एक सरखो व्यवहार छे पण ज्ञानी होय तेनां इंद्रियो अज्ञानीथकी बीजी रीते नथी वर्ततां माटे ज्ञानीने जितेंद्रिय कह्या छे ते केवी रीते जाणवा ?" ए प्रश्न छे, पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, निर्विकल्प समाधि थाय त्यारे जितेंद्रिय थाय एम जणायछे. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, निर्विकल्प समाधिवाळाने पण पंच विषय ग्रहण करवा तेतो सौनी पेठे इंद्रियोद्वारेज ग्रहण थायछे माटे जितेंद्रियपणुं केम छे ? पछी बहु रीते करीने मुक्तानंदस्वामीए उत्तर कर्यो पण समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे एनो उत्तरतो एम छे जे, शब्दादिक जे पंच विषय छे तेमां जे दोष रह्याछे तेने जाणे अने भगवाननी जे मूर्ति छे तेमां जे कल्याणकारी गुण छे तेनेपण जाणे अने मायिक जे पंच विषय तेने भोगववे करीने जीवने नरकना कुंडनी प्राप्ति थायछे ने महादुःख भोगववां पडेछे तेनेपण जाणे अने एम जाणे त्यारे एने पंच विषयनो अतिशय अभाव आवेछे ने एनेविषे वैरबुद्धि थायछे पछी जे साथे जेने वैर थयुं तेने तेनेविषे कोइ रीते प्रीति थायज नहि एम समझीने ज्यारे पंच विषयनो मनमांथी जेने अतिशय अभाव थइ जाय ते जितेंद्रिय पुरुष कहेवाय पछी भगवाननी श्रवण कीर्तनादिक भक्तिए करीने पोतानुं जीवितव्य पुरु करे पण विमुख जीवनी पेठे पंच विषयमां आसक्त थाय नहि एवो होय ते जितेंद्रिय कहेवाय.

पछी श्रीजिमहाराजे बीजो प्रश्न पुछ्यो "जे एक त्यागी संत छे तेतो केवळ निवृत्तिमार्गवाळा छे अने ते एम जाणेछे जे 'अमे आत्मा छीए' पण देहने पोतानुं रूप मानता नथी ने तेना देहनी रीतितो जड ने

उन्मत्तना जेवी होय अने ते पुरुषने जाति वर्ण आश्रम तेनुं अभिमान होय नहि ने खावुं पीवुं उठवुं वेसवुं ते सर्वे घेलाना जेवुं होय पण लोकमां भळतुं आवे तेवुं न होय ने एवा जे त्यागी होय तेने कोइनो संगपण रहे नहि जेम वननुं मृगलुं होय तेनी पेठे उन्मत्त थको एकलो फरतो रहे ने एने कोइ रीतनुं बंधनपण थाय नहि. अने बीजा त्यागी संत छे तेतो निवृत्तिमार्गवाळा छे तोपण प्रवृत्तिमार्गमां वर्तेछे अने जे प्रवृत्तिने योगे करीने काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा इत्यादिक दोष हृदयनेविषे प्रवर्ते तेवी क्रियानेविषे प्रवर्तेछे त्यारे कोइक जातनो अंतरमां विकारपण थइ आवेछे माटे ए त्यागीने ए प्रवृत्तिमार्गमां रहेवुं घटे के न घटे ? अने वळी ए प्रवृत्तिमार्गमां रहेतांथकां केवी रीते निर्विकार रहेवाय ? अने तमे कहेशो जे 'जो परमेश्वरनी आज्ञाए करीने ए प्रवृत्तिमार्गमां रहे तो बंधन न थाय' ते उपर ए आशंका छे जे 'परमेश्वरनी आज्ञाए करीने भांग्य पीवे तो शुं गांडो न थाय ? जरूर गांडो थाय' माटे ए त्यागी केवी रीते प्रवृत्तिमार्गमां रहे तो बंधन न थाय ?" ए प्रश्न छे, पछी नित्यानंदस्वामीए ने शुकमुनिए एनुं समाधान करवा मांड्युं पण यथार्थ उत्तर थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे केवळ निवृत्तिधर्मवाळा त्यागी छे ने उन्मत्तनी पेठे वर्तेछे तेतो केवळ आत्मनिष्ठावाळा जाणवा अने वळी जे निवृत्तिधर्मवाळा त्यागी भगवाननी भक्तिए युक्त छे तेनेतो परमेश्वरे कह्या एवा जे नियम तेनेविषे रहीने भगवान् ने भगवानना भक्तसंबन्धी जे प्रवृत्तिमार्ग तेनेविषे सावधान थइने जोडावुं अने ए जे भगवान् ने भगवानना भक्तने अर्थे प्रवृत्तिमार्गमां जोडावुं एनुं नामज भक्ति छे अने एवी प्रवृत्तिवाळा जे त्यागी छे तेनी बरोबर निवृत्ति-

मार्गवाळो जे केवळ आत्मनिष्ठ त्यागी ते थइ शकतो नथी शामाटे जे आतो त्यागी छे ने निवृत्तिमार्गवाळा छे तोपण भगवान् ने भगवानना भक्तनी सेवाने अर्थे प्रवृत्तिमां प्रवर्तेछे अने ए जे भगवाननो भक्त त्यागी तेनेतो परमेश्वरना नियममां रहीने प्रवृत्तिमार्गनेविषे रहेवुं पण परमेश्वरना नियमथी अधिकपण वर्तवुं नहि ने न्यूनपण रहेवुं नहि अने काम, क्रोध, लोभ, मोह, आशा, तृष्णा, स्वाद ए आदिक जे विकार तेने त्याग करीने भगवान् ने भगवानना भक्तनी सेवाने अर्थे प्रवृत्तिमार्गनेविषे वर्तवुं तो एने कोइ जातनुं बंधन थाय नहि अने केवळ आत्मनिष्ठावाळो जे त्यागी ते करतां तो आ त्यागी अतिशय श्रेष्ठ छे ने भगवाननी कृपानुं पात्र छे। इति वचनामृतम् ॥ १७॥२१७॥

संवत् १८८२ ना महा शुदि १ पडवाने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीवरतालमध्ये संध्या आरती थया केडे श्रीलक्ष्मीनारायणना मंडपमां गादी तकिया नंखावीने विराजमान थया हता ने सर्वे श्वेत वस्त्रनुं धारण कर्युं हतुं ने पोतानी चारे कोरे मंडपने उपर तथा हेठे परमहंस सर्वे तथा देशदेशना हरिभक्त सर्वे बेठा हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ तमे सर्वे मोटा मोटा परमहंस छो ते तमने अमे प्रश्न पुछीए छीए जे "सत्संगी होय तेने अवश्यपणे शी शी वार्ता जाणी जोइए; केमजे तेने कोइक पुछे अथवा पोताना मनमां कोइक तर्क थइ आवे त्यारे जो ते वार्ता जाणी न होय तो तेनुं समाधान केम थाय ?" एम प्रश्न पुछीने पछी पोतेज बोल्या जे ल्यो एनो उत्तर अमेज करीए छीए जे, एकतो आपणो उद्धव संप्रदाय छे तेनी रीत जाणी जोइए तथा बीजी गुरुपरंपरा जाणी जोइए ते केवी रीतेतो उद्धव ते रामानंदस्वामीरूपे हता ने ते रामानंदस्वामी श्रीरंग-

क्षेत्रनेविषे स्वप्नमां साक्षात् रामानुजाचार्यथकी वैष्णवी दीक्षाने पाम्या माटे रामानंदस्वामीना गुरु ते रामानुजाचार्य छे ने ते रामानंदस्वामीना शिष्य अमे छीए[1] एवी रीते गुरुपरंपरा जाणवी. अने अमे अमारा धर्मकुळनुं स्थापन कर्युं छे तेनी रीत जाणवी.[2] अने त्रीजां अमारा संप्रदा[3]यमां अतिप्रमाणरूप जे शास्त्र छे तेने जाणवां ते शास्त्रनां नाम—वेद १ व्याससूत्र २ श्रीमद्भागवतपुराण ३ महाभारतनेविषे विष्णुसहस्रनाम ४ भगवद्गीता ५ विदुरनीति ६ स्कंदपुराणना विष्णुखंड मांहिलुं वासुदेवमाहात्म्य ७ अने याज्ञवल्क्यस्मृति ८ ए जे आठ शास्त्र तेने जाणवां. अने चोथा सर्वे सत्संगीना जेजे नियम छे तेने जाणवा. अने पांचमा आपणा इष्टदेव जे श्रीकृष्णभगवान् तेने जाणवा अने स्थानक सेवक ने कार्य तेने भेदे करीने ते श्रीकृष्णभगवानना मूर्तियोनुं बहुपणुं छे तेने जाणवुं अने ते श्रीकृष्णभगवाननां जे परोक्षरूप ने प्रत्यक्षरूप तेने जाणवां तेमां परोक्षरूप ते केवी रीतेतो मायाना तमथकी पर एवो जे गोलोक तेनेमध्ये जे अक्षरधाम तेनेविषे श्रीकृष्णभगवान् रह्या छे ते द्विभुज छे ने कोटिकोटि सूर्य सरखा प्रकाशमान छे ने श्याम सुंदर छे ने राधिकाजी ने लक्ष्मीजीए सहित छे ने नंद सुनंद ने श्रीदामादिक जे पार्षद तेमणे सेव्याछे ने अनंतकोटि ब्रह्मांडनी जे उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय तेना कर्ता छे ने महाराजाधिराजपणे विराजमान छे अने एवा जे ए भगवान् ते चतुर्भुजरूपने धारेछे अष्टभुजरूपने धारेछे ने सहस्रभुजरूपने पण धारेछे ने वासुदेव संकर्षण अनिरुद्ध ने प्रद्युम्न ए जे

१ समाधिमां। २ अने अमे धर्मवंशी अयोध्याप्रसाद ने रघुवीरमां अमारी गुरुता स्थापी छे। ३ गुरुपरंपरानेज संप्रदाय कहेछे, "संप्रदायो गुरुक्रमः" एम कोशमांपण कह्युंछे।

चतुर्व्यूह ने केशवादिक जे चोविश व्यूह ए सर्वे रूपने धारेछे तथा वाराह, नृसिंह, वामन, कपिल, हयग्रीव ए आदिक जे अनेक अवतार तेने धारेछे ने पोतेतो सदा द्विभुज छे अने उपनिषद् तथा सांख्यशास्त्र ने योगशास्त्र तथा पंचरात्र एमनेविषे एज स्वरूपनुं वर्णन कर्युं छे एवी रीते परोक्षपणे भगवाननुं स्वरूप कह्युं[1] अने सर्वे जे आचार्य थयाछे तेमां व्यासजी मोटा आचार्य छे ने ते व्यासजी जेवातो शंकराचार्य न कहेवाय रामानुजाचार्य न कहेवाय मध्वाचार्य न कहेवाय निंबार्क न कहेवाय विष्णुस्वामी न कहेवाय वल्लभाचार्य न कहेवाय केमजे ए आचार्य जो व्यासजीना वचनने अनुसरे तो ए आचार्यना वचननुं लोकमां प्रमाण थाय नहितो न थाय अने व्यासजीनेतो बीजा कोइनी अपेक्षा नथी केमजे व्यासजीतो वेदना आचार्य छे ने पोते भगवान् छे माटे आपणेतो व्यासजीना वचननेज अनुसरवुं अने ते जे व्यासजी तेणे जीवना कल्याणने अर्थे वेदनो[2] विभाग कर्यो ने सत्तर पुराण कर्यां ने महाभारत कर्युं तोपण ते व्यासजीना मनमां एम थयुं जे 'जीवना कल्याणनो उपाय जेम छे तेम यथार्थ न कहेवायो'ने तेणे करीने पोताना मनमां संतोष न थयो ते पछी समग्र वेद, पुराण, इतिहास, पंचरात्र, योगशास्त्र, सांख्यशास्त्र तेनुं सार एवुं जे श्रीमद्भागवतपुराण तेने व्या-

१ प्रत्यक्षरूपतो धरातळमा वर्ततुं नराकार जाणवु, नराकार श्रीकृष्णभगवानना समग्र चरित्रो साक्षात् भगवान् व्यासमुनिए पुराणादिकमा वर्णन कर्यां छे ते अतिभक्तिथी मुमुक्षुए साभळवा । २ ऋगादि चार प्रकारे ।

अध्यायमां कह्युंछे जे 'हुं निर्गुण छुं ने मारा संबन्धने जे पामेछे तेपण निर्गुण थायछे' माटे कामभाव, द्वेषभाव, भयभाव, संबन्धभाव, स्नेहभाव एमांथी जेजे भावे करीने ए श्रीकृष्णभगवानने जे जीव आश्यो ते निर्गुण थइ गया माटे ए श्रीकृष्णभगवान् ते निर्गुण छे एवी रीते व्यासजीए श्रीकृष्णभगवानने कह्याछे अने ते व्यासजीए एम सिद्धांत कर्यो छे जे 'सर्व अवतारना धरतल जे परमेश्वर तेज स्वयं श्रीकृष्णभगवान् छे ने बीजा जे अवतार ते एना छे' अने जो ए श्रीकृष्णभगवानने निर्गुण नहि कहे ने शुद्धसत्त्वात्मक कहेशे तो तेने भागवतना पूर्वापर संबन्धनी खबरज नथी ने तेनेविषे मोटो बाध आवशे केमजे गोपीयोए श्रीकृष्णने भगवान् न जाण्या ने कामभावे करीने एज श्रीकृष्णभगवानने भज्या तेणे करीने ते गोपीयो निर्गुण थइ गइ त्यारे ते श्रीकृष्णभगवानने शुद्ध सत्त्वात्मक केम कहेवाय? माटे श्रीकृष्णभगवान् तो निर्गुणज छे, तथा श्रीकृष्णभगवाने पोते अर्जुन प्रत्ये कह्युंछे जे "जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः। त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन!॥"[1] अने ए श्रीकृष्णभगवाने पोताना जन्म समयमां वसुदेवदेवकीने परमेश्वरपणानी प्रतीतिने अर्थे जे चतुर्भुजरूप देखाड्युं तथा ब्रह्माने जे अनेक चतुर्भुजरूप देखाड्यां तथा अक्रूरने जे शेषशायी रूप देखाड्युं तथा अर्जुनने विश्वरूप देखाड्युं इत्यादिक रूपने भेदे करीने जे श्रीकृष्णभगवाननी उपासनाना भेद कहेवा तेतो योग्य छे पण ए श्रीकृष्णभगवान् व्रजनेविषे

---

१ अर्थः—हे अर्जुन! पूर्वोक्त प्रकारे जे पुरुष मारां जन्म कर्म यथार्थपणे दिव्य जाणेछे ते पुरुष देहनो त्याग करीने फरीथी जन्मने पामतो नथी परंतु मनेज पामेछे।

बाळमुकुंद कहेवाया मुरलीमनोहर कहेवाया राधाकृष्ण कहेवाया तथा वाछडां चार्यां गायो चारी गोवर्धन पर्वत धार्यो गोपीयो साथे रासक्रीडा करी तथा मधुरांपुरीमां आवीने कंसने मार्यो यादवने सुखीया कर्या तथा सांदीपिनी ब्राह्मणने घेर विद्या भण्या तथा कुब्जा संघाथे विहार कर्यो तथा द्वारिकापुरीमां वस्या ने रुक्मिणी आदिक अष्ट पटराणीयोने परण्या तथा सोळ हजार स्त्रीयोने परण्या तथा हस्तिनापुरमां रह्या ने पांडवनी सर्व कष्टथकी रक्षा करी ने द्रौपदीनी लाज राखी ने अर्जुनना सारथि थया इत्यादिक स्थानकने भेद करीने जे श्रीकृष्णभगवानना अनेक लीळा छे तेणे करीने ए श्रीकृष्णभगवानना द्विभुज स्वरूपनेविषे उपासनाना भेद न करवा अने जे करशे ते वचनद्रोही गुरुद्रोही छे. अने ए श्रीकृष्णभगवाननां आचरण जे गोवाळीयानुं उच्छिष्ट खाधुं तथा रासरमण कर्युं इत्यादिक अनेक प्रकारनां छे ते आचरण प्रमाणे ते श्रीकृष्णभगवानना भक्तने आचरण न करवुं. अने ए श्रीकृष्णभगवाने एकादशस्कंधमां तथा भगवद्गीतामां तथा वासुदेवमाहात्म्यमां जेम साधुनां लक्षण कह्यांछे तथा वर्णाश्रमना धर्म कर्याछे तथा पोतानी भक्ति कर्यानुं कह्युंछे ते प्रमाणे वर्तवुं पण ए श्रीकृष्णभगवानना आचरण प्रमाणे आचरण न करवुं अने जे करशे ते विमुख छे अमारो सत्संगी नथी. अने आपणा इष्टदेव एवा जे ए श्रीकृष्णभगवान् तेनां आचरण प्रमाणे जेम न करवुं तेमज तमारो सर्वेनो आचार्य ने गुरु ने उपदेष्टा एवो जे हुं ते मारा देहनां जे आचरण ते प्रमाणेपण तमारे न करवुं अने अमारा संप्रदायनेविषे जेम जेना धर्म कह्याछे ते जे अमारां वचन ते प्रमाणे तमारे सर्वेने रहेवुं पण अमारा आचरण प्रमाणे न रहेवुं आ जे अमे वार्ता करी तेने सर्व परम-

हंस तथा सर्व सत्संगी शीखी लेज्यो ने ए प्रमाणे समझीने एमज वर्तज्यो ने बीजा आगळपण एमज वार्ता करज्यो, एम कहीने श्रीजिमहाराज भोजन करवा पधार्या एवी रीतनी वार्ताने सांभळीने सर्वे साधु ने सत्संगी ते एम समझता हवा जे 'ए परोक्ष जे श्रीकृष्णभगवान् कह्या तेज आ भक्तिधर्मना पुत्र श्रीजिमहाराज छे पण एथकी पर कोइ नथी अने एज आपणा इष्टदेव छे ने गुरुपण एज छे'। इति वच० ॥१८॥ २१८॥

संवत् १८८२ ना महा शुदि २ बीजने दिवस श्रीजिमहाराज सांझने समे श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरमां उगमणीकोरनी रूपचोकी उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी ठाकोरजीनी संध्या आरती थइ रही त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे सांभळो भगवाननी वार्ता करीए छीए जे, आ जीवने ज्यारे भरतखंडनेविषे मनुष्य देह आवेछे त्यारे भगवानना अवतार कां भगवानना साधु ए जरुर पृथ्वी उपर विचरता होय तेनी जो ए जीवने ओळखाण थाय तो ए जीव भगवाननो भक्त थायछे पछी ए भगवाननो भक्त थयो तेने भगवान् विना बीजा कोइ पदार्थनेविषे प्रीति राखवी घटे नहि शामाटे जे भगवानना धामनुं जे सुख छे तेनी आगळ मायिक पंच विषयनुं सुख छे तेतो नरक जेवुं छे अने जे नरकना कीडा छे तेतो नरकनेविषे परमसुख मानेछे पण जे मनुष्य होय तेतो ते नरकने परमदुःखदायी जाणेछे तेम जेने भगवाननी ओळखाण थइ तेतो भगवाननो पार्षद थयो ने तेने भगवाननो पार्षद मटीने विष्टाना कीडानी पेठे मायिक पंच विषयना सुखने इच्छवुं नहि अने जे भगवाननो भ-

क्त होय तेतो जेजे मनोरथने करे ते सर्वे सत्य थायछे माटे भगवान् विना बीजा पदार्थने अणसमझण्ये करीने जे इच्छेछे एज एने मोटो अविवेक छे ते सारु जे भगवाननो भक्त होय तेनेतो चौद लोकनां जे भोगसुख छे तेने काकविष्टा तुल्य जाण्यां जोइए अने मन कर्म वचने करीने भगवान् ने भगवानना भक्तनेविषेज दृढ प्रीति करी जोइए अने एम समझ्युं जोइए जे 'जे भगवाननो भक्त होय ने तेने जो कदाचित् भगवान विना बीजी वासना रही गइ होय तो तेपण इंद्रपदवीने पामे कां ब्रह्मलोकने पामे पण प्राकृत जीवनी पेठे नरकचोराशिमांतो जायज नहि त्यारे जे यथार्थ भगवाननो भक्त होय तेनो जे महिमा ने तेनुं जे सुख तेतो वर्णव्यामांज केम आवे?' माटे भगवाननो भक्त होय तेनेतो भगवानमांज दृढ प्रीति राखवी। इति वचनामृतम् ॥ १९ ॥ २१९ ॥

संवत् १८८२ ना महा शुद्धि ३ त्रीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरतालमध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना दरबारमां लींबडाना वृक्षनी हेठे वेदी उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठनेविषे चमेलिना पुष्पनो हार विराजमान हतो अने मस्तक उपर राता अतलसनुं छत्र विराजमान हतुं अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे परमहंसने प्रश्न पुछ्यो जे "रजोगुणमांथी कामनी उत्पत्ति थायछे अने तमोगुणमांथी क्रोधने लोभनी उत्पत्ति थायछे माटे ए कामादिकनुं बीज न रहे एवुं एक साधन कयुं छे?" पछी शुकमुनिए कह्युं जे, ज्यारे निर्विकल्प समाधि थाय ने ज्यारे आत्मदर्शन थाय त्यारेज एना हृदयमांथी कामादिकनुं बीज बळी जाय. पछी श्रीजिमहाराजे

आशंका करी जे 'शिव ब्रह्मा शृंगिऋषि पराशर नारद एमने शुं निर्विकल्प समाधि नहोती? जे कामे करीने ए सर्वे विक्षेपने पाम्या माटे ए सर्वे निर्विकल्प समाधिवाळाज हता तोपण इंद्रियोनी वृत्ति अनुलोम थइ त्यारे कामादिके करीने विक्षेपने पाम्या' माटे तमे कह्युं एवी रीते ए प्रश्ननो उत्तर न थयो. अने जेम ज्ञानी निर्विकल्प समाधिनेविषे जाय त्यारे निर्विकार रहेछे तेमज अज्ञानी सुषुप्तिनेविषे निर्विकार रहेछे अने ज्यारे इंद्रियोनी वृत्ति अनुलोम थायछे त्यारेतो ज्ञानी ने अज्ञानी बेय कामादिके करीने विक्षेपने पामेछे एमांतो ज्ञानी अज्ञानीनो कांइ विशेष जणातो नथी माटे हवे बीजा परमहंस उत्तर करो, पछी तो गोपाळानंदस्वामी देवानंदस्वामी नित्यानंदस्वामी मुक्तानंदस्वामी ए सर्वे मळीने जेवो जेने भास्यो तेवो तेणे उत्तर कर्यो पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं कोइथी समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम जनक विदेही हता ते प्रवृत्तिमार्गमां हता तोपण निर्विकार हता अने ज्यारे जनकनी सभामां सुलभा नामे संन्यासिनी आवी त्यारे जनक राजा सुलभा प्रत्ये बोल्या जे 'तुं मारा चित्तने मोह पमाड्यानुं करेछे पण मारा गुरु जे पंचशिख ऋषि तेनी कृपाथकी हुं सांख्य ने योग ए बे मतने अनुसर्यो छुं माटे मारा अर्धा शरीरने चंदन चर्चे अने अर्धुं शरीर तरवारे करीने कापे ए बेय मारे बरोबर छे अने आ मारी मिथिलापुरी बळी जाय तोपण मारुं कांइ बळतुं नथी एम हुं प्रवृत्तिमां रह्योथको असंगी ने निर्विकार छुं' एवी रीते राजा जनके सुलभा प्रत्ये कह्युं अने शुकदेवजिनापण राजा जनक गुरु कहेवाया माटे ए प्रश्ननो एज उत्तर छे जे 'इंद्रियोनी वृत्ति अनुलोमपणे वर्तती होय अने प्रवृत्तिमार्गमां रह्यो होय तोपण जो राजा जनकनी पेठे जेना हृदयमां समझणनी

दृढता थइ होय तो ते कोइ रीते विकारने पामे नहि' अने जेने जेवुं जाण्युं जोइए तेवुं यथार्थ जाण्युं होय जे आ ते सार छे ने आ ते असार छे पछी एक भगवाननी मूर्ति विना जेटला मायिक आकार छे ते सर्वे अतिशय दुःखदायक छे ने नाशवंत छे एम जाणे अने पोताने देह इंद्रियो ने अंतःकरण तेथकी नोखो आत्मारूपे जाणे पछी एने एवुं कोइ पदार्थ नथी जे 'मोह पमाडवाने अर्थे समर्थ थाय' केमजे एतो सर्वे मायिक आकारने तुच्छ करी जाणेछे अने एवी रीते जेना अंतरमां समझणनी थेव्य बेठी होय ने तेनां इंद्रियो प्रवृत्तिमार्गनेविषे सर्वे अनुलोमपणे वर्ततां होय तोपण ते कामादिके करीने क्षोभने न पामे एवो जे हरिभक्त होय ते त्यागी होय अथवा गृहस्थ होय पण तेना हृदयमांथी कामादिकनुं बीज नाश पामी जायछे अने एवो जे होय तेज सर्वे हरिभक्तमां श्रेष्ठ वैष्णव छे माटे गृही त्यागीनो कांइ मेळ नथी जेनी समझण मोटी तेनेज सौथी मोटो हरिभक्त जाणवो. अने शिव ब्रह्मादिकनेविषे जे खोट्य कहेवायछे तेनुं तो एम छे जे केटलाकनेविषे तो आवी रीतनी समझणनी कसर छे ने केटलाकने विषेतो आवी समझण होय तोपण भूंडा देश, काळ, संग क्रियादिकने योगे करीने तेमने कामादिकविकाररूप खोट्य कहेवाणी छे माटे आवी समझण होय तोपण कोइ प्रकारे कुसंग तो करवोज नहि ए सिद्धांत वार्ता छे। इति वचनामृतम्॥२०॥२२०॥

श्रीवरतालवचनामृतं समाप्तम् ।

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

श्रीअमदावाद-वचनामृतम् ।



संवत् १८८२ ना महा वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीअमदावादमध्ये श्रीनरनारायणना मंदिरमां आथमणी कोरे मुखारविंद करीने विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठनेविषे गुलाबना पुष्पना हार विराजमान हता ने काननी उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ विराजमान हता ने पाघनेविषे गुलाबना पुष्पना तोरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते सभामां श्रीजिमहाराज अंतर सामी दृष्टि करीने विराजमान हता पछी नेत्रकमळने उघाडीने सर्वे सामुं जोयुं पछी एम बोल्या जे, अमारे एक ध्याननना अंगनी वार्ता करवी छे ते वार्ता मोक्षधर्मनेविषे पण कहीछे अने जे मोटा मोटा ए ध्याने करीने सिद्धदशाने पाम्या छे तेपण अमे घणाक दीठा छे ने अमारापण अनुभवमां एम वर्तेछे जे अनंत प्रकारनां ध्यान छे पण जे आ वात कहेवी छे तेनी बरोबर बीजुं कोइ ध्यान थाय नहि, जेम कोइ चमत्कारी मंत्र होय अथवा चमत्कारी ओपधी होय तेमां स्वाभाविकज चमत्कार रह्यो छे, तेम जे आ ध्यान अमारे कहेवुंछे ते ध्यानमांपण एवो स्वाभाविक चमत्कार छे जे तत्काळ सिद्धदशाने पामी जाय. हवे ते वार्ता करीए छीए-ए जे ध्याननो करनारो छे तेने जमणा नेत्रमां सूर्यनुं ध्यान करवुं ने डावा नेत्रमां चंद्रनुं ध्यान करवुं एवी रीते ध्यान करतां करतां सूर्य ने चंद्रमा जेवा आकाशमां छे तेवा ने तेवाज नेत्रमां देखावा मांडे त्यारे जमणुं नेत्र छे ते तपवा मांडे ने डाबुं नेत्र छे ते ठरवा मांडे त्यारे सूर्यनी धारणा डावा नेत्रमां करवी ने चंद्रनी धारणा

जमणा नेत्रमां करवी एवी रीते धारणा करीने पछी सूर्यने ने चंद्रने अंत-दृष्टि करीने हृदाकाशमां जोया करवा अने जोनारो जे पोतानो जीव तेना रूपनेपण देखवुं अने देखनारो जे जीवात्मा तेनेविषे परमात्मानुं ध्यान करवुं पछी तेनुं जे वासनालिंग देह छे ते जेम रेंटनो फाळको फरे तेम आकाशनेविषे फरतुं जणाय पछी एवी रीते ध्यान करतां थकां भगवाननुं जे विश्वरूप छे तेनुं दर्शन तेने थायछे ने ते रूपनेविषे चौदे लोकनी रचना छे ते देखाइ आवेछे अने ते स्वरूप अतिशय मोटुंपण नथी देखातुं, जेम वटपत्रशायी भगवान् एक वडना पत्रमां नाना वाळक थइने पोढ्या हता अने तेज भगवानना उदरनेविषे मार्कंडेय ऋषिए समग्र ब्रह्मांड दीठुं एवी रीते भगवाननुं ध्यान करतां थकां जेटलां कांइ शास्त्रमां पदार्थ कह्यांछे ते सर्वे एनी दृष्टिमां आवेछे त्यारे एना जीवात्मानेविषे जे कांइक नास्तिक भाग रह्यो होय ते मटी जायछे अने तेनो जीव अतिबळीयो थायछे अने जेजे शास्त्रमां कह्युंछे ते सर्वे सत्य छे एवी एने दृढ प्रतीति आवेछे अने अणिमादिक अष्ट सिद्धियो तेपण ए ध्यानना करनाराने आवीने हाजर थायछे अने ज्यांलगण सूर्यनी ने चंद्रनी किरण पहोंचती होय त्यांलगी तेनी दृष्टि पहोंचे एवी अनंत सिद्धियो प्रकटेछे पण परमेश्वरनो भक्त छे माटे कोइ सिद्धियोने ग्रहण करतो नथी केवळ परमेश्वरनुंज ध्यान करेछे त्यारे ए ध्याननो कर-नारो नारद सनकादिक शुकजीना सरखी सिद्धदशाने पामेछे माटे अनंत प्रकारनां ध्यान छे पण तत्काळ सिद्धदशाने पमाडे एवुं तो एज ध्यान छे.

एटली वार्ता करी रह्या त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "एवुं ध्यान ते अष्टांगयोगने मार्गे करीने प्राणायाम करतो होय तेनेज सिद्ध थायछे के बीजाने पण थायछे ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे,

प्राणायामवाळानो कांइ मेळ नथी एतो जो एवा ध्याननो अभ्यास करे ने ते परमेश्वरनो एकांतिक भक्त होय तो तेनेज ए ध्यान सिद्ध थायछे पण बीजा जीवथकी तो ए मार्गनेविषे चलातुंज नथी माटे ए ध्यानना जे अधिकारी छे तेनेतो कह्युं एवुं जे ए ध्यान तेथकी बीजो तत्काळ सिद्ध थयानो उपाय नथी। इति वचनामृतम् ॥ १ ॥ २२१ ॥

संवत् १८८२ ना फागण शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री अमदावादमध्ये श्रीनरनारायणना मंदिर आगळ वेदिनेविषे पाट उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने मस्तकनेविषे गुलाबी रंगनो फेंटो बांध्यो हतो ने ते पाघनेविषे गुलाबना पुष्पना तोरा झुकी रह्या हता ने कानने उपर गुलाबना बे गुच्छ खोश्या हता ने कंठनेविषे गुलाबना पुष्पना हार पहेर्या हता ने बे भुजनेविषे गुलाबना बाजुबन्ध बांध्या हता ने बे हाथनेविषे गुलाबना पुष्पना गजरा पहेर्या हता एवी रीते सर्वे अंगमां गुलाबना पुष्पे गरकाव थया हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज सर्वे परमहंस प्रत्ये बोल्या जे एक प्रश्न पुछुंछुं जे "एक परमेश्वरनो भक्त छे तेतो जाग्रत् स्वप्न ने सुषुप्ति तेथकी पर वर्तेछे ने मलिन रज तम ने मलिन सत्त्व तेनो त्याग करीने शुद्ध सत्त्वमय वर्तेछे ने एवो थको परमेश्वरने भजेछे. अने बीजो जे भक्त छे तेतो त्रिगुणात्मक वर्तेछे ने परमेश्वरनेविषे तो अतिशय प्रीतिए युक्त वर्तेछे ए बे भक्तमां कयो भक्त श्रेष्ठ छे ?" पछी संतमंडळे तो एम कह्युं जे भगवाननेविषे प्रीतिवाळो श्रेष्ठ छे.

त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे "एकतो नाही धोइने पवित्र थइने

भगवाननी पूजा करेछे अने एकतो मळ मूत्रनो भर्योथको भगवाननी पूजा करेछे ए बेमां कयो श्रेष्ठ छे?" त्यारे मुनिमंडळे कह्युं जे पवित्र थइने भगवाननी पूजा करे ते श्रेष्ठ छे.

त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे "जे मायिक उपाधिने तजीने भगवानने भजेछे तेनेतो तमे न्यून कहोछो ने जे मायिक उपाधिए सहितथको परमेश्वरनेविषे प्रीतिवान छे तेने श्रेष्ठ कहोछो ते ए केवी रीते श्रेष्ठ छे?" पछी ए प्रश्नतुं कोइथी समाधान न थयुं पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, गीतामां चार प्रकारना भक्त कह्याछे तेमां ज्ञानीनेज भगवाने पोतानो आत्मा कह्योछे माटे जे मायिक उपाधिने तजीने ब्रह्मरूप थइने भगवानने भजे तेज भक्त श्रेष्ठ छे शामाटे जे नित्यप्रलय जे सुषुप्ति ने निमित्तप्रलय जे ब्रह्मानी सुषुप्ति ने प्राकृतप्रलय जे प्रकृतिनुं कार्य सर्वे प्रकृतिनेविषे लीन थइ जाय अने आत्यंतिकप्रलय जे ज्ञानप्रलय तेमांतो प्रकृतिपर्यंत सर्वे ब्रह्मना प्रकाशनेविषे लीन थइ जायछे अने नित्यप्रलयमां जीवनी उपाधि लीन थइ जायछे ने निमित्तप्रलयमां ईश्वरनी उपाधि लीन थइ जायछे ने प्राकृतप्रलयमां पुरुषनी उपाधि सर्वे लीन थइ जायछे पण ज्यारे सृष्टि सृजायछे त्यारे ए त्रणेने पोतपोतानी उपाधि वळगेछे अने आत्यंतिकप्रलय जे ज्ञानप्रलय तेणेकरीने जेणे मायिक उपाधिनो त्याग कर्यो तेनेतो पाछी कोइ काळे मायिक उपाधि वळगती नथी अने ए जो कोइक काळे देह धरे तो जेम भगवान् स्वतंत्रथका देह धरेछे तेम तेपण स्वतंत्र थको देह धरेछे पण काळ कर्म ने माया तेने आधीन थको देहने नथी धरतो माटे ब्रह्मरूप थइने जे परमेश्वरने भजे तेज श्रेष्ठ छे अने आ वार्ता छे ते जे परमेश्वरनो अनन्यभक्त छे अने एकांतिकभक्तना लक्षणे युक्त छे तेनेज समझायछे । इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ २२२ ॥

संवत् १८८२ ना फागण वदी २ द्वितीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीअमदावादमध्ये श्रीनरनारायणना मंदिरने सन्मुख ओटा उपर ढोलीयो ढळावीने ते उपर विराजमान हता ने मस्तक उपर गुलाबी रंगनी पाघ विराजमान हती ने ते पाघनेविषे गुलाबना ने चमेलिना हार विराजमान हता तथा पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे समग्र मुनिमंडळ प्रत्ये प्रश्न पुछयो जे "जीवमात्र छे ते पंच विषयने आधारे जीवेछे ते कांतो बाह्य पंच विषयने भोगवतो होय अने ज्यारे बाह्य पंच विषयनो योग न होय त्यारे अंतःकरणमां पंच विषयनुं चिंतवन कर्या करे पण ए जीव विषयना चिंतवन विना ने विषयने भोगव्या विना क्षणमात्रपण रही शकतो नथी अने जेम वडनुं वृक्ष छे तेनां जे मूळ तेज वडने लीलो राखेछे अने बीजां सर्वे मूळ उखडी गयां होय ने जो एक वडवाइ पृथ्वीमां चोटी रही होय तोपण ए वडनुं वृक्ष लीलुं रहेछे तेम उपरथकी कदाचित् पंच विषयनो त्याग कर्योछे पण अंतरमां विषयनुं चिंतवन थायछे एज एने जन्ममरणनो हेतु छे एवा जे पंच विषय ते परमेश्वरना भक्तने केवी रीते जन्ममरणना हेतु नथी ?" ए प्रश्न छे, पछी एनो उत्तर जेम समझायो तेम मुक्तानंदस्वामीए कर्यो पण यथार्थ समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए जे, मायामय एवां जे त्रण शरीर तेनी भावनाए रहित केवळ आत्मसत्तारूपे रहीने जे भक्त परमेश्वरनी मूर्तिनुं चिंतवन करतो होय तेने भगवानना चिंतवनने बळे करीने ज्यारे उपशम अवस्था वर्ते त्यारे ए भक्तने उपशमने बळे करीने पंच विषय जन्ममरणना हेतु न थाय, जेम मही जेवी के साभरमती जेवी नदी बे कांठामां वहेती होय त्यारे हाथी घोडा वृक्ष

सर्वे तणाइ जाय पण कोइ ठरी शके नहि तेम उपशमवाळाने पण गमे-तेवा रमणीय भोग इंद्रियोने गोचर थया होय पण ज्यारे अंतर सन्मुख दृष्टि करे त्यारे जेवा पूर्वजन्मनेविषे देख्या होय ने ते आ जन्ममां विसरी जायछे तेवी तेनी विस्मृति थइ जायछे एवी रीते जे भक्तने वर्ततुं होय ते उपशम कहेवाय ते उपशमनो महिमा अति मोटो छे अने जे आ संसारनेविषे अज्ञानी स्त्री पुरुष होय ने तेने परणाव्या मोर अतिशय प्रीति वर्तती होय ने पछी तेने परणावीने त्रण रात ने त्रण दिवससुधी उजागरो ने पंथ कराव्यो होय ने पछी ए बेने भेळां कर्यां होय तो निद्राने मार्ये एक बीजाना रूपनुं के स्पर्शनुं सुख भोगववाने समर्थ थाय नहि अने एक बीजाने आलिंगन करी रह्यां होय तोपण जेम काष्टने सांमसांमां बांधी मुक्यां होय तेम सुतां होय पण पंच विषयमां एके सुख आवे नहि ए जो अज्ञानकाळे सुषुप्तिमां उमशमने पाम्यां छे तोपण कोइ जातनी विषयनी खबर रहेती नथी तो जे ज्ञानी छे ने परमेश्वरना स्वरूपने ध्याने करीने उपशमदशाने पाम्यो छे तेने पंच विषय केम बाध करे? नज करे माटे जे उपशमदशाने पाम्यो तेने पंच विषय जन्ममरणना हेतु थता नथी.

पछी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे "उपशमदशा पाम्यानो तमे कह्यो जे आत्मारूपे थइने भगवानना ध्यान करवारूप उपाय तेतो अतिकठण छे माटे ए विना बीजो एनो सुगम उपाय होय ते कहो?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एकतो भगवाननुं अतिशय माहात्म्य समझतो होय अने बीजुं भगवान् ने भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी दर्शन करवुं तेमां अतिशय वेगवान् श्रद्धा वर्तती होय एवो जे भगवाननो भक्त तेने ए उपशमदशा आवेछे पण अमने एम भासेछे जे 'जे सेवक मानी हशे तेतो कोइने नहि गमतो होय' अने मानी

सेवकपासे जे टेल चाकरी कराववी तेतो जेम काळ पडे त्यारे मोटा माणसपण कोद्रा खाइने जीवे तेम मानी सेवकने पासे सेवा चाकरी कराववी तेपण एवी छे अने धणीनो राजीपोतो जेवो निर्मानी सेवक उपर होय एवो मानी उपर न होय माटे धणीनुं गमतुं करे तेज सेवक साचो.

पछी शुकमुनिए पुछ्युं जे "जेने विवेक ने समझण न होय ते धणीने केम राजी करे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मूळजी ब्रह्मचारी ने रतनजी ए अतिशय क्यां डाह्या छे ? पण कल्याणनो खप अतिशय छे माटे भगवान् जेम राजी थाय तेम एमने करतां आवडेछे खरुं. अने वळी आ समयमांतो अयोध्यावासी बाई भाइ सर्वे जेवा अमारा गमतामां वर्तेछे तेवातो परमहंस तथा सांख्ययोगी ने कर्मयोगी सत्संगी तेपण अमारा गमतामां नथी वर्तता केमजे अयोध्यावासिएतो अतिशयज सत्संगपरायण पोतानुं जीवितव्य कर्युंछे माटे अयोध्यावासिनी पेठे भगवानने राजी करतां कोइने आवडतुं नथी. अने ए अयोध्यावासीतो बहु विश्वासी छे माटे कोइक कपटी हशे तो एमने छेतरी जशे ते सारु एमने कोइक कार्यनो आदर करवो होय त्यारे मोटेरा परमहंस तथा मोटेरा सत्संगी गृहस्थ तेमने पुछीने ते काम करवा देवुं पण कोइक एक जणाने कह्ये करवा देवुं नहि एवी रीते त्यागी तथा गृहस्थ सत्संगीने अयोध्यावासिनी खबर राखवी एम अमारी आज्ञा छे। इति वचनामृतम् ॥ ३ ॥ २२३ ॥

श्रीअमदावाद–वचनामृतं समाप्तम् ।

श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

श्रीगढडा-अन्त्यप्रकरणम् ।

संवत् १८८२ ना वैशाख वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनाराणना फळीयानी मांहिली कोरे आथमणे द्वार ओरडानी उंची ओसरीए गादी तकीए युक्त जे सुंदर रंगित ढोलियो ते उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तकनेविषे जे मोटी श्वेत पाघ तेमां सुंदर मोगराना पुष्पनो तोरो विराजमान हतो अने कंठनेविषे मोगराना पुष्पनो हार विराजमान हतो अने बे हाथने विषे ते पुष्पना गजरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे परमहंसने पुछ्युं जे "परमेश्वरना भक्तने भुंडा देश काळादिकनो योग थाय तोयपण भगवाननी भक्तिमां विघ्न थाय नहि एवी शी समझण छे ?" पछी परमहंसने जेवुं समझायुं तेवुं कह्युं पण यथार्थ उत्तर थयो नहि. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे भगवानने भजे तेने एकतो दृढ वैराग्य जोइए अने बीजी आत्मनिष्ठा जोइए तेमां जो वैराग्य न होय तो ज्यारे मनगमतुं पदार्थ मळे त्यारे जेम भगवानमां प्रीति करेछे तेम बीजा पदार्थमांपण भगवानना जेवी प्रीति थइ जाय. अने जो आत्मनिष्ठा न होयतो ज्यारे देहमां सुख दुःख आवे त्यारे ए भक्तनी वृत्तियो चुंथइ जाय पछी जेने सुखदायि जाणे तेमां प्रीति करे अने जेने दुःखदायि जाणे ते साथे द्वेष करे एवी रीते एनी बुद्धि भ्रष्ट थइ

जाय माटे भगवानना भक्तने आत्मनिष्ठा अने वैराग्य ए बेय अतिशय दृढ जोइए, शासारु जे वैराग्ये करीनेतो भगवाननी मूर्ति विना बीजा मायिक आकारमात्र खोटा थइ जायछे अने आत्मनिष्ठाए करीने मायिक जे सुख ने दुःख ते खोटां थइ जायछे अने जेने वैराग्य ने आत्मनिष्ठा न होय तेने तो निर्विकल्प समाधि थइ होय तोपण ज्यांसुधी समाधिमां रहे त्यांसुधी सुख शांति रहे अने ज्यारे समाधिमांथी बहार निसरे त्यारे नारायणदासनी पेठे सारा पदार्थने जोइने चाळा चुंथवा मांडे.[1]

अने वळी जे भगवानना भक्त होय तेनेतो भगवाननेविषे ज्ञाननुं अंग होय ने कांतो हेतनुं अंग होय, तेमां जेने ज्ञाननुं अंग होय तेतो भगवाननुं अतिशय माहात्म्य समजे अने जेने हेतनुं अंग होय तेनेतो भगवान् विना अर्ध घडी चाले नहि, ते ज्ञानना अंगवाळातो झीणोभाइ देवराम ने प्रभाशंकर छे एवी रीते जे हरिभक्त भगवाननुं माहात्म्य जाणे तेने ज्ञानना अंगवाळा जाणवा. अने जेवुं व्रजनी गोपीयोने भगवाननेविषे हेत हतुं तेवी रीतना जे हरिभक्त होय तेने हेतनुं अंग जाणवुं.[2] अने जेने ज्ञाननुं अंग होय ते भगवानने अंतर्यामी जाणे अने एम जाणे जे 'भगवान् ते कोइनुं कह्युं सांभळेज नहि भगवानतो जे भक्तनुं जेवुं अंग होय तेने तेवुं जाणीने तेवी रीते कहेछे पण कोइनी शीखामणे करीने चालता नथी' अने जे एम जाणे जे 'भगवानतो कोइकना शीखव्याथका मारामां वांक नथी तोपण मने कहेछे' तेनेतो भगवानना स्वरूपनुं ज्ञानज नथी[3]' अने आ संसारमांपण जे मनुष्यने जे

१ तो बीजानी शी वार्ता कहेवी ?। २ ते हेतना अंगवाळातो सच्चिदानंदमुनि कृपानंदमुनि पुजोभक्त विगेरे छे। ३ अने जेने भगवानमां हेत होय तेतो भगवानना मनुष्य चरित्रमां क्यारेयपण दोष ग्रहण करे नहि, भगवाननी मनुष्यलीळाने कल्याणरूप जाणे।

संघाथे स्वार्थ होय तेनो कोइ रीते अवगुण ले नहि शामाटे जे एने पोताना स्वार्थनुं हेत छे, तो जेणे भगवान् साथे जन्ममरणना भयथकी छुटवानो स्वार्थ जाण्यो होय तेने कोइ रीते भगवाननो अवगुण आवे नहि अने जे एम जाणे जे 'भगवानतो कोइकना फेरव्या फरी जायछे' एम समझीने जे भगवाननो अवगुण ले तेनेतो ज्ञाननुं अंगपण नथी अने हेतनुं अंगपण नथी. एवी रीते कहीने श्रीजिमहाराजे मोटा मोटा परमहंसने कह्युं जे तमे तमारुं ए बेमांथी जे अंग होय ते कहो, पछी सर्वे परमहंसे कह्युं जे अमारेतो ज्ञाननुं अंग छे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेने हेतनुं अंग होय तेनेतो पोताना जे प्रियतम तेने अर्थे जे न करवानुं होय तेपण थाय, केमजे आ संसारनेविषे जे चोर होय तेने पोतपोतानी स्त्री ने छोकरां तेनेविषे हेत होयछे अने ज्यारे चोरी करवा जाय त्यारे बीजा माणसने मारीने पोताना घरना माणसने द्रव्य आपेछे अने ए चोर घणो निर्दय छे पण पोताना कुटुंबी उपर हेत छे तो ते संघाथे निर्दय नथी थतो, तेम जेने भगवान् के भगवानना भक्त संघाथे हेत होय तेने भगवान् के भगवानना भक्त उपर क्रोध के ईर्ष्या आवेज नहि अने अवगुणपण कोइ रीते आवेज नहि एवुं जेने हेत होय तेने हेतनुं अंग कहीए. अने जेने ज्ञान के हेत ए बेमांथी एकेय अंग नथी तेने चाळाचुंथणो[1] कहीए, एटली वार्ता कहीने श्रीजिमहाराज पोताना उतारामां पधार्या.

पछी तेज दिवस सांझने समे दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए गादी तकीया बीछावेल ढोलीया उपर विराजमान थया हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने कंठ-

१ सगवकाळे ।

नेविषे मोगराना पुष्पनो हार पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने पोतानी आगळ साधु दुकड सरोदा वजावीने कीर्तन गाता हता ते कीर्तन भक्ति ज्यारे करी रह्या त्यारे श्रीजिमहाराजे एम आज्ञा करी जे, अमारी लखेली जे शिक्षापत्री तेनो पाठ अमारा आश्रित जे त्यागी साधु तथा ब्रह्मचारी तथा गृहस्थ बाई भाइ सर्वे तेमणे नित्ये करवो अने जेने भणतां न आवडतुं होय तेने नित्ये श्रवण करवुं अने जेने श्रवण करवानो योग न आवे तेने नित्ये शिक्षापत्रीनी पूजा करवी एवी रीते अमे शिक्षापत्रीमांज लख्युंछे माटे ए त्रणमांथी जेने फेर पडे तेने एक उपवास करवो एम अमारी आज्ञा छे. एवी रीतनी जे श्रीजिमहाराजनी आज्ञा तेने पाळवानो नियम ए सर्वेए धार्यो जे 'हे महाराज! जेम तमे कहोछो तेम अमे सर्वे पाळशुं' तेने सांभळीने श्रीजिमहाराज अतिशय प्रसन्न थइने सर्वे साधुने ने सर्वे ब्रह्मचारीने मळता हवा अने सर्वे सत्संगीना हृदयने विषे पोतानां चरणारविंद आपता हवा। इति वचनामृतम् ॥ १ ॥ २२४ ॥

संवत् १८८२ ना ज्येष्ठ शुदि ६ छठ्यने दिवस सांझने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरना फळियानेविषे बाजोठ उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर श्याम छेडानी धोळी पाघ बांधी हती अने श्वेत चादर ओढी हती अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने पाघनेविषे मोगराना पुष्पनो तोरो खोश्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे "जगतने नाशवंत देखेछे अने

देहने मुकीने चैतन्य जुदो थइ जायछे तेनेपण देखेछे तोपण आ जीवने जगतनुं प्रधानपणुं हृदयमांथी मटतुं नथी अने परमेश्वरने सर्व प्रकारे सुखना सिंधु जाणेछे तोपण परमेश्वरमां जीवनुं चित्त चोटतुं नथी तेम सत्संगपण एना हृदयमां मुख्य थतो नथी अने धन स्त्री आदिक जे सांसारिक पदार्थ तेमांथी प्रीति मटती नथी तेनुं शुं कारण हशे?" पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, जीवना हृदयमां वैराग्य नथी तेणेकरीने जगतनुं प्रधानपणुं मटतुं नथी ने भगवानमां प्रीति थती नथी. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, वैराग्यनी न्यूनता छे एतो वात साची; पण अमनेतो एम भासेछे जे, जेने सत्संग थतां थतां[1] जेवुं अंग बंधायछे तेवुं ने तेवुंज सदाय रहेछे पण ते विना बीजुं थतुं नथी[2] अने सत्संगे करीने ते अंगनी पुष्टितो थाय पण अंगतो तेनुं तेज रहेछे अने ज्यारे जेने जे अंग बंधायछे त्यारे अंग बंधातां एनुं चित्त विश्रांत जेवुं थइ जायछे, जेम कामी होय तेनुं चित्त कामे करीने विश्रांत थाय ने जेम क्रोधी होय तेनुं चित्त क्रोधे करीने विश्रांत थाय ने जेम लोभी होय तेनुं चित्त लोभेकरीने विश्रांत थाय, तेम एनुं चित्त अंग बंधातां विश्रांत थइ जायछे पछी ते विश्रांतमां जेवुं अंग बंधाय तेवुं अंग रहेछे माटे जे समझु होय तेने पोतानुं जे अंग होय तेने ओळखी राख्युं जोइए, ते ज्यारे काम क्रोधादिके करीने पोताने विक्षेप थतो होय त्यारे पोताना अंगनो विचार करे तो ते कामादिक क्षीण पडी जाय, जेम कोइक गृहस्थ होय तेने पोतानी माता बोन अथवा दीकरी अतिस्वरूप-

---

१ ज्यारे भगवाननो निश्चय थायछे त्यारे । २ तेमा कोइकने आत्मनिष्ठानुं अग बंधायछे कोइकने दासपणानुं अग बंधायछे तो कोइकने पतिव्रतानु अग बंधायछे ।

वान् होय तेने जोइने जो भुंडो घाट थइ जाय तो पछी तेनी केवी दाझ थाय तेवी दाझ ज्यारे सत्संग विना बीजुं पदार्थ प्रधान थाय त्यारे थइ जोइए अने ज्यारे एवी दाझ अयोग्य पदार्थना संकल्पने देखीने न थाय तेना हृदयमांतो सत्संगपण प्रधान न रहे. अने सर्वे साधनना फळरूपतो आ सत्संग छे, ते श्रीकृष्ण भगवाने उद्धव प्रत्ये एकादशस्कंधमां कह्युं छे जे 'अष्टांगयोग तथा सांख्यविचार तथा शास्त्रपठन तथा तप, त्याग, योग, यज्ञ अने व्रतादिकेकरीने हुं तेवो वश थतो नथी जेवो सत्संगेकरीने वश थाउंछुं' माटे अमनेतो एम भासेछे जे, पूर्व जन्मनो संस्कार हशे तेपण सत्पुरुषने योगे करीने थयो हशे अने आजपण जेने संस्कार थायछे ते सत्पुरुषने योगे करीनेज थायछे माटे एवा सत्पुरुषनो संग प्राप्त थयोछे तोपण जेने जेम छे तेम समझातुं नथी तेने अतिशय मंदबुद्धिवाळो जाणवो; शामाटे जे जेवी श्वेतद्वीपमां सभा छे ने जेवी गोलोक वैकुंठलोकनेविषे सभा छे ने जेवी बदरिकाश्रमनेविषे सभा छे तेथीपण हुं आ सत्संगीनी सभाने अधिक जाणुंछुं अने सर्वे हरिभक्तने अतिशय प्रकाशे युक्त देखुंछुं. एमां जो लगारपण मिथ्या कहेता होइए तो आ संत सभाना सम छे ते सम शासारु खावा पडेछे जे सर्वने एवुं अलौकिकपणुं समझातुं नथी अने देखवामां पण आवतुं नथी ते सारु सम खावा पडेछे. अने ब्रह्मादिकनेपण दुर्लभ एवो जे आ सत्संग तेमां आवीने परमेश्वर विना जेने बीजा पदार्थमां हेत रहेछे तेनुं कारण ए छे जे 'जेवी ए जीवने परोक्षनेविषे प्रतीति छे तेवी प्रत्यक्षनेविषे दृढपणे प्रतीति थती नथी' ते श्रुतिमां कह्युं छे जे 'जेवी परोक्ष देवनेविषे जीवने प्रतीति छे तेवी जो प्रत्यक्ष गुरुरूप हरिनेविषे आवे तो जेटला अर्थ प्राप्त

थवाना कह्याछे तेटलो सर्वे अर्थ तेने प्राप्त थायछे' अने ज्यारे आवो संत समागम प्राप्त थयो त्यारे देह मुकीने जेने पामवा हता तेतो देह छतांज मळ्या छे माटे जेने परमपद कहीए मोक्ष कहीए तेने छते देहेज पाम्यो छे. अने आ वार्ता जे कही ते जणायछे तो जाडी जेवी पण एतो अतिशय झीणी छे ते जें एवी रीते वर्ततो होय तेने एम समझाय जे 'ए वार्ता अति झीणी छे' ने बीजांनेतो समझ्यामां पण आवे नहि एवी अतिशय झीणी वार्ता छे, एम वार्ता करीने श्रीजिमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने पोताना उतारामां पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ २२५ ॥

संवत् १८८३ ना आपाढ वदी १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानेविषे विराजमान हता अने ते दिवस ठकर हरजीए पोताने घेर श्रीजिमहाराजनी पधरामणी करी त्यारे श्रीजिमहाराज त्यां पधार्या पछी उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर गादी तकिया बिछावीने श्रीजिमहाराजने विराजमान कर्या पछी हरजी ठकरे श्रीजिमहाराजनी केसर चंदनादिके करीने पूजा करी, एवी रीते श्रीजिमहाराज पूर्व मुखारविंदे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठनेविषे मोगराना पुष्पना हार तथा बे भुजानेविषे ते पुष्पना गजरा तथा पाघनेविषे ते पुष्पना तोरा ते अतिशय विराजमान हता अने श्रीजिमहाराजना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समयमां श्रीजिमहाराजे सर्व संतमंडळने प्रश्न पुछ्यो जे "जे हरिभक्तना हृदयनेविषे दया ने स्नेह ए बे स्वाभाविक रह्यां होय त्यारे

स्नेहनुं स्वरूपतो मध जेवुं छे ते ज्यां त्यां चोटे अने दयानो स्वभाव एवो छे जे ज्यां त्यां दया करे त्यारे भरतजीए मृगला उपर दया करी तो ते मृगलीने पेट जन्म लेवो पड्यो अने जे दयावान् होय तेने जे उपर दया आवे ते संघाथे स्नेह थया विना रहे नहि. अने ए दया ने स्नेह तेने टाळ्यानो उपायतो आत्मज्ञान ने वैराग्य ए वेय छे ते आत्मज्ञान एवुं छे जे जेमां कांइ बीजुं पेसेज नहि. अने वैराग्यनुं एवुं स्वरूप छे जे सर्वे नामरूपने नाशवंत देखाडे माटे आत्मज्ञान ने वैराग्य ए वेयवते करीने दया ने स्नेहनो नाश थइ जायछे अने स्थूळ सूक्ष्म ने कारण ए आदिक सर्वे उपाधिनोपण नाश थइ जायछे अने केवळ ब्रह्मसत्तामात्र रहेछे पछी एने भगवान् तथा भगवानना भक्तनेविषे दया ने स्नेह रहेछे के नथी रहेतो ?" ए प्रश्न छे, पछी मुक्तानंदस्वामी तथा शुकमुनि तथा नित्यानंदस्वामी ए आदिक परमहंसे जेनी जेवी दृष्टि पुगी तेवो तेणे उत्तर कर्यो पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं यथार्थ समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीए एनोतो उत्तर एम छे जे, ज्ञान ने वैराग्ये करीने त्रण शरीर त्रण अवस्था ने त्रण गुण ए सर्वे मायिक उपाधि थकी चैतन्य जुदो थइ जायछे ने केवळ सत्तामात्र रहेछे पण मायिक उपाधिनो लेशपण रहेतो नथी, त्यारे जेम दीपकनो अग्नि ते कोडीयुं तेल ने वाट्य ए त्रणने योगे करीने दृष्टिमां आवे तथा ग्रहण कर्यामां आवे पण ज्यारे ए त्रण प्रकारनी उपाधिनो संग छुटी जायछे त्यारे ए अग्नि कोइनी दृष्टिमां पण न आवे ने ग्रहणपण न थाय ने उपाधिए युक्त होय त्यारेज दृष्टिए आवे ने ग्रहण कर्यामां आवे, तेम ज्ञान वैराग्ये करीने सर्वे मायिक उपाधि निवृत्ति पामेछे त्यारे ए जीवात्मा छे ते केवळ ब्रह्मसत्तामात्र रहेछे ने

ते मन वाणीने अगोचर छे ने कोइइंद्रिये करीने ग्रहण कर्यामां आवतो नथी पछी ते काळेतो एने जो शुद्ध संप्रदाये करीने भगवाननुं ज्ञान प्राप्त थयुं होय ने भगवान् ने भगवानना भक्तनुं माहात्म्य यथार्थपणे समझायुं होय तेनेतो सर्व मायिक उपाधिनो संग टळी जाय ने पोतानो जीवात्मा ब्रह्मरूप थाय तोपण भगवान् ने भगवानना भक्तनेविषे जे दया ने प्रीति ते निरतर रहेछे, त्यां दृष्टांत छे—जेम दीपकनी ज्योत छे तेने ज्यारे उपाधिनो संग टळी जायछे त्यारे ए अग्नि कोइ इंद्रिये करीने ग्रहण न थाय एवो आकाशनेविषे रहेछे तोपण ए अग्निनेविषे सुगंधी तथा दुर्गंधीनो जे पाश लाग्यो होय ते टळतो नथी तथा जेम वायु छे तेतो अग्निथकी पण वधु असंगी छे तोपण तेने सुगंधी तथा दुर्गंधीनो पाश लागेछे. तेमज जीवात्माने ज्ञान वैराग्ये करीने मायिक उपाधिनो संग टळी जायछे तोपण सत्संगनो पाश लाग्योछे ते टळतो नथी अने ते ब्रह्मरूप थायछे तोपण नारद सनकादिक ने शुकजीनी पेठे भगवान् तथा भगवानना भक्तनेविषे अतिशय दया ने प्रीतिए युक्त वर्तेछे, त्यां श्लोक—"परिनिष्ठितोऽपि नैर्गुण्ये उत्तमश्लोकलीलया । गृहीतचेता राजर्षे आख्यानं यदधीतवान् ॥" तथा "[1]हरेर्गुणाक्षिप्तमतिर्भगवान् बादरायणिः । अध्यगान्महदाख्यानं नित्यं विष्णुजनप्रियः ॥" तथा "आत्मारामाश्च मुनयो" तथा "प्रायेण मुनयो राजन्" तथा गीतामां कह्युंछे जे "ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति । समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं

१ अर्थ—भगवानना गुणोथी जेनी बुद्धि आकर्षित थइछे अने विष्णुजनो जेने प्रिय छे एवा भगवान् शुकमुनि भागवतरूप जे मोटुं आख्यान तेने निरंतर भणता हवा ।

लभते पराम् ॥" इत्यादिक घणाक श्लोके करीने प्रतिपादन कर्युंछे जे 'भगवानना भक्त होय ते ज्ञान वैराग्ये करीने मायिक उपाधिने त्याग करीने ब्रह्मरूप थया होय तोपण भगवान् तथा भगवानना भक्तनेविषे दया ने प्रीति तेणे युक्त होयछे' अने जे भगवाननो भक्त न होय ने केवळ आत्मज्ञान ने वैराग्ये करीने मायिक उपाधिने टाळीने सत्तामात्र वर्ततो होय तेनेतो साधनदशानेविषे भगवाननी उपासनाए रहित एवा जे केवळ आत्मज्ञानी तेना संगरूप कुसंगनो पाश लाग्यो छे माटे भगवान् ने भगवानना भक्तनेविषे दया ने स्नेह थतां नथी, जेम वायुने ने अग्निने दुर्गंधनो पाश लागेछे तेमज एने ते कुसंगनो पाश लाग्योछे ते कोइ प्रकारे टळतो नथी, जेम अश्वत्थामा ब्रह्मरूप थयो हतो पण एने कुसंगनो पाश लाग्यो हतो माटे श्रीकृष्णभगवान् ने ते भगवानना भक्त जे पांडव तेनेविषे दया ने स्नेह थयां नहि, तेम केवळ जे आत्मज्ञानी छे ते ब्रह्मरूप थायछे तोपण तेने कुसंगनो पाश जतो नथी ने भगवान् ने भगवानना भक्तमां दया ने स्नेह थतां नथी, माटे भगवानना भक्तनेतो मायिक उपाधिनो संग मटी जायछे तोपण भगवान् तथा भगवानना भक्त तेनेविषे अतिशय दया ने प्रीति वृद्धिने पामेछे पण कोइ रीते दया तथा प्रीति टळती नथी अखंड रहेछे, एम वार्ता करीने श्रीजिमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने पोताने उतारे पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ ३ ॥ २२६ ॥

संवत् १८८३ ना श्रावण शुदि ३ तृतीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे मेडीनी ओसरी उपर गादी तकिया बिछवावीने उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां

ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवाननो भक्त होय ने ते ज्ञान वैराग्ये युक्त होय ने विचारने बळे करीने पोताने बंधन करे एवी जे मायिक पदार्थमां प्रीति तेने टाळी नाखी होय तोपण ए भक्तने ज्यां-सुधी निर्विकल्प समाधि थाय नहि त्यांसुधी बाधितानुवृत्ति रही जा-यछे तेणेकरीने विचारमां एम रहेछे जे 'रखे मारे मा बाप, स्त्री, छोकरां, द्रव्य, कुटुंब, देह गेह एमनेविषे प्रीति रही गइ होय नहि?' एम बीतो रहेछे, जेम कोइक शूरवीर पुरुष होय तेणे पोताना सर्व शत्रु मारी ना-ख्या होय तोपण ते मरेल शत्रुथकी पण क्यारेक बी जायछे तथा स्वप्नमां ते शत्रुने देखे त्यारे बी जायछे, तेम ते ज्ञानी भक्तनेपण जेजे पदार्थ अंतरमांथी जुठुं करी नाख्युं छे ने तेमांथी प्रीति तोडी नाखीछे तोपण बाधितानुवृत्तिए करीने अतरमां मायिक पदार्थना बंधनथकी बीक लागेछे अथवा धन कलत्रादिक पदार्थनी कोइक समे स्मृति थइ आवेछे त्यारे मनमां बी जवायछे जे. 'रखे मने बंधन करे' एवी रीते 'जे पदार्थ अंतरमांथी असत्य करी नाख्यां ते पदार्थनी स्मृति थइ आवे' तेने बाधितानुवृत्ति कहीए ते बाधितानुवृत्ति ज्यारे निर्विकल्प समाधि थाय त्यारे नाश थायछे ने ए पुरुषने खाधापीधानी तथा दिवस रात्रिनी तथा सुखदुःखनी कशी खबर रहेती नथी अने ज्यारे ए निर्विकल्प समाधिमांथी बारणे नीसरे ने सविकल्प समाधिमां वर्ते त्यारेतो बाधितानुवृत्ति रहे खरी माटे ते हरिभक्तने ताव आवे अथवा देह पडवानो समो थाय त्यारे बाधितानुवृत्तिने योगे करीने भगवान विना बीजा पदार्थनीपण क्यारेक स्मृति थइ आवे अने ते

समामां जे बोलाय तेपण वरल्या जेवुं बोलाय अने 'ओय बाप ओय मा' एवां वचनपण बोलाय त्यारे जे आ बाधितानुवृत्तिना मर्मने न समझतो होय तेना हृदयमां ते हरिभक्तनो अवगुण आवी जाय जे 'आ भगवाननो भक्त कहेवातो हतो ने अंतकाळे आम केम वरलेछे' एवो जे अवगुण लेवायछे ते बाधितानुवृत्तिनो मर्म जाण्या विना लेवायछे. अने आ संसारमां केटलाक पापी मनुष्य होय ने ते अंत समे बोलतां चालतां खबडदार थका देहने मेलेछे अथवा कोइक सिपाइ ने रजपुत होय ने तेने शरीरमां घा वागे एटले खबडदार थका ने बोलता चालता मरी जायछे माटे भगवानथी विमुख होय ने ते खबडदार थको देह मुके तोपण शुं तेनुं कल्याण थायछे? तेनोतो नरकमांज निवास थायछे. अने भगवाननो भक्त होय ते भगवाननुं नामस्मरण करतो थको देह मुके अथवा बाधितानुवृत्तिने योगे करीने बेशुद्ध थइने देह मुके तोपण ए भगवाननो भक्त भगवानना चरणारविंदनेज पामेछे.

अने तेज दिवस संध्या समे श्रीजिमहाराज पोताना उतारामां मेडिनी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे मोटेरा परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "आ देहनेविषे जीव रह्योछे ते एक ठेकाणे केवी रीते रह्योछे ने सर्व देहमां केवी रीते व्यापी रह्यो छे ते कहो?" पछी जेने जेवुं भास्युं तेणे तेवुं कह्युं पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं कोइथी समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेम देहनेविषे अन्नादिक रसनो विकार वीर्य

छे तेम पंच महाभूतना विकाररूप एवुं एक हृदयनेविषे मांसनुं चक्र छे तेनेविषे जीव रह्योछे ते जेम चिंथरानो काकडो होय तेने तेले पलाळीने अग्निए सळगाव्यो होय तेम जीव छे ते ते मांसना चक्र संघाथे वळगीने रह्योछे. अने वळी जेम लोढानो खीलो होय तेनेविषे अग्नि व्यापी रह्यो होय तेम मांसना चक्रनेविषे जीव जेते विशेपसत्ताए करीने व्यापी रह्योछे अने सामान्यसत्ताए करीने बधा देहनेविषे व्यापी रह्योछे माटे जेजे ठेकाणे देहमां दुःख थायछे ते सर्वे दुःख जीवनेज छे पण देहना सुख दुःखथकी ए जीव जुदो न कहेवाय. अने कोइक एम कहेशे जे 'जीवतो प्रकाशमान् छे अने मांसनुं चक्र ने देहतो प्रकाशे रहित छे ते बेने एक बीजामां मळ्या केम कहेवाय?' तो एनो उत्तर एम छे जे, जेम तेल कोडियुं ने वाट्य तेना संबन्ध विना एकलो अग्निनो ज्योति आकाशनेविषे अधरपधर रहेतो नथी, तेम पंचभूतना विकाररूप एवुं जे मांसनुं चक्र तेना संबन्ध विना एकलो जीव रहेतो नथी अने जेम कोडियाथकी तेलथकी ने वाट्यथकी अग्नि जुदो छे ते कोडियाने भांगवे करीने अग्निनो नाश थतो नथी तेम मांसना चक्रनेविषे ने देहनेविषे जीव व्यापीने रह्यो छे तोपण देहने मरवे करीने जीव मरतो नथी अने देह भेळो सुखदुःखनेतो पामे खरो पण देहना जेवो ए जीवनो नाशवंत स्वभाव नथी एवी रीते जीव अविनाशी छे ने प्रकाशरूप छे अने देहनेविषे व्यापक छे. अने जेम मंदिरने विषे एक स्थळमां दीवो मुक्यो होय ते दीवाना अग्निनी ज्योति विशेषे करीनेतो वाट्यनेविषे व्यापी रही छे अने सामान्यपणे करीनेतो बधा घरनेविषे व्यापी रही छे तेम जीवात्मा छे तेपण विशेषे करीनेतो पंचमहाभूतना विकाररूप जे मांसनुं चक्र तेनेविषे व्यापिने रह्यो

छे अने सामान्यपणे करीनेतो वधा देहमां व्यापिने रह्यो छे एवी रीते आ देहनेविषे जीव रहेछे. अने ए जीवनेविषे परमेश्वरपण साक्षीरूपे करीने रहेछे[1] । इति वचनामृतम् ॥ ४ ॥ २२७ ॥

संवत् १८८२ ना भादरवा शुदि ११ एकादशीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए गादी तकिया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठनेविषे मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता अने पाघनेविषे मोगराना पुष्पना तोरा विराजमान हता ने हाथनेविषे मोगराना पुष्पना गजरा विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

ते समयमां श्रीजिमहाराजे कह्युं जे कोइक प्रश्न पुछो, पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! भगवाननी जे भक्ति छे तेमां कोइ रीतनुं विघ्न न थाय एवी ते कइ भक्ति छे अने जे भक्तिमां कांइक विघ्न थायछे ते कइ जातनी भक्ति छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे,[2] तृतीयस्कंधमां कपिलगीतानेविषे माता देवहूतिए कपिलजी प्रत्ये कह्युंछे जे "यन्नामधेय[3]श्रवणानुकीर्तनाद्यत्प्रह्व-

१ ते जीवे उपासना करवा योग्य छे । २ जे भक्ति माहात्म्यज्ञाने युक्त होय ते भक्तितो विघ्नोथी सर्वप्रकारे न पराभव पामे अने माहात्म्यज्ञाने रहित होय तेतो विघ्नोथी पराभव पामे, ते माहात्म्य । ३ अर्थः-हे भगवान् ! कदाचित् पण जे तमारा नामनुं श्रवण कीर्तन करवाथी तथा तमोने प्रणाम करवाथी तथा तमारुं स्मरण करवाथी श्वपच पण तत्काळ यज्ञ करवाने माटे कल्पायछे एटले पवित्र थायछे तो तमारा दर्शनथी पवित्र थाय अने कृतार्थ थाय तेमां शुं कहेवुं ? । आ एक आश्चर्यनी वात छे के जे श्वपचना पण जिह्वाग्रमां तमारुं नाम वर्तेछे ते श्वपच पण तमारा नामोच्चारणथी तमारी भक्तिए रहित एवा कर्मठोथी श्रेष्ठ थायछे, वळी जे जनोए तमारुं नाम उच्चारण कर्युंछे तेमणेज तप कर्युंछे तेमणेज होम कर्योछे तेमणेज तीर्थमां स्नान कर्युंछे तेज सदाचारवाळा छे तेमणेज वेदनो अभ्यास कर्योछे एम जाणवुं ।

णाद्यत्स्मरणादपि क्वचित् । श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते कथं पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ॥ अहो बत श्वपचोऽतो गरीयान् यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम् । तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते ॥" ए बे श्लोके करीने जेवुं भगवाननुं माहात्म्य कह्युंछे तथा कपिलजीए माता देवहूति प्रत्ये पोतानुं माहात्म्य कह्युं छे जे "मद्भयाद्वाति वातोऽयं सूर्यस्तपति मद्भयात् । वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निर्मृत्युश्चरति मद्भयात् ॥" एवी रीते माहात्म्य सहित भगवाननी भक्ति होय तेमांतो कोइ जातनुं विघ्न आवे नहि अने माहात्म्य जाण्या विना प्राकृतबुद्धिए करीने जो भक्ति करे तो तेमां विघ्न आवेछे.

पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "ए माहात्म्य युक्त भक्ति आव्यानुं शुं साधन छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे शुक सनकादिक जेवा जे मोटा पुरुष तेनी जे सेवा ने प्रसंग तेमांथी माहात्म्ये सहवर्तमान एवी जे भक्ति ते जीवना हृदयमां उदय थायछे.

पछी शुकमुनिए पुछ्युं जे "एकतो भगवाननो भक्त एवो होय जे तेने भगवाननो निश्चय पण परिपक्व होय ने काम, क्रोध, लोभ मोहादिक जे विकार ते एके तेना हृदयमां आवे नहि अने बीजो भक्त होय तेनेतो भगवाननो निश्चय परिपक्व होय पण काम, क्रोध, लोभ, मोहादिक विकारे करीने अंतरमां विक्षेप थतो होय ए बे प्रकारना भक्त ज्यारे देहने मुके त्यारे ए बेय भक्तने भगवानना धा-

१ अर्थ –समग्र जगतने सुख आपनारो आ वायु मारा भयथी वायछे. सूर्य मारा भयथी तपेछे, इन्द्र मारा भयथी वर्षेछे. अग्नि मारा भयथी बाळेछे. मृत्यु मारा भयथी प्राणिओमां विचरेछे ।

ममां सरखा सुखनी प्राप्ति थायछे के अधिक न्यून सुखनी प्राप्ति थायछे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे भगवानना भक्तने भगवाननो निश्चय पण परिपूर्ण होय ने काम क्रोध लोभादिके करीने विक्षेपने न पामतो होय ने अतिशय त्यागी ने अति वैराग्यवान् ने अति आत्मनिष्ठावाळो होय अने जो ते प्रत्यक्ष श्रीकृष्णभगवाननी मूर्ति विना कांइक बीजुं इच्छे तो तेने न्यून सुखनी प्राप्ति थायछे अने बीजो जे भक्त छे तेनेपण भगवाननो निश्चय तो परिपूर्ण छे तोपण हृदयमां काम, क्रोध, लोभ, मोहादिकनो विक्षेप आवे त्यारे पोताना हृदयमां दाझ्य थाय ने भगवान् जे प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण तेनी मूर्ति विना बीजा कोइ पदार्थने इच्छे नहि तेने आत्मनिष्ठा वैराग्य जो थोडां होय तोपण ए देह मुकीने भगवानना धाममां बहु मोटा सुखने पामेछे शामाटे जे प्रथम कह्यो जे भक्त ते उपरथीतो त्यागी ने निष्कामी जणायछे पण भगवाननी मूर्ति विना बीजी आत्मदर्शनादिक प्राप्तिनी हृदयमां इच्छा छे माटे ए सकाम भक्त कहेवाय अने एने परलोकने विषे जरुर न्यून सुखनी प्राप्ति थायछे अने जे बीजो भक्त कह्यो ते उपरथीतो सकाम जेवो जणाय पण ए भक्त भगवाननी मूर्ति विना अंतरमां बीजुं कांइ इच्छतो नथी अने भगवाननी मूर्ति विना बीजा सुखनी इच्छानो जो घाट थइ जाय तो अतिशय मनमां दाझेछे माटे ए निष्काम भक्त कहेवाय ते ज्यारे देहने मुके त्यारे बहु मोटा सुखने पामेछे ने भगवाननो पार्षद थायछे अने श्रीकृष्णभगवाननी मूर्तिनेविषे अतिशय प्रीतिए युक्त थायछे। इति वचनामृतम् ॥ ५ ॥ २२८ ॥

संवत् १८८३ ना भादरवा वदी ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानेविषे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या

हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज सर्व हरिभक्त उपर कृपादृष्टि करीने बोलता हवा जे, भगवाननो भक्त होय ने भगवाननी कथा कीर्तन श्रवणादिक जे नवधा भक्ति तेने जो हरिभक्त उपर ईर्ष्याए करीने करे तो ते भक्तिए करीने भगवान् अतिशय राजी थता नथी अने ईर्ष्यानो त्याग करीने केवळ पोताना कल्याणने अर्थे भक्ति करे पण लोकने देखाड्या सारु न करे तो ते भक्तिए करीने भगवान् प्रसन्न थायछे माटे जेने भगवानने राजी करवा होय तेनेतो लोक रीझाववाने अर्थे तथा कोइकनी ईर्ष्याए करीने भक्ति न करवी केवळ पोताना कल्याणने अर्थेज करवी अने भगवाननी भक्ति करतां थकां कांइक पोताने अपराध थइ जाय तेनो दोष बीजाने माथे धरवो नहि. अने जीवमात्रनोतो एवो स्वभाव छे जे ज्यारे कांइक पोतामां वांक आवे त्यारे एम बोले जे 'मने बीजे कोइए भुलाव्यो त्यारे मारामां भुल्य पडी पण मारामां कांइ वांक नथी' पण एम कहेनारो महा मूर्खो छे केमजे बीजोतो कोइक कहेशे जे 'तुं कुवामां पड्य' त्यारे एने कहेवे करीने शुं कुवामां पडवुं? माटे वांकतो अवळुं करे तेनोज छे ने बीजाने माथे दोष दे छे, तेमज इंद्रियो ने अंतःकरणनो वांक काढवो ए पण जीवनी मूर्खाइज छे ने जीव ने मनतो परस्पर अतिमित्र छे जेम दुधने ने पाणीने मित्रता छे तेम जीवने ने मनने मित्रता छे ते ज्यारे दुधने ने पाणीने भेळां करीने अग्नि उपर मुके त्यारे पाणी होय ते दुधने तळे बेसे ने पोते बळे पण दुधने बळवा न दे त्यारे दुधपण पाणीने उगारवाने सारु पोते उभराइने अग्निने ओलवी नाखेछे एवी रीते बेयने परस्पर मित्राचार छे तेमज जीवने ने मनने परस्पर मित्राचार छे ते

जे वात जीवने न गमती होय ते वातनो मनमां घाट थायज नहि ज्यारे कांइक जीवने गमतुं होय त्यारेज मन जीवने समझावे ते केम समझावेतो जीव ज्यारे भगवाननुं ध्यान करतो होय त्यारे मन कहेशे जे 'भगवाननी भक्त कोइक बाई होय तेनुंपण भेळुं ध्यान करवुं' पछी तेना सर्व अंगनुं चिंतवन करावीने पछी जेम बीजी स्त्रीनेविषे खोटो घाट घडे तेम तेनेविषे पण खोटो घाट घडे त्यारे जो ए भक्तनो जीव अतिशय निर्मळ होय तोतो मननुं कह्युं न माने ने अतिशय दाझ थाय तो मन एवो फरीने क्यारेय घाट घडे नहि अने जो एनो जीव मलिन होय ने पापे युक्त होय तो मननुं कह्युं माने त्यारे वळी मन एने भुंडा घाट करावी करावीने कल्याणना मार्गथी पाडी नाखे ते सारु कल्याणना मार्गथी अवळी रीते अधर्मनी वार्ताने पोतानुं मन कहे अथवा बीजो कोइ माणस कहे तो तेने संघाथे जे शुद्ध मुमुक्षु होय तेने अतिशय वैर थइ जायछे पछी पोतानुं मन अथवा बीजो माणस ते फरीने तेने ते वार्ता कहेवा आवे नहि अने मन छे तेतो जीवनुं मित्रज छे ते जीवने न गमे एवो घाट घडेज नहि अने ज्यारे कांइ मनने अयोग्य घाट थइ जाय त्यारे जो जीवने मन उपर अतिशय रीस चडती होय तो फरीने मनमां एवो घाट थायज नहि अने ज्यारे मनने सदाय अयोग्य घाट थया करता होय त्यारे एने पोताना जीवनोज वांक समझवो पण एकला मननो वांक समझवो नहि एवी रीते समझीने भगवाननी भक्ति करे तो तेने कोइ विमुख जीवनो तथा पोताना मननो जे कुसंग ते लेशमात्र अडी शके नहि अने निर्विघ्न थको भगवाननुं भजन करे इति वचनामृतम् ॥ ६ ॥ २२९ ॥

संवत् १८८३ ना भादरवा वदी ६ छठ्यने दिवस स्वामी श्रीस-

हजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानेविषे गादी तकीया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठनेविषे मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता ने पायनेविषे मोगराना पुष्पना तोरा विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज सर्वे हरिभक्त प्रत्ये बोल्या जे, अमारा अंतरनो जे सिद्धांत छे ते कहीए छीए जे जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं तेनेतो भगवान् ने भगवानना साधु एथी उपरांत बीजुं कांइ जगतमां सुखदायी नथी माटे जेम पोताना शरीरनेविषे जीवने आत्मबुद्धि वर्तेछे तेवी भगवान् ने भगवानना संतनेविषे आत्मबुद्धि राखी जोइए अने भगवानना भक्तनो पक्ष दृढ करीने राख्यो जोइए अने ते पक्ष राखतां थकां आबरु वधो अथवा घटो अथवा मान थाओ के अपमान थाओ अथवा देह जीवो के मरो पण कोइ रीते भगवान् ने भगवानना भक्तनो पक्ष मुकवो नहि ने एमनो अभाव आववा देवो नहि अने भगवानना भक्त जेवा देह ने देहनां सगां संबन्धिने वहालां राखवां नहि एवी रीते जे हरिभक्त वर्ते तेने अतिबळवान् एवा जे काम क्रोधादिक शत्रु ते पण पराभव करी शकता नथी. अने जे भगवाननुं ब्रह्मपुर धाम छे तेनेविषे भगवान् सदाय साकार मूर्ति विराजमान छे अने भगवानना भक्त पण ए भगवानना धाममां मूर्तिमान् थका भगवाननी सेवानेविषे रहेछे ते भगवाननो जेने प्रत्यक्ष प्रमाण दृढ आशरो होय तेने मनमां एवी बीक न राखवी जे 'हुं रखे मरीने भूत प्रेत थउं के रखे इंद्रलोकनेज पामुं के रखे ब्रह्मलोकनेज पामुं' एवी आशंका मनमां राखवी नहि केमजे जे एवो भगवाननो भक्त होय तेतो भगवानना धामनेज पामे पण वचमां

क्यांइ तेने भगवान् रहेवा दे नहि. अने ए भक्तजन होय तेनेपण पोतानुं जे मन छे तेने परमेश्वरना चरणारविंदनेविषे दृढ करीने राखवुं जेम वज्रनी पृथ्वी होय तेमां वज्रनी खीली चोडी होय ते कोइ रीते उखडे नहि तेम भगवानना चरणारविंदनेविषे पोताना मनने दृढ राखवुं अने एवी रीते जे भगवानना चरणारविंदनेविषे पोताना मनने राखे तेने मरीने भगवानना धाममां जवुं एम नथी एतो छती देहेज भगवानना धामने पामी रह्यो छे, एम वार्ता करीने जय सच्चिदानंद कहीने सर्वे सभाने उठवानी आज्ञा करी। इति वचनामृतम् ॥ ७ ॥ २३० ॥

संवत् १८८३ ना भादरवा वदी ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठनेविषे मोगराना पुष्पना हार विराजमान हता ने पाघनेविषे मोगराना पुष्पना तोरा विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे मुनिमंडळने प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननो भक्त होय तेने एवो कयो उपाय छे जे जेणेकरीने सदा सुखी रहेवाय?" पछी मोटा मोटा साधु हता तेणे जेवुं जेने समझायुं तेणे तेवो उत्तर कर्यो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तरतो एम छे जे, जे भगवानना भक्तने एकतो दृढ वैराग्य होय अने बीजो अतिशय दृढ स्वधर्म होय अने जेणे ए बे साधने करीने सर्वे इंद्रियोने जीतीने पोताने वश कर्यां होय [1] अने जेने भगवान् ने भगवानना भक्तनेविषे अतिशय प्रीति होय

१ आ मुख्य साधन छे ।

अने जेने भगवान् ने भगवानना भक्तनेविषे अतिशय मित्रभाव वर्ततो होय अने जे कोइ दिवस भगवान् के भगवानना भक्तथकी उदास थाय नहि अने जे भगवान् ने भगवानना भक्तने संगेज राजी रहे पण कोइ विमुख जीवनी सोबत गमे नहि एवां जे हरिभक्तनां लक्षण होय ते आलोकनेविषे तथा परलोकनेविषे सदाय सुखीयो रहेछे.अने वैराग्य ने स्वधर्म तेणेकरीने जेणे पोतानां इंद्रियोने वश न कर्यां होय तो ते भगवान् तथा भगवानना भक्तने संगे रह्योथको पण दुःखीयो रहेछे शामाटे जे जेणे पोतानां इंद्रियो न जीत्यां होय तेने कोइ ठेकाणे सुख थाय नहि अने भगवाननी भक्ति करतो होय तोपण ज्यारे इंद्रियो विषयमां तणाइ जाय त्यारे ते हरिभक्तना हृदयमां अतिदुःख थायछे माटे सर्व पोतानां इंद्रियोने जीतीने वश करे तेज सदा सुखीयो रहेछे अने जेणे सर्व इंद्रियोने जीतीने वश कर्यां होय तेनेज वैराग्यवान् ने धर्मवाळो जाणवो पण जेनां इंद्रियो वश न थयां होय तेने वैराग्यवान् ने धर्मवाळो न जाणवो अने जे वैराग्यवान् ने धर्मवाळो होय तेनेतो सर्व इंद्रियो नियममां होय अने ते सदाय सुखीयो होय.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! भगवाननो भक्त होय तेने भगवाननी भक्तिमां कयुं अतिशय मोटुं विघ्न छे?" पछीश्रीजिमहाराज बोल्या जे,भगवानना भक्तने एज मोटुं विघ्न छे जे, जे पोतामां दोष होय तेने देखे नहि अने भगवान् ने भगवानना भक्तथकी जेनुं मन नांखुं पडी जाय अने ते भगवानना भक्तथकी जेने बेपरवइ थइ जवाय एज[1] एने अतिशय मोटुं विघ्न छे। इति वचनामृतम्॥ ८ ॥ २३१॥

संवत् १८८३ ना आसो शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री-

१ आ भ्रण दोष।

सहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार तथा गजरा विराजमान हता अने पाघ उपर पुष्पना तोरा झुकी रह्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे सर्व हरिभक्तने कह्युं जे, जे अमारा मोटा मोटा परमहंस छे तेनी जेवी स्थिति छे ने समझण छे ते अमे तमने बाई भाइ सर्वने कहीए तेने सांभळीने' पछी जेवी रीते तमे सर्वे वर्तता हो ने जेवी तमने स्थिति होय तेवी रीते तमे कही देखाडज्यो, एम कहीने श्रीजिमहाराज बोल्या जे अमारा मुनिमंडळमां जे मोटा मोटा संत छे तेने एम वर्तेछे जे, पोताना हृदयनेविषे जे जार्णपणुं छे ते भगवानना धामनो दरवाजो छे ते दरवाजा उपर सर्व संत उभा छे, जेम राजाना चाकर छे ते राजाना घरने दरवाजे उभा रह्याथका कोइ चोर चकारने राजा पासे जवा देता नथी अने ते राजाना चाकरने एम हिंमत रहेछे जे 'कोइ राजा पासे विघ्न करवा जाय तो तेना कटका करी नाखीए पण कोइ रीते राजासुधी पुगवा दइए नहि,' एवी रीते हिंमत सहित ढाल तरवार बांधीने उभा रहेछे, तेम आ सर्वे संत छे ते जाणपणारूप जे भगवानना धामनो दरवाजो त्यां उभा रहेछे अने ए जाणपणाने मांहि जे अक्षरधाम तेमां भगवान् छे तेनां दर्शन करेछे अने ते भगवान् भेळुं पोताना हृदयनेविषे धन स्त्री आदिक जे मायिक

---

१ तमो सर्वे भक्तोए पोतानी तेवी स्थिति सारी रीते सिद्ध करवी। २ आत्मा परमात्माना स्वरूपनु यथार्थ ज्ञान तथा धर्म वैराग्य अने भक्तिनो हृदयमां यथार्थ बोध।

पदार्थ तेने पेसवा देता नथी अने कोइ जोरे करीने मायिक पदार्थ हृदयमां पेसवा आवे तो तेनो नाश करी नाखेछे पण कोइ रीते जे ठेकाणे भगवानने हृदयमां धार्याछे ते ठेकाणे पेसवा देता नथी अने शूरवीरनी पेठे सावधान थका उभा रहेछे अने हानि, वृद्धि, सुख, दुःख, मान, अपमान आदिक अनंत जातनां विघ्न आवे तेणे करीने पोताना मुकामथी डगता नथी, त्यारे कोइक आशंका करे जे 'त्यांथी डगता नथी त्यारे देहनी क्रिया जे खान पानादिक तेने केम करता हशे ?' तो ते दृष्टांते करीने कहीए छीए जे, जेम पाणियारी होय ते कुवा उपर जळ सिंचवा जायछे त्यारे कुवाना कांठा उपर पग मुक्यो होय तेनी पण सुरत राखेछे जे 'रखे कुवामां पडी जाउं' अने बीजी वृत्तिए कराने कुवामांथी पाणी सिंचेछे. वळी बीजुं दृष्टांत—जेम कोइक पुरुष घोडे चड्यो होय त्यारे घोडाना पेंगडामां पग होय त्यांपण सुरत राखे अने घोडानी लगाम पकडी होय त्यांपण सुरत राखे अने दोडतां थकां वाटमां झाड आवे खाडो आवे पथरो आवे त्यांपण सुरत राखे, एवी रीते आ सर्वे साधु छे ते अंतर सन्मुख दृष्टि राखीने भगवानंनी सेवामांपण रहेछे ने देहनी क्रियापण करेछे ने पोतानी स्थितिमांथी डगता नथी, एवी रीते श्रीजिमहाराजे मोटा मोटा जे संत तेनी स्थिति कही देखाडी ने पछी एम बोल्या जे, तमारे सर्वेनेपण एवी रीते अंतर सन्मुख दृष्टि राखीने निरंतर भगवाननी सेवामां रहेवुं अने भगवान् विना बीजां पदार्थ वहालां थवा देवां नहि ए वातनी अतिशय सावधानी राखवी. अने जेम राजानो चाकर छे ते राजा पासे गाफल थइने उभो होय तो राजा पासे चोर चकार जइ पुगे त्यारे ए चाकरनी चाकरी खोटी थाय तेम हरिभक्तने पण भगवान् विना बीजा पदार्थमां प्रीति थइ जाय

तो जे ठेकाणे पोताना हृदयनेविषे जाणपणामां भगवान् रह्याछे ते ठेकाणे धन स्त्री आदिक बीजां पदार्थपण पेसी जाय त्यारे एनी भक्ति खोटी थइ जाय माटे पोतानी भक्तिने निर्विघ्न राखीने जे परमेश्वरना चरणारविंदने पामवाने इच्छे तेने जाणपणारूप जे भगवानना धामनो दरवाजो तेनेविषे सावधान थइने रहेवुं अने भगवान् विना बीजां पदार्थ त्यां पेसवा देवां नहि, एवी रीते श्रीजिमहाराजे पोताना सर्व भक्तजनने शिक्षानां वचन कह्यां । इति वचनामृतम् ॥ ९ ॥ २३२ ॥

संवत् १८८३ ना आसो वदी १२ द्वादशीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना सत्संगी हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समे श्रीजिमहाराज पासे एक माध्विसंप्रदायनो विद्वान् ब्राह्मण आव्यो तेने श्रीजिमहाराजे पुछ्युं जे "तमारा संप्रदायना ग्रंथनेविषे वृंदावननेज[1] भगवाननुं धाम कह्युंछे अने वळी एम कह्युंछे जे 'महाप्रलयमांपण वृंदावननो नाश थतो नथी' अने शिवमार्गी होय ते एम कहेछे जे 'महाप्रलयमां काशीनो नाश नथी थतो' ए वार्ता अमारा समझ्यामां आवती नथी, शामाटे जे महाप्रलयमांतो पृथ्वी आदिक पंचभूतनो अतिशय प्रलय थइ जायछे त्यारे वृंदावन ने काशी ते केम रहेतां हशे? ने शाने आधारे रहेतां हशे? एवी जातनो अतिशय मोटो संशय थायछे?" एम वार्ता करीने श्रीजिमहाराजे भागवतनुं पुस्तक मंगावीने एकादशस्कंधमांथी तथा द्वादशस्कंधमांथी चारप्रकारना प्रलयनो प्रसंग हतो ते

१ व्रजमां रहेला ।

वांची संभळाव्यो. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ भागवतनो तथा गीतानो मत जोतां तो जेटलुं प्रकृतिपुरुष थकी थयुं छे ते महाप्रलयमां कांइ रहेतुं नथी अने जो महाप्रलयमां वृंदावन अखंड रहेतुं होय तो तेना प्रमाणनो व्यासजीना ग्रंथनो श्लोक तथा वेदनी श्रुति ते कही संभळावो शामाटे जे व्यासजीथी बीजा कोइ मोटा आचार्य नथी अने बीजातो जेजे आचार्य थयाछे तेमणे व्यासजीना करेला ग्रंथने आशरीने पोतपोताना संप्रदाय चलाव्या छे माटे आदि आचार्य जे व्यासजी तेनां जे वचन ते सर्व आचार्यनां वचन करतां अतिप्रमाण छे माटे व्यासजीनां वचन तथा वेदनी श्रुतिए करीने जे 'वृंदावन महाप्रलयमां नाश नथी थतुं' एवुं जे प्रमाण ते कही संभळावो तो अमारो संशय निवृत्त थाय. अने जेजे आचार्य थया तेमणे पद्मपुराणना वचनेकरीने पोतपोतानो मत स्थापन कर्यो छे तेतो पद्मपुराणमां क्षेपक श्लोक नाखी नाखीने स्थापन कर्यो छे ते पोताना मतना होय ते माने पण बीजा कोइ माने नहि[1] माटे श्रीमद्भागवत सरखा प्रसिद्ध पुराणनुं वचन कही संभळावो तो अमारे प्रतीति आवे, शामाटे जे व्यासजीए वेद पुराण इतिहास ए सर्वेनुं सार सार ग्रहण करीने श्रीमद्भागवत कर्युं छे माटे जेवुं भागवत प्रमाण एवुं बीजां पुराण अतिशय प्रमाण नहि अने जेवी भगवद्गीता प्रमाण तेवुं समग्र भारत प्रमाण नहि माटे एवा बळवान् शास्त्रनुं वचन कहि संभळावो तो अमने हा पडे, एवी रीतनां जे श्रीजिमहाराजनां वचन तेने सांभळीने ते ब्राह्मण एम बोल्यो जे, हे महाराज! तमे जे प्रश्न कर्यो ते सत्य छे ने तमारा प्रश्ननो उत्तर करवाने आ पृथ्वी उपर कोइ समर्थ नथी अने मारा मननेतो तमारा स्वरूपनी दृढ प्रतीति आवी छे जे 'तमेतो सर्व आचार्यना

१ एम केटलाक विद्वानो कहेछे ।

आचार्य छो ने ईश्वरना ईश्वर छो[1] माटे मने[1] तमारो सिद्धांत होय ते कृपा करीने कहो ? पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, [2] वेद पुराण इतिहास ने स्मृतियो ए सर्व शास्त्रमांथी अमे ए सिद्धांत कर्यो छे जे जीव, माया, ईश्वर, ब्रह्म अने परमेश्वर ए सर्वे अनादि छे अने माया छे तेतो पृथ्वीने ठेकाणे छे अने पृथ्वीमां रह्यां जे बीज तेने ठेकाणे जीव छे अने ईश्वरतो मेघने ठेकाणे छे ते परमेश्वरनी इच्छाए करीने पुरुषरूप जे ईश्वर तेनो माया संघाथे संबन्ध थायछे त्यारे जेम मेघना जळना संबन्धे करीने पृथ्वीमां हतां जे बीज ते सर्वे उगी आवेछे तेम मायामांथी अनादि काळना जीव हता ते उदय थइ आवेछे पण नवा जीव नथी थता माटे जेम ईश्वर अनादि छे तेम मायापण अनादि छे ने ते मायानेविषे रह्या जे जीव तेपण अनादि छे पण ए जीव परमेश्वरना अंश नथी एतो अनादि जीवज छे ते जीव ज्यारे परमेश्वरने शरणे जाय त्यारे भगवाननी मायाने तरे ने नारद सनकादिकनी पेठे ब्रह्मरूप थइने भगवानना धाममां जायछे ने भगवाननो पार्षद थायछे एवी रीते अमारो सिद्धांत छे, एवी रीतनां जे श्रीजिमहाराजनां वचन तेने सांभळीने ते

१ तमारा प्रश्ननो उत्तर अने । २ ब्रह्मरूप अनेक मुक्तोना निवासस्थानभूत वृन्दावन नामना ब्रह्मपुर पोताना धाममा श्रीकृष्ण सदाकाळ विराजेछे. सच्चिदानंदरूप दिव्यमूर्ति श्रीकृष्ण छे अने अक्षरब्रह्म नामनुं दिव्य तेनुं धामपण सदा अखंड वर्तेछे, ते श्रीकृष्ण भूतळमा प्रकट थइने व्रजभूमिमां रहेला वृन्दावनमां निवास करीने रह्या हता, जे स्थानमां श्रीकृष्ण होय त्यां वृन्दावन नामनुं ब्रह्मपुरपण निश्चय होयज. जे जनो भगवाननी इच्छाथीज दिव्यदृष्टिने पाम्या होय तेतो भगवान् अने तेमना धामने स्पष्ट देखेछे. दिव्य दृष्टिने पामेला भक्तोने भूमि उपर रहेला वृन्दावनमां सनातन ब्रह्मपुराधिपति श्रीकृष्ण भगवान् अने सनातन वृन्दावनसंज्ञित ब्रह्मपुर देखायछे माटे तेनी नित्यता तेओ कहेछे पण वस्तुत. भूमिस्थ वृन्दावननी नित्यता नथी जेम राजपुरुषमां राजानो उपचार थाय छे तेम छे एवी रीते तमारा प्रश्ननो शास्त्रनिश्चित उत्तर आप्यो हवे अमारो सिद्धान्त कहुं छुं।

ब्राह्मण पोताना वैष्णवपणाना मतनो त्याग करीने श्रीजिमहाराजनो समाश्रय करतो हवो अने उद्धव संप्रदायनी दीक्षाने ग्रहण करतो हवो । इति वचनामृतम् ॥ १० ॥ २३३ ॥

संवत् १८८४ ना आषाढ शुदि ३ तृतीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे अमे एक प्रश्न पुछीए जे "इंद्रियो ने मन ए बेने जित्यानुं एक साधन छे के इंद्रियोने जित्यानुं जुदुं साधन छे ने मनने जित्यानुं जुदुं साधन छे?" ए प्रश्न छे, पछी मोटा मोटा परमहंस हता तेमणे जेवुं जेने भास्युं तेवुं-तेमणे कह्युं पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तरतो एम छे जे, वैराग्य स्वधर्म तप अने नियम ए चार साधने करीने इंद्रियो जितायछे अने भगवाननी माहात्म्ये सहित जे नवधा भक्ति तेणे करीने मन जितायछे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जेवी निर्विकल्प समाधिनेविषे भगवानना भक्तने शांति रहेछे तेवी ए समाधि विनापण शांति रहे एवो शो उपाय छे?" पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे, जेवी पोताना देहनेविषे आत्मबुद्धि ने दृढ प्रीति रहेछे तेवीज भगवान् तथा भगवानना भक्तनेविषे आत्मबुद्धि ने दृढ प्रीति रहे तो जेवी निर्विकल्प समाधिमां शांति रहेछे तेवी शांति ए समाधि विनापण सदाय रह्या करे एज एनो उत्तर छे.

१ इन्द्रियोना जयमा बीजुं साधन छे अने मनना जयमा बीजुं साधन छे तेमा ।

पछी श्रीजिमहाराजे वळी परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "गमे तेवा भुंडा देश काळादिक प्राप्त थाय तोपण कोइ रीते कल्याणना मार्गमांथी पाछो पडेज नहि एवो जे हरिभक्त होय तेने केवी जातनी समझण होय जे जे समझणे करीने एवी रीतनी एने दृढता आवेछे जे तेनेविषे कोइ रीतनुं विघ्न लागतुं नथी?" पछी मोटा मोटा संत हता तेमां जेवुं जेने भास्युं तेवो तेणे उत्तर कर्यो पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर तो एम छे जे, जीवने जेवी देहनेविषे आत्मबुद्धि छे तेवी भगवान् तथा भगवानना भक्तनेविषे आत्मबुद्धि होय तो तेने कोइ रीतनुं विघ्न लागे नहि अने गमे तेवा देश काळादिक भुंडा आवे तेणेकरीने ए भगवान् ने भगवानना भक्तथकी विमुख थाय नहि.

पछी वळी श्रीजिमहाराजे परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे 'जानकीजीने रामचंद्रजीए वनवास दीधो त्यारे जानकीजीए अतिशय विलाप करवा मांड्यो त्यारे लक्ष्मणजीपण अतिशय दीलगीर थया पछी सीताजी लक्ष्मणजी प्रत्ये बोल्यां जे "हुं मारा दुःख सारु नथी रोती हुंतो रामचंद्रजीना दुःख सारु रोउंछुं शामाटे जे रघुनाथजी अतिकृपाळु छे ते लोकापवाद सारु मने वनमां मुकी पण हवे एम विचारता हशे जे 'सीताने में वगर वांके वनमां मुकी छे' एम जाणीने कृपाळु छे ते मनमां बहु दुःख पामता हशे माटे रामचंद्रजीने कहेज्यो जे "सीतानेतो कांइ दुःख नथी ने वाल्मीक ऋषिना आश्रममां जइने सुखे तमारुं भजन करशे माटे तमे सीताने दुःखे करीने कांइ दुःख पामशो मां" एम सीताजीए लक्ष्मणजी संघाथे कही मोकल्युं पण कोइ रीते रामचंद्रजीनो अवगुण लीधो नहि एवी रीते जे भगवान् ने भगवानना भक्तनो कोइ रीते अव-

गुण ले नहि अने वैराग्य ने धर्म तेतो सामान्यपणे होय एक हरिभक्त तो एवो छे अने बीजो हरिभक्त छे तेनेतो वैराग्य ने धर्मतो अति आकरा छे पण सीताजीना जेवी समझण नथी ए बे प्रकारना हरिभक्त छे तेमां कया संघाथे अतिशय प्रीति राखीने सोबत करवी?" पछी चैतन्यानंदस्वामीए कह्युं जे, धर्म ने वैराग्य जो सामान्यपणे होय तोपण जेनी जानकीजीना जेवी समझण होय तेनोज अतिशय प्रीति करीने समागम करवो पण अतिशय वैराग्य ने धर्मवाळो होय ने भगवान् ने भगवानना भक्तनो अवगुण लेतो होय तो तेनो संग करवो नहि, पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे यथार्थ उत्तर थयो। इति वचनामृतम् ॥ ११ ॥ २३४ ॥

संवत् १८८४ ना आषाढ वदी ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानी मेडीना गोखनेविषे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज पोताना भक्तजनने शिक्षा करवाने अर्थे वार्ता करता हवा जे, जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं तेने कोइ प्रकारनुं मान राखवुं नहि जे 'हुं उच्च कुळमां जन्म पाम्यो छुं के हुं धनाढ्य छुं के हुं रूपवान् छुं के हुं पंडित छुं' एवुं कोइ प्रकारनुं मनमां मान राखवुं नहि अने गरीब सत्संगी होय तेनापण दासानुदास थइ रहेवुं. अने भगवान् तथा भगवानना भक्त तेनो जेने अवगुण आव्यो होय ने ते सत्संगी कहेवातो होय तोपण तेने हडकाया श्वान जेवो जाणवो जेम हडकाया श्वाननी लाळ.जेने अडे तेनेपण हडकवा हाले तेम जेने भगवान् ने भगवानना भक्तनो अवगुण आव्यो होय ते साथे जे हेत राखे

अथवा तेनी वात सांभळे तो ते हेतनो करनारो ने वातनो सांभळनारो पण विमुख सरखो थाय. अने वळी जेम क्षयरोग थयो होय ते कोइ ओषधे करीने मटेज नहि तेम जेने भगवान् ने भगवानना भक्तनो अवगुण आव्यो होय तेना हृदयमांथी क्यारेय आसुरी मति टळे नहि. अने अनंत ब्रह्महत्या करी होय ने अनंत बाळहत्या करी होय ने अनंत स्त्रीहत्या करी होय ने अनंत गौहत्या करी होय ने अनंत गुरुस्त्रीनो संग कर्यो होय तेनोपण कोइ काळे छुटको थाय ने शास्त्रमां ते पाप छुट्याना उपाय पण कह्याछे पण भगवान ने भगवानना भक्तना अवगुण लेवावाळाने कोइ शास्त्रमां ए पाप छुट्यानो उपाय कह्यो नथी. अने झेर खाय अथवा समुद्रमां पडे अथवा पर्वतथी पडे अथवा कोइ राक्षस मळे ने खाइ जाय तो एकज वार मरवुं पडे अने जे भगवान् ने भगवानना भक्तनो द्रोही होय तेनेतो अनंत कोटि कल्पसुधी मरवुं पडे ने अवतरवुं पडे. अने वळी गमे तेवो शरीरमां रोग थयो होय ने तेणे करीने शरीर पडे अथवा कोइ शत्रु मळे ने शरीरनो नाश करी नाखे पण जीवनो नाश थतो नथी अने भगवान् ने भगवानना भक्तनो द्रोह कर्याथी तो जीवनोपण नाश थइ जायछे, त्यारे कोइ कहेशे जे 'जीवनो नाश केम थतो हशे' तो त्यां दृष्टांत–जेम हिजडो होय ते पुरुषपण न कहेवाय ने स्त्रीपण न कहेवाय एतो केवळ वृंदल कहेवाय तेम जे भगवान् ने भगवानना भक्तना द्रोहनो करनारो होय तेनो जीवपण एवो नकारो थइ जाय जे 'कोइ दिवस पोताना कल्याणना उपायने करीज शके नहि' माटे एनो जीव नाश थइ गयो जाणवो, एम जाणीने भगवान् ने भगवानना भक्तनो द्रोह करवोज नहि.अने वळी पोताना देहना जे सगां संबन्धी होय ने ते सत्संगी होय तोपण तेमां अतिशय हेत राखवुं

नहि, जेम दुध साकर होय ने तेमां सर्पनी लाळ पडी होय ने तेनुं जे पान करे तेना प्राण जाय तेम पोताना देहनां जे सगां संबन्धी होय ने ते हरिभक्त होय तोपण तेमां देहना संबन्धरूप सर्पनी लाळ पडीछे माटे तेमां हेतना करनारानुं जरुर अकल्याण थायछे एम जाणीने जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने देहनां जे सगां संबन्धी होय ते साथे हेत राखवुं नहि एम संसारमांथी निःस्पृह थइने भगवानना चरणारविंदमां प्रीति राखीने भगवाननुं भजन कर्या करवुं. आ जे अमे वात करीछे तेने जे अंतरमां राखे तेने कोइ रीते कल्याणना मार्गमां विघ्न थायज नहि अने आ जे वात ते करामत जेवी छे, एम कहीने श्रीजिमहाराजे वार्तानी समाप्ति करी । इति वचनामृतम् ॥ १२ ॥ २३५ ॥

संवत् १८८४ ना आषाढ वदी ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठनेविषे मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता ने पाघनेविषे तोरा विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने आगळ मुनि मंडळ दुकड सरोदा लइने कीर्तन गावता हता.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे कीर्तन राखो हवे भगवद्वार्ता करीए एम कहीने श्रीजिमहाराजे मुनिमंडळ प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "जीवनो देह छे तेतो पूर्वकर्मने आधीन छे तेनो एक निर्धार रहेतो नथी ते क्यारेक साजो रहे ने क्यारेक कर्माधीनपणे करीने मांदो थइ जाय ने क्यारेक स्वतंत्र वर्ततो होय ने क्यारेक पराधीनपणे थइ जाय अने धार्युं होय ते ठेकाणे रहेवाय के नज रहेवाय अने क्यारेक हरिभक्तना मंड-

ळमां रहेता होइए ने कर्म के काळने योगे करीने नांखा पडी गया ने एकलाज रही जवाय त्यारे जेजे नियम राखवानी दृढता होय तेनो कांइ मेळ रहेज नहि अथवा इंग्रेज जेवो कोइक राजा होय ने तेणे क्यांइक परवश राख्या अथवा पोतानां मन ने इंद्रियो ते इंग्रेज जेवांज छे तेणेज परवश राख्या त्यारे जे संतना मंडळमां रहेवुं ने सत्संगनी मर्यादा पाळवी तेनो कांइ मेळ रहे नहि अने शास्त्रमांतो एमज कह्युंछे जे 'धर्म ज्ञान वैराग्य अने भक्ति ए चार संपूर्ण होय त्यारे एकांतिक भक्त कहेवाय ने एकांतिकनी जे मुक्ति छे तेने पामे' अने काळ कर्मने योगे करीने देहनी व्यवस्थातो एकनी एक रहे एम जणातुं नथी माटे भगवानना भक्तने केवी रीते एकांतिकपणुं रहेछे?" ए प्रश्न छे, पछी गोपाळानंदस्वामी चैतन्यानंदस्वामी नित्यानंदस्वामी मुक्तानंदस्वामी ब्रह्मानंदस्वामी शुकमुनि इत्यादिक मोटा मोटा साधु हता तेमणे जेवुं जेने जणायुं तेवो उत्तर कर्यो पण ए प्रश्ननुं समाधान न थयुं, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे जेम अमारे भगवाननेविषे निष्ठा रहेछे.तेम अमे कहीए जे, अमारेतो गमे तेवुं सुख दुःख आवे तथा संपत् विपत् आवे तेमां एम रहेछे जे एकतो भगवाननी अतिशय मोटप जाणीए छीए तेणे करीने आ संसारमां मोटा मोटा राजानी समृद्धि ने राज्य-लक्ष्मी तेने जोइने लेशमात्र पण अंतरमां तेनो भार आवतो नथी अने एम समझीए छीए जे 'आपणेतो भगवानथकी कांइ अधिक नथी ने आपणुं मन छे ते भगवानना चरणारविंदमां चोंटाड्युं छे' अने भगवान संघाथे एवी दृढ प्रीति करीछे जे ते प्रीतिने काळ कर्म मायामांथी कोइए टाळवाने अर्थे समर्थ नथी अने पोतानुं मन ए प्रीति टाळवाने करे तोयपण भगवानमांथी ए प्रीति न टळे एवी रीतनो दृढाव छे

ते गमे तेवुं सुख दुःख आवेछे तोय नथी टळतो अने स्वाभाविक मनमां एवी रुचि रहेछे जे 'शहेर होय के मेडी होय के राजदरबार होय त्यांतो गमेज नहि अने वन होय पर्वत होय नदी होय झाड होय एकांत ठेकाणुं होय त्यां अतिशय गमेछे ने एम जाणीए छीए जे 'एकांतमां बेसीने भगवाननुं ध्यान करीए तो सारुं' एवी सदाय रुचि रहेछे. अने ज्यारे अमने रामानंदस्वामीनुं दर्शन नहोतुं थयुं त्यारे मुक्तानंदस्वामी संघाथे अमे एम ठराव करी राख्यो हतो जे 'मने रामानंदस्वामीनुं दर्शन करावो तो आपणे बे जण वनमां जइने भगवाननुं अखंड ध्यान कर्या करीशुं अने कोइ दिवस वस्तिमांतो आवीशुंज नहि' एम मननो ठराव हतो ते हमणांपण मन एवुं ने एवुंज वर्तेछे अने भगवान् ने भगवानना जे भक्त तेमांतो एवुं दृढ हेत छे तेने काळ कर्म ने माया तेमांथी कोइए टाळवाने समर्थ नथी अने पोतानुं मन टाळ्यानुं करे तोयपण हृदयमांथी टळेज नहि एवी भगवान ने भगवानना भक्त संघाथे अतिशय प्रीति छे. अने अमे केटलीक वार सत्संगमांथी जवाने अर्थे उदास थया छीए पण भगवानना भक्तनो समूह जोइने टक्या छीए ते कोइ रीते मुकीने जवातुं नथी अने जेने हुं भगवाननो भक्त न जाणुं ते ठेकाणेतो मने राख्याना कोटी उपाय करे तोय नज रहेवाय अने गमे तेवी अमारी शुश्रूषा करे तोय अभक्त संघाथे अमारे बनेज नहि एवी रीते भगवान् ने भगवानना भक्त संघाथे अमे अमारा मनने अतिशए प्रीतिए करीने जोडी राख्युंछे अने ते भगवान विना बीजुं कोइ पदार्थ व्हालुं राख्युं नथी माटे शासारु भगवानमां प्रीति नहि रहे? अने भगवाननां कथा कीर्तनादिक करता होइए त्यारे तो एवी मस्ताइ आवेछे जे 'जाणीए दिवाना थइ जवाशे' अने जेटलो विवेक रहेछे तेतो कोइक

भक्तजनना समासने अर्थे रहेछे पण मनमांतो एवी ने एवीज खुमारी रहेछे अने उपरथीतो लोकने मळतो व्यवहार राखीए छीए. अने ते भगवान् छे तेज आ देहना प्रवर्तावनारा छे ते गमेतो देहने हाथीए वेसारो ने गमेतो बंधीखानामां नंखावो अने गमेतो आ देहमां कोइक मोटो रोग प्रेरो पण कोइ दिवस भगवान् आगळ एवी प्रार्थना करवी नथी जे 'हे महाराज! आ मारुं दुःख छे तेने टाळो' शामाटे जे आपणे पोताना देहने भगवानना गमतामां वर्ताववो छे ते जेम ए भगवाननुं गमतुं होय तेमज आपणे गमेछे पण भगवानना गमताथकी पोतानुं गमतुं लेशमात्र पण नांखुं राखवुं नथी अने आपणे ज्यारे तन मन धन भगवानने अर्पण कर्युं त्यारे हवे भगवाननी इच्छा तेज आपणुं प्रारब्ध छे ते विना बीजुं कोइ प्रारब्ध नथी माटे भगवाननी इच्छाए करीने गमे तेवुं सुख दुःख आवे तेमां कोइ रीते अकळाइ जवुं नहि ने जेम भगवान् राजी तेमज आपणे राजी रहेवुं अने आवी रीतनी जे भगवाननेविषे दृढ प्रीति तेणे युक्त एवो जे ए भक्त तेना जे धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्ति तेनी रक्षानेतो ए भगवान् पोतेज करेछे अने क्यारेक देश काळना विषमपणे करीने बाहेरथी तो ते धर्मादिकना भंग जेवुं जणातुं होय पण ते भक्तना अंतरमांतो धर्मादिकनो भंग थतोज नथी,एवी रीते श्रीजिमहाराज पोताने उपदेशे करीने जे भगवानना अतिदृढ भक्त होय तेने जेम समझवुं घटे अने जेम भगवानमां दृढ प्रीति करी जोइए ते सर्वे वार्ता करी देखाडता हवा। इति वचनामृतम् ॥१३॥२३६॥

संवत् १८८४ ना आषाढ वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां

हतां ने मस्तक उपर पाघमां पुष्पना तोरा झुकी रह्या हता ने कंठ-नेविषे पुष्पना हार पहेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने मुनिमंडळ कीर्तन गावता हता.

पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे कीर्तन भक्ति समाप्ति करो ने प्रश्न उत्तर करीए, पछी मुक्तानंदस्वामीए हाथ जोडीने पुछ्युं जे "हे महाराज ! परमेश्वरथकीतो बीजुं कांइ सार वस्तु नथी तोपण ए परमेश्वरमां ए जीवने केम दृढ प्रीति थती नथी ?" ए प्रश्न छे, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एने [1]विवेक नथी जो विवेक होय तो एम विचार थाय जे 'मारेतो ब्रह्मचर्य व्रत छे तोपण स्त्रीना सुखनी तृष्णा हृदयमांथी टळती नथी ते ए बहु खोटुं छे अने ते स्त्रीनुं सुखतो चोराशी लाख योनिमां ज्यांज्यां जन्म धर्या त्यांत्यां सर्वत्र प्राप्त थयुंछे तेपण मनुष्य देहथी अधिक प्राप्त थयुंछे केमजे ए जीव बकरो थयो हशे त्यारे हजार बकरीयोने पोते एकलो भोगवतो हशे अने ज्यारे घोडो के पाडो के सांढ के बुढीयो—वानरो इत्यादिक पशुना देहने पाम्यो हशे त्यारे तेनेविषे पोतपोतानी जातिनी अतिशय रूपवान् ने यौवनवान् एवी अनंत स्त्रीयो ते एके एक एने मळी हशे अने तेमां कांइ प्रारब्धनुं कारण नथी ने भगवाननी कृपानुंपण कारण नथी एतो सहजे मळी हती अने वळी पण जो भगवाननुं भजन नहि करेतो जेजे योनिमां जशे त्यांत्यां अनंत स्त्रीयो प्राप्त थशे ने तेमां कोइ देवतानुंपण सेवन पूजन नहि कर्युं जोइए ने कोइ मंत्रनोपण जप नहि कर्यो जोइए एतो सहजेज ते स्त्रीयादिकना सुखने पामशे अने

[1] सारासारनो।

आ जीवे केटलीक वार देवता थइने देवलोकनां पण सुख भोगव्यांछे ने केटलीक वार चक्रवर्ती राजा थइने पृथ्वीमांपण अनंत सुख भोगव्यांछे तोपण ए जीवने स्त्रीयादिक जे पदार्थ छे तेने भोगव्यानी तृष्णा टळती नथी[1] स्त्रीयादिकनुं जे सुख छे तेनुं अतिशय दुर्लभपणुं जाणेछे ने तेनुं अति माहात्म्य जाणीने तेमां प्रीति करेछे ते प्रीति कोइ रीते टाळी टळती नथी ए पापे करीने परमेश्वरमां दृढ प्रीति थती नथी. अने एवी मलिन वासना आ जीवने थायछे ते अमे नजरे दीठी छे ज्यारे अमे नाना हता त्यारे अयोध्यापुरीमां एक शिवनुं मंदिर हतुं तेमां जइने अमे सुता त्यां एक कायथ नित्य शिवनुं पूजन करवाने आवतो ते शिवनी पूजा करीने गाल वजाडीने शिव पासे एम वर मागतो जे 'हे महाराज ! हे शिवजी ! मने कोइ दिवस मनुष्यनो अवतार देशो मां, शामाटे जे मनुष्य देहमांतो तांबु खाइ खाइने मरी गया पण स्त्रीनुं सुख सारी पेठे भोगवातुं नथी माटे हे शिवजी ! मने तो जन्मोजन्म लंबकर्णनोज अवतार देज्यो जे लाज मर्यादा मुकीने सारीपेठे स्त्रीनुं सुखतो भोगवीए' एम नित्य शिवजी पासे वर मागतो, एवी रीते आ जीवना हृदयमां पापरूप वासना थायछे माटे एने कोइ रीते परमेश्वरमां प्रीति थती नथी.

१ माटे मायिक सुख कोइनेपण क्यारेयपण दुर्लभ नथी, भगवान संबन्धि सुखतो सर्व सुखथी अति दुर्लभ छे. भगवानना जे सुखनी प्राप्ति माटे मोटा मोटा मुनिओ वनमां जइने अतिघोर तप करेछे. चक्रवर्ती राजाओपण राज्यनो त्याग करीने तप करवा वनमां जायछे. भगवाननुं तेवुं सुख पण तेमनी कृपाथीज हमणां मने प्राप्त थयुं छे ते सुखनो त्याग करीने बीजा तुच्छ विषय सुखनी इच्छा केम कराय ? एवी रीते जे भक्तोने सारासार विवेक होय तेमने तो भगवानमांज अत्यधिक प्रीति थायछे अने मायिक पदार्थमां क्यारेयपण अतिशय प्रीति नथी थती आवा सदसद्विवेके रहित जे छे ते ।

पछी मुक्तानंदस्वामीए वळी पुछ्युं जे "हे महाराज! जेने एवो अतिशय अविवेक होय तेनेतो भगवानमां प्रीति न थाय पण जेने एम जणातुं होय जे 'भगवान् सर्व सुखना निधि छे ने भगवान् विना बीजां पदार्थ छे तेतो केवळ दुःखदायिज छे' तोपण तेने भगवानमां प्रीति नथी थती तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए जीवने पूर्वजन्मनेविषे अथवा आ जन्मनेविषे कोइक अतिशय भुंडा जे देश काळ संग ने क्रिया तेनो योग थइ गयोछे तेणेकरीने अतिशय तीक्ष्ण कर्म थयांछे ते भुंडा कर्मनो एना चित्तमां पाश लाग्योछे माटे सार असारने जाणेछे तोपण एने असारनो त्याग करीने परमेश्वरनेविषे दृढ प्रीति थती नथी अने जेवी रीते भुंडा देश काळ क्रिया ने संग तेने योगे करीने भुंडा कर्मनो चित्तमां पाश बेठो तेवी रीते अतिशय पवित्र देश, पवित्र काळ, पवित्र क्रिया अने पवित्र संग तेने योगे करीने अतिशय तीक्ष्ण जो सुकृत कर्म थाय तो तेने योगे करीने अतितीक्ष्ण जे भुंडां पापकर्म तेनो नाश थइ जायछे त्यारे एने भगवाननेविषे दृढ प्रीति थायछे ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

पछी अयोध्याप्रसादजीए पुछ्युं जे "एकनीतो बुद्धिपण घणी होय ने शास्त्रमांपण बहु दृष्टि पुगती होय अने बीजो छे तेनीतो बुद्धिपण थोडी होय ने शास्त्रमांपण झाझुं जाणतो न होय अने घणी बुद्धिवाळो होय ते सत्संगमांथी विमुख थइ जायछे अने थोडी बुद्धिवाळो होय ते दृढथको सत्संगमां रहेछे तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आ संसारनेविषे दैवी ने आसुरी बे प्रकारना जीव छे तेमां आसुरी जीव होय तेने झाझी बुद्धि होय तोपण सत्संगमांथी विमुखज थाय

१ आ लोकमां सत्संगी तमारा भक्त बे पुरुषो छे तेमां।

अने दैवी जीव होय ने तेने थोडी बुद्धि होय तोपण कोइ काळे सत्संगमांथी विमुख न थाय, जेम मरचानुं बीज होय ने लिंबडानुं बीज होय ने शिंगडीया वछनागनुं बीज होय तेने वावीने नित्य साकरनुं पाणी सिंच्या करीए तोपण मरचां ते तीखांज थाय ने लिंबडो ते कडवोज थाय ने शिंगडीयो वछनाग ते झेरज थाय शा माटे जे एवुं बीज छुंडुं छे. अने शेरडीने वावीने लींबडाना पाननुं खातर नांखीने कडवुं पाणी सिंच्या करीए तोपण शेरडीनो रस ते मीठोज थाय, तेम दैवी जीव छे ते भगवानने सन्मुखज रहेछे ने आसुरी जीव होय ते विमुखज थायछे.

पछी शुकमुनिए पुछ्युं जे "दैवी ने आसुरी जीव होय ते केम जाण्यामां आवे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, दैवी जीव होय तेने काम क्रोध लोभादिक दोष होय ते भुंडा देश कालादिकने योगे करीने होय पछी सारा देश काळादिकनो योग थाय तो थोडेक काळे करीने नाश थइ जाय. अने आसुरी जीवने जे काम क्रोध लोभादिक दोष होय ते कोइ काळे नाश थाय नहि अने तेने एकवार जो कांइक कठण वचन कह्युं होय तो जीवे त्यांसुधी भुले नहि अने ते आसुरी जीव जो सत्संगी थयो होय तो सौ करतां सरस हरिभक्त जणाय पण जेम भाल देशमां मोरे समुद्र हतो ते कांप जमाइने मीठी पृथ्वी थइ छे ते ज्यांसुधी कांप होय त्यांसुधी जो खोदीए तो पाणी मीठुं निसरे अने तेथी जो हेठुं खोदीए तो समुद्रना जेवुं खारुं झेर पाणी निसरे, तेम आसुरी जीव होय ते हरिभक्त थयो होय ने एनुं गमतुं मरडीने लगारेक छेड्यो होय तो जेटली मोरे साधुनी सेवा करी होय तेथी लाखघणो द्रोह करे तोपण मनमां संतोष न थाय.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज! तमे एम कह्युं जे 'आसुरी जीव होय ने हरिभक्त थयो होय तो तेनुं ज्यांलगी गमतुं राखीए त्यांसुधी तो सत्संगी रहे ने जो गमतुं न राखीए तो विमुख थाय' ते ज्यांलगी विमुख नथी थयो तेवामां जो तेनो देह पडी जाय तो आसुरी रहे के दैवी थाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ते आसुरी जीव ज्यांसुधी सारो होय ने तेवामां देह पडे तो दैवी थाय अने भगवाननी भक्ति करीने परमपदने पामे.

पछी नृसिंहानंदस्वामीए पुछ्युं जे "नवधा भक्तिमां श्रेष्ठ भक्ति कइ छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, नवधा भक्तिमांथी जेने जे भक्तिए करीने भगवानमां दृढ स्नेह थाय तेज भक्ति तेने श्रेष्ठ छे.

पछी गोपाळानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जेने बाळ अवस्था होय अथवा यौवन अवस्था होय तेने केवा पुरुषनो संग राखवो?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे वये करीनेपण वृद्ध होय अने धर्म ज्ञान ने वैराग्य जेने दृढ होय अने भगवानने विषेपण दृढ प्रीति होय तेवा पुरुषनो संग प्रीतिए करीने ए बेय-जणाने करवो.

पछी नाजे जोगीए पुछ्युं जे "एकनुं क्रोधे करीने भगवानमां मन जोडायुं छे ने एकनुं भये करीने भगवानमां मन जोडायुं छे अने एकनुं तो स्नेहे करीने भगवानमां मन जोडायुं छे ए त्रणमां कयो श्रेष्ठ छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेनुं हेते करीने भगवानमां मन जोडायुं ते श्रेष्ठ छे.

पछी शिवानंदस्वामीए पुछ्युं जे "भगवाननो भक्तवो होय पण जेने श्रीजिमहाराजे कह्युं एवो जे सार असारनो विवेक ते न होय ने

१ किशोर अवस्था-पंचदश वर्ष सुधीनी ।

वैराग्यपण न होय तेने एवो विवेक तथा भगवान् विना बीजा पदार्थमां वैराग्य ते केम थाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जो प्रथमज भगवानमां दृढ हेत थइ जाय तो विवेक ने वैराग्य ते हेतने योगे करीने प्रकट थायछे अने जेने जे पदार्थमां हेत थायछे तेने हेत कहीए अथवा कामना कहीए ते जेजे पदार्थमां हेत होय ने तेमां जो कोइक अंतराय करे तो ते उपर क्रोध थइ जायछे ते माणसना देहमांतो थाय पण पशुनेपण क्रोध थइ जायछे जेम पाडो होय ते कामनाए करीने भेंश उपर आसक्त थयो होय ने बीजो पाडो आवे तो तेने मारी नाखेछे एवी रीते पशु पक्षीमां सर्वत्र देखायछे तेम जेने भगवाननेविषे दृढ प्रीति होय तेने जे पदार्थ ते प्रीतिमां अंतराय करवा आवे तो ते उपर तुरत क्रोध थइ जाय ने ते पदार्थनो तत्काळ त्याग करे माटे जो भगवानमां दृढ हेत होय तो एनी मेळेज वैराग्य ने विवेक थइ आवेछे.

पछी वळी शिवानंदस्वामीए पुछ्युं जे "बुद्धिमान् तो बेय पुरुष छे तेमां एकतो जेम परमेश्वर कहे तेमज मानी ले एवो विश्वासी छे अने बीजोतो परमेश्वरनां वचन होय तेमांपण मानवुं घटे तेटलुंज माने ए बेमां कयो श्रेष्ठ छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, विश्वासी एज श्रेष्ठ छे, ते रामकथामां रामचंद्रजीए कह्युं छे जे 'जे मारे दृढ विश्वासे रहे तेनी जेम माता बाळकनी रक्षा करेछे तेम हुं रक्षा करुंछुं' माटे विश्वासी एज श्रेष्ठ छे.

पछी आत्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे "मनमांतो एम निश्चय छे जे देहपर्यंत परमेश्वरना गमतामांज रहेवुं छे तोपण एम जाणीए छीए जे परमेश्वरने ने संतने केम करीए तो आपणो विश्वास आवे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, विश्वासतो परमेश्वरने ने संतने त्यारे आवे ज्यारे

अतिशय मांदो थाय ने ते मंदवाडमां चाकरीपण सारी पेठे न थइ होय तोपण कोइनो अवगुण न ले ने पोते मुंझाय पण नहि तथा वांक विनापण परमेश्वर ने संत ते पोतानुं अतिशय अपमान करे तोपण कोइनो अवगुण न ले त्यारे एनो परमेश्वरने ने संतने विश्वास आवे अने त्रीजो प्रकार ए छे जे जेटला सत्संगमां नियम छे तेमांथी जो लेशमात्र फेर पडे तो अतिशय दुःखाइ जाय ने तेनुं तत्काळ प्रायश्चित करे अने जो मनमां खोटो घाट थाय तो बीजाने देहेकरीने वर्तमानमां फेर पडे तेटलोज दुःखाय ने त्रास पामे त्यारे एनो परमेश्वरने ने संतने परिपूर्ण विश्वास आवे जे 'आ कोइ काळे सत्संगमांथी डगशे नहि.'

पछी भगवदानंदस्वामीए पुछ्युं जे "जे भक्तजनना मननेविषे भगवान् ने भगवानना भक्तनुं अखंड माहात्म्य होय ते बीजाने केम जणाय?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेना मननेविषे भगवाननुं ने भगवानना भक्तनुं अखंड माहात्म्य होय ते भगवान् ने भगवानना भक्तनी निष्कपट भावे प्रीतिए करीने सेवा करे ने देहे करीने सर्व संतने पगे लागे अने कोइक संत मांदा होय तो तेनुं माथुं दाबे पग दाबे ने खाधा पीधानी खबर राखे अने पोतानी पासे पोताने मनगमती वहाली वस्तु आवे तो ते संतने आपीने पछी पोताना काममां वापरे एवी रीते मन कर्म वचने करीने जे वर्ते तेना अंतरमां भगवाननुं ने संतनुं माहात्म्य अखंड छे एम जाणवुं.

पछी श्रीजिमहाराजे संतने प्रश्न पुछ्यो जे "[1]धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्ति ए चारे अतितीव्रपणे करीने वर्तता होय तोपण धर्ममां कांइक संकरपणुं थाय ने वैराग्यमां कोइक ठेकाणे राग रही जाय अने भक्ति-

१ परमात्मानो कोइक एकांतिक भक्त छे तेने ।

मांपण कांइक शिथिलपणुं थइ जाय अने ज्ञानमां पण कांइक देह-आसक्ति रही जाय तेनुं शुं कारण हशे?" पछी गोपाळानंदस्वामीए ने ब्रह्मानंदस्वामीए कह्युं जे, जेने धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्तिए चार तीव्र वर्तेछे एवा जे ईश्वरमूर्ति समर्थ तेमां जे कांइक कसर जेवुं जणायछे तेतो केवळ दयाए करीने रहेछे पण बीजी कोइ जातनी कसर नथी अने एवा जे मोटा होय ते बाह्य दृष्टि राखीने वर्ते त्यारे केटलाक जीवोने जडभरत जेवा ने शुकजी जेवा करी मुके माटे एवा अतिशय जे मोटा तेमने जे व्यावहारिक दृष्टिए वर्तवुं ते केवळ जीवो उपर दयाए करीने छे, पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे एनो उत्तर एज छे। इति वचनामृतम् ॥ १४ ॥ २३७ ॥

संवत् १८८४ ना आषाढ वदी १३ तेरसने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानी मेडीना गोख उपर विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हता ने कंठनेविषे मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीने श्रीजिमहाराजे कह्युं जे आजतो अमे अमारा रसोया हरिभक्तनी आगळ बहु वात करी, त्यारे मुक्तानंदस्वामी बोल्या जे हे महाराज! केवी रीते वात करी? पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे वाततो एम करी जे "भगवाननो भक्त होय ने ते भगवाननी मानसी पूजा करवा बेसे तथा भगवाननुं ध्यान करवा बेसे ते समे एनो जीव प्रथम जेजे भुंडा देश काळादिकने योगे करीने पंच विषयथकी पराभव पाम्यो होय अथवा काम क्रोध लोभादिकने योगे करीने प-

राभव पाम्यो होय ते सर्वेनी एने स्मृति थइ आवेछे[1] जेम कोइ शूरवीर पुरुष होय ने संग्राममां जइने घाये आव्यो होय ने ते घायल थइने पाछो खाटलामां आवीने सुवे पछी एने ज्यांसुधी पाटो गोठे नहि त्यांसुधी घानी वेदना टळे नहि ने निद्रापण आवे नहि ने ज्यारे पाटो गोठे त्यारे घानी पीडा टळी जाय ने निद्रापण आवे, तेम भुंडा देश, काळ, संग अने क्रिया तेने योगे करीने जीवने पंच विषयना जे घा लाग्या छे ते ज्यारे नवधा भक्ति मांहिली जे भक्ति करतांथकां ए पंच विषयना घानी पीडा न रहे ने पंच विषयनुं सरण न थाय एज एने पाटो गोठ्यो जाणवो अने एज एने भजन सरणनुं अंग दृढ जाणवुं पछी ए अंगमां रहीने मानसी पूजा करवी नामसरण करवुं जे करवुं ते ए पोताना अंगमां रहीने करवुं तो एने अतिशय समास थाय अने जो पोताना अंगने ओळखे नहि तो जेम घायलने पाटो गोठे नहि ने सुख न थाय तेम एने भजन सरणमां कोइ रीते सुख न थाय ने पंच विषयना जे घा एने लाग्या होय तेनी पीडा टळे नहि माटे ए नवधा भक्तिमांथी जे भक्ति करते थके पोतानुं मन भगवानमां चोंटे अने भगवान् विना बीजो घाट करे नहि त्यारे ते हरिभक्तने एम जाणवुं जे 'मारुं तो एज अंग छे' पछी ते जातनी भक्ति एने प्रधान राखवी ए सिद्धांत वार्ता छे। इति वचनामृतम् ॥ १५ ॥ २३८ ॥

संवत् १८८४ ना आषाढ वदी अमवास्याने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण

[1] माटे नव प्रकारनी भक्तिमांथी पोताने अतिप्रिय जे कोइ भक्तिथी असतस्मृतिनो ज्यारे नाश थाय त्यारे ध्यान पूजानुं सुख थाय।

कर्या हतां ने कंठनेविषे मोगरानां पुष्पना हार पहेर्या हता तथा पाघमां तोरा अतिशय शोभायमान झुकी रह्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, मुनिमंडळ समस्त तथा गृहस्थ हरिभक्त समस्त प्रत्ये अमे प्रश्न पुछीए छीए ते जेथी उत्तर थाय ते करज्यो, ते प्रश्न ए छे जे "भगवाननो भक्त होय तेने अवगुणवाळानो त्याग करतां कांइ वार लागे नहि पण जेमां अतिशय रुडा गुण होय तेनो केवी रीते त्याग थाय अने जेमां रुडा गुण होय तेतो पोताना संबन्धी होय अथवा बीजो कोइक होय पण गुणवान् संघाथे सहजेज प्रीति थाय ने ते गुणने योगे करीने जे प्रीति थइ होय ते टाळी टळेज नहि माटे भगवानना भक्तने भगवान् विना बीजे ठेकाणे गमे तेवो गुणवान् होय तेने संघाथे प्रीतिज न थाय एवो शो उपाय छे?" ए प्रश्न छे, पछी मोटा मोटा संत तेमणे जेवो भाइयो तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजिमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजिमहाराजे कह्युं जे ल्यो अमे उत्तर करीए एनो उत्तर ए छे जे, जेम पतिव्रता स्त्री होय तेने पोतानो पति कंगाल होय ने कुरूप होय अथवा रोगी के वृद्ध होय तोपण बीजा जे तालेवर ने रूपवान् ने यौवनवान् पुरुष तेने जोइने लेशमात्र मनमां गुण आवे नहि अने जे पतिव्रता होय तेतो बीजा पुरुष सामुं भावे करीने जुवे अथवा हसीने बोले त्यारे एनुं पतिव्रतापणुं नाश पामे अने ते पतिव्रताने घेर कोइक परुणा आव्या होय तो तेने अन्न जळ आपे तथा पोताना पतिना जे संबन्धी पुरुष तेनेपण अन्न जळ आपे तेवो पतिना संबन्धी जाणीने आपे पण पोताना पतिना जेवी बीजा पुरुषमात्र संघाथे लेशमात्र प्रीति

न होय अने पोताना पतिना जेवो बीजा पुरुषनो गुण पण न आवे ने पोताना पतिनी मरजी प्रमाणेज वर्ते एवी रीते पतिव्रता स्त्रीने पोताना पति संघाथे दृढ टेक छे, तेमज भगवानना भक्तनेपण भगवान् संघाथे दृढ टेक जोइए अने जेवे रूपे करीने भगवाननुं दर्शन पोताने थयुंछे ने ते संघाथे जेने पतिव्रताना जेवी दृढ प्रीति बंधाणी छे तेने मोटा मोटा जे बीजा मुक्त साधु ते संघाथेपण प्रीति थायज नहि अने पोताना इष्टदेव जे भगवान् तेना जे बीजा अवतार होय ते संघाथेपण प्रीति थाय नहि केवळ जे स्वरूपनी पोताने प्राप्ति थइ होय तेने संघाथेज प्रीति रहे ने तेनी मरजी प्रमाणेज वर्ते अने बीजाने जे कांइक माने तेतो तेना जाणीने माने एवी जेने पोताना इष्टदेव जे भगवान् तेनेविषे पतिव्रताना जेवी दृढ भक्ति होय ने ते गमे तेवा बीजा गुणवानने देखे पण तेनेविषे हेत थायज नहि, जेम हनुमानजी श्रीरघुनाथजीना भक्त छे ते रामावतार पछी बीजा केटलाक भगवानना अवतार थयाछे पण हनुमानजीने रामचंद्रजीनेविषेज पतिव्रताना जेवी भक्ति रही छे तेमाटे हनुमानजीनी भक्ति ते पतिव्रताना जेवी छे, एवी रीते जे भगवानना भक्तनी टेक होय तेनी पतिव्रताना जेवी भक्ति कहेवाय अने जेनुं अंग एवुं न होय तो तेनी व्यभिचारिणीना जेवी भक्ति कहेवाय माटे जाणी जोइने पोतानुं नाक कपाय एवी भक्ति न करवी ने भगवानना भक्तनेतो समझी विचारीने पतिव्रताना जेवी दृढ भक्ति करवी । इति वचनामृतम् ॥ १६ ॥ २३९ ॥

संवत् १८८४ ना श्रावण शुदि ६ छठ्यने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने-

विषे पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, श्रीमद्भागवतमां जेवुं भरतजीनुं आख्यान चमत्कारी छे तेवीतो कोइ कथा चमत्कारी नथी केमजे भरतजी तो ऋषभदेव भगवानना पुत्र हता ने भगवानने अर्थे समग्र पृथ्वीनुं राज्य त्याग करीने वनमां गया हता अने त्यां भगवाननुं भजन करतांथकां मृगलीना बचाने विषे पोताने हेत थयुं त्यारे ते मृगने आकारे पोताना मननी वृत्ति थइ गइ पछी एवा मोटा हता तोपण ते पापेकरीने मृगनो अवतार आव्यो माटे अनंत प्रकारनां पाप छे पण ते सर्व पापथकी भगवानना भक्तने भगवान् विना बीजे ठेकाणे जे हेत करवुं ते अति मोटुं पाप छे माटे जे समझु होय ने ते जो ए भरतजीनी वात विचारे तो अंतरमां अति बीक लागे जे 'रखे भगवान् विना बीजे ठेकाणे हेत थइ जाय' एवी रीतनी अतिशय बीक लागे अने भरतजी ज्यारे मृगना देहनो त्याग करीने ब्राह्मणने घेर अवतर्या त्यारे भगवान् विना बीजे ठेकाणे हेत थइ जाय तेनी बीके करीने संसारना व्यवहारमां चित्त दीधुंज नहि ने जाणीने गांडानी पेठे वर्त्या अने जे प्रकारे भगवानमां अखंड वृत्ति रहे तेमज रहेता हवा, एटली वात करीने श्रीजिमहाराज ठाकोरजीनी आरती थइ त्यां पधार्या। इति वचनामृतम् ॥१७॥२४०॥

संवत् १८८४ ना श्रावण वदी १० दशमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठनेविषे पुष्पना हार पहेर्या हता ने पाघनेविषे पुष्पना तोरा लटकी रह्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजना भत्रिजा जे रघुवीरजी तेमणे प्रश्न पुछ्यो जे "जेवी जाग्रत् अवस्थानेविषे जीवनी स्थिति छे तेवी स्वप्न अवस्थानेविषे केम रहेती नथी ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जीव जेवो जाग्रत् अवस्थामां रहेछे तेवोज स्वप्न अवस्थानेविषे रहेछे केमजे जाग्रत् अवस्थामां जेवी वासना होय तेवीज स्वप्न अवस्थामां स्फुरेछे[1].

पछी निर्लोभानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! जाग्रत् अवस्थामांतो कोइ दिवस दीठांय न होय ने सांभळ्यां पण न होय तेवां तेवां पदार्थ स्वप्नमां स्फुरी आवेछे तेनुं शुं कारण हशे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, न दीठां होय ने न सांभळ्यां होय एवां जे पदार्थ स्फुरेछे तेतो पूर्व जन्मनां जे कर्म तेनी वासनाए करीने स्फुरेछे.

पछी अखंडानंदस्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! आ जीवने पूर्वजन्मनां जे कर्म ते कर्मनुं जोर भगवाननो भक्त थाय तोपण क्यांसुधी रहेछे ?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए जीवने ज्यारे सत्पुरुषनो संग थायछे त्यारे जेमजेम समागम करतो जाय तेमतेम पूर्वकर्म संबन्धी

---

१ अभिप्राय एटलो छे के—जीवनी त्रणेय अवस्थाओ त्रिगुणात्मक छे, सत्त्वादिक दरेक गुणपण पृथक् पृथक् बीजा गुणथी मिश्रित छे एटले सत्त्वगुण रज तमथी मिश्रित छे रजोगुण तम सत्त्वथी मिश्रित छे तमोगुण सत्त्वरजथी मिश्रित छे स्वप्नसंज्ञित अवस्था रजोगुणात्मक वर्तेछे तेमां तम सत्त्वथी मिश्रित रजोगुणनुं प्राधान्य वर्तेछे एवी रीते तम सत्त्व मिश्रित रजोगुण जेमा प्रधान छे एवी स्वप्नावस्थामां कदाचित् तमोगुणनी अधिकता सते जाड्याधिक्य थायछे तेथी अनुभवेलु पण स्वप्न जीव कही शकतो नथी, कदाचित् स्वप्नावस्थामा सत्त्वगुणनी अधिकता थवाथी जीवनी स्थिति जाग्रतना जेवी थायछे अने स्वप्नमा अनुभवेला अर्थनी स्मृतिपण यथाक्रमे थायछे, स्वप्नावस्थामा रजोगुणनी अधिकता प्रायश वर्तेछे माटे भ्रान्तपणु थायछे तेथी जाग्रतना जेवी जीवनी स्थिति रहेती नथी ।

जे वासना ते जुनी थती जाय पछी एने जन्ममरण भोगवावे एवी ते वासना रहे नहि, जेम त्रण वर्षनी तथा चार वर्षनी जे जुनी डांगर थइ पछी ते जम्यामांतो आवे खरी पण वावेतो उगे नहि, तेम पूर्वकर्मनी वासना छे ते जीर्ण थाय त्यारे जन्ममरणने भोगवावे एवी रहे नहि, त्यारे कोइक एम पुछशे जे 'वासना जीर्ण थइ केम जणाय?' त्यां दृष्टांत—जेम कोइक पुरुषो ढालो तरवारो लइने सांमसांमा लडाइ करता होय ते ज्यांसुधी सांमसांमा एमने एम उभा रहे त्यांसुधी ए बेयनुं बळ बरोबर जणाय अने ज्यारे एक जणानो पग पाछो हठ्यो त्यारे ए हार्यो कहेवाय, तेम भगवाननो जे भक्त होय तेने भगवान् संबन्धी ने विषय संबन्धी जे संकल्प ते ज्यांसुधी तुल्यपणे वर्तता होय त्यांसुधी एम जाणवुं जे 'वासना बळवान् छे' अने ज्यारे भगवान संबन्धी जे संकल्प ते विषय संबन्धी संकल्पने हठावीदे त्यारे एम जाणवुं जे 'वासना जीर्ण थइ गइछे.'

पछी श्रीजिमहाराजे परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे "जे भगवानना भक्तने देहाभिमाननी निवृत्ति थइ होय ने पंच विषयनो अभाव थइ गयो होय ते बीजा सर्व भक्तने केम कळ्यामां आवे?" पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे हे महाराज! आ तमारा प्रश्ननो उत्तर अमाराथी नहि थाय माटे तमे कृपा करीने करो, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवाननो भक्त गृहस्थाश्रमी होय अथवा त्यागी होय ने तेने देहाभिमान तथा पंच विषयमांथी आसक्ति तेतो निवृत्त थइ होय' पछी परमेश्वरनी आज्ञाए करीने जेवी रीते घटे तेवी रीते देहाभिमानपण राख्युं

१ ते भक्तनी जेजे क्रियाओ होय ते सर्वे भगवाननी आज्ञाथीज होय माटे ते भक्त भगवाननी आज्ञा प्रमाणेज क्रियाओने करे पण पोतानी इच्छाथी कोइ क्रिया करे नहि।

जोइए अने जेम जेने योग्य होय तेम पंच विषयपण भोगव्या जोइए. त्यां दृष्टांत–जेम अतिशय दुबळुं ढोर होय तेने हेठे लाकडां भरावीने ने शिंगडे पुंछडे झालीने उभुं करे ते ज्यांसुधी ए माणस झाली रहे त्यांसुधी उभुं रहे अने ज्यारे माणस मुकीदे त्यारे पृथ्वी उपर पडी जाय, तेम जे निर्वासनिक होय तेनेतो ज्यांसुधी परमेश्वर आज्ञाए करीने जेटली क्रियामां जोडे तेटलीज क्रियाने करीने रहेवादे, जेम कोइक पुरुषना हाथमां तीर कमान्य होय ते ज्यांसुधी ए पुरुष खेंचे त्यांसुधी ए कमान्य करडी थाय अने ज्यारे ए पुरुष कमान्यने खेंचतो आळशी जाय त्यारे ए कमान्य ढीली थइ जायछे, तेम जे निर्वासनिक पुरुष छे तेतो जेटली परमेश्वरनी आज्ञा होय तेटलाज व्यवहारमां जोडाय पण आज्ञाथी बहार कांइ न करे अने जे सवासनिक होय तेतो जेजे व्यवहारमां जोडायो होय ते व्यवहारमांथी पोतानी मेळे छुटी शके नहि अने परमेश्वरनी आज्ञाए करीनेपण छुटी शके नहि, एवी रीते निर्वासनिक पुरुष ने सवासनिक पुरुषनां लक्षण छे। इति वचनामृतम् ॥ १८ ॥ २४१ ॥

संवत् १८८४ ना श्रावण वदी १२ तेरशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठनेविषे मोगराना ने कर्णिकारना पुष्पना हार विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेणे संसारनो त्याग कर्यो होय

एवा जे हरिभक्त तेने बे कुलक्षण छे ते आ सत्संगनेविषे शोभवा देता नथी तेमां एकतो कामना अने बीजी पोताना कुटंबीनेविषे प्रीति अने ए बे कुलक्षण जेमां होय तेतो अमने पशु जेवो जणायछे[1] तेमांपण जेने पोताना संबन्धिमां वधु हेत होय तेनोतो अमारे अतिशय अवगुण आवेछे माटे जेणे संसार त्याग कर्यो होय तेनेतो लेशमात्रपण पोताना संबन्धी साथे हेत न राख्युं जोइए शामाटे जे पंच महापाप छे तेथकीपण देहना संबन्धिमां हेत राखवुं ते वधु पाप छे माटे जे भगवाननो त्यागी भक्त होय तेनेतो आ देहथकी ने देहना संबन्धिथकी पोतानो चैतन्य जुदो जाण्यो जोइए जे 'हुंतो आत्मा छुं अने मारे कोइ साथे लेशमात्र संबन्ध नथी' अने देहनां संबन्धी छे तेतो चोराशी लाख जातनी हारे गण्यां जोइए. अने ते संबन्धिने सत्संगी जाणीने तेनुं माहात्म्य समझवा जाय तो एकतो संबन्धनुं हेतज होय ने वळी तेनुं हरिभक्तपणानुं माहात्म्य समझे पछी भगवान् ने भगवानना भक्तथी संबन्धिमां वधु हेत बंधाइ जायछे माटे जेमां स्वाभाविक हेत रह्युंज छे एवा जे पोताना संबन्धि तेने हरिजन जाणीने जो तेमां हेत करे तो तेनो जन्म खराब थइ जायछे. अने वळी देहनो संबन्धी न होय पण जे पोतानी सेवा चाकरी करतो होय तेमांपण स्वाभाविक हेत थइ जायछे माटे जे समझु होय तेने पोतानी चाकरी करतो होय ने ते हरिभक्त होय तोपण तेनेविषे हेत न राखवुं, जेम दुध ने साकर होय तेमां सर्प मोढुं नांख्युं होय तो तेपण झेर कहेवाय तेम जेमां सेवा चाकरीरूप स्वार्थ मळ्यो होय ने ते हरिभक्त होय तोपण तेमां ते पोतानो स्वार्थ लइने हेत न राखवुं शामाटे जे पोताना जीवने एथकी बन्धन थायछे अने जेम भगवाननुं चिंत-

[1] माटे मुमुक्षु त्यागीए अष्ट प्रकारे स्त्रीनो त्याग राखवो ।

वन थाय तेमज जेमां पोतानो स्वार्थ होय तेनुंपण चिंतवन थवा मांडे एज एने भगवानना भजनमां विघ्न कहेवाय, जेम भरतजीने मृगलीनुं बच्चु तेज अविद्या-मायारूप थयुं एवी रीते जेजे भगवानना भजनमां अंतराय थता होय तेनो भगवानना भक्तने अविद्यारूप जाणीने अतिशय त्याग करवो. अने आ प्रकरणनी जे वार्ता तेने संतमंडळ तथा सांख्ययोगी हरिभक्त समस्त तेमने नित्य प्रत्ये कहेवी ने सांभळवी तेनी विगत जे, जेना मंडळमां जे मोटेरो होय तेने नित्य प्रत्ये आ वात करवी अने बीजाने सांभळवी अने जे मोटेरो होय ने जे दिवस वात न करे तो तेने ते दिवस उपवास करवो अने जे श्रोता होय ने ते श्रद्धाए करीने आ भगवाननी वात सांभळवा न आवे तो तेणेपण उपवास करवो अने आ वचनने अतिशय दृढ करीने राखज्यो । इति वचनामृतम् ॥ १९ ॥ २४२ ॥

संवत् १८८४ ना श्रावण वदी अमावास्याने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी दीनानाथभट्टे प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! [1]काळतो भगवाननी शक्ति छे ने कर्मतो जीवे कर्यां होय ते छे पण स्वभाव ते वस्तुगत्ये शुं हशे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जीवे जे पूर्वजन्मनेविषे कर्म कर्यां छे ते कर्म परिपक्व अवस्थाने पामीने जीव भेळां एकरस थइ गयांछे जेम लोढानेविषे अग्नि प्रवेश थइ

[1] काळ कर्म अने स्वभाव आ त्रण जीवोने सुखदु:खनी प्राप्तिमा निमित्त छे तेमां।

जाय तेम परिपक्वपणाने पामीने जीव साथे मळी रह्यां एवां जे कर्म तेनेज स्वभाव कहीए अने तेनेज वासना तथा प्रकृति कहीए.

पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! जीव साथे एकरसपणाने पामी रह्यां एवां जे कर्म एनेज स्वभाव तथा वासना करीने कहोछो ए वासनाने टाळ्यानो शो उपाय छे?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, ए वासना टाळ्यानो उपायतो आत्मनिष्ठाए सहित श्रीकृष्णभगवाननी भक्ति करवी एज भासेछे अने जो आत्मनिष्ठा विना एकलीज श्रीकृष्णभगवाननी भक्ति होय तो जेम भगवानमां हेत करे तेम बीजा पदार्थमांपण हेत थइ जाय माटे आत्मनिष्ठा सहित भक्ति करवी एज वासना टाळ्यानो उपाय छे अने आत्मनिष्ठावाळानेपण जो कोइक भुंडा देश काळादिकने योगे करीने अज्ञानीनी पेठेज क्षोभ थइ आवे पण झाझी वार टके नहि। इति वचनामृतम्॥ २०॥ २४३॥

संवत् १८८४ ना भादरवा शुदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठनेविषे चमेलीना पुष्पना हार विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ समस्त तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे गोपाळानंदस्वामीने ने शुकमुनिने प्रश्न उत्तर करवानी आज्ञा करी, पछी शुकमुनिए गोपाळानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे "भगवाननी जे भक्ति छे तेणेकरीने जीव भगवाननी मायाने तरेछे ने अक्षर धामने पामेछे अने जे धर्म छे तेणे करीनेतो देवलोकनी

प्राप्ति थायछे ने ते पुण्यने अंते पाछो देवलोकमांथी ते जीव पडी जायछे अने भगवानना जे अवतार थायछे तेतो ज्यारे ज्यारे धर्मनी ग्लानि थायछे त्यारे त्यारे ते धर्मने स्थापन करवाने अर्थे थायछे पण भक्तिना स्थापनने अर्थे थता नथी अने जे प्राप्ति भक्तिवते थायछे ते प्राप्ति धर्मेकरीने जणाती नथी माटे भक्ति सरखी कये प्रकारे धर्ममां मोटाइ आवे?" ए प्रश्न छे, पछी गोपाळानंदस्वामीए ए प्रश्ननो उत्तर करवा मांड्यो ते जेजे वात करी तेमां धर्म ते भक्तिनुं अंगरूप थइ जाय पण कोइ रीते भक्ति सरखुं धर्ममां गौरव आवे नहि, पछी ए वार्ता सांभळीने श्रीजिमहाराज अतिशय हसता हवा अने एम बोल्या जे ए प्रश्ननो उत्तर घणो कठण छे माटे ल्यो अमे एनो उत्तर करीए जे,[१] ए धर्मतो बे प्रकारनो छे एक निवृत्तिधर्म छे ने बीजो प्रवृत्तिधर्म छे ते ए बे प्रकारनो धर्म ते भगवानना सम्बन्धे सहितपण छे ने भगवानना सम्बन्धे रहितपण छे,तेमां भगवानना सम्बन्धे सहित जे धर्म छे तेतो नारद, सनकादिक, शुकजी, ध्रुव, प्रह्लाद, अंबरीश ए आदिक जे भक्तजन तेनो छे अने ए धर्मनेज भागवतधर्म कहेछे तथा एकांतिकधर्म कहेछे ने ते धर्म ने भक्ति तो बे नथी एकज छे. अने जे धर्म स्थापनने अर्थे भगवानना अवतार थायछे तेपण एज धर्मना स्थापनने अर्थे थायछे अने जे केवळ वर्णाश्रमना धर्म छे तेतो भागवतधर्म थकी अतिशय गौण छे अने भागवतधर्मे करीनेतो जीव जेते भगवाननी मायाने तरीने पुरुषोत्तमना धामने पामेछे माटे भागवतधर्म ने भक्ति एनुंतो एक सरखुं गौरव छे अने प्राप्ति पण एक सरखीज छे एवी रीते भक्तिनी ने धर्मनी सरखी

१ जे धर्म छे ते जगतने धारण करनारो छे माटे तेनुं रक्षण करवाथी सर्व जगतनुं रक्षण थायछे।

मोटाइ छे अने केवळ जे वर्णाश्रमना धर्म तेतो तेथकी अतिशय दुर्बळा छे ने तेनुं फळपण नाशवंत छे. अने अमारोपण मत ए छे जे 'भगवान् तथा भगवानना एकांतिक भक्त ते विना कोइ संघाथे हेत करीए तोपण थतुं नथी' अने अमने एम जणायछे जे 'जडभरत, शुकदेव, दत्तात्रेय, ऋषभदेव भगवान् एना सरखो अमारा जीवनो ढालो छे' माटे अमनेपण वन पर्वत ने जंगल एमांज रहेवुं गमेछे पण मोटां मोटां शहेर पाटण होय एमां रहेवुं गमतुं नथी एवो अमारो सहज स्वभाव छे तोपण भगवान् तथा भगवानना भक्तने अर्थे लाखो माणसना भीडामां रहीए छीए तोपण अमारे जेवुं वनमां रहीए ने निर्बंध रहेवाय तेवुंज रहेवायछे अने अमे पोताने स्वार्थे करीने लाखो माणसमां नथी रहेता अमेतो भगवान् तथा भगवानना भक्तने अर्थे माणसना भीडामां रहीए छीए अने भगवानना भक्तने अर्थे गमे तेटली प्रवृत्ति करवी पडे तोपण एने अमे निवृत्ति जाणीए छीए अने भगवाननो जे भक्त होय ने ते गमे तेटला वांकमां आव्यो होय तोपण अमारे तेनो अवगुण आवतो नथी अमेतो एम जाणीए छीए जे भगवानना भक्तमां जो कोइक स्वाभाविक अल्प दोष होयतोपण ते जोवा नहि अने ए दोष जो पोतामां होय तो तेने टाळ्यानो उपाय करवो पण भगवानना भक्तमां ए जातनो दोष होय तोपण ए हरिजननो अवगुण लेवो नहि अने हरिभक्तनोतो अवगुण ज्यारे मोटा वर्तमानमां चुकी जाय त्यारे लेवो ने बीजा अल्प दोष होय ते सारु भगवानना भक्तनो अवगुण लेवो नहि. अने भगवानना भक्त होय तेने वादविवाद करी जितीने राजी थवुं नहि ए साथेतो हारिनेज राजी थवुं अने जे वादविवाद करीने भगवानना भक्तने जीतेछे तेतो पंच महापापना जे करनारा तेथीपण

वधु पापी छे. अने अमारी आगळ जे कोइ भगवानना भक्तनुं घसातुं बोले तेतो अमने दीठोज गमे नहि अने जे भगवानना भक्तनो अवगुण लेतो होय तेना हाथनुंतो अन्न जळपण भावे नहि अने देहनो संबन्धी होय पण जो भगवानना भक्तनो अवगुण ले तो तेसाथे पण अतिशय कुहेत थइ जाय शामाटे जे आपणेतो आत्मा छीए ते आपणे देह ने देहना संबन्धी साथे शासारु हेत जोइए? आपणे तो सत्तारूप रहीने भगवान् तथा भगवानना भक्त संघाथे हेत कर्युंछे पण देहबुद्धिए करीने हेत कर्युं नथी ने जे सत्तारूप रही नहि शके तेनेतो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सरादिक जे शत्रु ते पीड्या विना रहेज नहि माटे जे आत्मसत्तारूप थइने भक्ति नहि करता होय तेनुं रूपतो आ सत्संगमां उघाडुं थया विना रहेज नहि शामाटे जे आ सत्संग छे तेतो अलौकिक छे अने जेवा श्वेतद्वीप वैकुंठ गोलोक तेनेविषे भगवानना पार्षद छे ते जेवाज आ सर्वे सत्संगी छे अने अमेतो जेवा सर्वथी पर जे दिव्य अक्षर धाम तेनेविषे भगवानना पार्षद छे ते जेवा जो आ सत्संगीने न जाणता होइए तो अमने भगवान् तथा भगवानना भक्तना सम छे. अने जेने ज्ञान वैराग्य धर्म ने भक्ति ए अतिशय दृढ नहि होय तेतो अंते जातां ढीलो पड्या विना नहिज रहे, जेम मीणे पायेल दोरो होय ने ते शियाळामां ने चोमासामांतो अकड रहे पण ज्यारे उनाळो आवे त्यारे जरुर ढीलो थइ जाय, तेम अहियां हरिभक्तने सर्वे प्रकारे सुख रहे ने सत्संगमां पण सन्मान थतुं रहे तेरूप जे चोमासुं ने शियाळो तेमांतो ज्ञान वैराग्य धर्म ने भक्ति ते सुधां आकरां जणाय पण ज्यारे सत्संगमां अपमान थाय ने देहे करीनेपण दुःखी थाय तेरूप जे उनाळो तेमांतो ज्ञान वैराग्य धर्म ने भक्ति ते मीणे पायेल दोरानी पेठे ढीला थइ जाय

तोपण अमेतो तेनो त्याग करता नथी पण एज एनी मेळे मनमां ओशीयाळो थइने सत्संगमांथी पाछो हठी जायछे पछी ते सत्संगी कहेवातो होय तोपण तेने अंतरे सत्संग संवन्धी सुख न रहे माटे सत्संग करवो तेतो आत्मसत्तारूप थइने अतिदृढपणे करवो पण देह तथा देहना संवन्धी ते संघाथे हेत रही जाय एवो सत्संग करवो नहि, जेम सोनानो दोरो कर्यो होय ते छये ऋतुमां सरखो रहे पण उनाळाने तापे करीने ढीलो थाय नहि, तेम जेनो दृढ सत्संग होय तेने गमेतेवां दुःख आवी पडे तथा गमे तेटलुं सत्संगमां अपमान थाय पण तेनुं कोइ रीते सत्संगमांथी मन पाछुं हठे नहि एवा जे दृढ सत्संगी वैष्णव छे तेज अमारेतो सगा वहाला छे ने तेज अमारी नात छे ने आ देहे करीने पण एवा वैष्णव भेळुंज रहेवुंछे ने श्रीकृष्ण भगवानना धाममांपण एवा वैष्णव भेळुंज रहेवुंछे एम अमारो निश्चय छे अने तमारे पण एमज निश्चय राख्यो जोइए शामाटे जे तमे सर्वे अमारे आश्रित थयाछो माटे अमारे तमने हितनी वात होय ते कही जोइए ने मित्रपण तेनेज जाणवो जे 'पोताना हितनी वात होय ते दुःख लगाडीने पण कहे' एज मित्रनुं लक्षण छे ते समजी राखज्यो । इति वचनामृतम् ॥ २१ ॥ २४४ ॥

संवत् १८८४ ना भादरवा वदी ४ चोथने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पाघनेविषे धोळा पुष्पना तोरा झुकी रह्या हता अने कंठनेविषे धोळा पुष्पना हार विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने परमहंस दुकड सरोदा लइने पोतानी आगळ विष्णुपद गावता हता.

ते समयमां श्रीजिमहाराज अंतर सन्मुख दृष्टि करीने विराजमान हता.

पछी श्रीजिमहाराज एम बोल्या जे, जेवुं प्रेमलक्षणा भक्तिए युक्त आ कीर्तननेविषे हरिजननुं अंग कह्युंछे एवुंतो झीणाभाइनुं अंग छे तथा पर्वतभाइ ने मूळजी एनांपण एवां अंग हतां माटे अमे अंतर सन्मुख दृष्टि करीने विचारता हता अने बीजापण सत्संगमां एवा अंगवाळा हशे अने जेने प्रेमलक्षणा भक्तिनुं अंग आवे तेने पंच विषयनेविषे प्रीति टळी जायछे अने आत्मनिष्ठा राख्या विनानीज रहेछे.

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे "नरसिंह महेतो तो सखिभावे श्रीकृष्णभगवानने भजता ने केटलाक नारदादिक भगवानना भक्त छे तेतो दासभावे करीने भगवानने भजेछे ए बे प्रकारना भक्तमां केनी भक्ति श्रेष्ठ जाणवी?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, नरसिंह महेतो गोपीयो ने नारद सनकादिक एमनी भक्तिमां बे प्रकार नथी एतो एक प्रकारज छे.[1] अने देहतो पुरुषनो ने स्त्रीनो बेय मायिक छे ने नाशवंत छे अने भजननो करनारो जे जीवात्मा ते पुरुषपण नथी ने स्त्रीपण नथी एतो सत्तामात्र चैतन्य छे ते देह मुकीने भगवानना धाममां जायछे त्यारे जेवी भगवानी मरजी होय तेवो तेनो आकार बंधायछे अथवा ए भक्तने जेवो सेवानो अवकाश आवे तेवो आकार धरीने भगवाननी सेवा करेछे. अने जे भगवाननो भक्त होय तेने जेम भगवानमां प्रीति होय तेमज जो धन स्त्री आदिक पदार्थमां प्रीति थइ जाय तो ए भगवाननो दृढ भक्त कहेवाय नहि अने परमेश्वरनो भक्त थइने भक्ति करतांथकां जे पाप करेछे ने सत्संगमांज कुवासना बांधेछे ते पापतो एने वज्रलेप थायछे अने कुसंगमां जइने परस्त्रीनो संग करे

१ बन्ने भक्तिमां क्रियाभेद छतांपण प्रेममां भेद नथी।

तेथकी पण सत्संगमां भगवानना भक्त उपर कुदृष्टिए जोवायुं होय तो तेनुं बधु पाप छे माटे जेने भगवानमां दृढ प्रीति करवी होय तेनेतो कोइ जातनुं पाप पोतानी बुद्धिमां रहेवा देवुं नहि शामाटे जे सत्संगी हरिजन छे तेतो जेवां पोतानां मा बेन के दीकरी होय तेवां छे अने आ संसारनेविषे अतिशय जे पापी होय ते पोताना गोत्रनी स्त्रीयोनेविषे कुदृष्टि राखेछे माटे जे हरिजननेविषे कुदृष्टि राखे ते अतिशय पापी छे ने तेनो कोइ काळे छुटको थाय नहि माटे जेने रसिक भक्त थवुं होय तेने आवी जातनुं पाप तेनो त्याग करीने पछी रसिक भक्त थवुं अने सर्व पापमांथी मोटुं पाप ए छे जे भगवान् ने भगवानना भक्तनेविषे दोषबुद्धि थाय ने ते दोषबुद्धिए करीने भगवान् ने भगवानना भक्त संघाथे वैर बंधाइ जाय माटे कोटि गौहत्या करी होय तथा मद्य मांसनुं भक्षण कर्युं होय तथा असंख्य गुरुस्त्रीनो संग कर्यो होय ते ए पापथकीतो कोइ काळे छुटको थाय पण भगवान् ने भगवानना भक्तनो जे द्रोही तेनोतो कोइ काळे ए पापथकी छुटको न थाय अने ते पुरुष होय तो राक्षस थइ जाय ने स्त्री होय तो राक्षसी थइ जाय पछी ते कोइ जन्ममां असुर मटीने भगवाननो भक्त थतो नथी. अने जेणे भगवानना भक्तनो द्रोह आदर्यो होय ने परिपक्व द्रोहबुद्धि थइ होय तेनीतो कोइ योगे करीने द्रोहबुद्धि टळे नहि अने द्रोह कर्यानी साधनदशामां होय ने एम जाणे जे 'भगवान् ने भगवानना भक्तनो में द्रोह कर्यो ए मोटुं पाप कर्युं माटे हुंतो अतिशय नीच छुं अने भगवान् ने भगवानना भक्त तेतो बहु मोटा छे' एवी रीते जे भगवाननो ने भगवानना भक्तनो गुण ले अने पोतानेविषे दोष जुवे तो गमे तेवां मोटां पाप कर्यां होय तोपण ते नाश पामेछे. अने भगवान् पोताना भक्तना

द्रोहना करनारा उपर जेवा कुराजी थायछे ने दुःखायछे तेवा कोइ पापे करीने दुःखाता नथी अने ज्यारे वैकुंठलोकमां जयविजये सनकादिकनुं अपमान कर्युं त्यारे भगवान् तत्काळ सनकादिक पासे आव्या ने सनकादिक प्रत्ये एम बोल्या जे 'तमारा जेवा साधु छे तेनो जे द्रोह करे तेतो मारा शत्रु छे माटे तमे जयविजयने शाप दीधो ए बहु सारुं कर्यु अने तमारा जेवा भगवदीय ब्राह्मण तेनोतो जो मारो हाथ द्रोह करे तो ते हाथनेपण हुं कापी नाखुं तो बीजानी शी वात कहेवी!' एवी रीते वैकुंठनाथ भगवान् सनकादिक प्रत्ये बोल्या ने जयविजय हता ते भगवदीयना अपराध रूपी जे पाप तेणे करीने दैत्य थया, एवी रीते जेणे भगवानना भक्तनो द्रोह कर्योछे ते सर्वे मोटी पदवीमांथी पडी गयाछे ते शास्त्रमां वात प्रसिद्ध छे माटे जेने पोतानुं रुडुं इच्छवुं तेणे भगवानना भक्तनो द्रोह करवो नहि ने जो जाणे अजाणे कांइक द्रोह थइ गयो होय तो पगे लागी स्तुति करीने जेम ते राजी थाय तेम करवुं । इति वचनामृतम् ॥ २२ ॥ २४५ ॥

संवत् १८८५ ना आसो शुदी १५ पुन्यमने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानेविषे फळीयानी वचे ढोलियो ढळावीने ते उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज कृपा करीने सर्व हरिजन प्रत्ये बोल्या जे, जे भगवाननो भक्त होय ते नित्ये भगवाननी मानसी पूजा करे ते मानसी पूजा करवानी एम विक्ति छे जे—उनाळो शियाळो ने चोमासुं ए त्रण

ऋतुनेविपे नांखी नांखी मानसी पूजा करवी तेमां उनाळाना चार महिना सुधीतो एम पूजा करवी जे सारुं ताढुं सुगंधिमान पवित्र जळ होय तेणेकरीने भगवानने प्रथम नवराववा ने पछी धोयेलो धोळो खेस सुंदर झीणो ने घाटो होय ते पहेरवा आपवो ने पछी सुंदर आसन उपर विराजमान एवा जे भगवान् तेना अंग अंगविपे सुंदर मळियागर चंदन घसीने वाट्यकामां उतारी शरढुं होय ते चर्चवुं ते प्रथमतो ललाटनेविपे चर्चीने ललाटने सारी पेठे निरखवुं तथा हाथनेविपे चर्चीने हाथने सारी पेठे निरखवा तथा हृदय उदर साथळ पिंडी ए आदिक जे अंग तेनेविपे ते चंदननुं लेपन करी करीने तेते अंगने निरखवां तथा चरणारविंदनी उपर ने तळे सुंदर कुंकुम चोपडवुं ने

भगवानने उंने जळे करीने नवराववा ने पछी धोळो खेश पहेरवा आपवो ने पछी ढोलिया उपर मखमलनुं गादलुं पाथरीने ते उपर धोळो ओछाड ओछाडीने ते उपर भगवानने विराजमान करवा ने पछी सुरवाळ पहेरावयो तथा डगली पहेरावयी तथा सोनेरी तारावाळो भारे कसुंबी रेटो मस्तके बंधाववो तथा केड्ये भारे रेटो बंधाववो तथा खभे भारे रेटो धराववो तथा हीरा मोती सुवर्ण लालनां जे भातभातनां घरेणां ते अंग अंगनेविषे धराववां तथा मोतीनी माळा पहेराववी अने वस्त्र पहेरावीने तथा आभूषण पहेरावीने भगवानना जे तेते अंग तेने सारी पेठे निरखवां अने भगवानना ललाटनेविषे एक कुंकुमनो चांदलो करवो। अने चोमासाना चार महिनासुधी एम पूजा करवी जे जाणीए भगवान् कोइक गामथी आव्या ते धोळां वस्त्र सर्वे पलळी गयांछे अथवा नदीए परमहंसे सहित नावा पधार्या हता त्यांथी पलळीने आव्याछे पछी ते पलळेलां जे वस्त्र तेने उतरावीने सर्व कसुंबल वस्त्र पहेरवा आपवां अने ललाटनेविषे पीळुं जे केसर चंदन तेनुं लेपन करवुं। अने उनाळो होय त्यारे चोगान जायगामां तथा फुलवाडीमां भगवान् विराजमान छे एवी रीते भगवानने धारवा अने शियाळो ने चोमासुं होय त्यारे कोइक सारी मेडीने उपर भगवान् विराजमान छे अथवा घरने मांहेलीकोरे विराजमान छे एवी रीते भगवानने धारवा अने भगवानने जमवा कइ वस्तु आपवी तो जे भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य पोताना मनमां खावाने गमतां होय तेवां भगवानने अर्थे चिंतववां अने तेवां भगवानने न भावतां होय तोपण पोताने गमतांज भोजन भगवानने अर्थे चिंतववां अने बीजा जे धूप दीप आरती ए आदिक उपचार ते यथायोग्य भगवानने अर्पण करवा,

एवी रीते त्रणे ऋतुमां भिन्न भिन्न पूजा करे तो ते भक्तने भगवान-नेविषे हेतनी वृद्धि थायछे ने तेना जीवने बहु समास थायछे माटे जेणे आ वात सांभळी छे ते राखज्यो ने नित्ये आवी रीते भगवाननी मानसी पूजा करज्यो ने आवी वात अमे कोइ दिवस करी नथी.

अने वळी श्रीजिमहाराजे एक बीजी वात करी जे, ज्यारे भगवान् ने भगवानना भक्त ते पोतानी उपर राजी थाय त्यारे ते भक्तने एम विचारवुं जे 'मारां मोटां भाग्य जे मारी उपर भगवान् ने भगवानना भक्त राजी थया' अने शिक्षाने अर्थे भगवान् ने भगवानना भक्त पोताने वढे त्यारेपण एम विचारवुं जे 'मारां मोटां भाग्य जे मने भगवान् ने भगवानना भक्त वढ्या जेणे करीने मारामां अवगुण हशे ते जशे' एवी रीते वढे तोपण राजी थवुं पण वढे त्यारे मनमां शोक न करवो ने कचवावुं नहि ने पोताना जीवने अतिपापी न मानवो राजी रहेवुं आ वातपण राख्या जेवी छे । इति वचनामृतम् ॥ २३ ॥ २४६ ॥

संवत् १८८५ ना आसो वदी १२ द्वादशीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरनेविषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजने मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवानना जे भक्त ते अक्षरधामनेविषे भगवाननी सेवामां रहेछे ते सेवानी प्राप्तिनां जे साधन ते शां छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे श्रद्धा, स्वधर्म, वैराग्य, सर्वे प्रकारे इन्द्रियोनो निग्रह करवो, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, साधुनो समागम, आत्मनिष्ठा, माहात्म्यज्ञाने युक्त एवी जे भगवाननी

निश्चळ भक्ति, संतोष, निर्दंभपणुं, दया, तप, पोताथी गुणे करीने मोटा जे भगवानना भक्त तेमनेविषे गुरुभाव राखीने तेमने बहु प्रकारे मानवा, पोताने बरोबरीया जे भगवानना भक्त तेमनेविषे मित्रभाव राखवो, पोताथी उतरता जे भगवानना भक्त तेमनेविषे शिष्यभाव राखीने तेमनुं हित करवुं, एवी रीते आसोळ साधने करीने भगवानना एकांतिक भक्त जेते अक्षरधामनेविषे भगवाननी सेवाने रुडी रीते पामेछे.

पछी शुकमुनिए प्रश्न पुछ्यो जे "आपणा सर्वे संत वर्तमानमां रहेछे तथापि एमनेविषे एवुं कयुं लक्षण छे जे जेणेकरीने एम जाणीए जे एने आपत्काळ पडशे तोपण ए धर्ममांथी नहि डगे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, भगवानना जेजे नानां मोटां वचन तेनी उपर निरंतर जेनी दृष्टि रहे पण वचन बहार पग देवो पडे तेमां अतिकठण पडे अने ते वचनथी आगळ पग मांडीने अधिकपण न वर्ते अने ओछोपण न वर्ते तेने जाणीए जे 'ए धर्ममांथी आपत्काळे पण नहि पडे.'

पछी श्रीजिमहाराजे कृपा करीने एम वार्ता करी जे, प्रकृति जे जाबी ते जीवने बहु कठण छे तथापि जो सत्संगमां स्वार्थ जणाय तो प्रकृति टळवी कठण न पडे जेम दादाखाचरना घरना माणसोने अमने राखवानो स्वार्थ छे तो अमने जे प्रकृति न गमे ते राखता नथी तेम स्वार्थे करीने प्रकृति टळेछे. तथा भये करीनेपण टळेछे पण ते अतिशय नथी टळती केमजे ज्यारे कोइ माणस होय त्यारे तेनो भय राखे ने माणस न होय तो न राखे जेम राजाने भये करीने चोर प्रकृतिनो त्याग करेछे. अने जेनो जे स्वभाव होय तेनी उपर वारंवार अमे कठण वचनना डंक मार्या होय ने कचवाव्यो होय तोपण जे कोइ रीते पाछो न पड्यो होय ते उपरतो अमारे एवुं हेत रहेछे ते जाग्रत् स्वप्नमां संभार्या विना ते हेत एमनुं एम रह्युं जायछे ने गमेतेम थाय पण ते हेत टळतुं नथी.

अने वळी जे हरिभक्तनेविषे जे अंग होय तेमां एक अंग सरस होय ते कहीए छीए जे, दादाखाचरने विश्वासनुं अंग. अने राजबाइने त्यागनुं अंग. अने जीवुबाइने श्रद्धानुं अंग. अने लाडुबाइने अमारी प्रसन्नता करवी ए अंग. अने नित्यानंदस्वामीने अमारी प्रसन्नता करवी ए अंग. अने ब्रह्मानंदस्वामीने सत्संगनी मर्यादानो कोइ रीते भंग न थाय एवो आग्रह ए अंग. अने मुक्तानंदस्वामीने अमारी प्रसन्नता करवी तथा अमारो विश्वास ए अंग. अने सोमलाखाचरने सदा एक रेणीपणुं ए अंग. अने चैतन्यानंदस्वामीने एम जे कोइ रीते महाराज प्रसन्न थाय एम आपणी वते वर्ताय तो ठीक ए अंग. अने स्वयंप्रकाशानंदस्वामीने निश्चय तथा माहात्म्य ए अंग. अने ठाकोर झींणाभाइने एम जे 'भगवान् विना बीजा पदार्थमां रखे मारुं अंग बंधाइ जाय नहि?' एवुं अंग. अने मोटा आत्मानंदस्वामीने अमारा वचननुं उल्लंघन थाय नहि एवुं अंग. एवी रीते घणाक मोटेरा परमहंस तथा हरिभक्त तेनां अंग कह्यां.

अने पछी एम बोल्या जे अहिंनी मोटेरी त्रण बाईयो तथा गोपाळानंदस्वामी, ब्रह्मानंदस्वामी, मुक्तानंदस्वामी, नित्यानंदस्वामी, शुकमुनि, सोमलोखाचर, दादोखाचर ए तमे सर्वे जेम हमणां आ वर्तमानकाळे केवा रुडी रीते वर्तोछो तथापि जो देश, काळ, संग, क्रिया, ए चारनेविषे विषमपणुं थाय तो एमनो एम रंग रहे नहि ए वातमां कांइ संशय नथी अने कदाचित् विषयमां बंधाइ गयो होय पण जो जेनेविषे जेटलो ज्ञानांश वधारो होय तो ते विषयना बंधनने तोडीने नीकळे. ते ज्ञानांश ते शुं तो एम समझण होय जे 'हुं जे जीव ते आवो छुं तथा देह ते आवोछे तथा देहनांसंबंधी ते आवांछे तथा प्रकृति पुरुष विराट् सूत्रात्मा

अव्याकृत तेनां स्वरूप ते आवी रीतनां छे तथा भगवान् ते आवी रीतना छे तथा भगवाननुं धाम ते आवी रीतनुं छे'इत्यादिक जे ज्ञानांश तेनी जे अंतरमां दृढतानी ग्रंथि ते पडी होय ने पछी जे वैराग्य उपजे ते वैराग्य खरो अने ए विना बीजो जे वैराग्य ते तो उपरथी जणाय पण एमां बळ नहि बळतो ज्ञानांशथी उपज्यो जे वैराग्य तेमांज छे, जेम दीवानो अग्नि तेने वायु लागे त्यारे ओलाइ जाय अने वडवानळ अग्नि तथा मेघमां जे वीजळीनो अग्नि ते जळमां रह्योछे पण ते जळनो पराभव एने थतो नथी प्रज्वलित थको रहेछे तेम ज्ञानांश विनानो जे वैराग्य तेने विषयनो सम्बन्ध थाय त्यारे ए वैराग्य टके नहि अने ज्ञानांशे करीने थयो जे वैराग्य तेने विषयनो संबन्ध थाय तोपण ए वैराग्य क्षीण न पडे वडवानळ अग्निनी पेठे प्रज्वलित थको वर्तेछे अने एवो जे ज्ञानांश तेनी कोइ रीते करीने तमारा मनमां आंठी पडी जाय ते सारु अमे निरंतर वार्ता करीए छीए केमजे कोइक वार्तानी चुक लागे तो एवी आंटी पडी जाय अने जे एम न समझे ने'आ मारी जात,आ मारी मा, आ मारो बाप, आ मारा संबन्धी' एवी रीतनी अहंममताए युक्त जेनी समझण छे तेनेतो अतिप्राकृत मतिवाळो अणसमझु जाणवो.

अने वळी श्रीजिमहाराजे कृपा करीने एम वार्ता करी जे मुमुक्षुने उत्कृष्ट गुणनी प्राप्ति थाय तेनुं कारण शुं छे तो भगवाननी कथा वार्ता सांभळ्यामां जेने जेटली प्रीति तेने तेटलो जगतनो अभाव थाय तथा काम क्रोध लोभादिक दोषनो नाश थाय अने जो कथा वार्तामां जेने आळस होय तेनी कोरनी एम अटकळ करवी जे 'एमां मोटा गुण नहि आवे' अने शास्त्रमां नव प्रकारनी भक्ति कही छे तेमां श्रवण भक्तिने प्रथम गणी छे माटे जो श्रवण भक्ति जेने होय तो प्रेमलक्षणा पर्यंत सर्वे भक्तिनां अंग एने प्राप्त थशे, एवी रीते वार्ता करी.

अने तेज दिवस मध्याह्न समे दादाखाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीनी आगळ परमहंस सर्वेनी पंक्ति जमवा सारु बेठी हती ते समयमां श्रीजिमहाराज लींबडाना वृक्षने हेठे ढोलियो ढळावीने विराजमान हता.

पछी श्रीजिमहाराजे परमहंस आगळ एम वात करी जे, बाईयो हरिभक्त छे तेनुं माहात्म्यतो झाझुं समझवुं नहि केमजे माहात्म्यने मिषे करीने मनमां एनुं मनन थाय एटले स्वप्नमां आवे माटे माहात्म्य लेवुं तो सौनुं समपणे लेवुं जे 'ए सर्वे भगवानना भक्त छे' पण अधिक न्यूनपणे माहात्म्य लेवुं नहि अने जो अधिक न्यूनपणे माहात्म्य समझे-तो तेमां मोटुं विघ्न छे तेमज बाइयोने भाइयोनुं माहात्म्यपण समपणे समझवुं अने जो एम न समझे तो ए बाइयोने पण मोटुं विघ्न छे। इति वचनामृतम् ॥ २४ ॥ २४७ ॥

संवत् १८८५ ना कार्तिक शुदी १० दशमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणा द्वारना ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे कृपा करीने एम वार्ता करी जे 'भगवान संबंधी भक्ति उपासना सेवा श्रद्धा धर्मनिष्ठा ए आदिक जेजे करवुं तेमां बीजा फळनी इच्छा न राखवी' एम सच्छास्त्रमां कह्युं छे तेतो साचुं पण एटलीतो इच्छा राखवी जे 'एणे करीने मारी उपर भगवाननी प्रसन्नता थाय' एटली इच्छा राखवी अने एवी इच्छा राख्या विना अमथुं करे तो तेने तमोगुणी कहेवाय माटे भगवाननी भक्ति आदिक जे

गुण तेणे करीने भगवत्प्रसन्नता रूप फळने इच्छवुं अने जो ए विना बीजी इच्छा राखे तो चतुर्धा मुक्ति आदिक फळनी प्राप्ति थाय.

अने भगवाननी जे प्रसन्नता ते घणा उपचारे करीने जे भक्ति करे तेनीज उपर थाय ने गरीब उपर न थाय एम नथी गरीब होय ने श्रद्धा सहित जळ, पत्र, फळ, फुल, भगवानने अर्पण करे तो एटलामां पण राजी थाय केमजे भगवानतो अति मोटा छे ते जेम कोइक राजा होय तेना नामनो एक श्लोकज कोइक करी लावे तो तेने गाम आपे तेम भगवान् तुरत राजी थायछे.

अने वळी भगवाननो खरो भक्त ते कोण कहेवाय तो पोताना देहमां कोइक दीर्घ रोग आवी पडे तथा अन्न खावा न मळे वस्त्र न मळे इत्यादिक गमे एटलुं दुःख अथवा सुख ते आवी पडे तोपण भगवाननी उपासना-भक्ति, नियम, धर्म, श्रद्धा, एमांथी रंचमात्रपण मोळो न पडे रतिवा सरस थाय तेने खरो हरिभक्त कहीए.

पछी श्रीजिमहाराजने राजबाइए प्रश्न पुछाव्यो जे "हे महाराज! कया गुणे करीने तमे राजी थाओ ने कया दोषे करीने कुराजी थाओ?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, आटलातो वचनमां दोष छे ते कया तो पोताना अंतरमां कांइक विशेष वर्तवानुं होय तेनुं अमने एकवार कही देवुं जे 'हे महाराज! तमे कहोतो हुं आवी रीते वर्तुं' पण वारंवार न कहेवुं जे 'हे महाराज! हुं आम वर्तुं के आम वर्तु ते तमे केम मने कहेता नथी' ते न गमे अने मने पोतानो इष्टदेव जाणे ने वारे वारे मारा वेण उपर वेण लावे ते न गमे. अने हुं कोइनी आगळ वात करतो हउं ने बोलाव्या विना वचमां बोले ते न गमे. अने भगवानुं ध्यान करवुं तथा धर्म पाळवो भक्ति करवी इत्यादिक जेजे शुभ क्रि-

या करवानी छे तेने जे भगवान् उपर नाखे जे 'भगवान् करावशे तो थशे' ते न गमे. अने 'आम हुं करीश आम हुं करीश' एम केवळ पोतानुंज बळ राखे पण भगवाननुं बळ न राखे ते न गमे. अने जेने बोल्यामां पोताना अंगनो ठा न होय तेतो अतिशय न गमे. अने बीजां व्यावहारिक काम करवां होय तेमांतो लाज तथा आळस न होय ने भगवाननी वार्ता करवी कथा करवी कीर्तन गाववां तेमां लाज राखे ने आळस राखे ते न गमे. अने त्यागनो अथवा भक्तिनो अथवा कोइ रीतनो जे अहंकार बोलिमां लावे ते न गमे अने सभा बेठी होय त्यारे सउथी छेलो आवीने बेसे पण पोताने ज्यां घटतुं होय त्यां न बेसे ते न गमे. तथा कोइक मोटा ते सभामां बेठा होय ने तेने कुणी मारीने माग करीने पोते बेसे ते न गमे. अने बाई माणस होय ने ते पोताना अंगने ढांकीने लज्जा सहित वर्ते ते गमे तथा चाले त्यारे नीची दृष्टि राखीने चाले पण फाटी दृष्टि राखे नहि ते गमे अने अमारां दर्शन करता होय ने कोइक बाई भाइ आवे अथवा कुतरुं निसरे के ढोर निसरे के कांइक खडखडे तेनी सामुं वारंवार दर्शन मुकीने जुवे पण एक दृष्टिए दर्शन न करे तेनी उपरतो एवी रीस चडे जे 'शुं करीए साधु थया नहितो एनुं कांइक ताडन करीए' पण तेतो थाय नहि केमजे साधुने कोइनुं ताडन करवुं ए अति अयोग्य कर्म छे. अने जे कपट राखे पण पोताना मनना जे संकल्प ते जेने कहेवा योग्य होय तेनी आगळपण कहे नहि ते न गमे अने मान तथा क्रोध तथा कोइथी दबाइने रहेवुं ते शुं तो पोताना मनमां जेवुं होय तेवुं बीजाथी दबाइने कहेवाय नहि ए त्रण वानांतो अतिशय भुंडां छे अने हरिभक्तने मांहोमांही बरोबरीयापणुं रहे पण एकएकनो भार न आवे एपण अतिशय भुंडुं छे। इति वचनामृतम् ॥ २५ ॥ २४८ ॥

संवत् १८८५ ना कार्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरनेविषे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे एम वार्ता करी जे, भगवाननी पेठे सेवा करवा योग्य एवा जे संत ते केवा होय तो इंद्रियो अंतःकरण आदिक जे मायाना गुण तेनी जे क्रिया तेने पोते दाबीने वर्ते पण एनीं क्रियाए करीने पोते दबाय नहि ने भगवान् संबन्धी क्रियानेज करे ने पंच वर्तमानमां दृढ रहेता होय ने पोताने ब्रह्मरूप माने ने पुरुषोत्तम भगवाननी उपासना करे एवा जे संत तेने मनुष्य जेवा न जाणवा ने देव जेवापण न जाणवा केमजे एवी क्रिया देव मनुष्यनेविषे होय नहि अने एवा संत मनुष्य छे तोपण भगवाननी पेठे सेवा करवा योग्य छे माटे जेने कल्याणनो खप होय एवा जे पुरुष तेने एवा संतनी सेवा करवी अने एवा साधु गुणे युक्त जे बाई तेनी सेवा बाईने करवी.

पछी श्रीजिमहाराजने आत्मानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे "आ सत्संगमां जे वर्तमाननो प्रबंध छे तेमां ज्यांसुधी रहेतो होय त्यांसुधीतो जेवो तेवो होय तेनेपण पंच विषये करीने बंधन थाय नहि पण कोइक देश काळने योगे करीने सत्संगथी बहार निसरी जवाय तोपण जेने पंच विषय बंधन न करी शके ते पुरुष केवो होय तेनां लक्षण कहो?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जेनी बुद्धिमां धर्मांश विशेषपणे वर्ततो होय ने आस्तिकपणुं होय जे 'आ लोकमां जे सारुं नरसुं कर्म करेछे तेनुं जे सारुं नरसुं फळ तेने जरूर परलोकमां भोगवेछे' एवी दृढ मति

जेने होय तथा लाज होय जे 'मुंडुं करीशुं तो आ लोकमां माणस आगळ शुं मुख देखाडीशुं ?' एवो जे होय ते गमे त्यां जाय तो-पण एने कोइ पदार्थ तथा स्त्रीयादिक ते बंधन करी शके नहि, जेम मयारामभट्ट छे तथा मूळजी ब्रह्मचारी छे तथा निष्कुळानंदस्वामी छे एवी जातना जे होय तेने स्त्री धनादिक पदार्थनो योग थाय तो-पण ए डगे नहि. अने एवो होय ने तेने जो एक आत्मनिष्ठापणुं होय जे 'हुंतो आत्मा छुं ब्रह्म छुं ते मारेविषे शुभ अशुभ क्रिया लागती नथी हुंतो असंग छुं' एवुं अंग होय तथा बीजुं एम होय जे 'भगवाननो महिमा बहु समझे ने ते महिमानी बहु वार्ता करे जे कांइक धर्म विरुद्ध वर्ताइ जशे तेनो शो भार छे? भगवाननो महिमा बहु मोटो छे' ए बे रीतना जे होय तेमां ए बे रीतना जे दोष ते धर्म पाळवामां मोटा अंतरायरूप छे माटे आवी रीते समझे तो सारुं जे 'आत्मनिष्ठा पण यथार्थ होय तथा भगवाननुं माहात्म्यपण सारी पेठे समझे अने निष्कामपणुं, निर्लोभपणुं, निःस्वादपणुं, निःस्नेहपणुं, निर्मानपणुं, ए आदिक जे धर्म तेने भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे समझीने दृढपणे पाळे अने एम समझे जे 'हुं ए धर्मने पाळीश तो मारी उपर भगवान् बहु राजी थशे ने जो मने कोइ रीते धर्ममांथी कांइक भंग पडशे तो भगवाननो मारी उपर बहु कुराजिपो थशे' एवी रीते जेना अंतरमां दृढ ग्रंथि होय ते भक्त जेते धर्ममांथी कोइ दिवस पडेज नहि अने एवो जे होय तेने कोइ मायिक पदार्थ बंधन करी शके नहि अने आवी रीतनी समझणवाळो न होय ने बीजो गमे तेवो ज्ञानवाळो होय के भक्तिवान् होय तेनेपण धर्ममांथी कांइक भंग थइ जाय खरो तथा मायिक पदार्थ बंधन करे खरुं ए सिद्धांत वार्ता छे.

पछी वळी श्रीजिमहाराजे कृपा करीने एम वार्ता करी जे, अमने अहंकार न गमे ते अहंकार भक्तिपणानो होय त्यागपणानो होय वैराग्यपणानो होय ब्रह्मपणानो होय समझणनो होय वर्तमान पाळ्यानो होय ए रीतनो जेजे अहंकार ते अमने न गमे अने दंभ न गमे ते दंभ ते शुं तो पोताना हृदयमां भगवाननो निश्चय भक्ति अने धर्म ते थोडा होय ने बीजा आगळ पोतानी मोख्य वधार्या सारु उपरथी तो तेने बहु जणावे ते न गमे अने पोताने ने भगवानने जे अभेदपणे भजे ते न गमे तथा जे नियम धार्यो होय ते नियमने घडीक मुकी दे ने वळी घडीकमां पाळे एवी रीते जे शिथिल वर्ततो होय ते न गमे अने भगवाननो महिमा तो झाझो मोटो समझे ने पोताने अतिशय तुच्छपणे समझे पण देहथी जुदो जे आत्मा तेरूप पोताने न माने ते न गमे. अने हवे जे गमे ते कहीए छीए जे, भगवाननो महिमा तो यथार्थ समझे ने पोताना देहथी व्यतिरिक्त जे पोतानो आत्मा तेने ब्रह्मरूप समझे अने धर्ममां दृढ रह्यो होय अने भगवाननी अचळ भक्ति करतो होय अने आवी रीतनो पोते होय तोपण सत्संगमां कोइक कांइ न समझतो होय ने भगवाननो निश्चय तो होय तेने मोटो जाणे ने तेनी आगळ पोताने अतितुच्छ जाणे अने वार्ता कर्यामां पोतानां मुखे करीने पोतानी समझणनो केफ कोइनी आगळ लगारपण जणावे नहि एवो जे होय ते अमने बहु गमे, एवी रीते श्रीजिमहाराज वार्ता करीने पोताने उतारे पधार्या । इति वचनामृतम् ॥ २६ ॥ २४९ ॥

संवत् १८८५ ना कार्तिक शुदि १५ पुण्यमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरनेविषे विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण

कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे वार्ता करी जे शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पंच विपय संवन्धी जे सुख ते दिव्यमूर्ति एवा जे भगवान् पुरुषोत्तम तेनी जे सुखमय मूर्ति तेरूप जे एक स्थळ तेनेविपे रह्युंछे ते जो भगवाननी मूर्तिनां दर्शन करता होइए तो रूपनुं सुख प्राप्त थाय ने वीजा स्पर्श आदिक चार विपय तेनुं सुखपण प्राप्त थाय ते एकज समयनेविपे थायछे अने वीजा मायिक जे पंच विपय छे तेमांतो एक विपयनो संवन्ध थाय त्यारे एक विपयनुंज सुख प्राप्त थाय पण वीजाउं न थाय माटे मायिक विपयमां भिन्नभिन्नपणे सुख रह्युंछे अने ते सुखतो तुच्छ छे ने नाशवंत ने अंते अपार दुःखनुं कारण छे अने भगवानमांतो सर्व विपयनुं सुख एककाळे प्राप्त थायछे ने ते सुख महा अलौकिक छे ने अखंड अविनाशी छे ते सारु जे मुमुक्षु होय तेने मायिक विपयमांथी सर्व प्रकारे वैराग्य पामीने अलौकिक सुखमय एवी जे भगवाननी दिव्य मूर्ति तेनेविपे सर्व प्रकारे जोडावुं.

अने वळी श्रीजिमहाराजे एम वार्ता करी जे, जे हरिभक्तने भगवाननी भक्तिनो खप होय तथा संत समागमनो खप होय तो ते गमें तेवो पोतानो स्वभाव होय तो तेने टाळीने जेम ते संत कहे ने तेनी मरजी होय तेम वर्ते अने ते स्वभावतो एवो होय जे 'चैतन्य साथे जडाइ गयो होय' तोपण तेने सत्संगना खपवाळो टाळी नाखे, ते उपर पोतानी वार्ता करी जे अमारो प्रथम त्यागी स्वभाव हतो पण जो श्रीरामानंदस्वामीना दर्शननो खप हतो तो मुक्तानंदस्वामीनी आज्ञाने अनुसारे वर्त्या पण अमारा मननुं गमतुं कांइ न कर्युं.

अने वळी जे हरिभक्त होय तेने कोइ जातनी आंटी पाडशी तेनी एम विगति छे जे एकतो निष्कामादिक वर्तमाननी आंटी पाडी होय ने एक एवी आंटी पाडी होय जे 'आ ठेकाणे हुं आसन करुं तो निद्रा आवे ने बीजे ठेकाणे न आवे' ए आदिक अनेक प्रकारनी जे तुच्छ स्वभावनी आंटी पाडी होय ए बेयने एक रीतनी न समझवी, वर्तमाननी आंटीतो पोताना जीवनरूप छे ने तेनेविषे बहु माल छे एवी रीते माहात्म्ये सहित तेनी आंटी पाडवी अने बीजा स्वभावनी आंटी पाडी होय तेने विषेतो तुच्छपणुं जाणवुं ने तेने संत मुकावेतो मुकी देवी ने प्रथमनी आंटी मुकवी नहि. अने ए बेयने बरोबर समझे तो एनेविषे मूढपणुं जाणवुं, जेम बाळक होय तेणे मुठीमां बदाम झाली होय तेने कोइक मुकावे तो मुके नहि ने रुपीयानी मुठी वाळी होय ने सोनामहोरनी मुठी वाळी होय ने तेने मुकावे तो तेने मुके नहि त्यारे ए बाळके बदाम तथा रुपियो ने सोनामहोर तेनेविषे बरोबर माल जाण्यो माटे ए बाळकनेविषे मूढपणुं छे अने वळी जेम कोइकना हाथमां बदाम होय ने चोर आवीने कहे जे 'तुं मुकीदे नहितो तरवारे माथुं कापी नाखीश' त्यारे डाह्यो होय तो तेने आपी दे ने मूर्ख होय तो न आपे तेम ए बे प्रकारनी आंटीमां न्यून अधिकपणुं जाणवुं अने एम होय नहि ने बेयमां सामान्यपणुं जाणे तो एनो आंटीदार स्वभाव जाणवो ने तेने मानी जाणवो अने आंटीए करीने ते वर्तमान पाळतो होय ने जो मरणपर्यंत एमने एम नभे तोतो ठीक पण तेनो पुरो विश्वास न आवे केमजे जो एने कोइक जातनां वेण लागे अथवा तेनुं मान न रहे तो एवो ए रहेशे नहि अने जे आंटीए करीने वर्तमान पाळतो होय ने भक्ति करतो होय तेतो

राजर्षि कहेवाय ने जे भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे भगवाननी भक्ति करतो होय तथा वर्तमान पाळतो होय तेतो ब्रह्मर्षि कहेवाय ने ते साधु कहेवाय एवी रीते ए त्रेयमां फळनो भेदपण छे.

अने वळी एम वात करी जे, मान ईर्ष्या ने क्रोध ए त्रण दोष ते काम करतांपण अतिशय भुंडा छे केमजे कामी उपरतो संत दया करे पण मानी उपर न करे ने मानमांथी ईर्ष्या ने क्रोध उपजेछे माटे मान मोटो दोष छे अने माने करीने सत्संगमांथी पडी जायछे एवो कामे करीने नथी पडतो केमजे आपणा सत्संगमां गृहस्थ हरिभक्त घणाछे ते सत्संगमां पड्या छे माटे ए मान ईर्ष्या ने क्रोध ए त्रण उपर अमारे अतिशय अभाव रहेछे अने अमारां जेजे वचन लखेलां हशे तेमां पण एमज हशे ते विचारीने जुवोतो जणाइ आवशे माटे भगवानवुं माहात्म्य समझीने मानने टाळवुं.

अने वळी श्रीजिमहाराजे एम वार्ता करी जे, भगवाननो निश्चय ते केने कहीए तो जेम आ संसारमां प्रथम बाळकपणामांथी मावाप, वर्ण, आश्रम, नात, जात, पशु, मनुष्य, जळ, अग्नि, पृथ्वी, वायु, आकाश इत्यादिक जेजे पदार्थनो निश्चय थयोछे ते शास्त्रेकरीने थयोछे अने शास्त्र न सांभळ्यां होय तो लोकमां जे शब्द ते शास्त्रथीज प्रवर्त्योछे तेणेकरीने तेनो निश्चय कर्योछे तेम शास्त्रे कह्यां जे निष्काम, निर्लोभ, निर्मान, निःस्वाद, निःस्नेह, इत्यादिक संतनां लक्षण तेने सांभळीने एवां लक्षण ज्यां देखाय एवा जे संत तेने ने भगवानने साक्षात् संबन्ध होय माटे एवा संतना वचनेकरीने भगवाननो निश्चय करवो ने तेना वचनमां दृढ विश्वास करवो तेने निश्चय कहीए.

अने ते पछी वडोदरावाळा नाथभक्ते श्रीजिमहाराजे प्रश्न पुछ्यो

जे "जेने भगवाननो दृढ निश्चय होय एवो जे भगवाननो भक्त तेना जे संबन्धी तेनुं कल्याण ते भक्तना संबन्धे करीने छे के नथी?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जो एना संबन्धीने तथा एना मित्रीने एनेविषे हेत होय तो एनुं कल्याण थाय ने हेत न होय तो न थाय अने जो संबंधीपण न होय ने जो तेने ए भक्तनेविषे हेत होय तो तेनुंपण सारुं थाय केमजे एने मुवाटाणुं थाय त्यारे ते भक्त तेने सांभरी आवे अने ते भक्तनी वृत्तितो भगवान् साथे निरंतर लागीछे ने ते भक्तनुं तेने सरण थाय माटे तेनुं कल्याण थायछे.

अने वळी श्रीजिमहाराज बोल्या जे, अमे आत्माना स्वरूपनी वार्ता करीए छीए तथा भगवानना स्वरूपनी वार्ता करीए छीए ते वार्ताए करीने जेवुं एनुं सुख छे तेवुंज सुखतो आवतुं नथी अने जेवुं एनुं यथार्थ सुख छे तेतो समाधिए करीने जाण्यामां आवेछे तथा देह मुक्याकेडे जाण्यामां आवेछे पण केवळ वार्ताए करीने जाण्यामां आवतुं नथी, जेम रूपलुं सुख ते नेत्रे करीने भोगवायछे पछी ते सुखने मुखे करीने वखाण करे जे 'बहु सारुं रूप दीठुं' त्यारे ते सुखनो अनुभव जेवो नेत्रने थयो तेवो मुखने न थयो तथा श्रवणे करीने शब्दने सांभळ्यो, नासिकाए करीने गंधने सुंघ्यो, त्वचाए करीने स्पर्श लीधो, जिह्वाए करीने रस चाख्यो पछी तेते सुखनां वचने करीने वखाण करे जे 'बहु सारो गंध हतो, बहु सारो रस हतो, बहु सारो स्पर्श हतो, बहु सारो शब्द हतो' एम कह्युंतो खरुं पण जेवी रीते तेते इंद्रियोने तेते सुखनो अनुभव थयो तेवो वचने न थयो, तेम समाधिए करीने तथा देह मुकीने जेवो भगवानना सुखनो अनुभव थायछे ने आनंद थायछे तथा आत्माना सुखनो अनुभव ने आनंद थायछे तेवो एनी

केवळ वात करे तेणेकरीने थतो नथी अने जो ए वेनी वार्ता सांभळीने तेनुं मनन ने निदिध्यास करे तो एनो साक्षात्कार थाय ने साक्षात्कार थाय त्यारे समाधिए करीने जेवो ए वेनो अनुभव ने आनंद थाय तेवोज थाय माटे ए वेनी वार्ता सांभळीने एनुं मनन ने निदिध्यास करवो। इति वचनामृतम् ॥ २७ ॥ २५० ॥

संवत् १८८५ ना कार्तिक वदी पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरवारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरनेविषे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज वोल्या जे "भगवाननी भक्तिमांथी वे प्रकारे जीव पडेछे एकतो शुष्कवेदांतना ग्रंथने सांभळीने वीजा आकारने खोटा करे तेम श्रीकृष्णादिक जे भगवानना आकार तेनेपण खोटा करे ए शुष्कवेदांतीने अति अज्ञानी जाणवा. अने वीजो जे एम समजतो होय जे 'भगवानने भजीए तो गोलोक ने वैकुंठलोकमां स्त्रीभोग खानपान आदिक जे पंचविषयनां सुख तेने पामीए' पछी ते सुखनी आसक्तिए करीने भगवाननेपण भुली जाय ने मूळगो कुबुद्धिवाळो थइने एम समजे जे 'ए सुख न होय तो ए धाममां राधिका लक्ष्मी आदिक स्त्रीयो भेळे भगवानपण रमेछे माटे ए सुख पण खरुं छे' पण भगवानने पूर्णकाम ने आत्माराम न समजे अने एवी जे भगवाननी क्रियाओ छे तेतो पोताना भक्तना सुखने अर्थे छे ते सारु ज्ञान वैराग्ये सहित भगवाननी भक्ति करवी. अने ए भगवानना स्वरूपने जेणे एम जाण्युं होय जे 'सर्व सुखमय मूर्तितो ए भग-

वानज छे ने बीजे पंचविषयमां जे सुख तेतो ए भगवानना सुखनो किंचित् लेश छे' एम भगवानने माहात्म्ये सहित जे समझ्यो होय ते कोइ पदार्थमां बंधायज नहि अने 'ए भगवानना धामना सुख आगळ बीजा लोकनां जे सुख तेतो नरक जेवां छे' एम मोक्षधर्ममां कह्युं छे आवी रीते भगवानना भक्तने समझवुं अने एम न समझे तो ए बेय प्रकारे करीने भगवानमांथी पडी जायछे.

पछी श्रीजिमहाराजने सुराखाचरे प्रश्न पुछ्यो जे "भगवानने तथा संतने जेवा छे तेवा निश्चयपणे जाणीनेपण कोइनुं अंतर पाछुं पडी जायछे तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजिमहाराजे उत्तर कर्यो जे, एणे भगवाननो निश्चय कर्यो हतो त्यारेज एमां काच्यप रही गइछे ते शुं तो कोइकने स्वादे करीने सारुं सारुं खावा जोइतुं होय ने तेने भगवान् तथा संत ते खोदे त्यारे तेनुं अंतर पाछुं पडी जाय तथा कामनो घाट रही गयो होय ने तेने खोदे तथा लोभ रह्यो होय ने ते लोभने मुकावे ने कहे जे 'आ तारुं धन माल खेतर वाडी ते कोइकने आपी दे' त्यारे ते वचन पाळे नहि तेणे करीने पाछो पडी जाय तथा मान होय ने ते मानने संत तथा भगवान् खोदे ने अपमान करे त्यारे तेणे करीनेपण पाछो पडी जायछे एवी रीते निश्चय होय ने जेजे पोतामां अवगुण रही गयो होय तेणे करीने पाछो पडी जायछे अने जेणे निश्चय कर्यो होय ते समयमांज ए अवगुण टाळीने कर्यो होय तो ते पाछो पडे नहि अने ए अवगुण हमणांपण जेमां जेमां हशे ते जो विचारीने पोताना अंतर सामुं जुवे तो जणाइ आवे जे 'आवी रीतने अंगे हुं काचो छुं ते जो मने पाळ्यानुं कहेशे तो हुं विमुख थइश' एम यथार्थ जाणे.

पछी ब्रह्मानंदस्वामी तथा शुकमुनि तथा सुरोखाचर ए त्रणने श्रीजिमहाराजे पुछ्युं जे "तमे जेणेकरीने पाछा पडी जाओ एवो तमारामां कयो अवगुण छे?" त्यारे ए त्रणे कह्युं जे हे महाराज! मानरूप दोष छे माटे कोइक बरोबरीया संत अपमान करेतो कांइक मुंझवण थाय. पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे अमे पुछीए छीए जे "द्युपतय एव ते न ययुरन्तमनन्ततया" एवी रीते माहात्म्ये सहित भगवानने जाण्या होय ने एवा जे भगवान् तेना जे संत ते साथे मान ईर्ष्या क्रोध केम थाय? अने जो थायछे तो जाण्यामां फेर छे, केमजे गवर्नर साहेबने जाण्यो छे जे ए समग्र पृथ्वीनो पादशाह छे ने बळीयो छे ने जो तेनो एक गरीब सरखो हमेलीयो आव्यो होय तो तेनो हुकम मोटो राजा होय तेपण माने ने ते जेम कहे तेम दोयों दोराय शामाटे जे ते राजाए एम जाण्युं छे 'जे बळीयो जे गवर्नर साहेब तेनो ए हमेलीयो छे' अने "जेथी जे बळीयो तेनी आगळ मान रहे नहि, तेम जेणे भगवानने समग्र ऐश्वर्य समृद्धिना धणी जाण्या होय तो तेने संतनी आगळ मान केम रहे?" पछी ब्रह्मानंदस्वामीए कह्युं जे हे महाराज! तमे ठीक कहोछो जो एम माहात्म्ये सहित भगवानने जाण्या होय तो मान ईर्ष्या क्रोध ते संतनी आगळ थायज नहि, पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे जुवोने उद्धवजी केवा मोटा हता ने केवा डाह्या हता पण जो भगवाननी मोटाइने जाणता हता तो ते भगवानने विषे हेतवाळी जे व्रजनी गोपीयो तेना चरणनी रजने पाम्या सारु वनवेलीनो अवतार माग्यो, ते कह्युं छे जे "[1]आसामहो चरणरे-

१ अर्थः—अहो!! जे गोपीयो कोइथीपण न त्याग थइ शाके एवा संबन्धि जनने अने आर्योना धर्ममार्गनो त्याग करीने वेदोए पण गोतवा योग्य एवी

णुजुषामहं स्यां वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधिनाम् । या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा भेजुर्मुकुन्दपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम् ॥" तथा ब्रह्माए पण कह्युं जे "अहो!! भाग्यमहो!! भाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम् । यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ॥" एवी रीते ब्रह्मापण भगवाननुं माहात्म्य जाणता हता तो एवी रीते बोल्या, तेमाटे जो भगवाननी ने संतनी एवी रीते मोटाइ जाणतो होय तो मान ईर्ष्या क्रोध रहेज नहि ने तेने आगळ दासानुदास थइने वर्ते ने गमे तेटलुं अपमान करे तोपण तेना संगने मुकीने छेटे जवाने इच्छेज नहि अने एम मनमां थाय नहि जे 'हवेतो क्यांसुधी खमीए आपणतो आपणे घेर बेठा थकाज भजन करीशुं' ते माटे एम माहात्म्य समझे तो मान टळे, एवी रीते वार्ता करी.

अने वळी श्रीजिमहाराजे एम वार्ता करी जे, भगवाननो भक्त होय ने तेने कोइ कर्मयोगे करीने सुळीए चढाव्यो ने ते समयमां अमेपण तेनी पासे उभा होइए पण ते भक्तना हृदयमां एम घाट न थाय जे 'आ भगवान् मने सुळीना कष्टथकी मुकावे तो ठीक' एवी रीते पोताना देहना सुखनो संकल्प न थाय ने जे कष्ट पडे तेने भोगवी ले एवो जे निष्काम भक्त तेनी उपर भगवाननी बहु प्रसन्नता थायछे.

मुकुंद भगवाननी पदवीने भजती हवी अर्थात् भगवानना ध्यानपरायण थती हवी. ते आ गोपीयोना चरण रजना स्पर्शवाळी वृंदावनमां वर्तती गुल्म, लता, ओषधी विगेरेने मध्ये हुंपण कोइक थउं एटले कोइक तृण के कीटादिरूपे गोपीयोना चरणरेणुना स्पर्शने योग्य थउं आवी आशंसा करुंछुं ।

१ अर्थः—परमानंदरूप, सनातन, पूर्ण, श्रीकृष्णाख्य परंब्रह्म जेमना मित्ररूपे रह्युंछे माटे ते नंदगोप व्रजवासीओनां अहो भाग्य अहो भाग्य छे. तेमना भाग्यनुं वर्णन थइ शके तेम नथी ।

अने वळी श्रीजिमहाराजे एम वार्ता करी जे, भगवान् संबन्धी सुखने कोण पामेछे तो ते कहीए छीए जे, जेम माछलुं होय तेने जळ छे ते जीवनरूप छे ते जळनो योग ज्यांसुधी होय त्यांसुधी ते जळमां माछलुं चाले हाले क्रीडा करे ने जळनो वियोग थाय त्यारे तेनी चंचळता टळी जाय ने मरी जाय, तेम जेने पंच विषये करीने जीवनपणुं ज्यांसुधी मनायुं छे ने तेणेकरीने सुख मान्युं छे ने तेनो वियोग थाय त्यारे मुवा जेवो थइ जायछे एवो जे होय ते भगवानना सुखने क्यारेयपण पामे नहि अने पंच विषये करीने जेने जीवनपणुं टळी गयुं छे तेज भगवानना सुखने अनुभवेछे ने भोगवेछे ने एवानेज भगवानना सुखनी प्राप्ति थायछे । इति वचनामृतम् ॥ २८ ॥ २५१ ॥

संवत् १८८५ ना पोष शुदि २ बीजने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां मेडीने आगळ ओटा उपर ढोलियो ढळावीने रात्रिने समे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे शुकमुनिने प्रश्न पुछ्यो जे "बे सत्संगी छे तेनी अवस्था विश विश वर्षनी छे तथा बेयने निश्चय,हेत-भक्ति,वैराग्य, धर्म ते बरोबर छे अने तेमांथी एकने तो प्रारब्ध योगे करीने परणीने स्त्री मळी ने एकने न मळी ने सांख्ययोगी रह्यो ने एने पण परण्यानीतो इच्छा हती पण मळी नहि त्यारे ए बे जणने तीव्र वैराग्यतो प्रथमथीज न हतो माटे विषयभोगमां बेयने तीक्ष्ण वृत्ति हती ते तीक्ष्ण वृत्ति ओछी ने ए गृहस्थ थयो तेनी थाय के सांख्ययोगीनी थाय ते कहो? अने वेदतो एम कहेछे जे 'जेने तीव्र वैराग्य होय तेने ब्रह्म

चर्यपणाथकीज संन्यास करवो ने जेने मंद वैराग्य होय तेने विषय भोगनी तीक्ष्णता टाळ्याने अर्थे गृहस्थाश्रम करवो ने पछी वानप्रस्थ थवुं ने पछी संन्यास करवो' माटे विचारीने उत्तर करज्यो!" पछी शुकमुनिए एनो उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहि, पछी श्रीजिमहाराजे एवो उत्तर कर्यो जे, ए गृहस्थाश्रमी सारो ने बीजो जे सांख्ययोगी ते भुंडो केमजे एने तीव्र वैराग्य नथी माटे एणे विषयने तुच्छ ने असत्य जाण्या नथी तेम कांइ पोतामां आत्मनिष्ठानीपण दृढता नथी तेसारुं ए सत्संगथी बहार जाय ने विषयनो योग थाय तो बंधाइ जाय ने जो विषयनो योग न थाय तो सत्संगनी पाछी लालच राखे ने सत्संगमां आवे अने जे गृहस्थ छे तेने छ महिने संतनां दर्शन थाय तोपण समास रहे माटे मंदवैराग्यवाळाने त्याग करवो ए ठीक नथी त्यागतो तीव्र वैराग्यवाळाने करवो ते ठीक छे अने मंद वैराग्यवाळो त्याग करे तो एनो त्याग देहपर्यंत नभे नहि वर्षे बे वर्षे दश वर्षे तेना त्यागमां विघ्न जरुर पडे.

त्यारे शुकमुनिए आशंका करी जे "हे महाराज! ए मंद वैराग्यवाळो त्यागी छे ते संतथकी भगवाननां माहात्म्यनी वात सांभळे ने पछी तोते मनमां विचार करे तो शुं एने तीव्र वैराग्य न आवे? अने प्रथमथीज तीव्र वैराग्यतो कोइकने प्रारब्ध योगे करीने हशे अने बहुधातो एम प्रत्यक्ष देखायछे जे आने वैराग्य न हतो ने पछी थयो त्यारे एनुं केम समझवुं?" पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनोतो एम उत्तर छे जे, पोताने विचारे तथा कोइ रीते तीव्र वैराग्य थाय नहि अने जो धर्म ज्ञान वैराग्य भक्ति ए चार गुणे करीने संपन्न एवा जे मोटा साधु तेनी साथे एने अतिशय हेत थाय जेम भगवान् साथे हेत थायछे त्यारेतो

ते जुवे सांभळे बोले इत्यादिक जेजे क्रियाने करे ते पोताने जे मोटा संत साथे हेत छे तेनी मरजी प्रमाणेज करे पण तेनी मरजी न होय तेवी कोइ क्रिया करे नहि अने ते संतनी मरजीथी बाहेर वर्त्यामां तेना मनने विषे निरंतर भय वर्ते जे 'जो हुं एमनी मरजी प्रमाणे नहि वर्तु तो ए मारी साथे हेत नहि राखे' ते सारु निरंतर तेनी मरजी प्रमाणे वर्ते माटे जो एवुं संत साथे हेत थयुं होय तो वैराग्य न होय तोपण एनो त्याग पार पडे. अने जुवोने आपणा सत्संगमां बाई भाइ परमहंस ए सर्वेने अमारी उपर हेत छे तो मोटेरी बे त्रण बाइयो छे ते बरोबर बीजी सर्वे बाइयो वर्तमान पाळेछे केमजे ए मनमां एम जाणेछे 'जे जो अमे खबडदार थइने वर्तमान नहि पाळीए तो महाराजनुं हेत अमारी उपर नहि रहे ने कुराजी थशे' तथा परमहंसमां पण एम छे तथा बीजा जे सत्संगी तथा ब्रह्मचारी तथा पाळा ए सर्वेमां पण एम छे तथा देशदेशना हरिभक्त बाई भाइ छेटे रह्यांछे तेपण वर्तमानमां खबडदार वर्तेछे अने एम जाणेछे जे 'जो आपण सारी पेठे नहि वर्तिए तो महाराज कुराजी थशे' माटे अमारेविषे हेते करीने बंधाणा थका सर्वे धर्ममां दृढपणे वर्तेछे पण वैराग्यतो कोइकने थोडो हशे ने कोइकने झाझो हशे तेनो कांइ मेळ छे नहि. अने अमे पंचाळामां मोरे मांदा थया हता ने तेमांथी जो कांइक थयुं होत तो जेम हमणां सर्वेनी वृत्तियो छे तेवी न रहोत त्यारेतो जे तीव्रवैराग्यवाळा होय ते धर्ममां रहे तथा तेनी साथे जेणे पोताना जीवने हेते करीने बांधी राख्यो होय ते धर्ममां रहे तथा जे सत्संगनो योग राखे ने भगवानने अंतर्यामी जाणीने पोतपोताना नियम कह्याछे ते प्रमाणे वर्ते तो धर्ममां रहे अने ए विना बीजानुंतो कांइ ठीक रहे नहि माटे अमे जे प्रश्न पुछ्यो हतो तेनो आ अमे कह्यो एज उत्तर छे । इति वचनामृतम् ॥ २९ ॥ २५२ ॥

संवत् १८८५ ना पोष शुदि १५ पुन्यमने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरनेविषे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे अमारा मनमां आ बे वार्ता गमेछे ने त्यां मन अटकेछे तेमां एकतो जेने एम होय जे, 'एक चैतन्यना तेजनो राशि छे ने तेना मध्यनेविषे श्रीपुरुषोत्तम भगवाननी मूर्ति सदा विराजमान छे' एवो दृढ निश्चय होय अने ते भगवाननी उपासना भक्ति करतो होय ते वात गमे. पण केवळ चैतन्य तेजने मानतो होय ने तेनी उपासना करतो होय ने भगवानने सदा साकार न मानतो होय ने तेनी उपासना न करतो होय तो ते न गमे. अने बीजुं एम जे एवा जे भगवान् तेने अर्थे जे तपने करतो होय तथा योगने साधतो होय तथा पंच विषयना अभावने करतो होय तथा वैराग्यवान् होय इत्यादिक जेजे साधन ते भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे निर्दंभपणे करे ते गमे अने एवाने देखीने अमारुं मन राजी थायछे जे 'एने शाबाश छे जे ए आवी रीते वर्तेछे.'

अने वळी आ पांच वार्तानुं अमारे नित्ये निरंतर अनुसंधान रहेछे तेमां एकतो एम जे, आपणे आ देहने मुकीने जरुर मरी जवुंछे ने तेनो विलंब नथी जणातो एतो एमज निश्चय जणायछे जे 'आ घडी आ क्षणमां आपणे मरवुं छे'ने सुख दुःख राजीपो कुराजीपो सर्व क्रियामां एवी रीते वर्तेछे एवो वैराग्य कह्यो. अने बीजुं एम जे, आपणे मरीशुं तेमां आटलुं कामतो आपणे कर्युं छे ने आटलुं बाकी छे ते करवुं छे एवुं निरंतर अनुसंधान रहेछे. अने त्रीजुं एम जे, अमारा मनमां पंच

मेरे हारलकी लकरी" ए कीर्तन गाइ रह्या त्यारे महाराजे कह्युं जे "जमुनाके तीर ठाडो" ए कीर्तन गावो, पछी ए कीर्तन गावा लाग्या त्यारे एवा समयमां श्रीजिमहाराज बहु वार विचारी रह्या ने पछी बोल्या जे हवे कीर्तन राखो अमे आ एक वार्ता करीए छीए ते छेलो थोडीक पण ध्याननां करनाराने बहु ठीक आवे एवी छे ने ते वात कोइ दिवस अमे करी नथी, पछी वळी नेत्रकमळने मींचीने विचारी रह्या ने पछी बोल्या जे, कोटि कोटि चंद्रमा सूर्य अग्नि तेना जेवो तेजनो समूह छे ने ते तेजनो समूह समुद्र जेवो जणाय छे एवुं ब्रह्मरूप तेजोमय जे भगवाननुं धाम तेनेविषे जे पुरुषोत्तम भगवाननी आकृति रहीछे ने ते आकृतिमांथी ए पोते भगवान् अवतार धारेछे अने ए भगवान् केवा छे तो क्षर अक्षरथकी पर छे ने सर्वकारणना पण कारण छे ने अक्षररूप एवा जे अनंत कोटि मुक्त तेमणे सेव्यां छे चरणकमळ जेनां एवा छे अने एवा जे ए भगवान् तेज पोते दयाए करीने जीवोना परम कल्याण करवाने अर्थे हमणां प्रकट प्रमाण थका तमारी सर्वेनी दृष्टिने गोचर साक्षातपणे वर्तेछे माटे ते जे धाममां रही मूर्ति ने आ प्रकट श्रीकृष्णनी मूर्ति तेमां अधिकपणे सादृश्यपणुं छे ते श्रीकृष्णनी जे मनुष्यरूप मूर्ति तेना ध्याननो करतल जे होय तेनी जे दृष्टि ते भगवानना रूप विना बीजा रूप विषयमात्रमां अतिशय वैराग्यने पामीने ते भगवानना रूपमांज लुब्ध थाय त्यारे तेने ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्ति ने धामनी मूर्ति ते बेयमां लगारपण भेद न जणाय अने ते मूर्ति ने आ मूर्तिनां रूप अवस्था ते बराबर जणाय तथा ते मूर्ति जेटली उंची छे ने जेटली पुष्ट छे

१ सूरदासकविविरचित । २ प्रेमानंदमुनिविरचित ।

विषयनी वासना टळी गइछे के नथी टळी? अने एम जाणुंछुं जे टळी तो गइछे त्यारे तेते विषयनी जे क्रिया ते केम थायछे? त्यारे रखे न टळी होय? एम अणविश्वासनुं निरंतर अनुसंधान रहेछे. अने चोथुं एम जे, मुक्तानंदस्वामी आदिक मोटा मोटा साधु तथा बीजापण मोटा मोटा हरिभक्त ए जे सर्व छे तेने पंच विषयनी वासना टळी गइ छे के नहि? अने आनी वासना टळी छे ने आने आनी नथी टळी एम सर्वेना हृदय सामुं जोया करवुं एम अनुसंधान रहेछे. अने पांचमुं एम जे, जो हुं मारा मनने उदासी करवा लागुं तो कोण जाणे क्यांइ जतुं रहेवाय ने देह पडी जाय माटे एम जाणीए छीए जे 'मनने उदासी न करवुं' केमजे भला अमारे योगे करीने आ सर्वे बाई भाइ परमहंस राजीपे बेठा भगवद्भक्ति करेछे तो ए ठीक छे अने भगवद्भक्तिने करता देखीने मनमां बहु राजीपो थायछे जे मरीतो सर्वेने जवुंछे पण आवी रीते भक्ति करवी एज जीव्यानो मोटो लाभ छे एम निरंतर अनुसंधान रहेछे. एवी रीते श्रीजिमहाराजे पोताना भक्तिनी शिक्षाने अर्थे पोतानुं वर्तन लइने वार्ता करी ने पोतेतो साक्षात् श्रीपुरुषोत्तम नारायण छे। इति वचनामृतम् ॥ ३० ॥ २५३ ॥

संवत् १८८५ ना महा शुदि ४ चोथने दिवस सांझने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणा द्वारना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा राती कोरनुं विलायती धोळुं धोतियुं ओढ्युं हतुं ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरि भक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने वाजां वगाडीने कीर्तननुं गान परमहंस करता हता ते "हरि

मेरे हारलकी लकरी" ए कीर्तन गाइ रह्या त्यारे महाराजे कह्युं जे "जमुनाके तीर ठाडो" ए कीर्तन गावो, पछी ए कीर्तन गावना लग्या त्यारे एवा समयमां श्रीजिमहाराज बहु वार विचारी रह्या ने पछी बोल्या जे हवे कीर्तन राखो अमे आ एक वार्ता करीए छीए ते छेतो थोडीक पण ध्यानना करनाराने बहु ठीक आवे एवी छे ने ते वात कोइ दिनस अमे करी नथी, पछी वळी नेत्रकमळने मींचीने विचारी रह्या ने पछी बोल्या जे, कोटि कोटि चंद्रमा सूर्य अग्नि तेना जेवो तेजनो समूह छे ने ते तेजनो समूह समुद्र जेवो जणायछे एवुं ब्रह्मरूप तेजोमय जे भगवाननुं धाम तेनेविषे जे पुरुषोत्तम भगवाननी आकृति रहीछे ने ते आकृतिमांथी ए पोते भगवान् अवतार धारेछे अने ए भगवान् केवा छे तो क्षर अक्षरथकी पर छे ने सर्वकारणना पण कारण छे ने अक्षररूप एवा जे अनंत कोटि मुक्त तेमणे सेव्यां छे चरणकमळ जेनां एवा छे अने एवा जे ए भगवान् तेज पोते दयाए करीने जीवोना परम कल्याण करवाने अर्थे हमणां प्रकट प्रमाण थका तमारी सर्वेनी दृष्टिने गोचर साक्षातपणे वर्तेछे माटे ते जे धाममां रही मूर्ति ने आ प्रकट श्रीकृष्णनी मूर्ति तेमां अधिकपणे सादृश्यपणुं छे ते श्रीकृष्णनी जे मनुष्यरूप मूर्ति तेना ध्याननो करतल जे होय तेनी जे दृष्टि ते भगवानना रूप विना बीजा रूप विषयमात्रमां अतिशय वैराग्यने पामीने ते भगवानना रूपमां लुब्ध थाय त्यारे तेने ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्ति ने धामनी मूर्ति ते बेयमां लगारपण भेद न जणाय अने ते मूर्ति ने आ मूर्तिनां रूप अवस्था ते बराबर जणाय तथा ते मूर्ति जेटली उंची छे ने जेटली पुष्ट छे

१ सूरदासकविविरचित । २ प्रेमानंदमुनिविरचित ।

तेवी ने तेवीज आ मूर्तिपण जणायछे पण तेमां ने आमां एक रोम-
नोपण फेर न जणाय अतिशय एकपणुं जणाय एवी रीते तेमां ने आ
मूर्तिमां फेर लगारपण नथी ते मूर्ति ने आ मूर्ति एकज छे एवी जे
प्रत्यक्ष मूर्ति तेनुं ध्यान नेत्रने आगळ बाहेर करे त्यारेतो तेमां ने
एमां लगार फेर नथी ने तेज मूर्तिने ध्याननो करतल प्रतिलोमपणे
पोताना नेत्रमां जुवे त्यारे तेज मूर्ति प्रथम जणाती तेवी न जणाय ने
नेत्रनी कीकीमां जेवडी मूर्ति छे तेवडी जणाय पछी वळी ए ध्याननो
करतल प्रतिलोमपणे कंठथी हेठेसुधी मांहिली कोरे ध्याने करीने जुवे
त्यारे एज मूर्तिने मोरे बे प्रकारे देखतो तेम न देखे ने तेज मूर्तिने
बहुज मोटी बहुज उंची बहुज जाडी ने बहुज भयंकर एवीने देखे,
जेम मध्याह्न काळनो सूर्य होय त्यारे छाया पुरुषना शरीर बरोबर
होय ने तेज सूर्यने आथम्या टाणुं थाय त्यारे छाया मोटी लांबी थाय
पण पुरुषना शरीर प्रमाणे नथी रहेती, तेम ते मूर्तिपण पूर्वे कही तेवी
मोटी थाय पछी ए मूर्तिने हृदयनेविषे रही जे बुद्धि ते बुद्धिनेविषे
जुवे तथा ते बुद्धिमां रह्यो जे पोतानो जीव तेनेविषे जुवे त्यारे तेज
मूर्तिने अंगुष्ठमात्र परिमाणे जुवे अने द्विभुज जणाय के चतुर्भुज जणाय
पण मोरे त्रण प्रकारे देखी तेवी न देखाय अने पछी वळी ए ध्यानना
करतलने प्रतिलोमपणे पोताना जीवथी पर कोटि कोटि सूर्य चंद्र अग्नि-
ना तेजना समूहनेविषे ए मूर्ति जणायछे ते जेवी दृष्टि आगळ जणाती
हती तेवीज रीतनी जणायछे पण लगार फेर नथी जणातो माटे गुणा-
तीत एवुं जे अक्षरधाम तेनेविषे जे मूर्ति छे तेज मूर्ति प्रत्यक्ष छे ए
बेमां फेर नथी जेम धामनी मूर्ति गुणातीत छे तेमज मनुष्यमूर्तिपण
गुणातीत छे अने पूर्वे जे मूर्तिमां फेर पड्यो तेतो गुणमय एवां जे

स्थानक तेणे करीने पछ्यो ते नेत्रमां सत्त्वगुण ने कंठमां रजोगुण ने बुद्धिमां रह्यो जे जीव तेपण गुणमय छे, एम वार्ता करीने पछी बोल्या जे मोरे गाता हता ते कीर्तन गाओ, एवी रीते श्रीजिमहाराजे पोताना पुरुषोत्तम स्वरूपना निरूपणनी वार्ता परोक्षपणे करीने कही । इति वचनामृतम् ॥३१॥२५४॥

संवत् १८८५ ना महा शुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने गवैया परमहंस वसंतनां कीर्तन गावता हता.

पछी श्रीजिमहाराजे मुक्तानंदस्वामी आदिक साधुने कह्युं जे "विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः" ए श्लोकनो अर्थ करो, त्यारे तेमणे रामानुजभाष्ये सहित अर्थ कर्यो, त्यार पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे एनो तो अमे एम निश्चय कर्यो जे, युवा अवस्था जेने होय तेने आहार क्षीण करवो ने युक्ताहारविहारपणे रहेवुं ने आहार क्षीण थाय त्यारे देहनुं बळ क्षीण थाय अने त्यारेज इंद्रियो जिताय ते विना इंद्रियो जिताय नहि ने एवोथको पोताना मनने भगवानननी नव प्रकारनी भक्तिनेविषे रुचि सहित राखे ने भक्तिमां प्रीति राखे ए बे प्रकारे ए वर्ते तो एनो सत्संग पार पडे अने एम न होय तो ए ज्यारे त्यारे जरुर इंद्रियोने वश थइने विमुख थाय ते गोवर्धन जेवो समाधिनिष्ठ होय तोपण एनो एने भय छे तो बीजानी

१ आहार नहि करणारा पुरुषने विषयो निवृत्त थायछे.

शी वार्ता ? अने आहार नियममां करवो ते घणाक उपवास ठामुका करवा मांडे तेणेकरीने न थाय एमतो ज्ञाझी तृष्णा थाय ने मूळगो आहार वधे ने उपवासनो खांगो खाय त्यारे बमणो वाळे माटे एतो धीरे धीरे आहारने घटाडवा मांडे तो नियममां आवे जेम मेघ झीणी झीणी बुंदे वर्षेछे पण बहु पाणि थायछे तेम धीरे धीरे आहारने नियममां करवो ने एम करे त्यारे इंद्रियो नियममां आवे ने भक्तिमां प्रीति होय तो पार पडे ए निश्चित वार्ता छे.

अने वळी श्रीजिमहाराजे एम वार्ता करी जे, भगवाननो जे साचो भक्त तेने भगवाननुं माहात्म्य समझ्यानी केवी रीत छे तो 'जे भगवान् छे ते तेजोमय एवुं जे पोतानुं अक्षरधाम तेनेविषे सदा साकार मूर्तिथका विराजमान छे ने सर्वना कारण छे सर्वना नियंता छे सर्वना अंतर्यामी छे अनेककोटी ब्रह्मांडना राजाधिराज छे ने अलौकिक दिव्य सुखमय मूर्ति छे ने मायाना गुणथकी रहित छे' एवी रीते प्रत्यक्ष भगवानने जाणीने ते भगवान् विना जे बीजां सर्व मायिक पदार्थमात्र तेने अतिशय तुच्छ ने नाशवंत समझे ने एक भगवाननेविषेज प्रीति करे ने नव प्रकारनी भक्तिने करे अने वळी एम समझे जे 'एवा अतिशय मोटा जे भगवान् तेनी मर्यादानेविषे काळ, माया, ब्रह्मा, शिव, सूर्य, चंद्रमा इत्यादिक सर्वे समर्थ छे तेपण निरंतर वर्तेछे' एवुं जाणीने ते भगवाने बांधी जे धर्ममर्यादा तेनेविषे ते भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे पोते निरंतर वर्ते पण ते धर्ममर्यादानो क्यारेय लोप न करे. अने जे कुबुद्धिवाळो होय ते केम समझे तो 'एवा मोटा जे भगवान् तेतो पतितपावन छे अधम उद्धारण छे ते माटे कांइक धर्म विरुद्ध अवळुं वर्ताइ जशे तो तेनी शी

चिंता छे भगवानतो समर्थ छे' एवी रीते माहात्म्यनो ओथ लइने मूळगो पाप करवाथकी डरे नहि एवो जे होय तेतो दुष्ट छे पापी छे ने एवी समझणवाळो होय ने ते उपरथी भक्त जेवो जणातो होय तोपण तेने भक्त न जाणवो ने तेनो संग क्यारेय न करवो अने भक्ततो प्रथम कही तेवी रीतनी समझणवाळानेज जाणवो ने तेनोज संग करवो। इति वचनामृतम् ॥ ३२ ॥ २५५ ॥

संवत् १८८५ ना फागण शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरनेविषे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे सर्व परमहंस आगळ एम वार्ता करी जे, धन दोलत स्त्री अने पुत्र ए आदिक जे पदार्थ तेणेकरीने जेनी बुद्धिमां फेर पडे नहि अने एने अर्थे कोइनेविषे आस्था आवे नहि एवातो सत्संगमां थोडाक गणतरीना हरिभक्त होय पण झाझा होय नहि. एम कहीने वळी बोल्या जे एवा तो आ मुक्तानंदस्वामी तथा गोपाळानंदस्वामी छे ते एमने कोइ बीजो गमे तेवो होय ने चमत्कार देखाडे तोपण तेनो कोइ रीते भार आवेज नहि. अने केवो होय तेने कोइनो भार न आवे तो जे एम समझतो होय जे 'आ देहथी नोखो जे आत्मा ते हुं छुं ने ते हुं प्रकाशमान सत्तारूप छुं ने ते मारा स्वरूपनेविषे प्रत्यक्ष भगवान् अखंड विराजमान छे ने ते भगवानना आकार विना बीजा जे प्राकृत आकारमात्र ते असत्य छे ने अनंत दोषे युक्त छे एवो वैराग्य होय ने भगवाननुं माहात्म्य यथार्थ

जाणतो होय तेने कोइ जातनो बुद्धिमां भ्रम थाय नहि पण ए वार्ता अति कठण छे, केमजे ए एवा मोटा छे तोपण जो एमने माननो बहु योग थाय तथा रुपीया ने सोना महोरना ढगला आगळ आवीने पडवा लागे तथा रूपवान् एवी जे स्त्रीयो तेनो योग थाय तो ए त्यागी छे तोपण एणे करीने एमनुं टेकाणुं रहे नहि अने जो एवो योग थाय तो आज आपणा त्यागिमां जे अति उतरतो हशे ते जेवा-पण रहे के न रहे एमांपण संशय छे केमजे ए पदार्थनोतो योगज एवो छे जेम आ आपण सर्व बेठा छीए ते केवा डाह्या छीए पण जो दारुना शीसानुं पान कर्युं होय तो कांइ ठा रहे नहि तेम ए पदार्थनो संग जरुर लाग्या विना रहेज नहि माटे ए पदार्थनो योग जो न थवादे तो ए एथी बचे ने एनो योग थया मोर एनो भय राखे जे 'रखे मने एनो योग थाय' अने ए वार्ता शास्त्रमां प्रसिद्ध छे जे 'एनो संगतो एक भगवानने न लागे' ते कह्युं छे जे "ऋषिं नारायण-मृते" तथा "येऽन्ये स्वतः परिहृतादपि बिभ्यति स्म."[1]

पछी श्रीजिमहाराज एम बोल्या जे वासुदेवभगवाननो एकांतिक भक्त केने कहीए तो जेनेविषे स्वधर्म ज्ञान वैराग्य अने माहात्म्ये युक्त एवी वासुदेवभगवाननी अनन्यभक्ति एटलां वानां होय तेने एकांतिक भक्त कहीए अने एनी गति एम कही छे जे 'एनो वासुदेवभगवानमां प्रवेश थाय' ते प्रवेश ते शुं तो तेजना मंडळनेविषे दिव्यमूर्ति एवा जे वासुदेवभगवान् तेनेविषे ए भक्तने स्नेह होय ते स्नेहेकरीने वासुदेवभग-वाननी मूर्तिनेविषे एना मननुं निरंतर अनुसंधान रहे ने आसक्त थको

१ अर्थ.—तमारा थकी बीजा जीवो छे ते पोते त्याग करेला विषयसेवनथी पण भय पामेछे अर्थात् वासनामात्रथी बंधायछे।

वर्ते ने एवी रीते रह्योथको ए वासुदेवभगवाननी सेवानेविषेपण बहार थकी रहे 'जेम लक्ष्मीजी छे ते वासुदेवभगवानना हृदयनेविषे चिह्नरूपे स्नेहना आधिक्यपणे करीने रह्यांछे ने बहारथकी स्त्रीरूपे करीने सेवा-मांपण रह्यांछे, तेम ए एकांतिक भक्तनो वासुदेवभगवाननेविषे प्रवेश जाणवो अने हमणांपण जे भक्तने भगवाननी कथा कीर्तन नामसरण इत्यादिक जे दश प्रकारनी भक्ति तथा भगवाननुं माहात्म्य तथास्वधर्म तथा वैराग्य तथा आत्मनिष्ठा तथा संतनो समागम एनुं बंधाण होय ते एवुं होय जे 'ते विना कोइ रीते चालेज नहि' जेम अफीण आदि-कनो बंधाणी होय तेने ते विना चाले नहि ने ते अफीणतो कडवुं झेर छे तोपण अफीणना बंधाणीने अफीण विना चाले नहि तथा दारुनुं बंधाण होय तो ते दारुपण पिवे त्यारे गळुं बळे एवो छे तोपण ते विना चाले नहि ते एने घणाक रुपीया आपे तोपण ते बंधाणथी ते वहाला न थाय ने न ले केमजे ए व्यसन एना जीव संघाथे जडाइ गयुंछे, तेम जेने भगवद्भक्ति आदिक क्रियानुं बंधाण थयुं होय ते गमे तेवो कुसंग थाय तोपण ते विना एने चालेज नहि ने ए विना बीजा कार्यमां एनुं मन राजी थाय नहि ने भगवद्भक्ति आदिक क्रियामां एनो जीव जडाइ गयो होय ने एनोज एने अति इशक होय एवो जे भगवाननो भक्त तेनोपण वासुदेवभगवाननेविषे प्रवेश छे एम जाणवुं अने ते भगवद्भक्त केवो होय तो भगवाननी सेवा विना चतुर्धा मुक्ति-नेपण न इच्छे तो बीजानी शी वार्ता ? एवो होय ते भगवाननो एकां-तिक भक्त जाणवो ने एने कोइ पदार्थमां इशक न होय अने एवो न होय ने क्यारेक भगवाननी भक्तिमां सुवांण थाय ने जो कुसंगनो योग थाय तो भक्तिने भुली जाय ने ते चाळे चडी जाय एनेतो प्राकृत देहाभिमानी कहीए पण ए भक्त खरो नहि ने एनो विश्वास नहि.

अने वळी श्रीजिमहाराजे एम वार्ता करी जे, भगवानना भक्तने स्त्री, धन, देहाभिमान अने स्वभाव ए चार वानामां काच्यप होय ने ते भगवानती भक्ति करतो होय तोपण एनी भक्तिनो विश्वास नहि एनी भक्तिमां जरुर विघ्न आवे, केमजे क्यारेक एने स्त्री धन-नो योग थाय तो भक्तिनो ठा रहे नहि ने तेमां आसक्त थइ जाय तथा देहाध्यास होय तो ज्यारे देहमां रोगादिक कष्ट प्राप्त थाय तथा अन्नवस्त्रादिक न मळे अथवा कोइक कठण वर्तमान पाळवानी आज्ञा थाय त्यारेपण तेने भक्तिमां भंग थाय ने विकळ थइ जाय ने कांइ विचार न रहे ने चाळा चुंथवा लागे तथा कोइक रीतनो स्वभाव होय तेने संत टोकवा मांडे ने ते स्वभाव प्रमाणे वर्तवा न दे बीजी रीते वर्तावे त्यारेपण ए मुंझाय ने एने संतना समागममां रहेवाय नहि त्यारे भक्ति ते क्यांथी रहे? माटे जेने दृढ भक्ति इ-च्छवी होय तेने ए चार वानामां काच्यप राखवी नहि ने ए चार-नी काच्यप होय तोपण समझीने धीरे धीरे त्याग करवी तो वासु-देवभगवाननी निश्चळ भक्ति थाय आ वार्ता ते आमज छे पण ए-मां कोइ संशय नथी। इति वचनामृतम् ॥ ३३ ॥ २५६ ॥

संवत्१८८५ना चैत्र शुदि२ त्रीजने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा-मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरनेविषे विरा-जमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजने शुकमुनिए प्रश्न पुछ्यो जे "भगवान विना बीजा मायिक पदार्थमात्रनेविषे वासना न रहे ने एक भगवाननेविषेज वासना रहे तेनां बे साधन जणायछे एकतो भगवाननेविषे प्रीति ने बीजो ज्ञाने सहित वैराग्य ए बे साधन छे ते ए बे साधनतो जेने अति-

शयपणे न वर्तता होय ने भगवाननो निश्चय ने विश्वासतो होय एवा-नेपण एक भगवाननीज वासना रहे ने बीजा पदार्थनी वासना न रहे एवो त्रीजो कोइ उपाय छे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे ए प्रश्न खरो ने ए बे साधने करीनेज एक भगवाननी वासना रहे ने बीजा पदार्थनी न रहे ते खरुं अने जो ए बे साधन न होय तो एने भग-वान विना अन्य पदार्थनी वासना न टळे माटे जीवते दुःखीयो वर्ते ने भगवाननो निश्चय छे माटे मरे त्यारे एनुं कल्याण भगवान् करे अने भगवान् विना अन्य पदार्थनी वासना टाळ्यानां जेम ए बे साधन छे तेम त्रीजुंपण एक छे ते शुं तो जेना जेवा नियम कह्याछे तेमां सावधानपणे वर्ते ते नियम कया तो एकतो स्वधर्मसंबन्धी नियम ते केमतो जेम आत्मनिवेदी साधु ब्रह्मचारीना नियम छे तेमज आत्म-निवेदी न होय तोपण स्त्रीने न जोवानो नियम राखे तथा स्त्रीनी वार्ता न सांभळवानो नियम राखे एवी रीते पंच विषयना त्याग संबन्धी नियमने दृढपणे सावधानथको पाळे तथा भगवान् ने भगवानना भक्त तेनी देहे करीने परिचर्या करे तथा भगवाननी कथा सांभळे इत्या-दिक नव प्रकारनी भक्ति संबन्धी जे नियम तेने पाळे त्यारे एना मनमांपण शुभ संकल्प थवा लागे एवी रीते बे प्रकारना नियममां जे वर्ते तो तेने वैराग्य ने भगवाननेविषे प्रीति ए बे न होय तोपण ते थाय ने अतिशय बळीयो थइ जाय ने एने पदार्थमां अशुभ वासना टळिने एक भगवाननी वासना दिवसे दिवसे वृद्धि पामती जायछे.

पछी वळी श्रीजिमहाराजने शुकमुनिए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महा-राज! जे क्रोध छे ते शामांथी उत्पन्न थायछे तो पोताने जे पदार्थनी कामना होय तथा जेमां पोते ममत्व बांध्यो होय ने तेनो भंग कोइक

करे त्यारे तेने तेमांथी क्रोध उपजेछे ने कामना जे इच्छा तेनो भंग थयो त्यारे ते काम हतो ते क्रोधरूपे परिणामने पामेछे माटे एनोतो एवो स्वभावज थयो जे एमां क्रोध उपजे अने एम थाय तोपण क्रोध न उपजे एम छे के नहि?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे मोटा साधु छे तेमणे भगवाननी आज्ञाए करीने अथवा शास्त्रदृष्टिए करीने माहात्म्य जाणीने पोतानी इच्छाए करीने अनेक जीवोने धर्ममर्यादामां रखाववा ने भगवानने मार्गे चढाववा एवो शुभ संकल्प मनमां इच्छ्यो होय ने तेमां प्रवर्त्या होय अने कोइक जीव धर्ममर्यादानो भंग करीने अधर्ममां प्रवर्ते त्यारे ते मोटा पुरुषने ते जीवनी उपर क्रोध उपजी आवे केमजे पोतानो जे शुभ संकल्प तेनो तेणे भंग कर्यो माटे धर्ममर्यादामां राखवानी शिक्षाने अर्थे तेनी उपर क्रोध करीने तेने शीखामण न दे तो मर्यादानो भंग थतो जाय ने ते जीवनुं सारुं न थाय माटे एवी रीते तो क्रोध थाय ते ठीक ने एमां कांइ बाध नहि केमजे एवा मार्गमां जे मोटा साधु प्रवर्त्या तेने आशरीने हजारो माणस रह्या होय तेने कांइक रीस करीने कह्या विनानुं केम चाले? अने क्रोधतो त्यारे न थाय जे 'जेमांथी क्रोध थाय तेनो त्याग करी दे' अने एकाएकी वनमां फरतो रहे त्यारे क्रोध न थाय पण एमतो एमनाथी केम कराय? केमजे एमणेतो अनेक जीवने वार्ता करीने भगवत्सन्मुख करवा ने तेनुं जे कल्याण थाय तेनुं जे महाफळ ते शास्त्रदृष्टिए करीने समझ्युंछे तथा एवी रीतनी जे भगवाननी आज्ञा तेनुं माहात्म्य जाण्युंछे माटे क्रोध थाय तोय पण ए जे पोतानो शुभ संकल्प तेनो त्याग करेज नहि. अने वळी जेने कोइक मोटा साधु संघाथे हेत थयुं होय ने तेने विषे पोताना कल्याण थवारूप स्वार्थ मान्यो होय ने एम जाणतो होय जे

'आ साधुथीज मारुं सारुं थशे' एवो जे होय तेने क्रोधनो स्वभाव होय तोपण ते मोटा साधु उपर एने कोइ दिवस क्रोध न थाय ने ए क्रोधने मुकीज दे एमपण क्रोध जायछे. अने पदार्थना लेण देण सारु ते तुच्छ पदार्थने अर्थे जे साधु संघाथे क्रोध करेछे तेनेतो साधुनुं माहात्म्य तथा साधुनो जे आवी रीतनो मार्ग ते समझायोज नथी ने समझायो होय तो तुच्छ पदार्थ सारु क्रोध करे नहि अने बुद्धिवान् होय–समझु होय ने तुच्छ पदार्थ सारु साधु संघाथे क्रोध करे तो तेनी बुद्धि राजाना कामदारना जेवी व्यावहारिक जाणवी पण साधुपणानी बुद्धि एने आवीज नथी एम समझवुं । इति वचनामृतम् ॥ ३४ ॥ २५७ ॥

संवत् १८८५ ना चैत्र शुदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरनेविषे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजने शुकमुनिए प्रश्न पुछ्यो जे "हे महाराज! जेना हृदयमां भगवाननो ने भगवानना भक्तनो दृढ आश्रय होय जे आश्रय गमे तेवो आपत्काळ आवी पडे ने देहने सुख दुःख मान अपमान देशकाळनुं विषमपणुं इत्यादिके करीने जाय नहि ते केम जणाय जे 'एने एवो आश्रय छे' अने तेना मननो अभिप्राय तथा देहनो आचार ते केवो होय ते कहो?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, जे भक्तने एक भगवाननेविषेज मोटयप होय ने भगवानथी बीजुं कोइ पदार्थ अधिक न जाणतो होय ने भगवान् विना बीजा सर्वेने तुच्छ जाणतो होय तथा पोतानी जे प्रकृति होय तेने भगवान् तथा

साधु ते मरोडे ने प्रकृति प्रमाणे न चालवा दे ने प्रकृति होय तेथी बीजी रीते वर्तावे त्यारे जे मुंझाय नहि ने प्रकृति मरोडे तेमां कचवाइ जाय नहि ने पोतानी प्रकृति गमे तेवी कठण होय तेने मुकीने जेम भगवान् तथा साधु ते कहे तेमज सरलपणे वर्ते एवी बे प्रकारे जेनी समझण होय तेने गमे तेवो आपत्काळ पडे तोपण भगवाननो आश्रय न टळे.

त्यारे वळी शुकमुनिए पुछ्युं जे "मुंझातो तो होय केमजे प्रकृतिने मरोडे त्यारे जीवने मुंझवण थाय पण ते मुंझवणमां पण कांइ फेर छे के नहि?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे प्रकृति मरोडे ने मुंझाय त्यारे जे पोतानोज अवगुण ले पण भगवाननो ने साधुनो अवगुण न ले ए सारो अने जे पोतानो अवगुण न ले ने भगवाननो ने साधुनो अवगुण ले तो एनो विश्वास नहि ने एवो जे होय तेना आश्रयनो पण ठा नहि.

त्यारे वळी शुकमुनिए पुछ्युं जे 'जेनी जे प्रकृति होय तेने भगवाने तथा साधुए कोइ दिवस मरोडी न होय त्यारे ते पोताना मनमां केम समझे जे 'मारी प्रकृतिने मरोडशे त्यारे मारुं ठीक नहि रहे',केमजे पोते जे अजमावेल वार्ता न होय तेनो विश्वास केम आवे?" त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, एतो पोताना मनना जे संकल्प तेनी सामी दृष्टि राखे जे 'मारा मनमां भगवान् विना बीजा पंच विषय संबन्धी भोग छे तेमां शानी वासना बळवान् छे ने बळवानपणे कया विषयनो संकल्प थायछे' एम विचारे तो जेवो पोते होय तेम मालम पडे पण बीजी रीते न पडे अने ज्यारे ए विचारे त्यारे एम विचारे जे 'आ पदार्थनो मारे बळवान् घाट छे ने तेमां हुं प्रवर्तुं छुं ने तेमांथी ज्यारे मने साधु मरोडशे त्यारे मारे ठीक नहि रहे' एम एने पोतानो निश्चय

थाय अने बळवान् प्रकृति होय ने तदपि जो एनी प्रकृतिने भगवान् तथा साधु कोइ दिवस मरोडे नहि तोतो ए पार पडी जाय ने जो मरोडे तोतो एनो ठा रहे नहि अंते अति मुंझाइने विमुख थइ जाय.

अने वळी श्रीजिमहाराजे एम वार्ता करी जे, साधुना द्रोहनुं शास्त्रमां सर्व करतां अधिक पाप कह्युंछे तेनुं शुं कारण छे तो ए साधुना हृदयनेविषे साक्षात् श्रीकृष्णभगवान् रह्याछे माटे साधुनो द्रोह करे त्यारे भगवाननो द्रोह थायछे केमजे ते साधुनो द्रोह करे त्यारे तेना हृदयमां रह्या जे भगवान् ते दुःखायछे त्यारे ए भगवानना द्रोहनुं अधिक पाप छे माटे संतना द्रोहनुं सर्व करतां अधिक पाप कह्युंछे. अने कंस शिशुपाल पूतना ए आदिक जे दैत्य तेमणे भगवाननो द्रोह कर्यो ने तेनुंपण भक्तनी पेठे भगवाने कल्याण कर्युं तेनो शो अभिप्राय छे जे ए दैत्ये वैरबुद्धिए करीनेपण भगवाननुं चिंतवन कर्युं त्यारे भगवाने एम जाण्युं जे 'वैरबुद्धिए करीनेपण ए दैत्ये मारुं चिंतवन कर्युं ने मारा संबन्धने पाम्या माटे मारे एनुं कल्याण करवुं' एवी रीते एनेविषे भगवाननी दयानुं अधिकपणुं जाणवुं. अने वळी एम जाणवुं जे 'ए वैरबुद्धिए करीने आश्रर्या तेनुंपण भगवाने कल्याण कर्युं तो जे भक्त भक्तिए करीने एनो आशरो लेशे ने भगवानने भक्तिए करीने राजी करशे तेनुं भगवान् केम कल्याण नहि करे ? करशेज' एवी रीते भगवाननी दयानुं अधिकपणुं जणावीने मनुष्यने भगवाननी भक्तिमां प्रवर्तावधा एवो अभिप्राय शास्त्रना करनारानो छे पण एम नथी जे 'दैत्यनी पेठे भगवाननुं अणगमतुं करवुं' माटे भगवाननी उपर वैरभाव राखीने जे भगवाननो द्रोह करे ने अणगमतुं करे तेनेतो दैत्यज जाणवा अने ए पक्षतो दैत्यनो छे अने जेम भगवाननुं गमतुं होय ते प्रमा-

गेज वर्तवुं ने भक्ति करवी ने भगवान् ने भगवानना भक्तने राजी करवा एवो भगवानना भक्तनो पक्ष छे.

पछी शुकमुनिए श्रीजिमहाराजने पुछ्युं जे "हे महाराज ! साधुना हृदयमां भगवान रह्या होय ने तेना द्रोहथी भगवाननो द्रोह थाय ने तेनी सेवा करीए तो भगवाननी सेवा थाय ते साधुनां लक्षण शां छे ते कहो?" त्यारे श्रीजिमहाराज थोडीक वार विचारीने कृपा करीने बोल्या जे प्रथमतो मोटुं लक्षण ए छे जे, भगवानने क्यारेयपण निराकार न समझे सदाय दिव्य साकारमूर्ति समझे अने गमे एटलां पुराण उपनिषद् वेद इत्यादिक ग्रंथनुं श्रवण थाय ने तेमां निराकारपणा जेवुं सांभळ्यामां आवे तोपण एम जाणे जे 'कांतो आपणने ए शास्त्रनो अर्थ समझातो नथी ने कांतो एमां केम कह्युं हशे पण भगवानतो सदा साकारज छे' अने जो साकार न समझे तो तेनी उपासना दृढ न कहेवाय अने साकार न होय तेनेविषे आकाशनी पेठे कर्तापणुं न कहेवाय तथा एक देशनेविषे रहेवापणुं न कहेवाय माटे भगवानतो सदा साकारज छे ने अनेक ब्रह्मांडनी उत्पत्ति स्थिति प्रलयना कर्ता छे ने सदा पोताना अक्षरधामनेविषे विराजमान छे ने राजाधिराज छे ने तेज आ प्रत्यक्ष छे एवी रीते जे आ समझण ते कोइ रीते कोइ काळे डगी न जाय सदा एमज समझे एकतो ए लक्षण होय १ तथा ए भगवाननी जे एकांतिक भक्ति तेने पोते करतो होय अने ए भगवाननुं जे नामस्मरण ने कथा कीर्तनादिक तेने कोइ करतुं होय तेने देखीने मनमां बहु राजी थाय २ तथा ए भगवानना भक्तमां रहेवुं होय तेमां कोइ स्वभाव आडो आवे नहि अने ते स्वभावने मुके पण भगवद्भक्तना संगनो त्याग न करे अने ते पोताना स्वभावने साधु खोदे तो साधुनो

अभाव न ले ने पोताना स्वभावनो अवगुण लेतो रहे पण कचवाइने भक्तना समूहमांथी छेटे रहेवानो कोइ दिवस मन घाटपण न करे एमने एम भक्तना समूहमां पड्यो रहे एवो होय ३ तथा सारु वस्त्र सारु भोजन सारु जळ तथा जेजे कोइ सारु पदार्थ पोताने प्राप्त थाय तो मन एम घाट करे जे 'आ पदार्थ हुं भगवानना भक्तने आपुं तो ठीक' अने ते पदार्थ तेने आपे ने राजी थाय एवो होय ४ तथा भक्तना समूहमां रहेतो होय ने तेनी कोरनुं एम न थाय जे 'आतो केटलाक वर्ष भेगो रह्यो पण एना अंतरनोतो कांइ ताग आव्यो नहि ने आ ते कोण जाणे केवोय हशे ? एनुंतो कांइ कळातुं नथी' एवो न होय ने जेवो ए मांहि बाहेर होय तेने सर्वे जाणे जे 'आ ते आवो छे' एवो जे सरल स्वभाववाळो होय ५ अने शांत स्वभाववाळो होय तोपण कुसंगीनी सोबत न गमे ने ते थाय तो तपी जाय एवी रीते विमुखना संगनी स्वाभाविक अरुचि वर्तती होय ६ आवे छो लक्षणे युक्त जे साधु होय तेना हृदयमां साक्षात् भगवान् विराजमान छे एम जाणवुं अने एवा साधुनो द्रोह करे तो भगवाननो द्रोह कर्या बरोबर पाप लागे अने एवा साधुनी सेवा करे तो भगवाननी सेवा कर्या तुल्य फळ थायछे । इति वचनामृतम् ॥ ३५ ॥ २५८ ॥

संवत् १८८५ ना वैशाख शुदी १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए चढीने श्रीलक्ष्मीवाडीए पधार्या हता ने ते वाडीने मध्ये जे ओटो ते उपर विराजमान थया हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे सर्वे परमहंस तथा हरिभक्त प्रत्ये प्रश्न कर्यो जे "आ जीवने कल्याणनुं असाधारण साधन शुं छे जे जेनेविषे ए प्रवर्ते तो एनुं निश्चय कल्याण थाय ने तेमां बीजां कोइ विघ्न प्रतिबंध करे नहि ते कहो ? तथा एवा कल्याणना साधनमां मोटुं विघ्न शुं छे जे जेणेकरीने तेमांथी निश्चय पडी जाय तेपण कहो ?" पछी सर्वेए पोतानी बुद्धि प्रमाणे उत्तर कर्यो पण ए प्रश्ननुं समाधान न थयुं, त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे, कल्याणनुं असाधारण साधन तो ए छे जे पुरुषोत्तम भगवानने ब्रह्मज्योतिना समूहनेविषे अनादि साकारमूर्ति समझवा ने तेनाज सर्वे अवतार छे एम समझीने ते प्रत्यक्ष भगवाननो जेते भावेकरीने आश्रय करवो ने धर्मे सहित ते भगवाननी भक्ति करवी ने तेवी भक्तिए युक्त जे साधु तेनो संग करवो ए कल्याणनुं असाधारण साधन छे अने एमां बीजां कोइ विघ्न प्रतिबंध करतां नथी. अने ए साधननेविषे मोटुं विघ्न ए छे जे 'शुष्कवेदांतिनो संग करवो' अने जो एनो संग करे तो तेने शुं विघ्न थाय तो तेनो संग करनारो जे पुरुष तेने तेनेविषे हेत थाय अने जे हेत थाय ते गुणे करीने थायछे, जेम कोइके काळमां अन्न आपीने जीवाड्यो होय तेनी उपर हेत थाय एवी रीते जे जेणे गुण कर्यो होय तेनी उपर हेत थाय, तेम ते शुष्कवेदांती ते एने एम गुण देखाडे जे 'आत्मा छे तेने जन्म मरण नथी ने ते निराकार छे अने ते गमे एटलुं पाप करे तोपण तेने दोष न लागे'[1] एवो एने गुण बतावीने भगवाननी मूर्तिना आकारनुं खंडन करी नांखे त्यारे एने ए मोटुं विघ्न थयुं केमजे भगवाननी मूर्तिमांथी

१ अने परमात्मापण नित्य निर्विकारी गुणे युक्त छे ते परमात्मामा अने जीवात्मामा वास्तविक भेद क्यारेयपण नथी ।

पडी गयो माटे ए शुष्कवेदांतिनो संग क्यारेय न करवो अने ए शुष्कवेदांतितो महा अज्ञानी छे ने भगवानना भक्तिमार्गमां एवुं मोटुं कोइ विघ्न नथी.

एटली वार्ता करीने श्रीजिमहाराज पाछा दादाखाचरना दरबारमां पधार्या ने उगमणा द्वारना ओरडानी ओसरीए ढोलीया उपर वेसीने एम वार्ता करी जे, अमे सर्व शास्त्रने सांभळीने ए सिद्धांत कर्योछे अने अमे आ पृथ्वीमां सर्व ठेकाणे फर्या ने तेनेविषे घणाक सिद्ध दीठा छे एम कहीने गोपाळदासजी आदिक साधुनी वार्ता करी देखाडी ने पछी एम बोल्या जे, हुंतो एम जाणुंछुं जे भगवाननी मूर्तिनी जे उपासना ने ध्यान ते विना जे आत्माने देखवो ने ब्रह्मने देखवुं तेतो थायज नहि ने उपासनाए करीनेज आत्मा देखाय ब्रह्म देखाय पण ते विनातो देखायज नहि. अने उपासना विना आत्मा ब्रह्मने देखवाने इच्छवुं ते केम छे तो, जेम आकाशने जीभे करीने सो वर्षसुधी चाटीए तोपण क्यारेय खाटो खारो स्वाद आवेज नहि, तेम भगवाननी मूर्तिनी उपासना विना आत्मा ब्रह्म देखायज नहि ते गमे तेटलुं जतन करे तोपण न देखाय[१] अने निर्बीज एवा जे सांख्य ने योग तेणेकरीने जे आत्मानुं दर्शन शास्त्रमां कह्युंछे ते भले कह्युंछे पण अमे एवो कोइ दीठो नथी ने अनुभवमांपण ए वार्ता मळती आवती नथी माटे ए वार्ता खोटी छे[२] । इति वचनामृतम् ॥ ३६ ॥ २५९ ॥

संवत् १८८५ ना वैशाख शुदी ३ त्रीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उत्तरादे

१ परमात्माने । २ माटे आत्मा परमात्माना दर्शन करवा इच्छता भक्तोए सर्वप्रयत्नथी नराकृति भगवाननुं ध्यान करवुं आवो अमारो सिद्धान्त छे ।

द्वार ओरडानी ओसरीए चाकळा उपर विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे सर्वे साधु तथा सर्वे हरिभक्त प्रत्ये एम वार्ता करी जे, जेने भगवानना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान[१] एकवार थयुं होय ने पछी तेने देश, काळ, क्रिया, संग विषम थइ जाय तोपण ते ज्ञाननो लेश जाय नहि त्यां दृष्टांत छे–जेम कोइक मोटो राजा होय अथवा मोटो लखेशरी साहुकार होय ने तेने प्रारब्धानुसारे ते अधिकार छुटी गयो ने दरिद्रपणुं आवी गयुं तेणे करीने खडधान्य खावा मळे अथवा डोडीनी भाजी मळे तथा कोठां बोरां बाफेली पीपर्यो इत्यादिक जेवुं तेवुं खावा मळे त्यारे तेने खाय पण मोरे जे पोते भारे भारे मेवा खाधा होय तथा भारे मूल्यवाळी चीजो कोइने न मळे एवी मगावीने खाधी होय ते सर्वे सांभरी आवे ने मनमां एम घाट करे जे 'एवी एवी भारे चीजोने हुं मोरे खातो ने हवे हुं आवुं जेवुं तेवुं अन्न खाउंछुं एवी रीते ज्यारे ज्यारे खाय त्यारे ते सांभरी आवे अने जे प्रथमथीज जेवुं तेवुं अन्न खातो होय ने तेने दरिद्रपणुं वधु आवे त्यारे पण तेज खाय त्यारे तेने शुं सांभरे ? तेम जेणे भगवानना स्वरूपनुं सुख तथा भगवानना भजननुं सुख पोताना मनमां एकवार यथार्थपणे जाण्युंछे ने तेने पछी समागमनो योग न रह्यो ने बहार नीकळी गयो तोपण ते सुखने संभारतो थकोज सुख दुःखने प्रारब्धानुसारे भोगवे पण ते सुखने भुली न जाय अने जेणे भगवाननुं सुख जाण्युं नथी ने तेनो अनुभव थयो नथी ते ते शुं

१ निश्चयात्मक ।

संभारे ? एतो पशु जेवो छे. हवे ते भगवाननुं जे स्वरूप तेनुं ज्ञान कहीए छीए जे 'भगवाननो जे आकार छे तेवो आकार बीजा देव मनुष्यादिक जे प्रकृतिमांथी आकार थयाछे ते कोइनो नथी अने भगवान विना बीजा सर्वने काळ भक्षण करी जायछे ने भगवानना स्वरूपमां काळनुं सामर्थ्यपणुं नथी चालतुं एवा भगवान् छे ने भगवान जेवातो एक भगवानज छे पण बीजो कोइ नथी. अने भगवानना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा जे भगवानना धाममां भक्त छे तेनो आकारपण भगवान् जेवो छे तोपण ते पुरुष छे ने भगवान् पुरुषोत्तम छे ने ते सर्वमां श्रेष्ठ छे ने एमने उपास्य छे ने सर्वेना स्वामी छे ने ए भगवानना महिमानो कोइ पार पामता नथी एवा दिव्यमूर्ति जे भगवान् ते निर्गुण छे ते ध्येय छे अने एनुं जे ध्यान करेछे ते निर्गुण थइ जायछे एवुं भगवाननुं स्वरूप छे अने ए भगवान् छे ते पोताना धामरूप एक देशनेविषे रह्या थकाज अन्वयपणे अनेक ब्रह्मांडनेविषे रह्या जे सर्वे जीवना समूह तेमनेविषे तेमना यथायोग्य कर्मफळ प्रदातापणे अंतर्यामीरूपे करीने रह्याछे अने सर्व जीवना जीवन छे ने ए विना ए जीव कांइ करवाने ने भोगववाने समर्थ नथी थतो अने ए जे भगवान् ते सिद्धेश्वर छे जेम कोइक सिद्धिवाळो पुरुष होय ते अहीयां बेठोथको ब्रह्माना लोकमां पदार्थ होय तेने आ हाथे करीने ग्रहण करीले तेम भगवान् एक देशमां रह्या थकाज पोतानी योगकळाना सामर्थ्ये करीने सर्वे क्रियाने करेछे. अने जेम अग्नि जेते काष्ठने विषे ने पाषाणनेविषे रह्योछे ते अग्निनुं स्वरूप बीजी रीतनुं छे ने काष्ठ पाषाणनुं स्वरूप बीजी रीतनुं छे तेम भगवान् सर्व जीवनेविषे रह्याछे ते भगवाननुं स्वरूप बीजी रीतनुं छे ने ते

जीवनुं स्वरूप बीजी रीतनुं छे अने एवी रीतना अनंत ऐश्वर्ये युक्त एवा जे ए भगवान् तेज पोते जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा थायछे' ते भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान जेने आवी रीते थयुं होय ने ते भगवाननी भक्ति करी होय ने ते ज्ञान भक्तिना सुखनो पोताना जीवमां अनुभव एकवार यथार्थ थयो होय तो तेनी विस्मृति क्यारेय थाय नहि अने गमे तेवुं सुख दुःख पडे तोपण तेनेविषे ते भगवानना स्वरूपना सुखनो जे अनुभव ते विसरी जाय नहि, जेम ते राजाने प्रथमनुं जे पोतानुं सुख ते दरिद्रपणामांपण विसरतुं नथी तेम, अने आ वार्ता शा सारु करीए छीए तो आवो सत्संगनो योग हमणांतो छे पण कदाचित् देश काळ प्रारब्धना विषमपणाथकी एवो योग न रहे त्यारे जो आवी वार्ता समझी राखी होय तो तेना जीवनुं कल्याण थाय अने एने एवो दृढ निश्चय होय तो एने क्यारेय एम न समझाय जे 'मारुं क्यारेय अकल्याण थशे' अने आवो योग रहेवो बहु दुर्लभ छे ने आवी रीते देहे वर्तवुं तेपण दुर्लभ छे केमजे कोइक दिवस बाहेर नीकळी जवाय त्यारे आम देहे न वर्ताय तोपण आ वार्ता समझी राखी होय तो एना जीवनुं बहु सारुं थाय माटे आ वार्ता करीछे । इति वचनामृतम् ॥ ३७ ॥ २६० ॥

संवत् १८८५ ना वैशाख शुदी १४ चौदशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरनेविषे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराज बोल्या जे अमे सांख्यादिक शास्त्रना विचारे

करीने एम निश्चय कर्योछे जे, मायाना कार्यमांथी उत्पन्न थया जे आकारमात्र ते सर्वे मिथ्या छे केमजे ए सर्वे आकार काळे करीने नाश पामेछे अने भगवानना अक्षरधामनेविषे जे भगवाननो आकार छे तथा ते भगवानना पार्षद जे मुक्त तेमना जे आकार छे ते सर्वे सत्य छे ने दिव्य छे ने अतिशय प्रकाशे युक्त छे अने ते भगवाननो ने ते मुक्तनो जे आकार ते पुरुषना जेवो द्विभुज छे ने सच्चिदानंदरूप छे अने ते अक्षरधामनेविषे रह्या जे ए भगवान् ते जेते ते मुक्तपुरुष तेमणे दिव्य एवा जे नाना प्रकारना उपचार तेणेकरीने सेव्याथका ने ते मुक्त पुरुषने परम आनंदने उपजावता थका सदा विराजमान छे अने एवा सर्वोपरि जे पुरुषोत्तम भगवान् तेज दयाए करीने जीवोना कल्याणने अर्थे आ पृथ्वीनेविषे प्रकट थयाथका सर्व जनना नयनगोचर वर्तेछे ने तमारा इष्टदेव छे ने तमारी सेवाने अंगीकार करेछे अने एवा जे ए प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान् तेना स्वरूपमां ने अक्षरधामनेविषे रह्या जे भगवान् तेना स्वरूपमां कांइपण भेद नथी ए बे एकज छे अने एवा जे आ प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान् ते अक्षरादिक सर्वना नियंता छे ईश्वरनापण ईश्वर छे ने सर्व कारणनापण कारण छे ने सर्वोपरी वर्तेछे ने सर्व अवतारना अवतारी छे ने तमारे सर्वेने एकांतिकभावे करीने उपासना करवा योग्य छे अने आ भगवानना जे पूर्वे घणाक अवतार थयाछे तेपण नमस्कार करवा योग्य छे ने पूजवा योग्य छे.

अने वळी श्रीजिमहाराजे एम वार्ता करी जे, एक द्रव्यादिकनो लोभ तथा स्त्रीनेविषे बेठा दृष्टीनी वासना तथा रसनेविषे जिह्वानी आसक्ति तथा देहाभिमान तथा कुसंगीमां हेत रही जाय तथा संबन्धिमां हेत होय ए छो वानां जेने होय तेने कोइ दिवस जीवते ने

मरीनेपण सुखतो क्यारेय थायज नहि माटे जेने सुख इच्छवुं होय तेने एवा स्वभाव होय तो टाळवा ने निवृत्तिपर थवुं ने बरोबरीयानी सोबत न राखवी ने देहाभिमाने रहित ने वैराग्ये युक्त ने भगवाननुं अल्प वचन होय तेमां फेर पडे तो ते महत्वचनमां फेर पड्यो होय तेम मानता होय एवा जे भगवद्भक्त मोटा साधु ते संघाथे पोताना जीवने जडी देवो ने तेना वचनमां मन कर्म वचने वर्तवुं ने विषयना संबन्धथीतो छेटेज रहेवुं पण एनो संबन्ध पोताना नियमनो त्याग करीने थवा देवो नहि ने जो विषयनो संबन्ध करवा मांडे तो एनो ठा रहेज नहि ए सिद्धांत वार्ता छे। इति वचनामृतम् ॥ ३८ ॥ २६१ ॥

संवत् १८८६ ना आपाढ वदी १० दशमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजिमहाराजे सर्व परमहंस तथा सर्व सत्संगी आगळ वार्ता करी जे, भगवाननी माया ते कइ छे तो 'देहनेविषे अहंबुद्धि ने देहसंबन्धी पदार्थनेविषे ममत्वबुद्धि' एज माया छे ते ए मायाने टाळवी अने ए मायाने जेणे टाळी ते मायाने तर्यो कहेवाय अने 'ए मायाने टाळीने भगवानमां प्रीति करवी' एटलो सर्व शास्त्रनो सिद्धांत छे तेने आज समझो के घणे दिवसे करीने समझो' अने हनुमान् नारद प्रह्लाद ए जे मोटा मोटा भगवानना भक्त तेमणेपण' भगवान पासे एमज मा-

१ पण समझीने जे भक्त एवी रीते करशे तेज सुखी थशे बीजो सुखी थशे नहि। २ अहंममत्वरूप मायानो त्याग करीने भगवानमां दृढ प्रीति करीछे अने।

ग्युंछे जे 'अहंममत्वरूप मायाथकी रक्षा करज्यो अने तमारेविषे प्रीति थज्यो अने ए मायाने तर्या होय ने तमारेविषे प्रीतिवाळा होय एवा जे साधु तेनो संग थज्यो अने साधुनेविषे हेत ने ममत्व थज्यो' माटे आपणेपण एम करवुं ने एम मागवुं अने एनो श्रवण मनन निदिध्यास करवो.

अने भगवाननो जे भक्त होय तेने आत्मनिष्ठानुं बळ तथा भगवानना माहात्म्यनुं बळ ए बे बळ जोइए ते आत्मनिष्ठा ते शुं तो पोताना आत्माने देहथी पृथक् जाणवो अने साधु भेळा रहेता होइए तेमां परस्पर कोइक निमित्ते बोला चाली थाय तथा कोइक जातनो अहंममत्व थाय तथा मान, क्रोध, स्वाद, लोभ, काम, मत्सर, ईर्ष्या ए आदिक अवगुणनी प्रवृत्ति थाय त्यारे जो आत्मा पोताने न जाणता होइए तो साधुनो अवगुण आवे तेमांथी एनुं बहु भुंडुं थाय माटे पोताने देहथी पृथक् आत्मा जाणवो अने ते आत्मा छे ते ब्राह्मण नथी क्षत्रिय नथी कणबी नथी कोइनो दीकरो नथी कोइनो बाप नथी एनी कोइ जात नथी नात नथी एवो छे अने ए आत्मातो सूर्य तथा अग्नि जेवो तेजस्वी छे ने जाणपणे युक्त छे अने ते अग्निनी ज्वाळा तथा सूर्यनां किरण तेतो जड छे केमजे तेने आंगळी अडाडीए तो खसे नहि अने कीडी होय ने तेने आंगळी अडाडीए तो खसीने अवळी चाले माटे आत्मा ते जाणपणे युक्त छे अने एने सूर्य अग्नि जेवो कहीए छीए तेतो एनो आकार एवो तेजस्वी छे ते माटे कहीए छीए अने ए आत्मा अनेक योनिने पाम्योछे अने एम कहेवायछे जे 'जेटलुं समुद्रनुं पाणी छे तेटलुं ए जीव पोतानी मातानुं दुध धाव्योछे' अने त्यांत्यां अनेक प्रकारे मराणोछे तोपण मर्यो नथी जेवो छे तेवोने तेवोज छे अने ए

अज्ञान अवस्थामां पोताने देहरूपे मानतो हतो त्यारेपण न मर्यो तो हवे आपणे एवुं ज्ञान थयुं त्यारेतो ए केम मरशे ? एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं. अने भगवाननुं माहात्म्य केम जाणवुं तो भगवान् छे ते अनेक ब्रह्मांडना राजाधिराज छे अने जे ब्रह्मांडना ए राजा छे ते ब्रह्मांडनीपण गणती नथी, ते कह्युंछे जे "द्युपतय एव ते न ययुरन्तमनन्ततया त्वमपि यदन्तराऽण्डनिचया ननु सावरणाः" अने ते एक एक ब्रह्मांडमां ब्रह्मा, विष्णु, शिव होय तथा सात द्वीप, सात समुद्र, मेरु, लोकालोक आदिक पर्वत, तेणे युक्त पृथ्वीनी रचना होय तथा चौद लोकनी रचना होय तथा अष्ट आवरणनी रचना होय इत्यादिक सामग्रीए सहित जे अनेक ब्रह्मांड तेना राजा भगवान् छे अने जेम आ पृथ्वीनो चक्रवर्ती राजा होय ने ते राजानां जे गामडां तेतो गणाय एवां होय तोपण तेनी केटली मोट्यप जाण्यामां आवेछे ? अने भगवानने तो एवा ब्रह्मांडनीपण गणती नथी माटे भगवाननी तो बहुज मोट्यप छे अने ते ब्रह्मांडनेविषे आ जीव छे ते भगवाननी आगळ शा लेखामां छे ? कांइ नथी अति तुच्छ छे. अने ते भगवाने ए ब्रह्मांडनेविषे पंच विषय संबन्धि सुख जीवोने आप्युंछे ते सुख केवुं छे तो ए सुखने सारु केटलाक पोतानां माथां कपावेछे एवुं महादुर्लभ जेवुं जणायछे त्यारे पोतानी मूर्तिमां तथा पोताना धाममां जे सुख छे तेतो बहु भारे छे अने प्राकृत विषयसुख छे तेतो अन्य पदार्थने आशरीने रह्युंछे तथा पृथक् पृथक् छे अने जे भगवान् छे तेतो सर्वे सुखमात्रना राशि छे ने ए भगवान् संबधि जे सुख छे ते अविनाशी छे ने महा अलौकिक छे अने जेम कोइक भारे धनाढ्य गृहस्थ होय ते पोताना घरमां अनेकप्रकारनां भोजन जमतो होय ने ते जमीने

उच्छिष्ट कांइक बटकुं रोटलो वधे ते कुतराने नाखे त्यारे ते अतिशय तुच्छ कहेवाय ने पोते जमतो होय ते महा सुखमय कहेवाय तेम भगवाने ब्रह्मांडने विषे अनेक जीवोने पंच विषय संबंधि सुख आप्युंछे तेतो कुतराने नाख्यो जे बटकुं रोटलो तेनी पेठे अति तुच्छ छे ने पोतानेविषे जे सुख छे तेतो महा मोटुं छे. अने वळी सुषुप्ति अवस्थानेविषे ए जीवने भगवान् मोटुं सुख पमाडेछे ते गमे तेवी वेदना थइ होय ने सुषुप्तिमां जाय त्यारे सुखीयो थइ जायछे. अने वळी ए भगवानना चरणकमळनी रजने ब्रह्मा, शिव, लक्ष्मीजी, राधाजी, नारद, शुक, सनकादिक नव योगेश्वर एवा एवा मोटा छे तेपण पोताना मस्तक उपर चढावेछे ने मानने मुकीने ए भगवाननी निरंतर भक्ति कर्या करेछे. अने वळी ए भगवाने जगतमां विचित्र सृष्टि केवी करीछे ने तेमां केवुं डहापण कर्युंछे जे जुवोने 'माणसमांथी माणस थायछे पशुमांथी पशु थायछे झाडमांथी झाड थायछे कीडामांथी कीडो थायछे अने माणसना अंगमांथी कोइक अंगनो भंग थइ गयो होय ने गमे तेवो डाह्यो होय तोपण ते अंगने तेवुंने तेवुं करवाने समर्थ कोइ रीते नज थाय' इत्यादिक अनेक कळा भगवाननां रहीछे एवी रीते भगवाननुं माहात्म्य जाणीने तथा भगवानने सुखमयमूर्ति जाणीने बीजा सर्व पदार्थमां वैराग्य थायछे ने एक भगवानमांज प्रीति थायछे. अने एवी रीते प्रथम कह्युं जे पोताना जीवात्मानुं ज्ञान तथा भगवानना माहात्म्यनुं ज्ञान ए बे जेने सिद्ध थया होय ने ते जो गमे तेवा पंच विषय संबंधि सुखमां कदाचित् बंधाइ गयो होय तोपण तेमां बंधाइ रहे नहि तेने तोडीने नीकळेज रहेछे अने जे विषयना सुखनो त्याग करीने वर्ततो होय ने ते न बंधाय एमां ते शुं कहेवुं ? माटे ए बे प्रका-

रना ज्ञानने सांभळीने एनो पोताना मनमां वेग लगाडी देवो, जेम कोइक शूरवीर ने आकरो माणस होय ने तेनो कोइक प्रतिपक्षी होय तेणे तेनो बाप मारी नाख्यो होय तो तेनी तेने बहु दाझ्य थाय ने ते दाझ्य थती होय ने वळी तेनो दीकरो मारी नाखे ने वळी भाइने मारी नाखे ने वळी बायडीने लइ जाय ने वळी माने लइने मुसलमानने आपे ने वळी गामगरास झुंटी ले एवी रीते जेम जेम एनो पराभव करे तेम तेम एने बहु मनमां दाझ्य थाय ने जाग्रत् स्वप्नमां सर्व काळे एने ए वातनोज आलोच रहे, तेम जेने आ बे वातनो निरंतर आलोच रहे त्यारे एने ए ज्ञान सिद्ध थाय अने एने गमे तेवो आपत्काळ पडे तो तेनेविषे एनी सहाय करे. अने जेम विशल्यकरणी ओषधि लावीने हनुमानजीए रामचंद्रने पीवाडी त्यारे जे देहमां शल्य लाग्यां हतां ते सर्वे एनी मेळे देहथी बाहेर नीकळी गयां तेम जेने आ बे वात मनमां लागी गइ होय तेने इंद्रियोने विषय भोगनी इच्छा रहीछे ए शल्य छे ते सर्वे नीकळी जाय कहेतां विषय भोगमांथी एनी इंद्रियोनी वृत्ति नीकळीने एक भगवानमां वळगे. अने सत्संगी पण एनेज

तेने पेटमां रहे ने रग रगमां प्रवर्ते ने बहु सुख थाय, तेम श्वान जेवो जे आसुरी जीव तेना हृदयमांतो आ वात पेसेज नहि ने माणस जेवो जे दैवी जीव तेना हृदयमां उतरे ने रग रगमां व्यापी जाय. अने वळी जे भगवान् छे ते जेवातो ए एकज छे अने भगवानने भजी भजीने घणाक भगवानना साधर्म्यपणाने पाम्या छे तोपण ते भगवान् जेवातो थताज नथी ने जो ए भगवान् जेवाज थाय तोतो भगवान् घणाक थाय त्यारेतो जगतनी स्थिति ते एक जात-नीज न रहे, केमजे एक भगवान् कहेशे हुं जगतनी उत्पत्ति करीश ने बीजो कहेशे हुं जगतनो प्रलय करीश अने वळी एक भगवान् कहेशे हुं वरसाद करीश ने बीजो कहेशे हुं नहि करुं ने एक कहेशे हुं माण-सना धर्म पशुमां करीश ने बीजो कहेशे हुं पशुना धर्म माणसमां क-रीश एवी रीते स्थिति न रहे अने आतो जुवोने जगत्मां केवी रीते वराबर अदल प्रमाणे सर्व क्रियानी प्रवृत्ति थायछे पण तलभार पण फेर पडतो नथी माटे सर्व क्रियाना प्रवर्तावनारा ने सर्वना स्वामी एकज भगवान् छे तथा भगवान् संघाथे बीजाने दाव बंधाय एमपण जणातुं नथी माटे भगवान् ते एकज छे पण बीजो ए जेवो थतो नथी. अने आ सर्वे वात करी ते थोडीक छे पण एमां सर्वे वात आवी गइ अने आ वातनुं जे रहस्य छे ते जे डाह्यो होय तेने समझाय पण बीजाने समझाय नहि अने आटली वात समझीने जेणे दृढ करी तेने सर्वे वात संपूर्ण थइ एने कांइ करवुं बाकी न रह्युं अने आवी रीते जे अमे वात करी तेने सांभळीने ने ते वातनी जे भगवानना भक्तने दृढता होय तेनो संग राखवो तो एने आ वार्तानी दिवसे दिवसे दृढता थती जा-य अने आ वात अमे करीए छीए ते कांइ बुद्धिनी कल्पनाए नथी करता

रना ज्ञानने सांभळीने एनो पोताना मनमां वेग लगाडी देवो, जेम कोइक शूरवीर ने आकरो माणस होय ने तेनो कोइक प्रतिपक्षी होय तेणे तेनो बाप मारी नाख्यो होय तो तेनी तेने बहु दाझ्य थाय ने ते दाझ्य थती होय ने वळी तेनो दीकरो मारी नाखे ने वळी भाइने मारी नाखे ने वळी बायडीने लइ जाय ने वळी माने लइने मुसलमानने आपे ने वळी गामगरास झुंटी ले एवी रीते जेम जेम एनो पराभव करे तेम तेम एने बहु मनमां दाझ्य थाय ने जाग्रत् स्वप्नमां सर्व काळे एने ए वातनोज आलोच रहे, तेम जेने आ बे वातनो निरंतर आलोच रहे त्यारे एने ए ज्ञान सिद्ध थाय अने एने गमे तेवो आपत्काळ पडे तो तेनेविषे एनी सहाय करे. अने जेम विशल्यकरणी ओषधि लावीने हनुमानजीए रामचंद्रने पीवाडी त्यारे जे देहमां शल्य लाग्यां हतां ते सर्वे एनी मेळे देहथी बाहेर नीकळी गयां तेम जेने आ बे वात मनमां लागी गइ होय तेने इंद्रियोने विषय भोगनी इच्छा रहीछे ए शल्य छे ते सर्वे नीकळी जाय कहेतां विषय भोगमांथी एनी इंद्रियोनी वृत्ति नीकळीने एक भगवानमां चळगे. अने सत्संगी पण एनेज कहीए केमजे सत्यरूप एवो जे पोतानो आत्मा तथा सत्यरूप एवा जे भगवान् तेनो जेने आवी रीते संग थयो तेने सत्संगी कहीए अने आ बे प्रकारे जे वार्ता छे तेने दैवी जीव सांभळे त्यारे तेना हृदयमां लागीने रग रगमां प्रवर्ती जाय अने जे आसुरी जीव होय ने ते सांभळे त्यारे तेनेतो कानथी बाहेरज नीकळी जाय पण हृदयमां उतरे नहि, जेम श्वान होय ने ते खीर खाय ते तेना पेटमां रहेज नहि वमन थइ जाय ने खीर जेवुं कांइ भोजन सरस न कहेवाय तोपण ते श्वानना पेटमां रहीने रग रगमां प्रवर्ते नहि ने ते खीरने माणस खाय त्यारे

तेने पेटमां रहे ने रग रगमां प्रवर्ते ने बहु सुख थाय, तेम श्वान जेवो जे आसुरी जीव तेना हृदयमांतो आ वात पेसेज नहि ने माणस जेवो जे दैवी जीव तेना हृदयमां उतरे ने रग रगमां व्यापी जाय. अने वळी जे भगवान् छे ते जेवातो ए एकज छे अने भगवानने भजी भजीने घणाक भगवानना साधर्म्यपणाने पाम्या छे तोपण ते भगवान् जेवातो थताज नथी ने जो ए भगवान् जेवाज थाय तोतो भगवान् घणाक थाय त्यारेतो जगतनी स्थिति ते एक जातनीज न रहे, केमजे एक भगवान् कहेशे हुं जगतनी उत्पत्ति करीश ने बीजो कहेशे हुं जगतनो प्रलय करीश अने वळी एक भगवान् कहेशे हुं वरसाद करीश ने बीजो कहेशे हुं नहि करुं ने एक कहेशे हुं माणसना धर्म पशुमां करीश ने बीजो कहेशे हुं पशुना धर्म माणसमां करीश एवी रीते स्थिति न रहे अने आतो जुवोने जगत्मां केवी रीते बराबर अदल प्रमाणे सर्व क्रियानी प्रवृत्ति थायछे पण तलभार पण फेर पडतो नथी माटे सर्व क्रियाना प्रवर्तावनारा ने सर्वना स्वामी एकज भगवान् छे तथा भगवान् संघाथे बीजाने दाव बंधाय एमपण जणातुं नथी माटे भगवान् ते एकज छे पण बीजो ए जेवो थतो नथी. अने आ सर्वे वात करी ते थोडीक छे पण एमां सर्वे वात आवी गइ अने आ वातनुं जे रहस्य छे ते जे डाह्यो होय तेने समझाय पण बीजाने समझाय नहि अने आटली वात समझीने जेणे दृढ करी तेने सर्वे वात संपूर्ण थइ एने कांइ करवुं बाकी न रह्युं अने आवी रीते जे अमे वात करी तेने सांभळीने ने ते वातनी जे भगवानना भक्तने दृढता होय तेनो संग राखवो तो एने आ वार्तानी दिवसे दिवसे दृढता थती जाय अने आ वात अमे करीए छीए ते कांइ बुद्धिनी कल्पनाए नथी करता

तथा सिद्धाइ जणावा सारु नथी करता आतो अमारी अजमावेल वात छे ने जेम अमे वर्तीए छीए तेम वात करीए छीए केमजे अमारे स्त्री धनादिक पदार्थनो भारे योग छे तथा पंच विषयनो भारे योग छे तथा सुरत अमदावाद वडोदरे वरताले जइए छीए त्यारे हजारो माणस भेगां थायछे ने ते मानेछे तथा वाजते गाजते अति सन्मान करीने पधरावेछे तथा त्यांत्यां भारे भारे जायगाओ जोयामां आवेछे तथा भारे वस्त्र वाहनादिकनो योग थायछे ए सर्वे छे तथापि पोताना आत्मा सामी दृष्टि करीए छीए तथा भगवानना माहात्म्य सामी दृष्टि करीए छीए त्यारे ए सर्वेनुं अति तुच्छपणुं थइ जायछे ने एमां कोइ ठेकाणे बंधाइ जवातुं नथी ने पूर्व देहनी जेम विस्मृति छे तेम ए सर्वेनी विस्मृति थइ जायछे माटे ए बे वात अमारे सिद्ध थइछे ते सारु एम अमारे वर्तायछे अने बीजोपण जो ए बे वातने सिद्ध करे तो तेने कदाचित् एवो कोइक योग थइ जाय तोपण एने एम वर्ताय माटे आ वात अवश्य समझवानी छे, एवी रीते श्रीजिमहाराजे कृपा करीने बीजाने समझाववा सारु पोतानुं वर्तन लइने वार्ता करी ने पोतेतो साक्षात् श्रीपुरुषोत्तम नारायण छे । इति वचनामृतम् ॥ ३९ ॥ २६२ ॥

एवी रीते आ जे सर्वे श्रीजिमहाराजनां वचनामृत ते मुक्तानंदस्वामी तथा गोपाळानंदस्वामी तथा नित्यानंदस्वामी तथा शुकमुनि ए चार साधुओए भेळा थइने जेम सांभळ्युं छे अने जेम पोतानी बुद्धि छे ते प्रमाणे लख्यां छे । अने श्रीजिमहाराज जेते दिवस दिवस प्रत्ये आवी आवी रीतनी अनेक प्रकारनी वार्ताने करता थका ने पोताना भक्तजनने आनंद उपजावताथका श्रीगढडानेविषे विराजता हवा ।

मुक्तानन्दश्च गोपालानन्दो मुनिरुदारधीः । नित्यानन्द-शुकानन्दौ चत्वारो मुनयस्तु ये ॥ १ ॥ एतैः सङ्कल्य लिखितानीत्थं धर्मजनेर्हरेः । वचोऽमृतानि सर्वाणि यथामति यथाश्रुतम् ॥२॥ तत्रादौ दुर्गनगरे स्वामिनोक्तानि तेन तु । अष्टसप्ततिसङ्ख्यानि तानि सन्तीष्टदानि हि ॥३॥ प्रोक्तानि च ततस्तेन सारङ्गपुरसंज्ञके । ग्रामेऽष्टादशसङ्ख्यानि तानीष्टानि भवन्ति हि ॥ ४ ॥ तेनोक्तानि ततस्तानि ग्रामे कार्यायनाभिधे । सन्ति द्वादशसङ्ख्यानि सर्वसौख्यकराणि हि ॥ ५ ॥ लौहाभिधे ततो ग्रामे तानि प्रोक्तानि तेन च । सन्त्यष्टादशसङ्ख्यानि भक्ताभीष्टप्रदानि हि ॥ ६ ॥ ग्रामे पश्चालसंज्ञेऽथ तेन तान्युदितानि वै । सन्त्येकान्तिकभक्तानां प्रेष्ठानि सप्तसङ्ख्यया ॥ ७ ॥ पुनर्दुर्गपुरे तेन स्वामिना कथितान्यथ । सन्ति तानि सप्तषष्टिसङ्ख्यातानि हि तत्त्वतः ॥ ८ ॥ ततो वृत्तालयपुरे तेन धर्मसुतेन च । तानि विंशतिसङ्ख्यानि कथितानि भवन्ति हि ॥ ९ ॥ ततः श्रीनगरे तानि प्रोक्तानि त्रीणि तेन च । श्रीभक्तिधर्मपुत्रेण सन्ति भक्तप्रियाणि हि ॥ १० ॥ कथितानि पुनस्तेन स्वामिना दुर्गपत्तने । तानि सन्त्येकोनचत्वारिंशत्सङ्ख्यानि तत्त्वतः ॥ ११ ॥ एवं हि तानि सर्वाणि मितानि द्विरसाक्षिभिः । सन्ति संलिखितानि श्रीमहाराजनिदेशतः ॥ १२ ॥ इमानि ये पठिष्यन्ति श्रोष्यन्ति चादराज्जनाः । भविष्यति

हरौ तेषां भक्तिरेकान्तिकी ध्रुवम् ॥१३॥ आप्याययन्निज-
जनान् स्वकीयवचनामृतैः । जयति श्रीहरिः स्वामी श्रीम-
द्दुर्गपुरे प्रभुः ॥ १४॥ स्वधर्मस्य च जीवात्मज्ञानस्य विरते-
स्तथा । माहात्म्येन सह स्वीयज्ञानभक्त्योर्यथार्थतः ॥१५॥
लक्षणानि स्वभक्तेभ्यो य उवाच दयानिधिः । नानाविधैः
प्रसङ्गैस्तं नमामो भक्तिनन्दनम् ॥१६॥ निजैर्वचोऽमृतैर्लोकेऽ-
तर्पयद्यो निजाश्रितान् । प्रीतो नः सर्वदा सोऽस्तु श्रीहरि-
र्धर्मनन्दनः ॥ १७ ॥ तद्वचोऽमृतपातारो ये स्युस्तत्पदसं-
श्रयाः । सत्सङ्गिनः प्रसन्नास्ते भवन्त्वस्मासु सर्वदा ॥१८॥

अंत्यप्रकरणं समाप्तम् ।

॥ इति श्रीभक्तिधर्मात्मजश्रीसहजानन्दस्वामिवचनामृतानि संपूर्णानि ॥

श्रीस्वामिनारायणो विजयततराम् ।

योऽक्षरातपरतरः परेश्वरो ब्रह्मरूपमुनिभिः सुपूजितः ।
सर्वजीवदयया नराकृतिः श्रीहरिं तमहमानतोऽस्मि हि ॥१॥

वचनामृतम् ।	प्रमाणवचनानि ।	आकरः ।
ग०प्र०१म०३	अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति ।	स्कंदपुराणे
	तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ॥	
ग०प्र०१४	अन्ते या मतिः सा गतिः ।	हिरण्यकेशीयशाखाश्रुतिः
ग०प्र०१५सा०११	अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति	गी०अ०६श्लो०४५
म०१-८-१६	परां गतिम् ।	
ग०प्र०३८	मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दह्यति किंचन ।	भार०मोक्षधर्मे
ग०प्र०४०	श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।	भाग०स०अ०५
	अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥	श्लो०२३
ग०प्र०४१	तदैक्षत (एकोऽहं) बहु स्यां प्रजायेय ।	छां० अ०६खं०२
ग०प्र०४१	स्वकृतविचित्रयोनिषु विशन्निव हेतुतया	भाग०द०अ०८७
	तरतमतश्चकास्स्यनलवत्स्वकृतानुकृतिः ।	श्लो०१९
ग०प्र०४२	भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविंदं भज मूढमते ॥	चर्पटपंज०
ग०प्र०४३	मत्सेवया प्रतीतं च सालोक्यादिचतुष्टयम् ।	भाग०न०अ०४
	नेच्छन्ति सेवया पूर्णाः कुतोऽन्यत्कालविप्लुतम् ॥	श्लो०६७
ग०प्र०४३	सालोक्यसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत ।	भाग०तृ०अ०२९
	दीयमानं न गृह्णन्ति विना मत्सेवनं जनाः ॥	श्लो०१३
ग०प्र०४३	अथो विभूतिं मम मायाविनस्तामैश्वर्यमष्टां-	भाग०तृ०अ०२५
	गमनुप्रवृत्तम् । श्रियं भागवतीं वा स्पृहयन्ति भद्रां	श्लो०३७
	परस्य मे तेऽश्नुवते तु लोके ॥	
ग०प्र०५०म०२०	या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।	गी०अ०२
	यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥	श्लो०६९
ग०प्र०५४	प्रसङ्गमजरं पाशमात्मनः कवयो विदुः ।	भाग०तृ०अ०२५
	स एव साधुषु कृतो मोक्षद्वारमपावृतम् ॥	श्लो०२०

२ वचनामृतम् ।	प्रमाणवचनानि ।	आकरः ।
ग०प्र०६२	सत्यं शौचं दया क्षान्तिस्त्यागः सन्तोष आर्जवम् ।	भाग०प्र०अ०
	शमो दमस्तपः साम्यं तितिक्षोपरतिः श्रुतम् ॥	१६श्लो०२६
	ज्ञानं विरक्तिरैश्वर्यं शौर्यं तेजो बलं स्मृतिः ।	,, २७
	स्वातन्त्र्यं कौशलं कान्तिर्धैर्यं मार्दवमेव च ॥	
	प्रागल्भ्यं प्रश्रयः शीलं सह ओजो बलं भगः ।	,, २८
	गाम्भीर्यं स्थैर्यमास्तिक्यं कीर्तिर्मानोऽनहंकृतिः ॥	
ग०प्र०७०	यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।	गी०अ०१८
	तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥	श्लो०७८
सा०१	जितं जगत्केन? मनो हि येन ।	मणिरत्नमालायाम्.
सा०११ का०१	निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति ।	मुण्डकोपनिषदि–मु०३ खं०१
का०१	बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् जनानामसृजत्प्रभुः ।	भाग०द०अ०८७
	मात्रार्थं च भवार्थं च ह्यात्मनेऽकल्पनाय च ॥	श्लो०२
का०१पं०२	यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ।	तैत्ति०आन०९
का०१	बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ।	गी०अ०४श्लो०१०
लो०७	ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ।	हिरण्यकेशीयशाखाश्रुति
लो०७	तमेव विदित्वातिमृत्युमेति	श्वेता० अ०३ वा०८
	नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ।	
लो०७ पं०६	यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।	गी०अ०१५
	अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥	श्लो०१८
लो०७	विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ।	गी०अ०१०–४१
लो०७	मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय! ।	गी०अ०७
	मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥	श्लो०
लो०७ पं०६	पश्य मे पार्थ! रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः ।	गी०अ०११
	नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥	श्लो०
लो०७	नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं न शोभते	भाग०प्र०अ०
	ज्ञानमलं निरञ्जनम् ।	श्लो०१

लो०७	कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः । अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥	गी०अ०४ श्लो०१७
लो०७ पं०२अ०३	ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति । समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥	गी०अ०१८ श्लो०५४
लो०७	भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च । अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूतां महाबाहो ! ययेदं धार्यते जगत् ॥	गी०अ०७ श्लो०४–५
लो०७	अन्तः प्रविष्टः शास्ता जनानां सर्वात्मा ।	यजु०आरण्यके ३–११
लो०७	यस्याक्षरं शरीर......एष सर्वभूतान्तरात्मा...	[illegible]

लो० १३	तत्सृष्टसृष्टसृष्टेषु कोऽन्वखण्डितधीः पुमान् ।	भाग०तृ०अ०३१
ग० अंत्य० ३३	ऋषिं नारायणमृते योषिन्मय्येह मायया ॥	श्लो०३७
लो०१३	एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः ।	भाग०प्र०अ०११
	न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥	श्लो०३८
लो०१३व०५	दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।	गी०अ०७
	मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥	श्लो०१४
लो०१३	मम साधर्म्यमागताः ।	गी०अ०१४श्लो०२
लो०१३	अपरिमिता ध्रुवास्तनुभृतो यदि सर्वगता-	भाग०द०अ०८७
	स्तर्हि न शास्यतेति नियमो ध्रुव ! नेतरथा ।	श्लो०३०
लो०१३	एकमेवाद्वितीयं (ब्रह्म) ।	छांदो०अ०६खं०२-१
लो०१४	न कुर्यात्कर्हिचित्सख्यं मनसि ह्यनवस्थिते ।	भाग०पं०अ०६
	यद्विश्रम्भाच्चिराच्चीर्णं चस्कन्द तप ऐश्वरम् ॥	श्लो०३-४
	नित्यं ददाति कामस्य छिद्रं तमनु येऽरयः ।	
	योगिनः कृतमैत्रस्य पत्युर्जायेव पुंश्चली ॥	
लो०१५	त्यज धर्ममधर्मं च उभे सत्यानृते त्यज ।	भार०मोक्ष०अ०
	उभे सत्यानृते त्यक्त्वा येन त्यजसि तत्त्यज ॥	३३०श्लो० ४०
लो०१६अन्त्य०५	मद्भयाद्वाति वातोऽयं सूर्यस्तपति मद्भयात् ।	भाग०तृ०अ०२५
	वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निर्मृत्युश्चरति मद्भयात् ॥	श्लो०४२
लो०१८	"भूभारः क्षपितो येन" "तां तनुं विजहावजः ।	भाग०प्र०अ०१५
	कण्टकं कण्टकेनैव द्वयं चापीशितुः समम् ॥	श्लो०३४-३५
लो०१८	तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो ! भव विश्वमूर्ते ! ।	गी०अ०११ श्लो०४६
लो०१८ पं०७	अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् । परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥	गी०अ०९श्लो०११
पं०२	'सर्वं खल्विदं ब्रह्म ।	छां०अ०३खं१४-१
पं०२	नेह नानास्ति किंचन ।	बृहदारण्ये अ०४ ब्रा-४वा०१९

पं०२	इदं हि विश्वं भगवानिवेतरो यतो जगत्स्थान- निरोधसम्भवाः ।	भाग०प्र०अ० ५ श्लो०२०
पं०२अन्त्य०३	आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्था अप्युरुक्रमे । कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थंभूतगुणो हरिः ॥	भाग०प्र०अ० ७ श्लो०१०
पं०२–३ म०२९	परिनिष्ठितोऽपि नैर्गुण्ये उत्तमश्लोकलीलया ।	भाग०द्वि०
अन्त्य०३	गृहीतचेता राजर्षे आख्यानं यदधीतवान् ॥	अ०१श्लो०९
पं०३	नैर्गुण्यस्था रमन्ते स्म गुणानुकथने हरेः ।	भा०द्वि०अ०१श्लो०७
पं०३	तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।	गी०अ०७श्लो०१७
म०१	प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥	
	उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।	गी०अ०७श्लो०१८
पं०४	अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः । प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥	गी०अ०१५श्लो०१४
पं०४	दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन । इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥	गी०अ०११श्लो०५१
पं०७	जन्माद्यस्य यतः...यत्र त्रिसर्गो मृषा । धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि ॥	भाग०प्र०अ०१श्लो०१
पं०७	स वेद धातुः पदवीं परस्य दुरन्तवीर्यस्य रथाङ्गपाणेः । योऽमायया सन्ततयानुवृत्त्या भजेत तत्पादसरोजगन्धम् ॥	भाग०प्र०अ० ३श्लो०३८
पं०७	स ईक्षत ।	ऐतरेयो०अ०१खं०१
पं०७	पुरुषेणात्मभूतेन वीर्यमाधत्त वीर्यवान् ।	भाग०तृ०अ०५श्लो०२६
ग०म०१	ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते । सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।	गी०अ०२ श्लो०६२–६३
ग०म०१	समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।	गी०अ०१४ श्लो०२४

		आकरः ।
लो० १३	तत्सृष्टसृष्टसृष्टेषु कोऽन्वखण्डितधीः पुमान् ।	भाग०तृ०अ०३१
ग० अंत्य० ३३	ऋषिं नारायणमृते योषिन्मय्येह मायया ॥	श्लो०३७
लो०१३	एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः ।	भाग०प्र०अ०११
	न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥	श्लो०३८
लो०१३व०५	दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।	गी०अ०७
	मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥	श्लो०१४
लो०१३	मम साधर्म्यमागताः ।	गी०अ०१४श्लो०२
लो०१३	अपरिमिता ध्रुवास्तनुभृतो यदि सर्वगता-	भाग०द०अ०८७
	स्तर्हि न शास्यतेति नियमो ध्रुव! नेतरथा ।	श्लो०३०
लो०१३	एकमेवाद्वितीयं (ब्रह्म) ।	छांदो०अ०६खं०२-१
लो०१४	न कुर्यात्कर्हिचित्सख्यं मनसि ह्यनवस्थिते ।	भाग०पं०अ०६
	यद्विश्रंभाच्चिराचीर्णं चस्कन्द तप ऐश्वरम् ॥	श्लो०३-४
	नित्यं ददाति कामस्य छिद्रं तमनु येऽरयः ।	
	योगिनः कृतमैत्रस्य पत्युर्जायेव पुंश्चली ॥	
लो०१५	त्यज धर्ममधर्मं च उभे सत्यानृते त्यज ।	भार०मोक्ष०अ०
	उभे सत्यानृते त्यक्त्वा येन त्यजसि तत्त्यज ॥	३३०श्लो० ४०
लो०१६अन्त्य०५	मद्भयाद्वाति वातोऽयं सूर्यस्तपति मद्भयात् ।	भाग०तृ०अ०२५
	वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निर्मृत्युश्चरति मद्भयात् ॥	श्लो०४२
लो०१८	"भूभारः क्षपितो येन""तां तनुं विजहावजः ।	भाग०प्र०अ०१५
	कण्टकं कण्टकेनैव द्वयं चापीशितुः समम् ॥	श्लो०३४-३५
लो०१८	तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो! भव विश्वमूर्ते! ।	गी०अ०११ श्लो०४६
लो०१८ पं०७	अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।	गी०अ०९श्लो०११
	परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥	
पं०२	सर्वं खल्विदं ब्रह्म ।	छां०अ०३खं१४-१
पं०२	नेह नानास्ति किंचन ।	बृहदारण्ये अ०४ ब्रा–४वा०१९

पं०२	इदं हि विश्वं भगवानिवेतरो यतो जगत्स्थान- निरोधसम्भवाः ।	भाग०प्र०अ० ५ श्लो०२०
पं०२अन्त्य०३	आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्था अप्युरुक्रमे । कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थंभूतगुणो हरिः ॥	भाग०प्र०अ० ७ श्लो०१०
पं०२–३ म०३९	परिनिष्ठितोऽपि नैर्गुण्ये उत्तमश्लोकलीलया ।	भाग०द्वि०
अन्त्य०३	गृहीतचेता राजर्षे आख्यानं यदधीतवान् ॥	अ०१श्लो०९
पं०३	नैर्गुण्यस्था रमन्ते स्म गुणानुकथने हरेः ।	भा०द्वि०अ०१श्लो०७
पं०३	तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।	गी०अ०७श्लो०१७
म०१	प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥	
	उदाराः सर्वे एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।	गी०अ०७श्लो०१८
पं०४	अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः । प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥	गी०अ०१५श्लो०१४
पं०४	दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन! । इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥	गी०अ०११श्लो०५१
पं०७	जन्माद्यस्य यतः...यत्र त्रिसर्गो मृषा । धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि ॥	भाग०प्र०अ०१श्लो०१
पं०७	स वेद धातुः पदवीं परस्य दुरन्तवीर्यस्य रथाङ्गपाणेः । योऽमायया सन्ततयानुवृत्त्या भजेत तत्पादसरोजगन्धम् ॥	भाग०प्र०अ० ३श्लो०३८
पं०७	स ईक्षत ।	ऐतरेयो०अ०१खं०१
पं०७	पुरुषेणात्मभूतेन वीर्यमाधत्त वीर्यवान् ।	भाग०तृ०अ०५श्लो०२६
ग०म०१	ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते । सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।	गी०अ०२ श्लो०६२–६३
ग०म०१	समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।	गी०अ०१४ श्लो२४

६ वचनामृतम् ।	→※ प्रमाणवचनानि । ※←	आकरः ।
ग०म०८	ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः । मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥	गी०अ०१५श्लो०७
म०९–१७ व०५	सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥	गी०अ०१८श्लो०६६
ग०ग०९	स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ।	गी०अ०२श्लो०४०
ग०म०१०व०१८	जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः । त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ! ॥	गी०अ०४श्लो०९
ग०म०११	आमयो येन भूतानां जायते यश्च सुव्रत ! । तदेव ह्यामयं द्रव्यं न पुनाति चिकित्सितम् ॥ एवं नृणां क्रियायोगाः सर्वे संसृतिहेतवः । त एवात्मविनाशाय कल्पन्ते कल्पिताः परे ॥	भाग०प्र०अ०५ श्लो०३३–३४
ग०म०११	कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः । स बुद्धिमान् मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥	गी०अ०४श्लो०१८
ग०म०१२	न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः । यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥	गी०अ०१५ श्लो०६
ग०म०१६	श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः । ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥	गी०अ०४ श्लो०३९
ग०म०५४	यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कलत्रा– दिषु भौम इज्यधीः । यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचित् जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः ॥	भाग०द०अ० ८४श्लो०१३
[illegible]	अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थानं पोषणमूतयः ।	[illegible]

वर०२	वासुदेवपरा वेदा वासुदेवपरा मखाः । वासुदेवपरा योगा वासुदेवपराः क्रियाः ॥ वासुदेवपरं ज्ञानं वासुदेवपरं तपः । वासुदेवपरो धर्मो वासुदेवपरा गतिः ॥	भा०प्र०अ०२ श्लो०२८–२९
वर० १२	अहो अमी देववरामरार्चितं पादांबुजं ते सुमनःफलार्हणम् । नमन्त्युपादाय शिखाभि- रात्मनस्तमोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥	भाग०द०अ० १५ श्लो०५
अंत्य०३	हरेर्गुणाक्षिप्तमतिर्भगवान् बादरायणिः । अध्यगान् महदाख्यानं नित्यं विष्णुजनप्रियः ॥	भा०प्र०अ०७ श्लो०११
अत्य०३	प्रायेण मुनयो राजन् ।	भा०द्वि०अ०१श्लो०७
अंत्य०५	यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनाद्यत्प्रह्वणाद्यत्स्मरणा- दपि क्वचित् । श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते कथं पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ॥ अहो बत श्वपचोऽतो गरीयान् यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम् । तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते ॥	भा०तृ०अ०३३ श्लो०६–७
अंत्य०२८	आसामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम् । या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा भेजुर्मुकुन्दपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम् ॥	भा०द०अ० ४७ श्लो०६१
अंत्य०२८	अहो !! भाग्यमहो !! भाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम् । यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ॥	भा०द०अ० १४ श्लो०३२
अंत्य०३३	येऽन्ये स्वतः परिहृतादपि बिभ्यति स्म ।	भा०ए०अ०६श्लो०१७

शिक्षावाक्यामृतैः स्वीयैः स्वाश्रितानां सतां हृदि ।
विदधे हितपुष्टिं यः स्युस्तस्यैतानि मद्धृदि ॥ १ ॥

श्रीशतानन्दमुनिविरचितं धार्मिकस्तोत्रम् ।

श्रीवासुदेवविमलामृतधामवासं नारायणं नरकतारणनामधेयम् ।
श्यामं सितं द्विभुजमेव चतुर्भुजं च त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥१॥
शिक्षार्थमत्र निजभक्तिमतां नराणामेकान्तधर्ममखिलं परिशीलयन्तम् ।
अष्टाङ्गयोगकलनाश्च महाव्रतानि त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्र० ॥२॥
श्वासेन साकमनुलोमविलोमवृत्त्या स्वान्तर्बहिश्च भगवत्युरुधा निजस्य ।
पूरे गतागतजलाम्बुधिनोपमेयं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्र० ॥ ३ ॥
बाह्यान्तरिन्द्रियगणश्वसनाधिदैववृत्त्युद्भवस्थितिलयानपि जायमानान् ।
स्थित्वा ततः स्वमहसा पृथगीक्षमाणं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्र० ॥४॥
मायामयाकृतितमोशुभवासनानां कर्तुं निषेधमुरुधा भगवत्स्वरूपे ।
निर्बीजसाङ्ख्यमतयोगसुयुक्तिभाजं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्र० ॥५॥
दिव्याकृतित्वसुमहस्त्वसुवासनानां सम्यग्विधिं प्रथयितुं च पतौ रमायाः
सालम्बसाङ्ख्यपथयोगसुयुक्तिभाजं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्र० ॥६॥
कामार्ततस्करनटव्यसनिद्विषन्तः स्वस्वार्थसिद्धिमिव चेतसि नित्यमेव ।
नारायणं परमयैव मुदा स्मरन्तं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्र० ॥७॥
साध्वीचकोरशलभास्तिमिकालकण्ठकोका निजेष्टविषयेषु यथैव लग्नाः ।
मूर्तौ तथा भगवतोऽत्र मुदातिलग्नं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्र० ॥८॥
स्नेहातुरस्त्वथ भयातुर आमयावी यद्वत्क्षुधातुरजनश्च विहाय मानम् ।
दैन्यं भजेयुरिह सत्सु तथा चरन्तं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्र० ॥९॥
धर्मस्थितैरुपगतैश्चहता निजैक्यं सेव्यो हरिः सितमहःस्थितदिव्यमूर्तिः ।

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

श्रीजिमहाराजे अषाढी वर्षे १८६३ ना कार्तिक शुदि १ थी प्रबोधनी एकादशीनी अंदर गढडामां भक्तिबागमां हरमाना वृक्षतळे वेसीने शुकानंदमुनिपासे हरिजनो उपर भूद्वीपखंड, युगपरिमाण अने प्रलयवर्णनपूर्वक भरतखंडमां मनुष्य जन्मनी दुर्लभता वर्णवी तेनाथी अन्य लौकिक प्रवृत्तिनो आग्रह नहि करतां मोक्षरूपी कार्य सिद्ध करी लेवाना उद्देशथी पत्र लखावेलो. ते वात हरिलीलामृतना ६ कळशमां ११–१२ विश्राममां वर्णवी छे. आ पत्र तेज आनुपूर्वीवाळो हशे के अन्यथा हशे तेनो विचार कर्या विना उपयोगनो जाणी पृथक् छपाव्यो छे.

श्रीमद्भागवतादि सद्ग्रंथोनेविषे लख्युं छे जे भरतखंडमां मनुष्यनो देह पामवो ते अति दुर्लभ छे चिंतामणि तुल्य छे जे देहने इंद्रादिक देवता इच्छेछे. ते देवता ने विषय ने वैभव विलास ने आयुष तेतो मनुष्यना थकी घणुं अधिक छे पण त्यां मोक्षनुं साधन नथी थातुं. मोक्षनुं साधन तो भरतखंडनेविषे मनुष्य देह पाम्या थकी थायछे. ते विना बीजे कोइ ठेकाणे ने कोइ देहनेविषे थातुं नथी. ए हेतुमाटे सर्व देशथी मृत्युलोकमां भरतखंडनेविषे मनुष्यनो देह पामवो ते अधिक छे, तेने तुल्य बीजुं कोइ चौद लोकमां स्थानक नथी ते चौद लोकनां नाम–आ मृत्युलोक छे तेथी ऊर्ध्व छ लोक छे. तेमां प्रथम भुवर्लोक छे १ तेमां मलिन देव रहेछे. तेथी ऊर्ध्व बीजो स्वर्गलोक छे २ तेमां इंद्रादि देव रहेछे. तेथी ऊर्ध्व त्रीजो महर्लोक छे ३ तेमां अर्यमादि पित्रिदेव रहेछे. तेथी ऊर्ध्व चोथो जनलोक छे ४ तेथी ऊर्ध्व पांचमो तपलोक छे ५ ए बे लोकमां भृग्वादि ऋषि रहेछे. तेथी ऊर्ध्व छठो सत्यलोक छे ६ तेमां ब्रह्मा रहेछे. ए सत्य-

लोक सहित सात लोक छे. ते मृत्युलोकथी अधो जे हेठा सात लोक छे तेमां प्रथमतो अतळ १ बीजो वितळ २ त्रीजो सुतळ ३ ए त्रण्येने विषे दैत्य रहेछे. तेथी हेठो तळातळ १ बीजो महातळ २ त्रीजो रसातळ ३ ए त्रण्यमां निशाचर रहेछे ६ एने हेठा कह्या तेथी हेठो सातमो पाताळ छे ७ तेमां सर्प रहेछे. ए सात लोक ते मृत्युलोकथी हेठा छे ते सहित सर्व थइने चौद लोक थया. तेमां मृत्युलोक छे ते श्रेष्ठ छे. ते मृत्युलोकना सात द्वीप छे. ते चक्राकार छे. ने तेने मध्ये जंबुद्वीप छे. ते एक लक्ष जोजननो छे. तेने फरतो खारा जळनो समुद्र छे. ते पण एक लाख जोजननो छे १ तेथी बीजो प्लक्ष नामे द्वीप छे. ते बे लाख जोजननो छे. तेने फरतो समुद्र ते पण बे लाख जोजननो छे. २ तेनुं जळ ईक्षु जे सेरडीना रस जेवुं छे. ने तेथी त्रीजो शाल्मलि द्वीप छे. ते फरतो छे ते च्यार लाख जोजननो छे. तेने फरतो समुद्र छे ते चार लाख जोजननो छे. तेनुं जळ ते सुरा जे दारु तेना जेवुं छे ३ तेथी चोथो कुशद्वीप छे. ते फरतो छे. ने ते आठ लाख जोजननो छे. ने तेवडो फरतो समुद्र छे. ने तेनुं जळ घृत जे घी ते जेवुं छे ४ ने तेथी पांचमो क्रौंचद्वीप छे. ते सोळ लाख जोजननो छे. ने तेवडो फरतो सोळ लाख जोजननो समुद्र छे. तेनुं जळ ते क्षीर जे दुध ते जेवुं छे ५ तेथी छटो शाकद्वीप छे. ते बत्रीश लाख जोजननो छे. तेने फरतो समुद्र छे ते ते जेवडो छे. तेनुं जळ ते दधीमंडोद जे दही तेना धोळवा जेवुं छे ६ तेथी सातमो पुष्कर द्वीप छे. ते चोसठ लाख जोजननो छे. ने तेने फरतो समुद्र छे. ते पण चोसठ लाख जोजननो छे. तेनुं जळ जे सुधा जेवुं मिठुं छे ७ एवी रीते सात द्वीप छे. तेमां आ

जंबुद्वीप छे ते श्रेष्ठ छे. ने ते जंबुद्वीपना नव खंड छे. ते केम छे तो ए द्वीप छे तेने मध्ये सुवर्णनो मेरु पर्वत छे. ते पर्वतनी तलाटिमां चारे पासे फरतो एक ईलावर्त नामे खंड छे. तेमां संकर्षणनी उपासना छे. ने त्यां शिवजी मुख्य भक्त छे. अने वळी ते मेरुथी पश्चिम दिशाए एक केतुमाळ नामे खंड छे. ने तेनुं सुभग एवुं बीजुं पण नाम छे. ने तेमां प्रद्युम्ननी उपासना छे. ने त्यां लक्ष्मीजी मुख्य भक्त छे. अने वळी ते मेरुथी उत्तर दिशाए त्रण्य खंड छे. तेमां प्रथम रम्यक नामे खंड छे तेमां मत्स्य भगवाननी उपासना छे. ने त्यां सावर्णि मनु मुख्य भक्त छे. ने तेथी उत्तरमां बीजो हिरण्मय खंड छे. ने तेमां कूर्मजीनी उपासना छे. ने त्यां अर्यमा मुख्य भक्त छे. ने तेथी उत्तरमां बीजो कुरु खंड छे. ने तेमां वाराहनी उपासना छे. ने त्यां प्रथवि मुख्य भक्त छे. ए पांच खंड थया. ने वळी ते मेरुथी पूर्व दिशामां भद्राश्व नामे खंड छे. ने त्यां हयग्रीवनी उपासना छे. ने तेमां भद्रश्रवा नामे मुख्य भक्त छे. अने वळी ते मेरुथी दक्षिण दिशामां त्रण्य खंड छे. ने तेमां प्रथम हरिवर्ष खंड छे. तेने विषे नृसिंहजीनी उपासना छे. ने प्रह्लादजी मुख्य भक्त छे ने तेथी दक्षण दिशामां बीजो किंपुरुषनामे खंड छे तेमां राम लक्ष्मणजीनी उपासना छे त्यां हनुमानजी मुख्य भक्त छे. ने तेथी दक्षिण दिशामां भरतखंड छे. ने तेमां नरनारायण देवनी उपासना छे. ने त्यां नारदजी मुख्य भक्त छे. एवी रीते आ जंबुद्वीप तेना नव खंड कह्या. तेमनेविषे भरतखंड छे ते अति श्रेष्ठ छे. ते शा हेतु माटे तो बीजा आठ खंड छे तेमां भोग विलासनां सुख तो घणां अधिक छे पण मोक्षनुं साधन त्यां थातुं नथी ने मोक्षनुं साधन तेतो एक भरत-

खंडमांज थाय छे. ते हेतु माटे आ भरतखंडने तुल्य चौद विषे बीजुं कोइ ठेकाणुं नथी. अने वळी भरतखंड छे तेमां पण देश छे. ते अनार्य कहेतां कठोर छे ते कहिए छैये–एक तो बंगाळ १ बीजो नेपाळ २ त्रीजो भूट ३ चोथो कामाक्षी ४ पांचमो सिंध ५ छठो काबुल ६ सातमो लाहोर ७ आठमो मुलतान ८ नवमो ईरान ९ दशमो असतंबोल १० अगीयारमो अरबस्तान ११ बारमो खाल १२ तेरमो पिलपिलाम १३ ए तेर देश मलिन छे तेमां जे मनुष्य देह पामे तेने मोक्षना दाता एवा जे सद्गुरु तेनो जोग मळवो ने मोक्षना धर्मने समझवुं ते घणुं कठण छे. हवे बिजा साडाबार देश छे ते आर्य कहेतां उत्तम छे तेमनां नाम–जे प्रथमतो एक पूर्व १ बीजो व्रज २ त्रीजो माळव ३ चोथो मारु ४ पांचमो पंजाब ५ छठो गुजरात ६ सातमो दक्षिण ७ आठमो मलबार ८ नवमो तिलंग ९ दशमो द्रावीड १० अग्यारमो बारमलार ११ बारमो सोरठ १२ अरधो कच्छ ए साडाबार देश उत्तम छे. तेमां सद्गुरु ने ब्रह्मवेत्ता संत छे तेमनुं प्रगटपणुं घणुं रहेछे. ने ते देशमां मनुष्य देह पामेछे तेमने धर्म भक्ति वैराग्य ज्ञान ए समझाय एम छे ने मोक्षना मारगने जाणे एम छे. ते केम जाणे तो ए जे उत्तम देश छे तेनेविषे भगवानना अवतार घणाक थायछे एटला माटे ए देश श्रेष्ठ छे. अने

ने ओळखिने तेनो आश्रय करवो ने ते कहे तेवी रीते तेना वचनमां पोताना देह इंद्रियो ने अंतःकरण ते राखवां ने भगवाननुं भजन करवुं एज मोक्षनुं साधन छे. ते जेणे भूतकाळे कीधुं ने वर्तमान काळे करेछे ने भविष्य काळे करशे तेने अमूल्य मनुष्यदेहनो लाभ थयो एम जाणवुं ने तेने समझु ने मोटो जाणवो. अने एम नथी समझतो ने तुच्छ संसारना सुखमां लोभाईने काळना कोळीया एवा जे खोटा मतवादि गुरु तेनां वचन मानिने आवो मनुष्यदेह अमूल्य छे तेने खुवे छे. ने तेज भक्तमां तो डाया कहेवाता होय तथा समझु कहेवाता होय तथा मोटा कहेवाता होय ने तेनी जगतमां यश–कीर्ति घणी होय तेतो सर्व स्वप्न तुल्य छे. तेने साचुं मानीने तेमां मोह पाम्या छे ने मोक्षनो उपाय नथी समझता तो तेने ब्रह्मवेत्ता साधु ने सद्ग्रंथ छे ते तेमने मूर्ख कहेछे. आत्मघाती कहेछे. ने तेमने पाछो फरीने आवो मोक्षक्षेत्रमां मनुष्यनो देह मळवो तेनो विलंब तो घणो छे. ते सद्ग्रंथने अनुसारे लख्युं छे जे आपणां वर्ष ६६६ छसे ने छासठ ने मास ८ आठ जायछे तारे ब्रह्मानो १ एक लव थायछे. एवा ६० साठ लवनुं १ एक निमिष ते आपणां वर्ष ४०००० चालीस हजार जाय तारे ब्रह्मानुं एक निमिष थाय. एवां ६० साठ निमिषनुं एक पळ ते आपणां वर्ष २४००००० चोविस लाख जाय तारे ब्रह्मानुं १ एक पळ थाय. एवां ६० साठ पळनी १ एक घडि ते आपणां वर्ष १४४०००००० चौद करोड ने चाळीश लाख जाय तारे ब्रह्मानी १ एक घडि थायछे. एवी ३० त्रीश घडिनो १ एक दिवस ते आपणां वर्ष ४३२०००००००० च्यार अबज ने बत्रिश करोड थाय तारे ब्रह्मानो १ एक दिवस थायछे. ते च्यार जुगनी १ एक चोकडी १७२८००० सत्तर लाख ने अट्ठाविश हजार सतयुग.

१२९६००० चार लाख ने छनुं हजार त्रेतायुग. ८६४००० आठ लाख ने चोसठ हजार द्वापर. ४३२००० च्यार लाख ने बत्रिश हजार कळिनां. ४३२०००० त्रेंताळीश लाख ने विश हजार वर्ष थाय तारे १ एक चोकडि थाय. एवी ब्रह्माना एक दिवसमां १ एक हजार चोकडि जुगनी थायछे. ते ब्रह्माना १ एक दिवसमां १४ चौद मनु ने १४ चौद इंद्र ते तुल्य राज्य करीने नाश पामेछे. १ एक मनु ने १ एक इंद्र आपणां वर्ष ३०८५७१४२८ त्रिश कोटि ने पंचासि लाख ने ईकोतर हजार ने चारसें अठ्ठाविश ने ते उपरांत मास ६ छो ने दिवस २५ पचीश घडि ४२ बेंताळीश पळ ५१ एकावंन निमिष २५ पचिश लव ४२ बेताळीश ने उपरांत १२ बार लवनो चौदमो भाग एटलुं एकएक रहीने चौद इंद्र थई जायछे. ते ब्रह्माना लव निमिषादिक सर्व दिवसमां उपजीने नाश थाय छे. तेनुं नाम प्रथम नित्यप्रलय कहेवायछे ने ते ब्रह्मानी एक रात्रि थायछे तारे ब्रह्मा सूवेछे तारे स्वर्ग मृत्यु पाताळ ए त्रिलोकिनो नाश थायछे. ते जेवडो दिवस छे तेवडी रात्रि छे ते आपणां वर्ष ८६४०००००००० आठ अबज ने चोसठ करोड थाय तारे ब्रह्मानी अहोरात्रि थइने एक दिवस थायछे ते दिवस दिवस प्रति नाश थायछे. ने दिवसांतरे पाछुं करेछे ने ते नाश थायछे तेनुं नाम २ बीजो निमित्तप्रलय कहेवायछे ए ब्रह्माना १ एक दिवसनी अवधि कही. एवा ३० त्रिश दिवसनो १ एक मास. एवा बार मासनुं १ एक वर्ष. एवां १०० सो वर्ष ब्रह्मा देह राखेछे. ते ब्रह्मा देह मुके तारे ए चौद लोकसहित ब्रह्मांडनो नाश थायछे. तारे प्रकृतिथी उपज्युं कारज ते सर्व प्रकृतिमां लय पामेछे ए त्रिजो प्राकृतप्रलय कहेवायछे. चोथो आत्यंतिक प्रलय थायछे. तारे तो अनंतकोटि ब्रह्मांडनो नाश थायछे. ने

दिवसतो प्रधान पुरुषनुं कारण ए जे प्रकृति पुरुष ते पोतानेविषे अनंत ब्रह्मांडने प्रतिलोम करीने पोते अक्षरपुरुषना तेजमां लीन थायछे. तेनुं नाम चोथो आत्यंतिक प्रलय कहेवायछे. ते प्रलय काळे जेम प्रतिलोम थायछे तेम उत्पत्तिकाळे अनुक्रमे तेथी अनुलोमज उपजेछे. ए तो चार प्रकारना प्रलयनुं कह्युं. पण त्रिजो प्राकृतप्रलय ने ब्रह्मानी आयुष अवधिनो कीधो एवा साडी त्रण्य कोटि प्राकृत प्रलय थे जायछे तारे ए जीव छे ते आवो मनुष्य देह पाम्यो होय ते या खोटा मायिक सुख ने मतवादि गुरुने आशरे रहिने हारे ा यमयातना ने नरककुंडनां दुःख ने लखचोरासी जातना जे देह छे तेनां दुःख भोगविने तेमां फरीने पाछो साडी त्रण्य कोटी प्राकृत प्रलय कह्या एवा थशे तारे फरीने मोक्ष क्षेत्रमां आवो मनुष्यनो देह पामेछे. एटलो फरीने मनुष्य देह पामवानो विलंब छे. माटे हे भाई सूझे तो आज समजीने मोक्षना दाता जे सद्गुरु ने संत तेनो आश्रय करीने तेनी आज्ञामां पोतानो देह ने इन्द्रियोने अंतःकरणने वरताविने पोताना आत्मानुं श्रेय करीने भगवानना धामने पोंचो ने जो आज ए वात नहि समझो ने आवो मनुष्यदेह मोक्षना साधननुं धाम छे ते वृथा हारशो तो फरी पाछो आवो जोग मळवानो विलंब तो मोरे लख्यो एटलो छे. ते प्रमाणे भोगविने ते अवधि पुरी थाशे ते दिवस जोग मोक्ष थावानो थाशे तेदि जो विचारशोतो थाशे ने नहि विचारो तो तेदि पण मोक्ष थाशे नहि ए सिद्धांत वार्ता छे. समझु होय ते विचारजो ने मुरखने माथे तो श्रुतिस्मृतिनी आमना नथी तेतो कोई ए वातने समझशे नहि. श्रीरस्तुः.

